ग्रीन हिल्स फार्म
पेन्सिलवानिया
जून, १९५३

आज सवेरे मैं अपनी आदत के अनुसार बड़े भोर में उठी और सदा की तरह खुली खिड़की के पास जाकर बाहर धरती की ओर देखने लगी, जो मेरे लिए सबसे सुन्दर है। मैं इन पहाड़ों और खेतों को सुबह और शाम, धूप में और चांदनी में, गर्मियों की हरियाली और सर्दियों की बर्फ में देखती ही रहती हूं पर फिर भी मुझे अपनी आंखों के आगे सदा कोई नया दृश्य दिखाई देता है। आज एक सुखद संयोग से—और संयोग जीवन का नियम ही मालूम होता है—मैंने अरुणोदय के समय एक दृश्य देखा। वह दृश्य इतना अधिक चीनदेशीय था कि यदि मुझे यह ध्यान न होता कि मैं भूमण्डल के दूसरी तरफ रह रही हूं, तो शायद मैं यह मानने लगती कि मैं बचपन से ही यह दृश्य देख रही हूं। लटकती शाखाओं वाले सरपत के पेड़ के नीचे बड़े भारी तालाब पर कोहरा फैला हुआ था, एक हलका-सा बादल का पर्दा था, जिसमें से चमकता हुआ पानी, चमचमाते सलेटी रंग का नज़र आ रहा था और इस पृष्ठ-भूमि में एक बड़ा सफेद बगुला एक टांग पर खड़ा हुआ एक पार्श्व से दिखाई दे रहा था। सदियों से चीनी कलाकार इस दृश्य का अंकन करते रहे हैं, और यही यहां मेरी अपनी ही ज़मीन में आज मेरी आंखों के आगे मौजूद था—यह ज़मीन पूरी तरह अमरीकन थी : आज यह मेरी है, पर अमरीकनों की अनेक पीढ़ियां इसकी मालिक रही हैं, और इसका पहला मालिक रिचार्ड पैन था जो विलियम पैन का भाई था—विलियम पैन ने ही हमारे पेन्सिलवानिया राज्य की नींव डाली थी। यदि मैंने भगवान् से प्रार्थना की होती तो भी अपने आज के काम, अर्थात् इस पुस्तक का श्रीगणेश करने के लिए अपने मन के और अधिक अनुकूल चित्र की याचना नहीं कर सकती थी।

परन्तु मैं पाठक को यह चेतावनी दे देना चाहती हूं कि यह कहानी अधूरी है, और इससे भी बुरी बात यह है कि यह विभिन्न स्तरों पर, और विभिन्न स्थानों और लोगों के बारे में कही हुई कहानी है—इस विभिन्नता को एक जगह बांधने वाला सूत्र समय ही है—क्योंकि मेरा जीवन इसी तरह बीता है और मरने तव इसी तरह बीतेगा। भूगोल की दृष्टि से मेरे जगत् भूमण्डल के विपरीत पार्श्वों प हैं और मेरे लिए भी मेरे जीवन के वर्ष ही उन्हें एकत्र बांधे हुए हैं। एक और वि धता मेरे अपने भीतर है। मैं स्वभावतः घरेलू प्राणी हूं, पर जिस युग में मैं पै हुई हूं उसने, और जिन गुणों ने मुझे लेखिका बना दिया है उन्होंने, मिलक मुझे न केवल घर और परिवार में, बल्कि अनेक जातियों के जीवन में भी गहराई में पैठकर जीवन बिताने के लिए मजबूर कर दिया है पर अपने अनेक संसारों में से मैं अपने व्यक्तिगत संसार से ही अपनी बात शुरू करती हूं क्योंकि सच पूछिए तो हम सब यहीं से शुरू होते हैं।

यह पुस्तक पूरा आत्मचरित नहीं है। मेरा निजी जीवन बड़ा सुखद रहा है, और उसमें कोई विशेष घटना नहीं घटी—दो-चार घटनाएं अवश्य हुईं जिनकी विपत्ति को मैं सहार गई, और मैं समझती हूं कि ऐसा कोई ही व्यक्ति होगा जिसको भाग्य से शिकायत करने का इतना कम कारण हो। सुखद बाल्यकाल, यथासमय विवाह, प्रेम और घर तथा बच्चे, सखी-सहेलियां और बिल्कुल आकांक्षा से हीन और जन्म से प्रतिस्पर्द्धा की भावना से शून्य प्राणी के लिए काफी से अधिक सफलता—यह है मेरे अज्ञात जीवन की कहानी।

मेरा सबसे बड़ा सौभाग्य रहा है वह युग जिसमें मेरा जन्म हुआ। अपने होश में मैंने जो समय गुज़रता हुआ देखा है उससे अधिक उथल-पुथल वाला और नई सम्भावनाओं से सम्पन्न समय कभी नहीं रहा, या यह कहना चाहिए कि मुझे इतिहास पढ़ते समय ऐसा मालूम होता है। मैं अपने पूर्वजों के सुखदायक और आरामदेह छोटे से कस्बे में बेफिक्री से जीवन बिताती हुई बड़ी हो सकती थी। और जिन परिवारों को सुख और आराम का अपने उचित हिस्से से शायद अधिक अंश पाने की आदत पड़ी हुई थी, उनकी सुविधाओं को मन ही मन उनका प्राप्य मान लेती। पर हुआ यह कि मुझे ऐसे माता-पिता मिले जो साहसी और आदर्शवादी तरुण थे, और जो कम आयु में ही और ऐसे कारणों से जो मुझे अब भी बिल्कुल अयुक्ति-युक्त लगते हैं, अपने रिश्तेदारों के विरोध की परवाह न करते हुए और उन्हें आश्चर्य में

डालते हुए घर से निकल पड़े थ और आधा भूमण्डल पार करके चीन जा पहुंचे थे —और वहां अपने धर्म की अच्छाइयों का उपदेश करने लगे थे। उन्हें वह कार्य अनिवार्य और तृप्तिदायक प्रतीत होता था और वे आधी शताब्दी से अधिक समय तक काम में निष्ठापूर्वक लगे रहे थे और यह सब तब था जब कि वे किसी मिश-नरी या धर्म-प्रचारक परिवार के नहीं थे। उनमें से किसीके परिवार में भी कोई ऐसी बात नहीं थी जो मेरे माता-पिता जैसे दो उत्साही धर्म-प्रचारक ईसाइयों को जन्म देती, और उनकी किसी भी सन्तान ने इस उत्साहपूर्ण धर्मप्रचार-कार्य को आगे नहीं चलाया है। मुझे यही मालूम होता है कि मेरे माता-पिता अपनी पीढ़ी की भावना के नमूने थे——यह भावना एक नये राष्ट्र की महिमा से मंडित अमरीका की भावना थी जो युद्ध के विध्वंस में से संयुक्त होकर, और संसार की 'रक्षा' के लिए पर्याप्त शक्ति का दृढ़ विश्वास लेकर अपना मस्तक उठा रहा था। इधर उन्हें इस तथ्य की कोई धारणा नहीं थी कि असल में वे एक क्रांति की आग जलाने में सहा-यता दे रहे हैं जिसकी अच्छाई हमें न अभी तक दिखाई दी है और न पहले से दिखाई दे सकती है।

मेरे तरुण भावी माता-पिता की इस युवावस्था की जलयात्रा का परिणाम यह हुआ कि मेरा पालन-पोषण भूमण्डल के अमरीका वाले भाग की बजाए एशिया वाले भाग में हुआ, यद्यपि एक बिल्कुल आकस्मिक घटना के कारण मेरा जन्म अपने ही देश में हुआ था। मेरी युवा माता के, जो तेईस वर्ष की इस छोटी उम्र में ही वधू बनकर चीन गई थी, ज़रा जल्दी-जल्दी चार बच्चे हुए और उनमें से तीन उतनी ही जल्दी उष्णदेशीय रोगों के कारण जाते रहे, जिन्हें रोकने या दूर करने का उपाय उस समय ज्ञात नहीं था। वह बड़ी उदास और दुःखी हो गई थी और डाक्टरों ने उसे दो वर्ष के लिए उसके घर वेस्ट विर्जिनिया ले जाने का आदेश दिया। उस लम्बे विश्राम-काल के अन्तिम कुछ महीनों में ही मेरा जन्म हुआ और इस प्रकार मैं दो शताब्दियों की वंश-परम्परा के साथ-साथ जन्म से भी अमरीकी नागरिक बन गई।

यदि मुझे अपने जन्म का स्थान स्वयं चुनने का मौका दिया गया होता तो मैंने ठीक वही जगह चुनी होती जहां मेरा जन्म हुआ था। यह मेरे नाना का बहुत बड़ा सफेद मकान था जिसके दोनों ओर खम्भों वाले दोहरे पोर्टिको थे। इस मकान के चारों ओर घने श्यामल मैदानों का सुन्दर वातावरण था और पीछे की

ओर एलेगनी पर्वत माथा उठाए खड़ा था। मेरे जन्म का स्वागत किया गया था और मैं समझती हूं कि इस परिस्थिति ने मुझमें स्वाभाविक मृदुता और आशावाद की प्रवृत्ति पैदा की। जो भी हो, मैंने एक सुन्दर स्थान में आनन्द से जीवन आरम्भ किया और तीन महीने की आयु में मुझे समुद्रों को पार करके चीन में रहने और बड़ी होने के लिए आ जाना पड़ा क्योंकि मेरी माता का स्वास्थ्य ठीक हो गया था। इसके बाद एशिया मेरा यथार्थ नित्य व्यवहार का संसार और मेरा अपना देश मेरे लिए स्वप्न-जगत् बन गया, जिसका सौन्दर्य कल्पनातीत था और जिसमें मेरी कल्पना के अनुसार पूर्णतया पुण्यात्मा लोग रहते थे; संसार की सब अच्छाइयां वस्तुतः उसी देश से आ रही थीं।

जब मेरी प्रश्न पूछने की आयु हुई, तब इस स्वप्न-जगत् के बारे में मुझे जानकारी देने वाला एकमात्र स्रोत मेरे माता-पिता निश्चय ही मुझे झूठी बातें नहीं बताना चाहते थे। असल में उनकी अपनी स्मृतियां भी सुखद ही सुखद नहीं थीं। उत्तर और दक्षिण का युद्ध उनके आरम्भिक वर्षों पर छाया रहा था। मेरे पिता के चार बड़े भाई दक्षिण की ओर से लड़े थे और उस चुभने वाली हार में हिस्सेदार थे। उन्हें सबसे बड़ी चोट यह पहुंची थी कि एक मनमानी रेखा खींचकर उनके प्यारे विर्जिनिया राज्य का विभाजन कर दिया गया था और उनका पैतृक घर-बार नये राज्य में रह गया था, यद्यपि वह कुछ ही मील परे था। पर वे पुनर्निर्माण-काल की भयंकर कठिनाइयों से बच गए और जिस समय उन्होंने अपनी शिक्षा पूरी की—मेरे पिता वाशिंगटन में ली विश्वविद्यालय में पढ़ रहे थे और मेरी माता कैन्टुकी में, उस समय की फैशनेबल बेलेवुड सेमिनरी में—तब तक युद्ध की असुविधाएं दूर हो चुकी थीं यद्यपि उसकी स्मृति अभी दूर नहीं हुई थी। इसके अतिरिक्त दासता की प्रथा समाप्त हो जाने से दोनों परिवार प्रसन्न थे। यह प्रथा इतना भारी बोझ थी कि संविधान और 'बिल आफ राइट्स' (नागरिकों के मूल अधिकारों का घोषणापत्र) और इनसे भी बढ़कर ईसाई धर्म में आस्था रखने वाला राष्ट्र इसे नहीं उठा सकता था।

परन्तु चीन में मेरे माता-पिता अपने देश के कम प्रशंसनीय पहलुओं को आसानी से भूल गए और मेरे बाल्यकाल में वे मुझे शान्त देहाती मार्गों, वृक्षों और खेतों के बीच में बने हुए बड़े-बड़े मकानों, सुन्दर पुराने गिरजाघरों में ईश्वर की पूजा करने के लिए रविवार को चर्च जाने वाले भलेमानसों, कानून का पालन

करने वाले नर-नारियों, अपने माता-पिता की आज्ञा पालन करने वाले और स्कूल में अपना सबक याद करने वाले बालकों की स्मृतियां उत्साह से सुनाया करते थे : वहां बहुत थोड़े लोग बीमार होते हैं और डाक्टर उन बीमारों का इलाज करते हैं या उन्हें आश्चर्यजनक सफाई वाले हस्पतालों में भेज देते हैं और हैज़ा या पेचिश या टाईफाइड तो किसीको होता ही नहीं और न कोई प्लेग से मरता है। न वहां सड़कों पर जहां-तहां कोढ़ियों की कतारें, राहगीरों और दुकानदारों को तंग करती हैं और न कोई भिखारी है। इसलिए बड़े होने तक मुझमें जो अपने देश के बारे में भ्रमात्मक धारणाएं बन गई उसमें मेरा कोई दोष नहीं है।

अमरीका मेरे लिए स्वप्न देखने की वस्तु थी और जिस दुनिया में मैं रहती थी, वह एशिया ही था। असली प्रदेश चीनी था पर चीन के चारों ओर बहुत से दूसरे राष्ट्र और जातियां मौजूद थीं जिनके नागरिकों को मैं प्रायः देखती थी और जिनमें से कुछ को मैं अच्छी तरह जानती थी।

इस प्रकार भारत के बारे में मुझे बहुत पहले ही पता चल गया था—और इसका कारण यह था कि हमारे परिवार का चिकित्सक एक भारतीय था और उसकी हृष्ट-पुष्ट और दयालु पत्नी भी भारतीय थी। मेरे ये शिक्षक अंग्रेज़ी बोलते थे और एक अंग्रेज़ी मिशन (धर्म-प्रचारक मण्डल) के सदस्य थे। जब मैं कहानियां सुनने की अपनी कभी खतम न होने वाली भूख के कारण इन मित्रों से ज़िद करती थी कि वे मुझे अपने बचपन के बारे में बताएं—सवाल पूछने के मामले में मैं बड़ी ज़िद्दी थी—तब वे मुझे भारत की बातें सुनाते थे और उनकी बातें सुनते हुए मैं एक गर्म और शुष्क देश में पहुंच जाती थी जहां सारी की सारी जनता बैठी हुई वर्षा के लिए निष्प्राण-सी होकर आसमान की ओर आंखें लगाए रहती है। मैं विचित्र सांपों और पेड़ों पर उछल-कूद करते हुए बन्दरों के बारे में जान गई। मुझे दूसरे देवताओं का पता चला, एक ऐसी भाषा का नाम मालूम हुआ जो मेरे बोलने की दो भाषाओं से अलग थी और शीघ्र ही मुझे भारत के कष्टों का और उसके निवासियों के स्वप्नों और आकांक्षाओं का पता चल गया।

हम जिस घाटी के ऊपर अपने छोटे-से ईंटों के मकान में रहते थे, उसके परली ओर पहाड़ी की चोटी पर एक जापानी महिला अपने अंग्रेज़ पति के साथ रहती थी और उससे मुझे जापान के बारे में बहुत कुछ पता चला। बाद में मैं अनेक बार स्वयं वहां गई—पहले अपने माता-पिता के साथ और फिर अकेली और इसके

बाद में वहां इतनी बार गई कि जापान मेरा तीसरा देश हो गया। हमारे मित्रों में फिलिपीन्स, स्याम, इन्डोनेशिया, बर्मा और कोरिया के एशियाई भी थे, और इस प्रकार आरम्भ में ही मेरे मन में एक ऐसे जगत् की धारणा बन गई जिसके केन्द्र में चीन था और हमारे चारों ओर ये अन्य राष्ट्र थे जो सबके सब मैत्रीपूर्ण, दिलचस्प थे और हमारे स्वागत के लिए आंखें बिछाए रहते थे।

परन्तु पश्चिम के स्वप्न-जगत् के अंग्रेज़ मित्र वे थे जो महान् यांगत्से नदी के तटवर्ती चिंकियांग बन्दरगाह के नगर में ब्रिटिश कन्सेशन (चीन द्वारा अंग्रेज़ों को पूरी तरह सौंपा हुआ प्रदेश) के सलाखों वाले दरवाज़ों के पीछे रहते थे। उनमें कुछ फ्रांसीसी और इटालियन परिवार भी थे। पर जिन फ्रांसीसियों और इटालियनों को मैं अच्छी तरह जानती थी, वे कैथोलिक पादरी थे जो कभी-कभी हमारे यहां आया करते थे और तीन या चार भिक्षुणियां थीं जिन्होंने सड़कों या पहाड़ियों पर फेंके हुए, पर जीवित बच गए बच्चों के लिए एक अनाथालय खोल रखा था। मै भारत या जावा की कल्पना तो कर सकती थी, पर इटली की या फ्रांस की कल्पना करना मेरे लिए सम्भव नहीं था, और इंग्लैड की तो बिल्कुल ही नहीं।

चीनी लोग मन ही मन इन पश्चिम वालों को 'विदेशी' समझते थे। मेरे साथ खेलने वाले चीनी बच्चे अपने घर वालों की बातचीत में से पाए हुए ऐसे-ऐसे विचार मुझे प्रायः बताया करते थे। मेरे साथ खेलने वाले बच्चे उन्हें विदेशी कहते थे और मैं भी उन्हें ऐसा ही समझती थी और इस कारण वे संभाव्य शत्रु थे। 'विदेशियों' ने एशिया में बड़ी दुष्टताएं कीं, अमरीकनों ने नहीं—मेरी छोटी-छोटी, पर उस समय की चतुर सहेलियां कहती थीं। वे कहती थीं—क्योंकि अमेरिकन 'अच्छे' है। उन्होंने एशियन देशों से कोई ज़मीन नहीं ली और वे अकाल के समय अनाज भेजते हैं। मैं यह अन्तर स्वीकार करती थी और योरुप के दूसरे पश्चिमी राष्ट्रों के साथ कोई आत्मीयता नहीं अनुभव करती थी। उस समय में भी उन्हें अपना शत्रु समझती थी। हम उन दिनों चोरों और सिपाहियों का जो सब जगह प्रचलित खेल था, खेला करते थे, जिसमें सदा पश्चिम की साम्राज्यवादी शक्तियों से चीनियों और सारे अच्छे एशियाई मित्र-राष्ट्रों का निरन्तर युद्ध चलता रहता था और उस खेल में एकमात्र अमरीकन होने के नाते मेरा यह कर्तव्य होता था कि मैं संघर्ष के चरम स्थिति में पहुंच जाने पर आगे आकर सदा विजयी रहने वाले चीनियों को

अनाज और अन्य सहायता दूं। इस प्रकार आधी शताब्दी पहले एशिया के बच्चे वह खेल खेलते थे जो बाद में यथार्थ रूप में सामने आया और यह बिलकुल एक संयोग ही था कि एक छोटी-सी पीले बालों वाली लड़की उनमें अमरीका की प्रतिनिधि मानी जाती थी।

परन्तु उन दोनों जगतों के बीच में मेरी गोद ली हुई चीनी बहिन के बच्चे थे। मेरे जन्म से वर्षों पहले, जब मेरे माता-पिता बड़ी नहर के किनारे के एक चीनी कस्बे में रहते थे, एक रात मेरी माता को एक मरणासन्न चीनी महिला के घर बुलाया गया। मेरी माता ने मुझे उसका नाम कभी नहीं बताया, पर मैं जानती थी कि वह एक पुराने और सम्पन्न चीनी परिवार के मुखिया की पहली पत्नी थी। मेरे पिता का इस परिवार के मुखिया से, विद्याध्ययन में दोनों की दिलचस्पी होने के कारण, परिचय हो गया और मेरे पिता ने उसे ईसाई बनाने का यत्न किया था। इस यत्न के सिलसिले में उन्होंने मेरी माता से अपने मित्र की पत्नी से मिलने के लिए कहा। मेरी माता उससे मिली और उन दोनों में आपस में इतना प्रेम हो गया कि जब एक आकस्मिक रोग के कारण उस महिला को यह दीखने लगा कि वह नहीं बचेगी, तब उसने मेरी माता को अपने पास बुलवाया और अपनी छोटी-सी लड़की उससे ले लेने के लिए कहा। उसे डर था कि यदि लड़की सौतों के पास रही तो वह कष्ट पाएगी। पिता की सहमति से वह लड़की मेरी माता को गोद लेने के लिए दे दी गई और मेरे माता-पिता ने उसे गोद ले लिया। उसका नाम त्सई युन, या मेघसुन्दरी था और मुझे उसका सुन्दर मृदु चेहरा याद है। मेरे जन्म के समय उसका विवाह हो चुका था और उसने लड़कियों के बड़े परिवार को जन्म देना आरम्भ कर दिया था, और यह बात उसके लिए बड़ी परेशानी का कारण बन गई थी। मेरी माता ने मेघसुन्दरी के लिए चीनी प्रथा के अनुसार कार्य किया था—जब उसने लड़कियों के मिशन स्कूल में अपनी शिक्षा पूरी कर ली, तब मेरी माता ने एक सुन्दर और शरीफ नौजवान से, जो मेरे पिता के सहायक पादरी का लड़का था, उसकी सगाई कर दी। यह बड़ा सुखद और बड़ा उपयुक्त विवाह था। वह नौजवान अपने पिता के पद-चिह्नों पर चला और धीरे-धीरे चर्च का स्तम्भ बन गया। एकमात्र परेशानी की बात यही थी कि नियमित रूप से उनके घर में लड़कियों का जन्म हो रहा था। पहली लड़की का उन्होंने स्वागत किया, एक वर्ष बाद दूसरी को शान्ति से ग्रहण किया, तीसरी पर वे उदास हुए, और चौथी

पर चिन्तित। जिस समय छठी लड़की हुई, उस समय उनकी स्थिति विषम हो गई। लोग पूछते थे कि यह क्या बात है कि ईसाइयों के लड़कियां ही लड़कियां होती हैं। अब क्योंकि तीसरी लड़की के बाद चर्च के लोग इस विषय में प्रार्थना किया करते थे, इसलिए अगला प्रश्न यह था कि ईश्वर हमारी प्रार्थना सुनता क्यों नहीं। विदेशी देवता के बारे में सन्देह पैदा होने लगा, और मेरे पिता, जिन्होंने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया था, दिन में कई बार 'ओह, प्शा !' कहा करते थे, जैसे कि परेशान होने पर कहने की उनकी आदत थी। हमारा परिवार इतना विनोदी था कि हमें इस स्थिति में कोई बेढंगापन नहीं दिखाई देता था, पर फिर भी हम इसकी गम्भीरता से पूरी तरह परिचित थे। सबसे अधिक पीड़ा मेरी सुन्दर, गोद ली हुई बहन को होती थी जो इसमें सारा अपना ही दोष समझती थी, और उसके पति की शराफत उस समय सबसे अधिक सामने आई जब उसने उसका दोष मानने मे इन्कार कर दिया। वह कम से कम ईसाई दृढ़ता का एक नमूना था, जैसा कि मेरे पिता कहा करते थे।

जहां तक मेरा प्रश्न था, मैं उन बच्चों से प्यार करती थी और उन्हें अपनी बहनों की भांति समझती थी। उनमें से बड़ी लड़कियां प्रायः मेरी ही आयु की थीं, और जब वे हमारे यहां आतीं या हम कुछ मील दूर उनके घर जाते, तो हमारा समय बड़े मज़ेदार खेलों में कटता। मैंने यह किस्सा अपने अमरीकन बच्चों के लिए एक छोटी-सी पुस्तक 'दि चाइनीज़ चिल्ड्रन नैक्स्ट डोर' में बयान किया है, और जिन्होंने वह पुस्तक पढ़ी है, उन्हें याद होगा कि इसका अन्त सुखद हुआ, क्योंकि छह लड़कियों के बाद मेरी खिन्न और उदास चीनी बहन ने एक सुन्दर लड़के को जन्म दिया। इसके बाद उस परिवार का बढ़ना बन्द हो गया। वह या उसका पति आठवें बच्चे का जोखिम उठाने को तैयार नहीं थे, जो सम्भव था कि फिर लड़की होती। मुझे यह याद करके प्रसन्नता होती है कि एक भारतीय मित्र ने मुझे बताया था कि जवाहरलाल नेहरू ने एक बार मेरी छोटी-सी पुस्तक महात्मा गांधी को, जो उस समय बीमार पड़े थे, पढ़कर सुनाई और इसपर वे बहुत हंसे, क्योंकि इसी तरह की चीज़ भारत में भी होती है।

बच्चे के लिए, यहां तक कि गोरे बच्चे के लिए भी, यह बड़ी सुखदायी दुनिया थी—और कोढ़ियों तथा भिखारियों और बीच-बीच में आने वाले अकालों के बावजूद, यह दुनिया सुखद थी, और जिन्हें आप चाहें तो हमारी शासक कह सकते हैं।

वे एक गौरवशाली वृद्ध महिला थीं, जो पेकिंग में रहती थीं। वे थीं 'राजमाता' या 'पूजनीय पूर्वजा' क्योंकि उनकी प्रजा उन्हें इसी नाम से पुकारती थी, और मैं समझती थी कि वे मेरी भी 'पूजनीय पूर्वजा' हैं। जब मैं आरम्भिक बाल्यकाल की बातें याद करती हूं, तब मेरे मन में सबसे प्रमुख चित्र राजमाता का आता है, और वे मुझे अपनी ऐसी परिचित लगती है जैसे मानो मैंने स्वयं उन्हें देखा हो। हर किसीको यह ज्ञात था कि वे कैसी लगती हैं और हमारे बचपन के खेलों में हर छोटी-सी चीनी लड़की उनके स्थान पर बैठने में गर्व अनुभव करती थी, और बैठने के लिए सिंहासन का काम हमारी पहाड़ी पर जगह-जगह बनी हुई ऊंची नोकदार मिट्टी की समाधियों में से किसी एक का घास-फूस भरा टीला देता था।

उस समय मैं अच्छी तरह नहीं जानती थी कि राजमाता चीनी न होकर मांचू थी। उत्तर के लोगों की तरह उनकी आंखें और बाल काले थे और त्वचा का रंग सुन्दर पीलापन लिए हुए था। वे अधिक ऊंची नहीं थीं, पर साटन की कामदार जूतियां पहनती थीं जिनके तले मांचू फैशन के अनुसार ऊंचे होते थे और उनके चमकते हुए काले बाल उनके सिर पर ऊंचे बंधे रहते थे, जिससे वे देखने में लंबी लगती थीं। जब वे पीकिंग में 'निषिद्ध प्रदेश' में पीली छत वाले राजमहल के सिंहासन वाले हाल में मोर की आकृति के राज्यासन पर, जिसका मंच कमरे के टाइलों वाले फर्श से कई सीढ़ियां ऊंचा था, बैठती थीं, तब सब यही कहते थे कि वे आदमी जितनी ऊंची लगती हैं। पर उनकी उच्चता मात्र शारीरिक ही न थी—वे गर्वीली और अटल इरादे वाली थीं, और उनकी दृष्टि के आगे हर कोई कांपता था। वे खतरनाक थीं, यह हम सब जानते थे। हमारे खेलों में सबसे सीधे छोटे भाई को तरुण सम्राट् का पार्ट करना पड़ता था जिससे राजमाता उसे डरा-धमका सके और कैदखाने में बन्द कर सके।

मुझे याद नहीं कि मुझे पहले-पहल कब यह पता चला कि राजमाता चीनी नहीं है, और कि बहुत से चीनी उस राजवंश को विदेशी समझते थे। मैं मांचू लोगों को जानती थी क्योंकि प्रत्येक महत्त्वपूर्ण नगर में उनके लिए विशेष रक्षित स्थान होता था और ऐसा एक स्थान चिकियांग में भी था। यह नगर के किनारे था और सारे मांचू मकानों के चारों ओर एक ऊंची दीवार घिरी हुई थी। सामने के बड़े दरवाज़े पर चीनी सन्तरी खड़े रहते थे और उनकी अनुमति के बिना कोई अंदर नहीं जा सकता था। ऊपर से यह कैदखाना नहीं था, बल्कि सिर्फ इस कारण था कि

मांचू लोगों को विशेष संरक्षण की ज़रूरत थी क्योंकि वे राजवंश से सम्बन्धित थे इसलिए राज्याधिकारी-समुदाय के अंग थे। व्यवहारतः यह सुख-सुविधापूर्ण कैदखाना था, क्योंकि शत्रुओं को जीतने का चीनियों का यही तरीका था। जब १६४४ का मांचू हमला सैनिक दृष्टि से सफल हुआ—और ऐसा लगता था कि सैनिक दृष्टि से कोई भी जाति चीन पर सफल हमला कर सकती है—तब चीन ने मुकाबला नहीं किया। लोग ऊपर से देखने से निष्क्रिय, कुछ-कुछ उत्सुक, और अपने विजेताओं के प्रति नम्र भी दिखाई देते थे। असली संघर्ष तो बाद में पैदा हुआ, पर इतने सूक्ष्म रूप में कि विजेताओं को यह कभी पता नहीं चला कि उन्हें जीता जा रहा है। विजय प्राप्त करने का ढंग यह था कि जैसे ही आक्रांता अपने हथियार रखते थे, वैसे ही दार्शनिक, परंतु अत्यधिक व्यवहारकुशल चीनी लोग उन्हें महलों में चले जाने और मौज से रहने के लिए कहते थे। नये शासक जितना अधिक खाते-पीते थे, चीनी लोग उतने ही अधिक प्रसन्न होते थे, और यदि वे जुआ खेलना, अफीम खाना और बहुत सी पत्नियां भी रखना चाहते तब तो उनकी नज़र में सोने में सुहागा ही था। देखने से ऐसा लगता था कि जैसे चीनी लोग हमला होने और विजित होने से प्रसन्न थे। अधिक सुविधा और आराम के नाम पर मांचुओं को किसी भी नगर के विशेष रूप से सुन्दर स्थान में रहने के लिए, और विद्रोही नागरिकों से रक्षा के निमित्त विशेष संतरियों के पहरे में रहने के लिए प्रेरित किया गया था। इसका अर्थ यह हुआ कि वे लोगों से अलग हो गए और क्योंकि उन्हें निकम्मे रहने के लिए प्रोत्साहित किया गया था, इसलिए शासन का असली और उलझनदार काम शीघ्र ही चीनी लोगों ने संभाल लिया था जो कहने के लिए, उनकी ओर से किया जाता था। इस निकम्मेपन और भोग-विलास के जीवन का परिणाम यह हुआ कि मांचू लोग धीरे-धीरे दुर्बल और अयोग्य होते गए और चीनी लोग शासनकार्य करते रहे। मांचू लोग पालतू बिल्लियों की तरह थे और चीनी लोग उन्हें ऐसे ही रखते थे, क्योंकि वे जानते थे कि जब इनकी गिरावट पूरी हो जाएगी, तब कोई चीनी क्रांतिकारी इस सड़े-गले ढांचे को उखाड़ फेंकेगा। क्रांति चीनी परम्परा में मौजूद थी, और प्रत्येक राजवंश या तो बाहरी हमले द्वारा, अथवा फिर चीनियों की क्रांतियों द्वारा उखाड़ फेंका जाता था।

मैं बचपन में निश्चय ही यह नहीं जानती थी कि मांचुओं का अन्त कितना निकट आ गया है। आठ वर्ष की आयु से पहले मैं यह नहीं जानती थी। वे आरम्भिक वर्ष

मेरे लिए साथ खेलने वाली मेरी छोटी-छोटी चीनी सहेलियो के लिए बेफिक्री के दिन थे। अब उन दिनो की बात सोचती हू तो वे सुख के सगीत-से मालूम होते है। मुझसे प्यार करने वाले बहुत से लोग थे—मेरे माता पिता कार्यव्यस्त रहने पर भी सदा मुझसे प्रेम से व्यवहार करते थे, और मेरी बात सुनने को तैयार रहते थे। चीनी नौकर बडा लाड-प्यार करते थे और उन्होने अदब-कायदो के मुकाबले मे सदा मेरा पक्ष लेकर मुझे बुरी तरह बिगाड दिया था। जब कभी मेरी माता जरूरी सजा के तौर पर मुझे कोई काम करने के लिए कहती, तब मेरे उदास मुह करने की देर होती कि मेरी चीनी आमा चुपचाप वह काम कर देती और यदि वह कार्य बाहर का होता तो माली या दूसरा लडका उसे कर देते और ऐसे झझट के समय रसोइया भी मेरी मदद करने को तैयार रहता। मेरी माता को अन्त मे यह राज पता चल गया और उसने उन्हे यह समझाने की कोशिश की कि असल मे वे मेरी मदद नही कर रहे और वास्तव म मुझे आत्मानुशासन का उचित पाठ सीखने से रोक रहे है, जिसके जवाब मे वे चकित होकर गुनगुनाते हुए यह कहते कि जरा-से बच्चे को क्या सारी बाते एकसाथ आ सकती है। उनका विचार था कि अनुशासन बडो के क्रोध का सूचक है और बच्चे को उससे बचाना ही चाहिए क्योकि गुस्सा खतरनाक आवेश है। मेरी मा ने उन्हे समझाना छोड दिया और वह मेरे जिम्मे ऐसे काम डालने लगी जो लाड-प्यार करने वाले चीनी मेरे बदले नही कर सकते थे, जैसे अग्रेजी शब्दकोश मे से शब्द ढूढकर उनके अर्थ लिखना, और इस-पर उन परेशान चीनियो ने जिस किसी तरह हो सका, मदद देने की कोशिश की और वे इस क्रूर मेहनत मे मुझे दिलासा देने के लिए चुपके से छिपाकर मिठाइया लाते, मुझे बाजार से खरीदकर लाया हुआ खिलौना इनाम देते, कागज के चम-कीले कपडो वाली मिट्टी की गुडिया या बास की सीटी या तीली के सिरे पर चिपका हुआ खाड का शेर देते।

एक बार, जब मै आठ साल की नही हुई थी, मेरे पिता ने झूठ बोलने पर मुझे कोडे से पीटा। इससे नौकरो की मडली मे और पडोसियो मे भी आतक फैल गया। मैने माली का फावडा तोड दिया था और फिर कह दिया था कि मैने नही तोडा, और कोडे की सजा रुकवाने के लिए दुखी माली ने कसम खा-खाकर यह कहा कि उससे खुद से फावडा टूटा है। पर मेरे पिता ने वह घटना देख ली थी, इसलिए मुझे कोडे और भी तेज़ी से और ज़ोर से पडे, और माली दरवाज़े मे खडा रो रहा था,

तथा खांड चढ़ी हुई मूंगफलियों की थैली से उसकी जेब उभरी हुई थी। इस तरह की चीज़ें खाने की मनाही थी क्योंकि उनमें उष्णदेशीय बीमारियों के कीटाणु छिपे होते थे, पर वे मुझे चुपचाप लाकर दे दी जाती थीं और मैं उन्हें बिना चिन्ता के खाती थी क्योंकि चीनी लोग उन्हें खाते थे, और ऐसा लगता है कि मुझमें उन्हींकी तरह रोग-प्रतिरोधक शक्ति पैदा हो गई थी क्योंकि मैं बहुत ही स्वस्थ बालक थी और औसत गोरे बालक को घेरे रहने वाली हर बीमारी से मुक्त थी। मैं समझती हूं कि मैं जानबूझकर अपने माता-पिता को धोखा न देती थी क्योंकि गोरों के बारे में—जो बड़ी आश्चर्यजनक आसानी से मर जाते या कम से कम रोगी हो जाते मालूम होते थे—वे जो कुछ कहते थे उसे मैं सच मानती थी, पर उन दिनों मैं अपने-आपको गोरा व्यक्ति नहीं समझती थी। यद्यपि मैं यह मानती थी कि मैं पूरी तरह चीनी नहीं हूं, पर फिर भी मैं इतनी काफी चीनी थी कि बाज़ार की मिठाइयां बिना किसी हानि के खा सकूं।

इस प्रकार मैं एक दोहरी दुनिया में बड़ी हुई—एक ओर मेरे माता-पिता की छोटी-सी गोरों वाली साफ-सुथरी प्रेस्बिटीरियन अमरीकन दुनिया थी और दूसरी एक विशाल, लाड़-चाव से भरी हुई, आनन्दपूर्ण, बहुत साफ-सुथरेपन से कुछ दूर चीनी दुनिया थी। इन दोनों में आपस में कुछ भी मेल-जोल नहीं था। जब मैं चीनी दुनिया में होती तब मैं चीनी होती, चीनी बोलती, चीनियों की तरह व्यवहार करती, चीनियों की तरह खाती और उनके जैसे ही विचार और भावनाएं रखती। जब मैं अमरीकन दुनिया में होती तब बीच का दरवाज़ा बन्द कर देती।

यह सच है कि चीनी दुनिया में हम प्रायः अमरीकनों की चर्चा किया करते थे। सौभाग्य से चीनी लोग मेरे माता-पिता से बड़ा प्यार करते थे, और दो-चार बद-किस्मत बातों के अलावा—जैसे मेरे पिता के बेढंगे लगने वाले बड़े-बड़े पांव और बहुत अधिक लम्बाई और मेरी माता का जल्दी गुस्से में आ जाने का स्वभाव—कोई ऐसी चीज़ नहीं थी जिसपर मुझे शर्मिन्दा होना पड़ता। मेरे पिता का एक दयालु आदमी के नाते आदर होता था पर दूसरे गोरे लोगों का ऐसा सौभाग्य नहीं था। और कभी-कभी उनके चरित्रों पर मज़े ले-लेकर और बारीकी से नुक्ताचीनी की जाती थी। गोरे लोगों और उनके गुप्त जीवनों के बारे में मुझे वे बातें मालूम थीं जिनका और किसी अमरीकन को पता नहीं था। मुझे पता था कि अमुक आदमी अपनी अलमारी में छिपाकर व्हिस्की की बोतल रखता है और अमुक औरत अपने

पति के साथ नही सोती। मुझे मालूम था कि एक बुजुर्ग महाशय, जो महात्माओ जैसे काम करते थे, भयकर अपचन के शिकार थे, और कि एक दूसरा, एकात-प्रेमी नौजवान, जो औरत मजूर करे उसीमे, यहा तक कि चौकीदार की औरत मे भी, प्रेम करने की कोशिश करता था। चीनी जगत् मे कोई भी चीज गुप्त नही थी, कोई भी राज़ छिपा नही रह सकता था। जो शब्द गोपनीय का वाचक था, उसका ही अर्थ 'गैरकानूनी' होता था। यह बडा मानवीय जगत् था जो हास-परिहास और करुणा से ओतप्रोत था, क्योकि जब हसी का आवेश थम जाता, तब कोई भलामानस बुजुर्ग चीनी सच्चे भाव से कहता, 'पर फिर भी ये ईसाई अच्छे लोग है। ये अपनी भरसक कोशिश करते है, और जो कुछ इन्हे पता नही है, उसके लिए इन्हे दोष नही देना चाहिए। आखिरकार ये चीनी होकर तो नही पैदा हुए। भगवान् का विधान ही ऐसा नही था।'

राजमाता चाहे जितनी यथार्थ मालूम होती थी, पर उनसे मेरा कोई सीधा सम्पर्क नही था। वे पीकिंग मे रहती थी, और मै यागत्से नदी के मुहाने से कोई दो सौ मील दूर एक विशाल प्राचीन नगर के बाहर रहने वाली एक अमरीकन बालिका थी। मेरा अपने पश्चिमी जगत् की ओर जाने का एकमात्र रास्ता शाघाई था। उस विविधतापूर्ण नगर मे होकर विदेशी आते और जाते थे, और धनी बने हुए डाकू तथा रिटायर हुए सेनापति वहा अग्रेजो या फासीसियो के सरक्षण मे रहते थे। पर प्रशान्त महासागर के उस द्वार से पीछे बसा हुआ सारा चीन पश्चिमी रग-ढग से सचमुच वहुत दूर था और इसी जगत् पर राजमाता शासन करती थी। वे मेरे लिए इस कारण और भी अधिक आकर्षक थी कि उनका जन्म राजघराने मे न होकर एक सामान्य परिवार मे हुआ था, उनका पिता एक मामूली अफसर था, और परिवार गरीब था, बचपन मे उन्होने कडी मेहनत की थी। सबसे बडी लडकी होने के नाते उन्हे छोटे बच्चो की देखभाल करनी पडती थी। फिर भी माचू होने के नाते उनमे एक विशेषता थी और अमरीकन होने के नाते मुझमे भी यह विशेषता थी—चीनी लोग उस समय अपनी लडकियो के पाव जिस तरह जकड दिया करते थे, उस तरह उनके पाव कभी नही जकडे गए थे, और वे स्वतन्त्र और मनमानी ढग से रहती हुई बडी हुई। जब वे सोलह वर्ष की हुई, तब बडी सुन्दर दीखने लगी, पर यदि वे सुन्दर न होती तो भी सब माचू लडकियो की तरह उन्हे सम्राट् के महल मे जाना पडता और निरीक्षण-काल तक वहा ठहरना पडता। यदि

वे राजा की सम्भावित रखेल के रूप मे चुन ली जाती तो उन्हे अपना घर और परिवार छोड़कर अपना बाकी जीवन उस 'निषिद्ध प्रदेश' मे ही बिताना पडता और उस रखेल को उसका मालिक चाहता तो अपनाता, और न चाहता तो कभी भी न अपनाता। यदि मालिक का उसकी ओर ध्यान न खिचता तो उसके लिए ही यह जीते ही जल मरने की सी बात होती, पर इस लडकी की ओर ध्यान खिचा और वह सम्राट् की चहेती रखेल हो गई और उसके एक पुत्र भी उत्पन्न हुआ, और फिर, क्योकि उसका जन्म सत्ता-सचालन के लिए हुआ था, इसलिए वह अपनी प्रकृति के बल से ही सत्ता की ओर वढ गई, और अन्त मे ससार के सबसे बड़े राज्य 'मिडिल किग्डम'—क्योकि पश्चिम वाले चीन को इसी नाम से पुकारते थे—पर शासन करने लगी। यह सफलता की एक रोमाचक कहानी थी और इसपर चीनियो ने इस औरत की प्रशसा की और उसके बहुत से उन बुरे कामो पर भी जो उसने बाद मे उनके विरुद्ध किए और जिनसे अन्त मे साम्राज्य की दीवारे धूल मे मिल गई—ध्यान न दिया।

हमे स्वप्न मे भी ऐसे विनाश का ख्याल नही था। जब मै उस पहली दुनिया की बात सोचती हू जिसे मै जानती हू, तब लगता है कि उसमे शान्ति ही शान्ति थी। मुझे हरे-भरे पहाड़ो और गुलाबी पर्वतो की एक परिधि-रेखा परली ओर दिखाई देती थी। हरी पहाडियो के बीच मे और भी हरी-भरी घाटिया थी जिसके इच-इच को किसान चार हजार वर्षों से जोतते आए थे। खेतो मे बने मकानो के दरवाजो के बाहर मछलियो से भरे तालाब थे और प्रत्येक परिवार के पास एक सूअर, कुछ मुर्गिया, एक मुर्गा और एक भैस होती थी। शहर की सडको पर भिखारी घूमते रहते थे, पर उस समय को छोडकर जब उत्तर मे अकाल के कारण शरणार्थी आ जाते थे, शहर के चोरो की तरह ही वे भिखारी भी पेशेवर होते थे। वे किसी भिखारी सरदार के अधीन सगठित रहते थे और सब दुकानदारो से कुछ भिक्षा, रोज नही तो नियमित अतर से, लेकर छोडते थे, और यदि कोई दुकानदार नियमित राशि न देता तो सबसे अधिक घृणित कोढी और विकृत चेहरे वाले भिखारी उसके दरवाजों के आगे बिठा दिए जाते जिससे उसके ग्राहक डर के मारे दूर रहे। पर भिखारी बनने का मतलब था एक नीचे दर्जे का जीवन स्वीकार करना, और इसमे भी नीचे दर्जे का जीवन था पेशेवर सैनिक का—वह और भी नीचे दर्जे का इस कारण था क्योकि सैनिक नष्ट करते है और खाते है पर पैदा नही करते।

पहाड़ियों और गांवों में भिखारी नहीं थे, पर वहां सैनिक थे । हमारे मकान के पास एक पहाड़ी की चोटी पर मिट्टी की दीवारों वाला एक किला था, और मैं सदा इस बात से आशंकित रहती थी कि कहीं चीनी लड़कियों के स्कूल जाते हुए, जहां मैं पढ़ने के लिए रोज़ जाया करती थी, सड़क पर मुझे कोई सैनिक न मिल जाए । यदि मुझे कोई ऐसा सुस्त आदमी अपनी पीली वर्दी पहने हुए सड़क पर मटरगश्ती करता दीख जाता तो मैं अपने घिरे हुए आंगन में दौड़ने वाले हिरनों से भी अधिक तेज़ चाल से दौड़ लगाती थी ।

'क्या बात है ?' मेरी माता ने एक दिन पूछा ।

'सिपाही है !' मैंने हांफते हुए कहा ।

'तो क्या हुआ ?' उन्होंने सीधे-सादे भाव से पूछा ।

मैं कुछ भी न बता सकी । वह छोटी-सी गोरों की दुनिया की रहने वाली थी, और वह नहीं समझ सकती थी, पर मेरी दूसरी दुनिया में मुझे यह सिखाया गया था कि सिपाही भले आदमियों की दुनिया के सभ्य अर्थ में आदमी नहीं होता । वह जीवन और घर के कानून से दूर रहता है और उसे पास देखकर लड़कियों को तेज़ी से भाग जाना चाहिए ।

बूढ़ी श्रीमती शेन ने एक दिन अपनी पोतियों के साथ मुझे पढ़ाते हुए कहा था, 'यह ठीक है कि हरेक सैनिक बदमाश नहीं होता, पर वह बदमाश न हो, यह भी कठिन है । उसका काम ही शैतानियत का है ।'

श्रीमती शेन हमारी पड़ौसिन थी और अपने क्षेत्र में वह उसी तरह रानी थी जैसे राजमाता पीकिंग के अपने महलों में । उसकी पोतियां मेरे साथ पढ़ती थीं, क्योंकि शेन-परिवार नये विचारों का था और उनकी छोटी लड़कियों के पांव न जकड़ने की चर्चा भी चल रही थी । बड़ी लड़कियों के पांव जकड़े हुए थे, और यद्यपि मैं उस कठिन प्रक्रिया का दर्द और पीड़ा प्राप्त करने के लिए उत्सुक नहीं थी जिससे हर पांव की उंगलियां मुड़कर तलवे के नीचे चली जाती थीं और पांव की एड़ी और गिट्टे मिलकर नीचे को मुड़ जाते थे फिर भी उन आरम्भिक दिनों में मैं कभी-कभी यह सोचा करती थी कि बड़े-बड़े पांव, अर्थात् न जकड़े हुए पांव रखकर मैं कहीं अपना अच्छा पति पाने के अवसर को तो खतरे में नहीं डाल रही । शेन परिवार की बड़ी लड़कियां अपने पांव खुलवाने की बात नहीं सोचती थीं, यद्यपि मेरी माता ने इस विषय में कुछ व्यावहारिक प्रचार-कार्य किया था । जब बाद में

उनमें से एक को एक ईसाई स्कूल में रहने भेजा गया, तब उसे पांवों की पट्टियां ढीली करनी पड़ती थीं और उसने मुझे चुपके से बताया कि हर रात वह उन्हें फिर कस-कर बांध लेती थी। उस दुनिया में स्त्री होना, और यदि सम्भव हो तो सुन्दर स्त्री होना, बड़े महत्त्व की बात थी और छोटे पांव स्त्रियों की सुन्दरता के लिए आव-श्यक थे, उनका चेहरा चाहे जैसा हो।

पीकिंग में राजमाता इस बारे में बड़ी सावधान रहती थी कि जिन चीनियों पर वह शासन करती है उनके रीति-रिवाजों में किसी भी तरह दखल न दिया जाए और जब एक बार एक मांचू राजकुमारी पश्चिमी पोशाक में विदेश से लौटी तब राजमाता ने उससे कहा कि मुझे वह चीज़ दिखलाओ जिसे पहनकर तुमने अपने हृष्ट-पुष्ट शरीर को कमर पर इतना पतला बना लिया है। राजकुमारी ने पेरिस फैशन का गाउन पहनकर खड़ी हुई अपनी दुबली-पतली पुत्री की ओर घूमकर कहा—

'बेटी, अपने कपड़े उतार दो और राजमाता को अपना कॉर्सिट (एक तरह की सख्त पेटी) दिखा दो।'

छोटी राजकुमारी ने आज्ञा का पालन किया और वृद्ध राजमाता ने इस्पात और भारी कपड़े की बनी हुई उस सख्त पोशाक का निरीक्षण किया।

वह बोली, 'दोनों यन्त्रणाओं में से, चीनी यन्त्रणा सहन करना अधिक आसान है।'

शायद इसी कारण कि मांचू शासक चीनियों के रीति-रिवाजों में दखल न देने के बारे में सदा सतर्क रहते थे। उनका राजवंश अपेक्षकृत अधिक देर चला। सच-मुच हमें अपने ऊपर कोई शासन होने का ध्यान भी नहीं आता था। हर ज़िला नगर में एक मजिस्ट्रेट या दंडाधिकारी होता था जो वाइसराय अर्थात् राजप्रतिनिधि का प्रतिनिधि समझा जाता था और हर प्रान्त का अध्यक्ष एक राज-प्रतिनिधि होता था जो राष्ट्र की राजधानी पीकिंग के शासक का प्रतिनिधि था। पर इन अफसरों का मुख्य कार्य यह देखना था कि प्रत्येक परिवार आज़ादी से अपना जीवन बिता सके। चीन की उस पुरानी दुनिया में मैंने कभी पुलिस वाला नही देखा था—और सच पूछो तो शांघाई आने से पहले कभी कोई पुलिस वाला ही नहीं देखा था। ब्रिटिश कनसेशन में भारत से लाए गए काले सिखों को, जिनके सिर गोल, चक्करदार और चमकीली पगड़ियों से ढके हुए थे, या फ्रेंच कनसेशन में चुस्त वर्दियों

वाले अनामी पुलिस वालों को मैंने घूर-घूरकर देखा था। मैं आश्चर्य से सोचा करती थी कि वे सड़कों पर खड़े होकर यातायात में क्यों बाधा डालते हैं और लोगों पर क्यों डंडे घुमाते हैं।

हमारी पहाड़ियों और घाटियों की दुनिया में और शहर में भी हमें पुलिस की कोई ज़रूरत नहीं थी। प्रत्येक परिवार समूह के प्रत्येक सदस्य को पूरे अनुशासन में रखता था और यदि कोई अपराध किया जाता तो परिवार के बुज़ुर्ग मिलकर बैठते और सज़ा का फैसला करते, जो कभी-कभी मौत की सज़ा भी होती थी। परिवार के सम्मान के लिए बच्चों को शिष्ट व्यवहार करना सिखाया जाता था और यद्यपि सात या आठ वर्ष के होने से पहले उनके साथ बड़ी नरमी का व्यवहार किया जाता था, पर उसके बाद वे मानवीय सम्बन्धों की उस नियमावली का पालन करना सीख जाते थे जो कनफ्यूशियस ने इतने स्पष्ट रूप में रख दी है।

हां, मेरे पश्चिमी माता-पिता सोचते थे कि चीनी बच्चे छोटी अवस्था में बेहद बिगड़ जाते हैं। बच्चों के हठ या मनमानी को कोई नहीं रोकता और जब कभी बालक रोने लगता है तभी उसे गोदी में उठा लिया जाता है और कोई न कोई अधिकतर समय उसे गोदी में लिए रहता है। बच्चे जो और जब चाहते, खाते और छोटे बालक स्वर्ग का सा जीवन बिताते हैं। चीनियों का विश्वास था कि बच्चों को छोटी अवस्था में ही उनकी इच्छानुसार रोने देना और उनके सब गुस्से और हास-परिहास को छोटी अवस्था में ही निकल जाने देना बड़े महत्त्व की बात है क्योंकि यदि इन्हें बल या डर से रोका या दबाया जाएगा तो गुस्सा खून में चला जाएगा और उनके हृदय को विषैला करेगा और बाद में बड़ा होने पर निश्चय ही बाहर निकलकर मुसीबत खड़ी करेगा। यह ज्ञान लगभग एक हज़ार वर्ष से चला आ रहा था और मनोरंजक बात देखिए कि लगभग ऐसी ही विचारधारा पश्चिमी जगत् में, जिसमें मैं आज रहती हूं, सबसे अधिक आधुनिक मानी जाती है।

गलत या सही, ये बिगड़े हुए बच्चे सात या आठ वर्ष की आयु में उसी तरह पुष्ट, मधुर स्वभाव वाले और स्वयं अनुशासन में रहने वाले होकर सामने आते थे जैसे कोयों से निकली हुई तितलियां। तब तक वे तर्कसंगत बात समझने और प्रचलित तरीके आपसे आप अपना लेने में समर्थ हो जाते। क्योंकि उन्हें बहुत जल्दी अनुशासन में नहीं बांधा जाता था, इसलिए जब वे सीखने की उमर में पहुंचते थे,

तब वे बड़ी तेज़ी से प्रगति करते थे। बाल-मनोविज्ञान के नवीनतम पश्चिमी विचारकों के विचार के सदृश ही पुराने चीनी लोग भी यह मानते थे कि जीवन का प्रत्येक नियम सीखने की एक उमर होती है और बहुत छोटी उमर के बच्चे को पढ़ाने का अर्थ है अध्यापक को थकाना और बच्चे को कुण्ठा में डालना। उदाहरण के लिए, बालक और माता-पिता, दोनों की अधिक सुविधा के लिए छोटे बच्चे गर्मियों में नंगे रहते थे और सर्दियों में उनके पाजामों के आसन बीच से कटे रहते थे जिससे जब टट्टी-पेशाब की हाजत हो, तब उस छोटे से प्राणी को केवल इतना ही करना था कि वह उकड़ूं बैठ जाए। इस प्रकार वह माता की डाट-डपट से बच जाता था जो बार-बार कपड़ा धोने से बचना चाहती थी। बच्चों को दरवाज़े से बाहर कुछ-कुछ देर बाद सुसकारकर टट्टी-पेशाब कराया जाता था। यह एक आनन्ददायक और कोमलतापूर्ण दुनिया थी जिसमें बालक अपनी मौज का जीवन बिताता था और उसे निश्छल प्यार करने वाले बहुत से लोग घेरे रहते थे जो उससे बदले में कुछ नहीं चाहते थे। पश्चिमी बालकों के बहुत परेशान पिता और माता की बजाय, मेरे आरम्भिक जगत् के बालकों का लाड़-दुलार करने के लिए दादा-दादियां, अनेक ताई-चाचियां, ताऊ-चाचा और चचेरे भाई-बहिन तथा नौकर हुआ करते थे। यदि वह बालक लड़का होता तो जब वह सात साल की आयु तक पहुंचता तब उसके जीवन में एक और भी व्यक्ति महत्त्वपूर्ण हो जाता। यह था उसके स्कूल का अध्यापक। चीनी दुनिया में बाल्यकाल और किशोरावस्था में अध्यापक का स्थान माता-पिता के बाद होता था। बालक की न केवल बौद्धिक शिक्षा की, बल्कि उसकी नैतिक उन्नति की भी, ज़िम्मेदारी उसपर थी। शिक्षा न केवल पढ़ाई, लिखाई और गणित सीखने के लिए थी, न केवल इतिहास, साहित्य और संगीत के लिए थी, बल्कि आत्मानुशासन और उचित आचरण सीखने के लिए भी थी। और उचित आचरण का अर्थ यह था कि विभिन्न स्थितियों और सम्बन्धों वाले अन्य सब व्यक्तियों के किए जाने वाले व्यवहार को पूर्ण-रीति से सीखकर उसपर आचरण किया जाए। ऐसी शिक्षा का फल था आन्तरिक निश्चिन्तता। बालक दादा-दादियों और माता-पिता, ताऊ-चाचों और ताई-चाचियों, बड़े और छोटे चचेरे और सगे भाइयों और बहिनों तथा नौकरों—इन विभिन्न आयु के लोगों के साथ व्यवहार करना तो घर में सीखता था, और गुरु, मित्रों, अफसरों और पड़ोसियों के साथ व्यवहार करना स्कूल में सीखता था। इस तरह की शिक्षा पा लेने

पर, बड़ा होने पर उसे किसीसे व्यवहार करने या बोलने के तरीके के बारे में कोई अनिश्चय या परेशानी नहीं होती थी। आवश्यक नियम बड़े सरल थे और शताब्दियों के चलन से निखर गए थे, और इस प्रकार बढ़ता हुआ व्यक्ति संतुलित और शान्त होता था।

घरों में भी इसी ढंग की व्यवस्था होती थी। हम बच्चों को यह पता था कि कमरे में आने पर हमें कहां बैठना है; हम जब तक स्वयं न बड़े हो जाएं, तब तक बड़ों के स्थान पर नहीं बैठते। हर वर्ष बढ़ने के साथ, हम जानते थे कि हमें कुछ अधिकार प्राप्त होंगे। और यदि हम बहुत जल्दी, समय से पहले इन अधिकारों का दावा करने लगते तो दूसरे लोगों की नज़र में हम छोटे हो जाते। इसलिए हम यह जानते हुए धीरज रखते थे कि समय पर हमें चीज़ें प्राप्त हो जाएंगी। एक ओर तो मेरा उस दुनिया का जीवन है—वह कितना आसान जीवन था जिसमें मुझे बिना किसी के कहे या डांटे-डपटे, यह ठीक-ठीक पता था कि मुझे क्या करना है—और दूसरी ओर अब मेरे बच्चों को मेरी मौजूदा दुनिया में रहना पड़ता है! उदाहरण के लिए, मेरे अमरीकन बच्चों को यह न जानने के कारण कितनी परेशानी होती है कि कोई आदमी अपने पहले नाम से पुकारा जाना चाहता है या अपने अन्तिम नाम से। मैं एक परिवार को जानती हूं जिसके बच्चे अपने माता-पिता को उनके प्रथम नामों से पुकारते हैं और उन बच्चों के दिलों में मौजूद परेशानी मुझे महसूस होती है। सम्बंधों की धारणा स्पष्ट नहीं है और इसलिए उन्हें यह पता नहीं कि पीढ़ियों के क्रम में वे किस जगह आते हैं। वे जानते हैं कि वे वयस्क नहीं हैं। वे जानते हैं कि वयस्क लोग बच्चे नहीं हैं। फिर भी उनके आपस के बीच का अंतर वैसा स्पष्ट नहीं है जैसा होना चाहिए, और इससे बच्चों के मन में आशंका बनी रहती है।

मेरी आरम्भिक दुनिया में हम सबको यह सिखाया जाता था कि हम अपने बड़ों के बैठने से पहले न बैठें. उनके खा लेने से पहले न खाएं, उनके प्याले उठने से पहले चाय न पिएं। यदि कुर्सियां काफी न होतीं, तो हम खड़े रहते थे। और जब कोई बड़ा, कितने ही हंसी-खेल में, हमसे कुछ कहता, तब हम उचित सम्बोधन से ही उत्तर देते थे। क्या इससे हमें तंगी अनुभव होती थी? मैं निश्चय से कहती हूं कि नहीं होती थी, और न कभी यह शब्द ही हमारे मन में आया। हम जानते थे कि हम कहां हैं, और हम यह भी जानते थे कि किसी दिन हम बड़े हो जाएंगे।

और स्कूल! हम सबको स्कूल का बड़ा शौक था। और हम जानते थे कि

स्कूल जाना, विशेष रूप से लड़कियों के लिए, एक विशेष अधिकार है। अधिकतर लड़के और लड़कियां तो निश्चय ही कभी स्कूल नहीं जा सकती थीं। वृद्ध राजमाता बाद में लड़कियों के स्कूल जाने के पक्ष में हो गई थी। पर वह कहती थी कि मैं सार्वजनिक स्कूलों के लिए आवश्यक धन-राशि जुटाने के लिए टैक्स बढ़ाने से डरती हूं। तो भी पश्चिमी देशों के स्कूलों की बात सुनने के बाद उन्होंने एक आदेश भेजकर लड़कों की तरह लड़कियों की शिक्षा का भी समर्थन किया और इसके परिणामस्वरूप बहुत सारे प्राइवेट स्कूल खुले। आजकल जब मैं अनिच्छा से मजबूरन स्कूल जाते हुए बच्चों को देखती हूं तब यह सोचा करती हूं कि क्या अनिवार्य शिक्षा सचमुच शिक्षित करती है। मेरी पहले की दुनिया में स्कूल जाना एक मूल्यवान् अवसर होता था और यह कहना कि हम स्कूल जाते हैं, अपने-आपको शिक्षितों के उच्चवर्ग का सदस्य बताना होता था।

कारण यह कि उस चीनी जगत् में हमारी वर्गचेतना केवल शिक्षा के आधार पर थी और शिक्षा का उद्देश्य मानसिक उन्नति ही नहीं था, नैतिक चरित्र भी था। हमारे अध्यापक हमें यह बात समझाते थे और सचमुच इस बात पर विश्वास करते थे कि सुशिक्षित व्यक्ति में ऊंचे विचार और नैतिक दृढ़ता होती ही है। अज्ञानी और अनपढ़ को बहुत कुछ माफ कर दिया जाता था। पर शिक्षित पुरुष या स्त्री की, जो पुराने कन्फ्यूशियस वाले अर्थ में राजकीय वर्ग के ऊंचे व्यक्ति समझे जाते थे, कोई दुष्टता या मूर्खता माफ नहीं की जाती थी। कभी प्लेटो ने भी यह पाठ पढ़ाया था।

क्योंकि शिक्षा में बौद्धिक ज्ञान की तरह नैतिक आचरण पर भी ध्यान दिया जाता था, इसलिए देश के शासनाधिकारी शिक्षित लोगों में से चुने जाते थे। और जो शिक्षित व्यक्ति शासन में अच्छे पद पाने के इच्छुक होते, उन सबको राजकीय परीक्षाओं के तंग दरवाज़े से अवश्य गुज़रना पड़ता था। परीक्षाओं की सामग्री बढ़िया जांच-सामग्री होती थी, जिसमें विचार के साथ-साथ स्मृति की परीक्षा भी होती थी और इतिहास, साहित्य और काव्य का अध्ययन आवश्यक होता था। सबसे अधिक अंक पाने वाले सरकारी प्रशासन के लिए चुने जाते थे और क्योंकि स्वभावतः सर्वश्रेष्ठ मस्तिष्क वाले ही सबसे अधिक सफल होते थे, इसलिए यह अनिवार्य ही था कि उत्कृष्ट लोग ही जनता के वास्तविक शासक बनें। आधुनिक काल के तुक्केबाज़ी के तरीके उस पुरानी व्यवस्थित दुनिया में कभी भी स्वीकार न किए जाते

थे। चीनियों की राजकीय परीक्षाओं से ही अंग्रेज़ों ने सिविल सर्विस परीक्षाओं की पद्धति ग्रहण की और बाद में यूनाइटेड स्टेट्स ने अंग्रेज़ी पद्धति के आधार पर हमारी अपनी सिविल सर्विस खड़ी की।

मुझे इस बात की खुशी है कि मेरे आरम्भिक वर्ष एक व्यवस्थित दुनिया में बीते क्योंकि यद्यपि वह दुनिया गुज़र चुकी, फिर भी स्मृति में अब भी यह बात कायम है कि बालक के लिए ऐसी दुनिया में रहने का क्या अर्थ है जिसमें बड़े लोग शान्त और स्थिर तथा निश्चिन्त होते थे और बालकों को उन सीमा-रेखाओं का पता रहता था, जिनका उल्लंघन वे नहीं कर सकते थे, परन्तु उन सीमाओं के भीतर वे निश्चिन्त जीवन बिताते थे। मेरे माता-पिता का काम था अपने धर्म का उपदेश और प्रचार, और वे उसमें लगे रहकर प्रसन्न थे, और इस प्रकार वे अपनी पुत्री के मार्ग में बाधक नहीं होते थे। वे मुझे कुछ सबक याद करने को देते। ये सबक मेरे अपने देश के बारे में होते थे जिनकी शिक्षा चीनी स्कूल में नहीं मिल सकती थी। अमरीकन इतिहास और साहित्य, इंगलैंड और यूरोप तथा प्राचीन ग्रीस और रोम का इतिहास और साहित्य मुझे याद करना होता था, और मैं स्वीकार करती हूं, जिस दुनिया में मैं रहती थी उसके साथ इन देशों का कुछ भी सम्बन्ध नहीं मालूम होता था। अकेला बालक पाठ जल्दी याद कर लेता है लेकिन मेरा तो अधिकतर दिन खेलने और कल्पना के आकाश में उड़ने के लिए खाली होता था।

मैं क्या बताऊं कि आजकल अपने बच्चों के बहुत अधिक व्यस्त जीवन मुझे कैसे चुभते हैं, जिनका हर घण्टा स्कूल, खेल तथा विभिन्न प्रकार की सामाजिक घटनाओं से भरा रहता है। उन्हें ऐसे खाली लम्बे-लम्बे दिनों के आनन्द का कहां पता चल सकता है जिनमें आपको अपने मनचाहे काम के अलावा और कुछ नहीं करना। तब कल्पना-शक्ति जीवन के वृक्ष की तरह, वायुमण्डल को मुग्ध करती हुई विकसित हो जाती है। कोई आश्चर्य की बात नहीं कि मैं सुखी बालिका थी और मेरे माता-पिता भी सुखी थे। हम बहुत थोड़ी देर के लिए मिलते थे, मुस्कराते थे और खाने और कपड़े के आवश्यक विषयों और दिन के मेरे छोटे-मोटे कामों के बारे में वे मुझसे बातचीत करते थे। मेरी मां मुझसे कन्धे सीधे रखने के लिए कहती थी और मेरे पिता भोजन की मेज़ पर मुझे टोकते थे कि मैं छुरी और कांटा उनकी तरह पकड़ा करूं। छुरी और कांटे के इस विषय में मेरा मन दुविधा में रहता था, क्योंकि मेरी मां अमरीकनों की तरह खाती थी। मांस का टुकड़ा काटकर छुरी रख देती और फिर

कांटा उठाती। पर मेरे पिता अंग्रेज़ लोगों की तरह खाते थे—कांटा अपने बाएं हाथ में और छुरी दाएं हाथ में पकड़कर काटे हुए टुकड़े को अपने कांटे के सहारे खड़ा कर लेते थे। दोनों मुझे अलग-अलग निर्देश दिया करते थे और मैं कभी एक की बात मानती और कभी दूसरे की, और बच्चों की तरह, पहले अपने माता-पिता के अंतर पर चकित हुआ करती थी, और फिर उसे स्वीकार कर लेती थी और हर भोजन के समय अवसर के अनुसार व्यवहार करती थी। वैसे मेरी अपनी पसन्द थी दो तीलियां (जो चीनी लोग छुरी-कांटे की जगह प्रयोग में लाते हैं—अनुवादक)।

परन्तु मेरी आरम्भिक स्मृतियां माता-पिता के बारे में न होकर स्थानों के बारे में थीं। हमारे बहुत बड़े सफ़ेद पुते हुए ईंटों के बंगले के चारों ओर ठंडक के लिए गहरी मेहराबों वाले बरांडे थे। इसमें मेरी पसन्द के कई स्थान थे। बरांडे के नीचे दबी हुई मिट्टी ठण्डी और सूखी होती थी और मैं वहां बैठा करती थी। माली ने एक बड़े स्टैंडर्ड आयल के टीन को एक तरफ से काटकर मेरे लिए एक अंगीठी बना दी थी। उसके भीतर तीन ओर उसने चूना मिला हुआ गारा लगा दिया था और फिर उसमें एक मोटी-सी जाली जमा दी थी। जब इसके नीचे मैं आग जलाती थी और उसपर कोयले डाल देती थी, तब मैं सचमुच खाना पका सकती थी, और मैं सरल चीनी भोजन ही पकाया करती थी जो मुझे बहुत पसन्द थे और मेरी आया ने मुझे सिखाए थे। मेरे पास कुछ गुड़िया थीं, पर मेरे 'बच्चे' नौकरों के या पड़ौसियों के छोटे बालक होते थे, और इस प्रकार खेलने में हमारा समय बड़े आनन्द से गुज़रता था। किसी बड़े की निगरानी हमपर नहीं होती थी। खुशकिस्मती से वे सबके सब इतने व्यस्त होते थे कि हमारी ओर ध्यान नहीं दे सकते थे। मुझे याद है कि मैं पूरे सन्तोष से भरी हुई, रात को बिस्तर पर लेटती थी क्योंकि सारा दिन मज़ेदार खेलों से इतना व्यस्त रहता था।

उन बरांडों के नीचे मैं अपने पालतू तीतर रखा करती थी, और वहां मैं हलके पीले और सलेटी रंगों के अण्डों से निकलकर बाहर आते हुए भूरे रुओं वाले छोटे-छोटे बच्चों को देखा करती थी और वहीं मैंने पहली बार सिगरेट पी थी, जो मेरी उस दुनिया में बिल्कुल अज्ञात बात थी। इसकी शुरुआत मुझे एक अतिथि मिशनरी के, जो कुछ समय पहले ही अमरीका से आया था, लाल बालों वाले छोटे-से लड़के ने कराई थी।

'अमरीका में सब बच्चे सिगरेट पीते हैं', उस बदमाश ने मुझसे कहा था। और

इस प्रकार हम लोग उस समय जालीदार तहखानों में सिगरेट पा रहे होते थे जिस समय हमारे बुज़ुर्ग लोग ऊपर के कमरों में बैठकर धर्मग्रन्थों की चर्चा में व्यस्त होते थे। पर मेरे लिए यह विशेष उत्तेजना देने वाली बात नहीं थी क्योंकि मेरी दूसरी दुनिया में कोई भी बालक दादा के हुक्के से एक कश लगा सकता था और जब कच्चे चीनी तम्बाकू के धुएं से बालक खों-खों करते, तब बड़े केवल हंसते थे। यह तो मैं जानती थी कि अफीम मुझे कभी मुंह से नहीं लगानी चाहिए, चाहे कभी-कभी वह मेरी सबसे प्रिय सहेली के माता-पिता द्वारा पेट में दर्द के लिए ही दी जाए, क्योंकि अफीम बुरी चीज़ थी। मेरे माता पिता कई अफीमचियों को अफीम के बन्धन से मुक्त करने की कोशिश में घण्टों खर्च करते थे। और मैं इस मीठी और रोगी करने वाली वस्तु से डरती थी क्योंकि बच्चों की तरह मैं यह कल्पना करती थी कि यदि मैंने इसे एक बार भी जीभ से लगाया तो मैं अपनी पड़ौसिन सहेली के पिता की तरह दुबली और पीली हो जाऊंगी और फिर कभी अपने असली रूप में न आ सकूंगी।

अफीम के बारे में कुछ और भी बात थी। हमारे शहर पर, जो नदी के किनारे वाले खेतों और तालाबों तथा मैदान से परे था, एक बार अफीम-युद्धों के दिनों में, जुलाई १८४२ में, अंग्रेज़ों ने कब्ज़ा कर लिया था—ये युद्ध तब हुए थे जब चीन ने अंग्रेज़ी झण्डे के नीचे भारत से आने वाली अफीम का अपने यहां प्रवेश रोकने की कोशिश की थी और वह असफल रहा था। उन वर्षों में हमारे नगर की रक्षा की ज़िम्मेदारी मांचू सेनापति हाइ लिंग पर थी। और पराजय को अपने ऊपर कलंक महसूस करके वह अपने घर में घुस गया और उसने उसे आग लगा ली—इस प्रकार वह खत्म हो गया। अंग्रेज़, जो अपनी आमदनी कम होने पर क्रुद्ध थे, अपने व्यापार करने के अधिकार पर बल दे रहे थे, और उनका यह कहना था कि चीनियों को अफीम की आदत हमने नहीं डाली, अफीम चीन की धरती पर बोई जाती है और लालची चीनी व्यापारी सारी आमदनी स्वयं ही हड़प जाना चाहते हैं। शायद यह बात अंशतः सच थी क्योंकि मालूम होता है कि इस जीवन में कोई भी चीज़ अपने बिलकुल साफ रूप में नहीं होती और मनुष्यों के दिलों में हमेशा मिले-जुले भाव होते हैं। फिर भी बहुत सारे चीनी ऐसे थे जो व्यापारी नहीं थे और जो पूरी ईमानदारी से अपने देश के लोगों में अफीम पीने में बहुत अधिक वृद्धि होने से भयभीत थे। और यह भी सच था कि अधिकतर अफीम, विशेषकर सस्ते किस्म की, भारत से ही आती थी, और वह भी न केवल अंग्रेज़ी झण्डे के नीचे, बल्कि डच और

अमरीकन झण्डों के नीचे भी आती थी। मेरे उत्साही माता-पिता पूरी तरह चीनियों के पक्ष के थे, और उन्होंने अनेक पुरुषों और स्त्रियों से अफीम की आदत छुड़ाने के लिए भरसक कोशिश की।

यहां यह बता देना उचित होगा कि अफीम का प्रयोग चीन में अपने-आप नहीं आरम्भ हुआ था। इसे पहले-पहल मध्ययुग में अरब व्यापारी वहां लाए थे, और उस समय यह दस्तों और आंत के रोगों में उपयोगी दवा के रूप में लाई गई थी। चीनियों ने अफीम पीना तब शुरू किया जब पुर्तगीज़ व्यापारियों ने सत्रहवीं शताब्दी में उन्हें यह सिखाया, जबकि यह अफसरों और धनी आदमियों का समय काटने का एक फैशनेबल साधन हो गया। मेरे बचपन के दिनों में भी बहुत से चीनी इसे एक विदेशी आदत समझते थे और सच्ची बात तो यह है कि उन्होंने इसका नाम ही 'यांग यिएन' या 'विदेशी तम्बाकू' रखा हुआ था। इसलिए औसत चीनी की भावनाएं तब तक अधिक अच्छी तरह समझी जा सकती हैं जब यह ध्यान रखा जाए कि अंग्रेज़ों के व्यापार में बहुत बड़ा हिस्सा अफीम के व्यापार का था, जो चीन में बनाए गए बाज़ारों के लिए पैदा की जाती थी।

अफीम के युद्धों में चीनी लोग हार गए, और प्रत्येक हार के बाद उन्हें भारी कीमत चुकानी पड़ी। संधि में उल्लिखित बन्दरगाह देने पड़े। व्यापार और वाणिज्य के अधिकार मांगे गए और देने पड़े और भारी हरजाना चुकाना पड़ा। यह कहानी चीन के किसी भी अच्छे इतिहास में पढ़ी जा सकती है और मैं इसे यहां नहीं दोहराऊंगी, पर इतना अवश्य बताऊंगी कि इसका मेरी दुनिया पर क्या प्रभाव पड़ा। युद्धों का मेरे निवास के नगर चिंकियांग पर गहरा असर पड़ा था, हालांकि यह अब भी एक महत्त्वपूर्ण नगर था क्योंकि यह यांगत्से नदी और बड़ी नहर के संगम पर स्थित था, और इसलिए टैक्स का धन और पैदावार पीकिंग भेजने के लिए इसकी स्थिति महत्त्वपूर्ण थी। एक पुराने लेखक जे० बैनो ने अपनी पुस्तक 'ट्रैवल्स इन चाइना' में मेरे चीनी निवास-नगर के बारे में १७९७ में ये शब्द लिखे थे: 'युद्ध के माल ढोने वाले और सैर-सपाटे के सैकड़ों जहाज़ तैर रहे थे—कुछ प्रवाह से नीचे की ओर और कुछ ऊपर की ओर; कुछ चप्पुओं से चल रहे थे और कुछ लंगरों पर बंधे थे; जहां तक नज़र जाती थी, वहां तक दोनों किनारों पर बस्तियां और मकान ही दिखाई देते थे; यह दृश्य ऐसा विचित्र और आनन्ददायक था जैसा इससे पहले मैंने नहीं देखा था। दूसरी ओर नहर भी कम रौनकदार नहीं थी, क्योंकि पूरे दो दिन तक

हम अलग-अलग बनावट और परिमाण के जहाज़ों के बेड़ों के पास ही घूमते रहे।'

परन्तु मेरे समय में चिंकियांग संधि में दिया गया नगर था और नदी के किनारे वाला भूमिखण्ड एक ब्रिटिश कन्सेशन था। इसके चारों ओर ऊंची-ऊंची दीवारें थीं जिनमें दो लोहे के बड़े-बड़े दरवाजे लगे थे जिनमें रात को सदा ताले पड़े रहते थे। दीवारों के अन्दर ब्रिटिश वाणिज्यदूत, जिसका बहुत बडा मकान जंगल से आच्छादित एक पहाड़ी की चोटी पर बना हुआ था, और सब अंग्रेज तथा अन्य विदेशी रहते थे। केवल कुछ मिशनरी परिवार इसके बाहर थे, जो चीनियों के बीच रहना पसन्द करते थे। मेरे माता-पिता इन्हीमें थे। जिस बात पर वे स्वयं आचरण नही करते थे, उसका उपदेश देना उनके लिए अपनी प्रकृति के कारण असम्भव था। प्रेम तथा भाईचारे के सिद्धान्त और अफीम-युद्धो के परिणामों का अन्तर उनके लिए बहुत अधिक था। वे ऊची दीवारों और लोहो के दरवाजों के पीछे सुख से नही रह सकते थे यद्यपि वहा सडकों सफाई और पेडों की छाया थी और भिखारियों को नही जाने दिया जाता था। मेरे लिए बडी खुशी की बात थी कि मेरे ऐसे माता-पिता थे। क्योंकि एशिया मे गोरो के सकीर्ण और रूढिबद्ध जीवन की अपेक्षा मैं चीनी लोगों के साथ अधिक रहती थी, और अपनी भाषा बोलने से पहले उनकी भाषा बोलने लगी थी, और उनके बच्चे मेरे सबसे पहले मित्र बने।

क्या मैं ऐसे दृश्य नही देखती थी जो बच्चो को नही देखने चाहिए, और ऐसी बातें नही सुनती थी जो बच्चो को नही सुननी चाहिए ? यदि मैं ये चीजे देखती और सुनती थी तो मुझे वे याद नही है। एक अकाल के साल मैंने गरीब और भूखे मरते हुए लोग देखे थे। पर मेरे माता-पिता ने मुझे सहायता-कार्य मे मदद देने का आदेश दिया और मुझे शीघ्र ही यह पता चल गया कि कष्ट और मुसीबत को सदा हल्का किया जा सकता है, यदि वैसा करने की इच्छा हो, और इस ज्ञान के कारण मैं अपने सारे जीवन मे निराशा से बची रही हू। मै अनेक बार कोढियों को देखती थी जिसका मांस हड्डियों से हट चुका होता था और मै पहाडी पर पड़े हुए मृत बच्चे देखती थी जिनका मास जगली कुत्ते नोच रहे होते थे। और जब पुरुष और स्त्रियां लड़ते थे, तब मै बहुतेरे बदमाश देखती और बड़ी जबरदस्त गालियां सुनती थी। इन दृश्यों और आवाजो से कोई बुरी आदत सीखने की बात मुझे याद नहीं। मृतों से मुझे उनसे न डरने की शिक्षा मिली। और जब मैं कुत्तो को भगाने के लिए जोर से उनका पीछा करती थी तब मेरा हृदय और भी कोमल हो जाता।

अनिवार्य गहराइयों को जल्दी ही सीख लेना अच्छा है क्योंकि तब दुःख और मृत्यु जीवन में अपना उचित स्थान ग्रहण कर लेते हैं और आदमी डर से छूट जाता है।

क्या बताऊं, मैं वहां कितना अधिक आनन्द देखती और पाती थी! हमारे चीनी मित्र मुझे अपने घरों और जीवनों में प्रविष्ट कराते और उनकी वह आश्चर्य-जनक सरलता और सादगी, जो दीर्घ-काल तक रहने से पैदा हो जाती है, सदा मेरे साथ उनके सब सम्बन्धों पर एक मृदु आभा बखेरती रहती थी। घर पर नौकरों का स्निग्ध व्यवहार प्रेमपूर्ण होता था और उसी प्रकार हमारे चीनी पड़ौसियों की मैत्री भी प्रेमपूर्ण होती थी। उनका हास्यपूर्ण कुतूहल, हमारे पश्चिमी तरीकों के बारे में उनका लज्जाहीन अज्ञान, हमारा मकान, हमारा खाने और कपड़े पहनने का ढंग देखकर उनकी प्रसन्नता, ये सब बातें दिन भर मनोविनोद की सामग्री बनी रहती थीं। यदि मैं उनसे कुछ भिन्न प्रकार की थी तो मैंने कभी ऐसा अनुभव नहीं किया और मुझे, हम जो कुछ थे, उसके प्रति उनमें कभी ज़रा भी अरुचि दिखाई नहीं दी।

इसके अधिकांश का श्रेय मेरे माता-पिता को था, जो अपने शान्त तरीके से रहते हुए विभिन्न जातियों के लोगों में कोई भेदभाव नहीं करते थे। उन दिनों मैं एक अपने ही मिशनरी परिवार को ऐसा जानती थी जो चीनी अतिथियों को प्रस-न्नता से रात में अपने अतिथि-कक्ष में और अपने साथ मेज़ पर खाने के लिए कहकर प्रसन्न होता। मैं समझती हूं कि अंशतः इसका कारण यह था कि मेरे माता-पिता स्वयं सुसंस्कृत व्यक्ति थे और इसी प्रकार के चीनी उनकी ओर आकृष्ट हुए थे। वे असंस्कृत और अज्ञानी चीनी को उतना ही नापसन्द करते थे जितना उस व्यक्ति को गोरा या अमरीकन होने पर करते। और इस प्रकार आरम्भ में ही मैंने उनके उदाहरण से नर-नारियों को उनकी जाति या सम्प्रदाय के बजाय चरित्र और बुद्धि से जांचना सीख लिया। ये मूल्यांकन स्थायी महत्त्व के होते थे, और चीनियों के लिए भी ये स्वाभाविक थे।

मैं अपने उन बचपन के दिनों को फिर कैसे बुला सकती हूं? मैं सवेरे बड़े भोर में उठती थी, क्योंकि मेरे पिता ऐसा चाहते थे। वे पांच बजे उठते थे और नहाने और कपड़े पहनने के बाद एक घण्टे तक अपने पढ़ने के कमरे में प्रार्थना करते थे। इसके बाद, वे आशा करते थे कि नाश्ते की मेज़ पर उनका परिवार उनकी प्रतीक्षा कर रहा होगा। यदि वहां कोई न होता तो वे हमारी अण्डाकार

टीक की मेज़ के सिरे पर—उस सुन्दर मेज़ की स्मृति मेरे मन से कभी नहीं मिट सकती—नहीं बैठते थे। वे वहां, सीधे और स्थिर खड़े रहते थे। उनकी नीली आंखें कमरे के पार ऊंची खिड़कियों से परे प्रकृति की शोभा में मग्न हो जाती थीं। जब कोई छोटी-सी लड़की दरवाज़े में से जल्दी-जल्दी आकर हांपती हुई अपनी कुर्सी पर बैठ जाती, तब वे बैठते थे और उनके साथ हम भी बैठ जाते थे। इसके बाद वे भोजन से पहले की प्रार्थना करते थे और वह असावधानी से जैसे-तैसे नहीं, बल्कि पहले एक मिनट मौन रहकर, गम्भीर आवाज़ में, जो उनकी प्रार्थनाओं की विशेषता थी, वे भगवान् की कृपा की याचना करते और सदा यह प्रार्थना करते कि यह भोजन हमें भगवान् की इच्छा पूरी करने की शक्ति दे।

भोजन सादा होता था, पर मुझे लगता है कि वह सदा अच्छा होता था। सवेरे के समय, गर्मियों के अलावा और ऋतुओं में, हम संतरे खाते थे। वे सुन्दर मीठे संतरे जो जहाज़ों द्वारा फुकिएन से लाए जाते थे—जैसे संतरे वहां पैदा होते हैं वैसे मैंने कहीं नहीं देखे, यद्यपि मैं कैलिफोर्निया के बगीचों के संतरे भी देख चुकी हूं। वहां बहुत तरह के संतरे होते थे। सर्दियों में चिपके हुए छिलके वाले कैंटन के संतरे होते थे और मंडारिन संतरों या टैंजरीनों की एक दर्जन किस्में होती थीं और बड़े-बड़े अलग छिलके वाले संतरे होते थे। पर सबसे बढ़िया संतरे वे होते थे जो 'मी चू' या मधु-संतरे कहलाते थे, जो जनवरी के अंत या फरवरी में चीनी नव-वर्ष के दिनों में आते थे और प्रायः नव-वर्ष के उपहार के रूप में हमारे पास भेजे जाते थे। उनसे छिलका आसानी से उतर जाता था और प्रत्येक फांक छूते ही अलग हो जाती थी और हर फांक में मीठा रस और बढ़िया महकदार लुगदी ऐसी भरी रहती थी कि इस फल को खाकर मुझे एक विशेष आनन्द मिलता था। मुझे याद है कि संतरों की लम्बी फसल में बगल के फट्टे पर सदा संतरों की प्लेटें रखी रहती थीं, और जब हम चाहते उन्हें खा लेते थे। और यदि छिलके अधिक चिपके होते तो हम उन्हें चूस लेते थे।

संतरे खत्म हो जाने के बाद लौकाट आते थे—वे चमकीले, पीले, गोल-गोल फल जिनमें काली गुठली के चारों ओर नरम गूदा होता है और इसके बाद खूबानी (खुरमानी) आती थी, जिसकी एक ही नहीं, अनेक किस्में होती थीं, और शायद ताज़ी लीचियां जो दक्षिण से आती थीं। और कभी-कभी जामुन भी अपनी छोटी-सी फसल में आ जाती थी। जब आड़ू पकते थे तब गर्मी अच्छी तरह हो जाती थी।

सबसे पहले लाल सुर्ख रंग के आड़ू आ जाते थे, जो बहुत बड़े-बड़े और कुछ फीके स्वाद के होते थे । इसके बाद पीले और मीठे सपाट आड़ू आते थे और अन्त में बहुत बड़े-बड़े सफेद आड़ू आते थे, जो सबसे अच्छे होते थे । मेरी मां उनका अमरीकन ढंग से मुरब्बा डालती थी, और इसके लिए मर्तबान मिंटगुमरी वार्ड तथा सीयर्स रोबक से खरीदती थी । केले और अनानास तथा बहुत किस्मों के खरबूज़े, तरबूज़, लाल, सफेद और पीले और छोटे-छोटे मीठे सुनहरी सर्दे । तरबूज़-खरबूज़े गर्मियों के फल थे और हम उन्हें खूब खाते थे; पर यदि वे सड़क पर काट लिए जाते तो हम उन्हें नहीं खाते थे, क्योंकि हम जानते थे कि मक्खियां घातक शत्रु हैं जो अपने नन्हे पंजों में पेचिश, हैज़े और टाइफाइड लिए फिरती हैं। वर्षों बाद मुझे, अपने स्वदेश में, मक्खियों का दर्शन सहन कर सकने में कुछ समय लगा, क्योंकि न मालूम कैसे मैंने यह आशा कर रखी थी कि यहां मक्खियां नहीं दिखाई देंगी, और उन परसीमन फलों की बहुत सी किस्मों का ज़िक्र करना तो मैं भूल ही गई जो शरद ऋतु के अन्त में खाने लायक होते थे । उनमें से सबसे बढ़िया मोटे-मोटे सुनहरे, बेदाना किस्म के फल उत्तर से आते थे जहां वे कोयले की भट्ठियों को गर्म राख में पकाए जाते थे। पर मुझे छोटे गुलाबी रंग के बीजू फल भी अच्छे लगते थे, जिनमें मीठा रस भरा रहता था। पीकिंग से सुखाए हुए परसीमन फल भी आते थे जिनपर पिसी हुई चीनी छिड़की रहती थी, और जो सुपारी जितने बड़े और चपटे होते थे।

नाश्ते में फल खाने के बाद हम एक विशेष प्रकार का दलिया खाया करते थे, जिसका आविष्कार मेरे पिता ने किया था। यह साबुत गेहुंओं का बनाया जाता था और नौकर इसे चीन में प्रचलित पत्थर की चक्की पर घर पर ही पीस लेते थे । आजकल खुराक-विशेषज्ञों से धीरे-धीरे पीसे गए अनाज की उत्कृष्टता के बारे में बहुत कुछ सुनती हूं, पर मैंने इसके बारे में बहुत पहले चीनियों से सीखा था। वहां सारा अनाज पत्थर की चक्कियों पर हाथ से पीसा जाता था और रोटियां स्वादिष्ट बनती थीं । हमारा दलिया भी स्वादिष्ट होता था । मेरी मां साफ किए गेहूं को पिसवाने से पहले थोड़ा भून लेती थी । और जब दलिया धीरे-धीरे देर तक पकाया जाता था, तब उसमें भुनेपन की महक आ जाती थी । हम इसे चीनी तथा सफेद भैंस के दूध की मलाई से, जो गाय के दूध की मलाई से भारी होती है, खाते थे। यह पुष्टिवर्द्धक भोजन होता था और इसके बाद अण्डे तथा गर्मरोल या

गर्म बिस्कुट लेते थे क्योंकि मेरा परिवार अमरीका के दक्षिणी भाग से आया था और हमारे यहां रोटी ठण्डी नहीं खाई जाती थी। बड़ों के लिए काफी अनिवार्य थी। पर मेरी मां काफी साबुत फलियां जावा से मंगाती थी और उन्हें लोहे की हत्थी वाली एक छोटी-सी चौकोर लकड़ी की चक्की में पीस लेती थी। मैं उबालकर ठण्डा किया हुआ पानी पीती थी।

नाश्ता सदा ठोस और अमरीकन होता था क्योंकि मेरे माता-पिता कठोर परिश्रम करते थे, और अपने बच्चों से भी कठोर परिश्रम की आशा करते थे। पर शेष दो भोजन इतने स्वादिष्ट नहीं होते थे। इन भोजनों में मेरी कुछ भी रुचि नहीं होती थी, और आम तौर से पहला भोजन मैं नौकरों के घर कर लिया करती थी, जिससे मेरी मां चिन्तित हो जाती थी और प्रायः मुझे भूख न होने पर आश्चर्य किया करती थी, पर मालूम होता है कि वह कभी भी इसके कारण का अन्दाज़ा नहीं लगा पाती थी। नौकरों का भोजन सादा, पर स्वादिष्ट होता था। सच पूछिए तो चीन में गरीबों के भोजन में धनियों के भोजन की तरह विविधता न होने पर भी सुगन्ध अद्‌भुत होती है। उनका नाश्ता भी मुझे अपने नाश्ते की अपेक्षा कहीं अधिक अच्छा लगता था। हमारे प्रदेश में यह चावल की खिचड़ी का होता था जो बहुत गर्म खाई जाती थी, और उसके साथ नमकीन मछली, शलजम और दूसरे अचार और कभी-कभी खूब उबाला हुआ और आठ फांकों में कटा अण्डा। नौकरों का दोपहर का भोजन सबसे अच्छा होता था और वह मैं खूब जी भरकर और जितनी बार चाहती उतनी बार खा लेती थी। इसमें फरहरे पकाए हुए हलके चावल, एक प्याला किसी तरह का रसा, एक प्याला चीनी गोभी और ताज़ी दही तथा थोड़ा-सा गोश्त होता था। हमें मिठाई की ज़रूरत नहीं होती थी क्योंकि फल और मिठाइयां भोजनों के बीच का हल्का खाना समझी जाती थीं। रात को मैं अपनी आया के साथ अकेली और अलग परिवार के रात के भोजन से बहुत पहले भोजन कर लेती। हम दोपहर का बचा हुआ सामान खाते थे, या चावल पकाने के बड़े पतीले की तली के अधजले चावल से बनाया माण्ड पीते थे।

वर्षों बाद जब मैं उत्तरी चीन में रहने गई—पर यह दूसरे जगत् की बात है—तब मैं चावल नहीं खाती थी, बल्कि सब्ज़ियों और थोड़े-बहुत गोश्त के साथ गेहूं की रोटियां खाती थी। नाश्ते में पतले-पतले मुड़े हुए, मीठे नहीं, नमकीन सेल और चाय होते थे। फलों की जगह खजूर और परसीमन होते थे या एक फुट चौड़े कागज़

जैसे पतले फुलके होते थे, जो काटे हुए लहसुन पर लिपटे रहते थे। दिन के दूसरे भोजन में—क्योंकि उत्तरी चीन में लोग कटाई के दिनों को छोड़कर और समय दिन में केवल दो बार भोजन करते हैं—हम कोयलों पर सेंकी हुई रोटी, जिसमें जगह-जगह तिल के दाने-से दिखाई देते थे, या गोश्त और लहसुन के टुकड़ों से भर-कर और भाप से बनाकर पकाई हुई गोल रोटियां या उबालकर बनाई हुई खिचड़ी, जिसमें गोश्त और ताज़े अदरक के टुकड़े या कटा हुआ पालक या मटर डाला हुआ होता था, खाया करते थे। मुझे गुज़रे हुए ज़माने के लिए कभी ज़रा भी उदासी नहीं होती, क्योंकि मैं वर्तमान काल में रहती हूं। पर फिर भी, चीनी भोजन की विविधता को याद करके मेरा मन उदास-सा हो जाता है। प्रत्येक प्रदेश में अलग-अलग फल और सब्ज़ियां और भोजन होते हैं, और प्रत्येक शहर किसी न किसी भोजन के लिए विशेष प्रसिद्ध है। और हर होटल का कोई अपना विशेष भोजन है। और प्रत्येक परिवार के अपने अलग-अलग खाने हैं और भोजन तथा पकाने की बात लोग सदा आनन्द से सोचते हैं।

उस दिन शाम को यहां पेन्सिलवानिया में अपने छज्जे पर चीनी मित्रों के साथ बैठकर हम लोग अपने बचपन की दुनिया के कुछ प्रसिद्ध भोजनों की बात सोच रहे थे—पीली नदी की मछली का रसा, जो चिगचौ में बड़ा स्वादिष्ट बनता था, वेस्ट लेक की भाप से पकी हुई शैड मछली, चांगशा की डिब्बाबन्द मछली और गाय का गोश्त, चाओ-चौ की सुगंधित नमकीन रखी हुई मछली, सूचौ के भाप में पकाए हुए केकड़े, पीकिंग की खट्टी और मीठी मछली, और तुंगतिंग झील के सुखाए हुए समुद्री केकड़े।

और शराबों के बारे में हम सब एकमत थे कि सबसे बढ़िया चेकियांग की शाओ-ह्सिंग शराब थी, और इसके बाद क्वेईचौ की माओ-ताई शराब और शांसी की चुआई हुई फेन-चौ शराब का नम्बर आता है। और चायों में चेकियांग की हरी लुंग-चिंग चाय हमें पसन्द थी। पर युन्नान की पू-ऐढ़ चाय, जो पूऐढ़ नाम के पर्वत से आती थी, और ची-मेन लाल चाय तथा ऐंकिंग की लिन-आन हरी चाय या फूचौ की चमेली और आयरन और लो-हान चाय और हैंगचौ की गुलदाऊदी चाय भी हमें पसन्द थीं।

फलों और सब्ज़ियों की इतनी अधिक संख्या थी कि उनमें से कुछ के ही नाम लिए जा सकते हैं। हमने क्वांगतुंग प्रान्त के ह्सिन-हुई के सन्तरों की, कियांगसी

प्रदेश के शा-न्तिएन के चकोतरों की, ली-पू के टारो (एक फल) की, शांतुंग प्रदेश के तै-चो के लाल और सफेद खजूरों की, चैफू के सेबों की, शांगहाई के सर्दों की और पीकिंग के परसीमन फलों की, फू-चौ के संतरों की और क्वांगतुंग प्रांत के जैतूनों की, दक्षिणी हुनान के बांस के अंकुरों और गुच्छियों की और कलगन खुम्बों की हो-पू की लीचियों और नानकिंग की कमल-ककड़ियों (भिस) की चर्चा की।

पर अन्य भोजनों को भी पूरी तरह भुलाया नहीं जा सकता; उदाहरण के लिए, तै-चौ के भुने हुए मुर्गी के बच्चे, कैन्टन के भाप से पकाए हुए कबूतरों के बच्चे, नानकिंग की नमक लगी बत्तख, पीकिंग की भुनी बत्तख, कैन्टन की एक मुर्गी के बच्चे में तीन ज़ायके, फूचौ का छोटा कटा हुआ गोश्त, किंग-हुआ का भुना हुआ गोश्त, ज़ेचुआन के नमकीन अचार, वेस्ट लेक की अरारूट, पीकिंग का खट्टे बैरों से बनाया हुआ गर्मियों में पीने का पेय, दक्षिणी हुनान का खुम्ब का तेल, क्वेइ-लिन का चावल का आटा और अन्हवेई प्रान्त के ऐनकिंग स्थान की चटनी।

और हम इतने पर ही सिर्फ इस कारण गए कि हमको कोई निःशेष सूची तैयार नहीं करनी है।

हमारी मौज के दिन वे होते थे, जब हमें विवाह या जन्मदिन की दावतों में बुलाया जाता था। और तब भोजन में बीसों चीजें होती थीं, जिनमें से हरएक चीज़ शताब्दियों के स्वाद-कौशल से बनाई जाती थी, क्योंकि चीनी सदा स्वाद के बड़े परखैया होते हैं। किसी भोजन के रंग-रूप बनावट और खुशबू पर घण्टों बात होती है और उसकी अनेक तरह से तुलना की जाती है। धनी लोग अपने रसोइए को शाही तनखाह देते हैं और फिर भी वह अपने मित्रों के सामने रखे गए किसी भोजन पर उनकी आलोचना बड़ी नम्रता से सुनते हैं, क्योंकि चीन में पकाना एक बड़ी मौलिक और तृप्तिदायक कला है। और जब किसी भोजन की आलोचना वे लोग करते हैं जिन्हें यह अच्छी तरह पता है कि वह भोजन कैसा होना चाहिए था, तब कोई बुरा नहीं मान सकता, क्योंकि किसी कला की आलोचना में व्यक्तिगत अंश कुछ नहीं होता।

एक खास बात यह है कि सर्वोत्तम भोजन सदा उस मौसमी वस्तुओं तथा स्थानीय वस्तुओं के होते थे। मैं मौसमी चीज़ों में बड़ा विश्वास रखती हूं। यहां अपनी दुनिया में भी मुझे जनवरी में मीठा भुट्टा या नवम्बर में स्ट्राबरी अच्छी नहीं लगती। मौसम-सम्बन्धी ये अनुपयुक्तताएं मुझे बुरी लगती हैं। मैं चाहती हूं कि भुट्टा

मुझे अगस्त में, जब वह नरम और हरा होता है, मिले, और मैं यह नहीं चाहती कि यह जितने दिन चलना चाहिए, उससे अधिक दिन चले, क्योंकि अन्य सब्जियों को भी तो मौका मिलना चाहिए। आजकल रेफ्रीजरेटर में चीज़ों को रखकर ठण्डा करने की प्रथा है——मेरे पास ऐसे साधन हैं। पर मैं इस सबकी ज़्यादा परवाह नहीं करती और यदि मेरा बस चले तो मैं बे-मौसम की कोई चीज़ न खाऊं। टर्की चिड़िया थैंक्सगिविंग और क्रिसमस पर ही आनी चाहिए; मेरे लिए और समय इस चिड़िया का अस्तित्व ही नहीं होता।

इस प्रकार अपनी आरम्भिक दुनिया में मैं नववर्ष-दिवस पर चावल के आटे के केक खाती थी, पर और समय उनके बारे में कभी नहीं सोचती थी, और बसन्त में मैं नदी के सरकण्डों के हरे पत्तों में लिपटी हुई और भाप से पकाई हुई चावल की रोटी खाती थी, और इसके साथ अच्छी तरह उबाले बत्तख के अण्डे खाती थी, जिन्हें काटकर नमक लगाया होता; और यदि मीठे की इच्छा होती तो गुड़ से खाती थी——आज मैं जानती हूं कि उसमें बहुत सारे विटामिन होते हैं, पर उस समय केवल स्वाद के लिए खाया करती थी। और गर्मियों में हम गर्म शराब से केकड़े खाते थे, पर शरद् ऋतु में नहीं, जब वे खतरानक होते हैं। और हम बच्चे एकमात्र बढ़िया चीज़ जौ की टाफी खाते थे, जिसपर तिल लगे रहते थे, जो हमारी पहाड़ियों और घाटियों की तंग कच्ची सड़कों पर घूमता हुआ फेरी वाला बेचा करता था। मैं चाहे कुछ भी कर रही होती, पुस्तकों पर ध्यान लगाए होती या गेट के बाहर ऊंची घास में खेल रही होती, जब मैं उसके छोटे-से कांसे के घण्टे की टनटन सुनती, जिसपर वह छोटी-सी लकड़ी की हथौड़ी से चोट करता था, तभी मैं अपनी जमा में से थोड़े से तांवे के सिक्के उठाकर उसे बुलाने दौड़ पड़ती। टाफियां, जिन्हें चिपकने से बचाने के लिए उनपर आटा छिड़का हुआ होता था, उसकी बहंगी की टोकरी के ढक्कन पर एक गोल चक्के के रूप में होती थी। जब हम यह बहस कर चुकते कि मैं अपने सिक्कों से, जिनमें से प्रत्येक का मूल्य एक पेनी के दसवें हिस्से के बराबर होता था, कितना बड़ा टुकड़ा खरीद सकती हूं, तब वह अपना तेज़ चाकू निकालकर उसका एक हिस्सा अलग कर देता। यह बड़ी स्वादिष्ट मिठाई होती थी जो जबड़ों में चिपकती थी, देर तक मुंह में रहती थी और बड़ी स्वास्थ्यकारक थी, क्योंकि इसमें सफेद चीनी नहीं होती थी।

गरीबों के साथ बैठकर उनका खाना खाने का—और वे सदा कितने उदार

होते थे—एक लाभ यह था कि मै लाल चावल और लाल आटा तथा शक्कर खाती थी। फिर भी सफेद रग के लिए मनुष्य की अजीब लालसा चीनियो मे भी थी। और जब कोई गरीब आदमी धनी हो जाता था, जैसा कि और मुल्को की तरह यहा भी हो जाता था, तो वह तुरन्त सफेद पालिश किया हुआ चावल और आटा तथा विदेशी सफेद चीनी खाने लगता था, और फिर इस बात पर आश्चर्य किया करता था कि वह अब उतना स्वस्थ क्यो अनुभव नही करता जितना अपनी गरीबी के दिनो मे किया करता था। और यद्यपि मेरी नीली आखो और पीले बालो को सहानुभूति से देखा जाता था, पर मेरी गोरी चमडी की सदा प्रशसा की जाती थी। और यदि किसी चीनी परिवार मे कोई लडकी हल्के पीले रग के बजाय भूरी चमडी लिए पैदा होती तो इसे बदकिस्मती समझा जाता था। उत्तरी चीन के लोग दक्षिणी चीन के ठिगने, गहरे भूरे रग के लोगो के मुकाबले ऊचे और गोरे होते है, यद्यपि सूचौ मे सुन्दर लडकिया भी है और सदा ही रही होगी, क्योकि पुरानी चीनी पुस्तको मे उनकी प्रशसा भरी पडी है। यही गोरेपन की इच्छा मुझे अपनी वर्तमान दुनिया मे दिखाई देती है, जहा काले रग वाला नीग्रो अपने से कम काली लडकी से शादी करने की कोशिश करेगा, और जहा मुझे बताया गया है कि भले लोग स्वभावत गोरे रग की स्त्रियो को पसन्द करते है। एक मित्र ने उस दिन इसकी यह व्याख्या की कि सब लोगो मे सूर्य की चमक की ओर जाने की अभिलाषा है और वे रात और अधकार से डरते है। मुझे इस बात मे सदेह है कि इसका इतना गहरा मानवशास्त्रीय अर्थ है। पर ऐसा हो भी सकता है। अपने बचपन के उन लम्बे और गौरवशाली दिनो मे देखने और करने के लिए सदा कुछ न कुछ रहता था। हमारी कम्पाउड वाली दीवार के पीछे, जिसके दरवाजो पर रात के अलावा कभी ताला नही होता था, उत्साहपूर्ण और अदलता-बदलता जीवन चलता रहता था। मेरे पिता प्राय सफर करते रहते थे, पर मेरी माता बच्चो को छोड-कर नही जाती थी, और जब उसे जाना भी पडता तब हम उसके साथ जाते थे। इसका यह भी अर्थ था कि हमारे यहा बहुत से अतिथि मेरी मा से मिलने आते थे। चीनी महिलाए, जिन्हे किसी विदेशी से मिलने और विदेशी का मकान देखने की उत्सुकता होती थी, हमारे यहा आती रहती थी। उन्हे मेरी मा गम्भीरता से हमारे सादे मकान मे घुमा देती थी। मकान भर मे वस्तुत सीने की मशीन से अधिक आश्चर्यजनक चीज कोई न थी, पर उसमे उन लोगो को प्रत्येक वस्तु अजीब और

अद्भुत लगती थी जिन्होने आम चीनी मकान का परम्परागत साज-सामान ही देखा था। मेरी अपनी सहेलिया भी आती-जाती थी, और हमारा खेलने का प्रिय स्थान दरवाजे के सामने पहाडी की तलहटी थी, जिसमे हमारे सिरो से ऊची पम्पास घास उगी थी। यहा हरी घास की छाया मे हम कभी जगल का खेल खेलते, और कभी घर-बार का। कभी हम उस छोटे-से अस्तबल मे, जिसमे मेरे पिता अपना सफेद घोडा बाधते थे, भुस मे खेला करते थे। दक्षिण के बरामदे के धूप वाले कोने मे मैंने सर्दियो के बहुत से अपराह्न अकेले बैठकर पढते हुए बिताए थे। और उस जगह मैं चार्ल्स डिकेस की रचनाए बार-बार पढती रहती थी, और बीच-बीच मे सतरे या मूगफलिया खाती रहती थी। इस प्रसग मे इतना और कहना चाहती हू कि जहा तक मेरी रुचि का सम्बन्ध है, हम अमरीकन लोग अपनी मूगफलिया अधिक भूनकर बरबाद कर लेते है। मूगफलियो को भूरा नही होने देना चाहिए, बल्कि पीला-सा सफेद रखना चाहिए। उन्हे केवल इतना भूनना चाहिए कि उनमे से मिट्टी की गध की कचास दूर हो जाए और इतना नही कि वे काफी के दानो जैसी लगने लगे।

परिवर्तन और नवीनता के लिए हम कभी-कभी पहाडो मे पिकनिक करने या गोल्डन आइलैड (सुनहरा द्वीप) देखने जाया करते थे, जहा एक दानव रहता था, जिसके मोटे कोमल चेहरे की ओर जब मैं देखती थी तब मेरा दिल बैठ जाता था। वह बहुत बडे और प्रसिद्ध बौद्ध मठ के भीतर के कमरे मे था। उसकी आकृति बडी विशालकाय थी। यह बौद्ध भिक्षु के गेरुए कपडे पहने हुए था और साढे आठ फुट ऊचा तथा इसके अनुसार उचित अनुपात मे चौडा था। वह अपने बडे-बडे हाथ घुटनो पर रखे बैठा रहता था और खडा होने के लिए उसे पैसा न दिया जाए, तो वह खडा नही होता था। पैसा देने पर भी वह अपनी पूरी ऊचाई दिखाने के लिए सदा खडा नही होता था, क्योकि वह प्राय गुस्से मे होता था और पैसा जैसे भी हो, अपने पास रख लेता था। यदि मुझे रात मे कभी स्वप्न आते तो उस घृणित दैत्याकार भिक्षु के बारे मे ही आते थे।

गोल्डन आईलैड चीन के इतिहास के प्रसिद्ध स्थानो मे से एक है, और मार्को-पोलो वहा गया था। बहुत दिन हुए, इसका द्वीप वाला रूप समाप्त हो गया, क्योकि नदी ने अपना रास्ता बदल लिया, और यह सूखी धरती पर खडा रह गया। और वे इतिहास-प्रसिद्ध मन्दिर और मठ, जो कभी सम्राटो की सम्पत्ति थे, मेरे समय मे

केवल मिंग-वंश के हरे और पीले पोर्सलिन के टाइलों के अवशेष ही रह गए थ। पर पगौडा अब भी आसमान में अभिमान और शान से गर्दन उठाए खड़ा है।

उस नदी में इससे भी बड़ा भारी-भरकम प्रसिद्ध सिल्वर आइलैंड (रुपहला द्वीप) था, और वहां सैर के लिए जाना एक पूरी यात्रा होती थी, जिसमें हमें उस पार और इस पार पहुंचने के लिए नाव किराए पर लेनी पड़ती थी और इस सफर में हमें एक दिन खर्च करना पड़ता था। पर यह बड़ी मोहक यात्रा होती थी, क्योंकि संकरा रास्ता सीधी खड़ी ऊबड़-खाबड़ चट्टानों से लगा था और जब मैं चोटी पर चढ़ जाती और नदी की, जो वहां समुद्र के समान चौड़ी थी, पीली भंवरों को ऊपर से देखती तब आनन्दपूर्ण भय से भर जाती।

चीनियों के चान्द्र वर्ष में उत्सवों के दिन भी बहुत आते थे और प्रत्येक में कुछ विशेष खिलौने बनाए जाते और आनन्ददायक कार्य किए जाते थे। इस प्रकार दीपकोत्सव पर हमारे वफादार नौकर हमारे लिए कागज़ के खरगोश लाते थे। वे छोटे-छोटे पहियों पर चलते, और उनके अन्दर मोमबत्तियां जलती थीं, या कमल के फूल और तितलियां या ऐसे घोड़े लाते थे जो दो टुकड़ों में होते, जिनमें से एक मैं अपने आगे रखती और दूसरे को अपनी पीठ पर बांध लेती। इससे मैं अंधेरे में चलते हुए घोड़े-जैसी लगती, और मुझे बड़ी खुशी होती थी। और वसन्त ऋतु में तरह-तरह की पतंगें बनाई जाती थीं और कभी-कभी हम सरकण्डे चीरकर चावल की लेई और बारीक लाल कागज़ से स्वयं पतंगें बनातीं। और हम बड़ी-बड़ी और विचित्र प्रकार की पतंगों को, जिन्हें बड़े आदमी भी उड़ाते थे, देखते हुए पहाड़ियों पर अपने दिन गुज़ारते थे। कभी-कभी विशालकाय अजगर या तीस फुट वाला सेंटीपेड या पगौडा बनाए जाते थे, जिन्हें उड़ाने के लिए दर्जन भर आदमियों की ज़रूरत होती। हम पिंजड़ों में रखी चिड़ियों से खेलते थे। बहुत-सी चिड़ियां ठीक तरह सिखाई जाने पर बातचीत कर सकती थीं, जैसे काले तोते और सफेद पंखों वाले नीलकण्ठ या गाने के लिए हम बुलबुलें रखते थे। हम घूम-फिर कहानी सुनाने वालों से कहानियां सुनाते थे। ये लोग देहाती सड़कों पर अपनी छोटी-छोटी घंटियां बजाते थे, या रात को गांवों में ठहरते थे, और अनाज निकालने की जगह भीड़ जमा कर लेते थे। हम नाटक-मण्डलियां (नौटंकी आदि) देखने जाते थे जो मन्दिरों के सामने अपने नाटक करती थीं, और इस प्रकार मैंने शीघ्र ही चीन का इतिहास जान लिया, और मैं प्राचीन काल के वीर-पुरुषों से परिचित हो गई। चीनी नववर्ष का दिन हमारे लिए

सारे वर्ष का सबसे अधिक खुशी का दिन होता था और उस दिन मेरे बचपन के दोनों जगत् आपस में मिलते थे, क्योंकि हम अपने चीनी मित्रों को उपहार देते और उनसे उपहार लेते थे, उनका स्वागत करते और उनसे मिलने जाते थे। और अपने सबसे अच्छे वस्त्र पहनकर हम जहां-कहीं जाते, वहां झुकते और 'शुभ नव-वर्ष और समृद्धि' की कामना करते। ये कार्य और आनन्द मेरे चीनी जगत् से सम्बन्ध रखते थे, जिसमें मेरे माता-पिता मेरे साथ कभी नहीं जाते थे, क्योंकि वे विदेशी बने रहे, जबकि मैं न तो अपनी ही राय में और न अपनी चीनी सहेलियों की भावनाओं में ही वस्तुतः विदेशी थी।

फिर भी मेरे चीनी जगत् के किनारे पर एक दूसरा जगत्—गोरों का जगत्—सदा मौजूद था, और इन गोरों के जगत् की अपनी अलग छुट्टियां और आनन्द थे। उदाहरण के लिए, मैं पीले चीनी कद्दू मे बनाई हुई जैक-ओ'-लैंटर्न से अच्छी तरह हैलोवीन मनाया करती थी और जब आग से भरा चौड़ा खुला चेहरा अक्तूबर की रात को मेरे कृपालु चीनी पड़ौसियों की खिड़कियों में से चमकता था, तब वे डर जाने का प्रदर्शन किया करते थे। क्रिसमस भी एक विदेशी उत्सव, एक पारिवारिक प्रसन्नता का अवसर होता था और इसी प्रकार 'फोर्थ ऑफ जुलाई' तथा 'थैंक्स-गिविंग'। मेरे माता-पिता ऐसे सब दिनों को मनाने और इनका अर्थ हमें समझाने के लिए सावधान रहते थे। और इतने ही पर अन्त नहीं था। जब रानी विक्टोरिया का जन्मदिन पास आता तब प्रत्येक अमरीकन तथा अन्य गोरे परिवार को ब्रिटिश क्लब में आने का निमन्त्रण मिलता था—यह क्लब पहाड़ियों की चोटी पर एकान्त में बना एक छोटा-सा मकान था जिसके चारों ओर खच्चरों के लिए छोटा-सा मैदान था। रानी के जन्मदिन पर क्लब में रौनक आ जाती थी। हाल को ब्रिटिश झंडों से सजाया जाता था। रानी विक्टोरिया के काले और सफेद चित्र के चारों ओर ब्रिटिश झंडे लपेटे जाते थे—विक्टोरिया मोटी और कठोर दिखाई देने वाली छोटी-सी स्त्री थी। और हम सब बेंचों पर बैठते और उसकी ओर घूरते और ब्रिटिश वाणिज्य-दूत का भाषण तथा दूसरे वाणिज्य-दूतों, आम तौर से केवल अम-रीकन और फ्रेंच द्वारा दिए गए राजनयिक उत्तर सुनते।

इसके बाद हम खड़े होकर पूरे दिल से 'गॉड सेव दि क्वीन' (अंग्रेज़ों का राष्ट्र-गीत) गाते। यद्यपि मैं यह कभी न समझ सकी कि इसकी तर्ज़ वही क्यों है जो 'माई कंट्री 'टिस आफ दी' की है। और इसके बाद चाय पिलाई जाती थी, जिसमें

अंग्रेज़ी ढंग के मक्खन-लगे टोस्ट और मुरब्बा और गर्मागर्म भारतीय चाय तथा मीठे बिस्कुट होते थे। और छह-सात बच्चे दौड़ में हिस्सा लेते और ईनाम पाते थे। उन गोरे बच्चों के बारे में मुझे ऐसा याद पड़ता है कि वे सब दुबले और पीले होते थे। और इतनी लापरवाही से दौड़ते थे कि जीतना आसान था और मैं, जो सुर्ख और मज़बूत थी, जीत ही जाती थी; यहां तक कि मेरे माता-पिता इस बात पर शर्मिन्दा हो जाते थे कि मैं इतने सारे ईनाम ले लेती थी।

मेरी मां तिरस्कारपूर्वक मुझसे फुसफुसाकर कहती, 'रानी के जन्मदिन पर तो तुम्हें किसी अंग्रेज़ बच्चे को जीतने देना चाहिए था।' पर मैं रानी के लिए भी अपने अधिकतम प्रयत्न में कुछ कमी नहीं कर पाती थी।

वह आरम्भिक जगत् ऐसा स्थायी लगता था जैसे सूर्य और चांद, और इसमें शान्ति ही शान्ति थी। पर फिर भी आठ वर्ष की आयु से पहले ही मैं भी यह महसूस करने लगी कि इसका अन्त हो सकता है। पीकिंग में राजमाता अपने उत्तराधिकारी दत्तक पुत्र तरुण सम्राट् कुआंगमू के साथ उलझ रही थी। केवल पुत्रों वाले माता-पिता उसके साथ सहानुभूति रखते थे—विशेष रूप से वे लोग, जिनके पुत्र ज़िद्दी, सुन्दर, तीव्रबुद्धि और विद्रोही तरुण थे। मैंने अपने ही परिवार में तरुण सम्राट् के बारे में होती बातचीत सुनी, और मैं अपने भाई के बारे में सोचने लगी जो मुझसे ग्यारह वर्ष बड़ा था, और जिसे मैं मुश्किल से जानती थी क्योंकि जब मैं केवल तीन वर्ष की थी तभी उसे कालिज भेज दिया गया था। वह भी कभी-कभी परेशानी पैदा करता था, और मैं जानती थी कि जब उसका पत्र नहीं आता था, तब मेरी माता की नींद प्रायः हराम हो जाती थी, क्योंकि वह यह नहीं जान पाती थी कि सुदूर अमरीका में उसे क्या हो रहा है।

तरुण सम्राट् के बारे में हम सब जानते थे क्योंकि उसका जीवन शुरू से ही नाटकीय रहा था। जब राजमाता शाही महल में आई थी, तब शीघ्र ही वह सम्राट् ह्सिएन-फेंग की चहेती दूसरी पत्नी बन गई थी। पर वह इतनी चतुर और लावण्यमयी थी कि उसकी पटरानी को भी इस सुन्दर विनीत लड़की से ईर्ष्या नहीं हुई। जब उसने पुत्र को जन्म दिया तब उसे पश्चिमी सम्राज्ञी का पद दिया गया और पहली पत्नी को पूर्वी सम्राज्ञी की उपाधि मिली। दोनों सम्राज्ञियां पूरे पच्चीस साल तक सहेलियां बनी रहीं और हमारे यहां देहात में औरतें कहा करती थीं कि एक आदमी की पत्नियां होते हुए भी इतने दीर्घकाल में ये दोनों महिलाएं कभी नहीं

लड़ीं। वे दोनों स्वभाव में बड़ी भिन्न थीं। पूर्वी सम्राज्ञी शान्त और एकान्तप्रिय, उच्चकोटि की विदुषी और कला तथा संगीत और साहित्य की सच्ची मर्मज्ञ थी जब कि पश्चिमी सम्राज्ञी, जो सम्राट् की मृत्यु के बाद रीजेंट बनी, अच्छी प्रबन्धक, बहुत चुस्त और राजनीतिक जीवन में दिलचस्पी लेने वाली थी।

सम्राट् 'ऐरो युद्ध' में बड़े अजीब और दुःखदायी तरीके से मर गया था, पर यह बात मेरे जन्म से बहुत पहले की है। इसलिए मैं इस बात को अपने कन्फ्यूशियस के अनुयायी शिक्षक श्री कुंग से—जिनका काम मुझे केवल चीनी भाषा पढ़ना और लिखना सिखाना समझा जाता था—सुनी हुई प्रायः किंवदंती के रूप में जानती थी, क्योंकि उन्हें बोलने का शौक था और मुझे उनकी सुदूर पीकिंग की बोली का मधुर प्रवाह सुनने का शौक था। इसलिए मुझे ऐरो युद्ध के बारे में सब कुछ पता था। यह एक छोटा-सा युद्ध था और मुझे शक है कि बहुत से पश्चिमवासियों ने शायद कभी इसका नाम भी न सुना हो। पर फिर भी यह उन घटनाओं में से एक घटना थी जो ऊपर से देखने से तुच्छ लगती है, पर जो ज़बर्दस्त घटना-परम्परा को जन्म देती है। १८५०–१८६० में किसी समय कुछ उत्साही चीनी व्यापारियों ने एक छोटा-सा जहाज़ खरीदा। इसका नाम ऐरो रखा और इसे हांगकांग में अंग्रेज़ी झण्डे के नीचे रजिस्टर कराया गया। इसके बाद वे दक्षिणी समुद्र में व्यापार करने गए, जो सचाई का व्यापार कहा जाता था, पर उसमें निश्चय ही समुद्री डकैती की गंध आती थी, और क्योंकि एक दक्षिणी प्रान्त का वाइसराय तट से डकैतों की बला को खत्म करना चाहता था, इसलिए उसने और जहाज़ों के साथ ऐरो को भी पकड़ लिया, और अंग्रेज़ी झण्डा उतार डाला तथा चीनी जहाज़ियों को जेल में डाल दिया।

अंग्रेज़ों ने अपने झण्डे के अपमान की बात सुनी और तुरन्त क्रुद्ध हो गए। इसपर वाइसराय ने, जो ब्रिटेन के साथ पहले हुए अफीम-युद्धों से भयभीत हो गया था, बेड़ियां पहने कैदियों को ब्रिटिश वाणिज्य-दूतावास भेज दिया, पर झण्डे के लिए क्षमा मांगने की उपेक्षा कर दी, जिसे वह निःसन्देह कपड़े का चीथड़ा-मात्र समझता था। चीनियों की झण्डों के प्रति कोई गहरी धर्म-भावना नहीं थी और वे उन्हें सजावट की झंडियों से ज़्यादा नहीं समझते थे। ब्रिटिश वाणिज्य-दूत ने बहुत क्रुद्ध होकर कैदियों को वापिस भेज दिया, जिसपर परेशान वाइसराय ने यह सब बखेड़ा खड़ा करने के कारण उन सबके सिर कटवा दिए।

इसपर ब्रिटेन ने फिर युद्ध-घोषणा कर दी और चीनी वाइसराय को पकड़ लिया और उसे भारत भेज दिया, जहां कुछ वर्ष बाद उसकी मृत्यु हो गई। नए युद्ध में ब्रिटेन के साथ शामिल होने के लिए फ्रांस, रूस और अमरीका को निमंत्रण दिया गया। पर सिर्फ फ्रांस ने वह निमंत्रण स्वीकार किया और उसने युद्ध में शामिल होने के लिए यह बहाना बनाया कि एक फ्रेंच मिशनरी हाल में ही क्वांगसी प्रान्त में मारा गया था। विदेशी सेनाएं पीकिंग पर चढ़ आई और सम्राट् तथा सम्राज्ञी छोटे-से शिशु को लेकर सौ मील दूर जेहोल भाग गए। वहां सम्राट् का एकाएक देहान्त हो गया और तरुण पश्चिमी सम्राज्ञी तथा उसका उत्तराधिकारी पुत्र अकेले रह गए।

शोक करने के लिए समय नहीं था। ऐसे समय यह सम्भव था कि असंतुष्ट लोग सिंहासन छीन लें। मृत सम्राट् के भाई राजकुमार कुंग ने, जो अभी पीकिंग में ही थे, आक्रमणकारियों को संधि कर लेने के लिए प्रेरित किया। पर यह भी तब हुआ जब शहर से बाहर वाला सुन्दर ग्रीष्मकालीन महल जला दिया गया था——दृढ़निश्चयी पश्चिमी सम्राज्ञी जल्दी से वहां लौट आई ताकि अपने छोटे-से पुत्र तुंग-चिह को उसके पिता की गद्दी पर बैठा दिया जाए। इसके बाद उसने सिंहासन पर सदा अपना कड़ा पंजा कायम रखा।

उसे कड़ा होने की आवश्यकता थी और यह बात वह जानती थी। उससे अधिक और कोई यह नहीं महसूस करता था कि समय खतरनाक है। पश्चिमी शक्तियां चीन को एक और उपनिवेश बनाने के लिए ताकत लगा रही थीं और मांचू वंश समाप्त हो रहा था। ह्सिएन-फेंग दुर्बल सम्राट् था और उत्तराधिकारी अभी शिशु था। उसे मज़बूत होने की और अपनी मदद के लिए मज़बूत आदमी तलाश करने की ज़रूरत थी। राजकुमार कुंग और दोनों सम्राज्ञी रीजेंट नियुक्त कर दी गई। पर राजकुमार कुंग बड़ा योग्य आदमी था और ज़बरदस्त तरुण। पश्चिमी सम्राज्ञी ने शीघ्र यह महसूस कर लिया कि वही असली शासक हो गया है। उसने उसे पदच्युत किया और इसके बाद वह तथा मृदु स्वभाव वाली पूर्वी सम्राज्ञी तुंग-चिह के १७ वर्ष का होने तक रीजेंट रहीं। इसके बाद उसने तुंग-चिह की ऐल्युते नामक एक सुन्दर मांचू लड़की से शादी कर दी।

आजकल इस पश्चिमी जगत् में, जिसमें आजकल रह रही हूं, इंगलैंड की एलिज़ाबेथ और फिलिप का विवाह तुंग-चिह और ऐल्युते की पुरानी और सुन्दर

प्रेम-कहानी का आधुनिक संस्करण है। तब भी अब की तरह सारे राष्ट्र ने आनन्द मनाया और पश्चिमी सम्राज्ञी ने अपनी रीजेंसी अपने पुत्र को देने की योजना बनाई। वह पोते के लिए बड़ी उत्सुक थी जिससे सिंहासन के बारे में निश्चिन्तता हो जाए। पर तीन वर्ष तक कोई बच्चा न हुआ और इसके बाद एकाएक सम्राट् को चेचक हुई और वह मर गया। सिंहासन फिर खाली हो गया। पर तब फिर शोक करने के लिए फुरसत न थी क्योंकि महल राजधानी और राष्ट्र में एक ज़बरदस्त दल था जो दोनों मांचू सम्राज्ञियों को हटाकर एक चीनी को सिंहासन पर बिठाना चाहता था। फिर राजमाता को तुरन्त कार्यवाही करनी पड़ी। उन्होंने अपने महान् सेनापति ली हुंगचांग को, जो उस समय ८० मील दूर तींतसिन नगर में था, आदेश दिया कि वहां अपने चार हज़ार प्रथम कोटि के सैनिक घोड़ों पर, तोपखाने समेत लेकर उस निषिद्ध नगर में आ जाए। छत्तीस घण्टों में, ठीक योजना में निश्चित क्षण पर वे पहुंच गए और बाहर के किसी आदमी को कानोंकान यह खबर न हुई कि सम्राट् मर चुका है। सैनिकों को बात करने से रोकने के लिए उनके मुखों में लकड़ी के गुटके डाल दिए गए थे और घोड़ों की धातु की रकाबें आवाज़ रोकने के लिए कपड़े में लपेट दी गई थीं।

ज्योंही उसे यह पता चला कि यह सैनिक सहायता आ गई है त्योंही पुरानी सम्राज्ञी चुपके से निकलकर अपनी बहन के मकान में गई और उसके बिस्तर मे अपने सबसे बड़े भांजे को, जो तीन साल का छोटा-सा शिशु था, सोते हुए को ही लेकर महल में लौट आई। जब सबेरा हुआ तब उसने उसे अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया और सिंहासन पर अब फिर एक सम्राट् आ गया और वह छोटा-सा लड़का सम्राट् क्वांग-ह्सू बन गया।

मेरे लिए यह सब निरी कहानी थी क्योंकि यह सारा कुछ मेरे जन्म से बहुत पहले हो गया था। मैं सचमुच जो कुछ जानती थी, वह तो वह बखेड़ा था जो क्वांग ह्सू ने अब सम्राट् बन जाने के बाद खड़ा किया था। मैं समझती हूं कि राजमाता रिटायर होने और सुख से रहने की बात सोच ही रही थी, क्योंकि उसकी अभिरुचियां और विनोद बहुत प्रकार के थे। उसे चित्रकला का शौक था और यदि उसे कला में ध्यान लगाने का समय मिला होता तो वह प्रसिद्ध कलाकार हो गई होती। वह बड़ी उत्कृष्ट लेखक थी। उसे फूलों का शौक था। चिड़ियों और पशुओं के प्रति उसका व्यवहार बड़ा आकर्षक और मोहक था। वह चिड़ियों को पुकारकर

अपने पास बुला सकती और सिकाडा पक्षियों को पुकारकर अपनी कलाई पर बैठा लेती और उन्हें अपनी उंगली से सहलाती। उसे प्रकृति से गहरा प्रेम था और महलों के चारों ओर वाले कुछ घास के मैदान, विशेष रूप से दुबारा बनाए गए ग्रीष्म-महल वाले मैदान उसे बड़े पसन्द थे और मैं समझती हूं कि वह राजकाज की बातें अपने दत्तक पुत्र को सौंपकर प्रसन्न हुई होती। पर उसने स्वयं को धोखा नहीं दिया। वह भी बड़ा अधीर और दुर्बल था और यद्यपि उसके लिए सर्वोत्तम अध्यापक लगाए गए थे पर वह राज्य-निर्माता की तरह सोचने और योजना बनाने में असमर्थ था। इसके अतिरिक्त इस बात से वह सचमुच भयभीत हो गई थी कि सम्राट् पश्चिमी तरीकों पर लट्टू था। इसका आरम्भ उसके बचपन में ही और ऐसे तरीके से हो गया था जो बिल्कुल निर्दोष मालूम होता था। हिजड़ों को, जो उसकी सेवा-टहल करते थे, उस अकेले छोटे-से बच्चे को जो अपने घर और परिवार से अलग हो गया था, खुश रखने में बड़ी कठिनाई हो रही थी; उन्होंने शहर भर में खिलौनों की तलाश की, पर वह पतंगों और मिट्टी की गुड़ियों तथा कागज़ की लैम्पों और सीटियों से ऊब चुका था और अन्त में एक हिजड़े को यह याद आया कि राजधानी में एक डेन (डेनमार्क-निवासी) की विदेशी खिलौनों की दुकान है, जिसमें वह विदेशी दूतावासों के बच्चों के लिए कुछ पश्चिमी खिलौने रखता है। शाही हिजड़े वहां गए और उन्होंने शिशु-सम्राट् के लिए एक रेलगाड़ी का खिलौना खरीदा, जो चाबी देने पर दौड़ता था। वह इससे प्रसन्न हुआ और उन बेचारों को यह देखकर खुशी और चैन मिला कि उनके छोटे-से सम्राट् को प्रसन्न करने वाली एक चीज़ मिल गई है। वे बार-बार उस दुकान पर जाने लगे और डेन ने आश्चर्य से देखा कि वह समृद्धि के मार्ग पर बढ़ रहा है। हर तरह का खिलौना खरीदा गया और अन्त में उसने शिशु-सम्राट् के वास्ते कोई नई चीज़ प्राप्त करने के लिए यूरोपियन देशों को छान मारा।

इस प्रकार बचपन से ही क्वांग-ह्सू को यह विश्वास हो गया था कि पश्चिम से ऐसी आश्चर्यजनक चीजें आती हैं जिन्हें बनाने की कला उस के देशवासियों को ज्ञात नहीं। बड़ा होने पर उसने मशीनों और रेल-मार्गों की बातें पढ़ीं और विज्ञान पढ़ने की कोशिश की और वह अपने राष्ट्र का सुधार करने और चीन को पश्चिमी राष्ट्रों जैसा आधुनिक बनाने के स्वप्न देखने लगा। इस प्रकार के स्वप्न देखने वाला वह अकेला ही नहीं था। कुछ और भी लोग थे जो यही स्वप्न देखते थे और इनमें

से दो आदमी सम्राट् के अपने शिक्षक थे। राजमाता के अनजान में ही वे अपने तरुण शासक को यह कल्पना करने के लिए बढ़ावा देते थे कि वह एक विशाल आधुनिक राष्ट्र, नवीन चीन का सम्राट् है। और उन्होंने उसे उसकी पूर्ण सत्ता की प्राप्ति की दिशा में पहला भयंकर कदम उठाने के लिए प्रेरित करने की कोशिश की। वह कदम था राजमाता की हत्या करना, जिसने उसे अपना पुत्र बनाया था।

यह पूरा शेक्सपियर के नाटक का मसाला था। तरुण सम्राट् का मन दो तरफ खिंच रहा था—एक तरफ तो उस महान् स्त्री के प्रति निष्ठा थी जो उसे अपनी गोद में उठाकर महल में लाई थी और दूसरी ओर उसका यह हार्दिक विश्वास था कि चीन में परिवर्तन लाना चाहिए। वह राजमाता से प्यार करता था और उनका प्रशंसक था और सारे अदब-कायदों में उसे यही बात सिखाई गई थी कि वह न केवल पुरानी सम्राज्ञी होने के नाते बल्कि दत्तक के रिश्ते से उसकी माता होने के कारण भी उसका आज्ञापालक हो। और मातृभक्ति से उसका अन्तःकरण पिघल जाता था, पर वह यह भी काफी स्पष्ट रूप से देखता था, जो वह नहीं देख सकती थी, कि यदि चीन अपनी रक्षा के लिए अपने-आपको आधुनिक रूप नहीं देगा तो वह संकट में पड़ जाएगा। भूखी पश्चिमी शक्तियां चीन के समुद्र-तटों और नदियों को थोड़ा-थोड़ा करके निगलती जा रही थीं; उसके पास न युद्ध के जहाज़ थे और न सेना थी जिनसे वह उन्हें परास्त कर सकता। यह साम्राज्य का युग था और जो देश अपनी रक्षा करने में समर्थ न हो वह पश्चिमी साम्राज्य-निर्माताओं का अच्छा शिकार समझा जाता था। पर चीन ने कभी थल-सेना या जल-सेना नहीं बनाई थी, क्योंकि उसे ऐसी आवश्यकता नहीं पड़ी थी। अब तक उसकी उत्कृष्ट-तर सभ्यता की शक्ति ही प्रत्येक आक्रान्ता को विजित करती रही थी।

हमारी खरबूजे की तरह फांकें की जा रही हैं, राजमाता दुःख से कहा करती थी। बात सचमुच यही थी, पर फिर भी वह प्रचण्ड तरुण सम्राट् पर भरोसा नहीं कर सकती थी। कुछ हद तक उसका विचार उचित था, क्योंकि ज्योंही वह सम्राट् बना त्योंही सुधार के उत्साह के उफान में उसने सौ दिन के भीतर दसियों आदेश जारी कर दिए, जिनकी देश भर में चर्चा हुई। उन आदेशों में मन्दिरों में नये स्कूल खोलने तथा नये रेलमार्गों, नये कानूनों और रिवाजों की घोषणा की गई थी। हर चीज बदल दी जानी चाहिए और वह भी तत्काल।

लोगों के मन में उलझन पैदा हो गई और महल के अन्दर गहरा मतभेद खड़ा

हो गया। बूढ़े राजकुमारों ने राजमाता से कहा कि व्यवस्था फिर से कायम की जानी चाहिए; सम्राट् के आधुनिक सलाहकारों और उसके सुधारकों को हराकर मार दिया जाए। उन्होंने कहा कि सम्राट् पर अंकुश लगाया जाना चाहिए।

जब राजमाता को कुछ करना होता, तब वह झटपट ही कर डालती थी। यद्यपि मैं बालक थी और बहुत दूर के एक दूसरे प्रान्त में रहती थी तो भी मुझे याद है कि जब एक दिन सुबह-सुबह हमने यह खबर सुनी कि अचानक ही राज्य का तख्ता पलट दिया गया है और तरुण सम्राट् को कैद कर लिया गया है और एक द्वीप में बन्द कर दिया गया है; युयान शिहकाई—जो पश्चिमी देशों में प्रशिक्षित नई चीनी सेना का सेनापति था—सम्राट् का साथ छोड़कर पुरानी सम्राज्ञी से मिल गया है; छह सुधारक मारे गए; केवल दो नेता कांग युवेइ तथा लिआंग ची-चाओ बचकर भाग सके—तब मेरे माता-पिता और मेरे उदार विचारों वाले चीनी मित्रों को कितनी चिन्ता हुई थी और हमारे अनुदार विचारों वाले चीनी मित्रों को, जिनमें मेरे शिक्षक श्री कुंग भी थे, कितना सन्तोष हुआ था। उस दिन हमारे प्रदेश में एक अजीब चुप्पी छा गई थी और निःसन्देह यह सारे देश में फैल गई थी। अब क्या होगा ? अगले कुछ सप्ताहों में यह स्पष्ट हो गया कि विदेशी सरकार कुछ नहीं करेगी। लोगों में मतभेद था, पर अधिकतर जनता राजमाता और अनुदारपक्ष के साथ थी। विदेशी सरकारों ने इन सुधारों का स्वागत नहीं किया, जिनसे चीन की जनता को यह ज्ञान हो जाता कि क्या हो रहा है।

इसके बाद जो पहला आदेश आया उसपर सम्राट् के हस्ताक्षर थे, पर हर एक जानता था कि वह सम्राज्ञी का लिखा हुआ है और सम्राट् के नाम से शाही मोहर लगाकर भेजा गया है। यह काफी नरम था जिसमें यह कहा गया था कि सुधारों की गति तेज़ हो गई है और लोगों में भ्रम फैल रहा है।

आदेश में तर्कपूर्वक कहा गया था—'हमारी असली इच्छा यह थी कि बेकार पद हटा दिए जाएं जिससे खर्च कम हो जाए, पर इसके विपरीत, हम यह देख रहे हैं कि विदेशों में ये अफवाहें उड़ रही हैं कि हम साम्राज्य के रीति-रिवाजों में ऊपर से नीचे तक परिवर्तन कर देना चाहते हैं और परिणामतः हमारे सामने सुधार के हज़ारों सुझाव पेश किए गए। यदि हम यह चीज़ चलने दें तो हममें से कोई भी नहीं जानता कि मामला कहां तक पहुंचेगा। इसलिए यदि हम जल्दी से अपनी वर्तमान अभिलाषाएं स्पष्ट रूप से सबके सामने प्रकट न करेंगे तो हमें बड़ा भय है कि छोटे

अफसर और उनके नीचे के कर्मचारी हमारे दिए गए आदेशों का अपना-अपना अलग अर्थ लगाएंगे और जनता की शान्ति में विक्षोभ पैदा कर देंगे। यह सचमुच हमारी इच्छा के विरुद्ध है और इससे अपने साम्राज्य को सशक्त और समृद्ध करने के लिए पेश किए गए हमारे सुधार व्यर्थ हो जाएंगे।'

इसके बाद तरुण सम्राट् के पिछले सौ दिनों के सब आदेश वापिस ले लिए गए। और हमें पता चल गया कि पूजनीय पूर्वज फिर सिंहासन पर आ गई है और पूरी ताकत से वापस आई है।

सन् १९०० ई० के वर्ष में, जब मै आठ वर्ष की थी, मेरे बचपन के दोनों जगत् अन्तिम रूप से हटकर अलग-अलग हो गए। मैंने उन्हें अपने अस्तित्व द्वारा ही एक जगह बांधकर रख रखा था। मै यांगत्से नदी के ऊपर की पहाडी पर अपने सुविधा-जनक स्थान से उन्हें स्पष्ट रूप में और जुड़ा हुआ देख सकती थी। कभी-कभी सवेरे जब मैं अपने बरामदे से परली ओर देखती थी तब मेरा मन हरी पहाड़ियों और उनसे भी हरी घाटियों, धूप में हीरों की तरह चमकते तालाबों से भी परे काली छतों वाले शहर, और नदी के चमकीले घाट से भी परे सुदूर समुद्र की ओर उड जाता था। समुद्र के पार मेरा अपना देश अमरीका था जिसके बारे मे मुझे कुछ पता नहीं था और इसलिए जिसके बारे में मेरी कल्पना उन्मुक्त क्रीड़ा करती थी। पास की पहाड़ियां और घाटियां, शहर और नदी, समुद्र और मेरे बाप-दादों की धरती—ये सब चीज़े मेरी भी थी।

विचार के ढंग से बेशक उन बचपन के दिनों में भी मैं जानती थी कि मं चीनी नहीं हूं और मै उस समय बड़ा बुरा महसूस करती थी जब गलियों में खेलने वाले लड़के 'छोटी-सी विलायती शैतान'[1] कहा करते थे या जब वे मुझे देखकर यह दिखावा करते थे कि शीघ्र ही वर्षा होगी क्योंकि, वे कहते थे, शैतान तब ही बाहर निकलते है जब वर्षा होने वाली होती है। मै जानती थी कि मै शैतान नहीं हूं और शैतान कहे जाने पर मैं परेशान न होती थी क्योंकि मै अपने चीनी जगत् में अब भी निश्चिन्त थी। यदि ये नटखट बच्चे मुझे जानते होते तो वे मुझे शैतान न कहते। और मैं केवल यह उत्तर दिया करती थी कि तुम कछुओं के बच्चे हो, अर्थात् तुम हरामी हो। यह जवाब सुनकर वे चुप हो जाते थे। मेरे माता-पिता को वर्षों तक मेरे

---

१. हिंदी में शैतान का अर्थ नटखट होता है, पर यहां इसका अर्थ है 'पाप का मूर्त रूप'।

इस जवाब का अर्थ पता नही चला और उस समय तक मै इतनी बडी हो गई थी कि मुझे स्वय इसपर शर्म आने लगी।

पर १६०० के साल मे सारे बसत के दिनो मे, यागत्से नदी की घाटी के सुन्दर बसतकाल मे मैंने बिना पूर्व-सम्भावना के अपने जगत् को उसके हिस्सो मे चिरता हुआ अनुभव किया। मिलने आने वालो का प्रवाह बहुत हल्का पड गया और कभी-कभी कई दिन तक एक भी चीनी मित्र हमारे दरवाजे पर दिखाई न देता। मेरे साथ खेलने वाले बच्चे भी प्राय चुप रहते। वे पहले जैसी खुशी से नही खेलते थे और अन्त मे उन्होने भी घाटी से चढकर पहाडी पर आना बन्द कर दिया। स्कूल मे मेरी सहेलिया भी अब मेरे साथ बैठने का आग्रह नही करती थी। मैं प्यार और उपहारो से बिगडा बच्चा थी और पहले तो मै चकित हुई और फिर मुझे बडी पीडा हुई और जब मेरी माता ने देखा तब उसने मुझे जो कुछ हो रहा था वह भर-सक समझाया। उसने कहा कि इसका अमरीकनो से कुछ सम्बन्ध नही क्योकि निश्चय ही हमने चीनियो के साथ कभी क्रूरता नही की। न हमने कभी उनकी जमीन ली और न उनके नदियो वाले बन्दरगाह लिए। अन्य गोरे लोगो ने ये बुरे काम किए है और उसने मुझे विश्वास दिलाया कि हमारे मित्र इस बात को समझते है और हमसे घृणा नही करते। सच पूछो तो वे हमसे पहले जैसा ही प्यार करते है। इतनी ही बात है कि वे अपनी भावनाओ को प्रकट करने का साहस नही करते क्योकि उन्हे दोषी ठहराया जाएगा। अन्त मे मै अच्छी तरह समझ गई कि हम सब विदेशियो को, क्रूर तरीके से---जिसे लोग कभी-कभी किसी विशेष और अस्थायी कारण से अपना लिया करते है पर जो असली कारण नही होते बल्कि पुरानी घृणाओ को निकालने का साधनमात्र होते है---एक जगह लपेटा जा रहा है। पर मेरा घृणा से कभी परिचय नही हुआ था---न किसीने कभी मुझसे घृणा की थी और न मैने कभी किसीसे घृणा की थी। मै यह नही समझ सकती थी कि हम लोगो को, जो अब भी पहले ही जैसे है, अज्ञात देशो के अज्ञात गोरे लोगो के साथ क्यो एक जगह बाधा जाए, जबकि हम वे नही है जो वे दूसरे है अर्थात् डाकू और लुटेरे। मने यह जीवन का पहला और स्पष्ट अन्याय अनुभव किया। मेरा कोई दोष नही था, पर क्योकि मेरी चमडी सफेद थी, आखे नीली थी, और बाल पीले, ---जैसे कि मेरी जाति वालो के होते है---इसलिए मुझसे घृणा की जाती थी, और अपने तथा अपने जैसो के भय के कारण मुझे चलने-फिरने मे खतरा था।

खतरा ! यह शब्द मुझे अज्ञात था। कीड़े-मकोड़े और सांप-बिच्छू खतरनाक होते थे, पर अब हमें—मुझे और मेरे परिवार को, और हमारे जैसे सब गोरे पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों को—आदमियों से खतरा था। कारण यह कि उत्तर में स्थित पीकिंग से धीरे-धीरे सरकती हुई हमारे मध्य चीन में स्थित प्रान्त तक राजमाता के बारे में बहुत भयंकर अफवाहें पहुंचीं : वही राजमाता जिन्हें मैंने भी पूजनीय पूर्वज—न केवल चीनियों का बल्कि उन सबका पूजनीय पूर्वज जो उनके शासन में रहते थे—मानना सीखा था, वे हमारे विरुद्ध हो गई थीं। क्योंकि लालची यूरोपियन और अंग्रेज चीनी समुद्रों और नदियों के किनारों के प्रदेश हड़प रहे थे, इसलिए हमने सुना, कि वे सब गोरे लोगों से पिंड छुड़ाना और हमारे लिए हमेशा के वास्ते चीन के द्वार बन्द कर देना चाहती हैं। युद्ध होने या चीन को आक्रांताओं और लुटेरों से मुक्त करने की इच्छा पर उन्हें कुछ भी दोष नहीं दिया जा सकता, मेरे गम्भीर पिता ने कहा; और हम स्वयं इस चीज़ को कैसा पसन्द करेंगे यदि हमारे अपने देश अमरीका स्टेट्स को बाहर वाले हथिया लें और छोटी-छोटी लड़ाइयां, और धन, धरती और रेल-रोड अधिकारों के रूप में बड़े-बड़े हरजाने लेकर थोड़ा-थोड़ा करके हमसे छीन लें। उन्हें राजमाता से सहानुभूति थी पर उनकी सहानुभूति से हमारी रक्षा नहीं हो सकती थी। हमें निर्दोष होते हुए भी अपने जैसों के साथ होना ज़रूरी था, और उनके अपराध का दण्ड भुगतना था।

मुझे गर्मियों के उस स्वच्छ दिन की याद है जब हमने शांतुंग में मिशनरियों के पहले कत्लेआम की खबर सुनी और यह सुना कि छोटे-छोटे बच्चों को भी उनके माता-पिताओं के साथ कत्ल कर दिया गया। बच्चों के कत्ल की बात से मेरी माता का चेहरा पीला पड़ गया और मेरे पिता ने यह फैसला कर लिया कि हम सबको दूर भेज दिया जाए। तब तक उन्हें यह विश्वास नहीं हुआ था कि राजमाता इतनी मूर्ख होंगी कि अपने आपको बौक्सरों (चीनियों की विदेशी विरोधी संस्था) के हाथ में सौंप देंगी—ये वे भयंकर वंचक थे जो उसको यह भरोसा दिलाते थे कि वे अपने गुप्त जादू के बल से विदेशी तोपों का मुकाबला कर सकते हैं, क्योंकि वे विदेशी तोपों से ही डरती थीं। वे जानती थी कि उनके पास पश्चिमी राष्ट्रों की सेनाओं और हथियारों के मुकाबले की सेनाएं न थीं, न हथियार। और संरक्षण तथा बदले का कोई उपाय ढूंढ़ने की गहरी व्याकुलता में उन्होंने बौक्सरों की जादू की बातों का विश्वास कर लिया। पर उस समय तक सारे राष्ट्र में पागलपन प्रचण्ड

रूप में गरज रहा था। विदेशी राष्ट्रों ने दुर्बल तरुण सम्राट् से एक के बाद दूसरा कन्सेशन मांगा था और यह सच था कि लोग उसके 'सुधार के सौ दिनों' से और भी अधिक आतंकित ही हुए थे क्योंकि उसके भेजे गए आदेशों का पालन किया जाता तो प्राचीन काल से चले-आते समाज का ढांचा ही नष्ट हो गया होता। इस बीच फ्रांस ने अनाम ले लिया था। इंग्लैंड ने वेईहाईवेई की मांग रख दी थी, फ्रांस ने क्वांगचौ की, जर्मनी ने त्सिगताओ की और रूस ने डेरेन की। ये 'पट्टे पर दिए गए क्षेत्र' कहलाते थे, पर वस्तुतः ये उपनिवेश थे। और वह स्थल सेना और जल-सेना न जाने कहां थी जिसकी कीमत चीनी लोग भारी टैक्सों के रूप में चुकाते रहे थे! स्पष्ट था कि वह धन न केवल वृद्ध राजमाता ने स्वयं अपनी ऐसी मूर्खताओं में फूंक दिया था जैसे ग्रीष्ममहल के पास वाली झील पर संगमरमर की नाव, बल्कि उसके अफसरों ने भी अपनी-अपनी जेबें भर ली थीं और फिज़ूलखर्ची में उड़ा दिया था। अब उसके पूरे दोष पर लोगों की नज़रें पड़ने लगीं, तब उसने क्रुद्ध जनता का ध्यान लुटेरे विदेशियों की ओर मोड़ा और इसलिए उसने अपने सर्वोत्तम मंत्रियों की सलाह अनसुनी करके बौक्सरों की बात मानी। इस समय तक तरुण सम्राट् के हाथ में कोई शक्ति न रही थी, क्योंकि वह कैद था और उसके साथियों के सिर काट डाले गए थे या वे भाग गए थे।

इस तूफान और क्रोध में हमारा शान्त बंगला एक दिन ऐसे बह गया जैसे भंवर में पड़ा पत्ता। गर्मियों के उस दिन हवा गर्म और शान्त थी और बरांडों से दृश्य सुन्दर लग रहा था—हरी घाटी और सरपत के पेड़ों की छाया में मिट्टी के बने मकान सुन्दर दिखाई दे रहे थे। सफेद हंस सड़क पर चल रहे थे और बच्चे पहरों (वह जगह जहां भुस और अनाज अलग-अलग किया जाता है) में खेल रहे थे और उनके माता-पिता किसानों वाले नीले और सूती कपड़े पहने खेत जोत रहे थे। काले शहर के परली ओर चमकती नदी समुद्र की तरफ बहती जा रही थी। किसी तरफ ज़रा भी ऐसा नहीं दीखता था कि दुनिया बदल गई है। यद्यपि मैं उस समय केवल आठ वर्ष की थी, पर मुझे वह लम्बा क्षण याद है जब मैं बरांडे पर खड़ी उस दृश्य को देख रही थी। वह मेरा घर था—क्योंकि और किसी घर से मेरा परिचय नहीं था—वह वही था, पर फिर भी, बालक होते हुए भी मैं जानती थी कि यह फिर कभी वही नहीं हो सकता।

तब से आधी शताब्दी से अधिक गुज़र चुकी। दो विश्व-युद्ध और कोरिया

संघर्ष मेरी आंखों के आगे से गुज़र चुके हैं पर फिर भी मैं अपने-आपको उस बंगले के बरामदे पर, जो बहुत पहले गिराया जा चुका है, बदलती दुनिया की ओर मुंह करके खड़े बच्चे के रूप में देखती हूं। उस समय मेरे बचपन-भरे हृदय में पैदा हुई भावनाएं, अशुभ आशंकाएं और उदासी काफी ठीक थी क्योंकि जैसा होने की आशंका मुझे हुई थी, वैसा ही सब कुछ गुज़रा भी।

ग्रीष्म ऋतु के उस स्वच्छ दिन हम अपने घर से चल पड़े। और हमने यांगत्से नदी में शांगहाई तक जाने वाले एक दृढ़ स्टीमबोट पर बैठकर यात्रा आरम्भ की। हमारे रवाना होने से पहले मिशन के बंगले में बड़ी बहस हुई। मेरी माता और पिता ने अपने पद आसानी से नहीं छोड़े और बच्चों की हत्या ही हमारे वहां से जाने के लिए प्रबल तर्क था और उसपर भी मेरे पिता का हमारे साथ जाने का कोई विचार न था। उन्होंने हमें शांगहाई पहुंचाना था और केवल तब तक रहना था जब तक कि हम किसी मध्यम दर्जे के फ्लैट में जम न जाएं और फिर अकेले लौट आना था। उनके लिए हमने मकान जैसा था, वैसा ही छोड़ दिया और मेरी मां ने अपनी रखी हुई चांदी में से कुछ निकाल ली जो वह पश्चिम विर्जिनिया के अपने घर से लाई थी और जिसे बचाने के लिए उसने आंगन के एक कोने में गाड़ दिया था। ऐसी बातें उसने बहुत पहले अपने बचपन में सीख ली थीं, जब उत्तरी और दक्षिणी अमरीका के युद्ध में यांगकियों (उत्तरी सैनिकों) से बचाने के लिए उसके परिवार ने भी अपना धन छिपा दिया था। अब मैं यह अनुभव करती हूं कि मेरे माता-पिता ने जिस शान्ति से अपने खतरे का मुकाबला किया, उसका कारण यह था कि उनका बचपन युद्ध-काल में बीता था।

असली विदाई बिल्कुल अवास्तविक थी। मैं एक कमरे से दूसरे कमरे में घूमती हुई और अपने मन में यह कहती हुई कि शायद ये सब चीज़ें फिर कभी नहीं देखूंगी, सारे मकान में चक्कर काटती फिरी। थोड़ी-सी ज़्यादा पसन्द की पुस्तकों के अलावा अपनी और पुस्तकें मैं न ले सकी क्योंकि हम जल्दी में जा रहे थे। तत्काल भागने का संकेत बहुत पहले सोच लिया गया था—जब अमरीकन वाणिज्य-दूतावास के ऊपर का झण्डा बिल्कुल लाल रंग का कर दिया जाए तब हमें चल पड़ना था। और वह दोपहर में लाल कर दिया गया था। पर मकान के अलावा और भी चीज़ें थीं जिनसे विदा लेनी थी। मैंने आंगन के अन्दर अपने बैठने के प्रिय स्थानों से विदा ली—एक बहुत बड़ा चीनी एल्म का वृक्ष था जिसका व्यास तीन फुट था,

जिसपर मैं अनेक बार चढ़ी थी और जिसमें मेरा बैठने का प्रिय स्थान टहनियों के बीच में एक कोना था, जहां बैठकर मैं किसीकी नज़र में बिना पड़े नीचे सड़क पर देखती रह सकती थी; बांसों के नीचे बगीचे की बेंच थी जिसपर मैं पढ़ने जाया करती थी और बरांडे के नीचे मेरी छोटी-सी खेलने की रसोई थी। और फिर पशु थे, मेरे तीतर थे, एक खरगोश था और एक बूढ़ा सलेटी रंग का कुत्ता नेबूचैड-नेजर था, जिसे हम नेब कहा करते थे—यह विनम्र झबरा याचनापूर्ण, अत्यधिक प्रेममय प्राणी था, जिसे सिवाय मेरे और कोई प्यार नहीं कर सकता था। मुझे यह भरोसा नहीं हो सकता था कि मेरे चले जाने के बाद कोई उसे रोटी देगा, क्योंकि हमारी आमा हमारे साथ जा रही थी। एक वही बूढ़े नेब को मेरी खातिर जीवित रख सकती थी।

और फिर भी, मुझे यह विश्वास नहीं होता था कि मुझे कभी नहीं लौटना। मेरे पिता यहां होंगे और मैं उनके यहां न रहने की कल्पना नहीं कर सकती थी और फिर गड़ी चांदी भी खोदनी थी और कम से कम वृक्ष तथा यह स्थायी पहाड़ और घाटियां तो रहेंगी ही। किसी समय हम लौटेंगे ही, जब चीनी लोग फिर हमें पसन्द करने लगेंगे। इस अदम्य आशा से मैं अपने परिवार के पीछे-पीछे चलती हुई बांध पर आ पहुंची। फिर लकड़ी का पुल पार करके जहाज़ के ठहरने के स्थान पर आ गई। निश्चित समय तक प्रतीक्षा करने के बाद हम स्टीमर पर चढ़ गए और शांगहाई रवाना हो गए।

मैंने इस यात्रा का खूब आनन्द लिया—क्योंकि हम ऐसी यात्रा बहुत कम करते थे अतः तब भी मैं इसका आनन्द लेने से अपने को न रोक सकी। जहाज़ की स्वच्छता बड़ी प्रसन्नतादायक थी—सुन्दर छोटा-सा भोजन का कमरा, साफ-सुथरी केबिन और लाल वर्दियों वाले चीनी नौकर। कैप्टेन एक स्कौच (स्काटलैंड का निवासी) था, क्योंकि मेरे पिता ने चीनी व्यापारियों के जहाज़ से जाने के बजाय अंग्रेज़ी जहाज़ से जाना अक्लमन्दी समझा। कैप्टेन को देखकर ही मुझे संकोच का अनुभव हुआ था। मैंने सुना था कि अंग्रेज़ कैप्टेन मिशनरियों, विशेष रूप से मेरे पिता के सदृश गर्वीले, आग्रही व्यक्तियों को पसन्द नहीं करते जो अपने सच्चे रूप, अर्थात् दृढ़तापूर्वक ईश्वर-भक्ति को छिपाने का और अपने-आपको कुछ और दिखाने का कोई यत्न नहीं करते। मुझे सबसे अधिक अच्छा लगा नदी के साथ-साथ जहाज़ का चलना, हरएक किनारे से सरकना। रास्ते में बन्दरगाह आए, जिनपर हम दिन

में या रात में ठहरते थे। एक रात अपनी बर्थ पर पड़े-पड़े मैंने दो तारों वाले चीनी बेला से बजाई जाती हुई एक ऐसी मधुर रागिनी सुनी जिसे मैं दोहरा तो नहीं सकती पर आज तक मुझे याद है कि वैसी मनमोहक धुन मैंने शायद ही कभी सुनी हो। अब भी यह कभी-कभी मेरे मन में उभर आती है और मैं उस बहुत वर्ष पहले के निशीथकाल में से, उस जादू भरे अन्धकार में से उस रागिनी को रूप देने की कोशिश करती हूं पर वह मेरी पकड़ में नहीं आती; यद्यपि मुझे उसकी गूंज अपने मस्तिष्क की विविध केशिकाओं में निरन्तर सुनाई देती है।

हम शांगहाई पहुंचे, यह मुझे मालूम है, पर उसके बाद के महीनों, शायद करीब एक वर्ष तक के बारे में मेरी स्मृति कुछ काम नहीं देती। मुझे दृश्य तो स्पष्ट और अलग-अलग दिखाई देते हैं, पर कोई ऐसा सम्बन्ध नहीं है जिससे वे एक जगह गुंथे हों। जो कुछ हुआ वह अलग घटनाओं के रूप में और आकस्मिक, तथा मेरे वास्तविक जीवन से असम्बद्ध मालूम होता है। हम केवल शरणार्थी थे। शांगहाई हम लोगों के लिए, जो पहाड़ी से यहां आए थे, बेहद गर्म था, पर मुझे अर्ध-उष्णदेशीय गर्मी का अभ्यास था और उसकी स्मृति कष्टदायक न होकर आनन्ददायक है। घर पर हमारा रोज़ का स्नान टीन के एक टब में होता था जिसे कहार बाल्टियों से पानी लाकर भर देता था। यहां शांगहाई में मैंने पहली बार नल से दीवार में से पानी आते देखा। यह बिल्कुल जादू था—पानी अपने-आप चला आ रहा था, जिसकी चर्चा मैंने अमरीकनों से और अमरीका होकर आए हुए चीनियों से सुनी थी। टब अब भी रंगे टीन का था, पर यह बड़ा था और एक चौड़े उथले लकड़ी के चबूतरे में जड़ा था। इस चबूतरे पर टीन लगी थी, इसके चारों ओर फट्टा जड़ा था और इसके एक सिरे पर नाली थी। मेरी माता ने एक बड़े कागज़ से नाली बन्द कर दी और फिर ठंडा पानी उस घिरे चबूतरे में आने दिया। वहां गर्मी के दिनों में तीसरे पहर मेरी छोटी-सी बहन और मैं खेला करती थीं—इस बात की मुझे हल्की-सी बालकपन की याद है, पर इतनी बात थी कि इससे मेरा मन अधिक बड़े कष्ट से हट गया। हमारा छोटा-सा तीन कमरों वाला फ्लैट बब्लिंग वैल रोड के परे किसी जगह एक शान्त अन्तिम सिरे पर था और वहां मैंने दो सम्पन्न परिवार में पली पड़ौस की छोटी-छोटी अंग्रेज़ लड़कियों से रस्सी पर कूदना सीखा। पर मेरी पसन्द की पड़ौसिन एक पुर्तगाली महिला थी, जो दयालुता का अवतार थी। वह उस सड़क पर दो मकान आगे रहती और मुझे प्रायः चाय पीने बुलाया करती थी।

वहां मै सदा खुशी से जाया करती थी। नई सफेद पोशाक पहनकर और अपने बाल घुघराले बनाकर मै वहां जाया करती थी, पर मुझे याद है कि एक बार उनके यहां जाने के लिए मे इतनी तेज़ दौड़ी कि गिर पड़ी और मेरी कोहनी बुरी तरह छिल गई और मै खून से लथपथ वहां पहुंची, पर फिर भी मै रो नहीं रही थी। तब उस पुर्तगाली महिला ने मुझे बहुत सारी पट्टियां बांधी और मुझे अच्छी-अच्छी चीजें खिलाई। उस चोट का चिह्न उसकी दयालुता के स्मारक के रूप में अब भी मेरी कोहनी पर मौजूद है, यद्यपि उसका नाम मै बहुत पहले भूल गई।

सैर के लिए हमारी मां या हमारी आमा हमें वांगपू नदी के किनारे एक छोटे-से पार्क में ले जाया करती थी, जहां एक कृत्रिम पहाड़ी मुझे बड़ी आनन्द-दायक लगा करती थी। वहां सीढ़ियां चढ़ने के बाद ऊपर एक गुफा में एक छोटा-सा पत्थर का लड़का था जो अपने सिर पर एक पत्थर की छतरी सदा लगाए रहता था, जिसपर से निरन्तर वर्षा की बूंदें टपकती रहती थीं। कभी-कभी हम वहां पार्क देखने जाया करते थे, जहां घुड़दौड़ होती रहती थी और वहां चीनी तथा गोरे मिलकर उत्साह से दांव लगाते थे। हमारा बेशक उससे कुछ वास्ता न था। हम सुन्दर फूलों की क्यारियों के पास घूमते और पिजरों में बन्द बन्दर देखते और फिर घर आ जाते।

ये है मेरी उस वर्ष की धुधली स्मृतियां जिसमें चीन के अन्य स्थानों में हमारे युग का सबसे भयंकर विस्फोट आरम्भ हो रहा था जिसका अन्त कहां होगा, यह अभी दिखाई नही देता और न दिखाई दे सकता है।

उस शरणार्थी-काल की एक अन्तिम घटना मेरे मन में जमी हुई है। एक दिन हम, मै और मेरी मां, एक भीड़-भाड़ वाली सड़क पर जा रहे थे—और सड़क का नाम मुझे याद नहीं रहा—इसपर बड़ी भीड़ थी और मेरे आगे, जैसे मेरा दम-सा घोटता हुआ एक चौड़ा चीनी महाशय था जो नीले साटन के कपड़े और एक काली जाकट पहने था। मेरे मुह के ठीक सामने उसकी चोटी का सिरा झूल रहा था, जिसमें काली रेशम की बुनी हुई डोरी गुथी थी जिसके सिरे पर एक बड़ा-सा गुच्छा था। गर्मी असह्य हो गई। वह महाशय बिल्कुल अचल मालूम होता था और अन्त में मैने एक तरह के हठपूर्ण अधैर्य से वह काम किया जो पहले कभी नहीं किया था। यह इशारा करने के लिए कि वह ज़रा तेज़ चले मैने उसकी चोटी का गुच्छा धीरे से खींच दिया। उसने तुरन्त मुड़कर मेरी ओर आंख तरेरी—वह मुझे न डरा सका

पर मेरी मां ने मुझे अवश्य डराया क्योंकि मैंने देखा कि उसका चेहरा बिलकुल फक पड़ गया था और उसने जल्दी से मेरी हरकत पर माफी मांगी।

'यह अभी बच्ची ही है,' मुझे उसके शब्द अब तक याद हैं, 'पर यह नटखट बच्ची है और मैं इसे सज़ा दूंगी। मेहरबानी करके इसकी गलती माफ कीजिए।'

उस भलेमानस ने कोई उत्तर नहीं दिया, पर उसकी मुद्रा में कोई परिवर्तन दिखाई नहीं दिया। तब मेरी मां ने मुझे अपनी ओर खींच लिया और हम दूसरी सड़क की ओर चले गए।

'आगे से कभी...' उसने इतनी सख्ती से कहा जितनी मैंने पहले कभी उसकी आवाज़ में न सुनी थी, 'आगे से कभी ऐसा काम न करना। यह बड़ा खतरनाक हो सकता है।'

जिस चीज़ से मैं डरी यह उसके चेहरे की मुद्रा थी। मैंने ऐसी मुद्रा पहले कभी न देखी थी। वह भयभीत थी, एक चीनी से भयभीत थी। मैंने अपने जीवन में पहले कभी उसे भयभीत नहीं देखा था। सचमुच यह एक युग का अन्त था।

२

कटन, ओहायो
अगस्त, १९५३

आज हम पेन्सिलवानिया के पहाड़ी देश पर सफर करते रहे और इसके बाद तीसरे पहर ओहायो पहुंच गए क्योंकि हमारे सफर की दिशा पश्चिम की ओर थी। हम रात शुरू होने पर इस शान्त छोटे नगर में आ गए जो विलियम मैककिनले का नगर था। यहां अमरीकन राष्ट्रपति तथा उनकी पत्नी एक पार्क में एक बहुत बड़े मकबरे में सोए हुए हैं। बहुत सी सीढ़ियां चढ़कर मकबरे पर पहुंचते हैं और जहां सीढ़ियां खत्म होती हैं वहां मृत राष्ट्र-नेता की एक मूर्ति है।

यह एक विचित्र संयोग है कि मैककिनले का मेरे उस दूसरे जगत् के जीवन से कुछ सम्बन्ध था जो चीन में मुसीबत के बॉक्सर-वर्षों के बाद आरम्भ हुआ। मेरे पिता नहीं मारे गए थे और न हमारे कियागंसू प्रांत का कोई गोरा मारा गया था और यह सब एक आदमी, हमारे वाइसराय, की समझदारी और साहस के कारण सम्भव हुआ। उसने राजमाता का आदेश आने पर उसका पालन करने से इन्कार कर दिया। यह इन्कार दया के कारण ही नहीं, बल्कि दूरदर्शिता के कारण भी किया गया क्योंकि हमारा वाइसराय एक बात समझता था जिसे वृद्ध राजमाता नहीं समझती थी, या नहीं समझ सकती थी, और वह बात यह थी कि कोई भी व्यक्ति, यहां तक कि राजमाता भी, समय की गति को नहीं रोक सकती। वाइस-राय जानता था कि चीन में क्रान्ति अकेले गोरों ने नहीं पैदा की है। उनकी उप-स्थिति और कार्यों ने, जो अच्छे कम और बुरे अधिक थे, केवल चीनी जनता के जागरण की गति बढ़ा दी थी। लोग अपने-आपसे पूछते थे कि पश्चिम के अक्रां-ताओं की, जो पहले के और सब आक्रांताओं से भिन्न थे, लूट और दर्प का मुका-बला करने के लिए हमारे पास हथियार क्यों नहीं हैं। गोरों ने सिंहासन के बजाय ज़मीनों और नदियों पर कब्ज़ा कर लिया था और उन्होंने समुद्र-तट तक रेलमार्ग

बना दिए थे, जिससे वे अपना लूट का सामान जहाज़ों में ले जा सकें। वे चीन की उत्कृष्टतर सभ्यता से भी, पहले के लोगों की तरह, प्रभावित न हुए। इसके विपरीत, पश्चिम वाले अपनी ही सभ्यताओं को उत्कृष्ट मानते थे और उन्होंने तोपों और बन्दूकों से चीनियों के सामने इसे सिद्ध करने का यत्न किया। ये हथियार निहत्थी चीनी जनता के लिए वैसा ही आतंक पैदा करने वाले थे जैसे यहां ओहायो के किसी प्रतिरक्षा-साधनों से रहित नगर के लिए, इसी नगर के लिए जिसमें आज रात हम सो रहे हैं, कोई हाइड्रोजन बम हो। इस नगर का भी चीन की उस आरम्भिक क्रान्ति के वर्षों से सीधा सम्बन्ध है, क्योंकि हमारी इस यात्रा का कारण मेरे सैर-सपाटे से कुछ अधिक था। हमारे परिवार में तीन पुत्र हैं जिनमें से बड़े दो सैनिक भर्ती की आयु के निकट पहुंच रहे हैं, और तीसरा भी बहुत पीछे नहीं है। घृणित संभावना यथार्थ बन गई है। आज मेरे सामने––जिसका पालन-पोषण एक तो ईसाइयत के जगत् में हुआ है जिसमें यह शिक्षा दी गई है कि प्रेम और भाईचारा जीवन के नियम होने चाहिए, और एक दूसरे अत्यधिक दयापूर्ण जगत् में हुआ जिसमें यह चीनी विश्वास व्याप्त था कि जीवन पवित्र चीज़ है और यह कि जानवर को मारना पाप है, फिर आदमी को मारना तो और भी बड़ा पाप है––यह दुःखद सम्भाव्यता आकर खड़ी हुई है कि मेरे पुत्रों को ईसाई और एशियाई दोनों शिक्षाओं को असत्य घोषित करना होगा। उन्हें हमारी फौज में भर्ती होना पड़ेगा और शायद एक एशियाई राष्ट्र से लड़ना पड़ेगा—ऐसे राष्ट्र से, जिसके लिए मेरे मन में प्रेम और प्रशंसा के भाव हैं और जिसका मुझपर भारी ऋण है। मैं इसे रोकने में विवश हूं, यद्यपि इसे एशिया में बहुत पहले रोका जा सकता था और तब से अनेक बार रोका जा सकता था, पर अब शायद समय निकल गया क्योंकि एशिया में हमने विजय नहीं पाई, यद्यपि यदि हमने वहां के राष्ट्रों की प्रकृति को समझ लिया होता तो आसानी से विजय पा ली होती।

और मैककिनले, जिसकी कांसे की मूर्ति ओहायो के इस छोटे-से नगर को ऊपर से देख रही है–उसका मेरे बचपन से क्या सम्बन्ध है? थोड़ा, पर फिर भी बहुत। क्योंकि जब १९०० का अजीब साल खत्म हो गया––वही साल जिसमें मैंने अपनी अमरीकन माता की आंखों में किसी चीनी से भय देखा था जिससे उस दिन से मुझमें भी वह भय आ गया था—जो मानो प्रेम और मैत्री से मिश्रित था, तब हम लोग अपने देश अमरीका आ गए थे। यहां मुझे पहला आघात राष्ट्रपति मैक-

किनले की राजनीतिक हत्या से लगा था। उस समय मुझे सम्राट् और राष्ट्रपति के अन्तर का कुछ पता न था। चीन में हमारा तरुण सम्राट् एकाएक मर गया था। अफवाह यह थी कि राजमाता के आदेश से, जो स्वयं बुढ़ापे और बीमारी के कारण कुछ ही घण्टों में मर जाने वाली थी, उसकी हत्या कर दी गई थी। क्योंकि राजमाता पहले उस खतरनाक उत्तराधिकारी को खत्म किए बिना मरने को तैयार न थी और अब एकाएक यहां मेरे अपने देश में भी राष्ट्रपति की हत्या कर दी गई थी।

मुझे सब कुछ याद नहीं है क्योंकि बहुत कुछ हुआ था और मेरे चारों ओर के जगत् धूल में मिल रहे थे, पर मुझे यह ज़रूर याद है कि मैं वेस्ट विर्जिनिया में अपने नाना के मकान में थी, जहां मेरा जन्म हुआ था और जो शान्त और सुन्दर स्थान था। वहां एक दिन मैं अपने ममेरे भाई-बहनों के साथ सफेद और गुलाबी अंगूर जमा कर रही थी। सितम्बर का मास था—गर्म, स्थिर और महक-भरा, और मैं प्रसन्न और शान्त थी। अपने देश का, जो मेरा बिल्कुल अपना था, पूरा-पूरा आनन्द ले रही थी—इसमें अब न कोई युद्ध था, न कोई घृणा या क्रान्ति थी। उसी समय किसीने हमें जल्दी से आने के लिए कहा और हम दौड़कर मकान में आए। हम बैठक में गए—मामा, मामियां, मेरे माता-पिता, मेरा भाई, मेरे ममेरे भाई-बहन और मैं। वहां मेरे नाना अपना काला सूट पहने, अपना कड़ा सफेद कालर लगाए, काली टाई बांधे, बिल्कुल सीधे खड़े थे और उनके सफेद बाल उनके माथे से ऊपर की ओर मुड़े थे। उनकी काली आंखें विषण्ण थीं और उनका चेहरा गम्भीर हो रहा था। और जब हम सब इकट्ठे हो गए तब उन्होंने गम्भीर आवाज़ में कहा :

'बच्चो, संयुक्तराष्ट्र अमरीका के राष्ट्रपति की हत्या कर दी गई है। हमारे राष्ट्रपति मर चुके हैं।'

उन सब में से केवल मैं ज़ोर से रो पड़ी जिससे उन्हें आश्चर्य और हैरानी हुई और मेरी मां ने मेरी गर्दन में अपनी बांह डाल दी।

'ओह', मैं रोते हुए बोली, 'क्या यहां भी क्रांति होगी?'

'यह बच्ची क्या कह रही है?' मेरे नाना ने पूछा।

किसीने कुछ उत्तर न दिया क्योंकि मेरी माता के सिवाय और किसीको कुछ पता न था। मेरी मां मेरे रोने का कारण अच्छी तरह समझ गई थी। पर वह कुछ

न बोली और मैं सुबकती रही। वर्षों बाद तक मुझे यह पता न चला कि मैं किस बात से डरी हुई थी।

इण्डियाना

मैंने पुस्तकों में पढ़ा था कि इण्डियाना अमरीका के सब प्रदेशों में देश का सबसे अच्छा प्रतिनिधि नमूना है। खेती और उद्योग, चौथी पीढ़ी में बाहर से आए लोग और यहां के पुराने वासी, मैदान और पहाड़, नदियां और झीलें—इण्डियाना में यह सब कुछ है। एक ऐसा चित्रमय कोना भी है जिसकी गोल चक्करदार पहाड़ियों ने हमारे सबसे अधिक अमरीकन कलाकारों को आकृष्ट किया और निश्चय ही अमरीका के सर्वोत्तम लेखकों में से कुछ इस राज्य के थे, अर्थात् वे लेखक जिनमें कृत्रिमता और प्रयोगवाद सबसे कम था। प्रयोगवाद शब्द पर मुझे हंसी आ जाती है : कुछ भी नया नहीं है, सब कुछ पहले किया जा चुका है। इस सप्ताह मैंने एक पुस्तक पर एक समीक्षक की यह आलोचना पढ़ी कि लेखक ने 'आधुनिक कटबैक (सिलसिला तोड़कर पूर्ववर्ती बात का वर्णन) टेकनीक का प्रयोग नहीं किया।' यह नई है? पांच सौ वर्ष पहले चीनी उपन्यासकार पूर्ण कौशल से कटबैक का प्रयोग कर रहे थे और यूरोप में, जिसका इतिहास अपेक्षया पीछे का है, फ्रेंच लेखक उस समय कटबैक का प्रयोग कर रहे थे जब अमरीका नया था। जोसफ कोनरैड कटबैक का उस्ताद था और जब मैंने इसका प्रयोग किया है तब मेरे मन में यह नहीं आया कि मैं कोई नया टेकनीक अपना रही हूं क्योंकि मैं कुछ नया अपना ही नहीं रही थी। कटबैक शब्दचित्र या छविचित्रण के लिए प्रशंसनीय टेकनीक है, पर प्रबन्ध-रचना के लिए नहीं।

मैं अनुभव करती हूं कि इण्डियाना खालिस अमरीकन है। कभी इसमें कुछ पागलपन आ गया था और लोगों ने थोड़े-से बहुत बड़े-बड़े और बुर्जों वाले मकान बनवा लिए थे। ऐसा एक मकान मैंने आज देखा जिसपर सफेद रंग किया हुआ था और जो एक बहुत बड़े जमाए केक जैसा था। स्पष्ट था कि किसीको इसके पुराने फैशन पर अभिमान है और वह उचित ही है क्योंकि यह बहुत बड़ा और प्रभावोत्पादक था।

परन्तु हमारे देश के मकान हमारे अपने किस्म के अलग ही होते हैं। कोई

नहीं जानता कि जब किसी अमरीकन की अपने लिए मकान बनाने की हैसियत होगी, तब वह क्या बनवाएगा। वह इतिहास या दृश्य-सौन्दर्य पर कोई ध्यान नहीं देता। इसके विपरीत वह इस तरह व्यवहार करता है जैसे वह अपने अदन के किसी बाग में कोई आदम हो। मैं स्वीकार करती हूं कि मैं यह नहीं जानती कि अपने नये भवन-निर्माण-सम्बन्धी औद्योगिक और वैज्ञानिक उन्नति से बनाए गए सामान का क्या किया जाए, पर मैं यह मानती हू कि वे निरी बाजारू चीजें है और अस्थायी आवश्यकता के बाद उनमें कोई भी नहीं रहेगा।

यहां इण्डियाना में कुछ थोड़े-से मकानों को छोड़कर शेष मकान काफी भद्दे हैं और उनमें उतनी ही विविधता है जितनी दूसरे राज्यों के मकानों में। मैं सोचा करती हूं कि चीनी लोगों को इनिहास और भूगोल की दृष्टि मे शताब्दियों तक इकट्ठे रहने से एकरूप होने में कितना समय लगा होगा कि उनका स्थापत्य रूढ़ और शैलीबद्ध हो गया जो शताब्दियों के पारिवारिक जीवन का निचोड़ है। मेरे चीनी जगत् में ऐसे परिवारों से मिलना कुछ भी खास बात न थी जो एक हजार साल मे उसी स्थान में रहते थे। मकान भूमि पर धीरे-धीरे खड़े होते गए। उत्तर के चौड़े मैदानों के कारण छतें चौड़ी हल्के ढाल वाली हो गई और दक्षिण में ज्वालामुखी पर्वतो की सीधी उत्तुग पक्तियों ने छतों को सीधा ढाल दे दिया था। परन्तु उत्तर हो या दक्षिण, छतों के नीचे कमरे एक ही ढर्रे पर बने हुए थे जिनमें एक पूर्ण पारिवारिक जीवन के बीच स्वतन्त्रता और एकान्त के लिए पूरी गुजाइश रखी गई थी। हर पीढ़ी एक मजिल के कमरों मे अलग-अलग रहती, पर वे आंगनों द्वारा दूसरी पीढियों से जुड़े रहते थे। इस प्रकार चीनी लोग मनुष्य की एकांत में रहने की, पर साथ ही दूसरों के, विशेष रूप से अपने जैसों के, निकट रहने की आवश्यकता से परिचित थे। इस प्रकार बच्चे अनेक पीढियों के स्नेहमय बुजुर्गों से घिरे हुए मुक्त निश्चिंतता मे बड़े होते थे और वयस्क बड़े परिवार की जिम्मेदारी के बोझ का हिस्सा उठाते थे। रोजगार छूटने का कुछ भय न था क्योंकि ऐसी परिस्थिति में आदमी नया काम न मिलने तक बिना ग्लानि के परिवार के साथ रहता था। अनाथालयो की जरूरत न थी—वहां अनाथ ही नहीं थे क्योंकि हर परिवार अपनों-अपनों का पालन करता था। बूढ़ों से प्यार और आदर का बर्ताव किया जाता था और उन्हे ऐसी संस्थाओं मे कभी नहीं भेजा जाता था, जैसे कभी-कभी यहां भेज दिया जाता है—और मुझे बताया गया है कि भेजना

जरूरी हो जाता है क्योंकि यहां छोटे-छोटे रद्दी मकान होते है जिनमे केवल दो व्यक्तियो और दो बच्चो के लिए जगह होती है।

मुझे इस बात की खुशी है कि एक बार मुझे उस वर्ष मैककिनले की हत्या के बावजूद अपने नाना और अपने मामा-मामियो और अपने भाई-बहनो के साथ एक बडे मकान मे रहने का आनन्द मिला। उस समय मुझे अपने सौभाग्य का पता नही चला क्योकि मैने तो यह मान लिया था कि मेरे देश मे हर कोई ऐसे ही रहता है। मै केवल नौ वर्ष की थी अत· मेरे अज्ञान के लिए मुझे क्षमा मिलनी चाहिए। पर तो भी, मेरा अब भी यह विश्वास है कि विभिन्न पीढियो को एक-दूसरे की आवश्यकता है और उन्हे इकट्ठे रहना चाहिए।

मेरी चीनी सहेली युग ने पिछला महीना हमारे फार्म पर बिताया और मुझे उसके साथ हुई लम्बी बातचीत के दो दृश्य याद है जो उसने मेरे सामने पेश किए थे। पहले का सम्बन्ध परिवारो से न होकर मछली से था। उसने अपने स्वाभाविक मीठे ढग से और बडी गम्भीरता से कहना शुरू किया था

'मुझे तुमसे कुछ कहना है।'

'क्या बात है ?' मैने पूछा।

उसने अग्रेजी मे कहा था, और अब वह चीनी, अर्थात् मध्यचीन की मण्डारिन भाषा मे, जो हमारे वचपन की भाषा थी, बोलने लगी। उसने कहा

'प्यारी दीदी, मै न्यूयार्क मे प्राकृतिक विज्ञान के सग्रहालय मे गई थी जिससे मै कुछ उपयोगी और वैज्ञानिक वाते सीख सकू।'

'तो तुमने कुछ उपयोगी और वैज्ञानिक चीज सीखी भी ?' मैने पूछा।

वह उदास हो गई। 'वैज्ञानिक तो शायद है पर उपयोगी नही—केवल झझट की चीजे।'

'बताओ तो।' मै बोली।

वह जरा सकुचाई और उसके बाद कहने लगी, 'वहा एक आदमी ने मुझे एक बडी अजीब वात बताई। उसने कहा कि हम मनुष्य लोग मछली से पैदा हुए है। क्या मै इस बात पर विश्वास कर लू ? इससे मेरा मन उदास हो जाता है। सिर्फ मछली से !'

उसने अपना सिर हिलाया और आह भरी। 'बड़ी निराशाजनक बात है। है न ? मछली ! दीदी, क्या इस बात पर विश्वास करना जरूरी है ?'

'नही,' मैने कहा, 'इसपर विश्वास मत करो। वह आदमी अटकल लगा रहा था। आदिमनुष्य के बारे मे बहुत-सी कहानिया है। उसपर विश्वास करो जो तुम्हारे मन और विवेक को अच्छी लगे।'

वह खिल गई। 'तुम्हारा सचमुच ऐसा विचार है ?'

'हा, सचमुच,' मैने दृढता से कहा।

यह भी युग ही थी जिसने एक वृद्ध महिला की—एक अमरीकन वृद्ध महिला, या इस हिसाब से वृद्ध पुरुष भी कह सकते है—तस्वीर स्पष्ट और तरुण शब्दो मे पेश की थी। पहले की तरह—जैसे वह एकाएक बोल रही हो, पर वह एकाएक नही बोल रही थी क्योकि बोलने मे पहले वह बहुत देर तक सोचती रही थी—वह कहने लगी और इस बार अग्रेजी मे बोली, 'मुझे अमरीकन बूढियो और बूढो के लिए दु ख होता है।'

'क्यो ?' मैने पूछा।

उत्तर के रूप मे उसने मुझे न्यूयार्क के एक छोटे मकान के, जिसमे वह अपने उत्तम पति के साथ रहती है, अपने जीवन से एक उदाहरण दिया। उसने सदा की तरह अपनी कोमल वाणी मे अब भी अग्रेजी मे कहा, 'हमारे उसी मकान मे एक भली बुढिया अकेली रहती है। हम उसे नही जानते थे, पर एक दिन हमारा पडौसी बडा प्रसन्न होकर यह कहता हुआ आया हमारे मित्र की पोती को देखने के लिए जरा नीचे तो आओ। मेरा मित्र बडा प्रसन्न है। क्यो ? क्योकि आज पहली बार पाच वर्ष की उस छोटी-सी लडकी को अपनी दादी के पास आने और रात बिताने की अनुमति मिली है।

'मै ऐसी बात पर विश्वास नही कर सकती—पाच वर्ष की उमर और कभी दादी के साथ रात को नही रही! हम नीचे उतरकर गए और यह बात सच थी। छोटी लडकी और दादी दोनो खुश थी, और दादी ने मुझे किस्सा बताया। उसने कहा कि मै कब से आशा कर रही थी कि लडकी मेरे पास आ जाए पर मुझे कहने की हिम्मत नही पडती थी। पर आज खुशकिस्मती से लडकी ने खुद यह बात पेश की जब कि बुढिया अपने लडके के परिवार को देखने गई थी। लडकी ने पूछा, 'दीदी, क्या मै रात को तुम्हारे मकान मे रह सकती हू ?' बुढिया को एकदम 'हा, हा, जरूर,' कहने का साहस न हुआ। वह शान्ति से बोली, 'बेटी, जैसी तेरी मा की इच्छा हो।' तब लडकी ने अपनी मा से पूछा तो वह बोली, 'अपने पिता को लौटकर आने दो।'

इस प्रकार बुढ़िया को अपने पुत्र के घर लौटने तक प्रतीक्षा करनी पड़ी और फिर उसे लड़की के पूछने की प्रतीक्षा करनी पड़ी जिसे इस डर से पूछने की हिम्मत न मालूम होती थी कि इजाज़त नही मिलेगी; और जब पिता ने—उसके अपने ही पुत्र ने—कहा, 'क्यों नहीं !' और फिर लड़की की मां ने कहा, 'बस इस बार चली जा।' यह सब बुढ़िया ने सुनाया और मै सचमुच रोने लगी क्योंकि चीन में दादी को अपने से छोटों का इतना भय नहीं हो सकता। यह ठीक नही।'

मैं अपनी चीनी सहेली से सहमत थी और फिर मुझे इससे विपरीत एक बात याद आई जो एक अमरीकन युवक ने मुझसे कुछ ही सप्ताह पहले कही थी—'मै चाहता हूं कि मेरी मां सदा उसी तरह हमारे साथ रहे जैसे आप बताती है कि चीन में दादा-दादी रहते है, पर वह छोटे बच्चों, यहां तक कि अपने ही पोते-पोतियों, के झंझट में नहीं पडना चाहती। वह यात्रा करना, संगीत सुनना, विदेश जाना और 'अपनी पसन्द का जीवन' बिताना चाहती है और इस प्रकार मेरे बच्चों को अपनी दादी को जानने का भी कोई मौका नही।'

एक ही कहानी के दो पहलू हैं और मं इससे यही सार निकाल सकती हूं कि हमारा अमरीकन ढर्रा बिना ढर्रे का रहेगा या यू कहें कि हर व्यक्ति की अपनी मौज ही ढर्रा है।

मेरे अपने मामले में मेरे नाना दूर पर थे, पर सांत्वना के स्रोत थे। उनका उस मकान में, जिसमें मेरा जन्म हुआ था, एक अपना स्थान था। उनकी आकृति सीधी और कुछ कठोर, पर सदा दयापूर्ण होती थी, और यद्यपि उस वर्ष के, जिसमें मैक-किनले मारा गया था, कुछ महीने जल्दी गुजर गए, और मै फिर अपने नाना के पास नहीं रही, फिर भी मैने उन्हें देखा था। मै मकान में उनके साथ रही थी। मैने यह अनुभव किया था कि मेरे अस्तित्व का स्रोत वे है क्योंकि वे मेरी माता के पिता थे और उनके और बच्चे मेरे मामा और मामियां थीं और उनके बच्चे मेरे भाई-बहन थे। इस प्रकार मै एक बड़े कुटुम्ब में से एक थी, अकेली नहीं। जब मेरे माता-पिता मुझे फिर अपने साथ चीन ले गए, तब मै यह ज्ञान साथ लेकर गई कि वे कहां के थे और इसलिए मै कहां की थी और हम एक विस्तृत और विदेशी चीन में कोई अकेला छोटा-सा समूह नहीं थे—विदेशी इसलिए कि अब चीनी लोग गोरों से प्यार नहीं रखते थे और उन्होंनें हमारे जैसों को मार डाला था। नही, हम अमरीकन है और मेरा एक अपना देश है, और एक बड़ा सफेद मकान है, जिसमें

मेरे कुटुम्बी रहते हैं और वहां हमारी कई पीढ़ियां हैं जो सब परस्पर सम्बन्धित हैं। हरएक बच्चे को ऐसे ही महसूस करना चाहिए और यदि वह इस प्रकार महसूस करता है तो वह सारी दुनिया में घूमता हुआ भी कभी अकेला न होगा।

सियो फाल्स, साउथ डाकोटा

हम इलीनोइस और आयोवा की सुन्दर पहाड़ियों पर घूमते रहे और मिनेसोटा में काफी दूर तक चले गए। हम साउथ डाकोटा में अपनी पहली रात बिताने के लिए यहां पहुंचे।

मैं कभी-कभी सोचती हूं कि अमरीकन नगरों और गांवों के नाम किस स्वप्न या किस अनुभूति (या दोनों) के आधार पर रखे गए। आयोवा में हम एक छोटे-से पुरवे के पास से गुज़रे जिसका नाम पोलो था, जो मार्कोपोलो के सम्मान में रखा गया था। पर आयोवा, अमरीका में मार्कोपोलो कैसे? उसका नाम मेरा बड़ा परिचित है क्योंकि यांगचौ चिकियांग से, जहां मेरा चीनी घर है, नदी के पार है और यांगचौ में मार्कोपोलो कुछ साल गवर्नर रहा था। यह नगर सुन्दर स्त्रियों के लिए प्रसिद्ध है जिनमें से एक मेरी चीनी नर्स थी, यद्यपि मेरी स्मृति में वह वृद्ध और कुछ दांतों से रहित थी, पर फिर भी सुन्दर थी। तो, आयोवा में किस अमरीकन ने दुनिया के दूसरी ओर की गई उन यात्राओं का स्वप्न देखते हुए अपने नगर का नाम पोलो रखा?

और हमें एक नगर मिला वूसुंग, पर वूसुंग आयोवा के बीचोंबीच क्यों? किस कल्पनाशील दौड़ते मन ने घर पर रुकने के लिए मजबूर होकर दूर-दूर तक स्थल से घिरे नगर का नाम यांग से डेल्टे बन्दरगाह के नाम पर रख दिया जो शांगहाई का और इसलिए चीन का प्रवेश-द्वार है? और जब मैं इस तरह सोच रही थी, तब हमारी कार मिनेसोटा में आ गई और वहां एक मार्गसूचक फट्टे पर सीलोन लिखा था। पर मैं तो एक ही सीलोन (श्रीलंका) जानती हूं जो सुन्दर द्वीप भारत के निचले छोर से लगा है।

इस यात्रा में पहले हम इलिनोइस में एक खुले छोटे-से शहर में से भी गुज़रे थे जो सारा धूप के लिए खुला था। यह गैलेना था, जो मेरा ख्याल है कि हमारे पेन्सिलवानिया वाले छोटे से न्यूगैलेना (नया गैलेना) का पूर्वज या सम्बन्धी होगा।

गैलेना, इलिनोइस, वह नगर है जहां उलीसस एस० ग्रांट राष्ट्रपति बनने से पहले गृह-युद्ध से पूर्व अपने परिवार के साथ अपना चमड़े की कमाई का व्यापार स्थापित करने गया था। उसने एक ठोस वर्गाकार लाल ईंट का मकान बनवाया था जो शोभाहीन, आरामदेह और सामान्य ढंग का था और वहीं से वह संघ की सेना का नेतृत्व करने के लिए बुलाया गया। उसने वहां से अपना समर्थन करने के लिए कुछ अपने लंगोटिया यार लिए। यह बताया गया है कि पहले या बाद में किसी प्रशासक ने इतने निजी आदमी साथ नहीं लिए थे। पर मैं स्वीकार करती हूं कि मुझे इस बात में कोई दोष दिखाई नहीं देता कि कोई आदमी अपने सहायक बनाने के लिए अपने मित्रों का ही चुनाव करे।

मुझे जो बात दिलचस्प लगती है वह यह है कि उलीसस एस० ग्रांट इतने ऊंचे पद पर पहुंच सका। शायद किसी लोकतन्त्र की मुख्य कमज़ोरी यह है कि कोई सचमुच बड़ा आदमी मुश्किल से ही ऊंचे पद पर पहुंच सकता है क्योंकि लोग उन्हींको चुनते हैं जिनकी बात वे समझ सकते हैं और जिनकी वे सराहना कर सकते हैं। और ऐसे लोग प्रायः उनके ही जैसे साधारण होते हैं। यह निंदा-व्यंजक शब्द लिखते समय अब्राहम लिंकन की महान् आत्मा मेरे सामने खड़ी है। वह भी मध्यवर्ती प्रदेश इलीनोइस का आदमी था और उसका नाम मैंने पहले श्री कुंग से सुना था जो उसपर इसलिए श्रद्धा रखते थे कि उसने हब्शी गुलामों को आज़ाद किया। पर जब मैंने अपने माता-पिता से इस बारे में पूछा तब वे दक्षिणी होने के कारण अभिमान से बोले कि गुलामों को तो मुक्त किया ही जा रहा था—अब्राहम लिंकन ने उन्हें मुक्त नहीं किया।

जो भी बात हो, मैं तो अपने-आपको दस वर्ष की बालिका के रूप में अपने माता-पिता के साथ फिर चीन लौटा हुआ देख रही हूं। यह १९०२ का साल है और मैं यांगत्से नदी के ऊपर की पहाड़ियों पर मिशन के बंगले के छोटे-से पुराने भोजन करने के कमरे में हूं और मैं उन वृद्ध चीनी महाशय की गम्भीर वाणी सुन रही हूं जो मेरे चीनी शिक्षक हैं। वे कन्फ्यूशियन मत के मानने वाले हैं जिससे मेरे ईसाई माता-पिता को कोई परेशानी नहीं हुई मालूम होती, यद्यपि वे मुझे चीनी भाषा का पढ़ना-लिखना सिखाते हुए कन्फ्यूशियन आचारशास्त्र की बातें मेरे मन में डालते जाते थे और मैं ध्यान से सुनती और सीखती थी। मैं उन्हें अध्यापक कुंग कहा करती थी। उन्हें अपने अल्ल कुंग पर अभिमान था—यह कन्फ्यूशियस का भी अल्ल था,

ग्रौर यह नाम चीनी भाषा के 'कुंग-फुत्से' या 'पिता कुंग' का विकृत रूप था। पर मैं ईसाई बालिका होने के नाते समझती थी कि कन्फ्यूशियस वही है जो हमारा स्वर्ग-निवासी पिता, ग्रर्थात् परम पिता परमेश्वर है,ग्रौर मैं सब देवताग्रों को स्वीकार करती थी क्योंकि मुझे ग्रनेक देवताग्रों से भरे मन्दिर देखने की ग्रादत हो चुकी थी। उनमें मेरी विशेष देवता दया की देवता क्वानयिन थी जो सदा बड़ी सुन्दर ग्रौर भव्य लगती थी। उसकी मुद्रा ग्रौर दयालुता, दोनों ग्रद्भुत थीं ग्रौर वह सब स्त्री प्राणियों के प्रति करुणापूर्ण थी। इसी प्रकार उसकी छोटी बहन वर्जिन मेरी (कुमारी मेरी) थी पर एक धुंधला बादल, जिसे मैं उस समय नहीं समझती थी, वर्जिन को घेरे हुए था—एक शुभ्र निष्कलंक बादल—पर फिर भी पुत्र (ईसा) का जन्म देने वाली। ग्रौर धैर्यवान् जोसफ, जो सदा रविवारीय स्कूल के चित्रों में एक ग्रोर खड़ा रहता था, मुझे उसपर बहुत दया ग्राती थी, क्योंकि न मालूम क्यों, ऐसा लगता था जैसे वह ठगा गया था। मैंने चीनी ईसाइयों में–जिन्हें मेरी के लिए कुछ भी उत्साह न था, ग्रौर जो जोसफ के लिए दुःख ग्रनुभव करते थे–यह चर्चा सुनी थी, ग्रौर यह चर्चा मेरे ग्रपने ग्रमरीकन ईसाई पिता के पास भी ग्रवश्य पहुंची होगी क्योंकि उन्होंने यह समझाने की कोशिश करना बन्द कर दिया कि किस तरह ईसा का जन्म कुमारी से हुग्रा था। यह भी एक रहस्य था ग्रौर इसके बारे में जितना कम कहा जाए उतना ग्रच्छा है। ग्रौर दया की देवी सचमुच निष्कलंक थी ग्रौर उसके बारे में कभी धर्मपिता या धर्मपुत्र की चर्चा नहीं होती थी। वह पूर्ण मंगलमयी थी। इसके ग्रलावा, चीनी इतिहास या पुराण-कथाग्रों में—ग्रौर प्रायः यह मिलकर एक हो जाते हैं—ऐसी सुन्दर कुमारियों की कहानियां भरी पड़ी हैं जिनमें दिव्य पुत्रों के लिए देवता गर्भाधान करते थे ग्रौर श्री कुंग मुझे यह भी पढ़ाते थे।

पर उन्होंने जो एक महत्त्वपूर्ण पाठ पढ़ाया था, वह यह था कि यदि ग्रादमी सुखी रहना चाहता है तो उसे ग्रपना सिर ग्रपने पड़ौसी के सिर से ऊंचा न उठाना चाहिए।

'जो ग्रपना सिर दूसरों के सिरों से ऊपर उठाता है', श्री कुंग ने कहा, 'उसका सिर देर-सबेर काट डाला जाएगा।'

दूसरे लोकतन्त्रीय राष्ट्रों की तरह चीन में भी यह था कि जब कोई ग्रादमी बहुत ग्रधिक प्रसिद्ध, बहुत ग्रधिक सफल, या बहुत ग्रधिक शक्तिशाली हो जाता तब रहस्यमयी शक्तियां क्रियाशील हो जाती थीं ग्रौर उसका गौरव-स्तम्भ गिरने

लगता था। चीनी लोग राष्ट्र के नाते और व्यक्तियों के रूप में गर्वीले और ईर्ष्यालु लोग हैं और वे अपने से उत्कृष्ट लोगों को पसन्द नहीं करते और न ही उन्होंने कभी उन्हें पसन्द किया। सचाई यह है कि उन्होंने कभी यह माना ही नहीं कि उनसे उत्कृष्टतर लोग हो भी सकते हैं। इस तथ्य से वर्तमान अमरीकन विरोध की आंशिक व्याख्या हो जाती है और इसके साथ मिशनरियों, व्यापारियों और राजनयज्ञों, सच पूछो तो सब ही गोरों के रुख से—जो अपने-आपको, सचेत रूप से या अचेत रूप से, चीनियों से उत्कृष्ट समझते हैं—उन सबके विरोध की व्याख्या हो जाती है। इस प्रकार चीनियों के हृदय में सौ वर्ष से अधिक समय तक क्रोधाग्नि सुलगती रही और यह क्रोधाग्नि ही—जिसे गोरे लोग पहचान नहीं सके, या पहचानना नहीं चाहते—इस बात का मुख्य कारण है कि च्यांग काई-शेक के हाथ से उसका देश निकल गया और कम्युनिस्टों के हाथ में चला गया। अगर वह बुद्धिमान् होता तो उसने हिम्मत करके अपनी पश्चिम-विरोधी भावनाओं को प्रकट किया होता और यदि उसने ऐसा किया होता तो नेतृत्व उसके हाथ में बना रह सकता था। पर उसने सोचा कि मैं अमरीकन बल से जीत सकता हूं और उसकी यह बात उसके देशवासी माफ नहीं कर सके। और हमारे लिए दुःख की बात है कि जिस अवसर को च्यांग ने खोया उसे माओ त्से-तुंग ने पकड़ लिया और आज इतिहास हमारे विरोध में पड़ गया। अमरीका वालों को यह विश्वास होना मुश्किल हो रहा है कि मित्रता के लिए हृदय से सदा उत्सुक होते हुए भी अमरीका चीनियों को अपनी ओर नहीं कर सका। तो अमरीकियों को क्या करना चाहिए? उन्हें नये सिरे से इतिहास पढ़ना चाहिए: एशिया वालों के सामने यह सिद्ध कर देना चाहिए कि वे उस अतीत से सम्बद्ध नहीं हैं, और अपेक्षाकृत निर्दोष हैं; इसलिए अमरीका को दूसरों का बोझ उठाने को मजबूर न किया जाना चाहिए—अमरीकन लड़कों को इसलिए मौत के मुंह में न झोंकना चाहिए क्योंकि इंगलैण्ड का कभी भारत पर शासन था और चीन में उसने तीन अफीम-युद्ध जीते थे, और जनता पर एक विनाशकारी टैक्स लाद दिया था या क्योंकि किसी अंग्रेज़ ने जापान को मंचूरिया में रह जाने दिया और इस प्रकार एक साम्राज्यमूलक युद्ध के लिए एक अड्डा कायम कर दिया। इसी प्रकार अमरीकन लोगों से हिन्दचीन में फ्रांस के असह्य और प्राचीन बोझ उठाने में सहारा देने के लिए भी नहीं कहा जाना चाहिए। हमें एशिया वालों के सामने यह सिद्ध करने के लिए बहुत कुछ करना होगा कि हम वह नहीं हैं जो अन्य गोरे लोग थे।

फिर भी हम केवल अपेक्षाकृत ही निर्दोष हैं, क्योंकि १९०० के बाद के उन दिनों में जब गोरी फौजों ने बूढ़ी सम्राज्ञी को ऐसी बुरी तरह सज़ा दी थी, जब उसके महल लूटे गए थे और पीकिंग से उसका अपरिमित खज़ाना सैनिकों और अफसरों ने एक-से ही स्वार्थ के वश होकर लूट लिया था, तब अमरीकन भी गोरे लोगों में थे। तब हमने उस समय बन रहे इतिहास की ओर ध्यान नहीं दिया और इसके घातक परिणाम हम नहीं समझ सके और अब तक भी नहीं समझ रहे। तूफान खत्म हो जाने के बाद कैसी अजीब बात है कि पश्चिमी इतिहास में यह बौक्सर-विद्रोह कहलाता है पर गोरे के अलावा और किस शासक के विरुद्ध यह विद्रोह था ? तूफान के बाद और पराजय के बाद गोरे लोग बिना कोई पाठ सीखे ही फिर चीन चले गए। वे निश्चित मन से यह सोचते हुए वापिस लौटे कि ताकत के जोर से उन्होंने एक सबक सिखा दिया जिससे वे अब फिर कभी गोरों के शासन के विरुद्ध विद्रोह नहीं करगे। यह तय हो गया था कि हम चीनी प्रदेश पर इच्छा के अनुसार आ-जा सकेंगे; हमारे व्यापारी जहाजों और सैनिक जहाज़ों को कहीं भी आने-जाने और किसी भी बन्दरगाह पर रुकने की छूट होगी। हमारे मिशनरियों को जहां चाहे वहां रहने की, सब बातों में विदेशी शिक्षा देने वाले स्कूल खोलने की और विदेशी चिकित्सा और असपताल बनाने की छूट दी गई। और सबसे अजीब बात यह थी कि इन मिशनरियों को चीनियों के लिए सर्वथा विदेशी धर्म का प्रचार करने की, और इससे भी बढ़कर, इसी धर्म को एकमात्र सच्चा धर्म बताने की, और यह कहने की भी आज़ादी थी कि जो उस धर्म को मानने से इन्कार करते है वे नरक में पड़ेगे, और उन्हें वहीं पड़ना भी चाहिए। इस सबकी हिमाकत से मेरी आत्मा अब भी कांपने लगती है।

इससे मुझे उन दिनों भी काफी दुःख होता था जिन दिनों श्री कुग मेरे अध्यापक थे। उन्होंने मुझे बड़े प्रेम से यह बात समझाई और शीघ्र समझ लेने और बहुत अधिक अनुभव करने वाली बालिका होने के कारण मुझे याद है कि एक दिन मैं रोई थी। हम अभी अमरीका से लौटे ही थे—वह वर्ष मै अपने स्नेही नाना के घर बिताकर आई थी—मै इसलिए रोई क्योंकि मै जानती थी कि यदि श्री कुग और मेरे नाना आपस में मिल सकते और बातचीत कर सकते तो वे एक-दूसरे की बात समझ लेते और किसी एक मत पर पहुंच जाते। पर वे कैसे मिल सकते थे जबकि एक चीन में और दूसरा अमरीका में रहता था। यदि वे मिले भी होते तो वे कौन-सी भाषा में बातचीत करते ? और फिर भी मै जानती थी और आज भी जानती हूं कि यदि

उन जैसे लोग मिल सकते और वे किसी एक सामान्य भाषा में बातचीत कर सकते—इस बात का कोई महत्त्व नहीं कि वह अंग्रेज़ी होती या चीनी—तो जो कुछ हुआ है वह होना अनिवार्य न था ; पर्ल हार्बर की घटना कभी न हुई होती ; न परमाणु बम गिरता और अमरीकन युद्धबन्दी कम्युनिस्ट बने चीन से घायल व मरणासन्न होकर न लौटे होते, क्योंकि यदि चीनियों को यह पता होता कि पश्चिम के गोरों से कुछ आशा की जा सकती है तो वे कम्युनिज़्म न अपनाते। आशा की अन्तिम झलक नष्ट हो जाने पर ही पूर्णतः निराश होकर चीनियों ने हमसे मुंह मोड़ा। वस्तुतः अन्तिम सुनहरी डोर को हमने स्वयं निर्दोष अज्ञान में काट डाला--यदि अज्ञान आज के ज़माने में निर्दोष हो सकता है तो।

मुझे लगता है कि सब बातें किसी धुंधले भविष्य-दर्शन के रूप में मैं उस दिन भी स्पष्ट रूप से समझती थी जब मैंने मिशन हाउस की अण्डाकार भोजन की मेज़ पर अपना सिर टिका दिया था, और जो कुछ श्री कुंग ने मुझसे कहा था, उसके कारण मैं सुबक रही थी। उन्होंने अपनी सुन्दर परिष्कृत पीकिंग की मण्डारिन भाषा में जो कुछ कहा था वह कुछ-कुछ इस प्रकार था :

'यहां फिर तुम्हारे लिए शान्ति रहेगी, मुन्नी, पर बहुत देर तक नहीं। तूफान अब भी उठ रहा है, और जब वह फटेगा, तब तुम्हें यहां से बहुत दूर चले जाना चाहिए और वहीं रहना चाहिए, और फिर वापिस नहीं आना चाहिए क्योंकि कहीं ऐसा न हो कि अगली बार अपने जाति-बन्धुओं के साथ तुम भी मारी जाओ।'

'क्या कोई 'अगली बार' अवश्य आएगी?' मैंने भयभीत होकर पूछा था।

'जब तक न्याय नहीं होगा, ऐसी घड़ी आती रहेगी,' उन्होंने गम्भीरता से और असीम करुणा से कहा।

और मैं कुछ न कह सकी क्योंकि मैं जानती थी कि पीकिंग में उनका पैतृक मकान जर्मन सैनिकों ने नष्ट कर दिया था—उन सैनिकों ने जिन्हें जर्मन कैसर ने राजकीय आदेश कुछ इस तरह के शब्दों में दिया था, 'जर्मनो, ऐसा व्यवहार करना कि भविष्य में जब कोई चीनी जर्मनी का नाम सुने तब वह भय से कांपने लगे और अपनी जान बचाने को भागे।' और जर्मनों ने अपने कैसर के आदेश का पूरा पालन किया था।

फिर भी समय गुज़रने के साथ-साथ मैं बच्चों की तरह अपने भय भूल गई और अब भी मैं इस बात से अपने मन को सान्त्वना दिया करती थी कि हम

ग्रमरीकन हैं। मैं ग्रपने मन में यह तर्क करती थी कि हमारे चीनी मित्र निश्चय ही यह देखेंगे कि हम दूसरे गोरे लोगों से कितने भिन्न हैं। बहुत समय तक ऐसा लगता था कि उन्होंने हमारी भिन्नता ग्रवश्य देखी। पीछे की बातें सोचने पर ग्रब मैं स्वयं देख सकती हूं कि बौक्सरों की हार के बाद मैं स्वयं कितनी बदल गई थी। ग्रब मेरे जगत् परस्पर गुंथे हुए नहीं थे। वे स्पष्ट रूप से एक-दूसरे से ग्रलग थे। मैं ग्रम-रीकन थी, चीनी नहीं, ग्रौर यद्यपि चीन मुझे इतना ही प्रिय था जितनी ग्रपनी जन्मभूमि, पर मैं जानती थी कि यह मेरा देश नहीं है : मेरा देश समुद्र के पार है जो मेरे पूर्वजों का देश है, जो चीन से भिन्न ग्रौर चीनियों के लिए उदासीनता का विषय है।

मैं इस उदासीनता के बारे में बालकों की तरह सोचा करती थी ग्रौर उन ग्यारह वर्षों में—जो बौक्सर-नेताग्रों के विस्फोट ग्रौर उस विस्फोट के बीच में मुझे बिताने पड़े जिसका नेतृत्व एक तरुण प्रचण्ड चीनी सन यात-सेन ने किया था, जो दक्षिण के एक गांव में बड़ा हुग्रा था—मैं धोखे में नहीं ग्राई। क्या इसे उदासीनता कहा जा सकता है जबकि स्पष्टतः मेरे माता-पिता ने यहां रहने ग्रौर ग्रपने धर्म का प्रचार ग्रौर उपदेश करने के लिए ग्रपने ग्रारामदेह ग्रमरीकन घर ग्रौर एक स्वच्छ तथा सुन्दर देहात के सब ग्रानन्द छोड़कर सचमुच त्याग किया था? जिन चीनियों को हम जानते थे उनके प्रति, ग्रौर सच पूछिए तो सब चीनियों के प्रति, उनका गहरा प्रेम था ग्रौर कम-ग्रधिक मात्रा में सभी मिशनरियों में यह प्रेम मौजूद था। उनमें से बहुत थोड़े स्वार्थी या ग्रालसी थे—ग्रौर उन दिनों उनमें से ग्रधिकतर ग्रौसत से ऊंचे परिवारों के लोग थे—फिर भी मैं भीतरी ज्ञान से जानती थी कि प्रथमतः वे चीन में इस कारण न थे कि उन्हें चीनियों से प्यार था, यद्यपि कुछ वर्ष रहकर वे स्वभावतः इन स्नेहपात्र लोगों से प्यार करना ग्रवश्य सीख लेते थे। ये मिशनरियां ग्रपनी ही कोई ग्रात्मिक ग्राकांक्षा पूर्ण करने के लिए वहां थीं। यह एक महान् ग्राकांक्षा थी। इसके प्रयोजन निःस्वार्थ थे, जो निःसन्देह उस दिव्य ग्राव-श्यकता जैसे थे जिसके कारण परमेश्वर ने संसार से इतना प्यार किया कि उसने ग्रपने एकमात्र पुत्र को इसकी मुक्ति के लिए भेजा। पर मैंने थॉरो का लिखा कहीं यह पढ़ा था—उसने निःसन्देह कन्फ्यूशियस से यह बात सीखी होगी—कि यदि कोई ग्रादमी ग्रपने फायदे के लिए ही तुम्हारा भला करने ग्राए तो तुम्हें उस ग्रादमी से ग्रवश्य ही दूर भाग जाना चाहिए ग्रौर ग्रपनी रक्षा करनी चाहिए। ग्रतः जब मैं

अपने पिता को ईसाई-सिद्धान्तों का प्रचार करते देखती, तब मुझे परेशानी अनुभव होती थी, और मैं चाहती थी कि वे मौन रहें और इतने पर ही सन्तोष करें कि वे जो उपदेश देते हैं स्वयं उसके अनुसार आचरण करें और इस प्रकार ऊपर उठें जिससे लोग बिना कहे उनकी ओर खिंच आएं। यह जानते हुए भी मैं ऐसा जानती थी कि यदि मेरे पिता धर्म-प्रचार को अपना आवश्यक कर्तव्य न अनुभव करते तो वे कभी यह प्रचार न करते, क्योंकि उनका प्रचार सबसे अधिक मधुर होता था, जिसमें वे नरक की आग की चर्चा न करके केवल ईश्वर के आश्चर्यजनक प्रेम का ही वर्णन करते थे और उसे मनुष्य के प्रेम से बढ़कर बताते थे। पर यह जानने के कारण कि गोरों ने एशिया में क्या कुछ किया है, मैं किसी गोरे आदमी का प्रचार करना सहन न कर सकती थी, जैसे आज भी मैं अपने देश में चर्च में जाकर किसी गोरे का उपदेश नहीं सुन सकती जब कि मैं जानती हूं कि यदि कोई काला आदमी उस चर्च में आ जाए तो सम्भावना यही है कि उसके बैठने और सारी मनुष्य-जाति के प्रति परमेश्वर के परम प्यार की कहानी सुनने के लिए कहीं स्थान नहीं मिल सकेगा, और इसलिए ऐसे चर्चों में मेरे लिए भी कोई स्थान नहीं है। इसका कारण यह है कि मैं चीन में बड़ी हुई, ऐसे जगत् में जिसकी मैं नहीं थी, और दूसरे जगत् से सम्बन्धित थी पर फिर भी उसकी न थी।

तो भी वे किसी बच्चे के लिए अनेक दृष्टियों से अच्छे वर्ष थे और मैं प्रतिदिन ही ऐसे बड़े और गम्भीर मामलों पर विचार नहीं किया करती थी। और फिर, ऐसी बहुत सी बातें थीं जो मैं नहीं जानती थी। मैं जानती थी कि बूढ़ी सम्राज्ञी मर चुकी थी और इसी तरह तरुण सम्राट् भी मर चुका था, पर सम्राज्ञी ने मरने से पहले फिर एक बार एक छोटे-से बच्चे को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया था, जिसका नाम पू यी था। हम कभी-कभी अखबारों में उसकी तस्वीरें देखते थे। वह मोटा-ताज़ा बच्चा था, जिसकी सख्त साटन की पोशाक और बिना बांहों की जाकट के ऊपर चकित भद्दा चेहरा दिखाई देता था। एक रीजेंट शासन-कार्य कर रहा था, पर किसीको उसकी परवाह मालूम न होती थी और ऊपर से जीवन सामान्य रूप से चल रहा था। यदि अत्याज्य अतीत मेरे साथ न होता तो मैं वही बालक बन गई होती, पर मैं वही नहीं थी। पहली बात तो यह कि अब मैं इतनी बड़ी हो चुकी थी कि स्वयं इतिहास पढ़ सकती थी और मैंने देखा कि चीनी इतिहासकार और अंग्रेज इतिहासकार न केवल उन्हीं घटनाओं का, बल्कि

एक-दूसरे का भी सर्वथा भिन्न प्रकार का वृत्तान्त पेश करते थे, और हरएक दूसरे को अपने से घटिया दर्जे का समझकर घृणा करता था, यद्यपि कोई भी दूसरे को नहीं जानता था।

वे अजीब परस्पर-विरोधी दिन थे जब सवेरे मैं अमरीकन स्कूली पुस्तकें पढ़ती थी और अपनी मां द्वारा दिए पाठ याद करती थी जो पूरी तरह कालवर्ट-पद्धति पर चलते थे, जब कि तीसरे पहर में श्री कुंग से जो कुछ पढ़ती थी वह बिल्कुल भिन्न ही होता था। मेरे मन में इस प्रकार दो केन्द्र या संगम बन गए और मैंने जल्दी ही यह समझना सीख लिया कि मानवीय व्यवहारों में परम सत्य जैसी कोई चीज़ नहीं है। सत्य उसी रूप में है जिस रूप में लोग इसे देखते हैं और तथ्य रूप में भी सत्य अनेक विविधताओं से मिलकर बना हो सकता है। इस ज्ञान से मुझे जो हानि हुई, उसे मैंने बाद में अनुभव किया है यद्यपि हानि शब्द अनावश्यक रूप से कठोर मालूम होता है क्योंकि इसका इतना ही अर्थ था कि मैं कभी भी पूरी तरह किसी प्रश्न के एक ही पहलू को नहीं मान सकती थी। कम्यूनिस्ट होना मेरे लिए बिल्कुल बेतुका होगा, इतना बेतुका जितना कुछ भी हो सकता है, और उतना ही असम्भव भी। मैंने बहुत छोटी आयु में दुनिया का चक्कर लगाया था।

यह सब शिक्षा बड़े आनन्द से और बिना कष्ट के चलती रही और मुझे न कभी कोई आशंका और न कोई कुण्ठा या अरुचि मालूम हुई। सच बात तो यह है कि मेरा जीवन सुखी था यद्यपि आज मेरे बच्चों को—जिन्हें पुस्तकों से उतना प्यार नहीं है जितना मुझे था—मेरे दिन बहुत धीरे-धीरे गुज़रते हुए थकाने वाले मालूम होते, शायद इस कारण कि उनकी काल्पनिक शक्ति मेरी तरह बाल्यावस्था में ही पुस्तकों में दीखने वाले मनों में नहीं उलझ गई थी। शायद इसका कुछ श्रेय श्री कुंग को था। आज भी उन्हें, उनके उस समय के रूप को, देख सकती हूं जब वे रविवार को छोड़कर, सब साफ दिनों में तीसरे पहर आया करते थे। वर्षा वाले दिन वे नहीं आ सकते थे क्योंकि उनकी माता की मनाही थी, क्योंकि उसे डर था कि कहीं उनके पांव न भीग जाएं और वे रोगी न हो जाएं। वे मातृभक्त थे अतः मां की चिन्ता का कारण नहीं बनना चाहते थे। इसमें मेरे लिए कोई अजीब बात न थी, यद्यपि श्री कुंग की आयु लगभग पचास वर्ष की थी और उनकी माता की बहत्तर वर्ष की थी। वे उनकी मां थीं और जीते-जी मां ही रहेंगी। और जो तंतुजाल चीनियों को ठोस और

शाश्वत राष्ट्र के रूप में बांधे था, वह भिन्न-भिन्न पीढ़ियों का आपसी प्रेम और आदर ही था।

'अपने पिता और अपनी माता का सम्मान कर जिससे धरती पर तेरा जीवन लम्बा हो,'[1] यह एशिया का एक उपदेश और नैतिक नियम है।

तो श्री कुंग साफ दिनों में तीसरे पहर ठीक दो बजे आते थे और उनका पुस्तकों का, काले रेशम के एक नरम पुराने टुकड़े में लिपटा, खज़ाना उनके हाथ में होता था। वे इसे खोलते थे—पर पहले मुझे अभिवादन कर लेने और मुझसे उचित नमन और अभिवादन प्राप्त कर लेने के बाद ही, जिसके बाद में भी बैठ सकती थी। मैंने कहा कि वे इसके बाद ही बड़ी सावधानी से रेशम का कपड़ा खोलते थे और जिस पुस्तक का पाठ चल रहा होता, उसे निकालते थे। दो घण्टे तक हम पढ़ते थे और वे व्याख्या करके समझाते थे। वे न केवल पुस्तक में वर्णित अतीत की व्याख्या करते थे, बल्कि उस अतीत का (चाहे वह कितना ही धुंधला और पुराना हो) वर्तमानकाल से और अनागत भविष्य से भी सम्बन्ध जोड़कर समझाते थे।

इस प्रकार अपने बाल्यकाल के उन आरम्भिक दिनों में मैंने उनसे मनुष्य-जीवन का यह पहला सूत्र सीखा कि हर घटना का कोई कारण होता है और संसार में कुछ भी, हल्के से हल्का हवा का झोंका भी, अकस्मात् या अकारण नहीं है। आज जो कुछ हो रहा है, उसे समझने के लिए हमें कारण का पता लगाना चाहिए, जो शायद बहुत दूर होगा पर होगा अवश्य, और इसलिए यदि हमें वर्तमानकाल का समझना है और भविष्य के लिए तैयार होना है तो इतिहास का अधिक से अधिक विस्तृत ज्ञान आवश्यक है। श्री कुंग ने मुझे बताया कि भाग्य या दैव कोई ऐसा अंधविश्वास या विवशता नहीं है जिसके भरोसे मनुष्य हाथ धरे बैठा रहे। भाग्य इसी अर्थ में अपरिवर्तनीय है कि यदि कोई कारण है तो उसका परिणाम अवश्य होगा, पर कोई भी कारण अपने-आपमें अनिवार्य नहीं होता—यदि मनुष्य अपने-आपको अज्ञान के भरोसे न छोड़ दे तो वह संसार को अपने मन

---

[1] मिलाइए :

अभिवादनसीलस्स निच्चं बड्ढोपचायिनो।
चत्तारो धम्मा बड्ढन्ति आयु वण्णो सुखं बलम्॥ —धम्मपद

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशोबलम्॥ —मनु०

के अनुसार बना सकता है। श्री कुंग बाइबिल से भी उदाहरण दिया करते थे जिसका एक कारण मेरी समझ में यह था कि वे मेरे सामने अपने कन्फ्यूशियन-मन की उदारता सिद्ध करें; उनकी प्रिय पंक्तियां वे थीं जिनमें यह कहा गया है कि जैसा बोओगे वैसा काटोगे; और वे मुझे अपने मृदु और उदात्त तरीके से प्रायः यह याद दिलाया करते थे कि कांटों की झाड़ियों से अंजीरों की आशा नहीं की जा सकती।

चार बजे पाठ समाप्त हो जाता था। वे अपना चाय का प्याला ढक देते थे और अपनी पुस्तक चौकोर कोमल काले रेशमी कपड़े में फिर लपेट लेते थे। हम खड़े हो जाते थे; मैं सिर झुकाती थी और वे अपना सिर थोड़ा नीचे करते थे। फिर मुझे अगले दिन की तैयारी का और यदि मैंने कुछ गल्तियां की होतीं तो उनका ध्यान दिला देते थे। इस प्रकार हम अलग होते। मैं दरवाज़े तक उनके पीछे-पीछे जाती, जैसे कि छात्र को अध्यापक के पीछे जाना चाहिए, और तब तक वहां खड़ी रहती जब तक उनके लहराते वस्त्र और काली रेशमी चोटी अदृश्य न हो जाती।

अभी इस बात में वर्षों लगे जब कि हमारे दैनिक जीवन के ऊपरी तल से नीचे सुलगती क्रान्ति की पुकार ने नष्ट होते हुए मांचू साम्राज्य की दासता का अंतिम चिह्न मानकर इस चोटी को काट फेंका पर श्री कुंग उस समय तक मर चुके थे और वे अपनी चोटी कब्र में अपने साथ ले गए थे और उन बाद के दिनों में मैंने जो कुछ किया, वह मुझे उनके बिना ही करना पड़ा।

इधर हमारा जीवन अजीब और मौन शान्ति में बीत रहा था। मैं अब दरवाज़े के बाहर घास में खेलने लायक न थी और श्री कुंग के चले जाने के बाद मेरा खाली समय मेरे घर और छोटी-सी गोरों की बिरादरी की अपनी सहेलियों में या अपने परिचित चीनियों में बीतता था। मैं अब घाटी के खेतों में रहने वाली स्त्रियों और लड़कियों से मिलने नीचे नहीं दौड़ती थी। अब मैं 'सयानी लड़की' होती जा रही थी और जब मैं दरवाज़े से बाहर जाती थी तब मेरे साथ मेरी मां न होती तो मेरी चीनी नर्स होती थी। वह किसी भी माता की अपेक्षा अधिक सख्त थी और यदि मैं किसी फेरी वाले से कोई मिठाई खरीदने के लिए या सुनार के यहां अपनी पसन्द का कोई छोटा-मोटा ज़ेवर खरीदने के लिए रुक जाती तो उसके झुर्रियों वाले होंठों पर सलवटें पड़ जातीं। चीनी चांदी सुन्दर, नरम और शुद्ध होती थी और सुनार इससे ब्रासलेट या इससे भारी चेन में बड़े बारीक बेल-बूटे बना देते थे, या बाल

जैसे महीन तारों को ऐंठकर मकड़ी के जाले जैसे महीन सुन्दर ज़ेवर बना देते थे, इसपर फूल और तितलियां जड़ देते थे और उनमें नीले किंगफिशर (रामचरैया) के पंखों की जड़ावट कर देते थे।

बौक्सरों के बाद के इन वर्षों में पहली बार मैंने अपनी ज़ाति के लोगों में कुछ सहेलियां बनाने की कोशिश की। मुझे एक मधुर चेहरे और बादामी आंखों वाली अंग्रेज़ लड़की की याद है जिसका पिता इंगलिश बाइबल सोसाइटी की ओर से कार्य करता था। उस भली लड़की के साथ मुझे अपना कोई गहरा सख्य दिखाई न देता था क्योंकि वह अधिकतर गोरे परिवारों की तरह चीनी लोगों की समृद्ध संस्कृति से सर्वथा अपरिचित रहकर अलग-थलग प्रायः खाली जीवन बिताती रही थी। उसका घर एक ऊंची तंग पहाड़ी पर बना था जो पहले चंचल यांगत्से में एक द्वीप थी, पर बाद में नदी नगर से पीछे हट गई और दूसरा किनारा काटने लगी। मुझे उस अंग्रेज़ लड़की की तो कम याद है पर उसके इंगलिश घर और उसके चारों ओर बने सर्वथा इंगलिश बगीचे की अधिक याद है। उस विशेष रूप से निर्धन और अधिक आबादी वाले चीनी प्रदेश की कश-मकश के ऊपर बनाए गए इस इंग्लैंड के टुकड़े ने फिर भी मुझे इंग्लैंड के लिए प्रेम सिखाया। उसका पिता, जिसकी आंखें काली और दाढ़ी भूरी थी और जो सदा मोटा ट्वीड पहने रहता था, इतना अंग्रेज़ था जैसे वह कभी अपने देश से बाहर नहीं गया। और उसकी मां को, जो एक प्रचण्ड स्कौच स्त्री थी, कभी यह विचार भी न आया था कि उसके चारों ओर मनुष्य नाम के प्राणी रहते हैं, जो चीनी हैं। यह जानने पर भी कि उनका यह ढंग सर्वथा गलत है, मैंने उस परिवार में सुख महसूस किया। उसमें दो बड़े लड़के थे जो चेफू के अंग्रेज़ी स्कूल से केवल छुट्टियों में घर आते थे और दो लड़कियां थीं जो मेरी सहेलियां थीं––एक वह थी जिसे वे वी विली कहा करते थे और जो उन वर्षों में किसी समय मर गई थी और जिसकी सुकुमार मृदुता मुझे सदा टाइनी टिम का ध्यान दिलाया करती थी; और फिर बहुत देर में पैदा हुआ ऊंची आवाज़ का, हृष्ट-पुष्ट शरीर वाला एक अंग्रेज़ बच्चा था—वह बच्चा क्या था मानो बाद में जबरदस्ती आ कूदा था और उसने अपने जन्म से सारे परिवार को परेशानी में डाल दिया था। उनमें से हरएक मुझे अपने-अपने ढंग से अच्छा लगता था। और सर्दियों के बहुत ठण्डे दिन–जबकि मेरी चीनी सहेलियों के मकान सीले और ठण्डे होते थे–तीसरे पहर उनके साथ बैठ-कर चाय पीने और असली अंग्रेज़ी प्रसन्नता का आनन्द लेने से बढ़कर कुछ अच्छा

नहीं लगता था। क्योंकि वे लोग चाहे जैसे बेढंगे थे, पर फिर भी मैं अपनी अंग्रेज़ सहेलियों से प्यार करती थी और तब मुझे सबसे अधिक अच्छा लगता जब हम बेढंगे इंगलिश फर्नीचर से—जो शांगहाई की पुराना फर्नीचर बेचने वाली दुकानों से खरीदा गया था—भरे छोटे-से भोजन के कमरे में जमा होते और अंग्रेज़ी चाय पीते। भोजन में कोई बढ़िया चीज़ों की बला न थी। वह लन्दन या ग्लासगो के किसी भी ईमानदार मध्यवर्गीय परिवार का भोजन होता था। न तो वेहूदे सैंडविच होते थे, न कहीं सलाद या जेतून का ही नाम-निशान होता था। बड़ी आयताकार मेज़ पर एक मोटा सफेद लिनन का कपड़ा बिछा रहता था और इसपर गर्म रोटी की प्लेट तथा आस्ट्रेलियन मक्खन और क्रास एंड ब्लैकवेल के अंग्रेज़ी स्ट्राबेरी के मुरब्बे की तश्तरियां रखी रहती थीं। पीली-सी सफेद चीनी चाय का झगड़ा-झंझट नहीं था। हमें तेज़ भारतीय चाय की काली पत्ती, साम्राज्य की बढ़िया वस्तु, तथा सफेद चीनी और उपयुक्त अंग्रेज़ी कण्डेंस्ड मिल्क (डिब्बाबन्द गाढ़े दूध) से तैयार चाय मिलती थी, और जब हम डबलरोटी खा चुकते, तब प्लेट काली चमकीली अंगीठी के पास चूल्हे के ऊपर रख देते। अंगीठी में लाल कोयले जल रहे होते थे। इसके ऊपर एक मेंटल-पीस और एक ओवरमेंटलपीस होते थे—यह छत को छूती हुई भद्दी-सी वस्तु थी जिसमें शेल्फ निकाले हुए थे—और हर शेल्फ पर पोर्सलिन या कांच के रंगीन बर्तन रखे थे जो चीन के बने न थे बल्कि भाग्यशाली ब्रिटिश द्वीपों से लाए गए थे—'ब्राइटन के अभिवादन' (गुलाबी पर सुनहरा लिखा था), या 'डंडी से हार्दिक शुभ कामनाएं।' कोई बात नहीं, यह भद्दा था तो क्या! साथ ही यह गर्म आराम-देह और मैत्रीपूर्ण था और इसके भद्दे अजीब रूप में ही मैं इसे पसन्द करती हूं। और डबलरोटी के बाद—पर डबलरोटी और मुरब्बे का अन्तिम टुकड़ा भी खत्म हो जाने से पहले नहीं, और उसी रोटी के लिए हम मक्खन व मुरब्बा न लेते थे—ताज़े पौंडकेक या अंग्रेज़ी रेज़िनकेक खाए जाते थे और एक के बाद दूसरा कप चाय आराम से बैठी स्कौच माता हमारे लिए ढाले जाती थी। वह मेज़ के परली तरफ बैठती थी और चाय ढालते हुए बिना रुके बोलती जाती थी। उसकी बातों में विदग्धता और चतुराई उसी तरह नदारद होती थी जैसे किसी नौकरानी की बातचीत में। पर यह सब होते हुए भी वह मनोरंजक और स्नेही थी। वह बढ़िया अंग्रेज़ी चाय एक अंधेरे छोटे अंग्रेज़ी रसोईघर में पतले-से बड़ी उमर के चीनी द्वारा तैयार की जाती थी जो अपनी विदेशी मालकिन की दिमाग चाटने वाले गाली-गलौज को सह लेता

था ग्रौर बाज़ार से सौदा खरीदने में उसे ग्रच्छी तरह मूंडकर ही संताष कर लेता था। इस बीच उसने खाना पकाना इतना ग्रच्छा सीख लिया कि जब गोरे लोग वहां से गए, तब उसे तो सदा के लिए ही एक प्रसिद्ध युद्धनेता के यहां, जिसे विदेशी भोजन का शौक था, मुख्य रसोइए के तौर पर नौकरी मिल गई। मेज़ पर हमें एक लड़का खाना परोसता था जिसने बाद में उस मकान को फूंक दिया जिसमें हम बैठते थे। पर हम इन परिणामों या कार्यों को कैसे जान सकते थे जबकि हम उन कारणों को न जानते थे जो हमने पैदा किए ?

रैपिड सिटी, साउथ डाकोटा

यदि यह राज्य संसार में किसी ग्रौर जगह होता तो यह इतना बड़ा ग्राश्चर्य होता कि जल, स्थल ग्रौर वायु-मार्ग से इसे देखने के लिए ग्राने वाले लोगों का तांता लगा रहता। चूंकि यह ग्रपने वर्तमान स्थान पर है, इसलिए ग्राज जब हम इसके चमत्कारों को ग्रात्मसात् करने की कोशिश में कार द्वारा धीरे-धीरे इसमें से गुज़रे, तब हमें बहुत थोड़ी कारें दिखाई दीं, ग्रौर जो थीं वे सब ग्रमरीकन थीं। यह भयंकर गर्मी का दिन था। गर्मी इतनी ग्रधिक थी कि हमारी कार में जो ऐयर-कण्डीशनिंग या वातानुकूलन-व्यवस्था थी, वह उसी तरह दुष्टतापूर्वक झट से भंग हो गई जैसे कि मशीनरी ग्रपनी सबसे ग्रधिक ज़रूरत के समय हो जाया करती है। यह विशेषता मेरे लिए कोई नई चीज़ न थी। हमारे चीनी बंगले में कोई मशीनरी न थी। केवल मनुष्य के हाथ-पांवों का भरोसा था। इसलिए तेल के लैम्प हर रात सदा चमकते रहते थे ग्रौर कोई ग्रांधी या तूफान भी हमारे यहां ग्रंधेरा न कर सकता था, जैसे कोई हल्का-सा तूफान भी हमारे पेंसिलवानिया के विजली वाले मकान में कर सकता है।

जब मुझे मशीनरी के बारे में कुछ पता न था, तब इसके बारे में मेरे मन में बड़े ग्रतिरंजित विचार थे। चीन से ग्राने के बाद भरोसा करने लायक मानवीय हाथ-पैर बहुत दुर्लभ देखकर, ग्रौर जो मिल जाते तो बड़े महंगे पड़ते थे, मैंने विना सोचे ग्रपने ग्रमरीकन फार्म पर पूरी तरह बिजली ग्रौर मशीनों के सुपुर्द जीवन स्थापित किया। ग्रनुभव से मुझे पता चला कि ये चीज़ें कभी-कभी ग्रकेली या एकसाथ कितनी ग्रधिक ग्रविश्वसनीय हैं। बिजली की करेंट रुक सकती है ग्रौर सर्वथा त्रुटि-

हीन मशीन को बेकार कर दे सकती है। या, बिजली पूरी तरह आ रही हो, पर मशीन की किसी अन्य रुकावट के कारण बेकार रह जाए। ऐसी आकस्मिक घटनाएं, यदि वे आकस्मिक हैं, सप्ताह के अन्तिम दिनों में प्रायः बिना चूके होती रहती हैं, जब हमारे यहां मेहमान आए होते हैं या सारा परिवार छुट्टी मनाने के लिए घर होता है और रसोई में बिजली द्वारा भोजन तैयार हो रहा होता है। मैंने बिजली का बर्तन धोने वाला यन्त्र सिवाय उस समय के कभी रुकता नहीं देखा जब इसमें चांदी, चीनी, मिट्टी और कांच के बर्तन भरे हों और ऐसे ही बर्तन धोने के लिए पास रखे हों, जिसके परिणामस्वरूप हर चीज़ को हाथ से हटाना, धोना और सुखाना ज़रूरी हो जाता है। यह भी केवल रविवारों को, या महत्त्वपूर्ण छुट्टियों के दिन ही होता है जब आवश्यक विशेषज्ञ नहीं मिल सकते क्योंकि उन्होंने अपने छुट्टी के दिन घर से बहुत दूर बिताना अनुभव से सीख लिया है। इसलिए मशीन शायद कई दिन तक बेकार पड़ी रहे। यह मशीन की शक्ति और मनुष्यों की विवशता की विडम्बना है।

पहले कुछ वर्ष तक मैं बड़े भोलेपन से यह समझती रही कि ठीक ऐसे समय मशीन का ठप होना बिल्कुल आकस्मिक बात है, पर अब मैं कुछ अधिक जानती हूं। यह तुच्छ दुष्टतापूर्ण संयोग है जिसके बारे में कोई वैज्ञानिक हमें नहीं बता सका। यदि मनुष्य, जैसा कि हम पढ़ते हैं, केवल मुट्ठी भर खनिज पदार्थ और एक या दो गैलन पानी मात्र है, तो वह एकमात्र जादू–जिसके द्वारा हम सोच पाते हैं और कल्पना की उड़ान भर सकते हैं–इन सरल तत्त्वों का संयोजन ही होना चाहिए। इसके अतिरिक्त मैंने यह भी पढ़ा है कि परमाणु बम का रहस्य भी उसके द्रव्यों में नहीं है जो काफी आम जानकारी की चीज़ है, बल्कि उन द्रव्यों के संयोजन में है। यों कहिए कि सूत्र या फारमूला ही किसी चीज़ को अस्तित्व में लाता है। इस अवस्था में यह जिज्ञासा कठिन नहीं है कि क्या तत्त्वों का वही संयोजन, जो श्रम के लिए कोई मशीन पैदा करता है, एक घटिया आत्मा, एक मन्द रोषपूर्ण धातवीय इच्छा तो नहीं पैदा कर देता जो समय-समय पर विद्रोह कर सके।

अवश्य ऐसी ही बात होगी। कम से कम हो सकती तो है ही, क्योंकि नहीं तो क्या कारण है कि हमारी वैसे पूरी तरह आज्ञापालक कार साउथ डकोटा में गर्मियों के एक तीसरे पहर ही ठंडा करने की क्रिया बन्द कर दे जबकि अस्तित्वहीन छाया के नीचे ताप अट्ठानवे डिगरी बताया जाता था और खूब चमकते हुए और सुंदर

बैडलैंड्स (ऊसर धरती) में कम से कम दस डिगरी और अधिक था। सारे प्रातः-काल हम ऐसे प्राकृतिक दृश्य में से होकर आए थे जो चन्द्रमा के समान मोहक था, दुष्ट सूर्य के नीचे चमकती हुई चांदी जैसा था, और फिर भी हम ऐसे ठण्डे रहे थे जैसे नवम्बर में किसी दिन बन्द कमरे में। एकाएक, क्योंकि हम उन प्राचीन पहाड़ियों में से धीरे-धीरे जाना चाहते थे, इसलिए हमारी कार के धुंधले मन ने विद्रोह की ठान ली। एयर-कण्डीशनिंग या वातानुकूल रुक गया। हमने खिड़कियां खोल दीं और हांपने लगे। सूखी गर्मी का ऐसा मौका हमें आकर लगा कि हम भुन गए और जल गए, यद्यपि हमने हार न मानी। हमने निश्चय किया कि हम चलते ही जाएंगे। इसपर हमारी कार बिल्कुल खड़ी हो गई और हमें शर्मिन्दा होकर उसे धक्का लगाकर गेरिज पहुंचाना पड़ा। यह एक बड़ी नई सुन्दर कार थी, जबकि वहां छोटी-छोटी जीर्ण-शीर्ण बिल्कुल बेकार कबाड़खाने में डालने लायक कारें आनन्द से गुज़रती जा रही थीं। मैं नहीं मान सकती कि इतनी अधिक कीमत वाली और उलझनदार मशीन अपनी खुद की बेइज़्ज़ती की परवाह न करती हुई हमारी परेशानी का मज़ा नहीं ले रही थी।

मैं स्वीकार करती हूं कि कभी-कभी मुझे ऐसे मकान की तीव्र इच्छा होने लगती है जिसमें नौकर मशीनें न होकर मनुष्य हों, यद्यपि मैं ऐसी गरीबी को जानती हूं और उससे घृणा करती हूं जो मनुष्य के श्रम को सस्ता कर देती है। और फिर भी हमारे चीनी घर में नौकर अपने जीवन का सुख उठाते थे और वे अपना और अपने काम का तथा हमारा आदर करते थे। वे ऐसे मालिकों का काम नहीं करते थे जिन्हें वे पसन्द न करते हों, और वे हमसे आदर की आशा करते थे और आदर पाते थे। पारस्परिक सम्बन्ध बड़ा मधुर था; कोई अच्छा नौकर यह अनुभव करने पर कि मालिक और उसके परिवार से उसे उचित सम्मान नहीं मिल रहा तुरन्त अपनी जीविका छोड़ देता। यदि वह नौकरी न छोड़ता तो वह कोई गुप्त पुरस्कार लेता जिससे उसके कष्ट की क्षतिपूर्ति हो जाती।

इस प्रकार मैं एक मिशनरी को जानती थी जो नीची जाति का अमरीकन था और जिसे मालिक के ढंग से रहने की आदत न थी। इसलिए वह घमण्डी और प्रायः बदमिज़ाज रहता था और इस प्रकार अपने मकान में कोई नौकर न रख सकता था। पर एक बूढ़ी स्त्री वर्षों उस परिवार के साथ रही और देखने से वह प्रसन्न ही लगती थी। चीनी लोग इसपर कभी आश्चर्य न करते थे, पर गोरे करते थे,

ग्रौर मैं इसी कारण वह रहस्य जान सकी कि जैसे मैं इस जगत् की थी वैसे ही उस जगत् की भी थी। ग्रौर यह उस बुढ़िया ने, जो खुशमिज़ाज पर दुष्टतापूर्ण परिहास बुद्धि वाली स्त्री थी, मुझे स्वयं बताया। मैंने उससे पूछा नहीं, पर जो कुछ मैंने सुना, वह यह है—उसका कमरा गोरे के मकान की ऊपर की मंज़िल में था ग्रौर उसकी छोटी-सी खिड़की टीन की छत पर खुलती थी। उत्तरी चीन के उस प्रदेश के कुएं उथले होते हैं ग्रौर उनका पानी कड़वा होता है ग्रौर गोरे लोग ग्रपनी छतों से बहते वर्षा के पानी को जमा करने के लिए हौज़ खुदवा लिया करते थे। वही चीज़ इस घर में भी थी। वर्षा का पानी छत पर से टीन की नाली में ग्रौर टीन के नलों से हौज़ में बह जाता था। ग्रौर उस गोरे की बदमिज़ाजी का यह बुढ़िया कितना बढ़िया बदला लेती थी! प्रतिदिन सवेरे उठने पर वह ग्रपने कमरे का पेशाब का बर्तन छत पर खाली कर देती थी ग्रौर फिर खुशी से ग्रपना दिन का काम करने चली जाती थी—वह ग्रौरत तथा ग्रौर सब नौकर कुएं का साफ ग्रौर कड़वा पानी पीते थे।

पर निःसन्देह ऐसी बुढ़िया ग्रौरतें कोई-कोई ही होती हैं। हमारे घर में हमारे माता-पिता हमें नौकरों के साथ वैसे ही शिष्टाचार से व्यवहार करने की शिक्षा देते थे जैसे ग्रतिथियों ग्रौर बड़ों से। इससे दोनों का ग्रभिमान कायम रहता था। हमारे नौकर वर्षों हमारे पास रहे ग्रौर हम उनके हो गए; मैंने उनके साथ बचपन की कितनी सुखद घड़ियां बिताई थीं ग्रौर रात को गेट बन्द किए जाने के बाद में नौकरों के ग्रांगन में बैठने के लिए उनके बच्चों से खेलने ग्रौर देसी बांसुरी या दो तारों वाले बेला का संगीत सुनने के लिए ग्राज़ाद न होती तो मुझे कितना ग्रकेलापन महसूस हुग्रा होता! कभी-कभी हमारा रसोइया, जो एक छोटा पतला-सा कलाकार था,—प्रसंगतः वह फ्रेड ऐस्टेयर जैसा दिखाई देता था, ग्रन्तर इतना था कि उसकी चमड़ी पीली थी ग्रौर ग्रांखें ग्रोर बाल काले थे—तो मैं कह रही थी कि कभी-कभी वह हमें भूतकाल की कहानी सुनाया करता था क्योंकि वह पढ़ना जानता था ग्रौर वह 'दि थ्री किंगडम्स ग्राल मैन ग्रार ब्रदर्स, ड्रीम ग्राफ दि रेड चैम्बर' पढ़ा करता था ग्रौर ग्रन्य पुस्तकें वह ग्रपने कमरे में रखता था।

निश्चय ही मशीनें वैसी साथ रखने योग्य नहीं हैं। पेन्सिलवानिया में मैं कुछ समय पूर्व एक पड़ौसी, एक तरुण किसान की पत्नी से मिलने गई। ग्रभी तीसरा पहर शुरू ही हुग्रा था ग्रौर मेरे पास शायद ग्राध घण्टा ही खाली था। मैं रसोई के

दरवाज़े से घुसी क्योंकि अन्यथा वह चकित हो जाती, और उसके बड़े रसाईघर का चक्कर काटकर मैंने बड़ी-बड़ी मशीनें—कपड़े धोने की मशीन, सुखाने की मशीन, इस्तरी मशीन, दो ठण्डा करने की मशीनें, रेफ्रिजरेटर, बिजली का चूल्हा और सिंक देखे। इन मशीनों की मदद से उसका काम जल्दी खत्म हो जाता था और हम उसके साफ-सुथरे सोने के कमरे में गए जिसमें कोई पुस्तक न थी, पर एक टेलीविज़न चल रहा था। उसने इसकी ओर कोई ध्यान न दिया और मुझे बैठने के लिए कहकर उसने अपने मोटे-ताज़े बच्चे का अपने घुटनों पर रख लिया। हम मामूली बातचीत करते रहे और समय गुज़र गया। उसके बाद मुझे जाना था। वह आवाज़ और चेहरे में सच्ची निराशा प्रकट करती हुई बोली, 'ओह, तुम और न बैठोगी ? मैंने तो सोचा था, तुम शाम तक रहोगी। भोजन के बाद मैं बड़ी ऊब जाती हूं—मेरे पास करने के लिए कोई काम नहीं होता।' मुझे चीन की किसान स्त्रियों की याद आई जो अपने कपड़े लेकर तालाब पर चली जाती हैं और आपस में हंसती और बातचीत करती हुई अपने कपड़ों को चपटे पत्थर पर लकड़ी की थपकी से पीटती जाती हैं। कहा जा सकता है कि यह बड़ा बोझिल काम है, पर प्रश्न यह है कि यदि वे यह न करतीं तो सारे तीसरे पहर वे क्या करतीं, और मेरा पूरा विश्वास है कि अपनी बातचीत और हंसी ठिठोली से उन्हें जितना आनन्द मिलता था, उतना मेरी तरुण पड़ोसिन को अनपहचानी आवाज़ें और तरह-तरह की तस्वीरों वाले चेहरे दिखाने वाले टेलीविज़न से नहीं होता।

दो जगत् हैं, दो जगत्, और मेरा ख्याल है कि एक जो कुछ है, वह दूसरा नहीं हो सकता और प्रत्येक के अपने ढंग और अपनी उपयोगिताएं हैं।

खैर, जो भी हो, यहां साउथ डाकोटा में रात हो गई है और मैं सड़क के पास के एक आरामदेह होटल में सोने की तैयारी कर रही हूं। साउथ डाकोटा का आकाश चमकीले तारों से जगमगा रहा है। ज़िद्दी कार को घसीटकर गैरेज में पहुंचा दिया गया और कल इसके भीतरी अंग साफ कर दिए जाएंगे और हमें आशा है कि यह स्वस्थ हो जाएगी और इसकी आत्मा इसमें फिर आ जाएगी। अब मुझे पोर्सलिन के स्नान-घर में क्रोमियम की टूटी घुमाकर और टब में पानी भरकर, जो गर्म और आरामदेह है, बड़ी खुशी हो रही है, यद्यपि इसे मेरे पास कोई मानवीय हाथ नहीं लाया।

डेटन, व्योमिग

इस गर्मियों की तेज दुपहरी के समय खिड़की के सामने मे एक सुन्दर दृश्य गुजर रहा था। मुझे टापों की आवाज सुनाई दे रही है और बाहर की ओर नजर डालने पर मैं नदी-किनारे से धूल-भरी सड़क पर दुलकी चाल मे आते हुए घोड़ों की कतार देख रही हूं। ये वे सवार हैं जो आज सवेरे नाश्ते के बाद एक अश्वपालक के नेतृत्व में बिग-होर्न पर्वतों में सवेरे का समय काटने गए थे। घोड़े घर पहुंचने को उत्सुक हैं और सवार उनपर जमकर बैठे हैं। सवार किशोर लड़के-लड़कियां हैं, जिनकी आयु पन्द्रह-सोलह साल से अधिक नही है, पर फिर भी वे काफी बड़े हो गए हैं, जिसमे कुछ गम्भीर होने लगे हैं और इसलिए विचारशील हो गए हैं क्योंकि अब उन्हें फौज मे जाना है। मै समझती हूं कि लडकों की अपेक्षा लडकियों को अधिक कठिनाई है क्योंकि उनमें से अधिकतर घर ही रहेंगी। मै देखती हूं कि ललचाने वाले पोस्टरों, बहकाने वाले विचार और ऊंचे दर्जे की अपीलों के बावजूद स्त्रियां घर पर ही रहती हैं। उनकी प्रकृति में कुछ ऐसी विशेषता है कि वे शताब्दियों के बाद भी युद्ध की आवश्यकता को स्वीकार नही कर सकती।

घोड़े गुजर गए और धूल फिर बैठ गई। घुड़सवार उतर गए और अपने-अपने रास्ते चले गए। पर्वत, पत्थर, सेज, चीड़ और व्योमिग के गरम सूर्य से चमकती सुनहरी रेत का दृश्य है, और मैं यहां अपनी पुस्तक लिखती हुई बैठी हूं।

मैं अच्छी तरह जानती हूं कि बौक्सर-विद्रोह के बाद के १९०१ और १९११ के बीच के वर्षों से, जिनमें कि मै चीन में बड़ी हो रही थी, मैं बचती रही थी। जब मैं अब उनके बारे में सोचती हूं तब वे मुझे अजीब संकोच के वर्ष मालूम होते हैं। उनकी क्षणिकता रोजाना के एक तरह के ऐसे सुख के नीचे छिपी हुई थी जो इतना भंगुर था कि मै समझती हूं कि हम सब यह अनुभव करते थे कि यह किसी भी क्षण छिन्न-भिन्न हो सकता है। शान्ति एक ऐसी पतली चादर की तरह चीन को ढके थी जिसके नीचे एक नदी खौल रही थी। बाहर से हमारा जीवन पहले से अच्छा था। मेरी माता ने गड़ी हुई पारिवारिक चांदी खोदकर निकाल ली। हमारे वफादार नौकर फिर हमारे पास आ गए और मेरे पिता आजादी से आते-जाते थे। गलियों में विदेशियों के विरुद्ध इतनी कम कोसने की आवाज सुनाई देती थी कि मेरा ख्याल है कि उन्हें भी यह सोचकर परेशानी हो रही थी कि ऐसी शान्ति के लिए कितनी कीमत चुकाई गई।

कारण यह कि बौक्सरों के परास्त हो जाने के पश्चात् अनपढ़ से अनपढ़ गांव वाले को यह बात समझ में आ जाने के बाद कि उसका देश पराजित हो गया है, नई सन्धियों ने गोरों की रक्षा की गारंटी कर दी थी, चाहे वे जहां घूमें, रहें, प्रचार करें या व्यापार करें। इसके अलावा चीन को बूढ़ी मृत राजमाता की निराशा-जनित मूर्खता के लिए भारी हरजाना देने को मजबूर किया गया और यद्यपि मेरे देश ने बाद में अपने हिस्से का धन तरुण चीनियों को अमरीकन विश्वविद्यालयों में छात्र-वृत्तियां देने में खर्च करने का निश्चय किया, पर वह समय अभी नहीं आया था।

चीनी लोग व्यावहारिक तथा बड़े बुद्धिमान् लोग हैं। वे अपने पराजित होने की बात जानते थे और उस समय दूसरी पराजय का जोखिम नहीं उठा सकते थे। अगले संघर्ष का समय बहुत दूर था। कम से कम दस वर्ष तक उन्हें अपना बल बढ़ाना होगा, विचार करना पड़ेगा और योजना बनानी होगी। इन दस वर्षों में मैं बालक से किशोर हो गई थी। उस दशाब्दी की एक बात के लिए मैं बड़ी कृतज्ञ हूं। उन वर्षों में इतनी आज़ादी थी जितनी किसी गोरे बालक ने चीन से शायद कभी न देखी थी और १६११ में फिर क्रांति शुरू हो जाने के बाद निश्चय ही नहीं दीख सकती थी। यदि वह आज़ादी, वह पूर्ण सुरक्षा न होती जो सन्धियों, हरजानों और सज़ाओं द्वारा और पक्की हो गई थी—इन सज़ाओं से मेरा कुछ भी सम्बन्ध न था, पर मैं इनके लाभ में अनजाने ही हिस्सेदारी थी क्योंकि मैं एक गोरे आदमी की लड़की थी—तो मैं शहर की सड़कों और देहाती मार्गों पर इतनी आसानी से घूम-फिर नहीं सकती थी। केवल कुत्तों को ही मुझे देखकर भौंकने का साहस था, क्योंकि वे जंगली, भूखे गांव के कुत्ते ही वह घृणा प्रदर्शित करने का साहस कर सकते थे जो उन्हें विदेशियों के प्रति अनुभव करनी सिखाई गई थी। नहीं, बच्चे भी थे। कभी-कभी कोई बालक, जिसने रात के समय बन्द दरवाज़े के पीछे खड़े होकर अपने परिवार की बातचीत सुन ली थी, मेरे गुज़रने पर अब भी चिल्लाकर कह देता, 'यांग क्वेइत्से'—विदेशी शैतान! —पर यदि वह चिल्लाता तो उसकी मां उसका मुंह अपने हाथ से बन्द कर देती। उसने सुन रखा था कि गोरे लोगों ने बहुत क्रूरता से बदला लिया है जिससे वह डरी हुई थी।

मैं सोचती हूं कि इस भय से मेरा दिल टूट जाता था और जहां कहीं मैं भय का वातावरण देखती वहां जाती और माताओं से बातचीत करती : उनसे न डरने के लिए कहती और यदि सम्भव होता तो मैं बातचीत करने और बच्चे से खेलने के

लिए काफी देर रुक जाती और तब वहां से चलती जब यह देख लेती कि भय दूर हो गया है और उसके स्थान पर मैत्रीपूर्ण भाव दिखाई देने लगा है। इससे मुझे शान्ति मिलती थी। और जब वे इस बात पर आश्चर्य करते थे कि मै उनकी भाषा इतनी आसानी से बोलती हूं तब मुझे खुशी होती थी क्योंकि तब मुझे उन्हे यह बताने का अवसर मिलता था कि मेरा देश कैसा है और किस तरह हमारे लोगो मे घृणा नही है और वे उनसे घृणा नही करते और मै कितनी चाहती हू कि हम मित्र हो सके क्योकि हमारे हृदय सब एक-से है।

यहा मै एक गुप्त बात बताना चाहती हूं जिसके लिए मुझे आशा है कि मेरे कब्रों मे सोते माता-पिता मुझे क्षमा करेगे क्योंकि मैने उन्हे यह बात कभी नही बताई। प्राय: मेरी यह इच्छा होती थी कि मै अपनी इन सहेलियो को अपने घर आने के लिए और यह देखने के लिए कहू कि हमारा परिवार किस प्रकार निरापद है, मेरे माता-पिता कितने अच्छे है, मेरी छोटी बहन कितनी स्नेहपूर्ण है—पर मैं उन्हे निमत्रण नही दे सकती थी क्योकि मै यह न चाहती थी कि उन्हे धर्म का उपदेश दिया जाए। मै अपने पिता की आत्मा के भारी बोझ को समझती थी—ईश्वर के प्रेम का प्रचार करना वे अपना कर्तव्य समझते थे। और इन बहुमूल्य आत्माओं की, उनके शब्दो मे, रक्षा करने की, उनकी तीव्र इच्छा को मै समझती थी। मै उन्हे दोष नही देती, पर मै अपनी सहेलियो को अपने पिता के भावावेश की उद्दीप्त आग मे नही झोक सकती थी। और यदि मै उन्हे अपने पिता के उपदेश सुनने के लिए छोड देती तो क्या वे मेरा अविश्वास न करने लगती? वे सुशील थी। वे उनकी बात सुनने से इन्कार न करती, पर क्या वे यह न कहती कि मैने अपने सख्य का उपयोग उन्हे एक विदेशी देवता के चगुल मे फसाने के लिए किया है? मै यह जोखिम नही उठा सकती थी इसलिए वर्षों तक मैने अनेक चीनी सहेलिया होते हुए भी उन्हे अपने अच्छे माता-पिता से बचाए रखने की सावधानी बरती। इसका कारण यही नही था कि मै इसे ठीक समझती थी, बल्कि यह भी था कि इसमे मेरा सरासर स्वार्थ था कि मै उनके सन्देह का जोखिम न उठा सकती थी।

उनके विश्वास का मुझे बडा अच्छा प्रतिदान मिला क्योंकि जिन चीजों में मैं उनके साथ रहती—उनके मकान, उनका काम और उनकी हसी और मधुर बातचीत—उन्हे आज तक मै मूल्यवान समझती हू। एक बार विश्वास जम जाने के बाद हम एक-दूसरे से घनिष्ठ मनुष्यो की तरह एक-दूसरे की बाते पूछते। उन वर्षों में

समय बहुत था। हम अब भी देहात में रहते थे और सवेरे मेरी मां मुझे पढ़ाती थी, पर लम्बे तीसरे पहर के समय मैं अकेली होती थी और मेरे अपनी जाति के बड़े कम साथी थे। इसलिए स्वाभाविक था कि मैं पत्थर के शेरों के बीच बने लू परिवार के लाल दरवाज़े की ओर चल पड़ती जो आधे मील के करीब था, और वहां आंगन में बैठकर घण्टों बच्चों से खेलती, नई वधुओं की बातें सुनती और अपनी ही उमर की एक स्कूल की साथिन से, जो एक सुन्दर लड़की थी, बातचीत करती—वह स्कूल की साथिन इस तरह बनी कि श्री कुंग का देहांत १६०५ में हो गया, और क्योंकि मैं बहुत लम्बी थी, इसलिए मेरे माता-पिता ने यह महसूस किया कि किसी अजनबी आदमी से पढ़ने के बजाय मैं सप्ताह में दो या तीन बार लड़कियों के मिशन स्कूल में चली जाया करूं, पर मैं फिर कभी उतना न सीख सकी जितना मैंने श्री कुंग से सीखा था। उनकी अर्थी उठने के समय मैं रोई और मैंने अपनी बांह पर शोकसूचक एक सफेद पट्टी बांधी तथा उनके परिवार के छोटे सदस्यों के साथ उनके कॉफिन या शवपेटी के आगे सिर झुकाया। वे सितम्बर में हैज़े से मरे। रोज़ की तरह वे सवेरे उठे पर रात तक कूच कर गए। मेरी माता नहीं चाहती थी कि मैं उनके अन्तिम संस्कार में जाऊं क्योंकि छूत का खतरा था, और जब मैंने आग्रह किया, तब उसने मुझे मेरे पिता के साथ यह वचन लेकर ही जाने दिया कि हम चाय की प्याली तक होंठों से नहीं लगाएंगे और अन्तिम संस्कार से सम्बन्धित अन्य किसी खाने की चीज़ को निश्चय ही नहीं खाएंगे। यह वचन लेने के लिए उसके पास पर्याप्त कारण था क्योंकि एक बार मेरे जन्म से पहले वह हैज़े से करीब-करीब मौत के पास पहुंच गई थी, उसी दिन मेरी चार साल की बहन, जिसे मैंने कभी नहीं देखा, खत्म हो गई थी। मेरे पिता को–जिन्होंने एक डाक्टर तलाश कर लिया था, क्योंकि यह भयंकर घटना शांगहाई में हुई थी जहां गोरे डाक्टर थे–यह तय करना पड़ा था कि किसका जीवन बचाना है, अपनी लड़की का या अपनी पत्नी का।

'मैं उन दोनों को नहीं बचा सकता,' डाक्टर ने कह दिया था।

उन्होंने अपनी पत्नी को चुना, पर कभी-कभी मैं सोचा करती हूं कि क्या मेरी मां ने उन्हें इसके लिए क्षमा कर दिया था। दोनों को बचाने का आग्रह करना उसके अनुरूप ही होता पर वह बेहोश थी और कुछ न कह सकती थी। मैं सोचती हूं कि वह सदा यह महसूस करती रही कि मेरे पिता ने ईश्वर की इच्छा को बहुत आसानी के रास्ते से स्वीकार कर लिया था।

खैर, वहां छह या सात परिवार थे, जो बहुत दूर न थे। उनमें मेरे जाने पर स्वागत होता था और जब वहां मैंने गोरों द्वारा प्राप्त की गई विजय का दूसरा पहलू जाना तब मुझे वह बात ज्ञात हुई जो उसके बाद के जीवन ने मुझे सिखाई है कि युद्ध में विजय का अर्थ है एक और युद्ध और फिर एक और, जब तक कि अन्त में किसी दिन अनिवार्यतः पासा पलट जाता है और विजेता विजित हो जाता है और चक्र दूसरी ओर चलने लगता है, पर फिर भी यह रहता है चक्र ही।

इस तरह बहुत देर तक सुख से समय बिताने के बाद जब मैं घर लौटती थी, तब मेरा हृदय किसी बालक के हृदय से भी अधिक व्याकुल होता था क्योंकि मैं देखती थी कि प्रत्येक पक्ष गलत भी है और ठीक भी, और मैं विवशता के ढंग से दोनों के लिए दुःख अनुभव करती थी, क्योंकि मैं यह न समझ पाती थी कि जो कुछ इतिहास बन चुका है, उसके होते अब कैसे कुछ किया जा सकता है। मैं अपने माता-पिता की ओर देखा करती थी और सोचा करती थी कि मेरे मन में जो भावना और भय है वह उनसे कैसे कहूं क्योंकि मैं अपनी चीनी सहेलियों से भी विश्वास-घात नहीं करना चाहती थी, और नहीं जानती थी कि मेरे माता-पिता मेरी कही बातों का क्या उपयोग करें— वे शायद कर्तव्य समझकर इसकी सूचना वाणिज्य-दूत को दे दें या मुझे अपनी सहेलियों के यहां जाने से रोक दें।

और फिर भी मैं जानती थी कि मेरे माता-पिता इतने अधिक अच्छे हैं और इतने निर्दोष हैं कि मुझे निश्चय ही उनसे यह कह देना चाहिए कि लू महाशय का कहना है कि अभी आगे अनेक युद्ध होंगे।

मैंने उनसे कभी कुछ नहीं कहा और मैं अपने-आपको यह कहकर दिलासा दे दिया करती थी कि यदि मैंने उनसे कहा होता तो वे इतना ही कहते कि जो कुछ होगा, वह भगवान् के हाथों में है। इस बात पर मुझे पूरी तरह विश्वास न था क्योंकि मैं अच्छी तरह जानती थी कि यदि मनुष्य में समझ और इच्छा हो तो मनुष्यों के हाथों से बहुत कुछ किया जा सकता है।

पहले की बातें सोचती हूं तो मुझे अपना जीवन टुकड़ों में दिखाई देता है; प्रत्येक टुकड़ा उस ज़माने में फिट हो जाता है जिसमें मैं थी। यदि मेरा बच-पन अपने समय के और बच्चों के बचपन से भिन्न था—और वह बहुत भिन्न था—तो सबसे गहरा अन्तर यह था कि मुझे सदा यह ध्यान रहता था कि मैं भविष्य के लिए संचित हो रहे तूफान में पत्ता-मात्र हूं। फिर भी दिनों-दिन मुझे

बहुत प्यार और कृपा मिलती रही और मुझपर कोई व्यक्तिगत दुःख नहीं पड़ा। मुझपर कोई दबाव नहीं था। मेरे पास पर्याप्त अवकाश रहता था और मैं स्वेच्छा से उसका उपयोग करती थी क्योंकि मेरे माता-पिता बहुत रोक-टोक करने वाले लोग न थे। मेरा सौभाग्य था कि मुझे ऐसा स्वभाव मिला था जो आसानी से अनेक बातों में घूमकर मनोविनोद कर लेता, मानो मुझे भगवान् ने यह गुण दिया था कि मैं अपने चारों ओर की सब चीज़ों, दृश्यों और मनुष्यों में आनन्द अनुभव कर सकूं। मैं स्वस्थ और उत्साही थी––कभी निकम्मी या उदास न रहती थी। मैं जिज्ञासु बालिका थी और सवाल करके सबको परेशान कर देती थी। ये सवाल कभी-कभी बड़े व्यक्तिगत और आन्तरिक मामलों के बारे में होते थे, पर फिर भी मैं इतनी दूर तक अपने को क्षमा कर दूंगी। गप्पों में मेरी कोई दिलचस्पी न थी—थी तो केवल कहानियों में। मैं अपने चारों तरफ चलने वाले हर मानवीय किस्से में उलझ जाती थी और जो कोई मुझसे बातचीत करता उसकी बात घण्टों सुनती रहती थी। मेरे चारों ओर ऐसे लोग हमेशा होते जो बात करने को तैयार रहते थे, या जिन्हें बात करने की ज़रूरत होती थी। निःसन्देह मैं बहुत सी बेकार जानकारी याद कर लेती थी, पर फिर भी मैं सोचती हूं कि क्या उसमें से कोई भी वास्तव में बेकार थी? उदाहरण के लिए, मैं अपने पड़ोसियों की समस्याओं में गहरी दिलचस्पी लेती थी। पांच एकड़ के करीब धरती पर फसल उगाने की कठिनाइयों को समझने की कोशिश करती थी, और फिर मैंने वह चमत्कार जान लिया जिससे यह काम किया जाता था। यह हाथ से किया जाता था जिससे धान के हर पौधे को खेत में हाथ से रोपा जाता था––वह भी मजदूरी पर रखे गए हाथों से नहीं, बल्कि किसानों, उनकी पत्नियों, उनकी पुत्रियों, पुत्रों, पुत्र-वधुओं और उनके बच्चों द्वारा। मैं ऋतुओं का परिवर्तन देखती थी; जब वर्षा न होती थी तब किसानों के साथ चिन्तित होती थी और उनके प्रार्थना-जलूसों में उनके साथ सहानुभूति रखती थी। जब कुछ वर्षा हो जाती, तब मैं परमेश्वर का धन्यवाद करती थी। बाद में जब मैं लिखने लगी, तब सारा ज्ञान मेरे लिए उपयोगी हुआ।

शायद मेरा अपना विकास बाहर से अन्दर को था, या दूसरे शब्दों में कहा जाए तो मैं अपने से बाहर रहती थी, और तृप्ति से रहती थी। पर एक और जीवन भी था, किन्तु वह अभी यथार्थ की अपेक्षा कल्पना और स्वप्न में ही अधिक था। मैं उन महीनों को पूरी तरह कभी न भूली जो मैंने अमरीका में बिताए थे,

यद्यपि समय बीतने के साथ-साथ मेरी स्मृतिया धुधली होती गईं। मुझे किसी निरन्तर समय-धारा के बजाय कोई खास समय और कोई-कोई घटना याद थी और जो कुछ मुझे याद था उसे पकडे रखने के लिए मै निरन्तर पढती रहती थी। पढती तो मै सदा ही थी, पर अब मै अपने निजी जगत्, पश्चिमी जगत् को खोजने और पाने के लिए पढती थी जिसमे किसी दिन मै लौट जाऊगी और मुझे लौटना पडेगा, जबकि एशिया के द्वार मेरे और मेरी जाति वालो के लिए बन्द हो जाएगे।

पर फिर भी अमरीकन पुस्तके बहुत ही थोडी मिलती थी। ऐसा लगता था जैसे साहित्य अमरीकन कम और इगलिश अधिक था। मार्क ट्वेन को मेरी मा थोडा गवारू समझती थी और यद्यपि हमारे पास 'टोम सायर' और 'हकलबेरी फिन' थे और मै उन्हे पढती थी, पर वे मेरे लिए अवास्तविक थे। ऐसे व्यक्ति मैने स्वय नही देखे। अब दसो वर्ष बाद मै अच्छी तरह देख सकती हू कि मार्क ट्वेन ने कुछ अमरीकन और सच्ची चीज ग्रहण की थी जो और किसीने नही पकडी है, या कम से कम मेरा ऐसा विचार है। सच पूछिए तो मेरा एक लडका है जिसके तरीके मेरे तरीको से इतने भिन्न हैं कि वह मेरे लिए विदेशी है और मै सोचती हू कि यदि मेरे पास मार्क ट्वेन न होता तो मेरी समझ मे न आता कि मै इस लडके का क्या करू। मै टोम सायर प्राय वर्ष मे एक बार पढ लेती हू, जिससे मुझे इस अमरीकन लडके को जो मेरा अपना ही बेटा है, समझने मे मदद मिले।

सचाई यह है कि मेरे जवानी के दिनो मे ससार के हमारे वाले हिस्से मे बहुत थोडी अमरीकन पुस्तके पहुचती थी, पर शागहाई के उत्तम इगलिश-पुस्तक-विक्रेता 'केली ऐड वाल्श' के पास नये अग्रेजी उपन्यासो और पुराने उपन्यासो के सेकडहैण्ड सस्करणो का अच्छा स्टाक रहता था, उनके सूचीपत्र हमारे पास पहाड पर ही पहुच जाते थे मै, जो पैसे मुझे मिलते थे या जो मै कमाती थी, उनकी एक-एक पाई पुस्तको पर खर्च करती थी। मेरे माता-पिता ने हमारे घर की सजावट के लिए आवश्यक सामग्री के रूप मे डिकेस और थैकरे तथा जार्ज इलियट और वाल्टर स्कॉट आदि अन्य लेखको के सैट ले रखे थे और अग्रेजी कवियो की रचनाए और शेक्सपियर का एक सुन्दर सस्करण भी हमारे पास थे, और ये सब चीजे मेरे बचपन का ठोस हिस्सा थी। मेरी मा अपनी पसन्द की अमरीकन पत्रिका 'दी डिलीनियेटर' लेती थी और मेरे पिता 'दी सेन्चुअरी' पत्रिका लेते थे, और हमारे अपने देश के नवयुवको से सम्पर्क कायम रखने के लिए हम 'सेट निकोलस' तथा दी 'यूथ्स

काम्पैनियन' लेते थे। पर इस सम्पर्क के सच्चे परिणाम के बारे में मुझे सन्देह है क्योंकि न मालूम कैसे मेरे मन में अमरीका की अविश्वसनीय पूर्णता की धारणा बन गई थी और इसी गलत जानकारी में मैं बड़ी हुई। बाद में मेरा भ्रम दूर हुआ, पर बहुत झटके से नहीं, क्योंकि सामान्य व्यवहार-बुद्धि ने मुझे बचा लिया।

इन निरुपद्रव वर्षों के बीच में मेरे कालिज की पढ़ाई के लिए मुझे 'घर'—क्योंकि हमें अपने देश को सदा 'घर' कहना सिखाया जाता था—भेजे जाने से पहले एक घटना घटी। अपने घर से दूर रहने वाले गोरे जब 'घर' शब्द का प्रयोग करते थे, तब इसमें कुछ दुःखद बात थी, यद्यपि मैं उस समय यह बात न जानती थी। ये लोग जहां भी, एशिया के जिस भी देश में, अपनी पत्नी और बच्चों के साथ या उनके बिना रहते थे, वहीं अपने जन्म के देश को 'घर' कहा करते थे। भारतवर्ष में ऐसे अंग्रेज़ मिलेंगे जिन्हें उनको माता-पिता ने धन कमाने के लिए अठारह वर्ष की आयु में वहां भेज दिया था और इसके बाद वे एक बार भी वापिस नहीं गए और यद्यपि उनके बाल सफेद हो गए और उन्होंने अपने लिए निश्चय ही किसी न किसी प्रकार के घर बना लिए, फिर भी वे इंगलैंड की चर्चा 'घर' शब्द से करते हैं; और सबसे अधिक दुःख तो तब होता है जब वे भारतीय पत्नियों वाले हों या वैसे ही भारतीय स्त्रियों के साथ रहते हों, और उनके छोटे-छोटे अर्ध-भारतीय बच्चे इंगलैंड को 'घर' कहते सुनाई देते हैं, यद्यपि वे न वहां और न भारत में ही, कभी घर जैसा अनुभव कर सकते हैं। चिंकिआंग में भी ऐसे बच्चे थे और यद्यपि मेरी माता आग्रहपूर्वक कहती थी कि हम उन्हें अमरीकन या अंग्रेज़ के अलावा कुछ नहीं कहते, जैसे कि उनके पिता हैं, फिर भी मैं जानती थी कि उन्हें पता है कि उनके लिए घर कहीं नहीं। इस दुर्दशा पर मुझे इतना हार्दिक दुःख होता था कि मैं यहां तक सोचने लगती थी कि मेरा ऐसा सौभाग्य होना बड़ी बुरी बात है कि मैं पूरी तरह अमरीकन हूं और मुझमें सारा रक्त अपने माता-पिता का ही है।

तो इस प्रकार मेरे कालिज की पढ़ाई के लिए 'घर' जाने से पहले एक घटना घटी। बात यह थी कि मैं असल में कालिज के लिए अभी छोटी थी और यह इस बात का स्वाभाविक परिणाम था कि मुझे पश्चिमी विषयों की शिक्षा केवल अपनी माता से मिली थी। वह वर्ष जैसे भी हो, बिताना था क्योंकि मेरे पिता को १९१० से पहले वहां से छुट्टी न मिल सकती थी और अभी १९०९ ही था।

मैं सोचती हूं कि मेरी मां भी यह महसूस करती थी कि मैं अभी अपने देश में

भी अकेली कालिज में छोड़े जाने योग्य नहीं हूं क्योंकि मैं भोलेपन और एशियन सांसारिक समझदारी के मेल से बनी थी और यह मेल चीनियों जैसे प्रकृति के अनु-सार चलने वाले लोगों के साथ प्रतिदिन रहने का परिणाम था। मुझे अपनी जाति के लोगों से मिलने का बहुत कम मौका मिलता था। यह सच है कि हर गर्मियों में हम ऊंचे लू पर्वतों में नदी-तल की गर्मी से बचने के लिए चले जाते थे और वहां मिशनरियों और व्यापारियों के लड़कों-लड़कियों से मेरी भेंट होती थी, पर मैं उन पर्वतों के दृश्यों पर इतनी मुग्ध थी कि घाटियों और टेनिस खेल में मैं इतना समय नहीं गुज़ारती थी जितना घूमने और पहाड़ों पर चढ़ने में। इन वार्षिक छुट्टियों के अलावा, मैं केवल एक अमरीकन परिवार से मिली थी जिसमें मेरी ही आयु की लड़कियां थीं। कुछ मास तक या शायद एक या दो साल तक—अब ठीक-ठीक याद नहीं आता क्योंकि उसके बाद की बड़ी-बड़ी घटनाओं ने मेरी समय की याद को नष्ट कर दिया है—मिशनरी परिवार की तीन लड़कियों से मेरी मित्रता रही जो स्वस्थ, प्रसन्न और अमरीका से नई आई हुई थीं। वे अधिक दिन न रहे क्योंकि उस नदी वाले प्रान्त के मलेरिया-भरे जलवायु ने माता को बीमार कर दिया। फिर भी मुझे अमरीकन लड़कियों और उनके आनन्दपूर्ण रंगढंग की कम से कम एक झांकी मिल गई। मैं चुप रहती थी पर इसका कारण शर्म या संकोच उतना न था जितना उन्हें पूरी तरह जानने की आवश्यकता। मैं उन्हें व्यक्तियों के रूप में न देखती थी बल्कि इस रूप में देखती थी कि जैसे सारा अमरीका ऐसा ही होगा——हंसती, शोर मचाती, ज़िद करती और दिक करने वाली ऐसी लड़कियों से भरा हुआ। वे फिर चली गईं और एकाएक मैं बहुत अकेलापन महसूस करने लगी।

उस समय मेरी मां ने, जिसकी नज़र बड़ी तेज़ थी, यह निश्चय किया कि मुझे एक साल किसी बोर्डिंग स्कूल में बिताना चाहिए। मुझे ऐसा एक और अनुभव था, जब मैं कुछ महीने कुलिंग में एक छोटे नये बोर्डिंग स्कूल में रही थी। ऊपर से इसका मुझपर कोई प्रभाव न पड़ा। निश्चय ही मैंने कुछ नहीं सीखा क्योंकि तीन मास बाद मुझे वापिस वहां नहीं भेजा गया और मेरी माता ही मुझे फिर पढ़ाने लगी। पर इस बार मुझे शांगहाई में मिस ज्यूएल के स्कूल में जाना था जो पश्चिमी लड़कों और लड़कियों के लिए सबसे अधिक फैशनेबल और चीनी तट के हमारे वाले प्रदेश में एकमात्र अच्छा स्कूल समझा जाता था। एक या दो वर्ष बाद अमरीकन स्कूल खुला और इसमें, मेरे बाद गोरे, मुख्यतः अमरीकन बच्चों की अनेक पीढ़ियां गईं।

वे मिस ज्यूएल के स्कूल में—विशेष रूप से इसके पिछले दिनों में जब मैं वहां थी—अमरीकन जीवन के लिए जैसी और जितनी तैयारी कर पाते थे, उससे बहुत अधिक और भिन्न तैयारी इसमें हो जाती थी।

जब मैं उस अजीब जगह में बिताए महीनों की बात सोचती हूं तब मेरी स्मृति अवास्तविक, कल्पनापूर्ण और अपने जीवन के समय के अन्य किसी हिस्से से बिल्कुल अलग अनुभव होती है। प्रथम तो यह शांगहाई नगर था जो अन्य चीनी नगरों से बिल्कुल भिन्न था। यह विदेशियों द्वारा विदेशियों के लिए बनाया गया नगर था। दशाब्दियों पहले मांचू सम्राटों ने देश में ज़बरदस्ती घुसते हुए पश्चिम वालों को रहने की जगह दे दी थी और तुच्छ समझकर उन्हें वांगपू नदी के दलदल वाले मैदान जैसी जगह दी थी जहां यांगत्से नदी समुद्र में गिरती है। इस मलेरिया वाली रद्दी जगह को विदेशियों ने एक नगर बना लिया था। सुन्दर बांध के किनारे-किनारे बड़े-बड़े मकानों का अस्तित्व नज़र आने लगा था। पार्क बनाए गए थे—वे प्रसिद्ध पार्क जिन्होंनें बाद में सुलगती क्रांति की आग को 'चीनियों और कुत्तों का प्रवेश निषिद्ध है' का नारा दिया। सुन्दर इंगलिश दुकानों पर खूब व्यापार होता था और वे भारत के आधुनिक नगरों तथा सिंगापुर और हांगकांग से यहां तक फैल गई थीं, और कलाकृतियों, पुस्तकों और संगीत के साधनों की दुकानों ने उसे एक महान् केन्द्र बना दिया था। पर्यटकों और स्थानीय व्यापारियों के लिए बढ़िया होटल तथा किराए के मकान और खेलों तथा मनोविनोद के लिए खर्चीले क्लब और बड़े-बड़े निजी मकान थे जो सब जातियों के धनी लोगों के थे।

उस समय संसार में प्रसिद्ध इस शहर के बारे में मेरी अपनी जानकारी बड़ी थोड़ी थी। मेरे लिए शांगहाई प्रशांत महासागर में घुसने का प्रवेश-द्वार मात्र था जिसमें होकर हमें आना और चीन से विदा होने के समय जाना पड़ता था। नहीं, मुझे उन कुछ महीनों की स्मृति भी थी जो हमने बौक्सर-विद्रोह के दिनों में शरणार्थी के रूप में वहां काटे थे। अब मेरे जैसी अतिसंवेदक और तीक्ष्ण दृष्टि वाली युवा लड़की को बेरौनक बोर्डिंग स्कूल की खिड़कियों से शांगहाई देखना था और यह बिल्कुल भिन्न नगर था। तब मुझे पता चला कि अधिकतर बड़े नगरों की तरह शांगहाई में बहुत से नगर मिलकर एक हो गए हैं और इसके बारे में मेरा ज्ञान केवल उन अनुभवों पर ही निर्भर था जो मुझे इसमें हुए थे।

मिस ज्यूएल का स्कूल पुरानी पक्की ईंटों के मकान में स्थापित था। ऐसे

मकान मैंने लंदन के अलावा और कहीं नहीं देखे जो ऐसा मालूम होता था कि शाश्वत काल के लिए बनाए गए थे। सामने के दरवाज़े से घुसने पर पहली मंज़िल में बैठक थी और जिस दिन मुझे भर्ती होना था उस दिन मैं और मेरी मां वहां मिस ज्यूएल की प्रतीक्षा में बैठी रहीं। उस सुनसान बैठक के चारों ओर नज़र डालते मुझे निकोलस निकलबाई की छायाएं घिरती हुई लगीं। खिड़कियां बाहर की सड़क की पटरी से नीचे तक गई हुई थीं और चारों ओर से रक्षा के लिए उसमें भारी सलाखें लगी हुई थीं—यह चीज़ थी तो तर्कसंगत, पर इससे मुझपर कमरे का जो प्रभाव पड़ा था उसमें कुछ भय का भी समावेश हो गया। काले ओक के फ्रेमों में जड़ी बाइबिल की पंक्तियां आभाहीन दीवारों पर लटक रही थीं और फर्नीचर अजीबोगरीब और मिला-जुला था। एक काले लकड़ी के मेंटल के नीचे छोटी-सी अंग्रेजी जाली में कम सुलगने वाली आग का धुआं चिमनी से जा रहा था—एक मुट्ठी कोयले इस तरह सावधानी से लगाए गए थे कि वे सुलगते रहें पर जल न सकें।

वहां हम किंकर्तव्य-विमूढ़ बैठे रहे, अपनी मां के सदा प्रसन्न रहने वाले चेहरे को क्रमशः प्रसन्नताहीन होता देखकर मेरी अपनी आशंकाएं भी गहरी होने लगीं, पर वह आसानी से छोड़ने वाली महिला न थी और हम प्रतीक्षा करते रहे। कुछ देर बाद कमरे में एक भारी बदन की, सफेद बालों और काली आंखों वाली स्त्री आई। यह स्वयं मिस ज्यूएल ही थी। उसने काले रंग की पूरी पोशाक पहन रखी थी, जिसकी घघरी फर्श को छू रही थी, वह चुपचाप अन्दर आई, क्योंकि, जैसा कि मुझे बाद में पता चला, वह सदा नरम तली के जूते पहनती थी। इसका कुछ तो यह कारण था कि किसीको यह पता न चले कि वह कब आ रही है और कुछ यह था कि उसे मस्सों का बड़ा कष्ट था। मैंने इस सुन्दर उदास चेहरे वाली स्त्री की ओर देखा, पर यह न समझ सकी कि वह क्या थी। मैं अधिकतर लोगों को तुरन्त भांप जाती थी, पर यह कुछ नई ही चीज़ थी। उसने हल्की आवाज़ में हमारा स्वागत किया और मैंने देखा कि यद्यपि उसके हाथ सुन्दर थे, पर वे ठण्डे थे और उसने बड़ा ढीला-ढाला हाथ मिलाया। उससे कोई उत्साह नहीं प्रकट हुआ। ईमानदारी से मुझे यह स्वीकार करना चाहिए कि वह बुढ़ापे की ओर पहुंच चुकी थी और सदा थकी रहती थी। वह अनेक वर्ष तक अपने ही स्कूल की मुख्य अध्यापिका रही थी और एकमात्र अपने ऊपर ही निर्भर रही थी तथा उसकी ऊपर से दीखने वाली उत्साहहीनता के बावजूद उसने बड़े अच्छे कार्य किए थे। जितने मास मैं

उसकी देखभाल में रही, उनमें कई अपरिचित बर्बाद औरतें आश्रय के लिए उसके पास आईं। जैसे-तैसे उसने उन्हें सदा आश्रय दिया और उनके लिए काम किया या घर लौटने के लिए टिकट की व्यवस्था की, पर मुझे उसकी छिपी अच्छाई का पता लगाने में समय लगा और पहले दिन मुझे एक तरह का डर अनुभव हुआ।

शायद मैं कभी भी मिस ज्यूएल को या कुछ उन स्त्रियों को जो उसने अपने चारों ओर इकट्ठी कर रखी थीं, अच्छी तरह न समझ सकी, जब तक कि अन्त में वर्षों बाद मैंने न्यूयार्क के एक थियेटर में ड्राइ रौट से मरते लोगों के बारे में यू जीन ओनील के नाटक नहीं देखे। न्यूइंग्लैंड की गौरवपूर्ण परन्तु शुष्क पृष्ठभूमि से मिस ज्यूएल एक कठोर अच्छाई, एक भावावेशपूर्ण समर्पण, एक फौलादी इच्छा चीन लाई थी। वह मेरे पहले देखे हुए लोगों में से किसी जैसी भी न थी--न मेरे खुश-मिज़ाज माता-पिता जैसी और न मेरी स्नेहमयी चीनी सहेलियों जैसी। मैंने चुम्बन करके अपनी माता को विदा दी और फुसफुसाकर उसे यह याद दिलाया कि उसने यह वचन दिया था कि यदि मुझे जगह पसन्द न आएगी तो मैं न रहूंगी, और तब उसके चले जाने के बाद मैं मिस ज्यूएल के साथ एक चीनी लड़के के पीछे-पीछे, जिसने मेरा सामान उठा रखा था, चौड़ी अंधेरी सीढ़ी पर चढ़ी।

इस स्कूल का मुझपर कोई महत्त्वपूर्ण असर नहीं पड़ा—इतना ही था कि इससे मेरे सामने मिली-जुली मानवता की अजीब छिपी दुनिया का दरवाज़ा खुल गया। मेरे पास सबसे ऊपर की मंज़िल का कमरा था जिसमें दो और लड़कियां थीं। वे दोनों मिशनरियों की लड़कियां थीं पर मैं पहले उन्हें न जानती थी। उनके जीवन मेरे जीवन से बिल्कुल भिन्न रहे थे और यद्यपि हम लोग शीघ्र एक-दूसरे को जान गई पर अजनबी ही बनी रहीं। इसका कारण यह था कि मेरे माता-पिता में संकीर्ण कट्टरता न थी और वे यह मानते थे कि चीनी हर दृष्टि से हमारे बराबर हैं और चीनी सभ्यता और उसके दर्शन तथा धर्म भी अध्ययन और आदर के योग्य हैं। मेरे कमरे की साथिनें संकीर्ण कट्टर लोगों में से आई थीं। उन्होंने अपने जीवन मिशनरियों की चहारदीवारीमें बिताए थे और परिणामतः वे केवल नौकरों की चीनी भाषा बोलती थीं और उनकी कोई चीनी सहेलियां न थीं—कम से कम उस अर्थ में न थीं जिसमें मैं इसे समझती थी—मेरा ख्याल है कि वे मुझे कुछ नीची नज़र से देखती थीं क्योंकि मुझे श्री कुंग से शिक्षा मिली थी और मैं नियमित रूप से अपनी प्रिय चीनी सहेलियों को पत्र लिखा करती थी, पर हमारे झगड़े की नौबत बौद्ध धर्म

के विषय पर आई, जिसके बारे में वे कुछ न जानती थीं। दूसरी ओर, मैं उमर कम होते भी इसके बारे में बहुत कुछ जानती थी क्योंकि मेरे अध्ययनशील पिता ने एशिया में अन्य धर्मों के साथ-साथ बौद्ध धर्म का भी बहुत वर्षों तक अध्ययन किया था और उन्होंने ईसाई धर्म और बौद्ध धर्म के सादृश्यों पर एक मनोरंजक पुस्तिका भी लिखी थी। मेरे माता-पिता कभी भी अपने बच्चों को छोटा समझकर बात न करते थे। इसके विपरीत, वे अपनी दिलचस्पी के विषयों में बातचीत करते थे और हम स्वेच्छा से सुनते थे और सम्भव होता तो उसमें हिस्सा लेते थे। इस प्रकार बौद्ध धर्म के बारे में अपने पिता के सामान्य विचार मैं स्पष्ट रूप से जानती थी, जिनमें से एक यह था कि उस धर्म और ईसाइयत में सादृश्य आकस्मिक नहीं, बल्कि ऐतिहासिक है, क्योंकि यह बिल्कुल सम्भव है कि ईसा युवावस्था में और अपने जीवन के उन बारह वर्षों में जिनका कोई वृत्त नहीं प्राप्त होता, हिमालय-स्थित नेपाल राज्य में आए हों। उत्तरी भारत में यह अनुश्रुति बड़ी व्यापक है और इसका उल्लेख हिन्दुओं की प्राचीन धर्म-पुस्तक विष्णुपुराण में भी आता है। दो हज़ार वर्ष पहले सब धर्म एक बिरादरी थे और धार्मिक नेता तथा शिष्य परस्पर विचार-विनिमय करते थे। मेरे पिता का विश्वास था कि ईसा को बौद्ध धर्म की शिक्षाओं की तरह कन्फ्यूशियस की शिक्षाओं का भी पता था क्योंकि अनेक में से एक उदाहरण लिया जाए तो सुनहरे नियम (गोल्डन रूल) को ईसा ने और कन्फ्यूशियस ने प्रायः अभिन्न शब्दों में रखा है, और यह अभिन्नता विचार की आकस्मिक समानता के कारण होनी कठिन है। संक्षेप में, यद्यपि मेरे पिता एक रूढ़िवादी ईसाई थे पर वे इस निष्कर्ष पर पहुंच चुके थे कि एशिया में, जहां मानव-सभ्यता बहुत पहले दार्शनिक चिन्तन और धार्मिक सिद्धांत की अद्वितीय उच्चता तक पहुंच चुकी थी, ईश्वर की ओर मनुष्य-जाति की गहरी और निरन्तर प्रगति में सब धर्मों ने अपना-अपना अंशदान किया था।

मेरी दोनों साथिनों के लिए ये विचार बड़े चौंकाने वाले थे और यद्यपि मैंने वे सीधेपन से और सोने के समय की गपशप में प्रकट किए थे पर उन्होंने मिस ज्यूएल से मेरी यह रिपोर्ट की कि मैं नास्तिक हूं। दूसरी ओर मुझे इस बात से आघात लगा कि वे चीनियों को असभ्य या हीनधर्मी कह सकती थीं। मेरे माता-पिता हमारे मकान में कभी वह शब्द नहीं बोलने देते थे—यहां तक कि बाइबिल के कुछ गीत भी इसीलिए निषिद्ध थे कि उनमें यह भद्दा शब्द आता था। मिस ज्यूएल ने मेरे

भयंकर विचारों की सूचना पाकर मुझे ऊपर के कमरे से हटा लिया—इस डर से हटा लिया कि कही मै दूसरो को भी न बिगाड दू, और मुझे एक छोटे-से कमरे मे अकेला रख दिया गया। इससे मुझे प्रसन्नता हुई क्योकि मै और जगह रोशनी बुझ जाने के बाद भी पढ सकती थी, और अपने कमरे के बाहर वाले बरामदे से सडक के परली तरफ एक बडे और मैत्रीपूर्ण पुर्तगाली परिवार को देख सकती थी। मुझे उनका आज तक कभी पता न चला क्योकि मै उनसे कभी नही मिली, पर मै उनके व्यक्तिगत नाम सब जान गई, क्योकि उनकी ऊची उत्साहपूर्ण आवाजे थी और वे अपने ऊपर की मजिल के बरामदे मे लापरवाह आन्तरिकता से रहते थे। मामा और पापा, रोजा, मेरी और सोफी तथा छोटी डीडी अब भी घर पर थे। रविवारो को 'मास' (ईसाई प्रार्थना) के बाद एक विवाहित पुत्र और पुत्री तथा उनके बच्चे दिन बिताने घर आते थे और उस दिन अनिवार्य प्रार्थना के बाद मुझे भी छुट्टी होती थी। इस प्रकार मै उन्हे देखती रह सकती थी और उनके आनन्द-पूर्ण जीवन मे हिस्सा लेती रह सकती थी। मै अपने ढग से उनसे प्यार करने लगी थी क्योकि शायद लोगो से आसानी से प्यार करने लगने की मुझमे कमजोरी है, यद्यपि घनिष्ठता मेरे लिए कठिन है। वस्तुत उन बडे-बडे काले भवनो मे मेरे उदास जीवन को उनसे प्रसन्नता प्राप्त होती थी।

अब अपने जीवन मे पहली बार मुझे अपनी कक्षा की पुस्तको मे कोई दिलचस्पी नही रही। मैने देखा कि मुझे कक्षाओ की पढाई मे आनन्द नही आता क्योकि मुझे अपनी माता की तीव्र बुद्धि और चतुरतापूर्ण अध्यापन की आदत पडी हुई थी और दूसरे अध्यापको से मै ऊब जाती थी। मेरी अग्रेजी अध्यापिका इसका अपवाद थी। वह दुबली-पतली नीली आखो वाली छोटी-सी स्त्री थी जिसकी अत्यधिक भावुक आत्मा को मैने पहचान लिया था, और जिससे मुझे लगता है कि मै कुछ डरती थी क्योकि उसमे मुझे ऐसी गहराइया अनुभव हुई जिनके लिए मै तैयार न थी।

हमारी अध्यापिकाए अच्छी थी। मिस ज्यूएल इसका ध्यान रखती थी पर मुझे चैन नही मिलता था। कुछ विषयो मे तो मै अपने माता-पिता की कृपा से अपनी आयु से बहुत अधिक जानती थी, पर लेटिन व्याकरण और गणित के अधिक बारीक पहलू सामने आने पर मै अधीर हो जाती थी। मैने जो कुछ वास्तव मे सीखा उसका पढाई के विषयो से कोई सम्बन्ध न था। मिस ज्यूएल ने समझा कि मुझे

अधिक सख्त ईसाई धर्म की शिक्षा की आवश्यकता है, अतः उसने मुझे वैसी शिक्षा देने की कोशिश की। इसके लिए वह मुझे प्रार्थना-सभाओं में और फिर अच्छे कामों की जगह ले जाती थी। दोनों से मुझमें भय पैदा हुआ क्योंकि ये प्रार्थना-सभाएं मेरी परिचित प्रार्थना-सभाओं से भिन्न थीं। मैं नहीं जानती कि मिस ज्यूएल किस मत या पंथ की थी, पर प्रार्थनाओं के लिए वह किसी व्यक्ति के मकान में जाती थी, जिसमें उसके ईसाई-बन्धु प्रार्थना करने के लिए इकट्ठे होते थे। वह व्यस्त स्त्री थी और हम प्रायः देर से, प्रार्थना शुरू हो जाने के बाद, पहुंचते थे। एक चीनी नौकर हमें अंधेरे हाल से प्रार्थना के कमरे में ले जाता था। वह सदा अंधेरा होता था और हम टांगों और झुकी आकृतियों से टकराते-लड़खड़ाते अन्त में ऐसी जगह पहुंच जाते जहां घुटने टेक सकें। वहां हम उतनी देर रहते थे जितनी देर मिस ज्यूएल को फुरसत होती। मैं वितृष्णा से कठोर हुई, अंधेरे में पवित्र आत्मा की उपस्थिति के लिए प्रार्थना करती वाणियां, और अनकहे पापों की क्षमा के लिए मार्मिक गिड़गिड़ाहट सुनती थी जिसके साथ कराहों और आहों की आवाज़ आती थी। यह अनुभव मेरे लिए इतना असह्य हो गया कि मैंने अपनी मां को घर आने की इजाज़त देने के लिए कहा। धर्म से मेरा परिचय था, पर उसके इस काले रूप से—इस गिड़गिड़ाहट वाले भावोद्गार, शारीरिक अस्तव्यस्तता, एक तरह के घृणाजनक विलास-भोग से नहीं था, जिसे मैं नहीं समझ पाती थी। इससे मेरी स्वस्थ सहज प्रवृत्ति विद्रोह करती थी। मेरे पिता के मकान में धर्म एक सामान्य कार्य था जो सिद्धांत तथा आचरण का मेल था और वह संगीत के साथ होता था। मेरी मां की बहुत अच्छी सशक्त स्पष्ट ऊंची आवाज़ थी जो अच्छी सधी हुई थी और दिन में किसी समय भी वह न केवल अच्छे धार्मिक गीत बल्कि महान् कलाकारों की संगीत-रचनाएं और भव्य चर्च-संगीत गाने लगती थी। यह सच है कि मेरे पिता के उपदेश पण्डिताऊ शुष्कता की ओर झुके होते थे, पर फिर भी उनमें नरक की कोई चर्चा नहीं होती थी। बच्चों के नरक में जाने का विचार (मुझे कहते प्रसन्नता होती है) आज सब ईसाई छोड़ चुके हैं, पर उन दिनों यह विचार सामान्य सिद्धांत का भाग था। किन्तु मेरे पिता रूढ़ धर्म के अविश्वासी थे और उसे सहन न कर सकते थे, और मेरी मां, जिसके चार सुन्दर छोटे-छोटे बच्चे नष्ट हो गए थे, किसी बच्चे के नरक में जाने की बात सुनते ही गुस्से से भर जाती थी। मैंने उसे तरुण मिशनरी माताओं को मरे बच्चे की लाश के पास सांत्वना देते सुना था। 'तुम्हारा बच्चा स्वर्ग

में है'. वह कहती थी, 'नर्क में कोई बच्चा नहीं है, एक भी नहीं; वे सब परम पिता ईश्वर के सिंहासन के चारों ओर इकट्ठे हो गए हैं और जब वे पहली बार वहां आते हैं, जब उन्हें स्वर्ग अपरिचित-सा लगता है, तब ईसा उन्हें अपनी गोद में ले लेता है।' अपने तीन बच्चों की इकट्ठी कब्र पर, जो मेरे जन्म से पहले पैदा हुए थे, उसने उनके नाम खुदवाकर बाइबिल की यह पंक्ति खुदवा दी थी, 'उस ईश्वर ने उन्हें मेमनों की तरह उठाकर अपनी छाती पर रख लिया'; और जब तक वह वहां रही, तब तक उसके सोने के कमरे में उसकी चारपाई के सामने एक चित्र टंगा रहा जिससे वह उसे रोज़ रात को और सवेरे देख सके, जिनमें एक गड़रिया अपनी भेड़ों के साथ था और उसकी गोद में छोटे-छोटे मेमने थे।

जब मैंने अपने माता-पिता को अंधेरे कमरों और अजीबो-गरीब प्रार्थनाओं की बात लिखी, तब वे चिन्तित हुए और उन्होंने मेरी मुख्याध्यापिका को लिखा कि मुझे किसी और चर्च की प्रार्थना में न ले जाया जाए : केवल रविवार को कम्युनिटी चर्च में ले जाया जाए, जहां श्री डारवेंट पर—जो एक नाटे-मोटे छोटे-से अंग्रेज़ थे और जिनका गंजा गोल सिर था और गर्दन नदारद थी—हानिरहित, हार्दिक और संक्षिप्त उपदेश देने का भरोसा किया जा सकता था। इस प्रकार मेरा एक बोझ तो हटा।

पर मिस ज्यूएल ने मेरा पिण्ड नहीं छोड़ा। वह यह समझती थी कि मेरी आयु इतनी काफी है कि मैं उसके शुभ कार्यों में कुछ हिस्सा ले सकूं इसलिए जब वह और कहीं व्यस्त होती तब मैं आशाद्वार—उन चीनी दास लड़कियों के लिए, जिनकी मालकिनें क्रूर होती थीं, एक आश्रम—में उसका स्थान लेती थी। यह सच-मुच बड़ा बढ़िया काम था और नागरिक अधिकारी इसमें पूरी सहायता देते थे, यहां तक कि दासों को उनके स्वामियों से मुक्त कराने में कानूनी मदद भी देते थे। मुझे उन लड़कियों को सीने, बुनने और काढ़ने का काम सिखाना होता था। यह सब काम मुझे नापसन्द थे, पर मेरी सुन्दर शिक्षा पाई हुई माता ने मुझे ये अच्छी तरह करने सिखाए थे। उसका विश्वास था कि घर की कलाओं में दक्षता स्त्री की शिक्षा का हर अवस्था में एक हिस्सा है। वह मुझसे बार-बार कहा करती थी, 'अगर तुम्हारे पास हमेशा नौकर हों तो तुम्हें यह पता होना चाहिए कि उनको काम ठीक-ठीक करने की शिक्षा कैसे दी जाए और घर की बातें सीखने का स्थान घर ही है।'

और बहुत सी बातों की तरह उसका यह विचार भी ठीक था। जो कुछ

उसने मुझे सिखाया था उसपर मुझे कभी अफसोस नहीं हुआ हालांकि जिस समय मुझे बढ़िया क्रोशिया और गोटे का काम तथा भोजन बनाना और बढ़िया किस्म की गरम रोटियां और केक तैयार करना सीखना पड़ता था, उस समय मैं बहुत शिकायत करती थी। ये स्त्रियों की कलाएं मैं अपनी लड़कियों को न सिखा सकी। मेरी मां को मेरे मुकाबले में एक सुविधा थी—हम जब अमरीकन भोजन करना चाहते, तब वह हमें बनाना पड़ता था। आज संयुक्तराज्य अमरीका में तरुण स्त्रियां बनी-बनाई हुई बड़ी-बड़ी अद्भुत वस्तुएं खरीद सकती हैं जिन्हें खाने योग्य बनाने के लिए केवल चूल्हे या भट्टी में सरका देना काफी होगा। फलतः उन्हें यह समझना कठिन हो गया कि वे एक लाभ से वंचित हो गई हैं और वह लाभ अज्ञात किसानों की लड़कियों तक पहुंच गया है। एक समय मेरे यहां पेंसिलवानिया की एक छोटी नौक-रानी थी, जो न भोजन बना सकती थी और न सीना जानती थी और वह यह अनुभव न करती थी कि अपने इस अज्ञान के कारण वह पत्नी या माता बनने के लिए ज़रा भी अनुपयुक्त है। वह कहती थी कि भोजन तथा कपड़े मैं बने-बनाए खरीद लूंगी। और जब मैं उससे कहती कि मुझे तुम्हारे ये सब कार्य न जानने पर अफसोस होता है, तब वह हंसती थी।

पर आशाद्वार की चीनी दास लड़कियां सीखने को उत्सुक रहती थीं। वे दुःखी बालिकाएं थीं जो किसी अकाल के समय छोटी आयु में खरीद ली गई थीं और किसी सम्पन्न घर में सेवा करने के लिए पाल ली गई थीं। हमारे पास केवल दुष्ट घरों से आई हुई लड़कियां ही थीं क्योंकि दयालु परिवारों में दास लड़कियों से बहुत अच्छा—पुत्री से कुछ कम पर वेतनभोगी नौकर से कुछ अच्छा—व्यवहार होता था; और अठारह वर्ष की आयु में लड़की को स्वतन्त्र कर दिया जाता था और उसका विवाह नीची जाति के किसी भलेमानस से कर दिया जाता था। पर जो लड़कियां भाग आती थीं ये वे लड़कियां थीं जिन्हें उनकी क्रूर और बददिमाग मालकिनें कोड़ों से पीटती थीं और सिगारों और सिगरेटों के जलते कोयलों से जलाती थीं और जिन्हें परिवार में बढ़ते हुए सब किशोर पुत्र और कामुक मालिक तथा उनके पुरुष नौकर भ्रष्ट करते थे। ऐसी दासता पुराने समय से चली आती थी, और शायद किसीका भी इसमें पूरा दोष नहीं था। अकाल के समय भूखे मरते लाचार परिवार न केवल अपने लिए थोड़ा-सा भोजन खरीदने के लिए, बल्कि प्रायः अपनी लड़की का जीवन बचाने के लिए, उन्हें बेच देते थे। यह ज़्यादा अच्छा मालूम होता था

कि बालक को निश्चय रूप से भूखा मरने देने के बजाय किसी सम्पन्न और स्नेह की आशा पैदा करने वाले परिवार में चला जाने दिया जाए। लड़के के बजाय लड़की बेची जाती थी क्योंकि परिवार अब भी किसी न किसी तरह बच जाने की आशा करता था और परिवार का नाम चलाने के लिए सम्भव हो तो लड़के को बचाया जाए। यह तर्क किया जाता था कि लड़की को तो आज या कल, जब उसका विवाह हो जाएगा, हर सूरत में जाना ही पड़ेगा। चीनी साहित्य में सुन्दर दास लड़की को केन्द्र बनाकर, जो परिवार की रक्षक और प्यारी है, अनेक रोमाण्टिक और सुन्दर प्रेमकहानियां लिखी गई हैं। और इनसे शायद भूखे मरते परिवार को अपनी लड़की बेचते समय कुछ और आशा बढ़ जाती थी। हमेशा लड़की ही नहीं बेची जाती थी : यदि लड़कियां न होतीं या यदि सब लड़कियां बेची जा चुकी होतीं और एक से अधिक लड़के होते तो कभी-कभी छोटा लड़का भी किसी धनी परिवार को बेच दिया जाता था, पर लड़की की कीमत अच्छी उठती थी। नौकर के रूप में लड़का कम उपयोगी होता था।

मैंने बताया कि यह एक पुरानी परिपाटी थी और मानव-जीवन की सब परिपाटियों की तरह सब कुछ सम्बन्धित व्यक्तियों की अच्छाई-बुराई पर निर्भर था। संसार का अच्छे से अच्छा शासन, अच्छे से अच्छा धर्म और किसी जाति की अच्छी से अच्छी परम्पराएं, उनको प्रयोग में लाने वाले नर-नारियों की अच्छाई या बुराई निर्भर पर होती हैं।

आशाद्वार में मैंने पाप का भयंकर फल, और मानवीय तथा निश्चित रूप से एशियाई जीवन का एक और पहलू देखा। क्योंकि मैं चीनी भाषा अपनी मातृभाषा की तरह बालती थी, इसलिए दास लड़कियां जब कि वे केवल शांगहाई की बोली ही न जानती हों, मुझसे खुलकर बातचीत कर सकती थीं और बेफिक्र रहती थीं। उनमें से अधिकतर मण्डारिन बोल सकती थीं क्योंकि वे उत्तरी परिवारों की थीं जो शरणार्थियों के रूप में दक्षिण की ओर आ गए थे। पर अकाल के समय भी कुछ पुरुष तथा स्त्रियां बच्चों की तलाश में जान-बूझकर उत्तर की ओर चले जाते थे ताकि बड़े नगरों में उन बच्चों को नफे से बेचा जा सके।

मिस ज्यूएल के स्कूल में कई बार रात को मेरी नींद खुल जाती थी और मैं अपने छोटे-से कमरे में इन तरुण लड़कियों द्वारा बताई गई कहानियों को सोचा करती थी और यह सोचकर मुझे रोना आ जाता था कि दुनिया में ऐसा पाप भी

हो सकता है। इस तरह का दुःख या तो हृदय को आत्म-संरक्षण के लिए अधिक कड़ा कर देता और या इससे दिल बहुत कोमल हो जाता था। मेरे मामले में शायद अंशतः दोनों बातें थीं। मुझे शुरू में ही यह तथ्य मान लेना पड़ा कि ऐसे लोग पुरुष तथा स्त्री दोनों ही होते हैं जो असाध्य और अटल रूप से क्रूर और बदमाश होते हैं, पर मजबूरन यह निष्कर्ष स्वीकार कर लेने पर मेरी आत्मा ने प्रतिशोध के रूप में यह भीषण संकल्प किया कि जहां कहीं मैं बुराई और क्रूरता को कार्य करता देखूंगी, वहीं इनसे पीड़ित व्यक्तियों को मुक्त कराने के लिए अपना पूरा बल लगा दूंगी। यह संकल्प सारे जीवन मेरे साथ रहा है और इस आचरण के लिए अंतःकरण बन गया है। इसके अनुसार काम करना सदा आसान नहीं रहा है, क्योंकि मैं स्वभाव से आक्रामक या पहल करने वाली व्यक्ति नहीं हूं। एक बार भारत में मैं ट्रेन से कलकत्ते से बम्बई जा रही थी। मुझसे अगले डिब्बे में एक अंग्रेज़ कैप्टन था जो मालूम होता था कि भारतीयों से विशेष प्रबल नफरत करता था। जब गाड़ी रुकी, तब शोर मचाते भिखारी और चिल्लाते खोमचे वाले सदा की तरह खिड़कियों के चारों ओर इकट्ठे हुए। यद्यपि गर्मी के दिन में इस प्रकार चारों ओर से घिर जाना अच्छा न लगता था, फिर भी ये लोग भोजन जुटाने के लिए दो-चार आने कमाने की कोशिश कर रहे थे। पर कैप्टन इस तर्क की तरफ नहीं गया। उसके पास चमड़े का चाबुक था ; वह प्लेटफार्म पर दौड़ा और उसने उससे अध-नंगे भारतीयों को ज़ोर-ज़ोर से पीटा।

यह एक भयंकर दृश्य था। फिर भी यदि मैंने वर्षों पहले आशाद्वार में यह संकल्प न किया होता तो शायद ही मुझे उससे बातचीत करने का साहस हुआ होता। मुझे इस घटना से बड़ी घृणा हुई इसलिए मैं उससे बोली।

'इतनी क्रूरता क्यों करते हो?' मैंने ज़ोर देकर कहा, 'उन्होंने तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ा और वे केवल कुछ पैसे पाने की कोशिश कर रहे हैं। इसपर कोई कानूनी रोक नहीं है।'

वह क्षणभर अवाक् रह गया और फिर उसने अपने कंधे हिलाए। 'गंदे जानवर!'

मुझे गुस्सा आ गया। 'किसी दिन,' मैंने कहा, 'अन्य गोरे नर-नारियों और बच्चों को, जो बिलकुल निर्दोष होंगे, आपके आज के काम का दण्ड भुगतना पड़ेगा।'

उसने फिर कंधे हिलाए और फिर चला गया। मैं इतनी मूर्ख नहीं हूं कि यह

सोचने लगूं कि वह बदल गया क्योंकि एक बार सांचा बन जाने के बाद लोग मुश्किल से ही बदलते हैं और वह जवानी पार कर चुका था। पर वही गम्भीर और कठोर भाव, जो किसी गोरे के अन्याय करने पर मैं चीनियों के चेहरों पर देखा करती थी, भारतीयों के सांवले चेहरे में कभी नहीं भूली हूं और दुःखदायी बात यह है कि आज हम वही फल पा रहे हैं। आज सवेरे के अखबार में मैंने एशियाई कैंपों में अमरीकन युद्धबन्दियों से किए गए क्रूर व्यवहार की बात पढ़ी। मेरा ख्याल है कि इसमें कुछ तो जान-बूझकर की गई क्रूरता नहीं है, बल्कि केवल रहन-सहन के स्तरों का अन्तर है। औसत चीनी मज़दूर का रोज़ का खाना किसी सर्वोत्तम भोजन के अभ्यस्त स्वस्थ अमरीकन लड़के को करीब-करीब भुखमरी के आसपास लगेगा। और भारी बोझ लेकर ऊबड़-खाबड़ सड़कों पर मीलों चलना बहुत सारे एशिया-वासियों को अपनी जीविका के वास्ते रोज़ करना पड़ता है। यदि वह रोगी हो तो उसके मन में डाक्टर की या अस्पताल जाने की बात न आएगी क्योंकि हज़ार में एक मामले में यह सम्भावना है कि वहां डाक्टर या अस्पताल होगा। इसलिए कुछ क्रूरता तो गरीबी और अमीरी का अनिवार्य अन्तर है, पर इसका दूसरा बुरा हिस्सा निःसन्देह वस्तुतः क्रूरता है, जो सहज-प्रेरित और साथ ही जानते-बूझते हैं, और एशिया वाला अमरीकन को इसलिए सज़ा दे रहा है क्योंकि वह गोरा आदमी है और अब उसके पंजे में फंसा है: अतीत काल में गोरे लोग एशिया वालों से बड़ी क्रूरता करते रहे हैं। मुट्ठी भर मिशनरियों द्वारा किए गए थोड़े-से अच्छे कामों से पिछला शताब्दियों का इतिहास नहीं बदल जाता। मुझे जब से होश आई है, तब से जीवन भर यह भयंकर कल्पना होती रही है कि किसी दिन मेरा कोई पुत्र किसी चीनी के साथ आमने-सामने लड़ने के लिए खड़ा होगा और चीनी, जो अपनी जाति का इतिहास जानता है, उस निर्दोष अमरीकन से बदला लेगा। दूसरे अमरीकनों के पुत्रों से यह पहले हो चुका है और मेरे अपने पुत्र से आगे हो सकता है।

बिलिंग्स, मौंटाना

यह अप-टू-डेट पश्चिमी नगर एक सूत्र में पिरोई हुई मणियों की तरह—जैसे अनेक पश्चिमी नगर रेलमार्ग के किनारे बने हुए हैं वैसे ही—बना है। मैं अभी सड़क के किनारे की एक बड़ी आरामदेह सराय में अपने बिस्तर के सिरहाने से

पचास फुट से भी कम दूरी पर चलती कुछ कारों और एक इंजिन के शोर से गहरी नींद से उठ बैठी हूं। जब पलंग हिलना बन्द हुआ और धूल बैठ गई, तब मैं पड़ी-पड़ी यह सोचने लगी कि यहां रात को होने वाले शोर में और उस शोर में जो मैं अपने दूसरे जगत् में सुना करती थी, क्या अन्तर है। पेन्सिलवानिया में हमारे फार्म वाले घर में मकान की आंवाजें होती हैं—किसी ठण्ड वाली रात को पुराने शहतीरों की करकराहट, या बसंत में छोटे नवजात मुर्गियों के बच्चों की चीं-चीं फिर गर्मियों में तालाब में मेंढकों की टर्र-टर्र और बाद में शरद् ऋतु में झिल्ली और झींगुरों की झंकार। चांदनी रात में कुत्ते भौंकते हैं, और कभी-कभी सड़क के परली ओर गरमाई हुई गाय रंभाती है और उसे सुबह तक प्रतीक्षा करनी पड़ती है जब किसान आएगा और उसे सांड के पास ले जाएगा। अथवा, गहरी निस्तब्धता में—और यह आवाज़ मुझे नापसन्द है क्योंकि इससे मैं सदा डर जाती हूं—कोई विमान रात को चीरता चला जाता है, बहुत ही नीचे; मुझे लगता है कि यह सदा बहुत ही नीचे होता है और मैं घड़ी-घड़ी यह सोचा करती हूं कि चालक किस काम से जा रहा होगा और वह काम रात में ही करना क्यों ज़रूरी है; और काले आसमान को चीरते चले जाना कैसा लगता होगा जबकि वह अपनी ही चेतना के स्तंभों पर खड़ा है: आसमान और धरती के बीच में अपने सिवाय कुछ भी नहीं है; और उसे कैसा भयंकर सूनापन लगता होगा!

यहां पश्चिम में रेलगाड़ी अपनी शोकपूर्ण चीख निकालती तेज़ी से पास से गुज़र जाती है और मुझे नहीं मालूम कि इन पश्चिमी गाड़ियों में गुज़रते हुए ऐसी उदासी भरी लम्बी गूजती सीटी क्यों बजती है—बिल्कुल आदमी की सी चीख, ऐसी तीखी और खोखली। इससे मुझे और स्थानों में रात को सुनी मनुष्य की आवाज़ों का ध्यान आ जाता है: किसी भारतीय गांव में गाती हुई आवाज़ों की शोकपूर्ण एकरसता याद आ जाती है, और मैं यह भी नहीं जानती कि वह गीत क्या है या यह रात में क्यों इतना गाया जाता है। थोड़े-से स्वर बारम्बार दोहराए जाते हैं, पतले और ऊंचे किए जाते हैं और अन्त में सुनने वाले का दिल भी इससे बिंध जाता है और इसमें लहराने लगता है पर जो आवाज़ मुझे स्पष्ट रूप से याद है वह चीनी स्त्री का, किसी माता का, क्रंदन है—किसी भी माता का, जिसका बालक मर रहा था। वह समझती थी कि उसकी आत्मा घर से बाहर भाग रही है, इसलिए वह बच्चे का छोटा-सा कोट पकड़ लेती है और एक लैम्प जला लेती है तथा

सड़क पर उदासी भरे करुण स्वर में 'शा-लाई शा-लाई' पुकारती हुई इधर-उधर दौड़ती है। इसका अर्थ था 'बेटे, लौट आ, लौट आ!' मैंने कितनी ही बार यह पुकार सुनी है और सदा दिल में चुभन महसूस की है। अपने आरामदेह बिस्तर पर और अपनी छत के नीचे सुरक्षित पड़ी हुई मैं उस दु:खी परिवार के मरे या मरणासन्न पड़े छोटे बच्चे को बिल्कुल आंखों के आगे देख सकती थी और संसार की सारी पुकार से भी वह आत्मा फिर वापिस न आ सकती थी।

शांगहाई की गलियों में अपनी और ही तरह की आवाज़ें थीं और मिस ज्यूएल के स्कूल में प्राय: जागती हुई मैं बहुत रात में सड़क पर सरकते हुए किसी रिक्शे की खच-खच और लोगों के पैरों की द्रुत पदध्वनि सुनती थी, और आवाज़ों की पुकार: कभी-कभी लड़कियों की हंसी या कोई प्रसन्नचित्त अंग्रेज़ी आवाज़, कोई आदमी किसीको विदा करता हुआ। मध्य रात्रि में मैं कपड़े के जूते पहने हुए चीनी पैरों की, जो पटरियों पर चल रहे होते थे, अन्तहीन सपसपाहट सुनती थी और यह सोचती थी कि ये कहां जा रहे हैं—ये कभी भी घर लौटते हुए क्यों नहीं मालूम होते, क्यों सदा आगे ही आगे बढ़ते मालूम होते हैं?

जो विचित्र वर्ष मैंने मिस ज्यूएल के स्कूल में बिताया उसकी बसंत ऋतु में वह मुझे अपने एक और पुण्यकार्य में ले गई। एक मकान में—जिसका नाम मुझे याद नहीं आता और वह कहां था यह भी मैं भूल गई—लाचार गोरी औरतों के लिए एक आश्रम था: इनमें से अधिकतर औरतें बुढ़ापे या बीमारी से काम करने में असमर्थ वेश्याएं थीं, पर उनमें से कुछ अब भी जवान थीं और बच्चों वाली भी थीं। इस स्थान को देखकर मुझे बड़ी घृणा, भय और असली आतंक अनुभव हुआ। यहां अपने जीवन में पहली बार मैंने अपनी जाति के लोगों को, और उनमें भी औरतों को, गरीबी, बीमारी और असहायता में इतना नीचे गया हुआ देखा कि वे आशाद्वार की चीनी दास लड़कियों से भी गई-गुज़री हालत में थीं। दास लड़कियों पर मुझे दया आती थी क्योंकि वे अपनी मर्ज़ी से दास न बनी थीं पर इन गोरी औरतों की, जो प्रत्येक पश्चिमी राष्ट्र की थीं, बात मेरी समझ में नहीं आती थी। फ्रेंच, अंग्रेज़, जर्मन, बेलजियम, अमरीकन—इन्होंने अपने-आपको ऐसी दुर्गति में कैसे आने दिया और पहली बार पांव कहां फिसला और उन्हें फिर दोषहीन कैसे किया जा सकता है? मेरा ख्याल है कि मेरी घृणा साफ प्रकट हो गई होगी क्योंकि जब मैं पास पहुंचती, तब औरतें चुप हो जातीं; यद्यपि मैंने खेल खेलकर, किताबें

सुनाकर तथा उन्हें सिलाई सिखाकर अपनी भरसक कोशिश की, पर हमारे बीच कभी कोई आन्तरिकता नहीं हो सकी। यह असम्भव थी। मेरे पास इसके लिए कोई पृष्ठभूमि न थी और न वे मुझे समझ पाती थीं।

जब बसंत की छुट्टियों में मैं घर गई तब मेरी मां ने कहा कि तू बड़ी पीली तथा कमज़ोर हो गई है। मैंने उसे मिस ज्यूएल के सब कार्यों और उनमें अपने हिस्से की बात बताई, तब उसने अपने होंठ भींच लिए और उसकी काली आंखें गुस्से से चमक उठीं। इससे मैं समझ गई कि मुझे फिर बोर्डिंग स्कूल नहीं भेजा जाएगा। मैं काफी सीख चुकी थी। उस छोटे-से साल में मैंने न केवल शांगहाई के छिपे जगत् का, बल्कि न्यू इंग्लैंड की औरतों–अपनी मुख्याध्यापिका और अन्य अध्यापिकाओं के बारे में भी मानवीय ज्ञान इकट्ठा कर लिया था: वह स्कौच संगीत अध्यापिका, जिसकी उस साल एक भले नौजवान से सगाई हुई थी और जिसका निर्दोष रोमान्स सुखदायक था; वह सांवली और भावुक स्त्री जो हमें रेखागणित पढ़ाती थी और जिसे मैं उसके वर्षों बाद तक भी न समझ सकी; और एक और अध्यापिका—याद नहीं आता कि वह मुझे क्या पढ़ाती थी, पर लगता है जैसे लेटिन पढ़ाती थी, जिसने बाद में विवाह कर लिया और मज़ेदार अमरीकन लेखक जोन एस. पी. की मां बनी। और जिनकी मुझे याद है, उनमें हमारी अधिष्ठाता (मैट्रन) भी थी। वह कद्दावर बड़ी उमर की अंग्रेज़ स्त्री, जिसके नकली दांत बोलते समय आगे-पीछे सरकते थे, पर जिसे हम सब प्यार करते थे, क्योंकि उसमें निर्णय-बुद्धि न थी और जब वह इंचार्ज होती तब वह स्कूल की किसी भी लड़की की तरह बुद्धू होती और उसे चाय के समय अतिरिक्त रोटी तथा मक्खन के लिए सदा गिनना पड़ता था।

अपने साथ पढ़ने वालों के साथ की मुझे और भी कम याद है, और जिनकी याद है भी, उनकी मूर्खतापूर्ण कारणों से ही याद है, जैसे वह मिशनरी लड़का, जो शुक्रवार को लंच में सदा मिलने वाली सिकी कार्प मछली की आंखें खा जाता था। मुझे तब भी यकीन था और अब भी है कि उसे मछली की आंखों से उतनी ही घृणा थी जितनी हममें से किसी और को, पर वह हम सबको कांपते हुए देखने और चिल्लाते सुनने के आनन्द का लोभ संवरण नहीं कर सकता था और इसीलिए वह उन्हें खा लेता था। फिर भी बड़ा होकर वह बहुत अच्छा अमरीकन आदमी बना, मेरे ख्याल से कलाकार, जिसने अपने देश में व्यापारोपयोगी कला

में काफी अच्छा काम किया है।

शायद मुझे सबसे अधिक याद एक प्रसिद्ध अमरीकन की अधचीनी लड़की की है जिसके पिता ने अपनी अंग्रेज प्रेमिका के दूसरे आदमी से विवाह कर लेने पर एक महान् विश्वविद्यालय में तरुण चीनी लड़कों की शिक्षा के काम में अपने को झोंक दिया था। और अपने काम में सहायता के लिए उसने एक चीनी महिला से विवाह कर लिया था, जिसका रूप तो मामूली था, पर चरित्र ऊंचा था। उनके बच्चों में सब लड़के ही थे, केवल एक लड़की थी। सब लड़के अपने पिता की तरह सुन्दर थे पर लड़की अपनी चीनी मां की तरह मामूली रूप वाली थी। वह लड़की स्वयं मुझे अपने बारे में बात किया करती थी और यह सोचा करती थी कि रूप-परिवर्तन होने के कारण उसका क्या होगा; क्योंकि उसे डर था कि कोई गोरा आदमी उससे विवाह न करेगा और किसी चीनी से वह विवाह करना न चाहती थी। मेरा खयाल है कि उसने कभी विवाह नहीं किया, पर मैं नहीं जानती कि वह जीवित रही या मर गई।

मैं घर आकर प्रसन्न थी, यद्यपि कुछ समय अकेलापन महसूस हुआ पर अधिक दिन नहीं, क्योंकि जब गर्मियां आईं, तब मेरे माता-पिता मुझे अमरीका ले जाकर कालेज में दाखिल करने वाले थे। मैं वापस आऊंगी या नहीं? मुझे कुछ पता न था। वे कुछ महीने एक तरह की मधुर उदासी मे बीत गए जिनमे मैं यही सोचा करती थी कि हरएक दिन चीन से एक तरह की अन्तिम विदा है।

और मैंने उस आवाज का जिक्र नहीं किया जो रात को मुझे सबसे अधिक पसन्द थी और शायद उसकी स्मृति यहीं आई है। यह हमारी पहाड़ी से आधा मील नीचे एक बौद्ध मन्दिर में एक पीठिका पर खड़े बहुत बड़े कांसे के घण्टे की आवाज थी। जहां तक मुझे याद है, मैंने इसे रात में बहुत बार बजते नहीं सुना। पर कुछ निश्चित समयों पर संगीत की चारों ओर फैलती हुई मधुर ध्वनि अंधकार में गूजने लगती थी। जब मैं छोटी थी, तब डर जाया करती थी। उस ध्वनि में उदासी थी और उससे मुझे अकेलापन महसूस होने लगता था, पर अपने बचपन के वर्षों में, जब मैं बिल्कुल आज़ाद थी—इतनी आज़ाद कि कोई गोरा बालक न पहले हुआ होगा और न पीछे—मैं दिन के समय अनेक बार मन्दिर गई थी और मैंने स्वयं देखा था कि किस तरह एक छोटा-सा कृपापूर्ण बूढा भिक्षु उस घण्टे को दोनों हाथों में एक लकड़ी की मूंगरी पकड़कर–जिसके सिरे पर एक डण्डी और कपड़ा लगे थे–

घण्टे पर चोट करता था। वह अपनी बांहें फैलाकर इस लटकते हुए घण्टे पर इस डण्डे को गिरने देता था और महान् शुद्ध ध्वनि फैलने लगती थी।

मुझे घर की अन्तिम रात याद है जिसमें सामान बक्सों में बन्द किया गया। मुझे नींद नहीं आई और जब घर से चलते हुए प्रातःकाल के समय मैंने घण्टे का अन्तिम स्वर बजता सुना, तब मुझे एक अजीब पूर्व-ज्ञान हुआ कि मैं इसे फिर कभी नही सुनूगी और वह मैंने फिर कभी सुना भी नहीं।

सौक सैंटर, मिनेसोटा

पहले इस नगर में सिनक्लेयर लेविस रहता था और उसके कारण ही हम घर का सीधा रास्ता छोड़कर एक ओर मुड़ गए। मैंने उसे केवल एक बार देखा था, और वह न्यूयार्क में पी. ई. एन. क्लब (लेखक-क्लब) द्वारा १९३८ में साहित्य का नोबल पुरस्कार मिलने के अवसर पर दिए गए भोज में देखा था। मैं वहां प्रधान अतिथि के रूप में गई थी। पर मैं उस रात जितनी दुर्बलहृदय और उत्साहहीन हो रही थी, उतना वहां कभी कोई अतिथि नहीं आया होगा। इस मानसिक स्थिति का कारण था: मेरा बचपन और शायद अंशतः आदरणीय श्री कुंग—जो शायद यह नहीं जान सके थे कि तब भी मैं कहानियां, किस्से कहने वाली, उपन्यास-लेखक बनना चाहती थी, यद्यपि मैं यह न जानती थी कि इस ध्येय पर मैं कैसे पहुंचूगी। आदमी जिस चीज को पसन्द करता है, वही बनना चाहता है। मुझे लोगों के बारे में कहानियां सुनना सबसे अधिक पसन्द था। मुझे लगता है कि मैं बालक क्या बला थी, जो सदा लोगों के बारे में, सोचती थी और यह जानने को उत्सुक रहती थी कि वे हमें जैसे दिखाई देते हैं वैसे क्यों हैं। मैंने सात वर्ष की आयु में चार्लस डिकेस पढ़ना शुरू किया था और उसका स्वाभाविक प्रभाव पड़ा। इससे बाल-कल्पना सजीव हो जाती है और मनुष्यों के बारे में विस्मय पैदा हो जाता है। मैंने डिकेस की पहली पुस्तक 'ओलिवर ट्विस्ट' पढ़ी थी जो मैंने जल्दी ही दो बार सारी पढ़ डाली। इसके बाद मैं अपनी बैठक की अलमारी में रखी हुई कोई भी गहरे नीले रंग की कपड़े की जिल्द वाली पुस्तक पढ़ने लगी। मेरी मां मेरी तन्मयता देखकर चिन्तित हुई, विशेष रूप से इस कारण कि उसने स्वयं डिकेंस के प्रति सहज प्रेम का प्रलोभन रोका था—रोका इसलिए था क्योंकि उसके बचपन के दिनों में वह अश्लील और 'नीचे

वर्गों' का उपन्यासकार समझा जाता था। मेरे लिए ऐसी कोई सहज प्रेरणा नहीं थी जो मुझे परेशानी करती। मैं तीसरा पहर एक के बाद दूसरी किताब पढ़कर बिताती थी। गर्मियों में बहुत बड़े ऐल्म पेड़ के मुड़े हुए तने पर बैठकर और सर्दियों में अपने पीछे के बरामदे के धूप वाले कोने में बैठकर दस वर्ष तक मैंने हर वर्ष डिकेंस सारे का सारा पढ़ा। 'पिकविक पेपर्ज़' पढ़कर मैं अकेली ही ज़ोर-ज़ोर से हंसती और लिटिल नेल की मृत्यु तथा हार्ड टाइम्ज़ की क्रूरता पर चुपचाप रोती। सिसी जूकेस सदा मेरा ही एक हिस्सा बनकर मेरे साथ रही है क्योंकि उसने उस समय चाहे शर्म से लड़खड़ाते हुए ही, पर समझदारी से उत्तर दिया था, जब टामस ग्रेड-ग्राइंड ने उससे यह पूछा था कि क्या प्रति हज़ार सात मृत्यु संख्या अधिक है और उसका उत्तर यह था कि यह अधिक ही है क्योंकि जो सात मरे, उनके लिए तो यह उतनी ही कठोर है जितनी अधिक मरते तब होती। टामस ग्रेड ग्राइंड ने चीखकर कहा था कि तू मूर्ख है, पर मैं सदा यह जानती रही हूं कि उसका कहना सही था, और जीवन और मानवता को जितना अधिक देखती हूं, उतना ही अधिक मुझे निश्चय होता जाता है कि उसका कथन नित्य सत्य था, और कि इस जगत् के टामस ग्रेड ग्राइंड ही मूर्ख हैं, सिसी जूकेसें नहीं।

बच्चों की पुस्तकें बड़ी थोड़ी होने और इसलिए बचपन में ही बड़ों के उपन्यास पढ़ने के लिए मजबूर होने का यह परिणाम हुआ कि दस वर्ष की होने से भी पहले मैंने उपन्यासकार बनने का निश्चय कर लिया। केवल श्री कुंग मेरे मन को भटका रहे थे। वे कन्फ्यूशियस मत के विद्वान् थे और चीन की इस प्राचीन उच्च-परम्परा में शिक्षित हुए थे कि कोई यशस्वी लेखक उपन्यास जैसी घटिया चीज़ नहीं लिखता। उन्होंने मुझे बताया था कि उपन्यासों को साहित्य नहीं माना जा सकता। उनकी रचना का उद्देश्य निकम्मे तथा अनपढ़ लोगों का अर्थात् उन व्यक्तियों का मनोरञ्जन करना होता है जो शुद्ध साहित्यिक शैली और नैतिक तथा दार्शनिक वस्तु ग्रहण नहीं कर सकते। यह निरुत्साहन मेरे सबसे अधिक निर्माण के वर्षों में मुझमें बना रहा और मेरे माता-पिता की धार्मिक भावनाओं से कुछ बढ़ भी गया जो उपन्यास पढ़ने को मेरी वक्त-कटाई समझते थे। सच पूछो तो मेरी मां और मैं मेरे सारे बचपन के दिनों में एक तरह का चोर और सिपाही जैसा खेल खेलते रहे थे, यद्यपि हममें से किसीने भी कभी इसका नाम नहीं लिया। वह मेरे पढ़ने के उपन्यास छिपा देती थी और मैं जब तक उन्हें पा न लेती तब तक ढूंढती रहती। मुझे याद नहीं

कि मेरे मन में उसके प्रति इसके कारण कभी दुर्भावना आई हो। वह बहुत अधिक स्नेहयोग्य और भली थी, और न वह कभी इस बात पर मुझपर गुस्सा करती दिखाई दी कि मै प्रायः सदा उसके छिपाने के स्थान ढूढ लेती थी। सारा काम हम दोनों चुपचाप ही करती थी। बडी होने पर मै इस बारे मे भूल गई और उसके बाद मेरे मन मे यह इच्छा रही है कि मै उससे यह पूछती कि वह पुस्तके ऐसे आसान स्थानो मे क्यो छिपाया करती थी पर वह बहुत जल्दी मर गई। मै उससे और भी बहुत से प्रश्न पूछना चाहती थी, पर पूछ न सकी और वह सदा के लिए चली गई।

इस सबका यह परिणाम हुआ कि मै इस भावना को लेकर ही बडी हुई कि उपन्यास लिखना कुछ घटिया काम है। निश्चय ही मैने कभी यह महसूस न किया कि उपन्यास साहित्य है, और मन ही मन मुझे उनके पढने मे अपनी दिलचस्पी बनी रहने पर शर्म मालूम होती थी। जब 'दी गुड अर्थ' ने अपना रूप ग्रहण किया, तब उस समय मुझसे अधिक आश्चर्य किसीको न हुआ होगा और मुझे यह सकोच हो रहा था कि साहित्य के जगत् मे मेरा पहला पदार्पण उपन्यास से हो रहा है। मुझे याद है कि जब उस पुस्तक के प्रकाशक ने न्यूयार्क मे मुझे एक बडा भारी भोज दिया, जिसमे अनेक प्रसिद्ध व्यक्ति उपस्थित थे जिनके नाम मैने दूर से ही सुने थे। वहा जब उसने मुझसे कुछ भाषण करने को कहा, तब चीन के प्राचीन उपन्यासकार शिह नाईआन के शब्दो मे ही मैने अपनी बात रखी। जिनके सकलन और मौलिक लेखो वाली उत्कृष्टतम रचनाओ का अनुवाद 'आल मेन आर ब्रदर्स' नाम से मैने तभी समाप्त किया था। यह चीनी उपन्यासकार भी अपने साथी विद्वानो के सम्मुख अपनी तुच्छता अनुभव करता था क्योकि उसका विस्तृत कार्य एक तरह सग्रहात्मक उपन्यास ही था और उसकी भावनाओ को ग्रहण करते हुए मैने उसकी पुस्तक की भूमिका को ही अपना भाषण बना डाला जिसमे उपन्यासो और उपन्यास-लेखक के प्रति चीनी विद्वानो का रुख स्पष्ट होता है। उसका अन्त इन वाक्यो से होता है 'मै यह कैसे जान सकता हू कि जो लोग मेरे बाद आएगे और मेरी पुस्तक पढेगे वे क्या सोचेगे। मै यह भी नही जानता कि मै स्वय किसी दूसरे रूप मे जन्म लेकर इस बारे मे क्या सोचूगा। मै यह भी नही जानता कि मै बाद मे इस पुस्तक को पढ भी सकता हू या नही। इसलिए मै क्यो परवाह करू ?'

इससे यह स्पष्ट होता है कि अपनी शक्तियो के बारे मे मेरा अपना क्या मामूली अन्दाजा था। इसलिए जब एक दिन १९३८ की शरद् ऋतु मे मैने यह सुना कि

मुझे उस वर्ष का साहित्य का नोबल पुरस्कार मिला है तो मैंने इसपर विश्वास न किया और तब तक विश्वास न कर सकी जब तक स्टाकहोम से टेलीफोन करने पर इसकी पुष्टि न हो गई। तब मेरी भावनाएं बड़ी मिली-जुली थीं। मैं यह न समझ सकी कि यह मुझे क्यों दिया जाए और मुझे यह भी याद है कि मेरे मुंह से यह निकला, 'ओह, अच्छा होता कि यह मेरी जगह थिओडोर ड्रेसर को दिया जाता।'

मैं सचमुच यह चाहती थी, क्योंकि मैं लेखक के रूप में ड्रेसर की बड़ी प्रशंसक थी। मैं उसे निरे उपन्यासकार से बहुत अधिक समझती थी। उसने अपने गहरे विचारशील और अन्य तरीके से असली अमरीकन वस्तु को पकड़ लिया था और यदि मैं बीस की आयु से पहले चार्ल्स डिकेंस पढ़ती थी तो बीस के बाद मैंने ड्रेसर पढ़ा और ड्रेसर के बाद सिनक्लेयर लेविस, और उन दोनों में से लेविस को अधिक प्रतिभावान् समझती थी, पर मै जानती थी कि ड्रेसर अधिक स्थायी होगा। और वह बूढ़ा हो रहा था जबकि मैं अभी जवान थी और भविष्य में पुरस्कार पा सकती थी।

यदि मुझे अपने बारे में शक थे तो वे मेरे साथी लेखकों ने, जो पुरुष थे, दुगुने और तिगुने कर दिए। इन आलोचनाओं का—और ये दो-चार ही न थीं—सार यह था कि कोई भी स्त्री, शायद वृद्ध लेखिका विला कैथर को छोड़कर, नोबल पुरस्कार की पात्र न थी और सब स्त्रियों में मैं इसकी सबसे कम पात्र थी, क्योंकि मेरी आयु कम थी, मैंने उल्लेखनीय पुस्तकें बहुत थोड़ी लिखी थीं और मुझे अमरीकन समझना भी मुश्किल था, क्योंकि मैं चीनियों के बारे में लिखती थी और उनके बहुत दूर के देहाती हिस्से में रही थी। मेरी जो पृष्ठभूमि और साहित्य की शिक्षा थी, उसके कारण मैं इन सब बातों से तुरन्त सहमत होने को तैयार थी, पर फिर भी मै यह न जानती थी कि पुरस्कार लेने से मैं कैसे इन्कार कर दूं, और फिर भी अधिक अभिमानी न समझी जाऊं। सचमुच परेशानी अनुभव करती हुई—क्योंकि मुझे यह देखकर बड़ा बुरा महसूस हो रहा था कि मेरे साथी लेखक मेरे इस चुनाव के विरुद्ध हैं—मैं यही कर सकती थी कि उदास भाव से स्टाकहोम जाने की तैयारी ही करूं और वह पुरस्कार ले लूं जो मुझे इतने अप्रत्याशित रूप से, और मुझे यह बिल्कुल भी पता न होते मिला था कि मुझे उम्मीदवार भी समझा गया है।

ईमानदारी की बात यह है कि मुझे यह निश्चय है कि अपने साथी लेखकों का आघात मुझपर जिस कठोरता से पड़ा उसका उन्हें पहले ध्यान भी न था। मैं वर्षों

तक एशिया के दूर स्थानों में और ऐसे लोगों में, जो मेरी दूसरों से मेल-जोल करने की लालसा को नहीं समझ सकते थे—विशेष रूप से अमरीकी लोग जो लेखक थे और जिनके साथ मैं उसी स्तर पर विचार-विनिमय कर सकती थी—बिल्कुल अकेली कार्य करती रही थी कि मैंने इस अमरीकन आलोचना को जो असल में मुझपर जल्दी आ पड़ी, बहुत अधिक महसूस किया। मैं यह स्वीकार करती हूं कि वर्षों बीत जाने पर भी मुझपर से उसका प्रभाव पूरी तरह नहीं हटा, जिसका यह परिणाम हुआ कि मैं अमरीकन लेखकों से बहुत नहीं घुल सकी, या शायद उनके साथ अपनी उचित जिम्मेदारियां नहीं संभाल सकी। उनमें जाने पर अब भी १६३८ की उस शरद् ऋतु की दुःखदायी स्मृतियां उमड़ आती हैं जब मैं अभी अपने देश में नई ही थी और अभी उत्सुकता और आशा से भरी हुई थी और जैसा कि अब सोचने पर मुझे पता चलता है, मैं अमरीकन साहित्य के सुनहरे क्षेत्र में अपने बड़ों के प्रति बेतुकी पूज्यबुद्धि रखती थी।

और इस सबसे मुझे सिनक्लेयर लेविस की, जो स्वयं साहित्य में नोबल-पुरस्कार-विजेता था, कृपापूर्ण स्मृति हो आती है। जैसा कि मैंने कहा, उससे मेरी मुलाकात पी. ई. एन. के एक भोज में हुई थी—मेरा ख्याल है कि मैं एक उसी भोज में गई हूं और वह मेरे पास बैठा था। मैं बहुत थोड़ा बोली क्योंकि इतने बड़े लेखक के सामने मुझे संकोच हो रहा था और जो कुछ वह कह रहा था, उसे मैंने सराहना की भावना से सुना। वह पहले ही उदास था और उसका भ्रम हट चुका था। मुझे उसके शब्दों में एक तरह की लापरवाही, ईमानदारी महसूस हुई। उसका सुन्दर चेहरा अधिकतर समय मुझसे परे की ओर रहा, इसलिए मुझे उसका भाषण बहुत ध्यान से सुनना पड़ा। एकाएक भाषण देने की मेरी बारी आई और मैं खडी हो गई। मेरे मन में उन्हीं कुछ व्यक्तियों की आलोचना गहरी छाई थी जो उस रात मेरे आगे बैठे थे, अतः चीन में अपने बचपन के दिनों में पाई शिक्षा का ध्यान करके मैंने जैसे-तैसे बताया—मुझे ठीक शब्द याद नहीं, पर मैं उन्हें लिख लेने के योग्य महत्त्व का भी न समझती थी—कि मैंने बहुत पहले यह सीख लिया था कि केवल किस्से कहने वाले को कोई साहित्यिक व्यक्ति नहीं समझा जा सकता तथा मेरे उपन्यास केवल लोगों के मनोरंजन करने के लिए और मुश्किल से कटते समय को कुछ आसानी से काट सकने के लिए लिखी गई कथाएं मात्र हैं और इसी तरह के दो-चार और वाक्य मैंने कहे। मैंने जो कुछ कहा, श्री कुंग उस सबको

सर्वथा उचित बताते।

पर सिनक्लेयर लेविस ने उचित नहीं बताया। जब मैं बैठी तब वह गुस्से से जलता हुआ मेरी ओर मुड़ा।

'तुम्हें अपने-आपको हीन नहीं बनाना चाहिए,' उसने कहा, और मुझे उसका एक-एक शब्द याद है क्योंकि उसके शब्द मेरी घायल आत्मा पर मरहम का काम कर रहे थे। 'न तुम्हें अपने पेशे को ही हीन बताना चाहिए, उसने कहा, 'उपन्यासकार का कार्य बड़ा ऊंचा है।' इसके बाद मानो मेरी सब भावनाओं को समझता हुआ वह उस कार्य के बारे में कहने लगा। उसने कहा कि लेखक को दूसरों के कहने पर कान न देना चाहिए। उसने कहा कि 'दि गुड अर्थ' का नाम सुनते-सुनते तुम तंग हो जाओगी क्योंकि लोग ऐसे बात करेंगे जैसे तुमने केवल एक यही पुस्तक लिखी है, पर लोगों की कभी परवाह न करो! उसने कहा कि बहुत बार मेरी यह इच्छा होती है कि 'मेन स्ट्रीट' मैंने कभी न लिखी होती। इसे लोगों को 'आपकी पुस्तक' कहते सुन-सुनकर वह इतना ऊब गया था।

'तुम बहुत से उपन्यास लिखो,' उसने तीव्र और प्रेरक उत्साह से कहा, 'और लोगों को अपनी चें-चें करने दो! उनके पास कहने के लिए और कुछ है ही नहीं। उन्हें जहुन्नम भेजो!'

मुझे उससे कितनी सान्त्वना मिली और बाद में उसके प्रति मुझे सदा कितना प्रेम रहा! वर्षों बाद जब मैंने सुना कि इटली में वह इतने अकेलेपन में मर गया कि उसे अपनी नौकरानी से अपना प्रिय शतरंज का खेल खेलना पड़ता था—यद्यपि वह उदासी से कहा करता था कि वह कितनी बुद्धू है कि उसे यही याद नहीं रहता कि वज़ीर कितने घर चलता है—तब मेरी इच्छा हुई कि मुझे उसके सूनेपन का पता चल गया होता और मैं अपने प्रति उसकी कृपा का कुछ प्रतिदान कर पाती। पर मैं यह समझती थी कि इतना प्रसिद्ध तथा सफल आदमी पुराने तथा वफादार मित्रों से घिरा रहता होगा। मैं समझ नहीं पाती कि यह कैसे हुआ कि वह मित्रहीन था। मैंने उसकी त्रुटियों और कठिनाइयों के बारे में सुना था पर उसकी प्रतिभा उसके ऊपर बड़ा बोझ थी और इसके कारण उसके सब पाप, विशेष रूप से उसके मित्रों को, माफ कर देने चाहिए थे।

इसलिए यह देखने की कोशिश में कि उसे वहां कैसा लगता होगा, मैंने आज सौक सेंटर की तीर्थ-यात्रा की और शहर भर में घूमती फिरी। मैं एक छोटी-

सी पंसारी की दुकान में गई और उसके मालिक से, जो जवान था, मैंने पूछा कि क्या आप सिनक्लेयर लेविस को जानते हैं। उसने कहा कि हां, अवश्य; उसके बारे में यहां हर कोई जानता है। लोगों ने उसके 'मेन स्ट्रीट' के बाद उसे बहुत पसंद न किया था, पर बाद में लोग इस बात को भूल गए और अब कोई परवाह नहीं करता।

'क्या उसका कहीं कोई स्मारक है ?' मैंने पूछा।

'जी नहीं,' उस आदमी ने एक मोटे बच्चे वाली जवान औरत को हैम्बर्गर गोश्त तोलते हुए प्रसन्नता से कहा, 'उसका कोई स्मारक बनाए जाने की सम्भावना नहीं है—यहां नहीं।'

'क्या आप मुझे यह बता सकते हैं कि उसका मकान कौन-सा था ?' मैंने पूछा।

उसने गोश्त लपेटते हुए लापरवाही से मुझे बताया और वह जवान औरत मेरी ओर घूरने लगी।

'यह जन-साधारण के लिए खुला नहीं है, उसने मुझे चेताया। 'अब यह दूसरे लोगों का है।'

मैंने उसे धन्यवाद दिया और चल पड़ी। मैंने मकान का पता लगा लिया। यह एक सादा, आरामदेह मध्यमवर्गीय मकान था जिसमें शिखर और ड्योढ़ी तथा एक अच्छा लान थे। मैं सोचने लगी कि ऐसा प्रचण्ड, ईमानदार, अधीर आत्मा क्या ऐसे मकान से निकला होगा। किन तत्त्वों के आकस्मिक संयोग से वह पैदा हुआ ? मुझे ऐसा लगा कि वह उन दीवारों को और उस नगर तथा उस नगर की सब विशेषताओं को फाड़कर निकल रहा था। उसे इस नगर से इतना प्यार था कि वह इसे जैसा देखना चाहता था, और जैसा वह जानता था कि यह बन सकता है, वैसा न होने के कारण इससे घृणा करता था।

वह अपने सारे देश से इसी तरह प्यार करता था और उसका वह प्रेम भी मेरी समझ में आता है।

फॉरेस्ट हांट, वर्मोन्ट

हमारी यात्रा का अन्त यहां वर्मोन्ट के ग्रीन पर्वतों में होता है और मेरे स्मृति-

पट पर अपने देश का बृहत् विस्तार छा जाता है। मैं सदा की तरह इसके आकार और विविधता से उत्साहित हूं। हमारी संस्कृति के तरल रुझान अनेक चिन्ताजनक दिशाओं में बढ़ सकते हैं। जब मुझे एक या दूसरी आशंका से परेशानी होती है—जैसी कि कभी-कभी हर विचारशील प्राणी को, मानव-इतिहास के प्रकाश में, अवश्य हुआ करती है—तब मैं अपनी कार लेकर परिवार के यथासम्भव अधिक से अधिक लोगों के साथ देश के एक सिरे से दूसरे सिरे तक की यात्रा शुरू कर देती हूं। तब मैं अधिकाधिक स्थानों में जाती हुई भी इतने धीरे-धीरे यात्रा करती हूं कि रास्ते में मिलने वाले लोगों से बातचीत कर सकूं। जब मैं घर लौटती हूं तब सदा मुझमें फिर आत्मविश्वास जाग चुका होता है। हमारे देश का आकारमात्र ही अपने-आपको हिटलर या स्टालिन समझने वाले के लिए एक बाधा है, पर अकेला आकर कुछ भी रक्षा नहीं कर सकता, यदि हमारे लोगों में विविधता न हो, अनेक मन न हो, जिनमें से हरएक अपनी-अपनी सीमाओं में असाधारण सजीवता और स्वतन्त्रता से सोच रहा है। मै समझती हूं कि इस विविधता का कारण हमारे पूर्वजों की और उन रीति-रिवाजों की विविधता है जो वे अपने वास्ते एक नया देश बसाने के लिए यहां आने पर अपने साथ लाए थे। हमें इकट्ठे रहते इतना समय नहीं हुआ कि हम उस तरह एक हो गए हों जैसे चीनी हो गए हैं—उनके जातीय भेद-भाव शताब्दियों तक एकसाथ रहने से सबके-सब मिल गए हैं और घुल-मिलकर एक रंग के हो गए हैं, उनकी आदतें सब एक रूप में आ गई हैं।

जर्मन लोग सुशिक्षित थे। हमारे यहां की औसतन शिक्षा से वहां अधिक शिक्षा थी। फिर भी वे हिटलर के आधिपत्य में आ गए। शायद इसका मुख्य कारण यह है कि जर्मनी इतना छोटा देश है कि उसे एक आदमी और उसके अनुयायी काबू में रख सकते हैं। पर रूस इतना विस्तृत देश होते हुए भी, जिसे आज कम्यूनिज़म या साम्यवाद कहा जाता है, उसके चंगुल में आ गया है; पर उसके लोग अनजान तथा गरीब थे और उसके बुद्धिजीवियों पर अत्याचार किए गए थे और उन्हें कैदखानों में डाल दिया गया था। जब किसान और बुद्धिजीवी मिलकर विद्रोह करते हैं, तब क्रांति अवश्यम्भावी है, यद्यपि क्रान्ति के परिणामस्वरूप सदा अव्यवस्था या तानाशाही पैदा होती है। इतिहास इसका प्रमाण है।

और मुझे उस पुराने रूस की अच्छी तरह याद है, यद्यपि उस निर्जन प्रदेश को पार करने के समय मैं बहुत छोटी थी। हमने उस रात के बाद, जब मैंने मन्दिर

का घण्टा अन्तिम बार बजते सुना था, चीनी पहाड़ी वाला अपना मकान छोड़ा और हम अमरीका रवाना हुए। साधारणतया या यदि हम एक साधारण परिवार के होते तो हम शांगहाई जाते और वहां से जहाज़ पकड़कर प्रशान्त महासागर पार करते, पर मेरी मां को समुद्री रोग बड़े प्रबल और असाध्य रूप में था और क्योंकि कुछ वर्षों से उसे हृदय-दुर्बलता की प्रवृत्ति पैदा हो गई थी, इसलिए डाक्टर ने यह राय दी कि वह लगातार एक महीने तक यात्रा करने की स्थिति में नहीं हो सकती। इसके अलावा वह यह भी चाहती थी कि मैं योरप देख लूं। उसे स्विटज़रलैंड, फ्रांस तथा इटली और इंगलैंड से प्यार था और वह फिर हालैण्ड जाना चाहती थी, जहां से हमारे पूर्वज आए थे। मेरा ख्याल है, उसके मन में यह विचार भी था कि चार वर्ष की कालिज-शिक्षा के लिए मुझे स्वदेश में ले जाने से पहले योरप महाद्वीप दिखला दे जिससे उस नये राष्ट्र का जन्म हुआ था। जो भी हो, उसने योरप के बारे में एक ट्रंक पुस्तकें खरीदीं और जिस दिन हम अपना चीनी घर छोड़कर यांगत्से नदी में ऊपर की ओर हैंको तक जाने वाले जार्डीन मैथेसन स्टीमर पर अपनी छोटी-छोटी कोठरियों में आ गए–हैंको से हमें पीकिंग के लिए और मंचूरिया में हार्बिन के लिए गाड़ी मिलनी थी–तभी से हमने उन्हें पढ़ना शुरू कर दिया। योरपीय कला तथा संगीत से हम पहले ही काफी परिचित थे क्योंकि जब हम छोटे बच्चे थे तभी से हमारी माता ने हमें प्रसिद्ध रंग-चित्रों की प्रतिकृतियां और महान् कलाकारों और संगीतकारों की हमारी आयु के लिए उपयोगी जीवनियां हमें दी थीं। हमने अपने छोटे-से इंगलिश मौट्री पियानो पर, जो शांगहाई से भेजा गया था, बाख और मैंडलसोन हैंडल और बीथोवन बजाना सीख लिया था और उसका हम लगन से, यद्यपि सदा इच्छापूर्वक नहीं उसकी देखरेख में अभ्यास किया करते थे।

अब योरप के लिए हमारी तैयारी पहले से अधिक गम्भीर थी। मेरी मां एकसार पढ़ाने वाली न होते हुए भी अनुप्राणित अध्यापक थी। वह अपनी दिलचस्पी के प्रत्येक विषय को अपने उत्साह से प्रदीप्त कर देती थी। यदि उसकी दिलचस्पी न होती तो वह बेशर्मी से और खुले तौर से छोड़ती चली जाती थी। योरप के लिए हमें उससे अच्छा अध्यापक मिलना मुश्किल था—न केवल कला और संगीत का, बल्कि इतिहास का भी। उसका अपना आकलन मेरे मन में पैठता गया और हमारे योरप पहुंचने से बहुत पहले मेरे मन में जातियों के अन्तर की विशेषताओं और उनकी उपलब्धियों की धारणा बिल्कुल स्पष्ट रूप में थी। इसके अतिरिक्त, मेरी

मां ने उन बहुत से सुन्दर स्थानों का वर्णन किया जो उन्हें अपनी पिछली यात्राओं से याद थे। मुझे उन स्थानों को अपनी आंखों से देखने की उत्सुकता होने लगी। जर्मनी से न मालूम क्यों उसे नफरत थी। इस त्रुटि की कुछ पूर्ति मेरे पिता ने कर दी जो अपनी अन्य भाषाओं के साथ जर्मन भी शुद्ध बोलते थे और उनके धर्म-विषयक पठन-पाठन से उनका दृष्टिकोण मेरी मां की दृष्टिकोण से बिल्कुल भिन्न हो गया था—और फिर उनके अपने पूर्वज पहले दक्षिण जर्मनी में ही थे। १७६० के साल में तीन भाइयों ने—जो उनके पूर्वज थे और एक प्रसिद्ध जर्मन विद्वान् के पुत्र थे—अपना घर छोड़ने का फैसला किया और अपने जैसे लोगों के साथ रहने का निश्चय किया जिसमें उन्हें अमरीका में धर्म और विचारों की आज़ादी रहे। उनका पिता तैयार था पर उसने बुद्धिमत्तापूर्वक सलाह दी कि पहले कोई धंधा सीख लो, क्योंकि उस निर्जन स्थान में विश्वविद्यालय की शिक्षा बेकार साबित होगी। नये देश में उनके आने के बाद कुछ ही वर्षों के अन्दर स्वाधीनता का युद्ध शुरू हो गया और उनमें से कम से कम एक को जार्ज वाशिंगटन के एडी (निजी सहायक) के रूप में यश मिला, यद्यपि उसे पेन्सिलवानिया में फोर्ट वाशिंगटन में कैद कर लिया गया था। वर्जिनिया में उन्होंने बाद में जो घर बनाया, उसमें रूढ़ियां प्रबल थीं और जब मेरा पिता वहां बड़ा हो रहा था, तब परिवार में जर्मन द्वितीय भाषा के रूप में बोली जाती थी।

पहले की बातें सोचने पर मैं देखती हूं कि जिस दिन हमने अपना पहाड़ी वाला मकान छोड़ा, उसी दिन चीन के बारे में मेरी स्मृतियां एकाएक धुंधली हो गईं। शायद इसका कारण यही होगा कि मेरा मन पहले ही योरप तथा अपने देश की ओर हो गया था। जो भी कारण हो, मुझे उत्तर की ओर अपनी लम्बी ट्रेन-यात्रा की और पीकिंग में अपने निवास की—पीकिंग नगर को मैंने बाद में अच्छी तरह जाना और मैं इससे बहुत प्यार करने लगी—आश्चर्यजनक रूप से कम याद है। मुझे अब निषिद्ध नगर में गहरी दिलचस्पी थी क्योंकि वृद्ध सम्राज्ञी–मेरे बचपन की उस प्रधान मूर्ति–के बारे में मेरे संस्कार सजीव थे। राजपरिवार अब भी वहां रहता था, पर वह कमज़ोर और निरर्थक था और प्रसिद्ध ग्रीष्म-महल को हम केवल बाहर से देख सके जिसमें पगोडा पहाड़ी के सामने बड़े सुन्दर ढंग से मौजूद था। पर ये सब धुंधली, बहुत ही धुंधली, अस्पष्ट बातें हैं। और पीकिंग के बारे में मेरी असली स्मृतियां दशाब्दियों बाद एक और ही जगत् में आईं–उस समय निषिद्ध नगर

पर्यटकों के लिए खुला था, किवाड़ झूल रहे थे और सुन्दर कमरे खाली थे और ग्रीष्म-महल सैरसपाटा करने वालों के लिए पिकनिक की जगह बन गई थी।

पीकिंग से रवाना होने के बाद मंचूरिया में हम हार्बिन में रुके। यह स्थान दिलचस्प न था—सड़कों और चौराहों का सब जगह जैसा नगर था, जिसमें तरह-तरह के लोगों और मकानों का मिश्रण था; मुझे कोई-कोई शहर से बाहर की छोटी-मोटी बात याद है—जैसे एक मंगोल ऊंट वाला, जो अपने छोटे-छोटे ऊंटों के काफिले के आगे तेज़ी से जा रहा था और वह मुझे इसलिए विचित्र लगा कि वह दो लम्बी-लम्बी सलाइयों से बुनता जा रहा था : उसका धागा साफ न की हुई ऊन की लच्छियां थीं जो वह अपने पीछे वाले ऊंट पर पड़े सलेटी और बालों वाले काठ के टुकड़े में से खींच रहा था। यह कपड़ा एक लम्बे-चौड़े तौलिए जैसा लगता था हालांकि मेरी समझ में यह नहीं आता कि उसे पहना कैसे जा सकता है—यही हो सकता है कि ऊंटों के साथ रहने-खाने वाला आदमी ही इसे पहने, क्योंकि ऊंट की बदबू कितना ही धोने पर भी दूर नहीं होती। पहले महायुद्ध में कुलिंग में कुछ देशप्रेमी अमरीकन महिलाओं के समूह ने योरप में स्थित सेनाओं के लिए वास्कटें बुनीं, और सबसे अधिक सुलभ और सस्ती ऊन ऊंट के बालों से बुनी ऊन ही थी, यद्यपि इसे साफ करके बुना गया और सफाई से लच्छियां बनाई गई पर तब भी ऊंट की बदबू इसमें बनी रही। बदबू इतनी तेज़ थी कि मेरी मां ने अपनी नाक हटा ली और सब लच्छियों को एक या दो दिन के लिए कार्बोलिक घोलकर बर्तन में भीगने डाल दिया। जब इसे निकालकर सुखाया, तब भी ऊंट की बदबू कार्बोलिक को परास्त करके भी मौजूद थी और बुनते हुए मंगोल को देखकर मुझे उसकी याद आ गई।

एक बार रूस में खास रूप में आ जाने पर मेरी स्मृतियां एकाएक प्रबल और स्पष्ट हो गईं। उसकी पृष्ठभूमि बड़ी विस्तृत है। एक सपाट जंगलों वाले देश के आर-पार गाड़ी से सफर के अंतहीन दिन, जंगलों में बर्च और चीड़ के पेड़ एक उदास शुष्क एक रास्ता, दिन में एक या दो बार स्टेशन पर रुकने के अलावा, जहां हम भोजन और पानी लेते थे, और कोई खास परिवर्तन नहीं। फिर ट्रेन से उतरते अजीब और जंगली-से दीखने वाले लोगों को मैंने घूरकर देखा, जो चीनियों से उतने ही भिन्न थे जितने उन योरप वालों से जिनसे मेरी बाद में भेंट हुई। मैंने चीन में गरीबी और अकालों के समय भुखमरी देखी थी, बाद में अपने देश में भी शहरों के स्लमों या गन्दी बस्तियों में और दक्षिणी नगरों में गरीबी देखी। पर क्रांति से पहले

रूस के जैसी गरीबी मैंने न पहले देखी थी, न बाद में। मैंने गरीबी देखी, यद्यपि बाद में मुझे अमीरों और पादरियों का विशाल वैभव देखने का भी मौका मिला, पर शुरू में मैंने सोचा कि सारे रूसी वहां के जंगली भूखे लोगों जैसे हैं। फर को अन्दर की ओर करके तथा बरसों की धूल की पपड़ियों से गन्दी खालें पहने किसानों और गांव वालों जैसे ही हैं। विमूढ़ अज्ञान और भयंकर निराशा इन गरीब लोगों के चेहरों पर दिखाई दे रही थी, जैसे यह बात इनकी स्मृति या कल्पना से भी परे थी कि किसीने कभी उनकी परवाह की है या कभी कोई उनकी परवाह करेगा। वे तो इतना ही सोच सकते थे कि मुट्ठी भर रूखे-सूखे अन्न से अपने खाली मुंह भर लें। पर उन दुःखी लोगों की भी अपनी भावनाएं थीं। वे एक-दूसरे से गले मिलते थे। एक आदमी अपने दोस्त को जोश से अपनी बांहों में भर लेता और उसके गालों पर चुम्बनों की बौछार कर देता; वे खरखरी आवाज़ों में बात करते थे और बच्चों की तरह उत्सुक ढंग से ज़ोर से हंसते थे।

मुझे याद है कि मेरे पिता सचमुच बड़े उदास हो गए थे और उन्होंने मेरी मां से कहा था, 'तेरी यह चीज़ नहीं चल सकती। यहां अगले दस साल के अन्दर क्रांति होगी—मेरे शब्द याद रखना! जहां लोग इस तरह रहते हों और ऐसे लगते हों वहां क्रांति हुए बिना नहीं रह सकती।'

जब हम मास्को पहुंचे, तब हमने एक दूसरा रूस भी देखा। यहां भी गरीब लोग बड़ी संख्या में थे, पर यहां अमीर अच्छी तरह खाते-पीते लोग भी थे जिन्होंने फर और साटन तथा इंगलिश ऊन के कपड़े पहन रखे थे। वे गाड़ियों और किराए की द्रोश्कियों (रूस में चलने वाली नीची चार पहियों की खुली गाड़ी) में घूमते थे और रूसी के समान आसानी से फ्रेंच बोलते थे, और उनमें से बहुत सारे फ्रांस या इटली में और खास तौर से फ्रांस में हर वर्ष बहुत-सा समय बिता कर आते थे। मास्को एक सुन्दर नगर था। वह मुझे सेंट पीटर्सबर्ग से कहीं अधिक दिलचस्प लगा, पर जिस चीज़ का मुझपर असर पड़ा, और जिससे शायद मुझे कुछ निराशा हुई, वे बड़े-बड़े चर्च थे—वे बड़े-बड़े महल, जिनमें पादरी शासन करता था। लैम्पें, सोना तथा चांदी, विशाल तथा गहराई वाली लहरों के से उभार वाली छतें, और हॉलों में सुनहरी मूर्तियां और मणिमुक्ताओं से युक्त प्रतिमाएं, जलती हुई धूपबत्तियां और हज़ारों मोमबत्तियां—इनके मुकाबले दूसरी ओर गरीब लोगों का अंतहीन प्रवाह था जो प्रार्थना करने आते थे। उनके उदास चेहरे सोच

श्रौर लालसा में मग्न थे। दोनों की यह विषमता बड़ी भयानक थी श्रौर सचमुच दिल तोड़ने वाली वस्तु थी। श्रवशेषों, मृत महात्माश्रों के श्रंशों, हाथ की हड्डी, बालों के गुच्छे, सूखी खाल के टुकड़े (जिन्हें श्रज्ञानी लोग श्रपने होंठों पर लगाते थे) की पूजा देखकर मुझे रोना श्रा गया क्योंकि यह बहुत दुर्गति की श्रवस्था थी। प्रार्थनाएं बेकार हो रही थीं श्रौर सारे का सारा कष्ट वैसा का वैसा ही बना हुश्रा था। इसमें कोई श्राश्चर्य की बात नहीं कि एक दिन ऐसा श्राया जब लोग पादरियों पर भी भयंकर क्रोध से उलट पड़े। 'भूखी भेड़ें निगाह ऊपर करती हैं श्रौर उन्हें खाने को नहीं मिलता।'

श्रौर मैं श्रपने माता-पिता श्रौर एक गाइड के साथ क्रेमलिन के पुराने हिस्सों के श्रंधेरे छोटे-छोटे कमरों में घूमी श्रौर जब गाइड ने निरंकुश ज़ारों के ज़माने के कैदियों की यन्त्रणाश्रों श्रौर श्रदालती कोठरियों का वर्णन किया, तब मेरे हृदय पर मानवीय इतिहास का जो मूक भार पड़ा वह श्राज भी मुझे श्रनुभव होता है। परन्तु गाइड ने बताया कि वर्तमान ज़ार-परिवार बहुत से शाही परिवारों की श्रपेक्षा कहीं श्रधिक भले हैं। ज़ार श्रौर ज़ैरीना (रानी) श्रपने बच्चों में, विशेष रूप से श्रपने पुत्र युवराज में डूबे रहते हैं जिसे हीमोफिलिया रोग है। फिर भी यही भला परिवार दस-एक साल बाद क्रुद्ध जनता द्वारा मार डाला गया। उस समय जनता उनकी भलमनसाहत भूल गई श्रौर उसे केवल यह याद रहा कि उसके शासकों ने जनता के जीवन को श्रधिक सहनीय बनाने के लिए कुछ नहीं किया था।

कम-उमर होते भी उस समय मुझे भविष्य के संसार की एक भयपूर्ण चेतना श्रनुभव हुई, जब एक श्रत्याचार-पीड़ित राष्ट्र के क्रोध के कारण बहुत से निर्दोषों को कष्ट भोगना पड़ेगा। मुझे याद है कि मैं एक तरह के श्रादरपूर्ण भय से, श्रौर श्रपने स्वभाव के श्रनुसार फिर यह श्राशा करती रही कि मेरे श्रपने राष्ट्र को वह दण्ड नहीं भुगतना पड़ेगा जिसके हम पात्र नहीं हैं श्रौर यह जब एशिया के राष्ट्र श्रपने ऊपर शासन करने वाले गोरों के विरुद्ध खड़े होंगे, तब श्रमरीकनों को उनसे पृथक् पहचाना जा सकेगा। यह सम्भव था कि वह दिन श्राएगा, श्रौर श्रब वह श्रा गया है श्रौर दुःख है कि श्रमरीकन लड़के भी कोरिया की धरती में सदा के लिए सो रहे हैं।

वर्षों बाद, जब रूस में क्रांति हो चुकी थी श्रौर कम्यूनिज़्म का श्रधिकार हो चुका था, मैं यह जानना चाहती थी कि वहां जनता के साथ कैसी रही। उस समय

दूसरा महायुद्ध चल रहा था और रूस हमारा मित्र तथा साथी था और अभी अमरीका का सम्भावित शत्रु न था और हममें अब भी एक-दूसरे को समझने की इच्छा थी। पर मैं फिर रूस जाना नहीं चाहती थी। मैं वहां की भाषा नहीं बोल सकती, और जब मैं जिस देश की भाषा नहीं बोल सकती, तब मुझे भिचा-भिचा अनुभव होता है जिससे मैं अधीर हो जाती थी। इसके अलावा मुझे कम्यूनिज़्म में गहरा अविश्वास तथा भय पैदा हो चुका था क्योंकि तब तक मैं चीन में इसके परिणाम देख चुकी थी। फिर भी मैं जानती थी कि किसी देश के औसत लोग अपनी सरकार के बारे में उसके सिद्धांत के आधार पर फैसला नहीं करते बल्कि इस आधार पर फैसला करते हैं कि उसने उनके लिए क्या किया है, और तीस साल पहले रूस में देखी हुई मुसीबत को याद करके मुझे उस समय यह बिल्कुल सम्भव मालूम हुआ कि रूसी सरकार ने आम आदमी की हालत में सुधार किया होगा—कम से कम उसे और खराब नहीं किया जा सकता था। इसलिए मैंने न्यूयार्क में एक रूसी स्त्री तलाश की जो मुझे मिल गई। वह इतनी नई उमर की थी कि नई शासन-व्यवस्था में ही बड़ी हुई थी और इतनी अधिक आयु की थी कि उसका जन्म पिछली शासन-व्यवस्था में हुआ था और हम मित्र हो गईं। हमारी लम्बी बातचीत मेरे लिए इतनी मनोरंजक थी कि मैंने उन्हें शब्दशः पर व्यवस्थित और सम्पादित रूप में एक छोटी पुस्तक में दर्ज किया है जिसका नाम है 'टॉक अबा-उट रशिया'। उसमें रूसी किसान माता-पिता की पुत्री माशा ने मेरे लिए सर्वथा अपरिचित नये रूस में अपने बचपन और किशोरावस्था की कहानी बताई। मैं इस जीवन की रुकावटों को कभी न सह सकी होती, पर फिर भी मुझे यह समझ में आया कि माशा ने अपने माता-पिता की अपेक्षा अधिक अच्छा (अर्थात् अधिक आराम का) जीवन बिताया था और यह अनुभव करने पर भी कि नये शासन की सख्तियां असह्य थीं, मुझे यह मानना पड़ा कि कम से कम उसके बदले में भोजन और शिक्षा के अवसर तो थे। इस प्रकार माशा के माता-पिता अनपढ़ थे, पर वह, उसके भाई और बहनें, सब राज्य के खर्चे से कालिज में पढ़े। हमारी मिलकर लिखी उस पुस्तक को लिखते हुए उसका स्वदेश के लिए उत्साह आसानी से समझ में आता था।

फिर भी हममें प्रायः मतभेद होता था। उदाहरण के लिए, जब हम बोलने की आज़ादी के अधिकार की बात पर आई जो अमरीकावासी को बहुत प्रिय है, तब माशा यह न समझ सकी कि मैं इसे लोकतन्त्र तथा सुख के लिए इतना ज़रूरी क्यों

समझती थी।

'तुम अमरीकन लोग सदा ज़्यादा बोलने को उतावले रहते हो,' वह बोली, 'तुम्हें सदा बोलते रहने की क्यों ज़रूरत रहती है।'

और हम सत्य और असत्य के चरम रूपों तथा अपना स्वतन्त्र मत रखने के अधिकार पर भी सहमत न हो सकीं। उदाहरण के लिए, उस वर्ष रूस पर अमरीकन लेखकों द्वारा दो पुस्तकें अभी प्रकाशित हुई थीं। उनमें से एक सोवियत पद्धति के पक्ष में और दूसरी विपक्ष में थी। यह बात माशा की समझ में नहीं आई।

'दोनों में से एक सही है, और इसलिए दूसरी गलत है,' उसने जोश से कहा, 'जो सही है, उसे रख लेना चाहिए; दूसरी को नष्ट कर देना चाहिए।'

'पर, माशा,' मैंने तर्क करते हुए कहा, 'हर अमरीकन को स्वयं यह फैसला करने का अधिकार है कि कौन सी पुस्तक सही है।'

'और यदि कुछ लोग यह निश्चय करें कि एक सही है और कुछ लोग यह निश्चय करें कि दूसरी सही है ?' उसने पूछा।

'उन्हें भिन्न मत रखने का अधिकार है,' मैंने कहा।

'तुम इसे अधिकार कहती हो, मैं इसे घोटाला कहती हूं,' उसने जवाब में कहा।

ऐसी बातचीत का कहीं अन्त नहीं हो सकता। इस प्रकार हम एक-दूसरे से उतनी ही दूर थीं जितनी दूर हमारे दोनों देश, और फिर भी हम अच्छी मित्र बन गई और मित्र ही रही हैं, क्योंकि हमने अपने भिन्न मत की बात स्वीकार कर ली है।

पर कुछ समय पूर्व मैंने माशा से पूछा कि अब तुम रूस के बारे में कैसा महसूस करती हो। वह अमरीका में एक नागरिक बनकर एक प्रसिद्ध अमरीकन की पत्नी के रूप में रह रही है, और हमारी पुस्तक प्रकाशित हुए वर्षों बीत गए। और जब वह न्यूयार्क में रहने के लिए उतनी तरुण और उतनी रूसी लड़की के रूप में आई थी, तब से वह अनेक प्रकार से बदल चुकी है। उसे अपने देश जाने की बड़ी इच्छा थी तथा घर की याद उसे सताया करती थी। अन्त में उसके पति ने उसे उसके रूसी परिवार से मिलने के लिए जाने की अनुमति दे दी। उसके पति ने मुझसे कहा, 'जब मैंने उसे गाड़ी पर बैठाया, तब मुझे यह पता न था कि मैं उसका मुंह फिर देखूंगा या नहीं।'

और माशा ने मुझे बताया कि गाड़ी पर उसका मन बड़ा खराब हुआ क्योंकि कुछ रूसी अफसरों ने, जो उसीके डिब्बे में बैठे थे, उससे अपने देश की स्त्री को

तरह व्यवहार करने के बजाय एक अमेरिकन की तरह व्यवहार किया।

'क्या तुम अपने माता-पिता से मिली, माशा ?' मैंने पूछा।

हमारी मिलकर लिखी पुस्तक में उसके माता-पिता मुख्य पात्र थे। उनसे मुझे दूसरे किसान-दम्पतियों की याद आई जिन्हें मैं चीन में जानती थी, और यद्यपि मैंने उन्हें कभी देखा न था, पर फिर भी मुझे उनसे प्यार हो गया था। माता साधारण विनयशील रूसी किसान-पत्नी थी पर क्रान्ति के बाद उसने एक तिनके का सहारा ले लिया था जिसका वह उपयोग कर सकती थी, और वह यह था कि स्त्री और पुरुष बराबर हैं। जब अगली बार पिता ने मारपीट से अपना हुकम मनवाने के लिए अपना हाथ उठाया, तब वह अड़ गई। 'मुझे वही समानता प्राप्त है जो तुम्हें है और मैं डरती नहीं,' उसने उसके पिता से कहा, माशा ने मुझे बताया था, 'क्रान्ति के बाद पिता का माता से व्यवहार सुधर गया था, और उसने उसे मारना बन्द कर दिया था। जब वह पागल होता था तब उसे धमकाता था पर उसे हाथ लगाने से डरता था।'

'हां, मैं अपने माता-पिता से भी मिली,' माशा ने अब उत्तर दिया, 'और वे सुखी हैं और मुझे देखकर प्रसन्न हुए। वे बूढ़े और काम-काज से निवृत्त हैं, पर वे आराम से रहते हैं।'

वह हंसी। उसकी सलेटी आंखें अध-मुंदी हो रही थीं। 'जानती हो, पिता ने मुझसे पहली बात क्या कही ? उसने हमारी पुस्तक देखी थी। किसीने वह उसे पढ़कर सुनाई थी और उसने उलाहना देते हुए कहा—माशा, तुम्हारी पुस्तक बहुत अच्छी थी, पर एक बात अच्छी नहीं। तुमने उन सब अमरीकनों को यह क्यों बताया कि मैं तुम्हारी मां को कैसे पीटता था। मैं उसे इतना जोर से तो नहीं पीटता था ?'

हम दोनों हंसती रहीं और इसके बाद माशा गम्भीर हो गई। 'दूसरी चीज़ों में मैंने उन्हें बिल्कुल वैसा ही नहीं देखा। किसीका पति—जिसे मैं जानती थी, जो मेरी घनिष्ठ थी—सरकार की आलोचना करने पर साइबेरिया भेज दिया गया था। उसे नौ साल वहां रहना था और नौ साल गुज़रने पर भी वह नहीं लौटा, इसलिए मेरी सहेली साइबेरिया में अपने पति को देखने गई और उसने उसे मज़दूर-कैम्प में बहुत पतला और रोगी, पर फिर भी काम करते पाया। जब उसने शिकायत की तब अफसर हंसा और बोला : ओह, हां, उसका घर जाने का समय हो गया।

मै भूल गया था—और उन्होने उसे जाने दिया, और वह सोचने लगी कि अब हम घर जा सकते है, जहा बच्चे इन्तजार मे होगे। पर जब वे सीमा पर पहुचे, तब उन्हे रोक लिया गया और यह बताया गया कि वे साइबेरिया से कभी नही जा सकते। आज यह बात होती है और जब मै पहले रूस मे थी तब मै इस बात पर विश्वास नही कर सकती थी। मै एक और मित्र को जानती हू जो इसलिए छिपा रहता है कि उसने भी स्टालिन के बारे मे कुछ कह दिया था और उसका पता चल गया।'

उसने लम्बी सास छोडी। 'शायद क्रान्तिया शुरू मे ही अच्छी होती है—समझ मे नही आता। पर अब मै तो यहा अमरीका मे शान्ति से रहती हू और ऐसी बातो के बारे मे नही सोचती। केवल यही सोचती हू कि जोन की अच्छी पत्नी और बच्चो की अच्छी माता बनी रहू और बगीचा बनाऊ, इत्यादि। जोन ने मेरे लिए जो छोटा-सा बगीचा बनाया है, उसमे कुछ गुलाब भी है। निश्चय ही आज मेरा जीवन अच्छा है।'

और इस प्रकार माशा भी मुझे आज के रूस के बारे मे न बता सकी। मुझे उस पुराने देश की भी स्मृति है जो मैने दस वर्ष पहले देखा था और जो कुछ हो रहा है वह सब वही है जो अनिवार्यत होना था और जिसकी पूर्वचेतना मेरे मन मे अपनी उस छोटी अवस्था मे भी काफी गहरी थी।

और इसके बाद हम पोलैड पहुचे। हम उस महान् और सुन्दर वारसा नगर मे आए जो उसके बाद इतने अधिक इतिहास तथा विनाश का स्थान बना है। इसके बाद हम बर्लिन मे आए तब मै इसकी बुनियादो मे क्रान्ति का कोई कम्पन नही अनुभव कर सकी, पर कुछ ही वर्ष बाद यही से प्रथम महायुद्ध का तूफान उठा। पेरिस उन गर्मियो मे सुन्दर स्वप्नो मे मग्न पडा था और अगर किसी फ्रासीसी को यह अन्दाज था कि दो-चार साल मे ही क्या-कुछ होने वाला है तो उसने ऐसा जाहिर नही किया। भय पैदा करने वाले रूस देश से रवाना होने के बाद मुझे कोई आशकाए अनुभव न हुई। योरप केवल आनन्द मनाने का स्थान था और इगलैड पहुचने पर वह मुझे बडा सुरक्षित स्थान मालूम हुआ। यद्यपि मै अपने बचपन मे एशिया मे अनेक अग्रेजो की करतूते देखकर बडी बेचैन हुई पर लन्दन मे मुझे कुछ अनुभव नही हुआ और छोटे इगलिश नगरो तथा गावो मे ऐसा बिल्कुल ठोस जीवन अनुभव हुआ, जैसा ठोस स्वय भूमडल है। मै बहुत बचपन मे यागत्से नदी पर नदी के जहाजो के घाटो पर से अग्रेजी जहाजो से उतरी हुई जावा से आने वाली चीनी

की गोलियां और भारत से आई रूई की गांठें और आस्ट्रेलिया से आए हुए डिब्बा-बंद मक्खन की पेटियां ढोते कुलियों को देखा करती थी। वे बोझ बड़े भारी होते थे और चीनियों के पतले-दुबले शरीर जो कमर तक नंगे होते थे उनके बोझ से कांपते थे। हर आदमी जब जहाज़ को बांधने वाले लंगर से चलता था तब उसके पास एक निशान-लगी छड़ी होती थी और इस निशान वाली छड़ी को एक अंग्रेज़ चैक करता था जो ब्रिटिश कन्सेशन के बांध के साथ-साथ जाने वाली सड़क पर छतरी के नीचे मेज़ के पास एक आरामदेह कुर्सी पर बैठा रहता था। मैं निस्सन्देह बहुत चिन्तनशील लड़की थी क्योंकि मुझे भूरे आदमियों की दुःखदायी विनम्रता और गोरे आदमी की जड़ हृदयहीन शान्ति से परेशानी होती थी। मुझे परेशानी इस कारण होती थी कि बोझ बड़ा भारी होता था और गोरा इसके भारी होने की परवाह न करता था और क्योंकि मैं जानती थी प्रत्येक कुली गरीब है, मैं यह कल्पना कर सकती थी कि उसका परिवार मज़दूरी करता होगा और शायद नदी के ऊपर किसी डोंगी में रहता होगा; मैं जानती थी कि गोरा आदमी कहां रहता था। वह और उसकी पत्नी तथा पुत्र टोनी एक सुन्दर ईटों के बने पलस्तर वाले सफेद मकान में रहते थे, जिसके चारों ओर ठण्डे बराण्डे थे और जो फूलों और छायादार पेड़ों से भरे हुए आंगन में था। यह विषमता सचमुच बड़ी कष्टकारक थी और यह कष्ट मेरे सारे जीवन में मेरे साथ रहा है। मुझे इंगलैंड में भी—जो इतना घना सुन्दर और सुरक्षित है—इसकी याद आई और मैं सोचने लगी कि क्या अंग्रेज़ लोग यह जानते हैं—और बेशक वे जानते क्या स्वप्न में सोचते भी नहीं—कि संसार के इस सबसे सुन्दर देश की सुरक्षा उस भूरे बोझ उठाने वाले कुली और उसकी निशानी वाली छड़ को चैक करने वाले गोरे की पारस्परिक भावनाओं पर निर्भर है। और यह परेशानी पूर्ण विकसित रूप में नहीं, बल्कि अपने हृदय की गांठ में कसकर कली की तरह लिपटी हुई, मैं अपने साथ अपने देश में भी ले आई।

पर योरप से रवाना होने से पहले हम स्विटज़रलैंड गए। इस देश से मेरी मां को बड़ा प्यार था—कुछ तो इसके प्राकृतिक सौन्दर्य के कारण, पर मैं समझती हूं कि अधिकतर इसलिए कि तीन विभिन्न राष्ट्रों के लोग यहां आपस में और संसार के साथ शान्ति रखते हुए रह रहे थे। वहां भी उसे अपने आरम्भिक वर्षों में अपनी दो पुत्रियों और एक पुत्र के मर जाने के बाद सांत्वना मिली जो छोटी आयु में तेज़ी से आने वाले घातक उष्णदेशीय रोगों से नहीं बच सके तथा एक-दूसरे के बाद

इतनी जल्दी-जल्दी मरते गए कि वह इसका धक्का नहीं संभाल सकी। अब हमने न्यू चेटल के पास एक छोटे-से बोर्डिंग हाउस में कुछ महीने गुज़ारे और मेरी मां ने मुझे फ्रेंच लहज़ा सुधारने के लिए एक फ्रेंच स्कूल में भरती कर दिया।

मुझे लगता है कि स्कूल जैसी चीज़ों की मुझे याद नहीं रही। जो कुछ मुझे याद है वह है बोर्डिंगहाउस के उस परिवार की मैडम लारू—वह पतली, छोटी-सी सदा काला कपड़ा पहनने वाली विधवा अपनी छोटी-सी मेज़ के पास बैठी है, और बड़ी शान से बहुत पानी वाला रसा ऐसे परोस रही है जैसे वह कोई बहुत बढ़िया वस्तु है; और उसका सबसे बड़ा पुत्र उसके दाईं ओर प्रत्येक करछी रसे को अपनी तीक्ष्ण काली आंखों से नापता हुआ बैठा है। एक दिन मेरी उन दोनों से कहा-सुनी हो गई जब कि मैंने एक ब्लैकबेरी (एक फल) तोड़कर खा ली थी। लड़के ने बैठक की खिड़की में से मुझे देख लिया और इस अपराध की सूचना अपनी मां को दी। इसपर वह निकलकर बाहर आई और उसने बड़े शिष्टाचार से मुझे यह सूचित किया कि अतिथियों से यह आशा नहीं की जाती कि वे फल तोड़ेंगे। मैंने गुस्से से लाल होकर क्षमा मांगी क्योंकि मेरा मतलब चोरी करने का न था बल्कि बेल से ताज़ी बेरी तोड़कर खाने का आनन्द लेने का था।

और मुझे याद है कि एक रूसी काउंटेस (या ज़मींदारनी) और उसकी दो लड़कियां भी उस बोर्डिंगहाउस में रहती थीं और वे खाने के सामान की स्वल्पता की बड़ी शिकायत करती थीं और कहती थीं कि मां या लड़का उनकी ओर कुछ भी ध्यान नहीं देते, यहां तक कि मां तो अपना सुन्दर जीर्ण चेहरा दूसरी ओर करके दाईं तरफ बैठकर अपने पुत्र से बात करने लगती है, जैसे कि रूसी वहां थे ही नहीं। उस समय मैं लम्बे घने भूरे बाल रखती थी। एक दिन मुझे मेरी मां ने उस रूसी महिला के साथ नाई के यहां भेजा क्योंकि वह भी, उसीके शब्दों में 'अपनी बेटियों के बाल धुलवाना चाहती थी।' नाई के यहां जब उसकी बेटियों के बाल ठीक किए जा रहे थे, तब वह प्रतीक्षा करती और देखती हुई तथा बिना रुके बोलती बैठी रही। जब मेरे बाल खोले गए और ब्रश से झाड़े गए तथा बारीक दांतों वाले कंघे से साफ किए जैसे कि उसकी लड़कियों के किए गए थे, तब वह चकित हो गई थी क्योंकि मेरे बाल, उसके शब्दों में, 'साफ' थे।

वह अपने उत्साहपूर्ण ढंग से बोली, 'मैंने कभी इतने घने और लम्बे बाल बिना जुओं के नहीं देखे।'

वह प्रशंसा और अविश्वास से चमक रही थी और मैं शर्म के कारण यह न कह सकी कि हमारे कभी जुएं नहीं पड़ीं, कि कहीं उसके मन को चोट न लगे। अब जब मैं उसके मोटे-ताज़े और प्रसन्न व्यक्तित्व की बात सोचती हूं, तब मेरी अपनी यह धारणा निराधार लगने लगती है कि उसे किसी चीज़ से चोट पहुंच सकती थी।

और मुझे अपनी फ्रेंच में किसी सुधार के बजाय यह अच्छी तरह याद है कि न्यूचैटल के आसपास देहात में बड़ी-बड़ी काली चेरियां बिकती थीं और एक दिन मैं और मेरी छोटी बहन एक थैला चेरियां खरीद लाईं और,जब हम उनमें से आधी खा चुकीं तब हमें पता चला कि उसमें महीन सफेद कीड़े थे। हमने फिर एक-एक चेरी को देखा तो उनमें से हरएक में कीड़े थ। और इस प्रकार हमें उस बुरी दुःखदायी बात पर विश्वास करना पड़ा।

ये छोटे-छोटे दृश्य जिनेवा की नीली झील लूसर्न के पानी और सबसे बढ़कर ऊंचे हिमाच्छादित ऐल्प्स की महान् पृष्ठभूमि में हुए।

जहाज़ पर अमरीका की ओर चलते हुए शायद मैंने बहुत ही अधिक गम्भीर चिन्तन में समय बिताया। मेरे मन में वे बातें घूम रही थीं जो मैंने रूस और योरप में देखी थीं, और वे बातें घूम रही थीं जो मेरे बीच में अनेक स्थानों पर बहुत से लोगों से हुई थीं। मैं शर्मीली किशोर लड़की थी और मुझे अपनी आयु और जाति के तरुण लोगों से मिलने-जुलने की आदत न थी, पर मैं कुछ तो अपनी उत्कण्ठा के कारण, पर शायद इससे भी ज़्यादा अपनी कल्पनाशक्ति के कारण—जिसके द्वारा मैं भावनाओं और विचारों को समझ सकती थी और जो मुझे बातचीत करने के लिए मजबूर करती थी—बातचीत में आसानी से आकृष्ट हो जाती थी। मैं जल्दी ही यह जान गई कि लोग अपनी राय, कठिनाइयां और समस्याएं बताने को सदा तैयार रहते हैं, और मैं जहां कहीं जाती थी वहां इनमें मेरी सदा गहरी दिलचस्पी हो जाती थी। मैं जब योरप से विदा हुई, तब मेरी वहां की जातियों के विषय में काफी अच्छी धारणा बन गई थी, विशेष रूप से शायद इंगलैंड और अंग्रेज़ों के विषय में जिन्हें मैं प्यार किए बिना न रह सकी क्योंकि अब मैं उन्हें जानती थी : यद्यपि जब मैंने उन्हें चीन में देखा था तब सदा उनके विरोध में चीनियों का पक्ष लिया था।

मुझे यह स्पष्ट हो गया कि यह सुन्दर जातियां, और विशेष रूप से आश्चर्य-जनक अंग्रेज़ लोग इस विषय में कुछ नहीं जानते, इसलिए उनकी इस बारे में

कोई धारणा नहीं है कि उनके प्रतिनिधि उन्हें विनष्ट करने के लिए एशिया में क्या कर रहे हैं। ये जातियां सब अपने सुन्दर देशों में रह रही हैं। हरएक अपनी ही सभ्यता में मस्त है और उन्हें उस बात की जरा भी आशंका नहीं, जो मैं तब जानती थी कि अवश्यंभावी है, कि एशिया में उनके विरुद्ध विद्रोह होगा। जब मैंने जहाज पर ही एक दिन शाम को अपने पिता से इस बारे में बातचीत की तब उन्होंने जो कुछ कहा वह मैं कभी नही भूली। उन्होंने कहा, 'विद्रोह रूस में आरम्भ होगा क्योंकि वहां लोग विदेशियों से पीड़ित न होकर अपने ही शासकों से पीड़ित हैं। आज धरती पर रूसियों की हालत सबसे दुःखदायी और गई-बीती है, तथा संसार का पहला विस्फोट वहां होगा। धर्मग्रन्थों में यह स्पष्ट रूप से लिखा है और यह होकर रहेगा। रूस में शुरू होने के बाद वह एशिया के दूसरे देशों में फैलेगा और क्योंकि गोरे लोग उत्पीड़क रहे हैं, इसलिए सब गोरी जातियों को इसका फल भुगतना पड़ेगा।' मुझे याद है कि इंगलैंड तथा योरप के उन सुन्दर तथा प्यारे लोगों के लिए मेरे मन में कैसा भय, और फिर प्रबल करुणा पैदा हुई थी, और मैंने अपने पिता से कहा था—

'क्या हम उनसे कह नहीं सकते? क्या हम उन्हें चेतावनी नहीं दे सकते?'

उन्होंने सिर हिला दिया। 'उनके पास अपने पैगम्बर हैं,' वे बोले।

मैं समझ गई कि वे बाइबिल की उस दृष्टान्त-कथा की बात सोच रहे थे जिसमें एक आदमी जो नरक में अपने पापों का फल भुगत रहा था, अपने उन प्यारे लोगों को जो अभी संसार में थे, चेतावनी भेजना चाहता था ताकि वे मेरे जैसी दुर्दशा से बच जाएं और ईश्वर का कठोर उत्तर यह था कि उनके अपने पैगम्बर हैं, और वे चेतावनियों को नही सुनेंगे।

मेरे पिता और मैं प्रायः आपस में बातचीत नहीं करते थे। वे कुछ दृष्टियों से अटल व्यक्ति थे। उनसे बात करने के लिए बुद्धि और धर्म के उनके जगत् में प्रवेश करना जरूरी थी, क्योंकि वे कभी इसे नही छोड़ते थे किन्तु उस दिन सायंकाल हमने एक-दूसरे को समझा। पर क्योंकि अब मैं अपने देश जा रही थी, जो मेरे लिए अज्ञात था लेकिन फिर भी जिसके लिए मैं बड़ी उत्सुक थी; और अब यह तो मैं जानती थी कि पुराने चीन में रहने के दिन सदा के लिए समाप्त हो गए, इसलिए मैं उनसे वह पुराना प्रश्न पूछे बिना न रह सकी जिसका उत्तर सुनकर मुझे डर लगता था:

'पर अमरीका वालों को तो कोई तकलीफ नहीं उठानी पड़ेगी ? हमारे कहीं उपनिवेश नहीं हैं—असली उपनिवेश नहीं हैं जैसे कि भारत हैं—और चीन में हमारे कोई कन्सेशन नहीं है, तथा बौक्सर-विद्रोह के हरजाने का रुपया हम अमरीकन कालिजों में चीनी छात्रों के लिए खर्च कर रहे हैं, और हमने चीनी जनता के लिए कितना अच्छा काम किया है—अस्पताल, स्कूल, अकाल के समय अनाज।'

उन्होंने चुपचाप धैर्य से यह सुना और फिर कहा, 'हमें यह न भूलना चाहिए कि मिशनरी बिना बुलाए और एकमात्र अपनी कर्तव्य-भावना से चीन गए थे। इसलिए चीनियों पर हमारा कुछ भी ऋण नहीं है। हमने भरसक अच्छा काम किया है पर वह भी हमारा कर्तव्य है, इसलिए इसके लिए भी हमारा उनके ऊपर कोई ऋण नहीं है। यदि हमारे देश ने कोई कन्सेशन नहीं लिए तो भी जब दूसरों ने लिए, तब हम चुप बैठे रहे और असमानतामूलक सन्धियों से हमने भी लाभ उठाया है। मैं नहीं समझता कि कयामत के दिन हम लोग भी बच सकें।'

जब उन्होंने यह कहा, तब मुझे कंपकंपी आई और मुझे लगा कि इनका कहना ठीक है। आज दुनिया बदल जाने पर मैं यह अनुभव करती हूं कि यद्यपि एशिया में गोरों के इतिहास के बोझ के अपराध से हम अमरीकन लोग मुक्त हैं, पर चुप रहने के दोष से हम मुक्त नहीं हैं। एशिया का बोझ हमारे ऊपर पड़ा, और जो कुछ दूसरे गोरों ने किया है उसका फल हमें भी भुगतना होगा।

ग्रीन हिल्स फार्म
पेंसिलवानिया

मैं सितम्बर, १९१० में शांत हृदय और अपनी आयु की दृष्टि से बहुत प्रौढ़ मन लेकर अमरीका आई थी। मैंने अपने सारे दिन इंग्लैंड में लगा दिए थे और बीच में कोई दिन फालतू न था, इसलिए हम सीधे उस शहर में गए जिसमें मेरा कालिज था। पहले मैंने वेलेज़ली में जाने की आशा की थी और वहीं प्रवेश-परीक्षा भी दी थी पर मेरे दक्षिण के रिश्तेदारों ने—जिनके मन में अब भी उत्तर और दक्षिण के युद्ध का भूत घुसा था—पत्र लिखकर मेरे माता-पिता से काफी विरोध प्रदर्शित किया था, जिसके परिणामस्वरूप यांकी (उत्तरी) कालिज और दक्षिणी फिनिशिंग स्कूलों के बीच का रास्ता सोचा गया, जिसपर मैंने विद्रोह कर दिया। मेरे

लिए रैंडोल्फ मेकन नाम का एक दक्षिणी महिला कालिज चुना गया। मेरी मा ने इसे पसन्द किया क्योकि वहा शिक्षा ठीक उसी ढग की मिलती थी जैसी किसी पुरुष को मिलती थी। मेरे पिता से विवाह करके तीस वर्ष तक उनके साथ रहने के बाद वह स्त्रियो की बराबरी की प्रबल पक्षपाती थी, और निश्चय ही इसका कारण थे मेरे पिता, जो अपने सब कार्य बाइबिल मे कही गई बातो के आधार पर तय करते थे और सदियो पहले सेट पाल द्वारा लापरवाही से कही गई कुछ बातो को सख्ती से मानते थे। सेट पाल ने साफ ढग से कहा था कि जैसे ईसा चर्च का अधिपति है वैसे पुरुष स्त्री का अधिपति हे। मेरी माता का स्वभाव निर्भयता और भावुकता का था, पर मेरे पिता शान्ति की मूर्ति थे। और जंसा कि हुआ करता है, मूर्ति जीतती थी। हमारे घर मे मेरे पिता अधिपति थे—यद्यपि मेरी मा उन्हे आडे हाथो लेती थी, पर वे अपनी जगह अटल रहते थे। स्त्री होने के विषय मे उसके जोरदार और कभी क्रुद्ध हमलो का वे शान्त विरोध करते थे। उदाहरण के लिए जब वह यह अनुभव करती थी कि परिवार का बैंक-खाता (जो सदा छोटा ही होता था) सयुक्त होना चाहिए जिससे उनकी तरह वह भी चैक लिख सके, तब वे उत्तर मे अधिक से अधिक यही कहते थे, 'ओह, केरी, ऐसी बाते मत करो।'

वर्षों की पराजय का—यद्यपि मेरी मा ने कभी अधीनता स्वीकार न की—परिणाम यह हुआ कि मेरी मा ने अपनी लडकियो को अपने भावी पतियो के मुकाबले हर सम्भव सुविधा देने का निश्चय किया, इसलिए वह इस विचार पर मुग्ध हो गई कि मुझे ठीक वैसी शिक्षा मिलेगी जैसी लडका होने पर मिलती।

लिचबर्ग, वर्जिनिया पहुचने पर मैंने देखा कि हमारा कालिज लाल ईंट के मकानो का एक समूह है जो इतनी नई है कि कच्ची मालूम होती है—कम से कम मेरी आखो को तो कच्ची ही मालूम होती थी, और मुझे ससार के सर्वोत्तम तथा अत्यन्त परिष्कृत दृश्य देखने की वर्षो से आदत पडी थी, क्योकि चीन के सर्वोत्तम दृश्य निश्चय ही ऐसे है। उन मकानो के अन्दर सुन्दरता जरा न थी और आराम भी कम से कम था। जब मै कभी अपने कालिज जाती हू और इसे सब जगह सुन्दरता से चमकता और परम्परा से समृद्ध देखती हू, तब मै यह हिसाब लगा सकती हू कि वह कितने दिन पहले की बात है। पर मेरे दिनो मे वह सौन्दर्यहीन था और चौडे-चौडे हालो मे—जिनपर एक फीकी मरी चमडे जैसे मोटी लिनोलियम की पट्टी ही बिछी रहती थी—जब मै आती-जाती थी तब कही भी सुन्दरता न देख-

कर मुझे परेशानी होती थी। पर दूसरे वायदे पूरे हुए। हमें अच्छी शिक्षा दी गई और पाठ्यक्रम में ऐसी कोई चीज़ न थी जिससे हमें यह अनुभव हो कि हम लड़कियां हैं, लड़के नहीं। हमें गृहकार्य या कपड़े सीने या रसोई करने, या गम्भीर चिन्तन के स्थान पर किसी और ऐसे हल्के काम द्वारा बरबाद नहीं किया गया। हम चाहें या न चाहें, पर हमें विज्ञान पढ़ना होता था और गणित तथा लैटिन पर बल दिया जाता था, तथा वे बहुत अच्छी तरह पढ़ाए जाते थे। हर वर्ष छात्र-संस्था गृहशास्त्र के पाठ्यक्रम के लिए आवेदनपत्र भेजती थी, क्योंकि उन दिनों कोई लड़की यह न सोच सकती थी कि मैं विवाह न करूंगी, और हर वर्ष फैकल्टी दृढ़ता से इस प्रार्थना को अस्वीकार कर देती थी। मूल विचार यह था, और मैं इसे बिल्कुल सही समझती हूं, कि कोई भी शिक्षित स्त्री पाकशास्त्र की पुस्तक पढ़ सकती है, या कपड़े के किसी नमूने की नकल कर सकती है। शिक्षा की आवश्यकता मस्तिष्क को है, और वह हाथों को सिखा सकता है। मुझे उस समय अपने कालिज पर अभिमान हुआ, जब हाल ही में मुझे पता चला कि छात्राएं अब भी हर वर्ष गृह-अर्थशास्त्र की शिक्षा के लिए आवेदनपत्र देती हैं और फैकल्टी उसे अब भी अस्वीकार कर देती है।

अपने कालिज के दिनों की मुझे इतनी थोड़ी याद है कि शर्म मालूम होती है, और इसमें मेरे सिवाय और किसीका दोष नहीं, क्योंकि मेरी व्यक्तिगत स्थिति के कारण मेरे जीवन पर कुछ सीमाएं थीं। मेरे माता-पिता मुझे वहां सुपुर्द करके तुरत चीन चले गए और अगले चार वर्ष कहीं मेरा घर न था। इसलिए मेरा जीवन कालिज के मकानों तक ही सीमित रहा। यह ठीक है कि मेरे बड़े भाई का विवाह हो चुका था और वह उसी नगर में रह रहा था, पर दुर्भाग्य से उसके घर कष्ट रहता था और मैं इच्छापूर्वक उसमें नहीं घुसती थी। मेरे कालिज-जीवन का सबसे बड़ा त्याग मेरे अन्तिम साल में आया जब वह एक दूर नगर में दूसरी नौकरी पर जाना चाहता था और अपने बच्चों को छोड़ जाने की इच्छा न होने के कारण उसने मुझसे कालिज के बजाय अपने घर में रहने को कहा। मैं अपने भाई तथा उसके दोनों सुन्दर बच्चों से स्नेह करती थी, साथ ही हम दोनों एक-दूसरे की बात का आदर करते थे, इसलिए मैंने उसकी बात मान ली। पर यह कठिन वर्ष था और मेरे लिए दुःखद भी था क्योंकि इससे मुझे ऐसे पुरुष तथा स्त्री के विवाह में होने वाले खतरे की पहली झांकी मिली जिनकी जन्म की पृष्ठभूमि और शिक्षा में बहुत भिन्नता

हो, पर मैं इतना न सीख सकी कि कुछ वर्ष बाद अपने को उसी भूल से बचा लेती।

पर अभी विवाह की बात करने का मौका नहीं आया है। जब मैं कालिज के उन चार वर्षों पर इतनी दूर से नज़र डालती हूं, तब वे कभी मुझे मेरे विभिन्न जगतों से विभाजित ही दिखाई देते हैं। मैं एशिया में भूमण्डल के ऐसे प्रदेश में बड़ी हुई थी जिसमें मेरी कालिज की साथिनों को ज़रा भी दिलचस्पी न थी और जिसके बारे में निश्चय ही उन्हें कुछ जानकारी न थी। इस बात से मेरे चारों ओर एक अजनबीपन (अधिक सीधे शब्दों में कहें तो वैचित्र्य) आ गया था, जो कुछ समय बाद मैंने अपने प्रति उनके रुख में अच्छी तरह देख लिया। कुछ दृढ़ता से मैंने यह अनुभव किया कि यदि मैं इसके बारे में कुछ न करूंगी तो मुझे चार वर्ष अकेलेपन में दुःख से काटने पड़ेंगे क्योंकि तरुण अमरीकन के बाद अमरीकन तरुणी से अधिक क्रूर कोई नहीं होता और जान-बूझकर प्रदर्शित क्रूरता की अपेक्षा लापरवाही की क्रूरता तो और भी अधिक तीव्र महसूस कराती है, विशेष रूप से इस कारण कि मैं ऐसी संस्कृति में बड़ी हुई जिसमें मानवीय सम्बन्धों का सबसे अधिक महत्त्व है। हर आदमी के पूर्ण अलगाव की इस नई संस्कृति में अपने-आपको दीक्षित करने में मुझे कुछ सप्ताह सोचना पड़ा पर मैं यह शिकायत नहीं कर सकती कि मेरी ओर किसीका ध्यान न था। बल्कि उल्टी बात थी—मेरी ओर ज़रूरत से अधिक ध्यान था। लड़कियां मेरी ओर घूरने के लिए झुंड बनाकर आतीं तब मुझे छात्राओं में एकमात्र चीनी छात्रा की—जो अन्तिम वर्ष में थी, और जो अपनी साथिन छात्राओं से मित्रता पूर्ण उपेक्षा के साथ रहती थी—तटस्थता का कारण समझ में आने लगा। वे उससे प्यार भी करती थीं, पर वह उनके आशय की शुद्धता स्वीकार करते हुए भी अपनी बात से कभी नहीं हटती थी। मैं उसकी स्थिति से सन्तुष्ट न थी। मैं अपने ही लोगों की बनना चाहती थी और अपनों की बनने का अर्थ, जैसा कि मैंने शीघ्र देखा, यह था कि मुझे फिर अपने दोनों जगत् अलग-अलग कर देने चाहिए: मुझे उन चीज़ों के बारे में बात करना सीखना चाहिए जिनके बारे में बात करना अमरीकन लड़कियां पसन्द करती थीं—लड़के, नाच, स्त्री-संस्थाएं आदि, और मुझे उनके जैसा सीखना चाहिए और सबसे बड़ी बात यह कि मुझे यह तथ्य छिपाना चाहिए कि मेरे अन्दर एक भिन्नता है जिससे मैं चाहूं तो भी नहीं बच सकती।

सोच-विचार के बाद मैंने यह निश्चय किया कि अपने कालेज-जगत् में यथा-सम्भव पूर्णता के साथ रहूं, इसके सामान्य पुरस्कार, जहां तक सम्भव हो प्राप्त

करू और सबसे बडी बात यह कि हर चीज मे आनन्द अनुभव करू। पहली जरूरत यह थी कि मै कुछ अमरीका के बने कपडे खरीदू, इसलिए मैने अपनी मा के बनाए महीन चीनी लिनन और रेशम के कपडे उठाकर रख दिए। वे हमारे चीनी दर्जी ने प्रेमपूर्ण सावधानी से बनाए थे और उसका विचार था कि उसने मेरी मा द्वारा 'दी डिलिनिएटर' मे दिखाए गए नमूनो की ठीक-ठीक नकल की है, परन्तु मैने शीघ्र ही देखा कि उसके बनाए कपडो और मेरी सहछात्राओ के कपडो मे जमीन-आसमान का फर्क था, और लिनन तथा रेशम की क्वालिटी तथा उसके कढाई के काम की उच्च कोटि की श्रेष्ठता से उसकी बाहो के ढीलापन और घघरो की गलत लम्बाई की त्रुटि दूर न हो सकती थी। मैने कुछ अमरीकन पोशाके खरीदी और अपने बाल, जो मै अब भी चोटी के रूप मे गूथती थी और रिबन से बाधती थी, खोल दिए और अपने चीनी मोची के हाथ से बने चमडे के जूतो की जगह मैने अमरीकन जूते खरीदे। बाहर से मै अमरीकन हो गई। मैने बोलचाल के उचित मुहावरे और कहने के ढग सीखे, पहला साल खत्म होते-होते मुझमे अपनी आयु और कक्षा की और किसी लडकी मे कुछ भी फर्क न रहा। इस तरह मै अपने जगत् मे आ गई।

मै कालिज मे काफी खुश रही, यद्यपि अपने परिवार और घर के बिना बहुत सूनापन अनुभव करने लगती थी। छुट्टिया पेरे लिए मुसीबत थी क्योकि मुझे अपने भाई के घर जाना होता था और वहा अनिवार्य कलह रहता था जो छोटे बच्चो की मधुरता से ही कुछ कम होता था। गर्मियो की लम्बी छुट्टिया मै किसी तरह काटती थी, और पहले वर्ष की छुट्टिया मैने अपने मामा-मामियो और भाई-बहनो से मिलने मे काटी। वे कृपापूर्ण थे पर जिस जीवन से मै परिचित थी, उससे सचमुच दूर थे और यद्यपि मुझे देहात तथा अपने नाना के मकान के पीछे मच के पिछले पर्दे जैसे भव्य एलेगेनी पर्वतो से प्रेम था, फिर भी मै यह नही जानती थी कि मै अपने अमरीकन परिवार से किस तरह बातचीत करू। वे लोग, जैसा कि बिल्कुल स्वाभाविक था, अपने जीवन मे मग्न थे, यद्यपि मै भी उस जीवन मे हिस्सा लेना चाहती थी, पर वह मेरे लिए अजनबी था और बहुत से काम हमे करने पडते थे—दूसरो के यहा जाना, तीसरे पहर लोगो का आना, घर के रोजाना के छोटे-मोटे काम। वे तुच्छ और अरोचक थे और बातचीत उत्साहपूर्ण होते हुए भी सदा स्थानीय होती थी। मुझे ससार की बात सोचने व ससार मे रहने की आदत थी और मेरे लिए

उस छोटे से नगर को केन्द्र बना लेना कठिन था। फिर भी मैंने इसमें आनन्द लेना सीखा जैसे मैं कुछ देर कोई पारिवारिक उपन्यास पढ़ने या नाटक देखने में आनन्द ले लेती, और मैंने व्यक्तियों के नाटक को पास से देखना शुरू कर दिया। मेरे नाना, जो पूरी तरह परिवार के मुखिया थे, उस समय मर चुके थे और उनके स्थान पर मेरे बड़े मामा थे जो एक भलेमानस और दयालु आदमी थे और मेरी मां के रिश्तेदारों की तरह उनके बाल और उनकी आंखें काली थीं। मेरे सब मामाओं और मौसियों में से मेरी मां का शारीरिक सादृश्य झलकता था और इससे मुझे उनके प्रति आकर्षण हुआ, पर फिर भी मेरी मां से वे भिन्न थे—कभी-कभी मुझे ऐसा लगता था कि जैसे वे मन ही मन मेरी मां के इस पाप को पसन्द नहीं करते कि वह परिवार को छोड़कर इतनी दूर चली गई और वह भी मिश्नरी बनने। हम वंश-परम्परा से मिश्नरी नहीं थे, और शायद उन्होंने मेरी मां को अपने परिवार के और लोगों से भिन्न होने पर कभी माफ नहीं किया, पर मैं नहीं जानती कि वह भिन्न क्यों थी। वह इतनी काफी बुद्धिमती थी कि जैसा चाहती, वैसा बन जाती। पर चाहे जो कारण रहा हो, लेकिन उसके जीवन के किसी क्षण उसमें कोई ऐसा भावनात्मक असन्तोष पैदा हुआ होगा जिसकी तीव्र प्रेरणा से उसने अपनी आत्मा की खातिर अपना आनन्ददायक घर छोड़ने का और मेरे पिता के साथ दुनिया के दूसरी ओर जाने का निश्चय किया। रविवारों को मैं परिवार के साथ सफेद गुम्बदों वाले प्रेस्बिटीरियन चर्च में जाती थी जिसमें मेरे पिता का सबसे बड़ा भाई पादरी था और मैं और सबकी तरह मालूम होने की भरसक कोशिश करती, परन्तु मैं जानती थी कि मैं चाहे जितनी कोशिश करूं, पर उन सब जैसी नहीं हो सकती। इधर मेरा दिल अपने देश के प्रति मुग्ध हो गया। ऐसी स्वच्छता कि पेचिश तथा हैज़े की सम्भावना से रहित होने के कारण पानी बेखटके बिना उबाले पिया जा सकता था, और पेड़ से सेब तोड़कर उसे आनन्द से छिलके समेत खाया जा सकता था। नहाने के लिए पानी की प्रचुरता थी। खाली जगह थी, जिसमें कोई नहीं रहता था, मीलों तक फैले खेत और लॉन तथा देहात, शरत्कालीन बनों का वर्ण-वैचित्र्य—इन सब ने मेरे दिल को मुग्ध कर दिया।

एक चीज़ मैं नहीं समझ पाई और आज भी नहीं समझी हूं। वह यह है कि अमरीकनों में दूसरे देशों और लोगों के बारे में दिलचस्पी या उत्सुकता की कमी दिखाई देती है। मुझे इस विस्मय की याद है कि मेरी कालिज की साथिनें मुझसे चीन

के बारे में कभी नहीं पूछती थीं। या वहां के लोग क्या खाते हैं, कैसे रहते हैं, और चीन हमारे देश जैसा है या नहीं, यह कुछ न पूछती थीं। जहां तक याद है, भूमण्डल के दूसरी ओर रहने वाले विशाल मानव-समुदाय के बारे में किसीने भी मुझसे कोई प्रश्न नहीं पूछा। निश्चय ही मेरे परिवार का सदस्य भी मुझसे कोई प्रश्न नही पूछता था और मुझे याद है कि वर्षों बाद मेरे पिता को—जो आधी शताब्दी चीन में रहकर अपने परिवार से अन्तिम बार मिलने आए थे—आने पर इस बात से वडी चोट पहुंची थी कि उनके परिवार के किसी सदस्य ने उन लोगों के बारे में कोई प्रश्न नहीं पूछा जिनकी सेवा में उन्होंने अपना जीवन लगा दिया था। कई दशाब्दियों बाद जब मै रहने के लिए अमरीका आई, तब भी मुझे वही उत्सुकता और दिलचस्पी का अभाव दिखाई दिया और आज जबकि मैंने बीस वर्ष से यही अपना घर बना लिया है और बहुत सुन्दर बस्ती में रहती हूं, तब भी मुझे यही लिखना पड़ता है कि अभी मुझे सामान्य अमरीकन की, एशिया की जीवन-पद्धति में, जरा भी दिलचस्पी दिखाई नहीं दी। किसी किसान ने मुझसे चीनी खेती व फसलों के बारे में कभी नहीं पूछा। किसी डाक्टर ने कभी चीनी चिकित्सकों की मनोरंजक अनमोल चिकित्सा के बारे में नही पूछा। किसी गृहिणी ने कभी मुझसे यह नहीं पूछा कि चीन की स्त्रियां कैसे अपना काम करती है और किसी अमरीकन किशोर-किशोरी ने मुझसे यह नहीं पूछा कि चीन में किशोर-किशोरी कैसे रहते है। यह ठीक है कि कभी-कभी, जब मुझसे स्कूल के बच्चों के सामने बोलने के लिए कहा जाता है तब उनके अध्यापक उन्हे प्रेरित करते है और वे छोटे-छोटे उपयुक्त प्रश्न पूछते है और मैं जो उत्तर देती हूं, वे उन्हें भूल जाते है। एक बार न्यूयार्क मे 'टाउन हाल भाषणमाला' में ग्यारह बजे सवेरे (यह वह समय है जब फुरसत वाली और सुसंस्कृत महिलाएं सभा में आती है) मैने एक भाषण दिया, जो मेरे विचार से आधुनिक समस्याओं पर चीनी चिंतन का पैना विश्लेषण था, और दिए गए समय के अन्त में मैंने प्रश्नों की प्रतीक्षा की। केवल एक सवाल किया गया, वह सामने की कतार में बैठी एक मोटी बूढ़ी महिला ने किया था। वह यह जानना चाहती थी कि न्यूयार्क के चीनी रेस्टोरेन्टों में उसने जो चौप सूई (तिल के तेल में तला हुआ एक मिश्रित चीनी भोजन) खाई थी, वह क्या सचमुच चीनी भोजन है? मैंने उसे बताया कि वह चीनी भोजन नहीं। मै मानती हूं कि भाषण के बाद प्रश्न किए जाते है पर वे अधिकतर राजनीतिक ही होते है, मानवीय नहीं।

वैसे दूसरे राष्ट्रों में दिलचस्पी का यह [illegible] र बिल्कुल महत्त्वहीन होता—इतना ही है कि इससे मानसिक आनन्द का क्षेत्र सीमित हो जाता है—यदि यह तथ्य न होता कि संयुक्तराज्य अमरीका अपने इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण स्थल पर खड़ा है। पहले ही यह बात विनाशकारी हो चुकी है कि हम दूसरे राष्ट्रों को और विशेष रूप से एशिया के राष्ट्रों को, नहीं जान सके, इसलिए उन्हें समझ नहीं सके। इसके परिणामस्वरूप हमने उन्हें प्रभावित करने के अवसर बार-बार खो दिए। मुझे लगता है कि और अवसरों की आशा करने का समय शायद निकल चुका, पर मुझे आशा है कि अभी वह पूरी तरह नहीं निकला। फिर भी, मुझे इसमें सन्देह है कि हमारे लोगों में आदत बनकर बैठी हुई उपेक्षा एक दशाब्दी में या एक पीढ़ी में बदली जा सकती है क्योंकि लोग कहीं भी आसानी से नहीं बदलते।

बहुत पहले जब मैं कालिज में थी तब मैंने अपनी कालिज की साथिनों के इस पहलू पर विचार किया था और जब मैं कभी-कभी उनके साथ उनके घर जाती थी, तब उनके माता-पिता के व्यवहार में भी यह बात दिखाई देती थी। पर मैं छोटी थी, और खतरे तथा उनके सम्भव परिणामों पर आंख मींच लेती थी और एक अमरीकन लड़की की तरह जीवन का आनन्द लेने लगती थी। दूसरे वर्ष में मैंने अपने तरीके जमा लिए थे और मैं समूह के कार्यों में सचमुच दिलचस्पी लेने में समर्थ हो गई थी—इतना ज़रूर था कि खेलों में मेरी कभी गहरी दिलचस्पी नहीं हो सकी। प्रतिस्पर्धा की प्रवृत्ति या तो मुझमें जन्म से ही न थी, और या चीन में गुज़रे मेरे बचपन ने उसको परिवर्धित ही नहीं किया। इस प्रकार मुझे यह बात ज़रा भी महत्त्व की न लगती थी कि खेल में कौन जीता, इसलिए मैं खेलों में नहीं चमकी। जिन विषयों में मुझे आनन्द आता था, उनमें समय बरबाद करने की भी प्रवृत्ति मुझमें न थी—जैसे लेटिन, गणित और भौतिक विज्ञान, और मैं इनके घण्टों में पुस्तकालय में चली जाती और वे पुस्तकें पढ़ती जिन्हें मेरी पढ़ने की सदा इच्छा रही थी पर जो पहले मुझे मिल नहीं सकी थीं। मैं बहुत अधिक, ज़रूरत से ज़्यादा और आग्रहपूर्वक तथा समय-असमय पढ़ती और निश्चय ही इससे मेरा अंकों का सामान्य स्तर नीचा हो गया, पर यहां भी मेरे प्रतिस्पर्द्धाहीन स्वभाव ने मुझे औरों के मुकाबले में ऊंचे अंक लेने की कोशिश करने से रोका। जब मेरे अच्छे नम्बर आए, तब वे आकस्मिक ही थे। जब वर्षों बाद मैं अपने कालिज में गई तब नई छात्राओं में मैंने यह किम्वदन्ती सुनी कि मैं एक बार अंग्रेज़ी में फेल हुई थी। यह बात सत्य नहीं थी

पर जब मैंने यह देखा कि इसपर विश्वास करने से उन्हें सांत्वना मिलती है तो इसका खण्डन करने की मेरी प्रवृत्ति न हुई। इससे क्या फर्क पड़ता है कि मैं फेल हुई थी या नहीं?

अपने तीसरे वर्ष में इतनी काफी अमरीकन हो चुकी थी कि अपनी कक्षा की प्रधान चुनी गई। तब मुझे अपनी कालिज की सहछात्राओं के प्रति औचित्य की दृष्टि से सचमुच अपने को उनके साथ एक करना पड़ा। वह मेरे कालिज़-जीवन का सबसे अच्छा साल था और मैंने इसका आनन्द लिया। दूसरे सम्मान भी मुझे प्राप्त हुए। वे सब मुझे याद नहीं हैं पर उनका भी मेरे सुख में हिस्सा था और मैं इतनी भोली, छोटी या अपने में मस्त थी कि यह अनुभव न कर सकी कि बहुत से सम्मानों से कोई व्यक्ति अधिक प्रिय नहीं हो जाता। यह बात और भविष्य की आशंका मेरे अन्तिम वर्ष में सामने आई जब कुछ रुपये की ज़रूरत होने से मैंने उस वर्ष की सर्वोत्तम कहानी और सर्वोत्तम कविता की पुरस्कार-प्रतियोगिता में भाग लिया और दोनों पुरस्कार जीत लिए। मुझे नकद इनाम से प्रसन्नता हुई थी। मेरा ख्याल है कि उस सम्मान का अनुचित प्रभाव मुझपर नहीं पड़ा था, क्योंकि जहां तक मुझे याद है, मैंने निश्चय ही एक-जैसी रद्दी कहानियां और कविताएं लिखी थीं, पर मुझे इस बात से आश्चर्य हुआ और चोट लगी कि अपनी सहछात्राओं की बधाइयों में मुझे हल्का विद्वेष और इस शिकायत की ध्वनि महसूस हुई कि एक व्यक्ति को दो सर्वोत्तम पुरस्कार दे दिए गए। सोचने पर मुझे इस शिकायत का औचित्य अनुभव हुआ पर फिर भी मैं क्या कह सकती थी!

अपने अन्तिम वर्ष की कोई ऐसी खास बात मुझे याद नहीं जो आनन्ददायक हो और जिससे मेरी बढ़ोतरी में वृद्धि हुई हो। मैं कालिज के क्षेत्र से बाहर अपने भाई के घर रहती, और अपने भाई के बताए हुए एक रहस्य का बोझ मेरे हृदय पर था—वह यह कि उसने तलाक लेने का फैसला किया है। उसने मुझसे माता-पिता को यह बात लिखने को कहा। मेरे लिखने पर उन्होंने जवाब में इतने भय तथा घृणा से पत्र लिखा कि उसने सारा मामला कई साल के लिए स्थगित कर दिया। हमारे दोनों ओर के परिवार अत्यधिक रूढ़िप्रिय थे और हमारे कुल में कभी तलाक नहीं हुआ था। मेरे माता-पिता के मन में यह बात न समाती थी कि खास उनका पुत्र ऐसा पाप करे। मेरी मां ने मुझे रोते हुए पत्र लिखा—कागज़ पर आंसुओं के धब्बे मुझे दिखाई दे रहे थे—और उसमें अपने को इस बात के लिए दोषी ठहराया कि

उसने मेरे भाई को पन्द्रह साल की उमर मे अमरीका भेज दिया था।

मेरा भाई और मै चुपचाप एक जगह मिले और कई घण्टे बातचीत करते रहे। बहुत सोच-विचार के बाद अपने मा-बाप की खातिर उसने तलाक स्थगित करने का फैसला किया। अपने निश्चय पर दृढ रहते हुए उसने वर्षो बाद उनकी मृत्यु होने तक तलाक का प्रार्थनापत्र नही दिया, यद्यपि बीच के वर्षों मे वह अलग और अकेला रहता रहा—उसके बडे होते बच्चे अवश्य उसके पास आते-जाते रहते थे। अपने इतने निकट व्यक्तिगत जीवन का यह सबसे अधिक अकेलापन पैदा करने वाला अनुभव था क्योंकि इसका अर्थ यह था कि अपने अमरीका रहने के वर्षो मे सामान्य जीवन बिताने की जो सुविधा अपने भाई के घर थी, वह न रही, यद्यपि मानव-प्रकृति और विवाह के कठिन सम्बन्धो के बारे मे मेरा ज्ञान बढा।

इस प्रकार मेरी कालिज-शिक्षा का अन्त हुआ और मै नवीन ग्रेजुएटो के लम्बे जलूस मे खडी हुई। मैने अपना डिप्लोमा ले लिया और अन्त मे यह जानकर मुझे अकेलापन महसूस हुआ कि और लडकियो की तरह मेरे माता-पिता वहा नही थे यद्यपि उस समय तक कम से कम ऐसे अकेलेपन की आदत मुझे पड चुकी थी। सिहावलोकन करने पर मुझे यह देखकर आश्चर्य होता है कि कालिज मे मैने कितना कम सीखा। मै जानती हू कि इसमे मेरे सिवाय और किसीका दोष नही था। कालिज मेरे जीवन की एक छोटी घटना, और इसकी मुख्य धारा से अलग घटना हुई। यह एक ऐसा अनुभव था जो आज भी प्रसगवश प्राप्त हुआ लगता है। मुझे लगता है कि मेरा अन्य अमरीकन लडकियो की तरह होने का प्रयत्न, जो अपने तरीके से सफल था, स्थायी न था और कालिज के बाद मेरे सामने फिर मेरे दो जगत् खडे थे—दोनो मे से मै किसे चुनू ? मै स्थायी रूप से अमरीकन बनने के लिए यहा रहू या फिर चीन अपने घर लौट जाऊ ?

सामान सभालने और विदाई के दिनो मे मै इस सवाल पर विचार करती रही। मै जानती थी कि मै यही रहना चाहती हू। दोनो मे से मेरे हृदय ने अपने ही देश को चुना था और मै अब यह समझने लगी थी कि कालिज की दीवारो से बाहर सारा देश पडा है जिसे मै नही जानती, यद्यपि यह मेरा है और मै इसीमे पैदा हुई हू। मुझे अपनी रोजी कमानी थी, पर यह कोई समस्या न थी और इस विषय मे मुझे अपने-आपमे काफी निश्चिन्तता थी। पढाने के कई स्थानो मे से मै कोई एक चुन सकती थी जिनमे से एक उस कालिज मे ही था जिसमे मनोविज्ञान मे मै उस

प्रोफेसर की सहायक हो जाती जिससे मैंने इसकी विशेष शिक्षा ली थी। अपने अंतिम वर्ष में मैं उनकी थोड़ी-बहुत सहायक रही थी और प्रथम वर्ष वालों के परीक्षापत्र ठीक करने में उनकी सहायता करती थी, पर मेरे अंत:करण ने मुझे अपने माता-पिता के पास लौट जाने के लिए प्रेरित किया। मैं मिशनरी नहीं बनना चाहती थी क्योंकि मैं जानती थी कि मैं लोगों को अपना धर्म बदलने का उपदेश या प्रेरणा कभी नहीं दे सकती। पिछले वर्षों में मैंने इस खतरनाक काम का बहुत कुछ देख लिया था। इसके अलावा मुझमें वे आध्यात्मिक अभिवृत्तियां भी नहीं थीं जो मुझसे यह कहलवा सकतीं कि मेरा धर्म और सब धर्मों से उत्कृष्ट है। मैंने बहुत से अच्छे लोग देखे थे, जो ईसाई न थे, और जैसे कि मेरे पिता कहा करते थे—यह स्वीकार करके हर किसीका दर्प दूर हो जाएगा कि ईसाई बने हुए उत्कृष्टतम लोग पहले भी अच्छे आदमी थे: ईसाई धर्म ग्रहण करने से पहले भी वे उत्कृष्ट बौद्ध या मुसलमान या ताओ-पंथी थे।

एक दिन मेरे पिता का पत्र आया कि मेरी प्यारी माता को संग्रहणी (स्प्रू) हो गई है—यह उस समय एक ऐसा उष्णदेशीय रोग था जिसकी चिकित्सा कोई न जानता था। फिर भी यह धीरे-धीरे घातक प्रभाव करने वाला रोग था। रक्त के लाल कण इससे धीरे-धीरे कम होते जाते थे और अन्त में रोगी घातक रक्तहीनता से मर जाता था। मैंने तत्काल इरादा कर लिया। मैंने विदेशी मिशनों के प्रेस्बिटीरियन बोर्ड को (इसकी ओर से मेरे माता-पिता कार्य करते थे) पत्र लिखा जिसमें मैंने अध्यापक के रूप में अपने-आपको चीन भेजे जाने के लिए आग्रह किया, और अपना सामान बांधकर जहाज़ मिलते ही जाने के लिए तैयार होकर बैठ गई। मैं अपनी इस चीन वापसी को स्थायी नहीं समझती थी, बल्कि केवल अपनी माता के अच्छा होने तक के लिए समझती थी, या यदि वह अच्छी न होती तो तब तक के लिए, पर उस अंत का मैं सामना नहीं कर सकती थी।

जैसे ही मुझे जहाज़ मिलने का निश्चय हुआ, वैसे ही बोर्ड का एक पत्र आया जिसमें लिखा था कि योरप में युद्ध का खतरा हो गया है और तब तक के लिए सब विदेशी यात्राएं स्थगित रहेंगी जब तक यह स्पष्ट न हो जाए कि हमारा देश उसमें कहां तक पड़ेगा। यह हमारे कालिज-जीवन के दुनिया से दूर होने का उदाहरण है कि यह समाचार हमें बिजली की तरह लगा। हम योरप का इतिहास पढ़ रहे थे, पर फिर भी हमारी पढ़ाई ने हमें योरप महाद्वीप को अपने नियन्त्रण में लाने के लिए

यत्नशील जर्मन-जातियों के विद्रोह के लिए तैयार नहीं किया था। यह सच है कि हमारे इतिहास के प्रोफेसर ने कुछ वर्ष बाद ऐसी बात होने की सम्भावना बताई थी, पर हममें से कोई भी इसे अपने जीवनकाल का हिस्सा न समझती थी। मेरे लिए इस समाचार के साथ विशेष अशुभ आशंका भी आई, क्योंकि मैं इसे पूर्व तथा पश्चिम के बीच अनिवार्य संघर्ष का आरम्भ, एक दीर्घकालीन युद्ध को भड़काने वाली घटना, समझती थी। फिर भी मैंने अपने-आपको समझाया या समझाने की कोशिश की कि एक छोटे-से योरपियन नगर में किसी मामूली आर्कड्यूक की हत्या से युद्ध की ज्वाला नहीं आरम्भ हो सकती, पर मैं नहीं समझती थी कि अपने-आपमें इस अर्थहीन छोटी-सी घटना के नीचे भावनाएं कितनी अधिक आविष्ट और अति-आविष्ट थीं। यह मानवीय शत्रुताओं की छीलन का दहकना था, और भूमंडल के चारों ओर आग से आग लगती गई।

ऐसे समय में अपने माता-पिता को तार देने, अपना सामान खोल लेने और कहीं जम जाने के अलावा और क्या कर सकती थी! मैंने सबसे आसान काम समझकर कालिज में सहायक का पद स्वीकार कर लिया, पर यह स्पष्ट कर दिया कि मैं इस शर्त पर इसपर आ सकती हूं कि किसी भी समय मुझे त्यागपत्र देने और अपनी रोगी माता के पास जाने की छूट रहे। इस प्रकार मैंने सारे देश से आने वाली प्रथम वर्ष की लड़कियों को मनोविज्ञान पढ़ाने का काम आरम्भ कर दिया। अब मुझे उनमें से एक होने की आवश्यकता न थी। मैं उनकी अध्यापक थी और कम आयु की होने के कारण यह और भी अच्छा था कि मैं अपना सिर ऊंचा करके चलती और छात्राओं से दूरी बनाए रखती।

नवम्बर में मेरी मां की हालत और बिगड़ गई। यद्यपि उस समय युद्ध के बादल पहले से घने हो गए थे, पर चिंता और दबाव के जोर से मैंने प्रेस्बिटीरियन बोर्ड को इस बात के लिए मना लिया कि वह मुझे घर जाने दे। मेरी एक सहछात्रा और घनिष्ठ सहेली ने उदारतापूर्वक मेरा कार्य संभाल लिया और मैं अकेली पृथ्वी और महासागर के सुदीर्घ प्रसार के पार उस देश लौटने के लिए रवाना हो गई जिसे मैं और देशों से अधिक अच्छी तरह जानती थी, फिर भी चार वर्ष मेरे बाहर रहने के दिनों में जो बहुत कुछ बदल गया था। मैं फिर चीनी में सोचने लगी। इन चार वर्षों में मैंने चीनी भाषा का एक शब्द भी नहीं बोला था क्योंकि हमारी एक चीनी छात्रा शांगहाई की थी और मण्डारिन नहीं बोलती थी और मैं उसकी बोली

नहीं जानती थी। चीनी मेरी प्रथम भाषा थी पर कालिज के सालों में मैंने केवल अपनी द्वितीय भाषा अंग्रेज़ी बोली थी और अपने अनजान में मैंने वर्जिनिया की भाषा का कोमल लहजा सीख लिया था। मुझे याद है कि जहाज़ पर एक तरुण अमरीकन ने मेरा चाइना (चीन) शब्द का उच्चारण भी शुद्ध कराया, जिसे वह आग्रह से कहता था कि मैं 'चाहना' बोलती थी।

वह बड़ा सावधान नौजवान था जो स्टैंडर्ड आयल कम्पनी का काम करने फिलिपीन जा रहा था और जहाज़ पर के खाली सप्ताहों में वह मेरी अमरीकन शिक्षा का हिस्सा बना। मैं कुछ अमरीकन पुरुषों से थोड़ी देर के साथियों के रूप में परिचित हो चुकी थी, पर वह दूसरी ही तरह का आदमी था। रास्ते में किसी जगह हमने पहले अलग और फिर इकट्ठे दृढ़ता से यह निश्चय किया कि हम जहाज़ पर तो परस्पर मित्र रहेंगे, पर शांगहाई में अलग होने के बाद इस मित्रता को जारी नहीं रखेंगे और हमने यह रखी भी नहीं। मुझे याद नहीं कि हम इस कठोर निश्चय पर क्यों पहुंचे, क्योंकि हमारे बीच कुछ भी विषम बात न थी, पर मेरा ख्याल है कि इसका सम्बन्ध उसके शर्तनामे से, और निश्चय ही मेरे इस दृढ़संकल्प से था कि जब तक मेरी मां के जीवन का सवाल तय न होगा, तब तक मैं अपने-आपको किसी-के साथ न उलझने दूंगी। पर जहाज़ की मैत्रियां क्षणभंगुर होती हैं और यांगत्से के पीले पानी का प्रवाह नीले को गंदला करता हुआ जहां दौड़ा आ रहा था, वहां पहुंचकर विशाल प्रशांत महासागर का जादू निश्चय ही सहसा खत्म हो गया।

जो भी हो, मेरे लिए यथार्थ जीवन तब आरम्भ हुआ जब मेरे पिता की लम्बी पतली आकृति और मेरी छोटी बहन की छोटी आकृति मेरी अगवानी के लिए जहाज़-घाट पर दिखाई दी। मेरी मां की अनुपस्थिति का तथ्य ही मेरे हृदय में चुभा। उन दोनों में से कोई भी सचाई से कुछ कम बात कहने में ज़रा भी समर्थ नहीं था। वह शांगहाई आने लायक न थी, पर वह मुझे चिंकियांग में गाड़ी पर लेने आई थी।

आजकल मैं माता-पिताओं और बच्चों के बीच अत्यधिक अनुराग के विरुद्ध बहुत-सी चेतावनियां पढ़ती हूं और मुझे निश्चय है कि इसके खतरे उचित से अधिक समझ लिए गए हैं। माता-पिता और बच्चे में गहरा प्रेम होना चाहिए, हृदय से हृदय बंधा होना चाहिए क्योंकि यदि बालक अपने माता-पिता से गहरा प्रेम करना नहीं सीखता तो मैं समझती हूं कि वह और किसीसे भी गहरा प्रेम करना कभी नहीं

सीखेगा। और प्रेम करना न जानने का अर्थ है जीवन के असली अर्थ और उसकी पूर्णता का अभाव। मैं अपने माता-पिता से प्यार करती थी, पर अलग-अलग समय और अलग-अलग तरीकों से। बचपन में मेरा सारा प्यार अपनी मां से था और अपने पिता से मुझे कुछ भी प्यार अनुभव नहीं होता था, यहां तक कि ग्यारह वर्ष की आयु में एक दिन मैंने कहा कि मैं उनसे घृणा करती हूं। मेरी मां ने मुझे डांटा, पर इस बारे में कोई शोर-गुल नहीं किया गया और मेरे पिता ने कुछ नहीं कहा, यद्यपि उन्होंने मेरी बात सुन ली थी। मुझे यह नहीं महसूस कराया गया कि मैं बुरी और अकृतज्ञ हूं। और इस प्रकार मैं अपने पिता से हल्की घृणा तब तक करती रही जब तक कि मैं उन्हें समझने लायक और काफी सयानी न हो गई। जब वे सत्तर से अस्सी वर्ष के बीच थे, तब मैं उनकी भक्ति करती थी और उन्हें आनन्द-पूर्ण और मोहक, स्नेहपूर्ण और मनोरंजक पाती थी। वे भी इस बात को जानते थे और हमारे बीच के मैत्रीपूर्ण वातावरण में प्रसन्नता अनुभव करते थे। पर इस बात में न मेरा दोष था न उनका कि हमें एक-दूसरे को समझने के लिए ऐसी आयु तक प्रतीक्षा करनी पड़ी। पहले वे यह न जानते थे कि मेरे जगत् में कैसे प्रवेश करें और मैं यह नहीं जानती थी कि उनके जगत् में कैसे प्रवेश करूं। हम दोनों को एक-साथ समय और प्रौढ़ता में आगे बढ़ना पड़ा और मुझे खुशी है कि उन्हें इसके लिए आवश्यक दीर्घ जीवन मिला।

अपनी मां से मेरा प्रेम एक अलग ही चीज़ थी। इसकी जड़ मेरे खून और मेरी हड्डियों में थी। मुझे उसकी हर पीड़ा अनुभव होती थी। जब उसके दिल को चोट लगती, तब मुझे पता चल जाता था। उसके दिल को सदा बड़ी आसानी से चोट लग जाती थी—यहां तक कि अपने जीवन के अन्तिम दिनों में उसे लोगों पर यह सन्देह रहने लगा था कि वे उसे अनुचित रूप से चोट पहुंचाना चाहते हैं। यद्यपि मैं जानती थी कि यह बात गलत है और उससे बहस करके उसके विचारों का खंडन करती थी, फिर भी उन लोगों को मैं क्षमा नहीं कर सकती थी जो उसे अनजाने में चोट पहुंचाते थे। मैं चाहती थी कि उसका जीवन यथासम्भव अच्छे से अच्छा रहे। यह इच्छा शायद इस कारण और भी तीव्र हो गई कि मुझे यह लगता था (यद्यपि उसने कभी इस बात को स्वीकार नहीं किया) कि जैसे-जैसे उसकी आयु बढ़ती गई, वैसे-वैसे वह अपनी बहुत छोटी आयु में छोड़े देश की याद में बेहद उदास होती गई। उसका लौटना असम्भव था— वह मेरे पिता को छोड़कर न जा

सकती थी और अपने दुर्बल हृदय और कमज़ोर ढांचे से फिर महासागर पार न कर सकती थी।

वह कितनी कमज़ोर हो गई थी, इसकी कुछ भी कल्पना मैं तब तक न कर सकी जब तक मैंने उसे चिंकियांग में रेलवे स्टेशन पर नहीं देखा। वहां वह खड़ी थी और मैंने पुष्ट सीधी आकृति के बजाय—जिसकी मुझे याद थी—एक छोटी-सी महिला देखी जिसने अपने घने सफेद बाल जूड़े की तरह बांध रखे थे, जिसकी काली आंखें चमक रही थीं और होंठ कसे हुए थे; कपड़ों से वह सजी थी, जैसे सदा सजी रहती थी, पर सिमटकर इतनी ज़रा-सी हो गई थी कि जब मैं उसकी ओर दौड़ी, तब मैंने उसे अपने हाथों में उठा लिया।

'अम्मा, तुम कितनी ज़रा-सी हो।' मैं बोली।

'बेटी, तू कितनी बड़ी है!' उसने हंसते हुए जवाब दिया।

उसकी कमज़ोरी देखकर मेरा दिल कांप गया और मैंने अपने आंसू रोकने की कोशिश की। उसने यह बात देख ली और मुझे घुमाकर उस भीड़ की ओर कर दिया जो मेरा स्वागत करने आई थी—मेरी पुरानी चीनी सहेलियां, मेरी अंग्रेज़ ऐगनेस और उसका परिवार, कुछ अमरीकन मिशनरी, हमारे नौकर तथा पड़ौसी। यह कितनी हृदय को प्यारी लगने वाली वापसी थी! वे सबके-सब मुझसे एकसाथ हाथ मिलाने की कोशिश कर रहे थे। वे मेरे हाथों को चिपक रहे थे, बोल रहे थे और मुझे फूल, चीनी स्पंज-केक तथा तिल की गजक की पुड़ियां दे रहे थे। यह हल्का और चमकीला तीसरे पहर का समय था, यद्यपि नवम्बर के पिछले दिन थे। हम खड़े रहे जिससे मैं प्रत्येक से बातचीत कर सकूं। शीघ्र ही स्टेशन के कर्मचारी हमारे चारों ओर इकट्ठे हो गए; वे हमारी ओर घूर रहे थे और टीका-टिप्पणी कर रहे थे। मैं फिर घर आ गई थी, यद्यपि मेरे बाहर रहने के वर्षों में वह कम्पाउंड, जिसमें मैं बड़ी हुई थी, लड़कों के एक स्कूल को दे दिया गया था, और पुराना बंगला तोड़-कर उसके स्थान पर एक नई दोमंज़िली आधुनिक कोठी बन गई थी। मेरे माता-पिता एक दूसरी पहाड़ी पर चले गए थे और उनके लिए एक और सादा मिशन का मकान बना लिया गया था, पर घाटियां और पहाड़ियां वही थीं और जब हम इन परिचित सड़कों पर आगे बढ़े, तब खेतों में काम कर रहे किसानों ने मुंह ऊपर उठाकर मुझे देखा, और अपने कुदाल रखकर मुझसे बातचीत करने चले आए। मुझे देखते ही उनकी पत्नियां और बच्चे मुझसे मिलने के लिए मकानों से

बाहर दौड़ पड़े।

'अच्छा, तुम लौट आई हो ?' उन्होंने चिल्लाकर कहा, 'अच्छा किया, बड़ा अच्छा किया।'

और जब हम नये मकान में आए, जो मेरे लिए अपरिचित था, तब मैंने देखा कि मेरी मां ने मेरे लिए ऊपर का सबसे सुन्दर कमरा खाली कर रखा था, जिससे कुछ दूर पर नदी और हरी घाटी दिखाई देते थे। यह खाली कमरा था जिसमें बहुत कम, सादा फर्नीचर था, और फर्श पर टाट नहीं बिछा था, पर देर में खिलने वाले गुलाबों के गमले डेस्क और ड्रेसिंगटेबल पर रखे थे और मेरी मां ने खिड़कियों के लिए सफेद पर्दे बना दिए थे। अब मेरा पुराना बिस्तर वहां था और मेरी बचपन की पुस्तकें दीवार में बने एक छोटे-से ताक पर थीं और यह फिर घर बन गया था।

उस रात मेरी मां और मैं बड़ी देर तक बात करते बैठे रहे। और मैंने उससे उसके बारे में पूछा और उससे यह बताने के लिए कहा कि उसे संग्रहणी (स्प्रू) कैसे आरम्भ हुई। फिर मैं उसे पकड़कर बैठ गई, और बताने को ज़िद करने लगी। इसपर मां ने अनिच्छा से अपना घाव-भरा लाल मुंह दिखाया और बताया कि यह बुरा रोग–जो एक तरह का फफून्द समझा जाता था–उसके मुंह और गले तथा आंतों की श्लेष्मिक झिल्लियों को नष्ट कर रहा था, जिसके कारण उसे अधिक बोलने में या बहुत हल्के सादे भोजन के अलावा और कुछ खाने में कष्ट होता था; और यह बात उसने मुझसे छिपाई थी ! मैं उसके गले में बांहें डालकर रोने लगी। उसने मुझे दिलासा देते हुए कहा कि अब जब कि मैं घर लौट आई हूं, वह अपनी पूरी ताकत से बीमारी से लड़ेगी और फिर अच्छी हो जाएगी। मैंने अपनी आंखें पोंछीं और उसकी परिचर्या में लगने का संकल्प किया। मुझे खुशी थी कि मैंने घर आने का फैसला किया और मुझे निश्चय था कि मैंने अमरीका छोड़ने का फैसला ठीक ही किया था। यह मैंने चीन के प्रेम से नहीं किया था, बल्कि अपनी मां के जीवन के प्रेम से किया था।

अब मेरा अपना जीवन फिर विभाजित हो गया। रोज़ का काम एक तो यह था कि लड़कों के नये स्कूल में पढ़ाऊं और सत्रह से बीस तक चीनी तरुणियों की देखभाल करूं जिन्हें दूसरे स्कूल में अनेक प्रकार के कामों के लिए प्रशिक्षित किया जा रहा था, और दूसरा था अपनी मां की सेवा करना। उसे आराम पहुंचाने के

लिए मैंने घर का प्रबन्ध संभाल लिया और उसके स्थान पर स्त्रियों में वह काम करने लगी ज़िसकी ज़िम्मेदारी उसपर थी। मैं धार्मिक सभाओं में प्रवचन न कर सकती थी पर मेरी मां स्वयं इस तरह का काम अधिक नहीं करती थी। वह उस धर्म की अच्छाइयों का, जिसपर उसका अब भी उत्साहपूर्वक विश्वास था, सीधा प्रभाव डालने में बड़ा संकोच महसूस करती थी। उसकी सभाए आम तौर से मैत्रीपूर्ण सभाएं होती थीं जिनमें स्त्रियां अपनी कठिनाइयां, अवसर और आवश्यकताएं बताती थीं तथा मेरी मां हरएक की मांग पूरी करने की भरसक कोशिश करती थी। उसका स्थान संभालने की दृष्टि से मैं बहुत छोटी थी पर मैं ध्यान से सुन सकती थी और अगली बैठक में उसकी सलाह बताने का वचन दे सकती थी। चीनी स्त्रियों को इस तरह मेरी मां पर भरोसा होने के कारण उनके मन की बात सुनना अमूल्य अनुभव की बात थी और ऐसे ही मां के स्थान पर मुझे स्वीकार कर लेने की उनकी बात मुझे सदा बड़ी मर्मस्पर्शी लगती थी।

इसके अलावा मैंने उस बीमारी को निर्मूल करने के लिए जो मेरी मां को लग गई थी, भयंकर और संकल्पपूर्ण प्रयत्न आरम्भ किया और मैं इसके बारे में अधिक से अधिक जानने के लिए डाक्टरों के साथ कार्य करने लगी। तब इलाज के तौर पर एकमात्र खुराक की ही परीक्षा की गई और हमने उसके लिए सबसे अधिक उपयुक्त भोजन का पता लगाने के लिए सब ज्ञात भोजनों के परीक्षण किए। कुछ रोगियों ने केले से लाभ होने की बात कही तो लम्बे समय से बीमार मेरी मां को महीनों केलों पर रखा गया, जो उसका कभी भी प्रिय भोजन न था। फिर हमने सुना कि ताज़ी स्ट्राबेरी फायदेमन्द है और हमने स्ट्राबेरी की खेती शुरू की। हमें ताज़ा कच्चा दूध सबसे अधिक अनुकूल भोजन प्रतीत होता था। अब गाय का ताजा कच्चा दूध प्राप्त करना मेरे लिए समस्या हो गई। मैं नहीं जानती कि चीनी दूधिये ही इस तरह सबसे अधिक धोखेबाज़ दूधिये होते हैं, या सब जगह के दूधिये ही ईमानदारी से और औसत इन्सान से नीचे गिरे हुए होते हैं—निश्चय ही उन दिनों कोई ईमानदार दूधिया तलाश करना असम्भव था। चीनी लोगों को गाय का दूध पीने का कभी अभ्यास न था। सच पूछो तो यह विचार ही उनके लिए घृणा पैदा करने वाला था; कुछ तो इस कारण कि बौद्ध लोग यह समझते थे कि दूध पीने का अर्थ बछड़े से उसका जीवन छीनना है और कुछ यह था कि जो गाय का दूध पीते थे उनमें गाय की गंध आती थी, या कम से कम वे ऐसा कहते थे। फिर भी गाय के दूध को स्वास्थ्य का

पश्चिमी साधन समझा जाने लगा था और चीनियों में नई रोशनी के लोग शांग-हाई में अमरीकन दुकानों से अपने बच्चों के लिए डिब्बाबन्द दूध उत्सुकता से खरीदने लगे थे। मानवीय दूध को चीनी लोग छोटे बच्चों और बूढ़े लोगों के लिए सदा बड़ा लाभकारक समझते थे, पर वह महंगा और औसत आदमी के लिए अनुपयुक्त था। इसलिए कुछ साहसी चीनी एक या दो गाय खरीद लेते थे और कच्चा दूध विदेशियों को बेचते थे। कभी-कभी गायें केवल भैंसें होती थीं और यद्यपि उनका दूध अच्छा होता था, पर वह मात्रा में थोड़ा पर बहुत अधिक चिकनाई वाला होता था—इतनी अधिक चिकनाई मेरी मां की नाजुक पाचन-शक्ति के लिए अनुपयुक्त थी। सारे दूध को उबालना तो पड़ता ही था जिससे इसका बहुत कुछ मूल्य नष्ट हो जाता था। इसके अलावा, उबला दूध आंतों के लिए बड़ा भारी होता है अतः उबले दूध की खुराक पर रहने से पेट में गड़बड़ पैदा हो जाती है। साफ, बिना पानी का कच्चा दूध कैसे प्राप्त किया जाए मेरे लिए यह समस्या थी, और उस समय मैं गायों के बारे में कुछ न जानती थी। इसलिए मैंने यह सोचा कि दूधिया अपनी गाय लेकर हमारे पिछले आंगन में आए और वहां अपने हाथ गर्म पानी और साबुन से धोकर कृमिनाशक में डुबोने के बाद बर्तन में मेरी आंखों के आगे दुहे। हमने कुछ दिन ऐसा किया, पर अब भी दूध बड़ा नीला पतला होता था। एक दिन हमारे वफादार रसोइये ने मुझसे कहा कि दूधिये की कलाइयों पर नीचे लटकी गन्दी सूती बांहों के नीचे बारीकी से देखो। मैंने देखा, उसकी दाई कलाई के नीचे रबर की एक पतली नली थी और उस कलाई से पानी की एक पतली धारा दूध की बाल्टी में आती थी। मैंने झुककर चौड़ी बांहों को पीछे को सरकाया तो उसमें रबर की एक गरम पानी की थैली निकली जो उसने किसी विदेशी के नौकर से खरीदी थी। उसमें पानी भरा था। इसपर मै अवाक् रह गई और क्षणभर तक उसे तिरस्कार भरी नज़रों से देखती रही।

वह काफी शर्मिन्दा हुआ, यद्यपि मेरा ख्याल है कि वह शर्मिन्दगी क्षणिक थी। फिर वह बोला, 'पर मैंने पानी उबाला था छोटी बीबी, मैंने सचमुच उबाला था। मैं जानता था कि विदेशी लोग हमेशा उबला पानी पीते हैं। और दूध में चिकनाई इतनी अधिक है कि मुझे डर था कि तुम्हारी आदरणीय मां बीमार हो जाएगी।'

उसके बाद हमने कच्चे दूध का परीक्षण बन्द कर दिया। तत्पश्चात् परीक्षण करके चावल की खिचड़ी, ताज़े फलों के रस, हल्के उबाले अण्डे तथा जिगर की वह

खुराक निकाली जिससे मेरी मां का जीवन कम से कम कुछ लम्बा होने में मदद मिली, यद्यपि वह अपने शेष थोड़े-से वर्षों में वस्तुतः फिर कभी अच्छी नहीं हुई। अब बेशक उष्णदेशीय रोगों के डाक्टर जानते हैं कि संग्रहणी (भोजन में किसी) न्यूनता का रोग है, और यद्यपि केले, ताज़ी स्ट्राबेरी और कच्चा दूध तथा जिगर कुछ विटामिन पहुंचाने में उपयोगी थे, पर अधिक विटामिनों की आवश्यकता थी; लेकिन यह बात मेरी मां के गुज़र जाने के बाद मालूम हुई।

घर के भीतर के इस संघर्ष से बाहर मेरा जीवन दूसरी ही किस्म का था। अपने अध्यापन में मेरी गहरी दिलचस्पी थी क्योंकि मेरे विद्यार्थी बच्चे न थे। वे हाई स्कूल की बड़ी कक्षाओं के विद्यार्थी थे और अपनी आयु के पश्चिमी लड़कों से कहीं अधिक प्रौढ़ थे। उनमें से कइयों का विवाह हो चुका था और कुछ के बच्चे थे। मैं उनके साथ बड़ों जैसा व्यवहार ही कर सकती थी, यद्यपि मैं उनसे बहुत अधिक बड़ी नहीं थी। मेरा काम उन्हें अंग्रेजी पढ़ाना था और इस भाषा में हम उनकी गहरी दिलचस्पी के विषयों पर बातचीत करने की कोशिश करते थे। जितना मैं उन्हें पढ़ाती थी, उससे अधिक वे मुझे पढ़ाते थे, क्योंकि जैसा कि मैंने पहले कहा, मैं जब कालिज में पढ़ने गई थी तब चीन में बड़ी-बड़ी बातें हो चुकी थीं। मैं गड़बड़ के समय गई थी। कमज़ोर छोटा सम्राट् पू यी गद्दी पर बैठा था, पर उस बूढ़ी प्रचण्ड राजमाता के गुज़र जाने के बाद कोई असली शासक नहीं रहा था। अब मांचू-वंश का अन्त निकट आ रहा था। जैसा कि ऐसे समय हुआ करता है, चीनी लोग दार्शनिक ढंग से एक नये शासक के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे और अनेक स्थानीय नेता सेनापतियों का रूप ग्रहण कर रहे थे। यह पूर्णतया चीनी और तत्वतः लोकतन्त्रीय प्रक्रिया थी, और परम्परा नये शासक को मजबूर करती थी कि वह जनता को आराम पहुंचाने के लिए भरसक कोशिश करे जिससे उसकी गद्दी मजबूत हो; पर पहली पीढ़ी में गद्दी मुश्किल से ही पक्की होती थी, क्योंकि चीनी लोगों को अपने शासकों की आलोचना करने की आदत थी और जिस तरह अमरीकन लोग आसानी से किसीका आदर करने लगते हैं वैसे वे नहीं कर पाते। दूसरी पीढ़ी से राष्ट्रीय कामकाज ढर्रे पर आ जाता था, और राजवंश पूरी शक्ति पाने की दिशा में अग्रसर हो जाता था।

मैंने अब देखा कि यह ऐतिहासिक प्रक्रिया बिगड़ गई है। राजवंश का खात्मा होने पर सदा की तरह युद्ध-नायक लड़ रहे थे। उनकी आकांक्षा का केन्द्र कोई

सिंहासन नहीं था। जब मैं शान्ति से कालिज में पढ़ रही थी तब एक वास्तविक क्रान्ति हो रही थी, जिसके सुलगाने वाले एक दर्जन प्रचण्ड लोग थे, पर मुख्य रूप से निर्भीक सन यात-सेन थे। उनका नाम मैं बेशक पहले से जानती थी, पर वह सदा शक से घिरा रहता था क्योंकि किसीको पता न था कि उनके बारे में क्या सोचे। वे दक्षिण चीन के एक देहाती किसान के पुत्र थे, पर मिशन स्कूल में पढ़ने गए थे और जब वे सात वर्ष के थे, तब ही उनका बड़ा भाई उन्हें होनोलूलू ले गया था जहां वह व्यापार करता था। वहां भी उन्होंने एक ईसाई स्कूल में शिक्षा पाई थी और अमरीकन सरकार को काम करते देखा था। वे स्वयं कोई मामूली मिशनरी नहीं थे क्योंकि उन्होंने शीघ्र ही अपने देश को आधुनिक रूप देने की विशाल धारणा बनाई और वह शिक्षा द्वारा या निबन्ध लिखकर और पुस्तकों का अनुवाद करके नहीं, जैसे कि दो प्रसिद्ध विद्वान् लियांग चिह-चाओ और कांग यू-वेई निर्वासित होकर कर रहे थे, बल्कि राजगद्दी को उखाड़ फेंकने में और संयुक्तराज्य अमरीका के शासन के वैधानिक ढांचे के अनुरूप गणराज्य की स्थापना करने में मदद देने के लिए दूसरे चीनियों को भड़काकर। इस तरबूज़ जैसे बड़े विचार को अपने दिमाग में लिए उन्होंने अपना डाक्टरी का पेशा छोड़ दिया और एक तरह के देशभक्त तीर्थ-यात्री की तरह अपनी क्रान्ति के लिए संसार के हर हिस्से में चीनियों को तलाश करने और उनसे रुपया जमा करने चल पड़े। इधर उन्हें आशा थी कि वे विदेशी सरकारों को नये चीन के निर्माण में मदद देने के लिए प्रेरित कर सकेंगे।

यह वैसा पागलपन भरा स्वप्न था जो तभी सफल हो सकता है जब बहुत-से लोगों की मानसिक स्थिति अपनी देश की अवस्था सुधारने की किसी आशा को स्वीकार करने को तत्पर हो। विदेशी सरकारों ने, जैसी कि सम्भावना ही थी, सन यात-सेन को झटककर अलग कर दिया, पर विदेशों में रहने वाले चीनियों ने उन्हें अपनी पूरी सहायता दी और उनपर अपनी आस्था रखी। व्यापार के कारण अपने देश से बाहर रहने पर भी वे देशभक्त चीनी थे। उनकी यह इच्छा थी कि उनका देश शक्तिशाली, महान् तथा उपनिवेश बनने से सुरक्षित रहे। वे सन यात-सेन की इस बात से सहमत थे कि आधुनिकता लाने से उसकी रक्षा हो सकती है।

इस विलक्षण आदमी की कहानी इतनी बार कही गई है कि मैं उसे यहां नहीं दुहराना चाहती। जब मैं कालिज में दूसरे साल में ही थी तब उनका स्वप्न सचमुच पूरा हुआ। जिस समय वे संयुक्तराज्य अमरीका में धन-संग्रह करते घूम रहे थे, उस

समय उन क्रान्तिकारियों ने जिन्हें वे अपने पीछे अपने देश में छोड़ आए थे, अधार होकर विद्रोह कर दिया और कियांगसी प्रान्त में राजवंश के प्रतिनिधियों को उखाड़ फेंका तथा सन यात-सेन को चीन गणराज्य का प्रथम राष्ट्रपति घोषित कर दिया। उन्होंने एक पश्चिमी राज्य में सफर करते हुए एक अमरीकन अखबार में अचानक यह खबर पढ़ी। उस समय वे एक रेलगाड़ी के छोटे-से डिब्बे में सफर कर रहे थे—वहां उन्हें कोई भी तो न जानता था। जब उन्होंने यह समाचार पढ़ा होगा और मोटे शीर्षकों में अपना नाम देखा होगा तो उनके हृदय में कैसे-कैसे विचार उठे होंगे, यह सोचकर मन मुग्ध हो जाता है। इधर चीनी जनता का क्रोध उफन उठा था और उन्होंने उन मांचुओं को हर जगह मारा था जिनकी पहले वे घृणा के कारण रक्षा करते थे। मुझे १९११ ई० में लिखे एक पत्र में मां ने लिखा था, 'आज सवेरे खिड़की से बाहर नज़र डालकर देखती हूं तो बेचारी मांचू स्त्रियां और बच्चे जान बचाने के लिए पहाड़ी की कब्रों के पीछे छिप रहे हैं। मुझे बाहर निकलकर देखना होगा कि मैं क्या कर सकती हूं।'

मेरे माता-पिता ने यह विलक्षण कार्य किया—यद्यपि अमरीकन वाणिज्य-दूत ने गड़बड़ खत्म होने तक के लिए सब अमरीकनों को शांगहाई चले जाने की चेतावनी दी थी, क्योंकि उन्हें भय था कि कहीं क्रान्ति सदा की तरह विदेशियों के लिए विरोधी रुख न ले ले, पर मेरे माता-पिता नहीं गए। यह भी एक विलक्षण बात है कि जब मेरे माता-पिता ने मांचुओं को मौत से बचाने के लिए मदद दी, तब चीनियों ने कुछ नहीं कहा। यह ईसाई तथा चीनी, दोनों ही आचार-शास्त्रों के अनुसार अच्छा काम था और उन्होंने उन्हीं लोगों की रक्षा करने के कारण, जिन्हें वे मार रहे थे, मेरे माता-पिता को बुरा-भला नहीं कहा। यह विरोधाभास चीनी मानव-प्रकृति का भाग है पर इसका परिहार यह है कि वे यह मानते थे कि धर्म तथा धार्मिक कार्य पूरी तरह व्यक्तिगत ज़िम्मेदारियां तथा अधिकार हैं।

जब मैं कालिज में थी, तब ये सब काम मुझे अस्पष्ट-से लगे थे और मैंने उनकी चर्चा अपनी कालिज की साथिनों से नहीं की थी क्योंकि इसमें बहुत व्याख्या की ज़रूरत पड़ती : मुझे विश्व-इतिहास के बहुत पहले हिस्से से शुरू करना पड़ता और तब से बात शुरू करनी पड़ती जब पुर्तगाली जहाज़ पूर्व में धन की खोज करते हुए महासागरों को पार करते जा रहे थे और उन्होंने भारत में गोआ पर, चीन में मकाओ पर स्थायी पंजा जमा लिया था; और किस तरह स्पेनिश लोगों ने फिलिपीन छीन

और स्पेनिश लोगों को निकाल भगाने के बाद अमरीकन बहुत दिन तक—किस प्रकार आधी शताब्दी तक—वहां जमे रहे जिससे उन द्वीपों में अच्छाई और बुराई दोनों ही आईं; जबकि इतने समय फिलिपीन लोग यह समझते रहे कि हम उन्हें आज़ादी देना चाहते थे। मुझे उन्हें यह याद दिलाना पड़ता कि कोलम्बस स्वयं अमरीका की खोज करना नहीं चाहता था, कि वह तो भारत की मणिमुक्ताओं की खोज में उसे अकस्मात् मिल गया; मुझे उन्हें यह बताना पड़ता कि हम अमरीकन लोग १७७६ में अंग्रेज़ों से इतनी आसानी से अपने-आपको आज़ाद न कर सके होते, यदि ठीक उसी समय ईस्ट इण्डिया कम्पनी भारत के अपार धनधान्य का पता न पा गई होती, जिसके कारण इंगलैण्ड ने एक असम्भव महाद्वीप में तेरह छोटे-छोटे निर्जन भूमिखण्डों के बजाय वहीं पर अपना सारा ध्यान केन्द्रित किया। 'तुम अमरीकन लोगों पर हमारा बहुत बड़ा ऋण है,' मेरे भारतीय मित्र मुझसे बड़े शोक से कहा करते हैं, 'अगर अंग्रेज़ों को यह पता न चल गया होता कि हम १७७६ में तुमसे कितने अधिक धनी थे, तो तुम लोग अब भी ब्रिटिश साम्राज्य के अंग होते।' जहां तक मैं जानती हूं, यह बात सच हो सकती है क्योंकि इतिहास के कुछ तथ्य इस दिशा में संकेत करते हैं। तब मुझे अपनी कालिज की साथिनों को पश्चिम देश की वह सारी कलंकपूर्ण कहानी सुनानी पड़ती—यह बताना पड़ता कि किस तरह वे अब भी एशिया के महान् शान्तिपूर्ण देशों को लूट रहे हैं, जिन्होंने अपनी सिद्धान्त-प्रियता के कारण बारूद तथा आधुनिक शस्त्रों के उपयोग का विकास नहीं किया, और मुझे अफीम-युद्धों तथा बौक्सर-विद्रोह, असमान सन्धियों तथा राज्यक्षेत्रातीतता (अपने राज्य से बाहर किसी क्षेत्र पर अपने राज्य जैसा अधिकार) के बारे में समझाना पड़ता, जिससे कोई भी गोरा आदमी चीन सरकार की गिरफ्तारी से मुक्त रहता हुआ चीन की धरती पर घूमता था। वह हत्या तथा बलात्कार कर सकता था और कभी करता भी था, पर उसे गिरफ्तार न किया जा सकता था, क्योंकि सब गोरे लोगों को राजनीतिक उन्मुक्ति (दूसरे देश के अधिकृत प्रतिनिधियों को मिली गिरफ्तारी की छूट) सी प्राप्त थी। तब मुझे एशिया में गोरे की मदान्धता पर प्रकाश डालना पड़ता, जिसकी मेरे विचार से क्रूर रोमन साम्राज्य को छोड़कर और कोई तुलना नहीं थी।

तब मैं इस इतिहास का विकास कैसे स्पष्ट कर सकती थी, यद्यपि यह लालची व्यापारियों और कठमुल्ले पादरियों के शुरू के दिनों से ही बिल्कुल स्पष्ट था। मेरी

कालिज की साथिनों को कोई ऐसा अनुभव न था जिससे वे इन बातों को समझ सकें। उन्हें चीन के बारे में इतना ही पता था कि उन्होंने किसी चर्च में किसी मिशनरी को रुपया मांगते सुना था जिससे वह चीनियों को शिक्षा और भोजन दे सके या उनके लिए बाइबिल खरीद सके। अतः वे उस महान् तथा सुन्दर देश को संसार की सबसे प्राचीन जीवित सभ्यता और योरुप की किसी भी संस्कृति से अधिक पुरानी संस्कृति वाला देश समझने के बजाय भिखारियों और जंगलियों का देश समझती थीं। इसलिए मैंने उन्हें कुछ न समझाया। मैंने अपनी मां की चिट्ठियां अकेले पढ़ीं, और जिन परिवर्तनों का उसने इतना सजीव वर्णन किया था, उनपर विचार किया। फिर वापस लौटने पर उनका सामना करने की बात सोचकर उन्हें मन से हटा दिया।

पर अब सन यात-सेन का संघर्ष अखबारों में रोज़ पढ़ने का और चीनी सहेलियों के साथ रोज़ की बातचीत का विषय था। वे गणराज्य संगठित कर सकेंगे या नहीं? नहीं कर सकेंगे तो क्या होगा? क्या फिर राजगद्दी कायम होगी? नया सम्राट् आएगा? यदि आएगा तो वह कौन होगा?

इस बीच इस राजनीतिक घोटाले के मध्य हमेशा की तरह चीनी लोगों का जीवन प्रचलित मार्गों पर चलता रहा। न उसमें कोई उफान था, न शोर। बाहर से मुझे जो सबसे बड़ा परिवर्तन दिखाई दिया, वह यह था कि पुरुषों तथा लड़कों ने अपनी चोटियां कटवा दीं—पश्चिमी फैशन से अपने बाल बनवा लिए क्योंकि चोटियां मांचू वंश की अधीनता का चिह्न थीं, वह वंश खत्म हो चुका था। फिर भी बहुत से चीनी किसानों ने अपनी चोटियां कायम रखीं। वे इन्हें कटवाना नहीं चाहते थे। उन्हें नहीं मालूम था कि उन्होंने ये क्यों रखी थीं, पर उनके पिता और पूर्वज पीढ़ियों से चोटियां रखते आए थे, इसलिए यह अवश्य अच्छी चीज़ होगी। पर किसानों को क्रान्ति की प्रबल शक्तियों और नौजवानों ने दबा लिया, जिनमें से कुछ मेरे विद्यार्थी भी थे। वे नगर के दरवाज़ों पर खड़े हो गए जिनमें से गुज़रकर किसान अपनी सब्ज़ी की टोकरियां और ईंधन की गठरियां लेकर बाज़ार जाते थे। जब किसीके चोटी होती, तब वे उसे एक स्टूल पर बैठा लेते और लेक्चर देते और उसकी चोटी काट देते चाहे वह उनके ऐसा करने पर रोता ही रहता। कुछ ही सालों में सब चोटियां खत्म हो गईं मालूम होती थीं, यद्यपि जब मैं अपने विवाह के कुछ साल बाद उत्तरी चीन में रह रही थी, तब मैंने कभी-कभी दूर देहातों से आते हुए धूल-भरे बालों वाले किसानों की टोपियों के नीचे छोटी-छोटी मुड़ी हुई चोटियां

देखीं। कभी-कभी मुझे ऐसी बूढ़ी स्त्रियां मिलीं जिन्हें यह पता न था कि राजमाता मर चुकी है, यद्यपि वह बीस वर्ष से अपनी रत्न-जटित समाधि में सो रही थी। मैंने उस समय इस अज्ञान को विलक्षण समझा था, पर तब मुझे पता चला कि यह विलक्षण नहीं था जब 'न्यूयार्क टाइम्ज़' ने संयुक्तराज्य अमरीका भर में प्रथम वर्ष के हज़ारों कालिज-छात्रों की अमरीकन इतिहास की एक परीक्षा के परिणाम प्रकाशित किए। उनमें अन्य आश्चर्यजनक नई बातों के साथ-साथ कुछ ये थीं: उनमें से तीस प्रतिशत को यह पता न था कि वुडरो विलसन पहले महायुद्ध के दिनों में राष्ट्रपति था; कि उनमें से केवल छह प्रतिशत यह बता सके कि पहले तेरह उपनिवेश कौन से थे—बहुतों ने टैक्सास और ओरेगन जैसे राज्यों को भी उनमें गिनाया था; और उनमें से तिहाई को यह पता न था कि गृह-युद्ध के दिनों में राष्ट्रपति कौन था। हर जगह के लोग रोज़ाना की ज़रूरी बातों को छोड़कर और बातों से वास्ता न रखते थे। और यह लोकतन्त्रीय शासन की मुख्य समस्या है जिसकी सफलता जानकार और ज़िम्मेदार नागरिक-समुदाय पर निर्भर है।

परन्तु बहुत से रूढ़िप्रिय और सुशिक्षित वृद्ध चीनी लोग भी थे जो सन यातसेन व क्रान्ति तथा नौजवानों के सब कामों को दिल से नापसन्द करते थे बल्कि जो फिर राजा चाहते थे। उनमें से कुछ मेरे माता-पिता के मित्र थे। मैं एक ओर तो दिन में अपनी कक्षाओं में नौजवानों की युक्तियां सुनती थी, और दूसरी ओर, इन वृद्ध चीनियों से मुझे बात का दूसरा पक्ष सुनने को मिलता था। कभी-कभी मुझे कक्षा में छात्रों के प्रश्नों का उत्तर देने में बड़ी कठिनाई होती थी। उनका एक प्रिय प्रश्न यह था, जो वे अटकती इंगलिश में—पर वह प्रतिदिन सुधर रही थी—पूछा करते थे, 'आपका देश फिलिपीन लोगों को आज़ादी क्यों नहीं दे देता?'

मुझे कारण पता नहीं था, पर बाद में जापान की उभरती आकांक्षाओं से मुझे मदद मिली। तब मैं यह उत्तर दे देती थी, 'यदि अमरीकन लोग फिलिपीन को छोड़ जाएं तो जापानी उसमें घुस आएंगे। क्या आप लोग जापानियों का आना पसन्द करेंगे?'

उन्हें मानना पड़ता था कि वे पसन्द न करेंगे। उस समय संयुक्तराज्य अमरीका पश्चिमी राष्ट्रों में से सबसे अधिक लोकप्रिय था। हमारी इस मांग पर असंतोष होते हुए भी कि हम राज्य-क्षेत्रातीतता और व्यापार-समझौतों के लाभों में हिस्सेदार थे, चीनी लोग हमसे साम्राज्यवादी शक्ति की तरह नहीं डरते थे क्योंकि

यह कम्यूनिज़्म के पहले के दिनों की बात है, पर वे नये शक्तिशाली जापान से बहुत डरते थे।

पर मुझे पता था कि उस जापान की जड़ें भी साम्राज्य तथा उपनिवेश बनाने की पुरानी बुराई में थीं। मेरे ऐसे जापानी मित्र थे जो आग्रहपूर्वक यह कहते थे कि जापान की आज़ादी पक्के तौर से कायम रखने का यही तरीका है कि उसे इतना शक्तिशाली बना दिया जाए कि कोई पश्चिमी शक्ति उसे अपना उपनिवेश न बना सके।

'आपको याद रहना चाहिए, बहन जी।' श्री यामामोतो ने एक दिन मुझसे कहा। वे एक धनी व्यापारी थे, जिनका जापान में और साथ ही हमारे नगर में भी एक घर था, अपने जैसे अन्य व्यक्तियों के साथ-साथ उन्हें भी इस बात का श्रेय था कि उन्होंने धीरे-धीरे, वर्षों में, चीनी दुकानों को बहुत सारी सस्ती पर बहुत अच्छी चीज़ों से भर दिया और उसी मात्रा में ब्रिटेन तथा संयुक्तराज्य अमरीका की अधिक महंगी वस्तुओं को बाहर कर दिया था। 'आपको याद रहना चाहिए,' उन्होंने मेरी ओर एक लम्बी सफेद तर्जनी हिलाते हुए दोहराया, 'प्रत्येक एशियाई देश पर या तो किसी पश्चिमी शक्ति ने कब्ज़ा कर लिया है, जैसे भारत पर कर लिया है; या अत्यधिक मांगों और असमान सन्धियों और भयंकर हरजानों द्वारा उन्हें बरबाद तथा कमज़ोर कर दिया है, जैसे चीन को किया है। केवल जापान स्वतन्त्र है और हमें बड़ा खतरा है। हम उपनिवेश बनने को कभी नहीं सह सकते। इसलिए हमारे लिए यह आवश्यक है कि हम भी एक वैसा साम्राज्य बनाएं जैसा ब्रिटेन ने बनाया है और हमारे लिए चीन ही इसका पहला तर्क-संगत स्थान है। हम चीन का विकास करेंगे, हम उसे बरबाद नहीं करेंगे—इससे हमारा अपना हित-साधन नहीं होगा।'

मैं क्या कह सकती थी? पहले की बातें सोचने पर मुझे लगता है कि मैंने अपनी वापसी के वे पहले वर्ष प्रायः चुप रहकर बिताए। मैं सुनती थी पर जवाब नहीं दे सकती थी। कभी-कभी मेरे पिता भी केन्द्रीय शासन के अभाव और चीन में युद्ध-नायकों तथा क्रान्तिवादियों के बढ़ रहे गड़बड़झाले के कारण अधीर होकर यह कह बैठा करते थे, 'अच्छा ही होगा यदि जापान आ जाए और चीन में सफाई कर डाले।'

इसपर मैं जवाब दे सकती थी, और देती भी थी, कि मैं निश्चय से समझती

हूं कि यह अच्छी चीज़ नहीं होगी। जापानी तथा चीनी अपनी राष्ट्रीय विशेषताओं में प्रायः एक-दूसरे से बिल्कुल उल्टे हैं। उनमें परस्पर जितना अधिक अन्तर है, उतना गोरी जाति के किन्हीं भी दो राष्ट्रों में नहीं है। एक भूगोल ने उनके इतिहास का निर्माण किया है, और उनका इतिहास इससे कम भिन्न नहीं हो सकता था। असल में चीनी लोग जो महाद्वीपीय लोग हैं, जापानियों की अपेक्षा अमरीका वालों से अधिक मिलते-जुलते हैं। जापानी लोग द्वीपवासी ही हैं, पर मैं जानती थी कि यदि जापानी लोग—जिन्हें मैं तब भी पसन्द करती थी, और जिनकी तब भी प्रशंसा करती थी और अब भी करती हूं—चीन पर शासन करेंगे तो अत्याचारी सिद्ध होंगे। वे चीनियों को कभी नहीं समझ सकते थे और न समझने पर वे भय और शंका के कारण ज़बरदस्ती से शासन करने का यत्न करते जिसे निस्सन्देह चीनी लोग नहीं सह सकते थे।

बहुत वर्षों बाद पेंसिलवानिया में दिसम्बर के एक साफ रविवार के तीसरे पहर मैंने सुना कि जापानी बम पर्ल हार्बर पर पड़े हैं। मुझे वर्षों पूर्व कहे गए श्री यामामोतो के शब्द तुरन्त याद आ गए। फिर मुझे सबसे पहले पुर्तगाली जहाज़ से —जो पूर्व के समुद्र-तटों को लूटने के लिए समुद्रों पर घूम रहा था—लेकर संसार की सबसे ताकतवर पश्चिमी शक्ति को अधिक से अधिक नष्ट करने के लिए उड़ते हुए जापानी विमानों तक के इतिहास का मार्ग स्पष्ट दिखाई दे गया। काई के पीछे सदा कारण लिए हुए इतिहास कदम-कदम आगे बढ़ता जाता है।

उन आरम्भिक वर्षों में मेरी आयु कम थी और मैं परस्पर-विरोधी और यौवनोचित दिलचस्पियों तथा आवेशों से पूर्ण थी। इसलिए मैंने जो कुछ मेरे जगतों में हो रहा था उसे समझने के लिए बड़ी कोशिश की। मैं अनेक प्रकार से अकेली थी। मेरे कालिज के वर्षों ने मुझे उन चीनी लड़कियों से अलग कर दिया था जिनके साथ मेरी कभी इतनी घनिष्ठता थी। उन सबके विवाह हो चुके थे और वे अपने घरेलू कामों में व्यस्त थीं और शायद इस कारण कि मैं कालिज रह आई थी, अब मेरे साथ वे अजीब-सा अनुभव करती थीं। वे मुझसे हज़ारों सवाल पूछती थीं क्योंकि अमरीकनों के स्वभाव के विपरीत, चीनी लोग दूसरे राष्ट्रों के बारे में जानने के लिए उत्सुक रहते हैं। चुनाचे वे अधिक से अधिक गहरी और छोटी बातें पूछे बिना नहीं मानते थे और मैं भरसक उन्हें उत्तर देती थी। हमारी बातचीत सदा एक महत्त्वपूर्ण और व्यक्तिगत प्रश्न के साथ समाप्त होती जो वे चिन्ता के साथ मेरे सामने रखा

करती थीं, 'तुम शादी कब कर रही हो ?'

'मुझे पता नहीं,' मैं सदा उत्तर देती थी।

अगला प्रश्न ही सदा निश्चित और चिन्तापूर्ण होता था। 'क्या तुम्हारे माता-पिता तुम्हारे लिए वर ढूंढ़ने की कुछ कोशिश नहीं कर रहे ?'

उन सबके माता-पिताओं ने प्रचलित चीनी पद्धति से उनके लिए वर जुटाए थे। परम्परागत विवाहों के विरुद्ध जवानों के प्रचण्ड विद्रोह की बाद में जो लहर उसका समय अभी नहीं आया था। तब यदि किसी चीनी लड़की या नौजवान से यह कहा जाता कि तुम्हें अपने लिए स्वयं साथी तलाश करना है तो वे चकित और परेशान होते। विवाह पारिवारिक मामला था और माता-पिता अपनी सन्तान की प्रकृति पर ध्यान से विचार कर यह निश्चय करते थे कि उसके जीवन को पूर्ण करने के लिए कैसा व्यक्ति तलाश किया जाए। यह भी आवश्यक था कि वह व्यक्ति पारिवारिक समूह में खप जाए क्योंकि जहां प्राचीन चीनी पद्धति के अनुसार पीढ़ियां एकसाथ रहती हैं, वहां यदि नया व्यक्ति जन्म और संस्कारों की दृष्टि से उस समूह में न खप सके तो इससे परेशानी ही पैदा होती। इस प्रकार तय किए हुए इन विवाहों के परिणाम आम तौर से अच्छे होते थे। उनमें से अधिकतर सुखी थे। और मेरा ख्याल है कि पश्चिम के व्यक्तिबद्ध और रोमांटिक विवाहों की अपेक्षा वे अधिक अनुपात में सुखी हैं। यही होने की आशा भी करनी चाहिए क्योंकि अन्त में विवाह मूलतः एक कर्म-प्रधान मामला है, और रोमांटिक तथा भावुक पहलू ठोस प्रेम और सख्य में रूपान्तरित हो जाते हैं। आम तौर से विवाह के बाद प्रेम पैदा हो ही जाता था। कभी-कभी वह रोमांटिक और अतिभावुक प्रेम हो जाता था, पर वह परम आवश्यक बात नहीं थी। ऐसे विवाहों के स्थायित्व की वहां अधिक सम्भावना थी क्योंकि रोमांटिक और भावुक प्रेम की आशा-कल्पनाएं वहां उतनी ऊंची नहीं होती थीं जितनी वे पश्चिम में होतीं।

जो भी सही, मेरी चीनी सहेलियों के सुखद विवाह हो गए थे और वे बच्चों में लगी रहती थीं। यद्यपि मैं छोटी ही थी, पर वे मेरे अकेलेपन की अवस्था से परेशान होती थीं। जहां तक मेरी अपनी जाति का सम्बन्ध था, मेरी अंग्रेज़ ऐगनेस के अतिरिक्त और कोई सहेली नहीं थी। और खेद का विषय था कि अब आयु बढ़ जाने के कारण वह मेरे अनुरूप नहीं रही थी। आयु में मेरे सबसे अधिक निकट वाली अमरीकन स्त्री पैंतीस वर्ष की थी। वह एक मिशनरी की पत्नी और तीन बच्चों

की मां थी। वह दूसरी ही पीढ़ी थी। हमारे नगर के ब्रिटिश कैन्सेशन में जो थोड़े-से नौजवान गोरे थे उनकी दृष्टियों को स्वीकार करने की अनुमति भी मुझे न थी। उनमें स्टैंडर्ड आयल कम्पनी या किसी एक तम्बाकू कम्पनी के दो या तीन अमरीकन भी थे। पहले मैंने बिना सोचे उनके निमन्त्रण स्वीकार कर लिए। एक दिन हमारे तंग दायरे की एक अधिक उमर की मिशनरी ने मुझे सख्ती से लेक्चर दिया, 'तुम दोनों तरह के जीवनों में एकसाथ नहीं रह सकती', उसने गम्भीरता से कहा, यदि तुम व्यापारी लोगों के साथ जाती हो तो तुम्हें मिशनरी दायरा छोड़ देना चाहिए।'

'मैं मिशनरी नहीं हूं,' मैंने आग्रहपूर्वक कहा, 'मैं अध्यापक हूं।'

'तुम अध्यापक हो एक मिशनरी स्कूल में,' उसने मुझे याद दिलाया। 'तुम्हारे माता-पिता मिशनरी हैं।'

'मेरे माता-पिता को इस बात की परवाह नहीं है,' मैंने ज़िद से कहा।

'हम बाकी लोगों को तो है,' उसने तुरन्त जवाब दिया।

अपने माता-पिता की खातिर मैंने इसके बाद सब निमन्त्रण अस्वीकार कर दिए और अपना समय सख्ती से घर और काम के बीच बांट लिया। मैं चीनी पुस्तकों का अध्ययन करने लगी। जब मेरी मां का स्वास्थ्य कुछ अच्छा हुआ, तब मैं पैदल और घोड़े पर आसपास के स्थानों पर घूमने लगी, पर मेरी चीनी सहेलियों को अब भी चिन्ता थी। और मुझे पता है कि उन्होंने मेरे विवाह का प्रबन्ध करने के लिए मेरे माता-पिता से बातचीत की। इससे मेरे पिता और मेरी माता में अजीब कहा-सुनी हो गई—क्योंकि मेरे पिता की मनोवृत्ति और भावनाएं अमरीकन की अपेक्षा चीनी अधिक हो गई थीं जब कि मेरी मां अन्दर तक अमरीकन बनी रही। लगता था कि मेरे पिता मेरा विवाह अपनी पसन्द के किसी नौजवान चीनी से करके खुश होते पर मेरी मां पूरे दिल से इसके विरुद्ध थी। मैंने सुना और सोचा और कोई पक्ष नहीं लिया। कारण यह था कि मुझे उस सुन्दर और प्रतिभाशाली चीनी का कोई खतरा न लगा जिसके बारे में मेरे पिता सोच रहे थे, क्योंकि उसका परिवार उसका विवाह किसी अमरीकन से नहीं सह सकता था, चाहे वह मेरे पिता की ही लड़की होती। उधर मैंने अपनी मां का स्वास्थ्य सुधर जाने के कारण निश्चय किया कि मैं चीन के किसी दूसरे भाग में जाऊं और अकेले ही अपना जीवन-कार्य आरम्भ करूं।

मन ही मन में जानती थी, जैसा कि में सदा समझती रही थी कि किसी दिन मैं लेखक बनूंगी, पर अभी में इसके लिए तैयार न थी। मैं अब भी खालीपन महसूस करती थी। अब मैं बेशक जानती हूं कि खालीपन यौवन की स्वस्थ सामान्य स्थिति है। मैं समझती हूं कि तीस वर्ष की आयु से पहले किसी लेखक को उपन्यास लिखने का यत्न नहीं करना चाहिए। यदि वह निराश और विवश होकर जीवन में नहीं उलझा है तब भी उसे ऐसा यत्न न करना चाहिए। जो लेखक उस तरह उपन्यास की सामग्री ढूंढने निकलता है, जैसे कोई मछियारा मछली पकड़ने समुद्र पर जाता है, वह निश्चय ही अच्छा उपन्यास नहीं लिख सकता। पहले बिना सोचे, बिना जाने पूरी झपट से और बिना किसी बाहरी प्रयोजन के, जीने के बाद ही जीवन अन्त में उपन्यास के लिए अच्छी सामग्री बनता है।

मैं लिखने के लिए सामग्री ढूंढ़ने के वास्ते चीन के दूसरे भागों की यात्रा न करना चाहती थी पर मैं और अधिक जीवन अवश्य पाना चाहती थी। मैं एक बहुत छोटे दायरे में फंस गई थी और बचपन के वातावरण से बाहर निकलना चाहती थी, जैसे कि सब नवयुवक लोग निकलना चाहते हैं और उन्हें निकलना चाहिए। फिर भी मुझे यह न सूझा कि मैं अमरीका लौट जाऊं। इसका एक कारण यह था कि मैं अपनी मां को इतनी दूर नहीं छोड़ना चाहती थी क्योंकि उसका रोग केवल सुधरा था, पूरी तरह दूर नहीं हुआ था; मुझे भय था कि यह कभी भी पूरी तरह दूर नहीं होगा—इसलिए मुझे ऐसी आसपास की जगह ही रहना चाहिए जहां से लौटा जा सके। पर इसके अलावा, मैं सचमुच ही फिर अपने चीनी जगत् का भाग बन गई थी। यह प्रतिदिन बदलता एक नया जगत् था, और चीन, जैसा कि मैं तब भी भविष्य में देख सकती थी, निश्चय ही केन्द्रीय महत्त्व का देश होने वाला था। वह सदा संस्कृति का मूल स्रोत रहा, और केवल भारत, जो सर्वथा भिन्न था, उसका प्रतिस्पर्द्धी हो सकता था। अब मैं यही चाहती थी कि चीन में अपनी इच्छा के अनुसार आज़ादी से रहूं, किसी ऐसी जगह रहूं जहां मैं सिद्धान्त-प्रधान कट्टर धर्म के बंधनों से मुक्त रहूं। दिमाग दौड़ाने पर मुझे एक स्त्री की बात याद आई जिसने तभी मेरी कल्पना-शक्ति को उत्तेजित कर दिया था जब मैंने पहली बार उसका नाम सुना था। वह युन्नान प्रान्त के एक दूर वाले प्राचीन नगर में अकेली रहती थी, और मैं हमेशा सुनती रही थी कि युन्नान प्रान्त एक बड़े सुन्दर प्रदेश का अत्यधिक सुन्दर भाग है। एक दिन मैंने अपने कमरे में अपनी छोटी-सी

चीनी डेस्क के पास बैठकर कारनेलिया मार्गन को पत्र लिखा और उससे पूछा कि क्या वह मुझे अपने साथ काम करने के लिए आने की अनुमति देगी। सप्ताहों बाद उसका मैत्रीपूर्ण उत्तर किसी तरह मेरी मां के हाथ में पड़ गया, तब मैंने अपनी मां का एक नया रूप देखा। वह फूट-फूटकर रोने लगी, बोली कि यदि तू चली जाएगी तो मैं जीना नहीं चाहती। फिर उसने पूछा कि तू यहां क्यों असंतुष्ट है, जहां हर कोई तुझसे इतना प्यार करता है। यदि तू यहां से चली जाएगी तो चीनी लोग क्या कहेंगे जो मातृ-पितृ-भक्ति को इतनी ऊंची चीज़ मानते हैं।

मैंने कहा, 'पर तुमने तो अपने पिता की इच्छा के विरुद्ध अपना घर छोड़ दिया था। नानाजी ने तुम्हारे विवाह को भी मना किया था।'

उसकी काली आंखों में दुःख छा गया। 'मुझे यह पता है,' वह बोली, 'और मैंने गलती की थी। अच्छा होता कि मैंने उनकी बात मानी होती!'

यह स्वीकृति भयंकर थी। मैं अवाक् रह गई। मैंने न तो रहने का वायदा किया, न जाने का आग्रह ही। मैं सिर्फ चुप रह गई। कुछ ही दिन बाद वह फिर अधिक बीमार हो गई तब डाक्टर ने कहा कि उसे कोई कुलिंग में लू पहाड़ों पर ले जाए। इस काम के लिए वहां मेरे सिवाय और कोई नहीं था क्योंकि मेरे पिता अपना काम छोड़ने की बात सोच भी नहीं सकते थे। मैंने अपने स्कूल से छुट्टी ली। मैं तथा मेरी मां एक स्वच्छ छोटे-से इंगलिश नदी-स्टीमर पर बैठकर किउकियांग के लिए रवाना हो गई जहां से हमें पर्वत पर चढ़ने के लिए डांडी लेनी थी। कम से कम फिलहाल तो मेरा भविष्य निश्चित हो गया था।

अब चीन के मध्यवर्ती प्रान्तों में रहने वाले गोरे आदमी के जीवन में कुलिंग का महत्त्व स्पष्ट कर देना चाहिए। और भी कई ठंडे स्थान थे, पर हमारे विचार से कुलिंग के मुकाबले का कोई नहीं था—यह गर्मियों में रहने का स्थान ही नहीं था, बल्कि एक जीवन-रक्षक स्थान था। विशेष रूप से मेरे बचपन के आरम्भिक वर्षों में, जब यह पता नहीं था कि कुछ बुरे उष्णदेशीय रोग (जिनसे बचने की क्षमता गोरे लोगों में कुछ भी मालूम नहीं होती थी) किस प्रकार हो जाते थे। उदाहरण के लिए, मुझे मलेरिया से होने वाला विनाश याद है जिससे चीनी लोग रोगी होकर पतले और पीले हो जाते थे, पर जिससे वे गोरों की अपेक्षा बहुत अधिक अनुपात में स्वस्थ रहते थे। जब पहली बार यह अफवाह हुई कि मच्छरों से यह रोग होता है, तब मेरे पिता ने तुरन्त हमारे मकान की सब खिड़कियों पर मोटी

बुनाई का कपड़ा लगा दिया और लोगों ने समझा कि वे पागल हो गए हैं। जैसे ही वे मिंटगुमरी वार्ड से तार की जाली खरीद सके वैसे ही वह सबसे पहले हमारे मकान पर लग गई। शरद् ऋतु में होने वाली आफत हैज़ा हम जानते थे कि मक्खियों के द्वारा चलता है और निश्चित रूप से मुंह के रास्ते आता है। और मुझे याद है कि मेरी मां इस बात से डरी रहती थी कि कहीं हम कोई कच्चा फल न खा लें या चीनी बाज़ारों से आई हुई कोई चीज़ बिना पकाए न खा जाएं। और जब महामारी फैली होती थी—जो मेरे बचपन में हर शरद् ऋतु में फैलती थी—तब किस प्रकार हम खाने के बर्तनों को भी तब तक कभी प्रयोग में नहीं लाते थे जब तक उन्हें तेज़ खौलते पानी में न रखा गया हो, और वह भी मेज़ पर, जहां मेरी मां इस प्रक्रिया को देख सके। तब तश्तरियां और चांदी के बर्तन मेरी मां द्वारा उबालकर रखे हुए तौलियों से पोंछे जाते थे। फिर भी अगस्त के बीच से लेकर पहली अक्तूबर से पहले तक हम में से किसीको भी चैन नहीं होता था। मौत के डर से तो हम बच्चों ने यह सीख लिया था कि कोई भी चीज़, यहां तक कि अपनी उंगलियां भी तब तक मुंह में न डालें जब तक उन्हें उबलते पानी या साबुन और पानी से न धोया गया हो तथा कृमिनाशक में न रखा गया हो।

बच्चों की मौत ने गोरे माता-पिताओं को कोई ऐसा स्थान तलाश करने के लिए वस्तुतः मजबूर कर दिया था जहां परिवार उष्ण देशों की तेज़ गर्मियों के सबसे बुरे महीनों में जा सकें। मेरे पिता गोरों के उस छोटे समूह में थे जिसने प्रसिद्ध लू पर्वतों का पता लगाया था जिनपर पुराने मन्दिर शताब्दियों से ऐसी स्वास्थ्य-कारक जलवायु में मौजूद थे कि यह कहा जाता था कि पुजारी सदा जीवित रहते हैं। मुझे अब भी वह दिन याद है जब मैं छोटी बालिका थी जब मेरे पिता एक दिन यात्रा से लौटे और उन्होंने यह खबर दी कि उन पर्वतों में (जो समुद्र-तल से छह हज़ार फुट ऊंचे थे) बहुत ऊंचाई पर उन्हें ग्रीष्म ऋतु के मध्य में भी सर्दियों के आरम्भ के दिनों जैसी ठण्डी हवा मिली। पहाड़ के किनारे-किनारे एक ऊबड़-खाबड़ पत्थर की सड़क थी जो न मालूम कब पुजारियों और तीर्थयात्रियों ने बनाई थी। वहां बांस की डांडियां मिल जाती थीं जिन्हें पास के किसान उठाकर ऊपर पहुंचाते थे।

'वहां हवा एलेगेनी पहाड़ों की जैसी है', मेरे पिता ने कहा, 'और नाले स्वच्छ बहते हैं।'

मेरी मां के लिए इतनी बात काफी थी। उसे गर्मियों के बहुत गर्म महीनों और विशेष रूप से गर्म वर्षा ऋतु से—जब चावल के खेतों में पानी भरा रहता था और मच्छरों की भरमार होती थी—बचने के विचार से जो खुशी हुई, वह मुझे आज भी कुछ-कुछ दिखाई देती है। चीनियों से बातचीत करने के बाद सबसे पहले हमने वहां एक ज़मीन का टुकड़ा खरीदा था—असल में यह दीर्घकालीन पट्टा था क्योंकि विदेशी लोग चीन में धरती के मालिक नहीं हो सकते थे। मुझे अपने पहले छोटे मकान की भी याद है जो पत्थर का बना था क्योंकि उन पर्वत-शिखरों पर मकान बनाने की एकमात्र वस्तु पत्थर ही थी जहां केवल नीचे पेड़ उगते थे। मन्दिर भी पत्थर के थे और एक पास की चोटी पर पगोडा भी पत्थर का था।

बचपन में कुलिंग को मैं निश्चित ही समझी थी और हर वर्ष वहां जा सकने के लिए मैं अपनी जन्म-दिन की पार्टी छोड़ देती थी। मेरी मां को यह अच्छा न लगता था कि मेरे पिता को अकेला छोड़ दिया जाए, जिसमें उन्हें अपने काम के साथ घर का काम भी करना पड़े, पर उसके संघर्ष का अन्त सदा बच्चों के पक्ष में ही होता था। हर जून में, जबकि चावल की पौध सूखी क्यारियों से हटाकर पानी भरे खेतों में लगाई जाती थी, मैं जानती थी कि कुलिंग जाने का समय आ गया। यह समय मुझे घर पर भी पसन्द था क्योंकि घाटियां सुन्दर होती थीं, हरी झीलें धूप से चमकती थीं और रात की चांदनी में रहस्यमय लगती थीं। मेंढ़कों का तो स्वर्ग हो जाता था और उनकी टर्र-टर्र का सम्मानित स्वर हमारे घर से भी स्पष्ट सुनाई देता था।

धान उगाने की सारी क्रिया पौध बनाने से लेकर—जिनकी क्यारी धरती की किसी भी हरियाली से अधिक हरी होती है—अन्त में काटी हुई सुनहरी पूलियों तक सौन्दर्य का एक चक्र होता है। मैं सदा प्रत्येक परिवर्तन से, और विशेष रूप से एक जगह से हटाकर दूसरी जगह पौध लगाने के काम में सदा मुग्ध हो जाया करती थी। इसमें सूखे खेतों को पानी से भर दिया जाता था और किसान परिवार अपने नीले सूती पाजामों के पहुंचे ऊपर समेटकर पानी में छप-छप करते पौधों को खेतों में सफाई से और समान दूरियों पर लगाते थे। चावल गर्मियों में हमारे बाहर रहने के दिनों में तेज़ी से बढ़ जाते थे। जब हम सितम्बर के अन्त में लौटते थे, तब खेत फिर सूखे होते थे और पौधे ऊंचे-ऊंचे पीले खड़े होते थे। इसके बाद कटाई होती थी, जब फिर एक बार किसान-परिवार आगे जाता था, हाथ की दरांतियों

से पूलियां काटता था, फिर उन्हें बांधता था, उनके ढेर बनाकर उन्हें खलिहानों के सामने पहरों में ले जाता था। वहां पूलियां फैला दी जाती थीं और पुरुष तथा स्त्री लहराते हुए बांस के मूसल उठाते और धान निकालते थे। स्त्रियां अनाज को बुहारतीं और उसे उड़ाने की टोकरियों में फैलातीं और पुरुष इसे धान और पुराल अलग करने के लिए हवा में उड़ाते। जब अन्त में धान अलग हो जाता तब उसे चटाई की शक्ल में बुनी और बर्तन के रूप में मोड़ी और बांधी हुई, साफ धान के पुराल से बनी हुई, नांदों में इकट्ठा कर दिया जाता था। नीले कपड़ों वाले किसानों की प्रत्येक गति में कविता होती थी। आज वह सब मुझे अपने मन में स्पष्ट दिखाई दे रही है—वह अत्यन्त सुन्दर और प्रतीकात्मक चित्रों की माला जो मैंने अपने जीवनकाल में याद की थी।

जावा में ही वर्षों बाद मैंने वह सारी इकट्ठी प्रक्रिया देखी क्योंकि वहां उत्कृष्टतम धरती और संसार की सर्वोत्तम धान के लिए उपयोगी जलवायु होने के कारण रोपने और काटने का काम आसपास के खेतों में होता रहता है। धरती रुक-रुककर लगातार उत्पादन करती रहती है। इसलिए जिस समय कुछ किसान पानी में पौधे रोप रहे होते हैं उस समय दूसरे किसान पूलियां सिर पर रखे घर जा रहे होते हैं। जब मैं गांवों की बात सोचती हूं, तब मुझे सुन्दर सांवले आदमी धान की पूलियां अपने कंधों पर रखे दिखाई देते हैं जिनके बाल बोझ के मारे झुके हुए हों, और धान की पूलियां ऐसी बिल्कुल एकसार काटी गई हैं जैसे पीले रेशम की अट्टियां हों।

रोपने और काटने के दिनों के बीच हम पर्वतों में अपने छोटे-से पत्थर के मकान में रहते थे। सबसे पहले हमने वहां रहने का स्थान बनाया था। पर अब वहां अन्य गोरे लोग—मिशनरी और व्यापारी तथा अन्य परिवार भी हमारे साथ रहने लगे थे। धीरे-धीरे कुछ ही वर्षों में पहाड़ों की चोटी पर एक सुन्दर छोटा-सा नगर खड़ा हो गया। एक चर्च बनाया गया और मकानों के एक सिरे पर चतुर चीनी व्यापारियों ने दुकानें खोल लीं। नीचे मैदानों से किसान अंडों और फलों की टोकरियां, मुर्गियां और सब्ज़ियां पहाड़ पर लाते थे अतः खाने-पीने की सामग्री प्रचुरता से मिल जाती थी। हमारे मकान के पास एक साफ झरना था जिसमें से पहाड़ के अन्दर से पानी निकलता था। उसका पानी हम बिना उबाले पीते थे। इसे हम विलासिता में शुमार करते थे।

समय बीतने के साथ-साथ, गोरे लोग कुछ सप्ताह के लिए चीन से निकल जाने

और अपना जाति के लोगों के मिलने के इस अवसर का लाभ उठाने लगे। मिशनरी सभाएं और सम्मेलन करते थे। व्यापारी तथा उनकी पत्नियां ब्रिज की पार्टियां और नाच-पार्टियां करती थीं। हर कोई जंगलों में घूमने और सैर करने जाता था। हर गर्मियों में टेनिस का टूर्नामेंट और एक धार्मिक संगीत-सम्मेलन होता था, जिसमें मेरी मां 'दी मेसिया' या कोई अन्य धार्मिक गीत गाया करती थी। हर सप्ताह एक बैठक केवल मनोरंजन के लिए होती थी जिसमें शौकीन लोग अपनी-अपनी योग्यता प्रदर्शित करते थे। ऐसे आयोजित मनोरंजनों के अलावा चाय-पार्टियां, भोज और आना-जाना होता था जिसमें वे लोग जिन्हें साल-भर एक-दूसरे से मिलने का मौका न मिलता था, यहां मिल सकते थे तथा अपने कार्यों और बच्चों की तुलना कर सकते थे, और सब समाचारों का आदान-प्रदान कर सकते थे। कुलिंग का अलग-अलग आदमियों के लिए अलग-अलग अर्थ था, पर मेरी मां के लिए इसका पहला अर्थ तो यह था कि यह एक ऐसा स्थान है जहां उसके बच्चे सुरक्षित हैं और हवा साफ है, दूसरा यह कि जहां वह अपनी आत्मा को भी नई स्फूर्ति से भर सकती थी। अब सोचने पर देखती हूं कि मेरे लिए इसका अर्थ था एक तरह का अनुपम सौन्दर्य, जो मुझे और कहीं न मिला था—स्वच्छ झरनों और जंगली पेड़ों और फूलों का सौंदर्य, एक ऐसा स्थान जहां मैं बेखटके घूम सकती थी और जी भरकर सैर कर सकती थी। जब मैं छोटी थी, तब रोज़ सवेरे मेरा काम था अपने मकान के पीछे वाले पहाड़ पर चढ़ना और ताज़े फूल तथा पत्ते लेकर लौटना। मैंने इतने सारे फूल जंगल में कहीं उगते नहीं देखे जितने वहां देखे। हमारे रहने के कमरे में जो छोटी-सी अंगीठी थी उसे मेरी मां नमकीन पानी से भर देती थी। उसे अपने गमलों के लिए नाज़ुक कोमल फर्न, लम्बी सफेद मैडोना लिली, लाल-काली चित्ती वाली टाइगर लिली या सफेद-लाल चित्तियों वाली लिली सदा पसन्द होती थी। पीली, नारंगी रंग की, दिन में खिलने वाली लिली हर जगह होती थी, क्योंकि वे केवल एक दिन रहती थीं, इसलिए मैं उन्हें अपनी आमा (नौकरानी) के लिए ही कभी तोड़ती थी जो उसकी कलियों को पकाकर अपने दोपहर के भोजन के लिए एक स्वादिष्ट सब्ज़ी बना लेती थी। ग्रास ऑफ पारनेसस तथा क्लब मौस कभी मिलने वाली विशेष वस्तु होती थी, मेरी मां को जंगली क्लेमटिस के लम्बे पत्तीदार पौधे भी अच्छे लगते थे जिनपर फूलों के सैकड़ों छोटे-छोटे सफेद तारे जड़े रहते थे। इसे वह हमारे मैंटलपीस पर गूंथ देती थी। सादा-सा मकान एक ताज़गी भरा कुंज हो

जाता था, मैं सवेरे ऊपर चढ़ने, और फिर अपनी मां की खुशी के लिए बहुत-सी मूल्यवान् वस्तुएं लेकर लौटने के अवसर से किसी भी हालत में न चूकती थी। केवल एक खतरा था, वह था छोटा-सा पतला घास-जैसा हरा सांप, जो पेड़ों पर चढ़ जाता था, फूलती हुई डाली की तरह नीचे लटका रहता था। इसका काटना घातक था, इसलिए पगडण्डियों पर चलती या सलेटी शिलाओं पर चढ़ती हुई मैं अपनी आंखें चौकन्नी रखती थी।

लू के उन सुन्दर पर्वतों का एक भयप्रद पहलू था क्षण भर में आ जाने वाली बाढ़। शताब्दियों से बहते हुए पर्वत-शिखरों से झरनों ने धरती में गहरी घाटियां बना दी थीं, क्योंकि जंगल बहुत पहले नष्ट किए जा चुके थे, इसलिए पहाड़ की चोटी पर कोई बादल बरसते ही घाटी में एकाएक इतना पानी भर जाता था कि मिनटों में पानी की एक बड़ी दीवार खड़ी हो जाती थी, यद्यपि नीचे सूर्य चमक रहा होता था। हर बार गर्मियों में इन तात्कालिक बाढ़ों में कुछ व्यक्तियों के जीवन नष्ट हो जाते थे। किसी छोटे और शान्त नाले के किनारे आनन्द से भोजन करते हुए सैलानी मुंह ऊपर उठाते तो देखते कि बीस फुट ऊंची पानी की दीवार उनके ऊपर दौड़ती चली आ रही है। बच भागने से पहले ही बाढ़ उन्हें बहा ले जाती और कभी-कभी ऊंचे प्रपातों के ऊपर तक ले जाती। मुझे एक पड़ौसी के साथ बीती हुई बात याद है। यह एक अमरीकन स्त्री थी जिसका पति मर गया था और जिसका केवल एक बच्चा था। बच्चे के छठे जन्मदिन पर उन्होंने अपना भोजन एक टोकरी में रखा और वे दोनों थोड़ा-सा उत्सव मनाने पास के एक नाले पर चले गए। भोजन के बीच में उसे एक गरज सुनाई दी और नज़र ऊपर उठाने पर उसे बाढ़ अपनी ओर दौड़ती दिखाई दी। डर के मारे उसने बच्चे का फ्राक समझकर एक कपड़ा पकड़ लिया और घाटी के किनारे चढ़ गई, जहां उसे पता चला कि उसने जो चीज़ पकड़ी थी, वह उसका अपना ही घाघरा था और बच्चा बह गया था। कुलिंग में गर्मियों के सुन्दर से सुन्दर दिन पर भी सदा मौत की निकट-सम्भावना से आतङ्क की एक छाया पड़ी रहती थी।

ये सब मेरे बचपन की बातें हैं। जब मैं अब जून के आरम्भ में चावल के खेतों में पानी भर जाने से भी पहले अपनी मां के साथ कुलिंग पहुंची, तब मैं तरुण स्त्री के रूप में लौटी थी। कुलिंग भी बदल चुका था। मैंने अपने माता-पिता की बातचीत में उड़ती बातें सुनी थीं। धनी चीनी लोग वहां ज़मीन खरीदना चाहते थे, अब

यह चीनियों और गोरों के बीच तीव्र मतभेद का प्रश्न बन गया था कि क्या चीनियों को अब उससे बाहर रखा जा सकता है या रखा जाना चाहिए। आरम्भिक वर्षों में किसी चीनी ने वहां आने की बात न सोची थी, पर अब वे गोरों के कन्सेशन में ज़मीन खरीदना चाहते थे, दर्रे के बाहर चीनियों वाले खण्ड में नहीं, जहां व्यापारी लोग रहते थे। जब मैं पहाड़ की चोटी पर पहुंची, तब मैंने देखा कि कुलिंग बहुत तरक्की कर चुका है, और वह मुझे पसन्द नहीं आया, यद्यपि पर्वत पर चढ़ने से जैसा मुझे याद था, उससे अधिक सुन्दर लगा। हमने पिछले दिन नदी के बन्दरगाह पर जहाज़ छोड़ दिया था, रिक्शा से नगर में विश्राम-घर में चले गए थे जिससे हम चीनी पलंगों पर, जो दो लकड़ी की बेंचों पर टिके होते थे, अपने ही बिस्तर फैलाकर सो सकें। अगले दिन सवेरे हमें हमेशा की तरह डांडी उठाने वालों ने जगाया जो चलने के लिए जल्दी कर रहे थे। हमने उठकर विश्रामघर के रसोइये द्वारा चावल और अण्डों का बनाया भर्ता जी भरकर खाया। फिर हम अपनी डांडियों में बैठ गए जिनमें बहुत सुधार हो चुका था और जो अब लकड़ी और बैत की बनाई जाती थीं। इस प्रकार हम मैदानों के पार और पहाड़ की तराई में स्थित दूसरे विश्रामघर को रवाना हुए जहां दूसरी डांडियां और पहाड़ों पर चढ़नेवाले प्रतीक्षा में थे क्योंकि मैदानों वाले लोग चढ़ाई पर नहीं जा सकते थे। इसके बाद सदा की तरह यात्रा का जादू वाला भाग आया। इसका पहला संकेत तब मिल जाता था जब कोई स्वच्छ पर्वतीय धारा विश्रामघर के पास बहती होती थी और गांवों के मकान मैदानों की सलेटी रंग की ईटों के बजाय पत्थरों के बने होते थे। हम डांडियों पर बैठे होते थे, प्रत्येक डांडी को चार उठाने वाले बहंगी की तरह ढोते थे। इस प्रकार वे पत्थर की सीढ़ियों की पहली श्रेणी पर हल्की तालबद्ध चाल से बढ़ते थे। हम पहाड़ के ऊपर चढ़ जाते थे और शीघ्र ही पटपटाते बांसों की जगह चीड़ और छोटे चेस्टनट तथा ओक आ जाते और हम अपने मार्ग पर पहुंच जाते। सड़क पहाड़ी की पथरीली तहों के चारों ओर लिपटी होती, और हमारे नीचे घाटियां, तेज़ी से बहती पहाड़ी नदियां और प्रपात होते। सड़क ऊंची-ऊंची होती जाती, कहीं-कहीं सहसा इतनी अधिक मुड़ जाती कि कभी-कभी हमारी कुर्सियां शिलाओं पर स्पष्ट रूप से झूलने लगतीं, जबकि अगले ढोने वाले आगे निकल जाते और पीछे वाले अभी मोड़ के परली ओर ही होते। एक कदम चूकते ही डांडी हज़ार फुट नीचे की चट्टानों और भंवरदार पानी में जाकर टुकड़े-टुकड़े हो जाती, पर कदम कभी चूकता नहीं था। इतने वर्षों में मैंने कभी किसी

दुर्घटना की बात नहीं सुनी यद्यपि ढोने वाले बड़ी आश्चर्यजनक चाल से जाते थे, और प्रत्येक कदम तालबद्ध गति में होता था।

पर्वत-शिखर के पास किसी जगह हम किसी कोने पर मुड़े। जैसा कि मुझे याद था, पर्वतीय वायु की एक तेज़ ठण्डी धारा आकर हमसे टकराई। इससे पहले वायु क्रमशः ठण्डी होती जा रही थी, पर यहां आकर वह एकाएक बदल गई। ढोने वालों ने ऊंची खुशी की आवाज़ें और थोड़ी दौड़ लगाकर इसका स्वागत किया, और कुर्सी उनके बीच में झूलने लगी। यह अब भी आनन्ददायक था। बचपन में मैं इसके बिना न रह पाती थी। इस बार भी, यद्यपि अब मैं बड़ी हो चुकी थी, मुझे थरथरी अनुभव हुई। मैदानों की हवा गरम और भारी थी जिसे लाखों मनुष्य ले और छोड़ रहे थे, पर यहां पर्वत-शिखर पर वह ताज़ी शीतल शुद्धता से भरी थी, और इसमें सांस लेने पर यह जीवन-रक्षक आक्सीजन जैसी लगती थी।

इस प्रकार हम, मेरी मां और मैं, उसी छोटे-से पुराने मकान में पहुंच गईं। अब मेरी सयानेपन की आंखों को यह बहुत छोटा लगता था, पर पेड़ बड़े थे, छज्जों की दीवारों पर फर्न मोटे हो गए थे। हम अपने साथ जो दो नौकर लाए थे, उन्होंने झट-पट मकान साफ किया तथा हम लोग उसमें जम गए। मेरी मां कुछ दिन चारपाई पर लेटकर आराम करने लगी, और मैं उसकी देखभाल करने लगी और उसे अखबार पढ़ कर सुनाने लगी। जब वह सो जाती तब मैं अपनी चीनी पुस्तकें पढ़ती थी और प्रतिदिन अकेली घूमने जाती थी। बहुत कम लोग नज़र आते थे, अधिकतर मकान अभी बन्द थे क्योंकि अभी मौसम शुरू नहीं हुआ था, पर बस्ती के चारों ओर घूमने, परिवर्तन देखने में आनन्द आता था। तपेदिक के रोगी गोरों के लिए एक सैनेटोरियम बनाया गया था; रूसी व्यापारियों ने पहाड़ से परली तरफ एक अलग भूमि-खण्ड का विकास किया था। इसका नाम 'रूसी घाटी' रखा था। बस्ती की सीमाओं से बाहर धनी चीनियों ने अपने लिए पत्थर के बड़े-बड़े मकान बनाए थे। सड़कों के नाम रख दिए गए थे, पेड़ ऊंचे बढ़कर उनके ऊपर बांहें फैलाए खड़े थे। उस स्थान का वातावरण दुनियावी और सब राष्ट्रों के लोगों से मिश्रित हो गया था।

मेरी मां और मैं इस परिवर्तन के बारे में आपस में बातचीत करतीं। उसे इस परिवर्तन का ध्यान था जिसका उसकी बातों से पता चलता था, जैसे कि वह कहती थी कि अब मैं झरने का पानी बिना उबाले पीने का हौसला नहीं कर सकती क्योंकि इसके ऊपर भी मकान बन गए हैं। फिर उसने कहा, 'हमें चीनियों को यहां आने

देना चाहिए—मुझे यह बात समझ में आती है। शायद हम गोरे लोगों को अपने लिए कभी भी अलग स्थान नहीं बनाना चाहिए था, पर हमने अपने बच्चों की रक्षा के लिए यह स्थान बनाया था। हमारे इतने सारे छोटे बच्चे नष्ट हो गए थे।'

मैं जानती थी कि नष्ट हुए बच्चों की बात करते हुए उसके मन में सदा हमारे उन चार बच्चों की बात आ जाती थी जो छोटी-छोटी दीवारों वाले कबरिस्तानों में गड़े थे—तीन शांगहाई में, एक चिंकियांग में; जो तब मरा था जब मैं छह साल की थी। सबसे बड़ी मेरी बहन एडिथ थी जिसे मेरी मां सबसे सुन्दर और प्रतिभाशाली लड़की समझती थी, और जो चार वर्ष की आयु में हैज़े से मर गई थी। मिशन-हाउस में मेरी मां के कमरे में उसका एक फोटो था—सुन्दर हृष्ट-पुष्ट नीली आंखों वाली बालिका। उसके काले बालों के गुच्छे सुन्दर माथे पर से आकर घनी लहरियों के रूप में उसके कन्धों पर लटक रहे थे।

मेरी मां कह रही थी, 'किसी दिन चीनी लोग फिर सब कुछ वापस ले लेंगे।'

और उन्होंने सचमुच ले लिया, पर उसकी मृत्यु से पहले नहीं।

कुलिंग में अपने दो वर्ष के विश्राम के दिनों में उसने मकान फिर से बनवाया। पुराना मकान गिरवाकर पहले से बड़ा (पर बहुत बड़ा नहीं) मकान खड़ा किया क्योंकि वह कहती थी कि वह इसलिए काफी बड़ा मकान बनाना चाहती है जिससे वह मेरी बहन के लिए व मेरे लिए और हमारे बच्चों के लिए पर्याप्त हो। पर जब मेरी मां मर गई और मेरे पिता भी जाते रहे—और चीन सचमुच बदल रहा था, गोरे लोगों का जो कुछ था वह उनसे लिया जा रहा था, या वे अपने अन्तःकरण की पुकार पर वह लौटा रहे थे—तब मेरी बहन ने और मैंने वह मकान एक अच्छे चीनी परिवार को बेच दिया, इस प्रकार हमारे लिए कुलिंग खत्म हो गया। उस समय तक यह जनरलिस्सिमो, चियांग काई-शेक और मेडम चियांग तथा उनके अनेक सम्बन्धियों का अड्डा बन गया था और नये अफसर गरीब चीनियों को वहां से बाहर रखने में गोरों की अपेक्षा अधिक कड़े थे। पर अब यह हमारा काम नहीं था। उस वर्ष, जब मैं अपनी मां के साथ अकेली थी, मैंने महसूस किया कि अन्त अनिवार्य है, (जैसे कि उसने भी कहा था कि यह अनिवार्य है) पर मैं इससे डरती नहीं थी। मैं इस बोझ से मुक्त होने को बड़ी व्याकुल थी जो सारे जीवन मेरे ऊपर पड़ा रहा था—यह जानने का बोझ कि मेरी जाति ने दूसरी जाति के साथ अन्याय किया है। अन्याय करने की अपेक्षा अन्याय करवा लेना आसान है क्योंकि अन्तःकरण ऐसी

लोमड़ी है जो आत्मा को नोचती रहती है। उस समय तक मैं वृद्ध राजमाता और उसके अनुयायियों की विदेशियों के प्रति घृणा को भी भूल गई थी। और चीनी लोगों की स्नेहपूर्ण मित्रता, विनम्र शिष्टाचार और सदा प्रस्तुत आदर-सम्मान को फिर अनुभव करती हुई मैं यह देखने की आकांक्षा रखती थी कि हमारे बीच की सब असमानता दूर हो जाए और सब लोगों को अपनी उन्नति का समान अवसर मिले। गरीब अमीर तो बेशक सदा रहेंगे और कुछ लोग स्वच्छ और कुछ गन्दे होंगे, कुछ शिक्षित होंगे और कुछ अज्ञानी, पर ये विषमताएं अस्थिर और स्वाभाविक हैं और बहुत दूर तक स्वयं व्यक्तियों पर निर्भर हैं। मैं जिस बोझ से मुक्त होना चाहती थी वह तो हावी गोरों और विद्रोही चीनियों के बीच घोषित भेदभाव का बोझ था। इस मामले में उनका पक्ष सच्चा और हमारा गलत था। आखिरकार चीन देश में हम अब भी केवल अतिथि थे, शासक नहीं और नागरिक भी नहीं।

पर कुलिंग लौट आने से फिलहाल मैं जीवन से फिर दूर हो गई। पहला महायुद्ध प्रचण्ड रूप में चल रहा था, पर मुझे अपने पास प्रति सप्ताह शांगहाई से पहुंचने वाले एक अखबार से जो पता चलता था, उसके अलावा और कुछ मालूम नहीं था। यह एक इंगलिश अखबार था जो अमरीकन फौजों के बारे में बहुत थोड़ी खबर देता था। वर्षों बाद, जब मैं फिर योरप गई, तब तक मुझे सचमुच यह पता नहीं था कि पहले महायुद्ध में कितने अमरीकन लड़े थे और अन्य देशों में मरे थे। यह मुझे तब पता चला जब मैं उन अमरीकन सैनिकों की स्मृति में—जो मर गए थे या लापता हो गए थे—बनवाए गए विशाल स्मारक भवनों में घूमी। वहां ऊंची और चौड़ी दीवारों पर छोटे-छोटे अक्षरों में लाखों लापता लोगों के नाम लिखे थे। मैं फ्रांस और अन्य स्थानों के कबरिस्तानों में घूमी और मैंने एक-दूसरे से बिल्कुल सटकर लगे छोटे-छोटे सफेद क्रास-चिह्न देखे। मेरे देश ने जो कुछ किया था, उसकी विशालता ने मुझे अभिभूत कर लिया और मैंने उन नौजवानों के लिए समय के बाद आंसू बहाए जिनका शरीर पहले ही मिट्टी बन चुका था।

हम सारी गर्मी कुलिंग में रहे। हमारे पुराने मित्र और बहुत से नये मित्र गर्मियों के दिनों में लौट आए, मेरी बहन भी शांगहाई के बोर्डिंग स्कूल से आ गई और फिर हमारा बहुत कुछ पुराना बचपन का जीवन आरम्भ हो गया—अन्तर इतना था कि मैं बच्ची नहीं रही थी। एक अंग्रेज़ डाक्टर मेरी मां को देखता था और उसने फिर उसकी खुराक बदल दी जिससे अब वह उबाले हुए जिगर और पालक के पत्तों

की बेस्वाद खिचड़ी खाती थी और इसे आश्चर्यजनक दृढ़ता से खा लेती थी। वह बहुत धीरे-धीरे अच्छी हो रही थी और मेरे पिता के थोड़ी-सी छुट्टी में वहां आकर चले जाने और मेरी बहन के स्कूल लौट जाने के बाद मेरी मां और मैं वहां टिके रहे। अब पाले से पत्ते लाल होने लगे और ठिगने चेस्टनट फटने लगे और अपनी छोटी-छोटी मीठी गिरियां गिराने लगे। इसके बाद वहां गोरे बहुत थोड़े रह जाने के कारण हमें नीचे घाटी में चले जाने को कहा गया था जहां डाक्टर मेरी मां को देखने आसानी से आ सके और भोजन और कोयला आसानी से पहुंच सके। हम एक स्वीडिश दोस्त के मकान में चले गए। यह गुलाबी और सफेद रंग की काटेज थी। और जहां तक मनुष्यों का सम्बन्ध था, उस जगह मेरे जीवन की सबसे अधिक सूनी सर्दियां आरम्भ हुई। मेरी उमर के अधिक से अधिक पास का व्यक्ति सैनेटोरियम में तपेदिक का इलाज कराने वाला एक नौजवान था, पर मेरी अभी वयस्कता को प्राप्त आंखों के लिए वह लड़का ही था। हमारी मित्रता बहुत थोड़े समय में ही समाप्त हो गई क्योंकि युवक के माता-पिता मिशनरी थे और उन्हें इस बात पर चिन्ता हो गई थी कि उनके बेटे की दिलचस्पी एक युवती के प्रति बढ़ रही थी। मेरा अपना मन बहुत ही भिन्न बातों में लगा हुआ था। मैं इस प्रश्न से जूझ रही थी कि मुझे अपना क्या करना है। मेरी समस्या थी मेरी अभिरुचियों की विविधता जिनसे किसी दिन निःसन्देह मुझे लेखक बनना था पर अभी उसका समय नहीं आया था। मैं बहुत सारे कामों में लगी हुई आनंद अनुभव करती थी।

इधर सर्दियां गुज़र जाने के बाद मेरी मां की तबियत ठीक हो गई। मेरे स्कूल वाले मुझे वापिस बुलाने के लिए शोर मचा रहे थे इसलिए डाक्टर की अनुमति तथा मां के आग्रह पर मैंने उसे कुछ अच्छे मित्रों की देख-रेख में एवं अपने नौकरों की परिचर्या में छोड़ दिया और फरवरी के एक ठण्डे दिन मैं पहाड़ से उतर पड़ी। लौटकर मिशन-हाउस में आना और अकेले उसकी ज़िम्मेदारी संभालना अजीब-सा लगा। मेरे अलावा इसमें मेरे पिता ही थे। स्वयं अपनी अभिभावक होना, कक्षाओं में जाना व पढ़ाना, घर लौटकर अपने अध्यापक से चीनी साहित्य पढ़ना, घर की व्यवस्था के बारे में आदेश देना, अपने सादे भोजन की योजना बनाना और कभी-कभी कुछ अतिथियों को भी बुलाना—यह सब मेरे लिए नया और कुछ उत्साहप्रद भी था। अपनी मां के लिए बहुत प्यार रखते हुए भी मुझे अपनी स्वतन्त्रता में आनन्द आया और फिर भी हर समय में यह सोचती थी कि यह

स्थायी नहीं है—न यह स्थान और न यह समय ही। आगे कुछ और होने वाला था पर मैं नहीं जानती थी कि क्या होने वाला था। भविष्य की प्रतीक्षा करती हुई मैं अपने कार्य में लगी रही।

विचार और चिन्ता के लिए बहुत कुछ मसाला था। १९१४ का साल, जिसमें मैंने कालिज से डिग्री ली, बहुत बड़े-बड़े मामलों की दृष्टि से बड़ा महत्त्वपूर्ण साल था। लगभग उसी समय बहुत-से तरुण चीनी दूसरे अमरीकन कालिजों और विश्व-विद्यालयों से डिग्री पा रहे थे और इन तरुणों ने ही अपने लेखन से नये ज़माने को स्पष्ट करना था। सन यात-सेन और उनके अनुयायी अभी राजनीतिक समस्याओं से ही उलझ रहे थे। अन्त में पुराने लोगों में, जिन्होंने सन यात-सेन को अस्वीकार कर दिया था, और प्रचण्ड विचारों वाले रेडिकल लोगों में, जो पू यी को सम्राट् मानने को तैयार न थे, समझौते के रूप में सैनिक नेता युआन शिह-काई ने नये चीनी गणराज्य का राष्ट्रपतित्व ग्रहण कर लिया था। सन यात-सेन को धक्का लगा था, पर उन्होंने चीनी शालीनता से स्थिति को स्वीकार कर लिया। पर अब यह दिखलाई देने लगा कि युआन शिह-काई अपनी आकांक्षाओं से प्रेरित होकर फिर राजगद्दी कायम करना चाहता है जिसपर वह स्वयं पहला सम्राट् होकर बैठे। यह अभी संदिग्ध था कि लोग ऐसा होने देंगे या नहीं, क्योंकि यदि मैं अपने छात्रों और तरुण चीनी मित्रों से कुछ निर्णय कर सकती थी तो न केवल सन यात-सेन द्वारा, बल्कि लियांग चिह-चाओ और कांग यू-वेइ तथा अन्य लोगों द्वारा निरन्तर प्रेरित क्रान्तिकारी भावना लोगों में इतनी अधिक व्याप्त थी कि जहां अस्सी प्रतिशत आबादी पढ़ना-लिखना न जानती हो वहां उसका अन्दाज़ भी नहीं हो सकता। परन्तु चीनी लोग बड़े जटिल लोग हैं जो सदा उत्सुक और सजग रहते हैं। सुनी-सुनाई बातें और अफवाहें बड़ी जल्दी राष्ट्र भर में फैल गईं और यह स्पष्ट हो गया कि ये राजतन्त्र की स्थापना—विशेष रूप से वृद्ध युआन के अधीन—सहन नहीं करेंगे, जिसपर पिछले शासन से एक कलंक चला आता था, क्योंकि वही तरुण सम्राट् से विश्वासघात करके राजमाता की ओर हो गया था इसलिए अन्त में सम्राट् की मृत्यु के लिए नैतिक दृष्टि से वही ज़िम्मेदार था। इस बात को लोग भूले नहीं थे।

चीन में रहने के लिए यह बड़ा अच्छा समय था और मेरी आयु इसके लिए उपयुक्त थी। मैंने अपने-आपको युवा, चारों ओर की सब घटनाओं में दिलचस्पी रखने वाली, इंगलिश व चीनी दोनों भाषाएं पढ़ने में समर्थ और मिशनों के ईसाई दायरे

से बहुत दूर रहने वाले मित्रों से घिरी हुई ने होके कारण बहुत-सी घटनाओं से आन्दोलित और प्रेरित होते पाया। यह सच है कि नये आन्दोलनों का केन्द्र हमारे शान्त, ज़रा पुराने ढंग के नगर और देहात से दूर था, पर जो कुछ हो रहा था उसका हमें पता था। चर्च में भी वृद्धि हो रही थी और मेरे पिता को ईसाई बनने में रुचि रखने वाले व्यापारियों और किसानों की संख्या पर आश्चर्य हो रहा था। इनमें कोई भी पुराने ढंग का विद्वान् नहीं था, स्कूलों तथा कालिजों के तरुण छात्र भी बहुत ही थोड़े थे। इससे मेरे पिता दुःखी थे क्योंकि उनमें यदि कोई भेदभाव करने की प्रवृत्ति थी तो वह अनपढ़ व्यक्ति की अपेक्षा पढ़े हुए लोगों के पक्ष में थी। यह तथ्य छिपा नहीं था कि जब वे किसी वृद्ध या युवा शिक्षित व्यक्ति को ईसाई बनाते थे तब वे यह अनुभव करते थे कि ऐसा एक आदमी सामान्य अशिक्षित एक दर्जन से भी ज़्यादा आदमियों से अधिक महत्त्व का था। फिर भी चीनी लोगों का एक ठोस समूह कुछ सीमा तक ईसाई-धर्म के प्रति आकर्षित होता जा रहा था और मुझे निश्चय है, यद्यपि मेरे पिता मुझसे सहमत नहीं हुए, कि इसका कारण यह था कि वह धर्म एक ऐसा नया समाज बनाने की आशा दिलाता था जिसमें सब मनुष्यों का मनुष्य के नाते समान मूल्य होगा।

क्रान्ति में मिशन स्कूलों का भी बड़ा ज़बर्दस्त भाग था। मुझे नहीं मालूम कि मिशनरियों को यह बात कैसी लगी कि उन्होंने चीन में अराजकता लाने में मदद दी, पर फिर भी उन्होंने दी अवश्य। इतनी ही बात नहीं थी कि उन्होंने छात्राओं के पांव खोलने का आग्रह किया था, उन्होंने पुराने चीनी स्कूलों के पुराने धार्मिक और साहित्यिक विषयों के बजाय विज्ञान, गणित आदि पश्चिमी विषय पढ़ाए। इनसे भी बढ़कर यह तथ्य था कि उन्होंने ईसा के क्रान्तिकारी और संसार को हिला देने वाले सिद्धान्तों की शिक्षा दी। आश्चर्य तो यह है कि उनमें से किसीने भी कम से कम उस समय यह अनुभव नहीं किया कि वे सिद्धान्त कितने क्रान्तिकारी थे। उनका पालन-पोषण पश्चिमी वातावरण में हुआ था जहां चर्च के सदस्य ईसा की शिक्षाओं को शब्दशः नहीं ग्रहण करते, बल्कि वहीं तक उनपर आचरण करते हैं जहां तक उनके समाज के कुल ढांचे में करना सम्भव होता है, परन्तु चीनियों की प्रवृत्ति धर्म के बारे में भी आचरण-प्रधान थी और इसका परिणाम प्रायः सचमुच बड़ी परेशानी में डालने वाला होता था।

पर शायद सबसे ज़बरदस्त धक्का अन्त में मिशन स्कूलों के ग्रेजुएटों से पैदा

हुआ जिन्हें पुरानी राजकीय परीक्षाओं में प्रतियोगिता में नहीं बैठने दिया गया था; और १९०५ ई० में वे परीक्षाएं खत्म कर दी जाने पर भी उन लोगों को चीनी ढंग की शिक्षा से इतना काफी दीक्षित नहीं माना गया था कि वे उच्च राजनीतिक पदों के लिए आवेदन-पत्र दे सकें। विद्वानों के दो समूह थे—एक ओर वे पुराने परम्परा-शिक्षित विद्वान् थे जिन्होंने प्राचीन शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त करके अपनी चीनी डिग्रियां हासिल की थीं और दूसरी ओर वे नये लोग थे जिन्होंने पश्चिमी डिग्रियां प्राप्त की थीं, पर प्राचीन शास्त्रीय और परम्परागत ज्ञान में अधूरे थे। इन दोनों में गहरी ईर्ष्या थी। प्रत्येक समूह दूसरे को हीन समझता था। तरुण नये छात्रों ने ऐसा समाज बनाने का दृढ़ संकल्प कर लिया था जिसमें वे स्वयं सत्ताधारी होंगे, वे लोग नहीं जिन्हें वे दकियानूसी बूढ़े समझते थे। इनमें से बहुत से नौजवान सन यात-सेन के अनुयायी थे।

पर जब मैं अपनी चीनी दुनिया को अपनी ही तरुण और अत्यधिक आदर्शवादी आंखों से देखती थी, तब मुझे जिस बात से परेशानी होती थी वह यह थी कि वस्तुतः प्रथम कोटि के मस्तिष्क ईसाई मत की ओर नहीं झुक रहे थे। मैं परेशान अपने खातिर न थी, बल्कि अपने माता-पिता के खातिर थी क्योंकि मुझे डर था कि वे तथा अन्य लोग ईसाईमत के जीवित नमूनों के रूप में अपने साथ निश्चय ही जो अच्छाई चीन में लाए थे, उसके मुकाबले में इसके साथ आई बुराई का बोझ अधिक हो जाएगा और अन्त में सारा ढांचा धरती पर गिर जाएगा। मैं यह नहीं देख सकी कि वह कितनी जल्दी गिर जाएगा, पर मुझे इतना काफी ज्ञान था कि मैं यह समझ सकूं कि चीन में आने वाले परिवर्तनों का रूप सर्वोत्तम मस्तिष्कों द्वारा निश्चित किया जाएगा। चीनी लोग शताब्दियों से विद्या का आदर करते रहे थे और यह खतरा नहीं था कि वे अज्ञानी मनुष्यों के नेतृत्व में कुछ भी समय रह सकेंगे। कन्फ्यूशियन धर्म जनता के मानसिक और आत्मिक विधान में बड़ी दृढ़ता से जम चुका था और कन्फ्यूशियस ने उत्कृष्टतर आदमी की विशेषताएं बार-बार बताई थीं। मिशनों और ईसाईमत की जहां तक चीन में विफलता का सम्बन्ध है, इसका कारण यह था कि कोई भी प्रथम कोटि का चीनी मस्तिष्क ईसाई-आन्दोलन में शामिल नहीं हुआ। यह बात मैं बिना किसी अपवाद के कहती हूं। लियांग चिह-चाओ ने, जो उस समय नौजवानों का आत्मिक और मानसिक नेता था, खुले आम घोषणा की थी कि धर्म और विशेष रूप से ईसाईमत—जिसका अनेक पश्चिमी राष्ट्रों के नैतिक

जीवन में दखल देने का रिकार्ड है—सदा राज्य का हथियार होगा।

परन्तु किसी भी राष्ट्र में कोई मूलगत परिवर्तन एकाएक नहीं होता और चीन में भी परिवर्तन एकाएक नहीं हुआ। पश्चिम में शिक्षा पाए हुए चीनी १८८० से लौट रहे थे और अपने साथ जीवन की दूसरी पद्धतियों के विचार ला रहे थे। मज़दूरों और व्यापारियों की बड़ी संख्या हवाई द्वीप और अमरीका गई थी और अपने साथ पश्चिमी जीवन-पद्धति के बारे में अपने विचार लाई थी। सबसे अधिक दुःख-दायी और मनोरंजक बात यह थी कि तथाकथित 'कुली' मज़दूर दस्तों के—जो प्रथम महायुद्ध में चीन की ओर से सहायता के रूप में भेजे गए थे—कुछ लोग अपने साथ फ्रेंच पत्नियां या उप-पत्नियां लेकर लौट रहे थे। इन स्त्रियों का निवास-काल कम या अधिक होना इस बात पर निर्भर था कि वहां पहुंचने पर उन्हें अपने आदमी के घर में कैसी अवस्थाएं मिलेंगी। निश्चय ही इन 'कुली' प्रेमियों ने फ्रेंच स्त्रियों को यह विश्वास दिलाया था कि चीन में जीवन आरामदेह और आधुनिक है। रेलें? निश्चय ही चीन में रेलें थीं। फ्रेंच स्त्रियां यह निश्चय कर लेना चाहती थीं कि यदि उन्हें वहां की अवस्थाएं पसन्द न आएं तो वे आसानी से वहां से आ सकें। यह तथ्य है कि चीन में कुछ बहुत बढ़िया रेलमार्ग थे। उनमें से एक, जो शांगहाई को पीकिंग से जोड़ता था, हमारे नगर से होकर जाता था। इसका उद्घाटन मेरी बारह वर्ष की आयु में हुआ था और मुझे याद है कि इससे बहुत उत्तेजना पैदा हुई थी क्योंकि जिस पहाड़ी पर किला था उसके नीचे सुरंग बनानी पड़ी थी। इससे हमारी सारी बस्ती में इस आशंका से उदासी छा गई थी कि उस पहाड़ी पर कब्रों में गड़े मृत व्यक्तियों की आत्माएं गाड़ियों की उनकी हड्डियां हिलाने वाली घड़घड़ाहट से क्षुब्ध होंगी, पर ये वे दिन थे जब वृद्ध राजमाता अपनी हार महसूस कर रही थी और यह सिद्ध करने की कोशिश कर रही थी कि वह कितनी आधुनिक है। उसने अंत में रेलों का पथ लिया था वह कहती थी कि मैं पक्ष में हूं। इसलिए सुरंग बनाई गई और गाड़ियां चलने लगीं।

फिर भी दूरदर्शी फ्रेंच स्त्रियों ने (उनमें अधिकतर दूरदर्शी थीं) विवाह द्वारा अपनी फ्रेंच नागरिकता नहीं छोड़ी थी और उन्होंने घर वापिस लौटने के लिए काफी धन बांध रखा था और फ्रेंच वाणिज्य-दूतावास के सहयोग से इनको कोई परेशानी नहीं हुई, परन्तु वे अपने पीछे एक समस्या छोड़ गई। समस्या यह थी कि अनपढ़ चीनी मज़दूर एक गोरी औरत को ब्याह लाने का या कम से कम उसके साथ

सम्बन्ध का अभिमान कर सकता था और करता था। इससे उसके किस्सों से गोरी जाति का गौरव-मान और भी नष्ट हो गया।

इस समय मेरे लिए और मेरी तरुण चीनी सहेलियों और मेरे छात्रों के लिए जिन दो आदमियों के नाम जादू थे वे अब भी कांग यू-वेई और लियांग चिह-चाओ थे, जो तरुण सम्राट् के शिक्षक रहे थे। १८९८ के बाद दोनों को निर्वासित कर दिया गया था और बाद के वर्षों में दोनों में से लियांग चिह-चाओ की स्थिति धीरे धीरे अधिक मज़बूत हो गई थी। मैं समझती हूं कि इसका कारण यह नहीं था कि उसका मस्तिष्क अधिक उत्कृष्ट था, क्योंकि कांग यू-वेई के समान बहुमुखी और साथ ही गहरा तथा मौलिक मस्तिष्क किसी भी देश में ढूंढ़ना कठिन होता। कांग में दृष्टि और समझदारी की ऐसी विशालता थी जिससे एकपक्षता असम्भव हो जाती थी और उसने बहुत पहले यह समझ लिया था कि यदि पूर्व और पश्चिम मैत्री और पारस्परिक सहयोग कर सके तो वे एक-दूसरे के पूरक बनकर एक-दूसरे के लिए सहायक हो सकते हैं। उसे पश्चिमी इतिहास और विज्ञान से प्रेरणा मिली थी और वह चीनियों की हीनता की मिथ्या भावना से लज्जित नहीं था, पर निर्वासित होकर जापान चले जाने के बाद फिर उसका पहले जैसा प्रभाव न रहा। मेरी समझ में, इसका कारण यह था कि इसने क्रान्ति की उग्रता वाली प्रवृत्ति का समर्थन नहीं किया। उसको विश्वास था कि चीन को गणराज्य नहीं बनना चाहिए और चीन के लोग इस प्रकार के शासन-विधान के लिए तैयार नहीं हैं। उसका विचार बेशक ठीक था, पर उसकी लोकप्रियता कम हो गई थी, जैसे कि गलत समय पर सही बात कह नेवालों की सदा हो जाया करती है। इस प्रकार लियांग चिह-चाओ शिक्षित नौजवानों का हृदयहार बन गया।

लियांग चिह-चाओ ने अपना विलक्षण लेखन १९०२ में ही आरम्भ कर दिया था। हू शिह ने अपनी आत्मकथा में यह बताया है कि जब वह तथा उस जैसे अन्य लोग लियांग के निबन्ध पढ़ते थे, जो उस समय जापान में 'मिंग पाओ' अर्थात् जनता के अखबार में प्रकाशित होते थे, तब उनपर कितना गहरा प्रभाव पड़ता था। उनमें लियांग ने एक सिद्धान्त प्रस्तुत किया था जो चीनियों की इस पुरानी मान्यता से, कि सभ्य मनुष्य कभी आक्रामक नहीं होता, या निष्क्रिय तरीके से सक्रिय होने के अलावा कभी सक्रिय भी नहीं होता, सचमुच भिन्न था। इसकी जगह उसने तरुण चीनियों को, जो कुछ करने और परिवर्तन के लिए उतावले हो

रहे थे, यह बताया कि डार्विन ने योग्यता की विजय का सिद्धान्त सिद्ध कर दिया है तथा इससे स्वयं यह प्रकट होता है कि आक्रमण प्रकृति का नियम है और पश्चिमी राष्ट्रों की विजय आक्रमकता के कारण ही हुई है, इसलिए चीनियों को अपने-आपको एक नया आक्रामक राष्ट्र बनाना चाहिए।

हर जगह 'नया राष्ट्र' शब्द फूंस में लगाई हुई आग की तरह हो गया। सन यात-सेन ने सोचा था कि जब माचू राजवंश को उखाड़ फेंका जाएगा, तब लोग अनिवार्यतः 'नये' हो जाएंगे। पर जैसे हाल के वर्षों में राष्ट्रवादियों को बहुत अधिक आसानी से और जल्दी उखाड़ फेंका गया, वैसे ही मांचुओं को उखाड़ फेंका गया था, और किसीको यह ठीक-ठीक सोचने का मौका भी न मिला था कि लोगों को कैसे नया बनाया जाए। जब मैंने कुछ वर्ष पहले हांगकांग में एक चीनी मित्र से सुना कि जब चियांग काई-शेक के सैनिकों ने इतनी आसानी से हथियार डाल दिए तब कम्यूनिस्ट सचमुच चिन्तित हुए थे, तब मुझे दुःख अनुभव हुआ। 'हमने पांच वर्ष तक संघर्ष का हिसाब लगाया था,' कहते हैं कि कम्यूनिस्ट सेनापति बताते थे, 'और हमें उन पांच वर्षों की आवश्यकता थी जिनमें हम लोगों पर शासन करना सीख लेते। अब विजय इतनी जल्दी प्राप्त हो गई है कि हम इसके लिए तैयार नहीं हैं। हम बहुत-सी गल्तियां करेंगे।'

यही चीज़ १९११ की क्रान्ति के बाद हुई थी जब मांचू शासकों की टूटी-फूटी रक्षा-व्यवस्था क्रान्तिकारियों के सामने उड़ गई थी, यद्यपि उन्होंने अपनी रक्षा के लिए तीस लाख झण्डाधारी पीकिंग के चारों ओर गांवों में और प्रत्येक प्रान्तीय राजधानी में भी इकट्ठे कर रखे थे। विशाल देश और करोड़ों आदमियों का भी शासकों के बिना कोई क्या करे? किसीके पास कोई योजना नहीं थी और इस योजना-हीनता के कारण ही सन यात-सेन अपने गणतन्त्रीय शासन-विधान के विचार सामने रख सके। लोग कहते थे कि कम से कम ऐसी सरकार संगठित करने में सदा बीच में आने वाला गृह-युद्धों का काल तो न आएगा और नये राजवंश की स्थापना के झंझट और खर्च से भी बच जाएंगे। जन-साधारण किसान या व्यापारी इस विचार से खुश था कि अब खर्चीले महल और अफसरों के लिए प्रमोद-कानून बनाने के लिए उनपर कर नहीं लगाया जाएगा। चीन में बहुत लोकतन्त्र था, जो लोगों में गहरा और जन्मजात था। उन्होंने अपने सम्राटों को और उनकी सब मूर्खताओं को भी शासन के लिए आवश्यक मानकर स्वीकार किया था, पर जब

यह मालूम हुआ कि ऐसे भी देश हैं जिनमें ये चीज़ें नहीं हैं, तब परिवर्तन उन्हें समझदारी की चीज़ मालूम हुआ। जब युआन शिह-काई ने फिर सम्राट्-तन्त्रीय व्यवस्था कायम करने की इच्छा की, तब उन्होंने इसका विरोध करने का निश्चय किया। उनका निश्चय इतना दृढ़ था कि यह बात उसके मूढ़ मस्तिष्क में घुस गई कि लोग न केवल उसे नहीं चाहते, बल्कि वे कोई सम्राट् ही नहीं चाहते—वे तो आधुनिक स्वशासन का कोई रूप चाहते हैं।

सचाई तो यह है कि चीनी लोगों ने सदा ही अपने ऊपर शासन किया है। वे सरकारों को अविश्वास, बल्कि हीनता की नज़र से देखते हैं। अफसरों की ईमानदारी के बारे में उन्हें पूरा अविश्वास था और प्रत्येक अफसर के भ्रष्ट होने को वे अनिवार्य समझते थे। उनका प्राचीन आदर्श यह था कि सर्वोत्तम शासक वह है जो सबसे कम शासन करता है। एक देहाती लोक-गीत इस प्रकार है :

जब सूरज उगता है तब मैं काम करता हूं ;
जब सूरज छिपता है तब मैं आराम करता हूं।
पानी के लिए मैं कुआं खोदता हूं ;
रोटी के लिए मैं खेत जोतता हूं।
सम्राट् का मुझसे क्या वास्ता ?

और चीनी लोग स्वशासन में सर्वथा समर्थ थे। उनकी परम्परागत पारिवारिक पद्धति—जिसमें हर पुरुष, स्त्री और बच्चा एक गोत्र (कुटुंब) का भाग होता था और प्रत्येक गोत्र पर अपने सब सदस्यों की ज़िम्मेदारी होती थी—एक तरह के आधुनिक लोकतन्त्र के लिए एक मज़बूत आधार था। अमरीका वालों के लिए यह समझना कठिन है कि पारिवारिक गोत्र लोक-तन्त्रीय शासन के लिए मज़बूत इकाई है, पर वह सचमुच ऐसा ही है। चीन में कम्यूनिज़्म ने जब परिवार-प्रणाली को नष्ट करने का कार्य आरम्भ नहीं किया था, तब उदाहरण के लिए संस्थात्मक खर्च की–जिसका हमारे लोकतन्त्र पर इतना अधिक भार है–कोई ज़रूरत न थी। वहां कोई अनाथालय नहीं था क्योंकि वहां कोई बच्चा अनाथ नहीं होता था—क्योंकि जिस बच्चे के माता-पिता मर जाते थे उसकी ज़िम्मेदारी सारे परिवार पर पहले की तरह रहती थी। वहां पागलखाने न थे क्योंकि परिवार अपने पागलों की देखभाल करता था। तथ्य तो यह है कि वहां बहुत थोड़े पागल होते थे क्योंकि परिवार-प्रणाली विना अपमान के व्यक्ति की सुरक्षा और निःशंकता

कायम रखती थी। इस प्रकार उक्त प्रणाली आधुनिक पागलपन के एक मुख्य कारण 'विनष्ट व्यक्तित्व' को दूर कर देती थी। सहायता पाने वालों की सूचियों की भी ज़रूरत न थी क्योंकि सारा परिवार अपने उन सदस्यों की देखभाल करता था जिनके पास काम नहीं होता था। केवल व्यापक अकाल और महाविनाश के समय ही उन्हें बाहरी सहायता लेनी पड़ती थी और तब भी परिवार इकट्ठा रहता था। किसी बड़े मध्यवर्गीय परिवार में व्यापार स्थायी रहता था क्योंकि अनेक पीढ़ियां उसे चलाती जाती थीं। यह सच है कि बन्धु-पक्षपात एक समस्या होती थी क्योंकि यह स्वाभाविक था कि आदमी अपने रिश्तेदारों को नौकरी दिलाने की कोशिश करे। फिर भी मुझे चीन के पारिवारिक पक्षपात और संयुक्तराज्य अमरीका के राजनीतिक पक्षपात में अन्तर नहीं दिखाई देता था। और इन दोनों में चीन का पारिवारिक पक्षपात समाज के लिए कम खतरनाक मालूम होता है क्योंकि परिवार अब भी अपने हर एक सदस्य के लिए नैतिक दृष्टि से ज़िम्मेदार होता था और एक सदस्य की बेइज़्ज़ती पारिवारिक बेइज़्ज़ती होती थी।

यदि सन यात-सेन और उनके अनुयायियों ने—इसमें बाद में चियांग काई-शेक के अधीन बनी राष्ट्रवादी सरकार भी आ जाती है—परिवार-प्रथा का महत्त्व समझा होता और इसके उत्तरदायी लोकतन्त्र पर निर्माण किया होता तो इसमें कोई शक नहीं कि आज चीन में कम्यूनिज़म का शासन न होता। इसका एक प्रमाण यह है कि अपने राजनीतिक सिद्धान्तों की स्थापना करने के इच्छुक कम्यूनिस्टों ने अपना मुख्य हमला परिवार-प्रथा पर किया—क्योंकि उनकी स्थायिता उतनी ही अधिक होगी जितनी दूर तक वे परिवार के सदस्यों को एक-दूसरे से अलग कर सकेंगे और इस प्रकार उस ढांचे को नष्ट कर सकेंगे जिसने चीन को जीवित, क्रियाशील और प्राणवान् बनाए रखा है जबकि इतिहास में उसके समकालीन राष्ट्र शताब्दियों पहले नष्ट हो गए।

शुरू में बेशक पहले वाली क्रान्ति की विफलता स्पष्ट नहीं हुई थी। सन यात-सेन राजनीतिक एकता के लिए संघर्ष करते ही रहे यद्यपि देश पुरानी युद्धनायकों वाली प्रवृत्ति की ओर जा रहा था और इस बार इस प्रवृत्ति को पश्चिम में उठती हुई सैनिकवाद की लहर से बढ़ावा मिला था। मैं समझती हूं, अब की तरह तब भी बहुत थोड़े अमरीकन चीन के बारे में कभी कुछ सोचते थे और इससे भी थोड़े यह महसूस कर सकते थे कि पश्चिम की घटनाएं एक पुरानी ऐतिहासिक प्रक्रिया

से चल रही हैं और इस प्रकार चीनी युद्ध-नायकों को जन्म दे रही हैं जो 'जनरल' (सेनापति) कहलाते थे और जो अपने-अपने प्रदेशों में वास्तविक शासक बनने लगे थे। मैं उस काल में युद्ध-नायकों के शासन में बहुत देर रही और काफी शान्ति में रही, यद्यपि हमें सदा अपने स्थानीय युद्ध-नायक की नज़र और प्रकृति देखनी पड़ती थी। वह प्रायः अशिक्षित होता था और जितना युद्ध के लिए तत्पर रहता था उतना ही भोगविलास के लिए भी। किसी संघर्ष के बाद,चाहे वह विजेता होता या पराजित, वह कुछ समय शान्त बैठ जाता, कुछ नई रखेलें रखता और शायद अफीम या किसी ऐसे ही अन्य व्यसन में फंस जाता। इस प्रकार अगला संघर्ष छिड़ने तक हमारे यहां शान्ति रहती। युद्ध-नायक गोरे लोगों को प्रायः तंग नहीं करते थे क्योंकि वे पश्चिमी सरकारों से नहीं उलझना चाहते थे। पर उनमें एक और मर्ज़ था जिसने तरुण रेडिकलों या उग्र विचार वालों को पागल कर रखा था और वह यह था कि उन्हें निकम्मे और असन्तुष्ट लोगों की प्रतिदिन बढ़ती हुई अपनी सेनाओं को बनाए रखने के लिए अनन्त धन की आवश्यकता होती थी, इसलिए धन की ज़रूरत को पूरा करने के लिए वे अपने देश के टुकड़े जापान को बेच डालते थे जो पहले महायुद्ध के दिनों में बड़ी लूट कर रहा था। वह मित्रराष्ट्रों की ओर से युद्ध में शामिल हो गया और इस प्रकार चीन में जर्मन बस्तियों पर काबिज़ हो गया था। इससे उसे बाद के आक्रमणों के लिए एक अड्डा मिल गया। उसने लोभी युद्ध-नायकों से खानें और बंदरगाह तथा कन्सेशन पट्टे पर लिए या खरीदे, जो सचमुच हमारे लिए भक्षक और अशुभ बन गया।

शिक्षित चीनी युद्ध-नायकों से नफरत करते थे, पर सामान्य लोग आम तौर से उन्हें तब तक मनोविनोद की चीज़ समझते थे जब तक वे डाकुओं को परे रखते थे और दूसरे लोगों को कुछ नहीं कहते थे। युद्ध-नायक आम तौर से शक्तिशाली, हठी, परिहासप्रिय, अपसे भरोसे खड़े होने वाले, किसीसे न डरने वाले और प्रायः बड़े तमाशा करने वाले होते थे। हमारे पड़ोस के युद्ध-नायकों में से एक की यह प्रसिद्धि थी कि वह तीन बातें नहीं जानता था—अपने सैनिकों की संख्या, अपने धन का परिमाण और अपनी पत्नियों की संख्या। मुझे अपने प्रान्त के निकटवर्ती प्रान्त के युद्ध-नायक की बात याद है जिसे एक और युद्ध-नायक ने दो बार हरा दिया था। अन्त में उसने ऊंची आवाज़ में और सार्वजनिक रूप से यह घोषणा की कि वह एक बार और लड़ना चाहता है; उसमें यदि वह हार गया तो लाश रखने की

पेटी में ही घर जाएगा। इस बहु-प्रचारित संघर्ष के परिणाम की हम सब प्रतीक्षा करते रहे और जब इसका भी पहले की तरह पराजय में अन्त हुआ, तब उसके शरीर की वापसी के लिए पूरे तौर से अन्तिम क्रिया की तैयारी की गई। हर बारीकी से पूरी अन्तिम क्रिया खूब हंसी-मखौल में हुई, परन्तु पेटी में लम्बी-चौड़ी लाश होने की अपेक्षा बूढ़ा युद्ध-नायक—जो पराजित होने के बाद भी पूरी तरह ज़िन्दा बैठा हुआ था—अपनी सर्वोत्तम पोशाक पहने हुए एक बड़ा विदेशी सिगार पीता हुआ हंस रहा था। भीड़ चकित होकर उसे देख रही थी। लोग पेट पकड़-पकड़कर हंसे। उन्होंने वृद्ध शासक के सब पाप तुरन्त माफ कर दिए क्योंकि उसने बहुत बढ़िया मज़ाक पेश किया था। यह चीनियों की तब भी विशेषता थी और अब भी है कि वे हंसी-ठट्ठा पसन्द करते हैं। मेरे पिता ने भी कई बार हाज़िर-जवाबी और मज़ाक से अपनी जान बचाई थी।

इधर तरुण चीनी, जिनमें बहुत से मेरी सहेलियों के पति या बहुत से मेरे ही छात्र थे, नये चीन को जन्म देने की भरसक कोशिश कर रहे थे। दुर्भाग्य से यथार्थता शुरू करने के बजाय—और यथार्थता यह थी कि वे यह देखते और समझते कि उनके अपने लोगों में निर्माण का आधार बनने वाली कौन सी चीज़ें हैं—उन्होंने पश्चिमी विचारों को सीधे लागू करने की कोशिश की। उदाहरण के लिए, वे सैनिकवाद की आवश्यकता में विश्वास करने लगे, क्योंकि वे कहते थे कि पश्चिम शान्ति का आधार उनकी फौज और हथियार ही हैं। कुछ तरुण सुधारक युद्ध-नायकों के साथ हो गए। उन्होंने उनकी बड़ी-बड़ी अनियमित सेनाओं को आधुनिक रूप देने का वचन दिया। दूसरों का यह विचार था कि पश्चिम शक्ति का मूल आधार उसके कानून के मानदण्ड हैं तथा चीन की दुर्बलता का कारण यह है कि उसका शासन कानून पर निर्भर न होकर कुछ आदमियों और उनके अपने सम्बन्धों पर निर्भर है। इन नौजवानों ने विदेश जाकर कानून का अध्ययन किया और फिर स्वदेश लौटकर अमरीकन और फ्रेंच नमूने पर कानून पर आश्रित शासन बनाने का यत्न किया। उनका यत्न विफल हो गया क्योंकि सन यात-सेन का यह आग्रह था कि इस प्रकार बनाई गई संसद् ही देश की शासक होनी चाहिए, जबकि पुराने ख़्याल के युआन शिकाई ने अपने राष्ट्रपतित्व-काल में अपने ही हाथों में शक्ति रखने का दृढ़ निश्चय किया। प्रान्तीय विधानसभाएं सचमुच बनाई गई पर युद्ध-नायकों ने शीघ्र ही उन्हें खत्म कर दिया क्योंकि उनकी

सत्ता बढ़ती रही।

यह एक अजीबो-गरीब काल था। जब मैं अखबार पढ़ती थी तब मैं कभी-कभी यह महसूस करती थी कि मैं एक ऐसा बाजीगर हूं जो एकसाथ एक दर्जन गोले हवा में कायम रखने की कोशिश कर रहा हो। यहां पश्चिमी शिक्षा पाए हुए नौजवान थे जो संसदों और कानूनी बारीकियों तथा पुराने प्रत्ययवादी दर्शनों के विरोध में यन्त्रवादी दार्शनिक सिद्धान्तों का कोलाहल कर रहे थे, और यहां बेढंगे, मस्त, सर्वथा स्वार्थी युद्धनायक थे जो अपने अलग छोटे-छोटे साम्राज्य खड़े कर रहे थे, और यहां साम्राज्यवादी जापान था जो ज़मीन और साधनों को परिश्रम से नोच रहा था और अपने भावी साम्राज्य की तैयारी कर रहा था और यहां हताश सन यात-सेन थे जो बिना धन या सेना के अपने ही आदर्शों के लिए बहादुरी से जूझ रहे थे, और यहां बूढ़ा युआन शिहकाई था जो राजतन्त्र फिर से लाने की ठाने बैठा था। उस समय वातावरण कुछ साफ हो गया जब युआन ने समझ लिया कि लोग उसको सम्राट् नहीं मानेंगे और यह बात इतनी स्पष्ट कर दी गई थी कि उसे हटना पड़ा या त्याग-पत्र देकर अपनी गलती माननी पड़ी। और इस अपमान के बाद वह अधिक दिन जीवित न रहा। जब १९१६ में वह मरा, तब हम सबको चैन पड़ा।

पर मुझे क्रान्ति के जिस पहलू में अधिक दिलचस्पी पैदा हुई, वह अब भी साहित्यिक पहलू ही था। जिस समय देश आधुनिक युग के अनुकूल कोई राजनीतिक ढांचा ढूंढने का संघर्ष कर रहा था, तब पुस्तकों के लिखने और पढ़ने में गहरा परि-वर्तन हो रहा था। क्रान्ति के इस भाग का वर्णन करने से पहले मैं यह स्पष्ट कर दूं, या उतना स्पष्ट कर दूं जितना मैं कर सकती हूं कि कन्फ्यूशियस के काल (अर्थात् ईसा से पांच सौ वर्ष पूर्व) से ही चीन में पुस्तकों का क्या स्थान चला आता था। चीन में यदि कोई उच्चवर्ग था तो वह जन्म के या सम्पत्ति के आधार पर न होकर विद्या के आधार पर था। राजकीय परीक्षाएं सबके लिए खुली थीं और उनमें सबसे अधिक सफलता पाने वाले लोग किसानों के बेटे ही हो सकते हैं। वे प्रायः होते भी थे, क्योंकि यदि कोई गांव अपने निवासियों में किसी लड़के को प्रतिभाशाली मान लेता था, तो प्रायः सब गांव वाले मिलकर उसकी शिक्षा की व्यवस्था करते थे क्योंकि उन्हें यह आशा होती थी कि यदि उसने राजकीय परीक्षाओं में सफलता पा ली तो वह अपने गांव की इज़्ज़त बढ़ाएगा और अपने गांव वालों को अपने ऊपर लगाए गए धन का प्रतिफल भी देगा। आपसे-आप वह नौजवान छात्र उच्च बुद्धिजीवीवर्ग

में आ जाता था और इसके बाद किसी छोटे मेहनत-मज़दूरी के काम में हाथ नहीं लगाता था। वह पण्डित होता था और पण्डित का ही जीवन बिताता था। धनी हो या निर्धन, यदि वह कभी यश न पाता तो भी उसकी स्थिति कभी नहीं गिरती थी क्योंकि वह कम से कम अपनी जीविका तो गांव में स्कूल खोलकर चला ही सकता था। चाहे वह सम्राट् का सलाहकार बन जाता और चाहे गांव का अध्यापक-मात्र होता, पर उसे पण्डित के रूप में आदर मिलता था। विद्या के प्रति गहरे आदर की इस राष्ट्रीय प्रवृत्ति के कारण नौजवान चीनियों को पढ़ाने का कार्य शुद्ध आनन्द का विषय होता था क्योंकि कक्षा के क़मरों में लापरवाही से बैठने या छोटे बच्चों की तरह खेल में लगे रहने के बजाय मेरे छात्र यथासम्भव अधिक से अधिक सीखने के लिए चौकन्ने और उत्सुक रहते थे क्योंकि चीनी-समाज में विद्या की सफलता जीवन की सफलता की कुंजी थी। बुद्धिजीवी को सांसारिक पुरस्कार प्राप्त होता था।

जब तक मांचू शासन रहा, और विशेष रूप से जब तक राजकीय परीक्षाएं चालू रहीं, तब तक शक्ति प्राचीन शास्त्रीय पण्डितों के हाथ में रही जो पश्चिमी विश्वविद्यालयों की डिग्रियों को मान्यता नहीं देते थे। पर जब ये परीक्षाएं समाप्त हो गईं और राज-सिंहासन का अन्त हो गया, तब पुराने पण्डितों को हानि हुई, उनकी नौकरियां और संरक्षण दोनों जाते रहे और इस प्रकार नौजवान, पश्चिमी शिक्षा पाए हुए पण्डित, अपनी पैदा की हुई राजनीतिक क्रान्ति के द्वारा शक्तिशाली हो गए। इन तरुण बुद्धिजीवियों की विशेषता यह थी कि वे देश की क्रियात्मक समस्याओं को, जो राजनीतिक और आर्थिक थीं, सुलझाने के बजाय जोश के साथ साहित्यिक क्रान्ति में कूद पड़े। पूरे पचासी प्रतिशत चीनी लोग पढ़ नहीं सकते थे और इसमें भी शक है कि पांच प्रतिशत से अधिक आसानी से पढ़ते होंगे और इन पांच प्रतिशत में नये और पुराने सब पण्डित थे। फिर भी इसमें तरुण बुद्धिजीवियों ने अपनी ताकत खर्च की। सबसे पहले उन्होंने लिखित भाषा पर ही चोट की थी। यह पुराने पण्डितों की भाषा थी, अर्थात् क्लासिकल (या प्राचीन) वेन-ली, जो साहित्य में प्रयुक्त होने वाली एकमात्र भाषा थी। कहानी, उपन्यास, या जिसे 'बेसिर-पैर का लेखन' कहा जाता था, उसको साहित्य नहीं माना जाता था। यह तो समय काटने के लिए पढ़ने की चीज़ थी और पुरानी पद्धति का सच्चा पण्डित उपन्यास पढ़ता हुआ दीख जाए तो वह शर्मिन्दा होता था, यद्यपि छिपाकर उन्हें सब पढ़ते थे। पर इस क्लासिकल या प्राचीन भाषा से सामान्य चीनी को जानकारी पाने में

कठिनाई होती थी—बहुत कुछ उसी तरह समझिए जैसे अंग्रेज़ी के स्थान पर लैटिन का प्रयोग हो तो अमरीकनों को होगी। वेन-ली अच्छी तरह सीखने के लिए कई वर्ष पढ़ना ज़रूरी था। पर तरुण बुद्धिजीवियों ने, अपने कई वर्ष विज्ञान तथा अन्य पश्चिमी विषय पढ़ने में लगाए थे, और स्वभावतः वे क्लासिकल चीनी में कमज़ोर थे, इसलिए उन्होंने वेन-ली के विरोध की घोषणा कर दी। उन्होंने कहा कि जनता की भाषा, बोलचाल की भाषा, लिखित भाषा भी होनी चाहिए। केवल भाषा की ही बात नहीं थी, पुरानी व्यंजना और रूपक तथा उपदेश-कथाओं के पुराने साहित्यिक कौशल भी सख्ती से अस्वीकार किए गए। तरुण बुद्धिजीवियों ने कहा कि आगे से हम सरल और स्पष्ट बोलचाल की भाषा में लिखेंगे। पीकिंग के राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के प्रसिद्ध अध्यक्ष त्सई युआन-पेई क्रान्तिकारी आन्दोलन के अगुआ थे और उन्होंने अपने अध्यापक-मण्डल में नये लेखक-वर्ग के प्रथम कोटि के मस्तिष्कों को स्थान दिया। उनमें सबसे पहले मुझे चेन तु-ह्‌सियु का ध्यान आता है जो प्रतिभाशाली, साहसी और उग्र विचार के थे जो बाद में कम्युनिज़्म की गोद में चले गए। उनकी पत्रिका 'चिंग निएन' या 'युवक' हज़ारों बेचैन तरुण चीनियों के लिए एक प्रेरणा थी, और जब १९१६ में उस पत्रिका ने साहित्यिक सुधार का पक्ष उठाया, तब नये बौद्धिक जीवन की ज्वाला चीन में सर्वत्र फैल गई।

पुराने पण्डित और औसत रूढ़िप्रिय लोग भी, चाहे वे पढ़े हुए थे या अनपढ़, इस बात पर बेशक बहुत घबराए, जिसे वे साहित्यिक अतीत का विनाश समझते थे। उधर बीसियों नई छोटी-छोटी पत्रिकाओं, में अखबारों में और चाय की दुकानों में बहस होती रही। जब हू शिह ने 'युवक' पत्रिका में लिखे एक लेख में वेन-ली के मुकाबले 'पाई-हुआ' या बोलचाल की भाषा के प्रयोग के पक्ष में अपनी युक्ति के पैनेपन और निश्चयात्मकता से हम सबको चौंका दिया था, तब हमने आधुनिक चीन में एक नये बल को पहचाना।

चेन तू-ह्‌सियु और हू शिह, दोनों ने ही न केवल पश्चिमी साहित्य को, जिसने स्पष्टतः उनपर प्रबल प्रभाव डाला था, बल्कि पश्चिम की क्रान्तिकारी भावना को भी अपनी युक्तियों का आधार बनाया। पुराने चीनी विद्वानों को यह चीज़ बहुत बुरी लगी क्योंकि जो उन्हें इन दोनों नौजवानों और उनके अनुयायियों में विदेशी और देशप्रेम-विरोधी प्रवृत्तियां मालूम होती थीं। पर तथ्य यह है कि चेन तू-ह्‌सियु और हू शिह ने अपने देश का इतिहास भी खोजा और उन्हें उसमें भी बीच-बीच में उसी

क्रान्तिकारी भावना के रूप मिले थे जिसने योरुप की संस्कृति की तरह उनके देश को भी वार-बार परिवर्तित किया था, और उनके अनुसार, यह क्रान्तिकारी भावना सिर्फ यह थी कि मानव-जाति की आगामी पीढ़ियां, वे जहां भी रहती हों वहीं नये संकल्प से पुरानी करकराहट और निरर्थक पदावलियों को निकाल फेंकें और उनकी जगह जीवन की समस्याओं को नये और सीधे ढंग से समझने का यत्न करें। इस सबमें मेरे लिए सबसे अधिक दिलचस्पी की बात यह थी कि ये आधुनिक बुद्धिजीवी चीनी उपन्यास को पहली बार साहित्य मानने लगे थे जो पहले घूमते-फिरते किस्सा कहने वालों और नौटकी दलों द्वारा आम जनता की हीन समझी जाने वाली चीज़ थी, और यदि कोई विद्वान् ऐसी चीज़ लिखता तो वह सदा बिना नाम के या छद्मनाम से लिखता था। अब हू शिह ने चीनी उपन्यास पर, जिसे पहले कभी किसी विद्वान् ने अपना विचारणीय विषय नहीं बनाया था, एक प्रेरक निबन्ध प्रस्तुत किया। मुझे श्री कुंग के शिष्यत्व में रहते हुए कभी यह स्वीकार करने का हौसला नहीं हुआ था कि मुझे उपन्यास और कहानियां पढ़ना बहुत अच्छा लगता था, पर अब मैंने स्वयं देखा कि श्री कुंग सचमुच ही मर गए थे क्योंकि न केवल मेरी आयु के नौजवान लोग उपन्यास पढ़ने लगे और इस कार्य को अच्छा समझने लगे बल्कि वे उपन्यास लिखने भी लगे—और पुरानी क्लासिकल सांकेतिक शैली में नहीं, बल्कि सीधे-सीधे लज्जाहीन होकर अंतरंग का उद्‌घाटन और भावों का निरूपण करते हुए।

यह शिक्षित पुरुषों और स्त्रियों के लिए बड़ी भारी मुक्ति थी। आदमी जो कुछ महसूस करे और सोचे वही कह सके और उसे यह न सोचना पड़े कि यह कठिन और पुरानी शैली में लिखा था या नहीं। इससे शताब्दियों से दबी हुई ऊर्जा मुक्त हो गई। नया बौद्धिक जीवन जिस शक्ति और प्रभावकारिता से प्रवाहित होने लगा, वह इस काम में वस्तुतः लगे हुए या इसे समझने और इससे लाभ उठाने में समर्थ लोगों की संख्या के मुकाबले में कहीं अधिक था। अब भी इससे पांच प्रतिशत जनता का ही सम्बन्ध था, परन्तु वे अग्रगामी तरुण मस्तिष्क थे और उनसे अनपढ़ और अज्ञानी लोगों को भी नये चीन का कुछ ज्ञान मिल जाता था। यह आश्चर्यजनक समय था और इतना शैशवकाल था कि अभी शुद्ध था। फिलहाल तरुण चीनी अपने विद्वेष और पूर्व-पक्षपात भूल गए और उन्होंने नये विचारों, नये रूपों, नये बौद्धिक मेल-जोल के लिए सारी दुनिया छान मारी। वे इतने सजीव थे कि मुझे अपने

अन्दर उनका उत्साह भरा मालूम होता था और चीन में मेरी आस्था फिर पैदा हो गई थी। मैं सोचती थी कि इस चाल से चलने पर वह और सब देशों से आगे निकल जाएगा और इस विविधतापूर्ण शिक्षित जगत् की तुलना में—जिसमें मेरे तरुण चीनी मित्र, पुरुष और स्त्री, दोनों उत्सुक और जिज्ञासा से भरे मालूम होते थे—मेरी अमरीकन कालिज की साथिनें सचमुच बुद्धू मालूम होती थीं।

मुझे सबसे अधिक दिलचस्प लेखक लिन शू नाम का बड़ा नये ढंग का आदमी लगता था। उसे अंग्रेज़ी का एक शब्द भी नहीं आता था, पर एक दिन अचानक उसे एक अंग्रेज़ी उपन्यास दिखाई दे गया और उसने कुतुहल-वश एक मित्र से कहा कि मुझे यह पढ़कर अनुवाद करके सुनाते जाओ। लिन शू उस कहानी पर मुग्ध हो गया। मैं चाहती हूं कि मुझे उस उपन्यास का नाम याद होता जो उसने पहली बार सुना था। मेरा ख्याल है, यद्यपि मैं निश्चित रूप से नहीं कह सकती कि यह सर वाल्टर स्काट के उपन्यासों में से कोई उपन्यास था। यह जो भी रहा हो, पर उसने कहा कि मुझे यह दुबारा पढ़कर सुनाओ और सुनाने वाले के कच्चे अनुवाद को ध्यान से सुनकर उसने उसे अपनी सुन्दर चीनी शैली में फिर से लिख डाला। इसी ढंग से उसने स्काट और डिकेंस, कानन डायल और विक्टर ह्यूगो तथा राबर्ट लुई स्टीवेन्सन, टॉलस्टाय, सर्वान्टिस और अन्य लेखकों के उपन्यासों का अनुवाद कर डाला और इस प्रकार उसने तिरानवे इंगलिश, उन्नीस अमरीकन, पचीस फ्रेंच, और छह रूसी पुस्तकों का अनुवाद कर डाला। राइडर हैगार्ड शायद उसका प्रिय पश्चिमी लेखक था। उसने पहले तो केवल अपने आनन्द के लिए अनुवाद किया था लेकिन उसे शीघ्र पता चला कि चीनी पाठकों को भी विदेशी उपन्यासों में उतना ही आनन्द आता है जितना उसे। अन्त में इस निर्दोष चोरी से वह धनी हो गया। अन्य चीनी लेखकों ने भी, जो सदा गरीब होते थे, और विशेष रूप तरुण लेखकों ने तुरन्त उसका अनुकरण किया। मुझे कहना होगा कि वे उन रचनाओं का विदेशी लेखकत्व सदा स्वीकार भी नहीं करते थे। इस प्रकार पश्चिमी साहित्य औसत चीनी पाठक को भी मालूम हो गया क्योंकि अब उपन्यास, कम से कम विदेशी उपन्यास, पढ़ना बुरा नहीं समझा जाता था।

वर्षों बाद, जब मैंने लिखना आरम्भ किया, तब मैंने देखा कि मुझे भी वही सम्मान मिल रहा है या परेशानी मिल रही है—सोचने वाला जैसे चाहे वैसे सोच सकता है—और मेरी पुस्तकों से भी बार-बार प्रसन्नता से चोरी की गई। मुझे याद

है कि 'दि गुड अर्थ' के मैंने सात भिन्न-भिन्न अनुवाद देखे जिनमें से कुछ अविकल थे और कुछ संक्षिप्त थे और उनमें से दो पर मेरा कहीं नाम नहीं था और अनुवादक का नाम लेखक के रूप में दिया गया था। तरुण लेखकों ने उस पुस्तक में से कुछ घटनाएं और पात्र उठा लिए और उनको लेकर विस्तृत कहानियां लिख डालीं और उन्हें मौलिक रचना बताकर बेच डाला। यही हाल मेरी और पुस्तकों का हुआ, पर इसके बारे में कुछ किया नहीं जा सकता था। कापीराइट के कोई कानून नहीं थे जिनका सहारा लिया जा सके। मुझे सन्देह है कि कम्यूनिस्टों के शासन में यह हालत बदली होगी, क्योंकि स्वयं रूस में, मुझे पता है कि मेरी पुस्तकों का बेखटके अनुवाद हुआ पर कोई अनुमति नहीं मांगी गई और न मुझे कोई रायल्टी दी गई। अन्तर्राष्ट्रीय परार्थ के कारण आदमी कुछ दूर तक अनिवार्यता को स्वीकार कर सकता है, पर मैं समझती हूं कि अनुवादक का लेखक के रूप में आ जाना स्वीकार नहीं किया जा सकता।

इस सारे मोहक नये जीवन से मुझे एकाएक हटा लिया गया या शायद यह कहना अधिक सही होगा कि मैंने स्वयं अपने-आपको एकाएक वहां से हटा लिया क्योंकि मेरा एक तरुण अमरीकन से विवाह हो गया। ठीक-ठीक कहा जाए तो वह मिशनरी नहीं था क्योंकि जहां तक मैं समझ सकी वहां तक वह ज़रा भी धार्मिक न था, पर प्रेस्बिटीरियन मिशन बोर्ड ने उसे कृषि-विशेषज्ञ के रूप में रख रखा था। विवाह का समय आ गया था, जैसे कि यह हर पुरुष और स्त्री के जीवन में आता है। और हमने बिना यह जाने एक-दूसरे को चुना कि चुनाव की परिधि कितनी सीमित थी—विशेष रूप से मेरे लिए, जो अपने देश और अपने लोगों से बहुत दूर रह-कर बड़ी हुई थी। अब मुझे उस विवाह के व्यक्तिगत पहलुओं में कोई दिलचस्पी नहीं जो खिंचते-खिंचते सत्तरह वर्ष तक कायम रहा, पर इससे मैं जिस दुनिया में आ गई वह मुझे कल की घटना की तरह याद है। जिस संसार में मैं रह रही थी, उससे यह संसार इतनी दूर था, मानो शताब्दियों पहले का हो। यह संसार था चीनी किसान का संसार।

३

फारेस्ट हांट वर्मोन्ट

आज की सुबह। मेरी बड़ी खिड़की के सामने एक जंगल के मैदान का दृश्य है और इसके किनारे खड़े हुए चीड़ और मेपल के वृक्षों के परे हरे-हरे पर्वतों की गोल चोटियां सिर उठाए खड़ी हैं। हमारा सादा मकान एक योजना का परिणाम है और वह योजना मेरे एक हल्के-से विद्रोह का फल है। यहां मेरे अमरीकन बच्चे अपने हाथों का उपयोग करना न सीखते हुए ही बड़े हो रहे थे। फार्म पर लड़के ट्रेक्टर चलाते और दुहने की मशीन गौओं के बांधते। वे 'कम्बाइन' पर बैठ जाते और अनाज काटते। और इसे किसानी कहते थे। बेशक यह अमरीकन ढंग की किसानी है, पर मैं इससे असंतुष्ट थी। उनका धरती से कोई सीधा सम्पर्क नहीं था, और मैं अनुभव करती हूं कि सीधा सम्पर्क होना चाहिए, हाथ मिट्टी और पत्थरों तथा लकड़ी पर रहने चाहिए, जिससे जीवन में स्थायित्व आ सके। मेरा अपना जीवन बहुत से स्थानों में गुजरा है, पर इसमें निरन्तरता या स्थायित्व की कमी नहीं रही क्योंकि मैंने हर जगह बगीचे बनाए हैं, मैं फार्मों पर रही हूं और ऋतुओं के अनुसार मैंने बोया और काटा है।

और वे मकान जो आजकल लोग बनाते हैं—हमारी पेन्सिलवानिया की बस्ती में अब भी वे पुराने मजबूत फार्म-हाउस (खेतों पर बने मकान) खड़े हैं। पर मैं देखती हूं कि उन्हें बुलडोज़र मिट्टी में मिला रहे हैं, जैसे बम्ब-वर्षा हो चुकी हो, और उनके स्थान पर कच्ची और रक्तरंजित धरती पर मशीनों ने कुछ-कुछ फुट दूर पर छोटे-छोटे धातु के डिब्बे बना दिए हों। ये हैं वे घर। और बीस हज़ार परिवार उनमें भरे पड़े हैं। जब मैंने वे देखे, तब ही मैंने सोचा कि मुझे अपने बच्चों को यह सिखाना चाहिए कि वास्तविक मकान कैसे बनाए जाएं।

एक बार हमने वर्मोंट में मेपल की चीनी बनाने में मदद दी थी। वसंत ऋतु

में हम उसे देखने के लिए वहां गए। जब हम वहां थे तब ही मेरा विद्रोह एक योजना में परिणत हो गया। पहाड़ के किनारे जंगल वाली ज़मीन सस्ती थी; दो डालर प्रति एकड़ से कुछ ही ऊपर भाव था। हमने सड़क से बहुत दूर कुछ ऊंचाई पर कुछ एकड़ ज़मीन खरीद ली, और अगली गर्मियों में एक पुराने साफ किए हुए मैदान पर, जहां एक शताब्दी पहले एक फार्महाउस था, लड़कों ने एक कार्यपटु वर्मोन्ट-निवासी की देखरेख में मकान बनाना शुरू किया। इसके बाद हर गर्मियों में लड़के पहाड़ पर जाते और काम करते। बुनियाद, सीमेंट से लगाए पत्थरों की दीवार, शहतीर वाली छत, दो बड़ी अंगीठियां, खिड़कियां और दरवाज़े, सफाई से जमाए पत्थरों का फर्श, ये सब धीरे-धीरे बन गए। इस काम को एक बढ़िया जर्मन शिल्पी ने अन्तिम रूप दिया। वह अपने कार्य की पूर्णता के प्रति बहुत उत्साही था पर तरुण अमरीकी उसके कार्य से उत्तेजित व क्रुद्ध हो उठते थे। लेकिन मुझे उससे प्रसन्नता ही होती थी, क्योंकि मुझे हस्त-कौशल का भद्दापन पसंद नहीं है, और मैं यह मानती हूं कि जो व्यक्ति भद्दा काम करता है उसके मन और आत्मा भी भद्दे हो जाते हैं।

धीरे-धीरे शिक्षण चलता रहा और अन्त में मकान बन गया। अब हम अपने इस पर्वतीय मकान में आ गए हैं। पानी नाले से लाना पड़ता है, लैम्प साफ करके तेल भरना पड़ता है, टेलीफोन यहां कभी नहीं होगा। अपना भोजन मैं अंगीठी पर पकाती हूं और इसे संसार का सर्वोत्तम पकाने का तरीका समझती हूं। हमारे चारों ओर जंगल के लोग आते-जाते रहते हैं, गिलहरियां, हिरण और कभी-कभी भालू, और सेही का हम सदा ध्यान रखते हैं जो हर चीज़ खा जाते हैं, और विशेष रूप से रबड़ के टायर जिन्हें अच्छे लगते हैं। इस मकान पर हमें पेन्सिलवानिया के नये धातु के डिब्बों के खर्च से तिहाई खर्च पड़ा है। लड़के अब अपने लिए मकान बनाना जानते हैं और लड़कियां मकान संभालना-संवारना तथा अपने-आप सभ्य एवं साफ-सुथरे रहना जानती हैं। जहां तक मेरा सवाल है, मेरे पास हैं—एक बड़ी खिड़की, फर के पेड़, पर्वत तथा पेन्सिलवानिया के भद्दे दृश्य से आनन्ददायक मुक्ति।

लोगों के बाद मुझे दृश्य ही याद रहते हैं, और यद्यपि इस समय मैं वर्मोन्ट में हरे-भरे वन देख रही हूं, पर मुझे वह उत्तरी चीनी नगर, जिसमें मैं अपने विवाह के बाद गई थी, ऐसी अच्छी तरह याद है जैसे वह मेरी आंखों के आगे है। विवाह करने का फैसला उन मानवीय संयोगों में से एक का परिणाम था जिनकी और कोई व्याख्या नहीं की जा सकती—एक्लेसियास्टेस के बुद्धिमान् आदमी के शब्दों

में यही कहा जा सकता है कि 'विवाह करने का एक समय होता है।' जब किसी स्वस्थ और सामान्य प्राणी के जीवन में यह समय आता है तब विवाह अनिवार्य होता है, चाहे वह माता-पिता द्वारा तय किया जाए या आदमी स्वयं तय करे, और उस व्यक्ति से ही होने की सबसे अधिक सम्भावना होती है जो अपने आसपास हो। मेरे माता-पिता ने मेरे विवाह का समर्थन नहीं किया और उन्होंने इस विषय पर आश्चर्यजनक चुप्पी रखी, क्योंकि वे बड़े बोलने वाले लोग थे और चुप्पी उनकी आदत में नहीं थी। फिर भी मैंने उनकी नापसन्दगी इस बात से पहचान ली कि वे दोनों के दोनों चुप थे और यह भी नई बात थी। क्योंकि मैं अपने पिता की अपेक्षा अपनी मां से अधिक खुली हुई थी, इसलिए एक दिन मैंने उसे एक तरफ ले जाकर पूछा कि उन्हें यह क्यों नापसन्द है। उसने जवाब दिया कि ऐसा लगता है कि यह नौजवान अपने-आपमें निःसन्देह बहुत अच्छा आदमी होते हुए भी हमारे बौद्धिक परिवार में ठीक से न खप सकेगा। उसने कहा कि उसकी दिलचस्पी स्पष्टतः बौद्धिक नहीं। जब मैंने उसे यह याद दिलाया कि कम से कम वह एक अमरीकन कालिज का एक ग्रेजुएट तो है, तब उसने जवाब दिया कि वह तो कृषि कालेज है, और हमारा परिवार इस शिक्षा को शिक्षा नहीं समझता।

'तुम दोनों तो चीनी माता-पिताओं की तरह कर रहे हो,' मैंने कहा। 'तुम सोचते हो कि मैं जिससे विवाह करूं, वह पहले परिवार के अनुकूल हो।'

'नहीं,' उसने कहा, 'हम तो तेरी बात सोचते हैं। तुझे जितना अपना ख्याल है हम उससे ज़्यादा अच्छी तरह जानते हैं। तू ऐसे आदमी के साथ कैसे सुखी हो सकती है जो तेरी बातों को समझता ही न हो?'

पर मैं भी अपने परिवार के अन्य सदस्यों की तरह ज़िद्दी थी, इसलिए अपनी योजनाओं पर अड़ी रही। कुछ महीनों बाद हमारे मिशन हाउस के बगीचे में एक अच्छे समारोह में हमारा विवाह हो गया और उसके बाद शीघ्र ही मैं अपने पहले घर में रहने लगी। यह मेरे बचपन के प्रांत कियांगसू से कई मील उत्तर में अन्हवेई प्रान्त में नान्हसूचौ के परकोटे से घिरे हुए नगर के अन्दर छोटा-सा चार कमरे का सलेटी ईंटों और काले टाइल का चीनी मकान था।

यहां का दृश्य बिल्कुल ही भिन्न था। मैं पहले कभी उत्तरी चीन में नहीं रही थी। वहां का प्राकृतिक दृश्य मेरे लिए अनजान था। हमारी हरी घाटियों और मनोरम नीली पहाड़ियों की जगह अब मुझे अपनी खिड़की से एक ऊंचा बांध दिखाई

देता था जहां नगर की चौकोर दीवार बनी हुई थी, जिसके हर कोने पर ईंटों का एक बुर्ज़ था और जिसके चारों ओर खाई थी। लोहे से जड़े हुए लकड़ी के बड़े-बड़े द्वार रात को डाकुओं और इधर-उधर फिरते सैनिकों से बचाव के लिए बन्द कर दिए जाते और सवेरे खोल दिए जाते थे। दीवार से बाहर और खाई से परे देहात रेगिस्तान की तरह सपाट फैला था जिसमें कहीं-कहीं मिट्टी के ढेर दिखाई देते थे जो असल में गांव थे और उनके मकान उस प्रदेश की हल्की पीली रेत के रंग की मिट्टी से बने हुए थे। सर्दियों में किसी तरह की हरियाली न थी। धरती और मकान सब एक रंग के थे और लोग भी उसी धूसर वर्ण के थे क्योंकि हर समय हवा चलने से महीन रेतीली मिट्टी उनके बालों और चमड़ी पर बैठ जाती थी। स्त्रियां कभी अपने को साफ करती मालूम नहीं होती थीं। मुझे पता चला कि ऐसा जान-बूझकर किया जाता था—क्योंकि यदि कोई स्त्री साफ-सुथरी होती, अपने बाल कंघी करके अच्छी तरह संवार लेती और उसके वस्त्र हर किसीके रेत के रंग के या उड़े हुए फीके नीले रंग के सूती कपड़ों के अलावा और किसी रंग के होते तो उसपर वेश्या होने का सन्देह किया जाता था। सच्ची स्त्रियां बिना साज-सिंगार के रहने पर अभिमान करती थीं। वे इसे इस बात का चिह्न समझती थीं कि उन्हें इस बात की चिन्ता नहीं है कि वे पुरुषों को कैसी लगती हैं और इसलिए वे अपने-आपको अच्छी समझती थीं। धनी और गरीब में भेद कर सकना असम्भव था क्योंकि धनी महिला अपने सादे सूती कपड़े के नीचे अपना साटन का कोट पहनती थी और देखने में किसी किसान औरत से अच्छी नहीं होती थी। मुझे इस स्थिति के–जो मुझे अपनी दृश्य-भूमि में सीधी कुरूपता मालूम होती थी–अनुकुल बनने में कुछ समय लगा। मुझे याद है कि चारों ओर की इस समरूपता से मैं निरुत्साहित हुई थी और यह शिकायत करती थी कि सैर करने जाना बेकार है क्योंकि आप शहर से बाहर दस मील तक चले जाइए, पर फिर भी सब चीज़ वैसी ही मिलेगी।

पर यह सदा मेरी दुर्बलता या सबलता रही है—और मैं आज तक नहीं जानती कि यह इन दोनों में से क्या है कि मैं आसानी से पिछले चीज़ों से अपना ध्यान हटा लेती हूं और अपने चारों ओर की चीज़ों में मग्न हो जाती हूं। मुझे शीघ्र ही बहुत सा मनोरंजन और काम मिल गया। मैंने देखा कि मुझे घर की देखभाल और बगीचा लगाने में दिलचस्पी है, और मेज़-कुर्सियों को चारों कमरों में सजाना, खिड़कियों पर पीले चीनी रेशम के परदे लटकाना, दीवारों के लिए कुछ चित्र बनाना,

पुस्तकों के शेल्फ सजाना और फूल उगाना सारा कार्य आनन्ददायक है। मुझे खुशी थी कि मैं काले टाइल की छत वाले एक छोटे-से चीनी मकान मे रहती थी, विदेशी शैली के मिशन मकान मे नही। इसमे सीढिया न थी और बगीचा मकान का एक हिस्सा मालूम होता था। मेरी मा के दक्षिणी बगीचे मे खिलने वाले बहुत से फूलो के लिए यह जलवायु बहुत सूखी थी, पर शरद् ऋतु मे क्राइसेन्थेमम अच्छे होते थे और मई तथा जून मे सुनहरे शातुग गुलाब।

बसंत ऋतु मे धरती का सार नजारा एकाएक सुन्दर हो गया। गाव के चारो ओर खडे नगे विलो वृक्षो मे कोमल हरे पल्लव निकल आए, खेतो मे गेहू की छटा हरी हो गई और फलो के वृक्षो पर गुलाबी और सफेद फूल खिल उठे। सबसे सुन्दर चीज मरीचिकाए थी। मैं पहले कभी मरीचिकाओ के देश मे नही रही थी और जब धरती अभी ठण्डी होती थी पर वायु गर्म, सूखी तथा चमकीली हो जाती थी, तब मैं जिधर नजर डालती उधर अपने और क्षितिज के बीच मे झीलो और पेडो तथा पहाडियों की मरीचिकाए देखती। मेरे चारो ओर परलोक का सा वायुमण्डल होता था और ऐसा महसूस होता था जैसे मैं अर्धस्वप्न की अवस्था मे हू। नगर की दीवार पर और बाहर खाई के शान्त पानी पर पडती हुई चादनी की मोहकता आज भी मुझे याद है। वह मुझे अर्ध-वास्तविक लगा करती थी और इस छोटे उत्तरी नगर मे ही मैंने पहली बार चीनी सडको के रात्रिकालीन अजीब सौन्दर्य को अनुभव किया। धूल-भरी सडके चौडी और कच्ची थी, जैसी कि उत्तरी चीन के नगरो की आम तौर से थी और उनके किनारे बने थे। ईट या मिट्टी के एक-मजिले मकान, छोटी-छोटी दुकाने तथा कारखाने, लोहारखाने और टीन के काम की दुकाने, बेकरी और गर्म पानी की दुकाने, सूखी वस्तुओ और मिठाई की दुकाने—ऐसे लोगो के जीवन के लिए उपयोगी सारी वस्तुए जो भौगोलिक दृष्टि से और इसलिए बौद्धिक, आत्मिक दृष्टि से, एक प्राचीन और दूरस्थ क्षेत्र से बधे हुए थे। मैं धुधली सडको पर चलती थी और खुले दरवाजो से अन्दर देखती थी, जहा परिवार के लोग अपने भोजन की मेजो के चारो ओर बैठे होते थे और मोटी मोमबत्तियो या कडवे तेल के दिये से रोशनी हो रही होती थी। इस प्राकर मैंने अपने-आपको चीनी जनता के जितना निकट अब अनुभव किया उतना बचपन से तब तक नही किया था।

एक तरह से मेरा जीवन एकाकी था, क्योकि मेरे माता-पिता को जो भय था, वह सत्य सिद्ध हुआ और मेरा अतरग जीवन अकेले ही कटा। उस कम्पाउड मे

ग्रौर केवल दो गोरे थे जो मुझसे बहुत ग्रधिक ग्रायु के मिश्नरी दम्पति थे। उनके साथ कोई मित्रता नहीं हो सकती थी, विशेष रूप से इस कारण कि उनका स्वास्थ्य कुछ नाजुक था ग्रौर वे बहुत-बहुत दिनों तक ग्रनुपस्थित रहते थे। ग्रौर उनके पीछे वहां हम ही गोरे लोग होते थे। ऐसा लिखते हुए मुझे याद है कि कुछ दिनों के लिए एक ग्रमरीकन डाक्टर तथा उसकी तरुण पत्नी भी वहां रहे थे पर बेचारी पत्नी चीनियों से नफरत करती थी ग्रौर ग्रपने घर से कभी नहीं निकलती थी। यद्यपि वे साथ के मकान में रहते थे, पर वह हमारे या किसी ग्रौर के यहां कभी ग्राती-जाती न थी। हमने यह समझ लिया था कि जब तक वह परदेस में रहेगी तब तक वह ग्रपने उक्त ग्रसली रूप में नहीं ग्रा पाएगी। कुछ ही समय बाद वे ग्रमरीका लौट गए।

ग्रब उस ग्रमरीकन डाक्टर की बात याद ग्राने पर मुझे एक ग्रनुभव का ध्यान ग्राता है जिसमें हम दोनों एकसाथ थे। मुझे किसी न किसी रूप में प्रायः उसकी मदद करनी पड़ती थी। एक बार ग्राधी रात के बहुत देर बाद मैंने ग्रपना दरवाज़ा खटखटाने की ग्रावाज़ सुनी। खोलकर देखती हूं तो डाक्टर, लम्बी, पतली, ग्रमरीकन ग्राकृति, एक हाथ में जलती लैम्प ग्रौर दूसरे में ग्रपना बैग लिए खड़ा था।

'मुझे एक नौजवान ग्रौरत को देखने के लिए बुलाया गया है, जो शायद प्रसव में मर रही है', उसने कहा, 'मुझे ग्रापरेशन करना पड़ेगा ग्रौर बेहोशी की दवा देने के लिए मुझे किसीकी ज़रूरत है, पर विशेष रूप से मुझे उन्हें ग्रपनी बात समझाने के लिए किसीकी ज़रूरत है।'

उसका चीनी भाषा का ग्रभ्यास बहुत कम था ग्रौर ग्रापरेशन करना एक खतरनाक जोखिम था जबकि लोग यह न समझ सकें कि वह क्या कर रहा है। मैंने कभी बेहोशी की दवा नहीं सुंघाई थी, पर वह मुझे बता सकता था कि क्या करना है। मैंने ग्रपना कोट पहना ग्रौर उसके साथ चल पड़ी ग्रौर तेज़ ठण्डी रात में मौन सड़कों पर होते हुए हम लोगों से भरे हुए छोटे-छोटे मकानों के एक समूह में पहुंचे। ऐसा लगता था कि वहां हर कोई जागा हुग्रा था ग्रौर धुएं वाले तेल की लैम्पें जल रही थीं ग्रौर ग्रंधेरे में से चेहरे हमारी ग्रोर घूर रहे थे। सब चुपके थे ग्रौर मैं जानती थी कि यह चुप्पी ग्रच्छी चीज़ नहीं। इसका ग्रर्थ यह था कि लोगों को विदेशी डाक्टर पर विश्वास न था। मैं उसके पीछे-पीछे बिल्कुल गलियारे तक

गई और वहां हमें एक नौजवान पति मिला और उसके साथ उसकी बूढ़ी मां तथा दूसरे रिश्तेदार थे।

वह डर के मारे घबराया हुआ था क्योंकि, जैसा कि उसने मुझे शीघ्र ही बतलाया, उसकी स्थिति वाले आदमी के लिए पत्नी महंगी चीज़ थी और उसका अभी पिछले वर्ष विवाह हुआ था। यदि वह मर गई तो दूसरे विवाह आदि का सारा धंधा नये सिरे से करना पड़ेगा। इसके अलावा, उसके माता-पिता बूढ़े थे और मरने से पहले वे पोते का मुह देखना चाहते थे। मैंने उसके साथ सहानुभूति प्रदर्शित की और कहा कि डाक्टर को मरीज देखने दो। वह हमें वहां ले गया और उस छोटे-से बिना खिड़कियों के कमरे में हम सब का दम घुटने लगा। उसमें एक बड़े लकड़ी के तख्त पर मोटे-मोटे पर्दों के पीछे एक नौजवान औरत मौत का इन्तज़ार कर रही थी। उत्तेजित दाई उसके पास खड़ी थी और कह रही थी कि औरत को कोई नहीं बचा सकता और कि बच्चा तो पहले ही मर चुका है। जब मैंने उससे पूछा कि उसे यह कैसे पता चला, तब उसने फर्श पर पड़ी घास में टटोला और बच्चे की बांह, जो उसने प्रसव में मदद करने की कोशिश में खींच ली थी, दिखाई।

'तुम देख रहे हो कि बच्चा मर चुका है,' मैंने नौजवान पति से कहा।

उसने सिर हिलाया।

'अब केवल तुम्हारी पत्नी को बचाने का सवाल है।' मैंने आगे कहा।

'जी हां, इतना ही है,' उसने सहमति प्रकट की।

'तुम यह भी समझते हो कि यदि यह विदेशी डाक्टर कुछ नही करेगा तो वह निश्चय ही मर जाएगी,' मैंने आगे कहा।

'मै यह तो समझता हूं,' वह बोला।

इतना ही काफी न था और मैंने सब रिश्तेदारों से, जो चुपचाप और गम्भीरता से खड़े थे, पूछा कि क्या वे सब भी इस बात को समझ गए। उन्होंने सिर हिलाया। अतः मैंने सास से पूछा कि क्या वह भी यह समझ गई है कि यदि उस नौजवान पत्नी को न बचाया जा सके तो वह विदेशी डाक्टर को दोष नहीं देगी। उसने भी स्वीकार किया कि डाक्टर को दोष नहीं दिया जा सकता। इतने गवाहों के होने पर बेखटके आगे बढ़ा जा सकता था और डाक्टर ने, जो अनावश्यक देर के कारण झल्ला रहा था, अपना बैग मुझे पकड़ा दिया और मुझसे कहा कि मैं रोगी को तैयार करता हूं तब तक तुम औज़ारों को कीटाणुहीन करो।

उन्हें कीटाणुहीन करूं ! मुझे गुमान भी न था कि यह कैसे किया जाता है, पर मैंने देखा कि पूछताछ करने की गुंजाइश नहीं है, और इसलिए मैंने आंगन में जाकर और कुछ ईटें जमाकर घास और कोयला डालकर आग तैयार की। इसके बाद मैंने ईटों पर टीन के डिब्बे में पानी रख दिया और उसके उबलने की प्रतीक्षा में बैठ गई। ठण्डे अंधेरे में मेरे चारों ओर परिवार के लोग खड़े थे जो यह सोचकर डर रहे थे कि न मालूम क्या होने वाला है। उस समय उन्हें कृमिबीजों की बात समझाने का कोशिश करना निरर्थक था और इसलिए मैंने इतना ही कहा कि हम औज़ारों का उबलते पानी से साफ करना चाहते हैं और इतनी बात वे समझ गए। पानी जल्दी ही उबल गया और मैंने औज़ार उसमें डाल दिए और उन्हें उबलने दिया। फिर टीन का डिब्बा और ये सब चीज़ें मैं उसी कोठरी में ले गई जहां डाक्टर तैयार था। अचेत स्त्री तख्त पर लेटी थी और उसका सिर दीवार की ओर था। डाक्टर ने मुझे हिदायतें दीं।

'थोड़ा पानी चिलमची में डाल लो,' वह इस तरह बोला जैसे मैं अस्पताल में नर्स हूं, और मैंने भरसक नर्स की तरह उसके कहने के अनुसार करने का यत्न किया।

उसने अधीरता से कमरे के चारों ओर नज़र घुमाई। 'क्या तुम इन लोगों को बाहर नहीं भेज सकती ?'

'हम इन सबको बाहर नहीं भेज सकते,' मैंने कहा। 'हमें गवाह अवश्य रखने चाहिएं।'

पर थोड़ी कहा-सुनी के बाद रिश्तेदार बाहर चले गए, केवल पति और सास रह गए।

मेरा डाक्टर मुझसे बोला, 'अब तख्त के पीछे की ओर चली जाओ और यह रुई हल्के हाथ से रोगी की नाक पर रखो और इस बोतल से एक-एक बूंद क्लोरो-फार्म डालना शुरू करो।'

'मुझे यह कैसे पता चलेगा कि कब रुक जाऊं,' मैंने निडर रहने की कोशिश करते हुए पूछा।

'उसकी सांस देखती रहना,' उसने हुक्म दिया, 'और मुझसे कुछ मत पूछो। मुझे बहुत काम करना है। मैंने ऐसी गड़बड़ी पहले कभी नहीं देखी।'

इसके बाद वह चुपचाप काम करता रहा। पति तथा सास झुककर यह देखते

रहे कि हम क्या करते हैं। मैंने सारा ध्यान स्त्री की सांस पर लगा रखा था। क्या वह हल्का हो गया है ? निश्चय ही यह बहुत हल्का था। उसकी नब्ज़ पर रखने के लिए मेरा कोई हाथ खाली न था। एक वार सांस रुक गया।

'वह मर गई,' मैंने फुसफुसाकर कहा।

डाक्टर ने सिरिंज उठाकर उसकी वांह में इन्जेक्शन लगाया और वह फिर अनिच्छा से सांस लेने लगी।

जैसे-तैसे यह कठिन कार्य खत्म हुआ और छोटा-सा मरा वच्चा बाहर आ गया।

'लड़का था!' सास ने अफसोस करते हुए कहा।

'कोई वात नहीं,' मैंने कहा, 'वह अच्छी हो जाएगी और तुम्हारे लिए दूसरे वच्चे को जन्म देगी।'

यह वचन विना विचारे ही दे दिया गया था, पर एक वर्ष बाद यह पूरा हो गया। चीनी स्त्री की अविश्वसनीय शक्ति ने उस तरुण पत्नी को उस रात मौत से बचा लिया। हम वहां तव तक रहे जब तक उसकी बेहोशी दूर नहीं हुई और उसके वाद हमने उसके पति से कहा कि इसे एक कटोरा गर्म पानी में बूरा घोलकर पिलाओ। प्रातःकाल उसने चावल के माण्ड में एक कच्चा अण्डा खाया। इतना काफी था, यदि कोई आदमी खा सकता है तो चीनियों का विश्वास है कि वह मरेगा नहीं।

पर फिर भी मैं कभी वास्तव में अकेली नहीं थी। चीनी लोग आनन्दपूर्ण थे और मेरे लिए नये ही प्रकार के थे। सौभाग्य से उनकी भाषा यहां भी मण्डारिन थी और मुझे अपनी वात पूरी तरह समझाने और उनकी वात समझने के लिए उच्चारण और टोन में ही थोड़े-से हेर-फेर करने पड़े और शीघ्र ही मेरी अनेक सहेलियां हो गईं। दूसरी जगह की तरह वहां भी लोग मित्र बनने के लिए तैयार थे। हमारी रीति-नीति के बारे में वे बड़े उत्सुक रहते थे। मेरे छोटे मकान में आना इतना सरल था, इसलिए मिलने वाले प्रायः लगातार आते-जाते ही रहते थे और मुझे जन्म-दिवस के उत्सवों और विवाहों तथा पारिवारिक कार्यों के लिए अनेक निमन्त्रण मिलते रहते थे। मैं इन सबमें आनन्द से भाग लेती थी और शीघ्र ही अपने पड़ोसियों के जीवन में गहरी चली गई। वे भी मेरे जीवन में प्रविष्ट हो गए। मैं उनके बच्चों से खेलती थी तथा अपनी उमर की जवान औरतों से बातचीत

करती थी। वे मुझे अपनी सासों और अन्य सम्बन्धियों से पैदा होने वाली समस्याएं बताया करती थीं, और मैं हमेशा की तरह मानव-जीवन की धाराओं को गहराई से अनुभव करती थी।

घर का पुरुष कृषि-विशेषज्ञ था, इसलिए यह स्वाभाविक था कि मैं उसके देहात के दौरों पर उसके साथ जाती। मैं स्वीकार करती हूं कि मैं बहुत बार मन ही मन यह सोचा करती थी कि कोई तरुण अमरीकन चीनी किसानों को नहीं सिखा सकता, जो पीढ़ियों से उस धरती पर खेती कर रहे थे और खाद तथा सिंचाई का कौशलपूर्ण प्रयोग करके अब भी असाधारण उपज पैदा करने में समर्थ थे, और यह सब बिना किसी आधुनिक मशीन के। सारे का सारा परिवार सादी सुविधाओं में औसतन पांच एकड़ से भी छोटे खेत पर रहता था और निश्चय ही मुझे किसी ऐसी पश्चिमी खेती का पता न था जो इसके साथ मुकाबला कर सके, पर अपना सन्देह प्रकट करने की अपेक्षा मैं जानती अधिक अच्छी तरह थी, क्योंकि मुझे मानवीय सम्बन्धों की अच्छी शिक्षा मिली थी जिनमें यह सचमुच महत्त्व की बात है कि बुद्धिमान् स्त्री अपना सन्देह पुरुष से प्रकट नहीं करती। इसलिए मैं अपनी स्वाभाविक मिलनसारी से एक खेत से दूसरे खेत पर जाती थी और जिस समय पुरुष किसानों से बात करता था, उस समय मैं स्त्रियों और बच्चों से अपना मनोरंजन करती थी। परन्तु जब अमरीकन और चीनी पुरुषों में भाषा की गाड़ी न चल पाती तब मुझे दुभाषिये का काम करने के लिए जाना पड़ता था। समय बीतने के साथ-साथ यह स्पष्ट होता गया कि उस प्रदेश के किसानों को सहायता देने के ठोस तरीके ढूंढना कठिन होगा। इन लोगों ने सूखे का तथा तेज़ सूखी हवाओं और लम्बी ठण्डी सर्दियों का मुकाबला करना सीखा था। और मुझे निश्चय है कि अमरीकन पुरुष को यह देखकर बड़ा क्षोभ हुआ कि उसके पास जितना सिखाने के लिए है उससे अधिक ज़रूरत उसे सीखने की है।

मेरे सामने ऐसा कोई खतरा नहीं था। मैं केवल आनन्द करती और कोई विशेष कर्तव्य न करती हुई रह सकती थी, क्योंकि अब मैं पत्नी के अलावा और कुछ नहीं थी, इसलिए मुझे व्यर्थ ही सचेत या सतर्क रहने की आवश्यकता नहीं होती थी। मुझसे कुछ भी, या लगभग कुछ भी, आशा न की जाती थी इसलिए मैं घर और बगीचे में व्यस्त रहती थी। शहद के लिए मैंने मक्खियां पालना शुरू कर दिया। मैंने अपने प्रदेश में बहुतायत से होने वाले खजूरों के और डेम्सन बेरों तथा

क्रैब सेबों के मेल से पैदा होने वाले गाढ़े लाल हरे फलों के मुरब्बों और जेलियों के बारे में परीक्षण किए। मैं पड़ोसियों के घरों में जाती रहती थी। वे भी मेरे घर में आती रहती थीं। फिर मुझे मित्रता की प्रगाढ़ता की अद्भुत गहरी अनुभूति का आनन्द मिला। एक से ज़्यादा बार मैं लिखना आरम्भ करने को हुई, पर हर बार रुक गई और मैंने मन और आत्मा के पूरी तरह परिपक्व होने तक, कुछ समय और प्रतीक्षा करने का निश्चय किया।

सबसे अजीब बात यह थी कि देश के विविधतापूर्ण बौद्धिक और राजनीतिक उत्थान की सूचना यहां हम तक नहीं पहुंच पाती थी। हम ऐसी शान्ति से रहते थे जैसे राष्ट्र में कोई क्रान्ति हो ही न रही थी। मेरी सहेलियों में से किसी एक को भी पढ़ना या लिखना नहीं आता था और किसीको इनमें से कोई भी योग्यता होने की आवश्यकता भी अनुभव नहीं होती थी। फिर भी जीवन की कला में वे इतनी शिक्षित थीं कि मुझे उनकी बातचीत सुनना अच्छा लगता था। प्राचीन जातियां अपनी समझदारी आगामी पीढ़ियों में जमा करती जाती हैं और जब परिवार के छोटे और बड़े सदस्य एकसाथ रहते हैं, तब प्रत्येक दूसरे को समझता है। इसके अतिरिक्त, मुझे अपनी चीनी सहेलियों के हंसी-मज़ाक में और उनकी संकोचहीनता में विशेष रूप से आनन्द आता था। इनसे जीवन एक सुखमय नाटक बन जाता था क्योंकि यह कभी पता नहीं रहता था कि आज क्या होने वाला है। उदाहरण के लिए, एक दिन सवेरे हमने देखा कि चोरों ने ईसाई स्कूलमास्टर के मकान में सेंध मारकर स्कूल का रुपया चुरा लिया।

'तुम उठे नहीं?' हमारे बड़े मिशनरी ने उससे पूछा।

स्कूलमास्टर के मोटे सपाट चेहरे पर विस्मय का भाव छा गया। 'क्या—मैं?' वह बोला, 'मैं पंडित हूं, और स्वभावतः मुझमें ज़रा भी साहस नहीं है। मैंने अपनी पत्नी से उठने के लिए कहा था, पर जितनी देर में उसने अपने ऊपर के वस्त्र पहने, उतनी देर में चोर नौ दो ग्यारह हो गए।'

हमारे कस्बे में किसीने उसे दोष नहीं दिया क्योंकि शारीरिक साहस को प्रशंसनीय नहीं समझा जाता था और पढ़े-लिखे आदमियों से निश्चय ही इसकी आशा नहीं की जाती थी। एक चीनी कहावत कहती है, 'जान बचाने के छत्तीस तरीकों में से सबसे उत्तम है भाग जाना।' चीन में इस कहावत का खण्डन करना और सैनिक को समाज में कन्फ्यूशियस द्वारा दी हुई परम्परागत स्थिति से ऊपर उठाना

तथा उसे पश्चिमी सैनिक के सदृश बनाना—जिसे मान और गौरव दिया जाता है और जिससे हमारे सैनिक आसानी से वीर बन जाते हैं—क्रान्ति का एक हिस्सा था। मैं इतना ही कह सकती हूं कि पुराने एशिया में—जहां सैनिक को कोई सम्मान नहीं दिया जाता था और युद्ध से गौरव नहीं मिलता था—एक ऐसी संस्कृति ने जन्म लिया जो विद्या और बुद्धि पर बल देती थी और जिसने बड़े-बड़े और आत्मा को पीड़ित करने वाले विश्व-युद्धों को जन्म नहीं दिया।

जब मेरा मन उन दिनों की ओर जाता है जब मैं उस छोटे-से उत्तरी कस्बे में रहा करती थी, तब मुझे लोग समूहों के रूप में नहीं दिखाई देते बल्कि व्यक्तियों और प्रिय लोगों के रूप में दिखाई देते हैं। मैडम चांग मेरी जानकारी में आई महानतम औरतों में से है। वह हमारी ही गली में ज़रा आगे रहती थी। वह लम्बी और भारी आकृति की और एक बड़े परिवार की गृहस्वामिनी थी। पूरा लहंगा और घुटनों तक का कोट पहने वह उतने ही पुराने फैशन में थी जितना उनके परिवार के एक चित्र में था। उसके केश उसके गोल कृपापूर्ण चेहरे से पीछे की ओर कसकर खिंचे थे। वह ईसाई थी—कम से कम वह चर्च की सदस्य थी, और हृदय से सदस्य थी, पर बड़ा मिशनरी भी इसका श्रेय अपने को नहीं देता था। ईसाई होने से पहले वह बौद्धों में नेता थी और वह अब भी बौद्ध थी। एक बार उसने मुझे बताया कि वह ईसाई चर्च की सदस्य विदेशियों पर कृपा करने के लिए बनी थी जो कस्बे में नये आए थे और जिन्हें वह बढ़ावा देना चाहती थी क्योंकि उसने देखा कि उनके काम अच्छे थे। मैडम चांग विधवा थी और अनेक मज़दूर स्वस्थ स्त्रियों की तरह उसका विवाह कमज़ोर और सुस्त आदमी से हो गया था। वह अभी जवान ही थी कि वह मर गया और मन्दिर के बौद्ध पुजारियों ने उससे कहा कि वह स्वर्ग नहीं गया, बल्कि पापमोचन-लोक में रोक लिया गया है। उन्होंने उससे कहा कि प्रार्थनाओं द्वारा और मन्दिर को दान देकर उसे वहां से मुक्त कराना तुम्हारा धर्म है और कुछ वर्ष तक उसने उस बेचारे को दुःखों से छुड़ाने की योजना पर परिश्रम किया। पुजारियों ने उसे आश्वासन दिया कि वह थोड़ा-थोड़ा करके मुक्त हो रहा है। और अब केवल उसका बांया पांव वहां पकड़ा हुआ है। उसी समय ईसाई-धर्म उसकी सहायता करने आ पहुंचा और उसने उसे विश्वास दिलाया कि पुजारी उसे धोखा दे रहे थे। इसके बाद उसने अपने पति को वहीं रहने दिया जहां भी वह था। अजीब बात है कि पापमोचन-लोक की यह कहानी, जो बेईमान बौद्ध पुजारियों में

बहुत प्रसिद्ध है, मैंने बाद में ग्रायलैंड में एक कैथोलिक पादरी से मज़ाक में सुनी।

मैडम चांग एक खुशमिज़ाज कोमलहृदय महिला थी ग्रौर कस्बे के हर ग्रच्छे काम में उसका हाथ होता था। जब कभी कोई नया काम शुरू किया जाता, तब सब यही पूछते कि क्या मैडम चांग इसका समर्थन करती है। यदि वह समर्थन करती तो सबके-सब लोग उस काम में शामिल हो जाते। उसके ग्रौर ग्रन्य प्राणियों के बीच कोई रोक न थी, ग्रौर कभी-कभी जब मेरे ग्रपने हृदय में ऐसे कारणों से पीड़ा होती थी जो मैं प्रकट नहीं कर सकती थी तब उसके चौड़े कोमल कंधे पर ग्रपना सिर रखकर थोड़ी देर चुपचाप पड़े रहने से ही मुझे ग्राराम मिल जाता था। उसने मुझसे कभी यह नहीं पूछा कि क्या बात है, पर मैं ग्रनुभव करती थी कि वह इतनी बुद्धिमती है कि सब समझती है।

मेरी बाईं ग्रोर की पड़ोसिन मैडम वू बिल्कुल ही भिन्न प्रकार की थी। वह चटपटी सुन्दर स्त्री थी ग्रौर उम्र ग्रधेड़ हो जाने पर भी सुन्दर थी पर वह ग्रपने बड़े परिवार पर पूर्ण स्वेच्छाचारिता से शासन करती थी। ग्रौरतों की बातों से मुझे पता चला कि उसने ग्रपनी सबसे बड़ी बहू को ग्रात्महत्या के लिए मजबूर कर दिया था ग्रौर वह केवल ईर्ष्यावश, क्योंकि उसका सबसे बड़ा लाड़ला लड़का, विवाह के बाद ग्रपनी पत्नी के प्रेम में डूब गया था। इससे उसका पारा चढ़ गया क्योंकि उसने जान-बूझकर उसका विवाह एक ग्रसुन्दर लड़की से किया था जिससे उसके ऊपर उसके ग्रपने ग्रधिकार को ग्रांच न ग्राए। पर उसने तरुण पुत्रवधू को इतना दुःखी कर दिया कि बेचारी ने एक दिन ग्रपने पति की गैरहाज़िरी में छत से रस्सी बांधकर फांसी लगा ली। तब से जवान पति ग्रपनी मां से बहुत ज़रूरी दो-चार शब्दों के ग्रलावा कभी नहीं बोलता था। मैडम वू को यह बात चुभी हो तो भी उसने ऐसा ज़ाहिर नहीं होने दिया। वह सदा की तरह गर्वीली रही ग्रौर उसने ग्रपने लड़के के लिए दूसरी पत्नी चुनी। फिर भी वह मेरी सहेली थी ग्रौर मैंने उससे उसके जैसे परिवार के प्राचीन ग्रौर खानदानी तरीकों के बारे में बहुत कुछ सीखा। उसके पास बड़े सुन्दर कपड़े थे, हाथ-बुने साटन ग्रौर रेशम ग्रौर उत्तर के तरह-तरह के फर की पोशाकें थीं। उसके पास सुन्दर फर के ग्रस्तर वाला कोट भी था जो उसकी नानी का था। उसने मुझे बहुत कुछ सिखाया जिनमें से एक चीज़ थी स्थानीय शिष्टाचार की सही शिक्षा। उससे मैंने बहुत-सी चीनी कविताएं सीखीं। वह भी पढ़ना नहीं जानती थी, पर माता-पिता की ग्रकेली लड़की

होने के साथ-साथ वह समय से पहले सयानी हो गई थी और उसके पिता ने उसे कविता पढ़ाई थी।

हमारे कस्बे में बहुत से भिखारी थे जो पेशे से ही भिखारी थे। वे भिक्षा के सहारे उतना नहीं रहते थे जितना उन बौद्धों के सहारे जो अपनी आत्मा की मुक्ति के लिए पुण्य-कार्य किया करते थे। उन कार्यों में से एक था गरीबों को धन देना। मुझे इन भिखारियों में निकम्मे नौजवानों की संख्या देखकर विशेष रूप से परेशानी होती थी। एक दिन जब मैं एक सहेली के घर जाने के लिए बगल की गली में घुसी, तब लगभग सत्रह साल के एक विशेष रूप से ढीठ और शेखीबाज़ लड़के ने भीख मांगी। मैं रुकी और मैंने सख्ती से उसकी ओर देखा।

'तुम भीख क्यों मांगते हो?' मैंने पूछा।

इसपर वह हक्का-बक्का रह गया और उसने अपना सिर लटका लिया और गुनगुनाते हुए कहा कि मुझे कुछ खाना है।

'तुम काम क्यों नहीं करते?' मैंने उससे पूछा।

'मुझे काम कौन देगा?' वह बोला।

'मैं दूंगी!' मैंने दृढ़ता से कहा, 'मेरे साथ हमारे बगीचे में चलो, मैं तुम्हें खुर्पी देती हूं और तुम मेरे बगीचे की बेकार घास साफ करो।' मैंने ऐसा ही किया और उसका खुर्पी लेने पर उदास चेहरा और अनिच्छुक हाथ देखकर मेरा अच्छा मनोरंजन हुआ। 'कितनी देर काम करने के बाद मुझे पैसे मिलेंगे?' उसने पूछा।

'दुपहर तक काम करो और मैं तुम्हें इतने पैसे दूंगी कि तुम अपने खाने के लिए दो कटोरे सेंविया खरीद सको,' मैंने उससे कहा, 'शाम तक काम करो तो मैं एक दिन की मज़दूरी दूंगी। कल फिर आना और शाम को फिर मैं तुम्हें एक दिन की मज़दूरी दूंगी।'

मैं उसे छोड़ गई और दुपहर में लौटी तो मैंने देखा कि वह सवेरे से लेकर तब तक बहुत थोड़ा काम कर सका है। फिर भी मैंने उसे खाने के लिए पैसे दे दिए और जब वह खा चुका तब उसे अगले दिन फिर आने के लिए कहा।

वह अगले दिन नहीं आया। फिर मैंने उसे छह महीने तक कभी नहीं देखा। इसके बाद वह मुझे कस्बे के दूसरी ओर, जहां मैं मुश्किल से ही कभी जाती थी, एक ओर गली में अचानक मिल गया। उसने अपना हाथ मांगने के लिए फैलाया और जब उसने मुझे पहचान लिया, तब उसके बादामी चेहरे पर भय छा गया।

बिना कुछ बोले वह तेज़ी से एक ओर चला गया। उसके बाद मैंने सचमुच उसे फिर कभी नहीं देखा।

एक बार क्रिसमस से पिछले दिन मैंने अपने पिछले दरवाज़े पर एक बच्चे की सी आवाज़ सुनी और दरवाज़ा खोला तो देखा कि सीढ़ियों पर शायद आठ साल का एक छोटा लड़का है जो दुबला-पतला और भूख से कमज़ोर था और केवल एक सूती कमीज़ पहने था। यह बड़ा सुन्दर लड़का था और अपनी बड़ी-बड़ी काली आंखों से उसने मेरी ओर देखा।

'तुम यहां क्यों बैठे हो ?' मैंने उससे पूछा।

'लोगों ने मुझे बताया था कि आज तुम्हारा त्यौहार का दिन है और मैंने सोचा कि तुम्हारे यहां कुछ जूठन बचेगी जो मैं खा लूंगा।' उसने उदास आवाज़ में कहा।

'तुम्हारे मां-बाप कहां हैं ?' मैंने पूछा।

'मां-बाप नहीं हैं,' उसने कहा।

'घर के और लोग तो होंगे ?' मैंने ज़ोर देकर कहा।

'कोई नहीं है।' उसने अपनी करुण वाणी में कहा, 'मेरे पिता और मां और मैं उत्तर के अकाल से बचने के लिए दक्षिण की ओर आ रहे थे। रास्ते में वे बीमार होकर मर गए और मैं अकेला रह गया।'

उस साल सचमुच उत्तर में अकाल था और लड़का सच्चा मालूम होता था। जो भी हो, मेरा हृदय क्रिसमस की भावनाओं से कोमल था और इसलिए मैं उसे अन्दर ले आई, स्नान कराया और उसे गर्म कपड़े पहनाए और खाना खिलाया। फिर मैंने छोटे-से कमरे में एक चारपाई लगाई और उसे सुला दिया। हमारे जीवन में कुछ भी छिपा नहीं था और हमारे पास जो दो नौकर थे, उन्होंने उस अनाथ के बारे में चारों ओर खबर फैला दी। अगले दिन सवेरे सबसे पहले मैडम चांग मेरे यहां आई। उसने किस्सा सुना और छोटे लड़के को ध्यान से देखा। वह भोली आंखों से उसकी ओर देखता रहा, और उसकी बातों का जवाब देता रहा, जब कि वह गम्भीरता से उसकी ओर घूरती रही। कुछ देर बाद उसने उसे रसोई में भेज दिया। वह सोचती रही और फिर बोली।

'मैं इस बच्चे पर अविश्वास करती हूं,' वह बोली, 'मैं समझती हूं कि कोई क्रिसमस और तुम्हारे कोमल हृदय का अनुचित लाभ उठा रहा है। तुम इस बच्चे का क्या करना चाहती हो ?'

'कुछ सोचा नहीं,' मैंने कहा, 'मैं समझती हूं कि मैं उसे यहां रखे रहूंगी और स्कूल भेज दूंगी, और इसी तरह आगे देखूंगी।'

उसने अपना सिर हिलाया। 'उसे रखा, पर यहां नहीं,' उसने सलाह दी, 'उसे मिशन के खेत-मज़दूर के पास रहने दो।'

शहर के बाहर एक छोटा-सा फार्म था जिसमें घर का आदमी अच्छे बीजों के परीक्षण कर रहा था। वहां हमारी नौकरी में एक मज़दूर रहता था। मैं मैडम चांग का इतना आदर करती थी कि उनकी बात को टालना असम्भव था। हमने उसे फार्म पर भेज दिया और उसकी देखभाल के बारे में हिदायतें दे दीं कि उसे गांव के स्कूल में रोज़ भेजा जाए और कि वह परीक्षण-खेती के काम में मदद करना सीख सके। अफसोस कि इस जीवन के लगभग तीन महीने बाद हमारा सुन्दर पोष्य—यद्यपि वह मोटा और प्रसन्नमुख हो गया था—भाग लिया और फिर हमने उसे कभी देखा भी नहीं। खेत-मज़दूर इस बारे में आनन्द से दार्शनिक विचार रखता था, 'वह छोकरा काम कभी नहीं कर सकता था,' वह बोला, 'खाना और सोना तथा खेलना तो वह अच्छी तरह कर सकता था, पर उससे कहा कि झाड़ू लेकर आंगन साफ कर ले तो वह भाग लिया।'

यह किसान भला आदमी था और उसकी पत्नी वात्सल्यपूर्ण स्त्री थी। उसने उस अनाथ को अपना ही बच्चा मान लिया था। वह उसपर शोक करती रही, पर वह मेरे विचार से उन्हीं भिखारियों या चोरों की टोली में लौट गया था जिन्होंने उसे पहले मेरे पास भेजा था।

इन वर्षों में मैंने देश का स्थलीय भाग दूर-दूर तक घूमा। जहां स्त्रियों के जाने के लिए डांडी के अलावा और कोई साधन नहीं था, वहां भी मैं घर के आदमी के साथ गई थी, जो मेरे ख्याल से चीनी पढ़ने से कतराता था, और अपनी पुस्तकों से बचना चाहता था। जैसे भी सही, हमने यात्रा की : वह साइकिल पर और मैं सामान्य डांडी में। वह चारों ओर से घिरी होती थी और सामने की तरफ मोटे नीले सूती कपड़े का पर्दा लटकता रहता था। जब हम खुली सड़कों पर चलते थे, तब मैं पर्दा ऊपर उठा लेती थी, पर जब हम गांवों और कस्बों के पास आते तब मैं लोगों की उत्सुकता भरी नज़रों से बचने के लिए, जिन्होंने कभी कोई गोरा आदमी या औरत नहीं देखी थी, पर्दा नीचे गिरा देती थी। फिर भी इतने से भी कुछ न होता क्योंकि कोई आदमी पैदल या टट्टू पर जाता हुआ मेरे पास से गुज़रता और हमसे पहले किसी कस्बे में

पहुंचकर सड़कों पर या किसी चाय की दुकान में यह शोर मचा देता कि शीघ्र ही एक अजीब नज़ारा पहुंचने वाला है। कई बार हमारे किसी घिरे गांव या कस्बे के दरवाज़े पर पहुंचने पर हमें भीड़ इन्तज़ार करती मिली और ऐसी तीव्र उत्सुकता की अवस्था में कि वे मुझे देखने के लिए पर्दा हटाए बिना न रह पाते थे। शुरू में मैंने चीनी महिला की तरह बनने की कोशिश करते हुए पर्दा बांध दिया। फिर यह सोचकर कि मैं चीनी नहीं हूं और मुझे उनकी मित्रतापूर्ण उत्सुकता शान्त करनी ही चाहिए, मैंने पर्दा हटा दिया और उन्हें देखने दिया। ताकते हुए और मेरे चारों ओर भीड़ करते हुए वे सराय तक मेरे पीछे-पीछे जाते और सराय वाला ही चिड़-चिड़ाकर उन्हें भगा पाता था।

'तुम क्या झांक रहे हो ?' वह बड़बड़ाकर उनसे कहता। 'क्या यह आंखों, हाथों और टांगों वाले आदमी और औरत से कोई भिन्न चीज़ है ? क्या आसमान के नीचे चारों समुद्रों के चारों ओर एक ही परिवार नहीं है ?'

वह उन्हें बाहर निकालने का बड़ा दिखावा करता, पर असल में वह भी औरों जितना ही उत्सुक होता था। शीघ्र ही वे सबके सब वापिस आ जाते। जब मैं अपने कमरे में चली जाती और लकड़ी का दरवाज़ा बन्द कर लेती, तब वे नीचे ज़मीन पर झुक जाते जहां लगभग छह इंच तक दरवाज़ा नहीं होता था, और नीचे से मुझे झांकते। यदि खिड़कियों पर कागज़ लगे होते तो वे उंगली पर थूक लगाकर नरम हल्के कागज़ में छेद कर लेते और एक आंख से मुझे देखने का यत्न करते। एक बार तो मैं घबरा ही गई, हुआ ऐसे कि अभी हमारा सामान नहीं पहुंचा था। इसीलिए साथ का आदमी उसे ढूंढने चला गया। मैं पीछे अकेली रह गई। जैसे ही उन्होंने देखा कि वह चला गया है, वैसे ही वे बन्द दरवाज़े को धक्का देने लगे। मुझे कुछ बेचैनी हुई क्योंकि मैंने उनमें कुछ आवारा छोकरे देखे थे। मैंने एक भारी लकड़ी की कुर्सी दरवाज़े से लगा ली और अपने पैर ऊपर रखकर बैठ गई ताकि वे मुझे न देख सकें। और सामान आने की प्रतीक्षा करने लगी।

इन यात्राओं से और भी नये मित्र बने और समय गुज़रने के साथ-साथ जब मैं नये स्थानों से परिचित हुई, तब उन परिवारों में जाने लगी जिनमें कभी कोई गोरा व्यक्ति न गया था। ये गौरवशाली प्राचीन परिवार इन दूर के घिरे कस्बों में और उन्हीं मकानों में कई सौ वर्षों से रहते आए थे। इन परिवारों की जवान तथा बूढ़ी स्त्रियों के साथ बैठकर मैं उनकी बातचीत सुनती और उनके जीवन के बारे में

जानकारी प्राप्त करती थी। इस प्रकार का एक घर मुझे विशेष रूप से याद है। यह घर एक सुन्दर पुराने नगर में था जो छोटा और आधुनिक युग से बिल्कुल दूर था। इस परिवार के वंश का नाम ली था। मैं इस परिवार में सबसे छोटे पुत्र की पत्नी की सहेली बन गई। यह लगभग मेरी उमर की ही थी।

वह मेरे बारे में और मेरे जीवन के बारे में बड़ी उत्सुक थी, पर अपनी सास और अपनी जिठानियों के सामने एक शब्द भी कभी नहीं बोली। पर मैं उसका मधुर और स्निग्ध चेहरा रोज़ देखती थी और सदा उसे देखकर मुस्कराती थी। एक दिन वह अकेली मेरे कमरे में आई और मुझसे उसने उस लम्बे-चौड़े आंगन के उस हिस्से में चलने के लिए कहा जिसमें वह रहती थी। हम छोटी-छोटी गलियों और छिपे रास्तों से गए क्योंकि स्पष्ट था कि वह किसीको यह नहीं जतलाना चाहती थी कि वह मुझपर एकाधिकार कर रही है और अन्त में हम उस छोटे-से आंगन में और कमरों में चले गए जहां वह और उसका पति रहते थे। वहां कोई न था, उसने मेरा हाथ पकड़ लिया और मुझे अपने सोने के कमरे में ले गई और दरवाज़े पर कुंडी लगा दी। यह पुराने ढंग का चीनी कमरा था जैसे कि मैंने बहुत बार देखे थे। कमरे का एक पूरा सिरा लम्बे-चौड़े पलंग से घिरा हुआ था जिसपर लाल साटन के कढ़े पर्दे लटक रहे थे। मेजें और कुर्सियां दीवार के साथ थीं और सूअर के चमड़े की पेटियां लाल रंगी हुई और पीतल के बड़े-बड़े तालों से बन्द।

'पलंग पर बैठ जाओ, जिससे हम बातचीत कर सकें,' वह बोली।

उसने स्टूल पर पैर रखा क्योंकि पलंग ऊंचा था और लाल साटन के बिछावन को थपथपाया और मैं उसके पास बैठ गई। उसने तुरन्त मेरा दायां हाथ प्यार से अपने दोनों हाथों में ले लिया और इसके बाद अपने सवाल शुरू किए।

उसने गम्भीरता से कहा, 'यह बताओ कि क्या यह सच है कि तुम्हारा पति दूसरे लोगों के सामने तुमसे बोलता है?'

'बिल्कुल सच।' मैंने कहा।

'शर्म नहीं लगती?' उसने फिर पूछा।

'हम इसे शर्म की बात नहीं समझते।' मैंने उसे समझाया।

'आह,' उसने आह भरी। 'मैं यहां रात के अलावा अपने पति से नहीं बोल सकती। अगर मैं और लोगों के साथ होऊं और तब वह अन्दर आ जाए तो मैं कमरे से बाहर चली जाती हूं, अन्यथा यह शर्म की बात होगी—तुम्हारे ख्याल से मेरी शादी

को कितने साल हुए हैं ?'

'अधिक नहीं हुए,' मैंने मुस्कराते हुए कहा, 'तुम इतनी छोटी लगती हो।'

'दो—' वह अपनी दो पतली-पतली उंगलियां ऊपर उठाकर बोली।

'मैं दो साल से यहां हूं फिर भी मैं एक बार भी अपने ससुर से नहीं बोली। यदि हम मिल जाएं तो मैं उनके सामने झुकती हूं और कमरे के बाहर चली जाती हूं। वे मेरी ओर देखते भी नहीं।'

'मैं न कभी अपने ससुर से मिली और न सास से,' मैंने उसे बताया। 'वे समुद्र-पार अमरीका में रहते हैं।'

वह चकित दिखाई दी। 'तो तुम्हारी शादी कैसे तय हुई थी ?'

इसके बाद हमने अमरीकी और चीनी लोगों के अन्तर के बारे में बहुत देर तक बातचीत की और वह बड़ी तीव्रबुद्धि मालूम हुई। तनिक-सी भी सहायता के बिना उसने बहुत कुछ विचार कर लिया था, यद्यपि उसका तरुण पति उससे प्रेम करता प्रतीत होता था और कभी-कभी उसके प्रश्नों के उत्तर देता था। मुझे महसूस हुआ कि वह उसको पूजती है और उसे यही अफसोस था कि वे इतनी कम देर इकट्ठे रह पाते हैं क्योंकि जब वह पारिवारिक कार्य से लौटकर रात को आता था, तब उसे कर्तव्यवश कई घण्टे अपने माता-पिता के पास बिताने पड़ते थे, इसलिए वह सदा देर से सोने आता था और उसको बहुत अधिक बातचीत करने में डर लगता था। वहां और कोई नहीं था—केवल दासियां और नौकर थे जो उससे भी अधिक अज्ञानांधकार में थे, क्योंकि अपने से बड़ी औरतों से तब तक बोलने का रिवाज नहीं था जब तक वे स्वयं कुछ न पूछें। पारिवारिक शिष्टाचार की यह कठोरता बहुत प्राचीन थी और धनी तथा बहुत रूढ़िप्रिय परिवारों को छोड़कर और कहीं नहीं थी। गरीब लोगों में और आधुनिक फैशन के लोगों में तो निश्चय ही बहुत स्वतन्त्रता थी। अन्ततः मेरी सहेली को भी स्वतन्त्रता मिल जाएगी, क्योंकि जब उसकी सास मर जाएगी और उसकी बड़ी जिठानी अन्तःपुर की स्वामिनी हो जाएगी तब उसकी अपनी स्थिति भी ऊंची हो जाएगी, यहां तक कि किसी दिन वह स्वयं मालकिन हो सकती है और उसकी भी बहुएं हो सकती हैं। निश्चय ही यह प्रतीक्षा करना कठिन काम था। और मैंने अमरीकन स्त्रियों के बारे में जो बताया, उसने उसे मन्त्र-मुग्ध होकर सुना।

पर अपने उत्तरी नगर में ज्यों-ज्यों मेरे अधिक दिन बीतते गए त्यों-त्यों मैं

धनी लोगों से नहीं बल्कि किसानों और उनके परिवारों से—जो नगर की दीवार के बाहर गांवों में रहते थे—अधिकाधिक प्रभावित हुई। यही लोग जीवन की कठिनाइयां सहते थे, सबसे कम पैसा पाते और सबसे अधिक काम करते थे। ये लोग सबसे अधिक यथार्थ थे तथा धरती के, जन्म और मृत्यु के, हंसी और रुदन के सब से अधिक समीप थे। किसान परिवारों में जाना मेरे लिए यथार्थता की खोज का कार्य हो गया और उनमें मैंने मनुष्य का सच्चा स्वरूप देखा। वे सब न अच्छे ही थे, न ईमानदार, पर यह अनिवार्य था कि उनके जीवन की यथार्थता ही उन्हें कभी-कभी क्रूर बना देती थी। किसान औरत अपनी नवजात शिशु बालिका का गला घोट सकती थी, यदि वह परिवार में एक और खाने वाला बढ़ने की बात से बिल्कुल विवश हो, पर ऐसा करते वह रोती थी और यह रोना सिर्फ अपने कृत्य पर ऊपरी दुःख न था बल्कि इससे कहीं गहरी चीज़ थी। उसे ऐसा करने की जो आवश्यकता महसूस होती थी यह रोना उसपर था।

'इससे तो बच्चे को मार देना अच्छा है।' यह उसका विचार होता था।

एक बार कुछ सहेलियों की गोष्ठी में, जो सब गरीब या किसान ही नहीं थीं, लड़कियों को मारने की बात चल पड़ी। वहां ग्यारह औरतें थीं और दो को छोड़कर बाकी सबने यह मंज़ूर किया कि प्रत्येक के घर कम से कम एक लड़की को मारा गया था। इसकी बात करती हुई वे अब भी रोती थीं और उनमें से अधिकतर ने यह काम खुद नहीं किया था। वे कहती थीं कि हमसे यह काम नहीं होता, पर उनके पतियों या सासों ने दाई को ऐसा करने का हुक्म दे दिया था, क्योंकि परिवार में पहले ही बहुत अधिक लड़कियां थीं। उनकी दलील यह थी कि जब लड़की का विवाह हो जाता है, तब वह दूसरे कुल में चली जाती है, और गरीब परिवार ऐसे बहुत सारे बच्चे नहीं पाल सकते जो परिवार में लाते तो कुछ नहीं और विवाह के समय दूसरे परिवार में जाते हुए ले अवश्य जाते हैं। पर फिर भी जीवित लड़कियों को बड़े प्यार से रखा जाता था और मारने का काम या तो जन्म के समय किया जाता था या बिल्कुल नहीं किया जाता था। नवजात चेहरे की एक झलक—उसका कुछ घण्टे का जीवन कठोर से कठोर औरत को भी यह महसूस करा सकता था कि वह अपने बच्चे को नष्ट नहीं कर सकती। जन्म से पहले ही आदेश दे दिए जाते थे ताकि जिस क्षण दाई यह देखे कि बच्चा लड़की है, उसी क्षण वह अंगूठे से उसका गला दबा दे।

मैंने स्वाभिमानी तरुण चीनियों को विदेशों में यह कहते सुना है कि ऐसी चीज़ें उनके देश में कभी नहीं होती थीं और जब मैं ऐसी बातें सुनती हूं तब चुप ही रहती हूं। ऐसी बातें अवश्य होती थीं क्योंकि मैंने अपने आंखों से देखी और कानों से सुनी थीं, पर इन युवा आधुनिक चीनियों को यह पता नहीं है कि ये क्यों होती थीं और यदि वे अपने ही लोगों के जीवन और उसके पीछे मौजूद कुछ दुःखदायी हालत को नहीं समझ सकते तो वे जो चाहे कह सकते हैं। इसी प्रकार, मैंने उन्हें इस बात का खण्डन करते सुना है कि पिछली कुछ दशाब्दियों में चीनी स्त्रियों के पांव बंधे होते थे। शायद शांगहाई या तींतसिन के विदेशी नगरों में या पीकिंग के मांचू प्रभाव के अधीन रहते उन्होंने सचमुच ही बंधे पांव नहीं देखे थे पर मैंने रेल लाइन पर स्थित ऐसे कस्बे में जहां पीकिंग से कुछ ही घण्टों में पहुंचा जा सकता था, अपने प्रौढ़ जीवन में बंधे पैरों वाली लड़कियां देखी हैं। और शहर तथा देहात दोनों में अधिकतर औरतों के पांव बंधे होते थे। हमारी अपनी मैडम चांग के पांव बंधे थे और यद्यपि वे छोटे नहीं थे, परम्परागत तीन इंच के स्थान पर छह इंच लंबे थे, फिर भी उसने बहुत कष्ट उठाया था और जब वह चलती थी तब ऐसा लगता था जैसे कीलों पर चल रही हो। मैडम वू जब मुझसे मिलने आती, तब उसे सदा दो दासियों का सहारा लेना पड़ता था और उसके पांव केवल तीन इंच लम्बे थे। वह छोटी-छोटी सुन्दर साटन की जूतियां पहनती थी। फिर भी मैडम चांग और मैडम वू की पोतियों के पांव बंधे नहीं थे क्योंकि वे स्कूल जाती थीं। मैडम चांग ने एक दिन बड़े व्यावहारिक रूप में बात पेश करते हुए कहा, 'मुझे ऐसी हर लड़की को देखकर खुशी होती है जिसके पांव नहीं बंधे, क्योंकि जब मैं छोटी थी तब मैंने अपने पांव सुन्न होने से पहले रो-रोकर रातें काटी थीं। पर यदि लड़की के पांव बंधे न हों तो वह शिक्षित होनी चाहिए, अन्यथा उसे पति नहीं मिलेगा। छोटे पांव वाली लड़की को पुराने ख्याल का पति मिल जाएगा और बड़े पांव वाली लड़की शिक्षित है तो उसे नये ख्याल का पति मिल सकता है, पर छोटे पांव या शिक्षा में से एक अवश्य होना चाहिए।'

यह सच है कि चीन के कुछ क्षेत्रों में पांव कभी नहीं बांधे जाते थे। मुझे याद है कि एक बार मैं दक्षिणी चीन में फुकियेन में यात्रा कर रही थी और तब मैंने देखा कि वहां देहाती स्त्रियां स्वाभाविक पैरों से आज़ादी से घूम रही थीं। वे सुन्दर मज़बूत स्त्रियां थीं और वहां यह समझदारी का रिवाज था कि लोग लड़कों

की शादी देहाती स्त्रियों से करते थे जिससे परिवार में स्वच्छ नया खून आए। ये बहुएं विलासिनी नहीं होती थीं। परिवार का सारा काम वे ऐसे करती थीं जैसे दासियां हों: सारा परिवार उनपर निर्भर होता था। वे सदा अपने पतियों से अधिक ताकतवर होती थीं। मुझे याद है कि मैं एक मित्र के परिवार में गई थी जो अमोय में रहता था। और यद्यपि वह विद्वानों का परिवार था, पर भोजन के समय हमें परोसने के लिए एक सुन्दर देहाती लड़की उपस्थित हुई जिसके नंगे भूरे पांव कपड़े की जूतियों में ढके थे। जब उसकी सास ने अपनी बहू कहकर उसका परिचय हमसे कराया तब वह मुस्कराई और सारे काम को संभालती हुई और बातचीत में हिस्सा लेती हुई परोसने में लगी रही, पर हमारे साथ बैठी नहीं।

और मध्य-चीन के उस हिस्से के लोगों में, जिसमें मेरा बचपन बीता था, किसान स्त्रियों के पांव शायद ही कभी बंधे हुए होते थे। केवल नगरों के परिवार अपनी लड़कियों के पांव बांधते थे। पर वहां हम नये चीन के मुख्य मार्ग पर थे और मेरी उमर की स्त्रियां अपनी लड़कियों के पांव प्रायः नहीं बांधती थीं। इस रिवाज के चीन में पैदा होने के बारे में बहुत से किस्से सुनने में आते हैं पर वे सब अधिकतर गप हैं। मेरे समय में यह केवल रिवाज और सौन्दर्य की चीज़ थी, ठीक वैसे ही जैसे तरुण चीनी प्रायः कहा करते हैं, कि पश्चिम वाले अपनी स्त्रियों की कमर लोहे की पेटियों से बांध देते थे, या पश्चिमी तरुणियां आज अपनी छातियां बेहूदे ढंग से बढ़ा लेती हैं। लोग जिसे सौन्दर्य समझते हैं, उसके लिए अजीब-अजीब काम करते हैं।

और क्रूरता की बात करते हुए शायद यहां पशुओं के प्रति क्रूरता का उल्लेख करना उचित होगा जो चीन जाने पर बहुत से विदेशियों को चोट पहुंचाती है। सचमुच पशुओं से चीन में किए जाने वाले व्यवहार और पश्चिम में किए जाने वाले व्यवहार में बहुत अन्तर है। चीनी लोग पशुओं को थपथपाकर लाड़-प्यार नहीं करते हैं। इसके विपरीत, संयुक्तराज्य अमरीका जाने वाले चीनियों को वहां पशुओं के साथ किए जाने वाले प्रेम के व्यवहार से बड़ा धक्का लगता है। चीनी समझते हैं कि प्रेम का व्यवहार मनुष्यों के लिए सुरक्षित रहना चाहिए। मैं पशुओं और मनुष्यों, दोनों के प्रति दया में विश्वास करती हूं और मैं यह सोचा करती हूं कि मेरे चीनी मित्र, जिन्हें मैं जानती थी कि वे मनुष्यों के प्रति दयालु हैं, पीड़ित पशुओं के प्रति क्यों इस तरह बिल्कुल उदासीन होते हैं। इसका कारण (जैसा कि मुझे बूढ़ी

होने पर पता चला) चीनी विचारधारा पर बौद्ध सिद्धांत का छा जाना था। यद्यपि अधिकतर चीनी धार्मिक नहीं और इसलिए बौद्ध नहीं, फिर भी मनुष्य की आत्मा के पुनर्जन्म के सिद्धान्त ने उनके चिन्तन पर प्रभाव डाला और उस सिद्धान्त का सार यह है कि पापी आदमी मृत्यु के बाद अगले जन्म में पशु बनता है, इसलिए प्रत्येक पशु कभी पापी आदमी था। यद्यपि औसत चीनी इस सिद्धान्त पर अत्यन्त विश्वास होने की बात से इन्कार करेगा, पर व्याप्त विश्वास ने उसे पशुओं के प्रति हीनभावना रखना सिखा दिया है।

चीनियों में क्रूर लगने वाली एक और चीज़, जो पश्चिम वाले को उसी तरह विचित्र लगती थी, यह थी कि यदि कोई व्यक्ति किसी खतरे में पड़ जाए, जैसे, उदाहरण के लिए यदि कोई पानी में गिर पड़े और जो न निकालने पर डूब जाएगा तो कोई दूसरा चीनी डूबते हुए को बचाने के लिए अपना हाथ नहीं बढ़ाएगा। कोई विरला ही इसका अपवाद होता होगा। क्रूर? हां, पर यहां भी शताब्दियों से फैले हुए बौद्ध धर्म के वातावरण ने लोगों में यह आम विश्वास पैदा कर दिया है कि यह तो उसका भाग्य है कि उसका मौत का समय आ गया है। यदि कोई उसे बचाएगा और इस प्रकार भावी को चुनौती देगा तो बचाने वाले को बचाए गए आदमी की जिम्मेदारियां संभालनी होंगी। कोई आदमी कितना ही दयालु हो, पर यदि उसे मौत के खतरे में पड़े हुए आदमी को बचाने से उसके बाद उस व्यक्ति की, और शायद उसके सारे परिवार की इसी कारण देखभाल करनी पड़े कि उसने मरते हुए आदमी को (जिसको मरना ही था) नया जीवन प्रदान करके अपने को उसके लिए जिम्मेदार बना लिया है तो उसे हिचकिचाहट होगी ही।

हमारे शांत उत्तरी नगर में समय गुज़रता गया। अन्त में हम भी राष्ट्रीय झगड़ों में उलझ गए। इस समय तक देश दृढ़ता से युद्ध-नायकों के कठोर पंजों में आ गया था और हमारे प्रदेश में भी उनमें आपस में झगड़े होने लगे। इसे कभी युद्ध नहीं कहा जाता था, बल्कि सदा 'डाकुओं पर हमला करना' कहा जाता था। मतलब यह हुआ कि प्रत्येक युद्धनायक यह दावा करता कि वह स्वयं असली शासक है और दूसरा 'डाकुओं का सरदार' है। वर्ष में कम से कम एक या दो बार हमारे नगर पर संक्षिप्त, पर चिन्ताजनक झपट होती और गोलियां उड़तीं तथा छोटा-सा अस्पताल दोनों ओर के घायल सैनिकों से भर जाता। हमने यह सीख लिया था कि जब गोलियां छत के ऊपर सरसराती आएं तब दौड़कर कमरे के कोनों में चले

जाओ और तब तक वहां खड़े रहो जब तक लड़ाई आगे न चली जाए और खिड़कियों के पास तो कभी खड़े ही मत होओ। सूर्यास्त के समय लड़ाई आम तौर से खत्म हो जाती थी, या यदि हमारे सौभाग्य से तेज़ वर्षा आती तो दोनों ओर के सैनिक दूरदर्शिता से विराम सन्धि कर लेते और शहर की दीवार के बाहर अपने-अपने शिविरों में चले जाते ताकि उनकी वर्दियां गीली न हों। नगर के प्रतिनिधि लोग किसी भी पक्ष को नगर के अन्दर शिविर नहीं लगाने देते थे। जब लड़ाई का खतरा होता, तब मुख्य दरवाज़े बन्द कर दिए जाते और घायलों को एक छोटे दरवाज़े से अन्दर लाया जाता।

ये पुराने ढंग के युद्ध प्रायः खतरनाक की अपेक्षा मनोरंजक अधिक होते थे, बशर्ते कि आदमी गोली लगने की सीमा से बाहर रहे। क्योंकि युद्धनायकों को स्वयं भी कठोर लड़ाई में आनन्द न आता था, इसलिए वे विराम-सन्धि के लिए तरह-तरह के बहाने बनाते थे। वास्तव में वे खुली लड़ाई की अपेक्षा धोखेबाज़ी और लड़ाई की चालाकियों को अधिक पसन्द करते थे और कभी-कभी भोजन की मेज पर, जब विराम-सन्धि की शर्तें तय होनी होती थीं तब एकाएक अतिथियों की हत्या कर दी जाती थी और इस प्रकार कम से कम उस समय तो लड़ाई का खतरा खत्म हो जाता था। इन मुठभेड़ों को मैं जीवन का भाग मानने लगी थी और बिना भयभीत हुए सावधानियां बरतती थी।

मेरे जीवन में एक और परिवर्तन आया, और यह था एक नये मकान का निर्माण। हमारे छोटे-से चार कमरों के चीनी घर की, लड़कों के स्कूल का विस्तार करने के लिए ज़रूरत थी और मिशन ने शहर के बाहर ज़मीन का एक टुकड़ा खरीद लिया, और हमसे एक मध्यम दर्जे के मकान का नक्शा सोचने और मकान बना लेने के लिए कहा। मैं चीनी ढंग का एक माडल मकान चाहती थी पर मिशन अधिकारियों ने इसे अस्वीकार कर दिया। नहीं, यह पश्चिमी ढंग का दो-मंज़िला मकान ही होना चाहिए। यद्यपि मुझे सपाट उत्तरी मैदान पर यह बड़ा मकान बनाने की बात नापसन्द थी, पर और कोई चारा न था। मैंने डेढ़-मंज़िले मकान की रूपरेखा बनाई जो बहुत सादा था पर उसमें सीढ़ियां थीं और जब वह पूरा हो गया, तब मेरे शहर के मित्र और देहात के पड़ौसी वह विदेशी मकान देखने आए। सीढ़ियों से वे मुग्ध और भयभीत हुए। बड़ी आसानी से वे ऊपर चले गए, पर उस सीधे ढलाव से नीचे देखने पर वे उतरने का जोखिम उठाने को तैयार न थे।

'मैं तो इसे इस तरह करूंगी,' मैडम चांग ने कहा और वह झटपट ऊपर की सीढ़ी पर बैठ गई और गम्भीरतापूर्वक नीचे की सीढ़ियों पर सरकती गई। उसके मोटे सर्दियों के कपड़े उसे चारों ओर से अच्छी तरह बचा रहे थे। उसके बाद और सब महिलाएं बिना ज़रा भी संकोच के उतर आईं और इस तरह सब की सब सुरक्षित निचली मंज़िल पर आ गईं। मैं समझती हूं कि चीनियों में सबसे बढ़िया गुण यह है कि वे जो कुछ करते हैं, उसमें संकोच बिल्कुल भी नहीं होता। उन्हें यह नहीं महसूस होता कि और कोई हमारे बारे में क्या सोचता है। पश्चिम में शिक्षा पाए चीनियों में ही मुझे संकोच दिखाई दिया जिसमें अपने देशीय लोगों की दयनीय झूठी पीड़ा मिली रहती थी। मुझे उस समय उनके लिए बड़ा अफसोस हुआ क्योंकि उन्हें शताब्दियों से इतने सभ्य स्वराष्ट्र पर यह अभिमान होना चाहिए था कि वहां के लोग बिना संकोच के व्यवहार कर सकते हैं। पश्चिम में उनकी तुलना इंगलैंड के राजपरिवार से ही की जा सकती है, जिनमें शायद हाल में ही सर विन्स्टन चर्चिल और शामिल हो गए।

युद्धनायकों में बीच-बीच में झड़पें होते हुए भी हमारे कस्बे में वर्षों शान्ति से गुज़र गए और मेरा समय छोटी-छोटी मानवी घटनाओं में मग्न रहकर बीता। चीनी जीवन में परिहास बहुत है, यदि उसमें पूरी तरह शामिल हुआ जाए, और इसका कारण है नाटक की भावना, जो प्रायः हर चीनी के लिए सहज-स्वाभाविक है। चाहे झगड़ा हो, उत्सव हो या जन्म-दिन हो, सबपर बड़ा मनोरंजन प्रस्तुत होता है और एक जन्म, एक मृत्यु या एक विवाह हफ्तों बातचीत करने और मनोविनोद करने के लिए काफी था। किसानों का गंवारू परिहास और दुकानदारों और उनके परिवारों का हंसी-ठट्ठा कभी-कभी किसी अनिवार्य दुःखदायी घटना से भी पूरी तरह बन्द नहीं होता था। मैं अपने कस्बे के धनी वृद्ध श्री ह्सू की मुसीबतें कैसे भूल सकती हूं जिनका जीवन उनकी चार पत्नियों से रौनकदार और घिरा हुआ था और वे कैसे शोरोगुल से उन्हें घेरे रहती थीं! जब वे ट्रेन पर पेंगपू की यात्रा करते, तब उन्हें अपने मन की इच्छा के अनुसार काम करने का साहस न होता था। वह इच्छा यह थी कि अपनी केवल सबसे छोटी, और इसलिए विशेष प्यारी पत्नी को अपने साथ ले जाएं। वह सुन्दर स्त्री थी और अभी तीस की आयु को नहीं पहुंची थी। वह एकमात्र ऐसी पत्नी थी जो अब भी इतनी पतली थी कि लम्बी चुस्त और बहुत फैशनेबल शांगहाई की पोशाक पहन सके। हर यात्रा इस संकलन से शुरू होती थी कि वे

अपने साथ केवल अपनी सबसे छोटी पत्नी को ले जाएंगे पर उन्हें कभी यह सुविधा नहीं मिल पाती थी। कोई बात गुप्त रखना असम्भव था और इसलिए हर स्त्री उलाहना देती और शिकायत करती थी, यहां तक कि अन्त में अनिच्छा से चारों की चारों को ले जाना पड़ता था, पर फिज़ूलखर्ची से बचने के लिए वे इन्हें गाड़ी में अलग-अलग जगह बैठाते थे। तीसरी सबसे छोटी रखेल उनके साथ दूसरे दर्जे में, दूसरी तीसरे दर्जे में और उनकी पत्नी तथा पहली रखेल चौथे दर्जे में। अफसोस कि उन्हें अब भी शान्ति नसीब नहीं थी क्योंकि जो तीनों निचले दर्जे में होती थीं, वे बीच-बीच में आकर उन्हें घेर लेतीं और वही भोजन तथा बढ़िया चीज़ें मांगती थीं जो वे अपनी चहेती के लिए खरीदते थे। श्री ह् सू की परेशानी मिर्च-मसाला लगाकर शहर-भर की बातचीत का विषय होती थी।

जवान औरतों का आत्महत्या कर लेना असाधारण घटना न थी। और साथ वाले मकान में हुई आत्महत्या तो मैं कभी नहीं भूल सकती। वह मेरी सहेली थी और मेरी ही उमर की तरुणी थी। मैं जानती थी कि वह अपने पति या परिवार से खुश न थी। वह बहुत अधिक भावुक तीव्रबुद्धि स्त्री थी जो स्कूल जाने की लालसा रखती। हम दोनों का बहुत-सा समय पुस्तकों में ही गुज़रता था क्योंकि उसकी ज्ञान की प्यास कभी तृप्त नहीं होती थी। मुझे डर लगा करता था कि कहीं वह अपनी जिन्दगी खत्म न कर ले क्योंकि उसके लिए कोई बचने का रास्ता नहीं था, और धीरे-धीरे उसकी सब आशा खत्म हो गई। एक दिन चमकते प्रातःकाल में मुझे बुलवाया गया और जब मैं उसके कमरे में पहुंची, उससे पहले ही परिवार के लोगों ने वह रस्सी काटी थी जिससे उसने अपने-आपको फांसी लगाई थी। मैंने उसका हाथ पकड़ा और वह अब भी गरम और नरम था। वह उस टाइल के फर्श पर बच्चे की तरह भोली पड़ी थी और उसके चेहरे पर कोई विचार नहीं था तथा मैं यह विश्वास नहीं कर सकती थी कि वह मर चुकी है। मैंने उनसे इजाज़त मांगी कि मुझे प्राथमिक उपचार (फर्स्ट एड) देने दो, पर उसकी सास ऐसी विदेशी चीज़ें करने देने को तैयार न थी। बौद्ध संस्कार करने वाले पुजारी पहले ही आ चुके थे और मौत-सम्बन्धी मन्त्र आरम्भ हो चुके थे। जब मैंने आग्रह किया तब उनके चेहरे द्वेषपूर्ण हो गए और मैडम चांग, जो मेरे बाद पहुंच गई थी, जल्दी से मुझे हटा ले गई।

मेरी मुख्य भीतरी दिलचस्पी—यदि अपने कम्पाऊंड के बारे में इस तरह कहना ठीक समझा जाए तो—लडकियों का स्कूल था, जिसकी मेरे ऊपर ज़िम्मेदारी थी

ग्रौर इसकी मुख्याध्यापिका के पद के लिए मैंने चिकियांग से अपनी एक पुरानी बचपन की सहेली को निमंत्रित किया था। वह योग्य अध्यापिका थी, युवा ग्रौर उत्साही थी, ग्रौर मुझे ग्राशा थी कि वह बहुत कुछ कर दिखाएगी। अफसोस, जैसा कि चीन में इतना अधिक होता है, यद्यपि उसे काम ग्रौर मैत्रीपूर्ण बस्ती तथा विशेष रूप से, अपनी उत्सुक छात्राएं पसन्द ग्राई, पर उसे उत्तरी भोजन ने पराजित कर दिया। भोजन के मामले में चीनी लोग विचित्र ढंग के हैं। उन्हें दूसरा भोजन अनुकूल नहीं पड़ता। सम्भवतः इसका कारण यह है कि वे भोजन को बहुत अधिक महत्त्व देते हैं—ग्रौर वह मध्यचीन की चावल की खुराक छोड़कर उत्तरी चीन की गेहूं की रोटी ग्रौर जई की खुराक न अपना सकी। उसका तोल ग्रौर जीवन-शक्ति कम हो गई जिसका कारण यह नहीं था कि वह नई खुराक पचा नहीं पाती थी बल्कि यह था कि चावल की जगह रोटी खाना उसके लिए बहुत अजीब था। अन्त में मुझे झुकना पड़ा ग्रौर हार माननी पड़ी।

इन सब वर्षों में मैंने एक ऐसे समुदाय में सीमित होकर, पर गहराई में जीवन बिताया जहां योरुप में महायुद्ध की लपटें उठती होने के बावजूद युगों से कभी शांति भंग नहीं हुई थी। यह सच है कि श्रीमती लियु, जो एक ऊंची पतली बहुत पीले चेहरे वाली स्त्री थी, बहुत कष्ट उठा रही थी क्योंकि उसका पति, जिसे वह साफ तौर से 'निठल्ला' कहती थी, महायुद्ध में मजदूर बनकर फ्रांस चला गया था ग्रौर उसने एक ग्रौर सहेली से, जिसका अपना पति भी मज़दूर बनकर फ्रांस गया हुग्रा था। यह सुना था कि उसका 'निठल्ला' एक फ्रेंच ग्रौरत के साथ रह रहा था। इसपर श्रीमती लियु दुःख ग्रौर अभिमान के बीच में झूलने लगी।

वह रोते-रोते कहती, 'यह सोचकर जी फट जाता है कि मेरे निठल्ले ने एक विदेशी ग्रौरत रख ली है! पर किस तरह की ग्रौरत है वह? मैं तुमसे पूछती हूं? कोई भी देख सकता है कि मेरा पुराना ठलुग्रा किसी काम का नहीं। इसलिए जब वह पिछले साल शांगहाई से घर ग्राया ग्रौर उसने यह कहा कि मैं सैनिक बनने जा रहा हूं तब मैं खुश ही हुई ग्रौर अब उसने एक विदेशी ग्रौरत रख ली है! अगर वह उसे घर ले ग्राए तो क्या होगा? हम कैसे उसे खिला सकते हैं? फ्रेंच ग्रौरत क्या खाती है?'

मुझे पता चला कि 'निठल्ला' शब्द उस प्रदेश में पति के लिए प्रचलित ग्राम शब्द था, जहां स्त्रियां अपने गुणों पर अभिमान करती थीं। 'मेरे याग्रो-यिएह' या

'मेरे निठल्ले', इन शब्दों से स्त्रियां अपने अधिकतर वाक्य शुरू करती थीं। यह सच है कि सामान्यतया पुरुष स्त्रियों से हीन होते थे और मेरी समझ में इसका कारण यह था कि चीनी घरों में लड़के बहुत बिगाड़ दिए जाते थे जबकि लड़कियों को शुरू से यह पता था कि उन्हें अपना रास्ता खुद बनाना है जिससे वे बहुत कम बिगड़ पाती थीं। जो भी कारण रहा हो, चीनी स्त्री आम तौर से अधिक समर्थ पात्र दिखाई देती थी। और इस तथ्य से एक बढ़िया देहाती परिहास निकला जिसे अमरीकन नर-नारी बिना कठिनाई के समझ सकते हैं। चीनी स्त्रियां सूझ-बूझ वाली और बहादुर तथा परिहासपूर्ण हैं और उन्होंने अपनी सीमाओं के अन्दर आज़ादी से रहना सीख लिया है। वे मनुष्यों में सबसे अधिक यथार्थवादी और सबसे कम भावुक और बहने वाली हैं। जिन्हें वे प्यार करती हैं, उनके प्रति पूर्ण निष्ठा, और जिनसे वे घृणा करती हैं उनके प्रति अमिट घृणा (जो सदा छिपी भी नहीं होती) रखने में समर्थ हैं। मैं समझती हूं कि यदि कम्यूनिस्टों ने दूरदर्शिता से चीनी स्त्रियों को इतनी मुख्यता नहीं दी होती तो वे चीन पर अधिकार न कर सके होते। मुझे याद है कि कुछ वर्ष पहले मैंने दा तरुण अमरीकन उड़ाकों का—जिन्हें चीन में कम्यूनिस्ट क्षेत्र में उतरने को मजबूर किया गया था और बाद में रिहा कर दिया गया था—हस्तलिखित वृत्तान्त देखा था। उन्होंने एक कम्यूनिस्ट गांव में जितने सप्ताह बिताए उनमें उन्होंने दिलचस्पी और दया से देखा कि स्त्रियां नए शासन का कितने उत्साह से समर्थन करती थीं, और उन्होंने लिखा था कि इसका कारण केवल यह था कि कम्यूनिस्ट स्त्रियों को उनके बच्चों के सिलसिले में सहायता देते थे। यह दवाई और भोजन के रूप में बड़ी तुच्छ राशि थी, पर फिर भी उन लोगों के हृदयों को स्पर्श करने के लिए यह काफी थी जिन्हें पहले कभी सहायता न की गई थी। 'हम अमरीकन लोग यह सहायता कितनी अच्छी कर सकते थे।' तरुण उड़ाकों ने टिप्पणी करते लिखा था, 'बशर्ते कि हमें इसका पता होता!'

मेरे उत्तरी कस्बे में शान्त और अत्यधिक मनोरंजक वर्ष एक दिन सहसा समाप्त हो गए, जब घर के आदमी ने यह कहा कि नानकिंग विश्वविद्यालय में एक स्थान खाली है, और यह कि वह उसके लिए प्रार्थना-पत्र देना चाहता है। मैं जानती थी कि वह एक प्राचीन और जमी-जमाई कृषि-पद्धति पर पश्चिमी खेती की विधियों का प्रयोग करने में असफल रहने के कारण तड़पड़ा रहा था। अब उसने कहा कि अकेले काम करने के बजाय कहीं समूह में शामिल हो जाना अधिक अच्छा होगा।

वह विश्वविद्यालय में खेती के छात्रों को पढ़ाएगा और क्रियात्मक प्रयोग उन्हें स्वयं करने देगा।

मैं अपने उत्तरी कस्बों को छोड़ते हुए उदासी अनुभव करने लगी जहां मेरे इतने स्नेह-सम्बन्ध बन गए थे, पर फिर भी मैं एक तरह से फिर आधुनिक चीन के मध्य में पहुंचकर खुश थी। साहित्य में चल रही क्रान्ति से भी मेरा सम्बन्ध प्रायः टूट गया था—बस मुझे इतना ही पता था कि यह जारी है। यह ठीक है कि नानकिंग परिवर्तन का केन्द्र नहीं था और निश्चय ही मैं उस समय यह नहीं जानती थी कि दस वर्ष से भी कम में यह च्यांग की क्रान्तिकारी नई सरकार की राजधानी बन जाएगा। जब मैं वहां रहने गई, तब वह एक प्राचीन और रूढ़िप्रिय नगर ही था और अपनी परम्परा के कारण पुरानी शैली के पण्डितों का एक गढ़ भी था जो नये पश्चिम में शिक्षित बुद्धिजीवियों के सम्प्रदाय—'रिक्शा-कुली-बोली-सम्प्रदाय': जैसे कि लिन शू इसे कहा करता था—'सर्वसाधारण भाषा' के विरोधी थे। फिर भी, नानकिंग ऐतिहासिक जीवन का केन्द्र भी रहा था। बहुत समय तक वह परम प्रसिद्ध मिंग वंश की राजधानी रहा था और अब इसमें दो ईसाई कालेज—एक पुरुषों के लिए, दूसरा स्त्रियों के लिए—तथा चीनी राष्ट्रीय विश्वविद्यालय भी था।

मेरे कस्बे में दावतें, विदाइयां, उपहारों का आदान-प्रदान और रोना-धोना तथा आने के अनेक वायदे हुए। अन्त में मैंने उस नये ईंटों के मकान को बन्द कर दिया जिसमें मैंने कभी समझा था कि मैं अपना शेष जीवन बिताऊंगी। और दक्षिण की ओर जाने वाली गाड़ी पर सवार हो गई।

आइलैंड बीच, न्यू जर्सी

हमारा पुराना कोस्ट गार्ड वाला मकान न्यू जर्सी के समुद्र-तट पर खुला और बेमरम्मत खड़ा है। मैं यहां आज बड़े सवेरे आई थी और अपने साथ थोड़े-से भोजन के अलावा और कुछ न लाई थी। दो-एक पुरानी पोशाकें पूरे साल भर से अल्मारी में लटक रही थीं, दो नहाने के सूट और कुछ जोड़ी चप्पल रखी थीं और मौसम के अनुसार मैं कपड़े या नहाने का सूट पहनकर समुद्र की ओर निकल जाती थी। रेतीली धरती में लगे पड़ाव के दूसरी तरफ वह विस्तृत खाड़ी है जिसमें मेरे अमरीकन बच्चे बालकपन में गर्मियों के महीनों में सुरक्षित खेला करते थे। कल्पना के

केन्द्र के रूप में एक पुरानी चप्पुओं वाली नाव अनगढ़ घाट से मज़बूत बंधी हुई है। वे दिन में सैकड़ों बार इसमें से उथले पानी में गिर पड़ते और फिर इसपर चढ़ जाते थे। जहां तक रस्सा जाता, वहां तक वे केकड़े और मछलियां पकड़ते और चप्पू से नाव को खेते। इसके बाद वे एकाएक खाड़ी के हिसाब से बहुत बड़े हो गए और हमने अपना निवास महासागर वाली तरफ कोस्ट गार्ड हाउस में कर लिया एवं खाड़ी केवल गम्भीरतापूर्वक केकड़े पकड़ने के लिए तथा बाद में प्रथम बाहर-इंजिन वाली नाव के लिए ही उपयोगी रह गई।

जब मैं समुद्र की ओर जाती हूं तो मेरे मन में प्रेम और आतंक दोनों होते हैं, क्योंकि असल में मुझे पानी से डर लगता है। इसका कारण मैं जानती हूं। मैंने प्रशान्त महासागर बहुत बार और छोटी आयु में पार किया और मैं चमकती धूप या खिली चांदनी में भी शान्ति देखकर धोखे में नहीं आती। पागलपन उसकी अज्ञात गहराइयों में छिपा हुआ अवश्य है फिर भी मैं बार-बार समुद्र की ओर जाती हूं यद्यपि वहां अधिक देर नहीं ठहरना चाहती। और वर्ष के कुछ समय ऐसा भी आता है जब मैं किसी कारण भी उसके पास नहीं जाना चाहती।

किनारा चौड़ा है और आज निर्जन पड़ा है। केवल थोड़े-से मछियारे हैं जो सिर घुमाकर यह नहीं देखते कि कौन गुज़र रहा है। यहां ऐसा एकान्त है जैसा किसी अकेले मूंग के द्वीपक पर हो सकता है—सफेद रेत, नीला आसमान और उससे भी अधिक नीला सागर। बच्चे नाव चलाने गए हैं। मकान खाली, नीरव है और समुद्र की ओर की खिड़की के पास मै अकेली बैठी हूं और स्मृति बेरोक बह रही है।

…मैं जब नानकिंग में रहने गई, उससे पहले केवल एक बार नानकिंग गई थी। और यह तब की बात है जब छुटपन में मैं एक स्कूल की सहेली के यहां गई थी। मेरी उस समय की स्मृति अस्पष्ट और बाद के अनुभवों से ढकी हुई थी और अब मैंने नगर को नई आंखों से देखा। यह यांगत्से नदी से सात मील पर है। यह एक विशाल दीवार से घिरा क्षेत्र है और इसको घेरने वाली दीवार चीन की सबसे सुन्दर दीवारों में है जो पत्थर के समान मज़बूत ईंटों की बनी है। और ऊपर इतनी चौड़ी है कि अगल-बगल कई मोटरें चल सकती हैं। इस दीवार की परिधि पचीस मील है। और मुझे इसका बाद में अनेक कारणों से पता चला जिनमें से एक यह था कि अकालों के समय (जो उत्तरीय चीन में बीच-बीच में पड़ते रहते थे)

शरणार्थियों की भीड़ नानकिंग में आती जाती और दूसरी जगह न मिलने के कारण वे अपनी चटाई की झोंपड़ियां शहर की दीवार के ऊपर बना लेते थे, जहां सर्दियों की हवाएं सबसे अधिक सख्त होती थीं। मेरी जो बहुत थोड़े गुस्से-भरे वाद-विवाद कभी किसी चीनी मित्र से हुए हैं, उनमें से एक वह था जो नानकिंग की एक नौजवान स्त्री से हुआ था जो शिकागो विश्वविद्यालय की स्नातक थी जिसमें उसने समाज-सेवा में विशेषज्ञता प्राप्त की थी। उस साल इन पहली सर्दियों में नानकिंग में बहुत बुरा अकाल पड़ा और मैंने शहर की दीवार पर जमा हुए हज़ारों दुखिया लोगों को अनाज तथा कपड़ा पहुंचाने में हिस्सा लेने का यत्न किया। इस प्रकार मैं श्रीमती यांग के पास गई। उसका नाम इतना ही नहीं था। वह जवान और बड़ी सुन्दर औरत थी। सुन्दर का अर्थ है कठोर, चुस्त—आधुनिक फैशन की सुन्दर। उसके साटन के कपड़े चीनी थे पर उसके दुबले शरीर पर कसकर आने के लिए बनाए गए थे और उसके बाल छोटे-छोटे थे। उसका घर एक दु-मंज़िला पश्चिमी ईंट का मकान था जिसकी सजावट अर्ध-विदेशी फैशन से की गई थी। साफ-सुथरे, छोटे, रहने के कमरे में, जिसमें फूलों वाली दरी बिछी थी, खिड़कियों पर पर्दे पड़े थे। प्रचलित आधुनिक दृश्य सुनहरे फ्रेमों में दीवार पर लटक रहे थे। मैंने उसे नगर की दीवार के ऊपर वाले शरणार्थियों की दुर्दशा बताई। वह यह विश्वास करने को तैयार न थी कि हालत वैसी थी जैसी मैंने उसके सामने चित्रित की थी और मैं उसे इस बात के लिए न मना सकी कि वह नगर की दीवार पर चढ़कर स्वयं देख ले। वह जिस गली में रहती थी वह पुराने नगर में सबसे अधिक आधुनिक थी और वह कभी इससे अधिक दूर नहीं जाती थी।

'मैंने ऐसी चीज़ें शिकागो की गन्दी बस्तियों में देखी थीं,' उसने निश्चिन्तता से कहा, 'पर मुझे निश्चय है कि यहां ये नहीं हैं।'

वह सचाई का पता लगाने के लिए हिलने का कष्ट भी नहीं करना चाहती थी। मेरी स्मृति में वह पश्चिम की शिक्षा पाए हुए ऐसे चीनी के नमूने के रूप में सदा कायम रहती है जो अब चीनी नहीं रहा। उसने अपना ही एक छोटा-सा तंग सुन्दर संसार बना लिया था जिसके नागरिक सब उस जैसे ही थे। वे साफ-सुथरे छोटे-छोटे ईंटों के मकानों में रहते थे। उनके पति विश्वविद्यालय में नौकर थे तथा उनके बच्चे एक अपने अलग किंडर गार्टन स्कूल में पढ़ने जाते थे। इससे परे की बात वे नहीं जानना चाहते थे—शायद उन्हें जानने से डर लगता था। चीन में

विशालता भी थी और भय पैदा करने वाले पहलू भी थे।

पर नगर की दीवार शरणार्थियों के बसने का स्थान-मात्र नहीं थी। वसंत में जब वे अपने देश को लौट जाते, तब यह घूमने के लिए एक आनन्ददायक स्थान बन जाता और मैं ऊपर से देहात और पर्वतों पर नज़र डाल सकती थी। आसमान के आगे एक पर्वत ऊंचा और साफ खड़ा था। वह था 'त्ज़े-चिंग शान' या गुलाबी पर्वत और जब मुझे अपने शहर के बारे में अधिक जानकारी हुई, तब यह आनन्ददायक स्थान बन गया। पर्वत में मन्दिर छिपे हुए थे जो आराम के लिए सुन्दर और छायादार स्थान थे और उसके पास मिंग सम्राटों के मकबरे भी थे, जहां तक जाने वाली सड़कों पर बड़े-बड़े पत्थर के पशु और मनुष्य पहरेदार की तरह खड़े थे। मिंगों के बारे में अब भी बहुत किस्से सुनाए जाते थे। कहा जाता था कि यह किसीको पता नहीं कि सम्राटों को वास्तव में कहां दफनाया गया था क्योंकि सम्राटों की अन्तिम क्रिया के समय एक ही जैसे नौ जलूस शहर के नौ दरवाज़ों से एक ही समय चले थे। मकबरों में असंख्य खज़ाने होने के किस्से भी सुनाए जाते थे, पर मुझे उनकी सत्यता में संदेह था। बहुत सारे मकबरों को बीच की शताब्दियों में लूटा गया था और सम्भवतः जो कुछ बचा था वह केवल मनुष्य की मिट्टी थी और वह भी बहुत अस्तव्यस्त हुई।

स्थान और समय का इतना व्यवधान हो जाने के बाद भी मैं गुलाबी पर्वत के बारे में और अधिक कहे बिना नहीं रह सकती क्योंकि मेरे बहुत-से अत्यधिक सुखद घण्टे वहां बीते थे। इसका शृंग ऊपर नोकदार चोटी के रूप में था। मैं एक दिन जुलाई में इसपर अकेली ही चढ़ गई। ऊपर पहुंचकर मैंने इसपर चारों ओर नज़र डाली। पर्वत के उत्तरी फैलाव पर मैंने चकित आंखों से नीले रंग के जंगली मौंक्स-हुड का—जो सब के सब फूलों से भरे थे—खेत फैला हुआ देखा। मैं उसके बाद ऐसे सौन्दर्य को देखने के लिए प्रतिवर्ष पहाड़ पर जाती थी। उस दृश्य को मैं कभी नहीं भूलूंगी।

पर्वत के दक्षिणी ढलान पर बांस और चीड़ तथा तरह-तरह के पेड़ उगते थे और उनमें पुजारियों ने सुन्दर पत्थर जड़कर यात्रियों के लिए चलने के रास्ते बना दिए थे। मुझे मन्दिरों की अनिर्वचनीय शान्ति बहुत अच्छी लगती थी। यद्यपि मैं वहां या कहीं भी देवताओं की पूजा न करती थी, पर मुझे उनके सम्मुख या शायद उन विलीन प्रार्थनाओं के सम्मुख, जो मूर्तियों के सामने निरन्तर जलती धूप की

सुगन्धि में अब भी उलझी थीं, नीरवता में बैठना अच्छा लगता था—जो आकांक्षा-पूर्ण मानवीय आशा की प्रतीक थी।

नानकिंग के चारों ओर के देहात का सौन्दर्य अनुपम था और सपाट उत्तरी प्राकृतिक दृश्य के बाद मुझे इसमें आनन्द मिलता था क्योंकि मैं उन लोगों में से हूं जिन्हें किसी भी शहर की सीमाएं असह्य होती हैं—और मैं वहां से भागने को मजबूर होती हूं, यद्यपि नानकिंग में दीवारों के भीतर भी आनन्ददायक बहुत कुछ था। उदाहरण के लिए, पुराने पोर्सलेन पगोडा का—जो प्राचीन चीन के आश्चर्यों में से था—स्थान बड़ा सुन्दर था और वह जिस अनेक रंगों वाले पर मुख्यतः हरे चमकीले इनेमलदार टाइलों का बना था उसके टुकड़े अब भी मिल जाते थे। पोर्सलेन पगोडा चीन के सब पगोडों में सबसे सुन्दर बताया जाता था। वह तीसरे मिंग सम्राट् युंग-लो ने अपनी सम्राज्ञी को धन्यवाद देने के रूप में पन्द्रहवीं शताब्दी के शुरू में बनवाया था। इसकी पहले तेरह मंज़िलें बनाने की योजना थी जिनमें से केवल नौ पूरी हुई और इन्हें बनाने में भी उन्नीस साल लगे थे। लगभग तीन सौ फुट ऊंचा और आधार पर लगभग सौ फुट व्यास का था और ऊपर को यह सुन्दरता से नोकदार होता गया था। रात को चमकीले रंगों वाली टाइलों पर एक सौ चालीस लैम्प जलते थे। जब दिन में इसपर सूर्य पड़ता था, तब यह सचमुच एक नज़ारा होता था। आम जनता में बेशक इस तरह के अद्भुत मकान के बारे में अटल विश्वास फैला हुआ था और इसमें अनेक प्रकार के चमत्कारी गुण बतलाए जाते थे। कहा जाता था कि लैम्प ऊपर के तेंतीस आकाशों को प्रकाशित करती है और आस-पास के सब लोगों को विनाश से बचाती है। इस पगोडे को १८५६ में ताई-पिंग क्रान्तिकारियों ने नष्ट कर दिया था क्योंकि उन्हें भय था कि इसकी अद्भुत भू-शकुनीय (पृथ्वी के रूपों या पृथ्वी पर बनी आकृतियों से होने वाले ज्ञान का शास्त्र-भूशकुन) शक्तियां उनके विरुद्ध कार्य करेंगी। इसलिए असल में मैं इसका जो भाग देख सकी, वह केवल आधार और जंगली घास में चमकते हुए टूटी टाइल के टुकड़े थे।

पोर्सलेन पगोडा के स्थान के पास एक छोटा पर सुन्दर मन्दिर था जो अपने कांसे के बड़े घण्टे के लिए प्रसिद्ध था। यह 'तीन बहनों का मन्दिर' था और एक बूढ़े पुजारी ने मुझे बताया था कि घण्टे की गूंजती प्रतिध्वनि तीन युवा लड़कियों के रक्त और मांस का परिणाम था। वे घंटा ढालने वाले की लड़कियां थीं जो पूरा यत्न करके भी धातु को शुद्ध ध्वनि देने के लिए प्रेरित न कर सका था। सारा

परिवार मुसीबत में फंस गया क्योंकि घण्टा बनाने का आदेश सम्राट् ने दिया था। एक रात को घण्टा ढालने वाले की तीनों लड़कियों को स्वप्न में एक देवी ने दर्शन दिए और उनसे कहा कि जब तुम्हारा पिता अगली बार घण्टे को फिर से ढालने के लिए पिघाले तब तुम यदि पिघली धातु में कूद पड़ो तो गहरी शुद्ध संगीत की ध्वनि निकलेगी। अपने पिता से बिना कुछ कहे उन्होंने अपना बलिदान करने का निश्चय कर लिया। और जब उसने घण्टे को गलाया तब वे उसके न जानते हुए ही कुण्ड में कूद पड़ीं। जब घण्टा फिर ढाला गया तब वह इससे निकलती हुई जादू-भरी आवाज़ सुनकर स्तब्ध रह गया! यह किस्सा दूसरे मन्दिरों के घण्टों के बारे में भी, और इतनी अधिक बार, मैंने सुना कि कभी कहीं अवश्य ऐसी निष्ठाशील पुत्रियां हुई होंगी, चाहे वे नानकिंग के इस 'तीन बहनों के मन्दिर' में न हुई हों।

और मुझे शहर की दीवार के बाहर के पद्मसरोवर की याद है, जहां मैंने इतने सुखी तीसरे पहर और सायंकाल बिताए हैं। वहां गर्मियों में लम्बे गर्म दिन के अन्त में मैं एक या दो सहेली के साथ जाती और कोई छोटी नाव किराए पर लेती, जिसमें हम जब तक चाहते, बैठे रहते; वहां मांझी हमें कमलों के बीच में बने जल-मार्गों पर घुमाता रहता। बड़े-बड़े गुलाबी कमल सरोवर के तट पर सूर्य छिपने से पहले तक खिले रहते थे और फिर वे धीरे-धीरे मुंद जाते थे। उनका सौरभ हवा में भीना-भीना महकता रहता था। शाम हो जाने पर मांझी बड़े-बड़े भारी पत्तों के नीचे हाथ बढ़ाता और हमारे लिए चुपचाप कमलनाल तोड़ देता क्योंकि कमलगट्टे का ठेका दिया होता था। ये गट्टे दावतों में बढ़िया भोजन बनाने में प्रयुक्त होते थे। चांदनी में हम कमलगट्टों को तोड़ते और उनमें छिपे बीजों को छीलते जो बादाम जितने बड़े होते थे। अगर हमें सचमुच भूख होती तो मांझी की बीवी हमारे लिए कोई चीज़ बना देती और खाते हुए हमें पानी पर गाने की ध्वनि सुनते रहते, जैसे कोई सुन्दर दरबारी गायिका, या शायद कोई 'कुसुम-कुमारी' बांसुरी बजाकर अपने प्रेमी को रिझा रही हो।

मुझे ढोल मीनार की भी याद है जो हमारे रहने के मकान के पास ही एक सुन्दर और प्राचीन वस्तु थी। ढोल मीनार एक लम्बी-चौड़ी वर्गाकार बिल्डिंग थी जिसपर लाल रंग किया हुआ था और जिसके ऊपर चौकोर कई श्रेणियों वाली मीनार थी। एक चौड़ी ऊंची सुरंग के कारण वह बिल्डिंग दरवाज़ा बन गई थी जिसमें से होकर नदी की ओर मुख्य सड़क जाती थी और उन छाया वाले स्थानों

में सर्दियों में भिखारी आश्रय लेते थे और गर्मियों में तरबूज़ बेचने वाले अपने तर-बूज़ ठण्डे रखने के लिए वहां बैठते थे।

पर पुराना नगर सचमुच सौन्दर्य से पूर्ण था और इतनी अधिक चीज़ें मुझे याद हैं कि बताते-बताते कभी खत्म न हों। जब मैंने देखा कि मेरी खिड़कियां गुलाबी पर्वत की ओर खुलती हैं, तब मैंने मन ही मन भगवान् का धन्यवाद किया और अपने लिए एक ऊपर का कमरा चुना जिससे मैं चहार-दीवारी के परली तरफ पास के सब्ज़ी के बगीचे और ईंट के खेत-मकानों का एक खेड़ा और एक बड़ा मछलियों का तालाब देख सकी। इनसे परे बाईं ओर विश्वविद्यालय की घुमाव-दार छतें थीं और उनसे परे एक पगोडा था, नगर की दीवार थी और आगे पर्वत था। शहर पेड़ों और बाग-बगीचों से भरा हुआ था। इसका कारण यह था कि शताब्दियों पहले शुरू में ही यह ध्यान रखकर इसे बनाया गया था कि इसकी दीवारों के अन्दर इतनी काफी जगह हो कि यदि शत्रु हमला करे तो दरवाज़े बन्द किए जा सकें और घेरे में पड़े लोग अन्दर की ज़मीन के सहारे अनिश्चित काल तक रह सकें।

मेरी अपनी चहारदीवारी में लम्बे-चौड़े लान से घिरा एक स्लेटी ईंट का मकान था, बासों का एक कुंज था और सब्ज़ी का एक बगीचा था, और नौकरों के कमरे मकान के पिछवाड़े एक कोने पर थे। मैं आनन्द से फूलों का बगीचा, और विशेषरूप से गुलाब का बगीचा, बनाने में लग गई क्योंकि सुन्दर चीनी टीरोज़ (गुलाब की एक किस्म) सूखे उत्तरी जलवायु में नहीं उगाए जा सके थे। माली उस जगह पहले से था। उसने अपने को न हटाने की प्रार्थना की जिसके लिए मैं तैयार थी और उसने मुझे उस स्थान पर घुमाकर उसकी कठिनाइयां बताईं। जब हम बांसों के कुंज में आए तब उसका चेहरा गम्भीर हो गया और उसने गहरी सांसें छोड़ीं।

'इन बांसों में एक बड़ी अजीब बात है, मां जी,' वह बोला।

'सचमुच', मैंने उत्सुकता से पूछा, 'क्या अजीब बात है ?'

'इनमें कभी अंकुर नहीं आते', उसने उदास भाव से उत्तर दिया। 'हर बसंत में मैं अंकुरों की प्रतीक्षा करता हूं, पर अफसोस कि कोई आता ही नहीं।'

'यह तो सचमुच अजीब बात है', मैंने उससे सहमत होते हुए कहा। 'मैं बहुत छुटपन से चीन में रही हूं और मैंने कभी नहीं सुना कि बसंत में बांस में अंकुर न

आए हों। जब अगली बार मौसम आएगा, तब हम बड़े सवेरे उठेंगे और तब शायद वे हमें मिलेंगे। मुझे बसंत में बांस के अंकुर खाना अच्छा लगता है।' उसकी आंख में चमक आई और उसने सिर हिलाया। इसके बाद हमें नये अंकुरों के बारे में कभी परेशानी नहीं हुई। हर बसंत में वे ज़रूर और खूब आते थे और रसोइया उनसे स्वादिष्ट सब्ज़ियां बनाता था। जहां तक माली की बात है वह अगले कई सालों तक वफादारी से मेरे पास रहा। जब अन्त में एक क्रान्तिकारी सेना ने सब गोरों को नगर से भगा दिया, तब वह नदारद हो गया; फिर वह मुझे कभी दिखाई नहीं दिया। मुझे बताया गया कि उसके साथ बहुत-सी कीमती चीज़ें भी गायब हो गई हैं। मेरा ख्याल है कि उसने बांस के अंकुरों की, जो वह बाद में न खा सका, क्षति-पूर्ति कर ली, पर मुझे वह अच्छा लगता था क्योंकि वह मुझे बहुत बार हंसाया करता था। बदमाश और चलता-पुर्ज़ा तो वह था ही और उसकी बीबी जो छोटी-सी परेशान औरत थी, मेरी सेवा-परायण मित्र थी। वह उससे बड़ी थी और हम दोनों चाहे जो करते, पर उसे अपनी मज़दूरी जुए में खोने से नहीं रोक पाते थे। इस प्रकार मैं उसे बच्चों को भूखों मरने से बचाने के लिए चुपचाप पैसे दिया करती थी। वे दीवार से बाहर एक झोंपड़ी में रहते थे क्योंकि वह अपने बहुत सारे बच्चों द्वारा फूलों की क्यारियों को कुचलने का झंझट नहीं मोल लेना चाहता था और वह स्वयं और उसकी पत्नी बड़े दुःखी थे कि उनके औसतन प्रति वर्ष एक से अधिक बच्चे हो जाते थे। सच्ची बात तो यह थी, जैसे कि उस बेचारी छोटी-सी धूल-मिट्टी से भरी मां ने मुझसे एक बार कहा था, 'भगवान् की बड़ी दया है कि हम स्त्रियों को एक बच्चा बनाने में नौ महीना अवश्य लगते हैं क्योंकि यदि इसमें केवल एक दिन लगता होता तो मेरे रोज़ एक नया बच्चा हुआ करता—ऐसा है वह मेरा आदमी।'

लम्बी गर्म ग्रीष्म ऋतुओं में सदा एक नया और रोगी शिशु जैसे-तैसे जीवित रखने के लिए होता था और मां का दूध कभी काफी नहीं होता था और हर सवेरे मैं फारमूले के हिसाब से बोतलें बनाती थी और मां उन्हें लेने आती थी। हर वर्ष मैं माली को समझाती और आत्मसंयम करने के लिए कहती और वह मेरी हर बात से सहमत होता था, पर नया शिशु सदा की तरह तत्परता से आ जाता था। अन्त में मैं केवल नज़र से ही अपनी ग्लानि प्रकट कर सकती थी, क्योंकि बोलने से कुछ लाभ नहीं था और एक दिन वह अन्दर आया और बोला कि उसकी एक

फरियाद है ।

'मेहरबानी करके, मां जी', उसने उदास भाव से कहा, 'मुझे शहर के दूसरी तरफ कोई नौकरी दिला दीजिए जिससे मैं घर न आ सकूं ।'

मैं इस कथन का अर्थ खूब अच्छी तरह जानती थी । 'इस बार क्या है ?' मैंने पूछा । 'लड़का या लड़की ?'

'दोनों ।' उसने फुसफुसाकर कहा ।

'जोड़ा !' मैं सांस रोककर बोली ।

उसने अपना दुःखी सिर चुपचाप हिलाया ।

वह एक और जगत् था जो परिचित होते हुए भी नया था । मेरे माता-पिता बहुत दूर नहीं थे । रेल से केवल दो घण्टे का सफर था और मैं उनसे मिलने जितनी बार जा सकती, उतनी बार जाती रहती थी । मेरी मां स्पष्टतः कमज़ोर होती जा रही थी, यद्यपि वह एक दीर्घजीवी परिवार की थी और अभी वृद्ध भी नहीं थी, अतः उसके लिए मेरी चिन्ता प्रतिदिन बढ़ती जाती थी ।

नानकिंग में रहने के पहले वर्ष में ही मेरे भी बच्चा हुआ । उसके बाद मैं उतनी अधिक आने-जाने के लिए स्वतन्त्र न रही जितनी पहले थी । मैंने इस बात की ओर ध्यान न दिया क्योंकि बच्चा होना मेरे लिए एक चमत्कार था और हम दोनों को जो बुरा भविष्य देखना था, उसका मुझे स्वप्न में भी ध्यान न था । ईश्वर की कृपा से मेरे लगभग चार वर्ष उसके बारे में सुखद अज्ञान में बीत गए । इसी वर्ष मेरी मां मर गई, वह भी एकाएक नहीं, बल्कि धीरे-धीरे और अनिच्छापूर्वक, और मुझे खुशी है कि विधाता ने मेरे लिए जो कुछ लिखा था, उसका उसे कभी भी पता नहीं चला । पर जन्म और मृत्यु के इस वर्ष की बात ज़रा बता दूं ।

यह १९२१ का साल था, और चीन में जो कुछ हो रहा था, उससे फिर मेरा पूरा सम्पर्क हो गया । जापानी सैनिकतावादियों ने महायुद्ध से लाभ उठाया था क्योंकि १९१५ में जापान ने गम्भीरता से चीन पर आधिपत्य जमाना आरम्भ कर दिया था । उधर पश्चिमी शक्तियां युद्ध में व्यस्त थीं । उस समय उसने वे बदनाम मांगें पेश कीं जिनसे चीन प्रायः एक उपनिवेश मात्र रह जाता, पर बाद में नौ देशों के वाशिंगटन सम्मेलन से १९२२ में शांतुंग प्रांत चीन को वापिस मिल गया और उसे फिर उसकी कुछ आज़ादी प्राप्त हुई, परन्तु यह शीघ्र ही स्पष्ट हो गया कि यदि चीन अपने-आपको किसी ढंग से संगठित न कर सका, और एक संयुक्त सरकार न

स्थापित कर सका तो अन्त में जापान उसे निगल जाएगा। एक के बाद दूसरा गैर-ज़िम्मेदार युद्धनायक जापान से धन उधार लेता जा रहा था और राष्ट्रीय सम्पदा के स्रोत ज़मानत के रूप में देता जा रहा था, जिससे ज़िम्मेदार चीनियों की चिन्ता बढ़ रही थी।

प्राय: उसी समय मैंने राष्ट्रीय विश्वविद्यालय में अंग्रेज़ी साहित्य पढ़ाना शुरू किया, पर मेरे छात्रों का पढ़ाई में ध्यान न लगता था क्योंकि जापानी आक्रमण-कारियों पर, और उसी प्रकार अपने लापरवाह और मूर्ख युद्ध-नायकों पर वे गुस्से से भरे रहते थे। नानकिंग में भी हम एक युद्ध-नायक के आधिपत्य में रहते थे जो उत्तर वाले युद्ध-नायकों से कुछ ही अच्छा था; और उसमें अपने देश से गद्दारी करने का जो उत्साह नहीं था, उसका कारण देश-भक्ति नहीं, अफीम थी। यह एक अजीब दोहरे ढंग का जीवन था जिससे मुझे आज इस समय अमरीका में रहने के ढंग की याद आ जाती है। राष्ट्रपति और उनका मन्त्रिमण्डल तो हमसे कहते हैं कि किसी भी समय हमारा विनाश कर दिया जा सकता है और हम इस चेतावनी को उचित भी मानते हैं, फिर भी हम अपना जीवन उस तरह बिताते जाते हैं और अपने दिनों का ऐसा ठीक-ठीक ब्यौरा आयोजित करते जाते हैं जैसे हमारे लिए कोई खतरा नहीं है। हम जानते हैं, हम महसूस करते हैं कि हम उदासीन नहीं हैं पर हमारे ज़माने की भीषण सम्भावना इतनी बड़ी है कि हम उसे हर समय नहीं सह सकते। हम इस प्रकार सोचकर व्यवहार नहीं कर सकते कि जैसे बम गिरने ही वाला है क्योंकि तब बिल्कुल जीना ही असम्भव हो जाएगा।

यही हाल उन दिनों नानकिंग में था, जब हर किसीको (और विशेष रूप से तरुण चीनी बुद्धिजीवियों को) यह स्पष्ट पता था कि कैसी भयंकर घटनाएं होने-वाली हैं, पर फिर भी हम अपने प्रतिदिन के कार्य में यथापूर्व लगे रहते थे। ऋतुएं बदलती थीं, मेरा बगीचा खिल उठता था, बाज़ार बढ़िया खाने-पीने की वस्तुओं और फूलों से भरे रहते और गाहकों की भीड़ लगी रहती। हम अपना कार्य साव-धानी से और अच्छी तरह करते थे। पिकनिक और साप्ताहिक छुट्टियों में सैर के लिए हम पहाड़ों पर जाते थे। शहर सुखी मालूम होता था। लोग सन्तुष्ट और समृद्ध थे। हमारा युद्ध-नायक अत्याचारी न था। पर फिर भी हम सब जानते थे कि किसी भी क्षण यह हालत खत्म हो सकती है और शायद खत्म होकर रहेगी क्योंकि कोई नहीं जानता था कि भविष्य को रोकने के लिए क्या किया जाए और इतने में वह

अनिवार्य हो गया।

मेरे इस समय के मित्र उन मित्रों से बिल्कुल भिन्न थे जो मेरे उत्तरी नगर में हुआ करते थे। ये मेरे पड़ोसी थे, तरुण दम्पति थे, चीनी और अमरीकन दोनों थे, जिनकी शिक्षा और दृष्टिकोण अत्याधुनिक थे, और मेरे विद्यार्थी थे जो सारे चीन से आए हुए थे। कुछ विद्यार्थी कोरिया के भी थे और उनमें मुझे जापान के प्रति सबसे गहरी घृणा के बीज दिखाई दिए थे। नौजवान कोरियन उन कोरियन परिवारों के पुत्र और पुत्रियां थे जो अपने देश में जापानी शासन सहन न कर सके थे। इसलिए देश छोड़ अपने बच्चों के पालन-पोषण के लिए कुछ लोग चीन, कुछ लोग मंचूरिया और कुछ रूस भी चले गए थे। अपने माता-पिता से इन तरुण कोरियनों ने विद्रोह की शिक्षा ली थी। इस प्रकार मैंने पहले उन कारणों को समझना आरम्भ किया जिनका सीधा और अनिवार्य परिणाम हुआ है आज का कोरिया।

मेरी अगली दशाब्दी की स्मृति में तीन तारीखें मुख्य रूप से जमी हुई हैं। १९२१ के अक्तूबर में अन्तिम लम्बी बीमारी के बाद मेरी मां मर गई। देखने से वह संग्रहणी से मुक्त हो गई लगती थी, पर वास्तव में यह कभी उससे मुक्त न हुई थी। मेरा ख्याल है कि उसकी आंतों की श्लेष्मिक झिल्लियों पर घाव हो गए थे और वह किसी भी खुराक में से अपना स्वास्थ्य कायम रख सकने लायक पोषण प्राप्त नहीं कर पाती थी। मैं उसे अमरीका ले जाना चाहती थी, पर उसे पूरा विश्वास था कि असाध्य समुद्री रोग से, जो किसी इलाज से हल्का नहीं हो सकता था, वह नहीं बच सकेगी, इसलिए वह महासागर को पार करने को तैयार न थी। इस यकीन से भी बढ़कर, मेरा ख्याल है, वह यह महसूस करती थी कि अब तक उसने जैसा जीवन बिताया है, उससे भिन्न जीवन नये सिरे से बिताने का समय अब न था। वह अपने देश में भी नये सिरे से जीवन आरम्भ नहीं कर सकती थी इस प्रकार उसने चुपचाप मौत के रास्ते पर पांव रख दिया, यद्यपि मरने में कई मास लगे, पर इसका अन्त शीघ्र ही स्पष्ट और अनिवार्य हो गया। वह मरना न चाहती थी, यह भी साफ था; पर इसका उपाय क्या था? मैं प्रायः लगातार उसके पास रहती थी, पर मुझसे यह बात छिपी न रही कि उसका अन्त अनिवार्य है और मैंने उस संसार का सामना करने की कोशिश की जिसमें मुझे उसका चेहरा नहीं दिखाई देगा। मैं अपना अलग जीवन बिताना सीख चुकी थी, पर फिर भी उसकी जड़ें मेरे-उसके साथ गहरे सम्बन्धों में थीं। यह सम्बन्ध कभी-कभी बड़ा परेशान करने वाला

हो जाता था क्योंकि मैं उसे इतना अधिक प्यार करती थी और उसे समझती थी और अपने में मौजूद कुछ गुणों को उससे आया हुआ देखती थी। ऐसे भी क्षण आते थे जब विदाई अनिवार्य होने पर मैं उसके खत्म हो जाने की कामना करती थी। यह जवानी की क्रूरता है और हर किसीने कभी न कभी यह अपराध किया है। आज अपने बच्चों को देखकर मैं सोचती हूं कि मुझे न तो बहुत अधिक प्यार करना चाहिए और न प्यारा बनना चाहिए। तभी वे मेरे जीवनकाल में अपनी आज़ादी का मज़ा ले सकते हैं और मेरी मौत से पहले उसकी कामना करने से दूर रह सकते हैं, पर बच्चों की वृद्धि के लिए आवश्यक प्रेम अवश्य रहना चाहिए।

जब एक दिन अक्तूबर के धूमिल तीसरे पहर नर्स ने हमसे—मेरे पिता, मेरी बहिन और मुझसे—कहा कि मेरी मां मर रही है, तब अकेली मुझे ही उसके निकट जाने का हौसला न हुआ। यदि वह होश में होती तो मैं वहां जाने के लिए अपने-आपको मजबूर करती, बल्कि वहां जाकर उसका अन्तिम सचेत चेहरा देखने और उसके अन्तिम शब्द सुनने की इच्छा होती। पर वह बेहोश थी और मेरे जाने या न जाने का उसे कभी पता न चलना था, इसलिए मैंने उन्हींको उसकी मृत्युशय्या पर जाने दिया, मैं बाहर हाल में खड़ी रही और आंसुओं से धुंधली दृष्टि से खिड़की के बाहर ताकती रही। जब मुझे उसके मरने की बात याद आती है, तब आज भी मुझे खिड़की के बाहर का दृश्य दिखाई देता है। बांस खिड़की के नीचे झूम रहे थे, परली ओर घाटी थी, खेतों में बने हुए छोटे-छोटे मकान और भूरे खेत थे जिनपर अपनी किसानों वाली नीली पोशाकों में स्त्रियां और बच्चे अनाज बटोरने के बाद धीरे-धीरे उन्हें पार कर रहे थे; उनके परे फिर दूर पर्वत थे। वे बड़े लम्बे क्षण थे जिनमें मुझे अपना शरीर उसके शरीर से फटकर अलग होता हुआ मालूम हुआ। मेरी उसके पास जाने की बड़ी इच्छा थी, पर मुझसे जाया न गया। अन्त में मेरे पिता ने दरवाज़ा खोला और एक अजीब शान्त आवाज़ में कहा कि वह खत्म हो गई और फिर वे थके चेहरे से परली ओर जाकर सीढ़ियों से अपने पढ़ने के कमरे में पहुंच गए और कुछ मिनट बाद मेरी बहन आई पर इससे आगे मैं याद नहीं कर सकती।

अगले दिन एक पड़ौसी मिशनरी ने मुझसे कहा कि अन्दर जाकर मुर्दा की पेटी का ढकना बन्द होने से पहले मां के दर्शन कर लो।

'वह सुन्दर लगती है।' पड़ौसी ने स्निग्ध वाणी में कहा, 'यदि तुम अपनी मां

के अन्तिम दर्शन न करोगी तो तुम्हें अफसोस रहेगा।'

फिर भी मैं अनिच्छा से अन्दर गई और मौन-सी शक्ल पर मैंने नज़र डाली जिसे मैं मुश्किल से पहचान सकी। तुरन्त मैं वहां से भाग आई। आज इतने वर्ष बीत जाने के बाद भी मुझे यही अनुभव होता है कि यदि वह मोम की गुड़िया जो कोई अजनबी थी, मुझे याद न करनी पड़ती तो अच्छा था।

अन्तिम क्रिया अगले दिन थी। धुंधला शरद् ऋतु का दिन था। हल्की-हल्की बूंदें पड़ रही थीं और छोटा-सा जलूस पहाड़ी से नीचे और घाटी के पार गोरे लोगों के दीवार से घिरे छोटे-से कब्रिस्तान में आ गया। ओह, विदेशी भूमियों पर गोरे लोगों के वे दुःखदायी कब्रिस्तान! हम, मेरी मां और मैं, इन्हीं रास्तों पर चलते हुए वहां वर्षों पहले दफनाए गए अपने मृत शिशु भाई के लिए फूल लाया करते थे और कब्रों पर खुदे हुए छन्द मुझे ज़बानी याद थे। पुरानी से पुरानी कब्र सौ साल से भी पहले की थी और उसकी हरी खाई के नीचे तीन गोरे नाविकों की मिट्टी दबी हुई थी, जिनकी राष्ट्रीयता का कुछ पता नहीं। उनकी इकट्ठी कब्र पर खुदा हुआ छन्द मुझे आज भी याद है:

> तू जो भी है, ए राही,
> जैसे तू आज है, वैसे ही मैं था कभी,
> जैसे मैं आज हूं, वैसे तुझे होना है,
> इसलिए तैयार हो मेरे पीछे आने को।

पर मेरी मां जिन चीज़ों को सदा देखा करती थी वे शिशुओं और छोटे बच्चों की बहुत-सी कब्रें थीं, और प्रसव के समय मरी बहुत-सी स्त्रियों की कब्रें थीं। मुझे याद है कि वह एक प्रसिद्ध अंग्रेज़ मिशनरी की कब्र पर के लम्बे शैफ्ट की ओर देखने से इन्कार कर दिया करती थी जो एक सुन्दर प्लाट में दफनाया गया था और जिसके चारों ओर उसकी क्रमशः विवाहित तीन पत्नियों और उनके कई बच्चों की कब्रें थीं।

'बुड्ढा पापी!' उसने रोष से कहा था।

पर यहीं हम उसे सुलाने लाए, और मुझे यही खुशी थी कि कम से कम उसकी कब्र एक खाली कोने में खुदी थी जहां सूर्य नीचा होकर चमकता था और जंगली गुलाबी वायलेट फूल ऊंची ईंट की दीवार की दरारों में लगे थे।

अन्यत्र मैंने उस दिन का वर्णन किया है, और उसे मैं दुबारा यहां नहीं लिख

सकती यद्यपि वह आज भी उतना अजीब और स्पष्ट है जैसे मैं अभी खाली मकान में लौटी हूं।

जब मैं नानकिंग लौटी थी और वहां अपने नये घर में आई थी, तब मुझे अपनी मां को जीवित रखने की आवश्यकता महसूस हुई थी और मैंने उसके बारे में लिखना शुरू किया था। मैंने सोचा और कहा था कि यह मेरे अपने बच्चों के लिए है ताकि उनके सामने उसका एक चित्र प्रस्तुत हो सके क्योंकि वे इतने छोटे थे कि उन्हें उसके जीवित रहने के पहले का रूप याद न रह सकता था। मैं नहीं जानती थी कि यह चित्र, जो मेरी ठीक-ठीक स्मृति से सावधानी से बनाया गया था, मेरी पहली पुस्तक के रूप में होगा। वर्षों बाद तक मैंने कभी इसे पुस्तक के रूप में नहीं सोचा। यह मेरे बच्चों के लिए था और जब मैंने यह लिखा था तब उसे एक पेटी में रखकर सील बन्द कर दिया और उसे एक ऊंची दीवार में बनी अलमारियों में यह सोचकर रख दिया कि जब ये बच्चे काफी बड़े हो जाएंगे तब इसे अपने-आप पढ़ेंगे। मुझे स्वप्न में भी यह ध्यान नहीं था क्योंकि मैंने इसे इतनी हिफाज़त से ऊपर रख दिया है, इसलिए यह कुछ वर्षों बाद हमारे सिरों पर आई क्रान्ति से बच जाएगा और हुआ यही कि प्रायः एकमात्र यही सम्पत्ति शेष रही। अन्त में यह मेरे साथ अमरीका गई और मैंने इसे अपने फार्म-हाउस में भविष्य के लिए रख दिया क्योंकि तब तक मैं जान चुकी थी कि मेरा सबसे बड़ा बच्चा इसे कभी नहीं पढ़ सकेगा और उसकी कहानी मैंने एक छोटी-सी पुस्तक 'दि चाइल्ड हू नेवर ग्रियु' में लिखी है। जब एक पारिवारिक आवश्यकता पैदा हुई, यह और कुछ वर्ष बाद की बात है, तब मुझे अपनी मां का ध्यान आया और मैंने सोचा कि कैसे वह सहायता करने के लिए उत्सुक होती और जैसे उसने ऐसा कहा हो, मुझे उसके शब्द-चित्र की याद आई और मैंने उसे उस प्रयोजन के लिए समर्पित कर दिया और यह 'दि एग्ज़ाइल' नाम से पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुआ। यह मेरी प्रकाशित पुस्तकों में से सातवीं थी, पर असल में लिखी यह सबसे पहले गई थी।

जब यह लिखी जा चुकी, तब मैंने देखा कि मैं लिखना जारी रखना चाहती हूं और अपनी मां की मृत्यु के बाद की गर्मियों में, जब मै अपनी बहन और बच्चे के साथ कुलिंग में थी, मुझे स्पष्ट रूप से याद है कि अगस्त में एक दिन तीसरे पहर मैंने एकाएक कहा, 'आज ही मैं लिखना शुरू करूंगी। अन्त में मैं इसके लिए तैयार हो गई हूं।'

यद्यपि यह अर्ध-उष्णदेशीय दुपहरी नींद का पवित्र समय था—पर मैं यह समय सदा पढ़ने में लगाती थी—मैं अपनी नीली चीनी रेशम की पोशाक पहने जैसी थी वैसी ही बैठ गई और मैं नहीं कह सकती कि मुझे ऐसी मूर्खता की छोटी-छोटी बातें क्यों याद हैं, पर मैं जिस चीज़ के बारे में सोचती हूं, उसके बारे में सदा इसी तरह देखती हूं और मैंने एक छोटा-सा निबन्ध लिखा, जिसका क्षेत्र छोटा होते हुए भी, उसमें मेरे उस समय के जगत् के कुछ अनुभव प्रकट किए गए थे। मैंने इसे यथाशक्ति अच्छे से अच्छा टाइप किया पर फिर भी वह खराब था, क्योंकि मैं कभी मशीन की अभ्यस्त नहीं हो सकी। मैंने वह 'ऐटलान्टिक मन्थली' मासिक पत्रिका को भेज दिया, जो मैं समझती हूं, नये लेखक का प्रायः लक्ष्य होता। ऐसा करने के बाद मुझे बड़े आनन्द का अनुभव हुआ। अन्त में मैंने वह कार्य आरम्भ कर दिया था जो मैं सदा जानती थी कि मैं मानवीय अनुभव से अधिक सम्पन्न होते ही करूंगी। निबन्ध स्वीकृत और प्रकाशित होने के बाद मुझे 'फोरम' पत्रिका का एक पत्र मिला, जिसमें लेख का अनुरोध किया गया था।

इनमें से कोई भी निबन्ध मेरी किसी पुस्तक में दुबारा नहीं छपा इसलिए मैं यहां उन्हें न केवल रिकार्ड के हिस्से के रूप में, बल्कि उन दिनों के चीन के चित्र के रूप में ही पेश कर रही हूं। यह १९२२ की रचना है और उस समय मैं तीस वर्ष की थी। यह सचमुच बहुत महत्त्वपूर्ण समय था।

निबन्ध ठीक इस रूप में 'ऐटलान्टिक' में निकला था :

चीन में भी

दुनिया के बिलकुल दूसरी ओर अपनी आरामकुर्सी में बैठकर भी अनेक सामयिक पत्र-पत्रिकाओं के ज़रिए अमरीका और इंगलैंड के नवयुवकों की स्थिति देखकर काफी चिन्ता पैदा होती है। विशेष रूप से मुझ जैसे किसी व्यक्ति को और भी गहरी चिन्ता होती है, जिसके दिन सुदूरपूर्व की, समुद्र से दूर वाली जगह रहने वाले कट्टर रूढ़िवादी माता-पिताओं और दादा-दादियों के बीच काफी प्रसन्नता से कटे हैं : उस सुदूरपूर्व में जहां किसी नवयुवती पर किसी पुरुष की खुली नज़र पड़ना कलंक की बात है और ऐसी युवती को तुरन्त बन्द दरवाज़ों के पीछे और भी कसकर जकड़ दिया जाता है !

छह इंच फर्श पर नाचना, घुटनों और गर्दनों तथा पेटिंग पार्टियों[1] की बात-चीत, चलचित्रों की हैरानियां और तलाक का सवाल—ये सब चीज़ें मेरे इस ठण्डे खुले बरामदे के शान्त कोने से बहुत दूर की बातें हैं। मैं झुकी हुई लाजवंती और बांसों के छायादार परदे में से चीन के बहुत भीतर की ओर के एक छोटे कस्बे की नीरव सड़क को ओर देख रही हूं। ऊंची-ऊंची ईंट की दीवारों के कारण पड़ौस के गम्भीर बड़े-बड़े मकानों की ढालदार छतें प्रायः छिप रही हैं। इसके अन्दर रहने वाली किसी अल्हड़ युवती की मुझे उस समय कुछ झलक मिल पाती है, जब परदों वाली पालकी हरएक विशालकाय नक्काशीदार द्वार के चारों ओर बनी हुई दीवार के पीछे रुकती है। अगर आदमी कनखियों से काफी ध्यान से देखे तो एक दुबली-पतली आकृति दिखाई देगी, जिसने आड़ू के रंग की ज़रीदार रेशम की पोशाक और छोटी-छोटी कढ़ाईदार जूतियां पहनी हैं और जिसके छोटे मोतियों से सजाए चिकने चमकीले काले बाल हैं। वह शर्माती हुई दरवाज़े से अन्दर सरक जाती है। नाज़ुक, लम्बे नाखूनों वाली उंगलियां, गहरे गुलाबी रंग से रंगी साटन जैसा चिकना रंगा हुआ गाल और काली झुकी आंखें—बस क्षण भर और फिर परदे खिंच गए और कहार सड़क पर कदम बढ़ाते हुए चले गए।

कभी-कभी कोई भारी विधवा गृहस्वामिनी होती है जो बेर के रंग का साटन पहने हुए है। गर्वपूर्ण मद से बोझिल पलकें, अफीम के धब्बों वाले दांत और एक लम्बी बांस की नली, जिसका सिरा चांदी जड़ा है, जिसे वह छड़ी के रूप में प्रयोग करती है। वह दो दासियों पर पूरा बोझ डालकर झुकी है और उसे सहारा देकर पालकी में बैठाया जाता है। अगर उसकी आंखें किसी मेरे जैसे ताकने वाले पर पड़ जाती हैं तो उसकी दृष्टि दर्प से दूसरी ओर मुड़ जाती है: देखो तो ये विदेशी बदमाश! लाल मणि की दमक दीखती है और परदे फिर खींच दिए जाते हैं और कहार फिर कदम बढ़ाते हुए चल पड़ते हैं—यद्यपि इस भारी बोझ को लेकर, खुशी-खुशी नहीं।

इस संकरी टूटी-फूटी गली में वे भद्दे दृश्य कभी दिखाई नहीं देते जिनकी चर्चा मैं आधुनिक पत्रों में पढ़ती हूं। फिर भी सारे दिन लोग गुज़रते रहते हैं। बड़े सवेरे नीली गाड़ियों वाले किसान—और कभी-कभी उनकी हृष्ट-पुष्ट, नंगे-पांव

---

१. अमरीका में युवक लड़के-लड़कियों के एक-दूसरे को पकड़ने के खेल

बीवियां—या तो अपनी बहंगियों पर बड़ी-बड़ी गोल टोकरियों में ताज़ी अभी की तोड़ी सब्ज़ियां या ईंधन के लिए सूखी घास के बड़े-बड़े गट्ठर लेकर शहर आते। छोटे-छोटे चुस्त पैरों वाले खच्चरों के काफले अपनी पीठ पर दोनों ओर लटकाए हुए आटे या चावल के बड़े-बड़े गोल थैले लिए हुए छोटी आयु में अधिक बोझ उठाने से झुके हुए गुज़र जाते हैं। कभी-कभी उनके नथुने चीरे हुए होते हैं जिससे वे अपने बहुत अधिक बोझ से दबकर जल्दी-जल्दी सांस ले सकें।

ठेलों की तीखी खरखरी आवाज़ आती रहती; आवाज़ जितनी ऊंची हो उतनी ही अच्छी है क्योंकि हर ठेले वाला अपने ठेले की खरखराहट सौभाग्य का चिह्न मानकर परिश्रम से बढ़ाता है। वे पुष्ट मांसपेशियों वाले ताकतवर आदमी हैं, जो कमर तक नंगे हैं और सुबह की धूप की गर्मी से उनकी पीठ से पसीना टपक रहा है और उनका रंग बादामी लग रहा है। उनके कंधों पर लम्बाई की ओर को नीला सूती रस्सा पड़ा है। कभी-कभी इस ठेले में लदी वस्तु कोई भारी-भरकम देहाती माता होती है, जो दूकान पर या किसी रिश्तेदार से मिलने शहर में आई है। पहिये के एक ओर वह बैठी है और दूसरी तरफ उसका बिस्तर, दो-एक मुर्गे, लहसन की गठरी, केक की टोकरी, बहुत बड़ी आयल-पेपर की छतरी और एक या दो बच्चा है। कभी-कभी कोई भयंकर चीख हवा को फाड़ती चली जाती है और यह पहिये के दोनों ओर एक-एक मोटे जवान सूअर को कसकर बांधे ले जाने वाला ठेला है। सूअर की टांगें तेज़ी से हिल रही हैं और वह बेहद बेचैनी तथा ज़ुल्म से चीख रहा है। यह समझिए कि ठेला कोई भी चीज़ ढोकर ले जा सकता है—दुबले-पतले पर्यटक मिशनरी और उसके छह सप्ताह के भोजन, बिस्तर और प्रचार-पुस्तिकाओं से लेकर कूं-कूं करती मुर्गियों या शायद हंसनियों की ऊंची टोकरी तक जिसके दूर-दूर लगे ताने-बाने में से वे अपनी लम्बी गर्दनें निकाले हुए गुज़रते हुए दृश्य को उत्तेजित होकर देख रही हैं।

मुस्कराते हुए पोपले मुंह वाले बुड्ढे आदमी झुर्रियों वाले बादामी चेहरे लिए हुए और पतली सफेद चोटियां बहुत मोटे काले चुटीले के साथ गूंथकर लड़खड़ाते हुए मेरी सड़क से चले जाते हैं। वे अपना समय एक-दूसरे से चिन्ता-सहित यह पूछकर गुज़ारते हैं कि पिछली बार कब भोजन किया था—बार-बार अकाल से पीड़ित होने वाले प्रदेश की यह अजीब हालत हो गई है।

सब जगह मोटे-ताज़े बादामी रंग के बच्चे मिट्टी में गिरते-पड़ते घूम रहे हैं।

उनका अधिकतर शरीर नंगा है और हल्की धूप में चमक रहा है। वे टूटी सड़क के ठीकरों और नालियों में खोदा-खादी कर रहे हैं। जब यह ध्यान आता है कि वे अपनी मैली उंगलियों और धूल-भरे चेहरे से कितनी और कैसी मिट्टी खा लेते हैं, और वहुत लम्बी-लम्बी ककड़ी और बड़े-बड़े शलजम और जल्दी-जल्दी निगले हुए छिलके और दूसरी चीजें कितनी और कैसी खा लेते हैं, तब यह लगता है कि वे मर जाएंगे, पर देखने से लगता है कि वे और मोटे होते जाते हैं। यद्यपि मैंने कई बार किसीको नम्बर दो के नाम से पुकारा है, पर उसने हंसकर यह उत्तर दिया है कि मैं नम्बर तीन हूं। नम्बर दो तो पिछली गर्मियों में ज़्यादा तरबूज़ खाने से मर गया। पर जहां एक जाता है, वहां उसका स्थान भरने के लिए दो और आ जाते हैं।

वे धूल-मिट्टी में मिल-जुलकर खेलते-फिरते हैं,पर कुछ ही समय। थोड़े ही वर्षों में लड़के लम्बे चोगे पहनकर और लड़कियां कढ़े हुए कोट पहनकर तथा अपने लज्जालु चेहरों पर बालों की चिकनी काली चोटियां बनाए हुए सामने आती हैं। वे अपने एकसाथ खेलने की बात भूल गए मालूम होते हैं, और पूर्ण सुसंस्कृतों की तरह एक-दूसरे की ओर से उदासीन हो जाते हैं। छोटी लड़कियां विनयशील दीखती हुई तब तक के लिए अन्तर्वासिनी हो जाती हैं जब तक कि बहुत बड़ी लाल विवाह का पालकियों में किसी सास के शासन में नहीं जातीं, और लड़के अपने परिवार के साधनों और सामाजिक स्थिति के अनुसार स्कूल या कोई काम सीखने की ओर मुड़ जाते हैं।

यह कितना सौम्य और सुव्यवस्थित जीवन-क्रम है! फिर भी मैं एक तरह की परिवर्तनों की अन्तर्धारा से कुछ परेशान हो जाती हूं, जैसे उदाहरण के लिए, कल जब छोटी-सी ह्सू पाओ-यिंग मेरे घर मिलने आई। मैं उसे तब से जानती हूं जब वह ज़रा-सी गुड़िया थी और उसका मोटा गम्भीर आटे के गोले-सा चेहरा था, जिससे नाक प्रायः नदारद थी। उस समय उसकी त्यौहार के दिन की पोशाक थी—एक बहुत छोटा लाल सूती पाजामा और उसी रंग का एक छोटा-साकोट, असम्भाव्य शेरों की शकल की जूतियां और कढ़े हुए भटूरे जैसी टोपी और उसके नीचे से निकलती हुई लाल डोरे से बांधी हुई एक छोटी-सी चुटिया। उसके माता-पिता पुराने रूढ़िवादी विचारों के हैं जो लड़की के लिए बहुत किताबी ज्ञान ज़रूरी नहीं समझते, वल्कि उनकी नज़र अपनी बच्ची के लिए अच्छे पति और सास ढूंढ़ने पर है। उसकी उससे बड़ी विवाहित बहन ने, जिसके विचार पांच साल

शांगहाई रहने से नये हो गए हैं, उनसे कह-सुनकर पाश्रो-यिंग को पास के नगर में बोर्डिंग स्कूल में भर्ती कराया था। जब पिछली शरद् ऋतु में बच्ची आखिरी बार स्कूल गई, तब वह विनयशील, लज्जालु और मधुर आकृति वाली बच्ची थी जो घर छोड़ने के विचार से कुछ डरी हुई थी। उसके चेहरे पर धैर्य की वह आभा रहती थी जो उन सब छोटी चीनी लड़कियों पर रहती है जो पांव-बंधाई सहती हैं। मैंने उसे कभी अपने मुंह से कुछ कहते नहीं सुना और मेरे सामने वह सदा विशेष रूप से आदरपूर्ण और सम्भ्रमयुक्त रहती थी—छोटों का यह रूप मुझे सदा बड़ा अच्छा लगता है।

कल वह बिल्कुल नये फैशन का बढ़िया नीला साटन पहनकर आई; उसके पांव खुले हुए थे और वह काले चमड़े के खटखट करते हुए चौकोर विदेशी जूते पहने थी। स्पष्ट दीख रहा था कि उसे उन्हें पहनकर बड़ा अभिमान अनुभव हो रहा था। वे किसी बड़े शैतान छोटे अमरीकन लड़के के जूतों जैसे लगते थे और उनकी एड़ियों पर लोहे की कीलें लगी थीं। वे उसकी सुन्दर ज़रीदार लहंगों से बाहर निकले हुए बड़े अजीब लग रहे थे।

प्रणाम-आशीर्वाद के बाद और चाय की एक चुस्की लेने के बाद मैंने उसके बिल्कुल नये ढंग के जूतों की बात छेड़ी क्योंकि स्पष्टतः उसे बार-बार अपने पैरों का ही ध्यान था।

'यह बिल्कुल नया फैशन है,' उसने बड़े सन्तोष से उत्तर दिया। 'आपको तो पता है कि पीकिंग और शांगहाई जैसे बड़े नगरों में सचमुच फैशनेबल लड़कियां अब अपने पांव नहीं बांधतीं। बोर्डिंग स्कूल की लड़कियां भी पांव नहीं बांधतीं, इसलिए जब मैं घर आई तब तीन दिन तक बिना खाए रोती रही। तब उन्होंने चुप करने के लिए मेरे पांव खोल दिए जिससे मैं ये सुन्दर जूते पहन सकूं। मेरे पांव अब भी बहुत छोटे हैं पर उंगलियों से आगे में रुई भर लेती हूं।'

यह सचमुच ही परिवर्तन था। मैं स्तब्ध होकर कुर्सी से पीठ लगाए बैठ गई। सामने वह बैठी थी, छरहरी, सुन्दर, आत्म-संतुष्ट, पर अब वह छोटेपन का भाव नहीं था और पूजनीयता का तो बिल्कुल ही नहीं था। मुझे ज़रा बुरा-सा अनुभव हुआ और तीसरे पहर की बातचीत में मैंने कई दूसरी बातों पर ध्यान दिया: अपनी सम्मान्नित माता के दुनियावी अनुभव के अभाव पर कुछ बड़प्पन-भरी मुस्कराहट—वर्तमान पीढ़ी इसे दुनियावी अनुभव का अभाव ही समझती है; यह प्रबल इच्छा

कि उसका आदरणीय पिता बेढंगे पुराने फैशन के हुक्के की जगह औरों की तरह सिगरेट पिए; जिस शहर में वह उसमें साल स्कूल में रही थी उसमें स्त्रियों के अधिकार का दावा करने वालों की एक सभा में शामिल होने का संकेत। हे भगवान्! एक ही साल पहले की तो बात है! यही पाओ-यिंग एक शर्मीली छोटी-सी लड़की थी जिसकी पलकें सदा नीचे रहती थीं और जब तक जवाब देने के लिए आग्रह न किया जाए तब तक मुंह सिला ही रहता था और जवाब भी देती तो कितनी हल्की आवाज़ में! और अब यह लड़की स्कूल और सिगरेटों और दुनिया भर की खुराफात की बात कर रही थी।

'तुम यह तो बताओ कि तुम स्त्री-मताधिकार के बारे में क्या जानती हो?' मैंने बड़े विनोद से कहा।

'ओह, बहुत कुछ, बहन जी,' वह उत्सुकता से बोली। 'मैं जानती हूं कि इस देश में ही स्त्रियां लाचार हैं; दूसरे देशों में तो मैंने सुना है, वे जो चाहती हैं, करती हैं! वे घूमने बाहर जा सकती हैं और खेल खेल सकती हैं और अपने पांव कभी नहीं बांधतीं। यह भी कहा जाता है कि वे पुरुषों के साथ घूमती हैं'—यहां वह ज़रा शर्माई। 'पर इसका तो मैं विश्वास नहीं करती, यद्यपि इस साल, बहन जी, हमारे यहां उपाधि-वितरण के समय पुरुष लोग आए थे—पर केवल बुड्ढे पुरुष थे। मैंने सबकी आंख बचाकर देखा और वे सब बहुत बुड्ढे थे। स्कूल में कुछ लड़कियां बड़ी खराब हैं, और वे कहती हैं कि अगर हमें अपने पतियों को देखने का मौका नहीं दिया गया तो हम शादी ही नहीं करेंगी, पर यह तो बड़ी धृष्टता की बात है!' उसने सती-साध्वी की तरह अपना सिर हिलाया। फिर पलकें उठाकर उसने मेरी ओर देखा और लज्जा से पूछा:

'आपके संभ्रान्त देश में तो लड़कियां नौजवानों के साथ घूमती और बोलती नहीं होंगी?'

इसपर मैंने अपना गला साफ किया और क्षण भर हिचकिचाई। मुझे उस पत्रिका का ध्यान आया जो मैं उस समय पढ़ रही थी।

'बात यह है, मुन्नी,' मैंने कहा, 'कि ज़माना और देश बदलते रहते हैं, और मैं बहुत वर्षों से वहां नहीं गई।'

'मैं यह बात जानना चाहती हूं,' उसने बड़ी चाह से कहा। 'किसीको बहुत साहस तो नहीं करना चाहिए, पर सचमुच माता-पिता ऐसी चीज़ के बारे में, जो

उनकी' अपनी देखी चीज से जरा भी भिन्न हो, बडा मूर्खतापूर्ण रवैया रखते है। मुझे निश्चय है कि कोई किसी बात को इसीलिए तो गलत नही कह सकता कि वह उसने पहले नही की।'

और आधुनिक चीनी स्त्रीत्व का यह नवाकुर बहुत रुष्ट और चोट खाया मालूम होता था जब कि उसने सारी चीनी परम्परा के विरुद्ध यह अश्रद्धा प्रकट की। बलिहारी है तेरी, ससार-भर के नित्य और अपरिवर्तनशील यौवन!

उसके चले जाने के बाद मै अपनी पुरानी आरामकुर्सी पर बैठ गई और शान्त टूटी-फूटी सडक की ओर देखती हुई उसके बारे मे—और उन सबके बारे मे, जिनकी प्रतिनिधि वह थी—विचार करने लगी। उसकी दादी और मा मेरी सहेलिया थी— अच्छे कुल की सुसस्कृत महिलाए थी और अपने जमाने मे सुशिक्षित गिनी जाती थी। वे बडी सुन्दर कढाई और सिलाई करती थी और मिठाइया बनाने मे निपुण थी।

'मै अपने दिन कैसे बिताती हू?' उनमे से एक ने एक बार एक प्रश्न के उत्तर मे कहा था। 'मै देर से उठती हू। मेरी नौकरानी मेरे नहाने के लिए सुगन्धित जल ले आती है। फिर थोडा मिठाई का नाश्ता करती हू। दोपहर के भोजन तक का समय मेरे बाल सवारने, कपडे पहनने, अपने चेहरे और उगलियो के नाखूनो को कलापूर्ण ढग से रगने मे लग जाता है। तीसरे पहर मै ली पो का चित्र काढती हू जो मैने आजकल शुरू किया हुआ है। इसके बाद मै दूसरी स्त्रियो से थोडा गपशप करके चाय पीती हू और शाम के खाने का समय हो जाता है। उसके बाद मै सहेलियो के यहा जाती हू या वे आती है और हम कुछ देर चौपड खेलती है, फिर सोने का समय हो जाता है।'

उमकी पोती बोर्डिंग स्कूल मे बहुत जल्दी उठती है और सुबह-सुबह विज्ञान, इतिहास, साहित्य, भाषा और गणित का कठिन कार्य करती है, और तीसरे पहर सिलाई, सगीत और व्यायाम करती है। निश्चित ही उसने अपनी दादी की सुकुमार प्रभावोत्पादक आभा और सुन्दर विनयाचार गवा दिया है। वह अपने पुष्ट पाव अच्छी तरह जमाकर चलती है और अपने शब्द तेजी से बोलती है। उसकी आखे अपनी दादी की है पर वे दूसरे को शान्त भाव से और फैलकर सीधे देखती है।

इस सबसे मेरा सास रुकने-सा लगता है क्योकि जीवन के बारे मे मेरा दृष्टिकोण एक शताब्दी के पिछले चतुर्थांश मे, चीन के इस छोटे-से भीतरी नगर मे,

अपने बराण्डे के इस शान्त कोने से ही बना है। बाहर की दुनिया से कभी-कभी आने वाले हमसे कहते हैं कि यहां हम अब भी सचमुच बहुत रूढ़िवादी हैं। सह-शिक्षा, पुरुषों और स्त्रियों के होटलों में एकसाथ भोजन करने, चलचित्रों और विदेशों से लाए गए नृत्यों की भी हल्की अफवाहें बन्दरगाह नगरों से उड़ती हुई इधर आती हैं। मुझे पता है कि कभी-कभी मैं ऐसे स्थानों के निवासियों को बेहद भद्दे रेलवे स्टेशन से, जो हमारे पुराने ज़माने के छोटे-से पुराने नगर पर अभी जबरदस्ती बनाया गया है, गुज़रते हैं; और चौड़े-चौड़े ऊंचे पाजामे और आधी बांह वाली चुस्त कुर्तियां पहने हुए मुझे कलंकित स्त्रियां दिखाई देती हैं, पर मेरा ख्याल है, मैं ज़माने से पीछे हूं। मैं स्वीकार करती हू कि मुझे अपनी वृद्ध चीनी सहेलियां, जिनकी वाणी विनयाचार से पूर्ण और व्यवहार अनुग्रहपूर्ण और मधुर है, अधिक अच्छी लगती हैं। मुझे इन नये लोगों की सीखी हुई उद्दण्डता बुरी लगती है। मुझे सदा—मौजूद सिगरेट, और तरुण चेहरों पर–जिन्हें मैं विनीत और शालीन देखने की अभ्यस्त हूं–सिड़ी स्वतन्त्र आत्मदर्प का भाव देखकर बुरा लगता है।

परन्तु मेरी नाराजगी का कितना अंश मेरे अपने बड़प्पन के अहंकार के अपमान की नापसन्दगी है और अपनी वर्षों से जमी हुई धारणाओं पर सन्देह किए जाने और उनका तिरस्कार किए जाने पर परेशानी है? मै सोचती हूं कि इसका कितना अंश प्रौढ़ावस्था का आत्मदर्प है? क्या हुआ यदि अन्त में यह नौजवान पीढ़ी एक पुरानी सभ्यता की जो इस दिन और काल के लिए नाकाफी है, ह्रासोन्मुख धरती के नवीन अंकुरों का उद्‌भेद है? स्थान और काल का विशाल विश्व इस पुरानी गली में ही सीमित नहीं जिसमें एकांत छायादार आंगन है और नक्काशीदार द्वार घेरे की दीवार से घिरे हुए हैं।

यदि ये नवीन प्राणी आंगनों में धूप आने देने के लिए झरोखा बनाते हैं और अश्रद्धा के कारण घेरे की दीवार को गिरा देते हैं, और इन चमत्कारपूर्ण नक्काशियों को आधुनिक रंग और प्लास्टर से विकृत भी कर देते हैं—यदि, मै कहती हूं, यह सब कुछ व्यापक प्रबोध और स्पष्ट विचार के, और इस सोते हुए, गन्दगी और अज्ञान से भरे पुराने नगर और देश की वस्तुएं और अवस्थाएं सुधारने के संघर्ष के, नये युग के नाम पर किया जाता है तो परे फेंको मेरी मन्द रूढ़िप्रिय आत्मा को, तथा पुराने ज़माने के पूज्यभाव और आचारों के प्रेम को!

क्योंकि संसार आगे बढ़ रहा है!

और मेरा दूसरा लेख जो फोरम में छपा था, निम्नलिखित है :

चीन में सौन्दर्य

पराये देश में पैदा हुआ और पाला-पोसा गया अमरीकन ही अमरीकन जंगलों के शरत्कालीन[1] अद्भुत सौन्दर्य को पूरी तरह सराह सकता है। विशेष बात यह है कि मुझे इसके लिए किसीने भी तैयार नहीं किया था। मैंने अपना सारा जीवन एक शांत चीनी वातावरण में गुज़ारा था जो अपने ढंग से मनोरम था—निर्मल कमल-सरोवरों में कोमल झूमते बासों और गोल मन्दिरों के शिखरों के प्रतिबिम्ब झलमलाते रहते थे। यह नीलिमा तथा हरियाली से और अर्ध-उष्णदेशीय धूप की की तीखी चमक तथा रात की मर्मस्पर्शी तारामयता से कुछ रंगीन भी था। पर गर्मियां गुज़र जाने के बाद और क्राईसैंथेमम के फूलों के खिलकर मुरझा जाने के बाद अगले वसंत से पहले तक के लिए अधिकतर रंग विदा हो जाते थे, पेड़ मौन रहते, अपने पत्ते छोड़ देते और बिना कोई शोर मचाए शान्त फीका बादामी रंग ग्रहण कर लेते और करीब एक ही रात में हम सुन्दर और सोफियाना सर्दियों की पोशाक धारण कर लेते थे। धरती हलका एकसार रंग धारण कर लेती और उसमें छोटे-से छप्पर वाले कच्ची ईंटों के मकान से भी कोई विचित्रता नहीं आती थी। लोग भी गहरे नीले और काले मोटे-मोटे कपड़े पहनने लगते थे। इस प्रकार जब मैं पूर्व की ओर धीरे-धीरे की हुई एक यात्रा के बाद मधुर इंगलिश प्रदेश में पहुंची, तब उसके गर्मियों के अन्त के चमकीले गुलाबी और भूरे रंगों से मेरा मन नाच उठा। क्या इसकी हेज-पंक्तियां प्रिमरोज़ (वसंती रंग के सुन्दर फूलों वाला पेड़) के दिनों में भी इससे अधिक मनोरम हो सकती हैं! इसमें एक स्वप्निल शान्ति थी जो चिन्ताओं को दूर भगा देती थी और शान्त अच्छी तरह जोते गए खेतों तथा प्राचीन सलेटी पत्थर के मकानों से, जिनमें से धीरे-धीरे उठता हुआ धुआं गतिहीन वायु में अदृश्य रूप से ऊपर को बहता जाता था, मनुष्य को बिल्कुल संतृप्त कर देती थी। इंग्लैंड में धरती के ऊपर बड़ी सुन्दर विश्रांति छाई थी, जैसे कोई बड़े परिश्रम के

१. उत्तरी गोलार्ध में अगस्त-सितंबर से अक्तूबर-नवंबर तक। भारत में उस समय शरद् ऋतु होती है। पर अमरीका आदि में तब पत्ते झड़ते हैं, जो भारत में शिशिर ऋतु में झड़ते हैं।
—अनुवादक

बाद सुख की नींद सोया हुआ हो।

इस तरह की मानसिक स्थिति में मैंने अटलाण्टिक पार किया और सीधी न्यूयार्क आ गई। ट्रामों, रिक्शाओं और ठेलों के आराम से चलते हुए यातायात के अभ्यस्त व्यक्ति को छोड़कर और कौन न्यूयार्क स्तब्ध कर देने वाली हलचल को ठीक-ठीक समझ सकता है! जहां आप एक सवारी से बचिए तो हज़ार उसकी जगह आ पहुंचती हैं। सड़क पार करना खतरनाक दुस्साहस है, जिसकी तुलना में चीन के डाकू एक मामूली वस्तु हैं। ऊंचाई पर चलने वाली रेलों को मूढ़ कर देने वाली खड़खड़ाहट से और मानो विश्व के गर्भ से आती हुई धरती के अन्दर चलने वाली रेलों की घरघराहट से आदमी का मन चक्कर खाने लगता है। मुझे यह दृश्य बड़ा मोहक लगा, मानो जंभाई लेती धरती एक स्थान पर सैकड़ों आदमियों को निगल रही है और फिर बेचैन होकर मीलों परे उन्हें उगल रही है। मैं स्वयं तो धरती के अन्दर चलने वाली रेल में नहीं बैठ सकी और एक ट्राली का रस्सा पकड़कर चिपकी हुई अफसोस से कभी-कभी यह सोचती थी कि क्या ही अच्छा होता यदि मैं किसी ठेले में बैठकर शान्ति से घूमती, सड़क के किनारे के तालाबों में तैरती, निश्चिन्त बत्तखों को देखती और धूल में लुढ़कते-पुढ़कते और नंगे बच्चों के लिए झुककर कोई जंगली फूल तोड़ती हुई चली जाती।

पर न्यूयार्क ने मुझे अपने शान्तिपूर्ण स्वप्न से हिलाकर जगा ही दिया; उसने भी मुझे अमरीकी जंगलों की आकस्मिकता के लिए तैयार नहीं किया।

एक सप्ताह बाद मैं वर्जिनिया में जंगल में घूम रही थी। आनन्द की उस उत्तेजना को मैं शब्दों में कैसे प्रकट करूं? मुझसे यह किसीने नहीं कहा था कि वह कितना भव्य होगा। बेशक उन्होंने कहा था कि 'पत्ते पतझड़ में गिर जाते हैं,' पर इससे मेरा मन क्या तैयार होता? मैंने हल्के भूरे-पीले और हल्के लाल गुलाबी रंगों की बात सोची थी, पर मैंने देखा कि वहां तो रंगों की सजीव ज्वाला मौजूद थी—ऐसे ज़बर्दस्त, प्रचण्ड और वैविध्यपूर्ण कि विश्वास न हो। एक ऊंचे पेड़ का तना मुझे कभी नहीं भूलेगा, जिसके चारों ओर चमकते लाल रंग की लता लिपटी थी, जैसे किसी काले पत्थर की शिला पर अग्निमय पहरेदार बनकर अलग खड़ी हो।

वहां एक मेपल मार्ग था जो न्यूजेरुसलम की सुनहरी गलियों का मार्ग मालूम होता था। कहीं भी पहुंचो, सिर के ऊपर परस्पर गुंथी शाखाएं झूल रही थीं जिन-

पर नारंगी और लाल, उन्नाबी और तेज़ लाल तथा सुन्दर पीले सैकड़ों फूल खिले हुए थे। धरती पर रंगों का ऐसा गलीचा बिछा मालूम होता था जो सम्राट् को भी अपनी सारी सम्पत्ति से पीकिंग में नसीब न हो। बहुत छोटी वस्तुएं भी छोट-छोटी लताएं और ज़रा-ज़रा-से पौधे भी, जो गर्मियों में मामूली चीज़ रहे होंगे, बड़े प्रचण्ड और असंयत प्राचुर्यपूर्ण रंगों के रूप में आत्मप्रकाश कर रहे थे।

सचमुच इस धरती पर कहीं इसकी तुलना नहीं है। मैं सोचती हूं कि क्या अमरीकन लोग हर साल इसके सौन्दर्य की सराहना करते हैं। मेरा विचार है कि अब मैं किसी चीज़ पर जल्दी चकित न हूंगी—उत्तर ध्रुव-प्रभा (ऑरोरा बोरियालिस) पर भी नहीं, जो मैंने अभी तक नहीं देखी, वेसूवियस पर भी नहीं; और मुझे उस दिन के बारे में भी सन्देह है जब जिबराइल की शहनाई की तर्ज़ पर आसमान लिपटकर फट जाएंगे। मैं नहीं समझती कि किसी मनुष्य को सौन्दर्य का उससे अधिक मादक कोई साक्षात्कार हो सकता है जो अपने जीवन में पहली बार शरत्काल में अमरीकन वनों में घूमने पर शांत, गंभीर चीज़ों से मुझपर सीधे पड़ा।

इस प्रकार मैं फिर सौन्दर्य के बारे में सोचने लगी। संसार के चारों ओर बिखरे सौन्दर्य-खंडों पर विचार करने में और यह देखने में कि पृथ्वी के लोगों ने अपने को अज्ञात सौन्दर्य के रूपों में अपने-आपको कितने भिन्न-भिन्न रूपों में अभिव्यक्त किया है, मुझे दीर्घकाल से आनंद मिलता रहा है। इससे मेरा अभिप्राय उन महान् दृश्यों से नहीं है जिनके पीछे पर्यटक दौड़ते-फिरते हैं। किसी देश के लोग वहां कभी ही सचमुच दिखाई देते होंगे।

फ्रांस मुझे लॉवर में नहीं मिला, बल्कि एक कलकल करती धारा के किनारे कपड़े थपकने के लिए घुटनों के बल झुकी हुई नीले गाउन और सफेद रूमाल वाली बुढ़िया स्त्री में दिखाई दिया। ऐसी धैर्य वाली सहिष्णु निष्ठावान् आकृति!—मैंने सोचा; एकाएक उसने अपना सिर उठाया और विनोद और हंसी के अन्तहीन उत्साह से चंचल आंखों से–जो एक झुर्रियों भरे वृद्ध चेहरे में सदा तरुण और जीवन से पूर्ण थी–मोहिनी डाल दी।

स्विस जाति के आदमी का सच्चा रूप नीले आसमान के सामने हिमाच्छादित और दूर पर वर्तमान ऐल्प्स पर्वतों की भव्य शोभा में नहीं है। मैंने उस परिश्रमी और लगन वाले स्विस को देखा। उसके छोटे-से भूमिखण्ड में–जहां वह

अपने नाशपाती के पेड़ को सावधानी से दीवार से जड़ रहा था और कम से कम पत्ते पैदा करने की रीति से तैयार की गई अंगूर-लता पर अंगूरों के गुच्छे गिन रहा था—उसकी हर चीज़ साफ-सुथरी, ढंग से जमी हुई और अपने ढंग से सुन्दर थी। मुझे शक है कि वह अपनी छोटी-सी सम्पत्ति के ऊपर चिरंतन काल से बहुत ऊंचे खड़े हुए जुंगफ्राऊ पर साल में दो बार भी नज़र डालता होगा।

विचित्र बात है कि जब कभी मैं दुनिया के लोगों के बारे में सोचती हूं तब कभी ऐसा नहीं होता कि मेरे विचार मुझे छोड़कर और दुनिया के चारों ओर घूम-कर अन्त में अपने अपनाए देश चीन पर न आ जाते हों।

कितने ही लोगों ने शांगहाई से पहली बार छोटी-सी ट्रेन-यात्रा करके उतरने पर मेरा यह कहकर स्वागत किया है, 'आह, चीन जापान की तरह सुन्दर नहीं है, क्यों ?'

मैं मुस्कराकर बात टाल जाती हूं क्योंकि मुझे चीन के सौन्दर्य का पता है।

जापान बड़ा सुन्दर है, न केवल सुन्दर पोर्सलेन में; चमकीले शानदार चोगों में चुलबुलाते मोहक बच्चों में। ये चीजें हरएक देख सकता है। न केवल छोटी-छोटी मेंड़ वाले खेतों में, जो पहाड़ी के किनारे एक-दूसरे के ऊपर दिखाई देते हैं। न केवल स्वच्छ हल्के मकानों में, यह जीवन का बहुत छोटा-सा परी-देश लगता है कभी-कभी देखने वाले को।

जापान का महान् सौन्दर्य उन छोटे स्थानों में है जो आप और मुझ जैसे निरे राहगीरों की नज़र में सचमुच कभी नहीं आते।

यह वह सौन्दर्य है जो छोटे से छोटे मज़दूर को दिन भर कड़ा परिश्रम करने के बाद अपना बोझ एक ओर डालकर और थोड़ी-सी मछली और चावल खाकर अपने बगीचे में जेबी रूमाल जितने बड़े गड़े खोदने और पौधे लगाने को प्रेरित करता है। उसमें वह मग्न होकर, तन्मय होकर, कार्य करता है। उसकी सारी आत्मा अपने लिए और अपने परिवार के लिए, जो प्रशंसा करता हुआ उसके चारों ओर इकट्ठा हो जाता है, सौन्दर्य-सृष्टि करने की खुशी में विश्राम करती थी। कोई ऐसा नहीं जिसके पास बगीचा न हो। यदि बदकिस्मती से किसी गरीब के पास एक हाथ भी भूमि नहीं तो वह एक पैसे में कोई बड़ा प्लाट खरीद लेता है और धीरे-धीरे आनन्ददायक और लगन भरे लम्बे परिश्रम से वह एक छोटा-सा पार्क बना लेता

है जिसमें एक छोटी-सी पहाड़ी है, एक छोटा-सा गर्मियों का मकान है, एक तालाब है और लान की जगह काई के टुकड़े हैं तथा पेड़ों की जगह घास है और सुन्दर झाड़ियों के स्थान पर दरारों में कागज़ की हरी पत्तियां लगी हैं।

अत्यधिक सौन्दर्य-प्रेम के कारण ही जापानी मेज़बान अपने अतिथि-कक्ष में प्रतिदिन अपने अतिथि के आनन्द के लिए एक ही सुन्दर वस्तु रखता है। वह अपने कीमती भण्डार में से आज एक सरकण्डे पर बैठी चिड़िया का अद्भुत संयम से बनाया हुआ काले और सफेद वाटर-कलर (जल-रंग) का चित्र काटता है; कल वह कोई हल्के नीले रंग का गुलदस्ता होगा, जिसमें एक स्निग्ध आभा वाले फूल की शाखा ऐसे तरीके से बनाई गई है कि वह भगवान् का ध्यान करने के लिए सजीव निमन्त्रण प्रतीत होता है। कभी वह पुराने भारी पर्दे का टुकड़ा है जिसके हल्के पड़े हुए रंग पर जलता हुआ लैम्प-धारियों का विचित्र जलूस बना है।

आजकल जापान के बारे में मैं बहुत कुछ चर्चा सुनती हूं। कुछ लोग ऐसे हैं जो उनमें बहुत साधारण मानवीय गुणों का अस्तित्व स्वीकार करने को भी तैयार नहीं। जहां तक मेरा सम्बन्ध है, ये बातें सुनने के बाद मैं अपना फैसला तब तक के लिए स्थगित कर देती हूं जब तक कोई मेरे सामने इन दो गुणों का समन्वय नहीं करता : निरी बदमाशी और सब प्रकार के सौन्दर्य से स्निग्ध प्रेम, जो जापान में धनी और निर्धन में एक जैसा प्रायः सर्वत्र पाया जाता है। जहां सौन्दर्य में अपने को तन्मय करने की ऐसी तत्परता हो और धन के रूप में इसे प्रायः न सोचा जाता हो, वहां के बारे में क्या थोड़ा-सा सत्य छिपा न लेना चाहिए ? यदि यह बात ज़रा भी सत्य हो कि सौन्दर्य सत्य है !

जापान में जो इतना सुथरा सौन्दर्य ऊपर से ही दिखाई देता है, वह निःसन्देह चीन में चारों ओर फैला नहीं दिखाई देता। मैं सचमुच अपने उन मित्रों को दोष नहीं दे सकती जो पहली नज़र में उसे कुरूप बता देते हैं। निःसन्देह आर्थिक चिन्ता ने गरीबों को मजबूर किया है कि वे पहले और पीछे तथा सदा अपने पेटों, और उन्हें पूरी तरह भरने वाली वस्तु के बारे में सोचें। निश्चय ही सामान्य लोगों के जीवनों में सौन्दर्य का भयंकर अभाव है।

एक दिन अपने माली से, जो मेरी बारहमासी फूलों की क्यारी खोदकर बराबर कर रहा था, मैंने कहा, 'क्या तुम यह नहीं चाहोगे कि इनमें से कुछ फूलों के बीज अपने मकान के सामने वाले भाग में बो लो।'

उसने अविश्वास की नज़र से मेरी तरफ देखा और तेज़ी से खुर्पी चलाता रहा। 'गरीबों के लिए फूल बेकार हैं,' उसने संक्षेप में जवाब दिया। 'ये चीज़ें तो अमीरों के खिलवाड़ हैं।'

'ठीक है, पर तुम्हें कुछ खर्च नहीं करना पड़ेगा,' मैंने ज़ोर देकर कहा। 'देखो, मैं तुम्हें कई तरह के बीज दूंगी और अगर ज़मीन निकम्मी है तो तुम इस खाद के ढेर में से खाद ले जाओ, और मैं तुम्हें उनकी देख-भाल करने के लिए समय भी दूंगी, जिससे तुम्हारा मन प्रसन्न होगा।'

उसने सिर हिलाकर अपना इन्कार जताया। वह पुराने ख्यालों पर चलनेवाला है। उसके किसी पुरखे ने कभी आनन्द के लिए फूल नहीं बोए और वह ऐसा करने की कल्पना भी नहीं कर सकता। इसके अलावा, जब फूल होंगे तब उनका वह करेगा भी क्या।

वह एक पत्थर निकालने के लिए झुका। 'मैं पत्ता-गोभी बो लूंगा।' उसने संक्षेप में कहा।

गरीब चीनी निःसन्देह अपनी हर चीज़ को पैसे की नजर से देखता है। एक दूर की जगह, जहां मैं कुछ दिन रही भी, मैंने एक किसान की औरत से पूछा कि जिस साल फसल अच्छी होती है, उस साल फालतू रुपये को तुम लोग कैसे खर्च करते हो, या बचाकर रखते हो।

वह ऐसे वर्ष की याद आने पर मुस्कराई। 'हम अधिक खाते हैं,' उसने बहुत प्रसन्न होकर कहा।

विश्वास योग्य बचत बैंकों के बजाय वे अपने थोड़े बहुत रिज़र्व फंड को डकैतों के इस प्रदेश में सबसे अधिक सुरक्षित स्थान पर जमा कर देते हैं और उसे अपने शरीर के कुछ मांस के रूप में बदल लेते हैं। कम से कम इतना तो है कि वह उनसे कोई छीन नहीं सकता ! और भगवान् जानता है कि उनकी हड्डियों को इससे कुछ आराम भी मिल जाता है।

चीनी नगरों में घूमते हुए उनका भद्दापन बड़ा चुभता है—सफाई का अभाव, घिचपिच, गन्दी गलियां, अपने गन्दे अंग दिखाते हुए और मुंह चौड़ा करके मांगते हुए मैले-कुचैले और रोगी भिखारी, चारों ओर फिरते हुए भद्दे कुत्ते। छोटी-छोटी दुकानों और मकानों पर नज़र डालने पर यह देखकर मन उदास होता है कि जीवन की पूर्णतया उपयोगितावादी दृष्टि रखी गई है। नंगी मेजें, स्टूल जो देखने से ऐसा

लगता है कि जैसे असुविधा को लक्ष्य में रखकर ही बनाए गए हों, बस चारपाई और मूढ़ा, पुराने अविकसित ढंग के पकाने के बर्तन, सब के सब बहुत ही छोटी-सी जगह में भरे रखे हैं, और परिणाम यह है कि आराम का सर्वथा अभाव है और आत्मिक मूल्यों को सौन्दर्य में प्रकट करने की कोशिश का अभाव है।

उस दिन मैं कियांगसी में एक पर्वत की चोटी पर खड़ी थी। मुझे सौ मील तक का सुन्दर चीनी प्रदेश दिखाई दे रहा था। जल-धाराएं धूप से झिलमिला रही थीं। यांगत्से अपनी मस्तानी चाल से चली जा रही थी—वह समुद्र की ओर जाती हुई विशालकाय पीली सड़क मालूम होती थी। छोटे-छोटे झोंपड़ियों वाले गांवों के चारों ओर वृक्षों के झुरमुट सुखपूर्वक एक-दूसरे से लिपटे थे। धान के खेत मरकत-मणि जैसे हरे दिखाई दे रहे थे और ऐसी सफाई से बने थे जैसे किसी गोरखधन्धे में बनी आकृतियां हों। यह शान्ति और सौन्दर्य का दृश्य मालूम होता था।

फिर भी मैं अपने देश को बहुत अच्छी तरह जानती थी और मुझे पता था कि यदि मैं इस सुन्दर देश के बीच में जा पहुंचूं तो मुझे जलधाराएं गन्दी की हुई मिलेंगी, नदी के किनारे छोटी-छोटी रद्दी चटाई से ढकी हुई नावें घिचपिच खड़ी होंगी और लाखों दुःखी अधपेट खाने वाले नाविकों के पास रहने के लिए यही घर है। पेड़ों के नीचे बसे गांवों में भीड़-भाड़ होगी और वे धूप में सड़ते गन्द और कूड़े तथा मक्खियों से गन्दे होंगे और सब जगह फिरने वाले पीले कुत्ते मेरे आने पर भौंक रहे होंगे। सबके लिए मुफ्त मधुर वायु होते हुए भी वहां घर छोटे और बिना खिड़कियों के होंगे और गुफाओं की तरह अंधेरे होंगे। बच्चे धूल से भरे और मैले-कुचैले होंगे और उनकी नाकें अवर्णनीय होंगी क्योंकि वे सदा ऐसी होती हैं। कहीं कोई फूल नहीं होगा। सौन्दर्य का एक भी ऐसा स्थान नहीं होगा जो मनुष्य ने जीवन की शुष्कता को कम करने के लिए बनाया हो। झोंपड़ियों के आगे की छोटी-छोटी ज़मीनें भी ठोक-ठोककर अनाज निकालने की जगह (पहर) बना ली गई होंगी जो धूप में कठोर और चमकती होंगी। गरीबी? हां, अंशतः अवश्य, पर प्रायः आलस्य और अज्ञान भी।

तो चीन का सौन्दर्य कहां है? वह ऊपरी सतह पर तो है नहीं। पर मैं अपना समय गुज़ार रही हूं। कारण कि वह यहां है।

संसार के सौन्दर्य के कुछ दुर्लभतम खण्ड मुझे इस प्राचीन देश में दिखाई दिए हैं जो शताब्दियों से इतना अपने में सीमित, इतना आलसी और इस बात से इतना

लापरवाह है कि दुनिया उसके बारे में क्या सोचती है।

कारण कि चीन अपने दिखावट के स्थानों में अपना रूप नहीं दिखाता। पीकिंग में भी, जो सुदूरपूर्व के सब पर्यटकों का लक्ष्य होता है, दिखाई देने वाली चीज़ें सब दिखावटी स्थान नहीं हैं। निषिद्ध नगर, स्वर्ग का मंदिर, लामा मंदिर—और इसके अलावा अन्य बहुत सी चीज़ें धीरे-धीरे जनता के जीवन में से स्वयं जनता के लिए बनाई गईं और उन्हें बनाते समय पर्यटकों की नज़रों और डालरों का किसीको ध्यान नहीं था। सच्ची बात तो यह है कि बीसों साल तक अत्यधिक धन खर्च करने से भी उनकी एक झांकी नहीं मिल सकती थी।

चीनियों में स्वभावतः प्रदर्शन और विज्ञापन की बहुत कम धारणा होती है। हेंगचौ में किसी बड़ी रेशम की दुकान में जाइए तो आप देखेंगे कि अन्दर के शान्त स्थान पर अंधेरे में सजावट के बीच लिपटे हुए साफ-सुथरे थानों के फट्टे के ऊपर फट्टे बने हुए हैं और हरएक पर कीमत की पर्ची एक ही तरफ लगी है। ऐसे पैडेस्टल वहां नहीं हैं जिनपर सुन्दर साटन को ऐसी चतुराई से लपेठा गया हो कि उसपर रोशनी पड़े और वह ग्राहक को अपनी ओर खींचे। इसके बजाय एक क्लर्क सामने आ जाता है और जब आप अपनी पसन्द बता देते हैं तब वह लापरवाही से पांच-छह थान फट्टों से छांटकर उठाता है और उनके ऊपर लिपटे कागज़ फाड़ देता है। एकाएक हमारी आंखों के आगे उन वस्तुओं की चमक फूट उठती है जिनसे राजाओं की पोशाकें बनती हैं। ज़रीदार साटन तथा मखमल, अद्‌भुत चमक और सुकुमार आभा वाले रेशम, आपके सामने इकट्ठे हो जाते हैं और आप विमूढ़-से हो जाते हैं। ऐसा लगता है जैसे आभाहीन कौओं से अत्यन्त सुन्दर रंगों वाली तितलियों की भीड़ निकल पड़ी हो। आप अपनी पसन्द की चीज़ ले लेते हैं और फिर यह सारा चमकीला सौन्दर्य अंधेरे में बन्द कर दिया जाता है।

यह है चीन।

उसके सौन्दर्य पुरानी वस्तुओं, पुराने स्थानों के सौन्दर्य हैं जो अनेक पीढ़ियों के अभिजातवर्गों के उच्चतम विचार और कल्पनापूर्ण प्रयत्न से सावधानी से सोचकर बनाए गए थे और अब अपने स्वामियों की तरह धीरे-धीरे गिरते जा रहे हैं।

इस ऊंची दीवार के पीछे, जो सड़कों पर ऐसी भावहीन अपशकुनसूचक लगती है, आप, बशर्ते कि आपके पास उचित ताली हो, बड़ी-बड़ी चौकोर पुरानी टाइलों के बने हुए एक भव्य आंगन में पहुंच सकते हैं जो सौ शताब्दियों के पैरों से घिसा

हुआ है । उसमें एक गांठों वाला एक चीड़ का पेड़ होगा, सुनहरी मछलियों का एक तालाब होगा, एक नक्काशीदार पत्थर का आसन होगा जिसपर किसी वृद्ध बुद्ध के समान गरिमापूर्ण और शान्त सफेद बालों वाला दादा हल्के पीले रंग के रेशम का चोगा पहने बैठा होगा। उसके हल्के पीले झुरियों वाले हाथ में पालिशदार काली लकड़ी के चांदी से जड़ित सिरे वाले लम्बे हुक्के की नली लिए होगा। यदि आप उसके मित्र हैं तो वह अच्छी तरह झुककर खड़ा होगा और बड़े विनय के साथ आपको अतिथिशाला में ले जाएगा। वहां नक्काशीदार टीक की ऊंची कुर्सी पर बैठकर आप उसकी प्रसिद्ध चाय की चुस्कियां लेंगे और दीवारों पर रेशमी धागे से लटकते हुए पुराने रंग-चित्रों पर विस्मय करते रहेंगे और छत के तीस फुट ऊंचे हाथ से बनाई गई कड़ियों पर विचार करते रहेंगे। सौन्दर्य, जहां देखो वहां सौन्दर्य, आयु बढ़ने के साथ-साथ शानदार और संयत।

मैं एक मन्दिर की बहुत बड़ी अंधेरी अतिथिशाला का स्मरण करती हूं। यह मन्दिर एक छोटे-से खुली धूप वाले आंगन में खुलता है जहां हल्की ईंट का बना हुआ पियोनी का रास्ता बना है। यहां हर बसंत ऋतु में बड़े-बड़े गुलाबी अंकुर निकल आते हैं। जब मैं मई में वहां जाती हूं तब गहरे रंग के पियोनी फूलों पर, जो लाल और धूमिल गुलाबी रंग में चमक रहे होते हैं, और बीच में, सुनहरे मध्य वाले पीले फूल होते हैं, धूप पड़ रही होती है। वह रास्ता ऐसी चतुराई से बनाया गया है कि अतिथियों को उसे धुंधले प्रकाश में से अवश्य देखना पड़े। ऐसे स्थान में और कौन से शब्द बोले जा सकते हैं और कौन से विचार पैदा हो सकते हैं सिवाय शुद्धतम सौन्दर्य के शब्दों और विचारों के।

पुराने चित्र, पुरानी कढ़ी वस्तुएं, पोटरी (मिट्टी की चीज़ें) और पोर्सलेन तथा पीतल की वस्तुएं वहां हैं जो परिवारों में बहुमूल्य समझकर तब से रखी हुई हैं जब अमरीका के बारे में सोचा भी नहीं गया था। सच पूछिए तो शायद वे फराओ के खज़ानों की आयु की हों—कौन जाने?

चीन में आज हो रहे परिवर्तन की एक बुरी चीज़ यह है कि गरीब या असावधान अज्ञानी नौजवान ऐसी वस्तुओं की कीमत रुपये के रूप में सीख रहा है जब कि वस्तुतः वे अमूल्य हैं। वे वस्तुएं केवल अपने सौन्दर्य के कारण इतनी बड़ी हैं कि वे किसी व्यक्ति की सम्पत्ति नहीं हो सकतीं बल्कि उन्हें सारे राष्ट्र को आदरपूर्वक अपनी सम्पत्ति बनाना चाहिए, पर उनका अभी समझने का समय नहीं है।

सच पूछिए तो विदेशियों ने चीन के साथ सबसे बड़ा अपराध और अत्याचार यही किया है कि विचित्र वस्तुओं की तलाश करने वालों और विश्व-यात्रियों तथा व्यापारी फर्मों ने उसके सौन्दर्य के भण्डारों को बरबाद कर दिया है। यह वस्तुतः अज्ञानियों को लूटने की बात है क्योंकि जिस चीज़ को वह चांदी के तीस सिक्कों में बेचने को तैयार हुआ, उसके बारे में उसे यह पता न था कि वस्तुतः वह वस्तु अमूल्य है।

इसके अतिरिक्त इस समय इतने सारे आधुनिक युवक चीनी जिसे असंस्कृत दशा में से गुज़र रहे हैं उसे देखकर हृदय कांपने लगता है। निःसन्देह यह अनिवार्य है कि अतीत पर अविश्वास करते और उसका तिरस्कार करते हुए वे प्राचीन चीन की अद्वितीय कला को छोड़ते मालूम हों और पश्चिम की सस्ती बहुत सी बेहूदी चीज़ें खरीदने निकल पड़ें और उन्हें अपनी दीवारों पर लटकाएं। सच पूछिए तो हममें से उन लोगों के सामने, जो अपने इस प्रिय देश की बहुत सी विलक्षणता को दूर होता देखते हैं, यह चुभता हुआ प्रश्न खड़ा है : चीन की प्राचीन सौन्दर्य-कृतियों की रक्षा कौन करेगा ? उदाहरण के लिए, मूर्ति-पूजा से निःसन्देह बड़ी भारी गिरावट पैदा हुई, पर उसका तिरस्कार करते हुए क्या हम मन्दिरों की स्थापत्य-कला की अत्यन्त सुन्दर भंगिमाओं को भी खो बैठें।

फिर भी कभी-कभी मुझे सांत्वना मिलती है। उन सब सौन्दर्य-प्रेमी पूर्वजों की सन्तान में से कुछ न कुछ ऐसे लोग निकलेंगे जिनके लिए सौन्दर्य की साधना सबसे तीव्र लालसा होगी और वे इसे आगे बढ़ाएंगे और अधिक शान्त-युग में ले जाएंगे।

अभी उस दिन मैं एक प्रसिद्ध आधुनिक चीनी कलाकार के कलाकक्ष में गई। पोस्टरों की, पुराने ढंग की गिबसन लड़कियों की बेहद रंगीन महासागर में छिपते हुए लाल-पीले सूर्यों की—ऐसी कई दर्जन कलाकृतियों के सामने से गुज़रते हुए मेरा हृदय अधिकाधिक बैठता गया, किन्तु परली ओर एक कोने में मैंने एक छोटा-सा वाटरकलर चित्र देखा। यह गांव की एक सड़क का चित्र था जो गर्मियों की शाम को आकस्मिक वर्षा से धुंधली नीली हो रही थी। हल्की पीली चांदी की तिरछी रेखाएं इसके आर-पार पड़ रही थीं। एक-दूसरे से सटकर बने मकानों की खिड़कियों में से मोमबत्ती की हल्की रोशनी चमक रही थी और एक अकेले मनुष्य की आकृति कागज़ की छतरी लगाए चली जा रही थी जिससे चमकते गीले पत्थरों पर हिलती

हुई परछाईं पड़ रही थी।

मैंने कलाकार की ओर मुंह करके कहा, 'यह सर्वोत्तम है।'

उसका चेहरा खिल गया। 'क्या आप ऐसा समझती हैं ? मैं भी। यह मेरी गांव की सड़क का चित्र है, जिसे मैंने अनेक बार इस रूप में देखा है लेकिन—'वह अफसोस से बोला, 'मैंने यह स्वान्तःसुखाय बनाया है। यह बिक नहीं सकता।' परन्तु यदि मुझे चीन के सौन्दर्य में कोई दोष दीखता है तो वह यह है कि यह बहुत अधिक घिरा हुआ, बहुत अधिक सीमित है। यह जिन लोगों का है उनके भीतर तक व्याप्त नहीं है। यह सीमित परिवार या धार्मिक समूह तक ही सुरक्षित रखा गया है। सौन्दर्य के मूल्य का ज्ञान बहुत-सों को कभी नहीं प्राप्त हो सका, जिन्हें इस अभाव से हानि हुई है। गरीब और अनपढ़ वर्ग, शताब्दियों से, सारतः सुन्दर से पैदा होने वाले सूक्ष्म और आवश्यक सब प्रभावों से सर्वथा अप्रभावित रहते हुए बढ़ते और मरते रहे हैं। सौन्दर्य की साधना का मौका धनी और फुरसत वाले लोगों का ही विशेषाधिकार रहा है। परिणामतः गरीब इसे धनियों का समय काटने का एक साधनमात्र समझता है और अपने लिए असम्भव मानता है।

औसत चीनी को जिस चीज़ की आवश्यकता है वह अपने चारों ओर पड़े हुए सौन्दर्य को निरखने की अभ्यस्त आंख की। जब उसे सौन्दर्य का अर्थ एक बार पता लग जाएगा और यह अनुभव हो जाएगा कि वह उस भद्दे छपे कागज़ में नहीं है जिसके लिए उसे चालीस सेंट जैसी बड़ी कीमत चुकानी होगी, कि यह एकमात्र धनियों की अमूल्य कला-वस्तुओं में भी नहीं है, बल्कि वह उसके अपने आंगन में है, केवल उसे लापरवाही के कारण जमा गन्द और आलस्य के कारण उत्पन्न अव्य-वस्था से मुक्त करना है, तब देश में सब जगह एक नई भावना दिखाई देने लगेगी।

जो भी हो, मैं जानती हूं कि आदमी केवल रोटी पर नहीं रहता और ये हज़ारों आदमी यहां अवर्णनीय कठिनाइयों से भरी आर्थिक दुर्व्यवस्थाओं में डूबे हुए यही करने की कोशिश कर रहे हैं। ताज़ी हवा और प्राकृतिक मनोरमता में सौन्दर्य देखना, निर्मल जल पर झिलमिलाती धूप के आनन्द को जानना और फूलों की भव्यता को अनुभव करना—ये सबको मुक्त रूप से मिलने वाले सौन्दर्य आज हमारे लिए बड़े आवश्यक हैं।

मैंने यह बात उस दिन अपने वृद्ध चीनी अध्यापक से कही और उन्होंने इसके उत्तर में एक कहावत कही जिसका अर्थ कुछ इस प्रकार होगा, 'जब किसी आदमी

के कोठे भरे हों और पेट तृप्त हो, तब वह आत्मा-सम्बन्धी बातों पर विचार करने की ओर प्रवृत्त हो सकता है।' (भूखे भजन न होहिं गोपाला)।

यह बात मेरे ख्याल से सच है।

फिर भी मुझे निश्चय है कि रात माली को अच्छा भोजन मिला होगा जब वह लान में प्रसन्नता से कार्य कर रहा था और मैं बांसों के नीचे बैठी सोच रही थी। एक नये अपरिचित प्रकाश से चौंककर मैंने नज़र उठाई और सूर्यास्तकालीन आकाश के सौन्दर्य से फिर आन्दोलित हो गई।

'ओह, देखो!' मैंने पुकारकर कहा।

'कहां, कहां?' वह कुदाल संभालता हुआ ज़ोर से बोला।

'हां, वह कितना आश्चर्यजनक रंग है!'

'अच्छा, वह!' वह बड़ी निराशा से फिर घास तोड़ने के लिए झुकता हुआ बोला। 'जब आपने इस तरह आवाज़ लगाई तब मैंने सोचा कि आपके ऊपर कोई कानखजूरा चढ़ गया है!'

सच्ची बात कहूं तो मैं यह नहीं मानती कि पेट अच्छी तरह भरा होने पर ही सौन्दर्य से प्रेम निर्भर है। बहुत से पेटू निरे पेटू होते हैं। इसके अतिरिक्त, यदि यह कहावत सच्ची होती तो मैं बेहद गरीब विधवा बहरी बुढ़िया श्रीमती वांग की क्या व्याख्या कर सकती जो एक मुट्ठी चावल के लिए सारे दिन मेहनत से सिलाई करती है, फिर भी सारी गर्मियों मेज़ पर एक टूटी बोतल में एक फूल किसी तरह लगाए रखती है और जब मैंने उसे आग्रहपूर्वक एक छोटा-सा हरा गुलदस्ता दिया, तब खुशी के मारे उसकी आंखों में आंसू आ गए।

या वह छोटी-सी तम्बाकू की दुकान जिसका प्रसन्नमुख पोपला बुड्ढा मालिक सदा किसी मिट्टी के बर्तन में कोई न कोई पौधा लगा रहा होता है; या मेरे कम्पाउन्ड के बाहर वह किसान जो होलीहौक की झाड़ियों को अपने घर के चारों ओर आज़ादी से लगे रहने देता है; या गली के छोटे-छोटे 'जंगली' बच्चे जो कभी-कभी अपना मुंह मेरे दरवाज़े पर आकर अड़ा देते हैं और फूल मांगते हैं।

नहीं, मेरी समझ में हर बच्चे के दिल में सौन्दर्य पैदा होने का कोई समय होता है। कभी जीवन की कठोर लाचारियां उसे नष्ट कर देती हैं और वह सदा के लिए खत्म हो जाता है। पर कभी-कभी वह जीवित रहता है और किसी मनुष्य या स्त्री की मौन ध्यानशील आत्मा में बढ़कर पुष्ट होता रहता है। तब उस पुरुष या स्त्री

को यह पता चलता है कि महल में रहना और राजाओं के साथ भोजन करना भी काफी नहीं है। उन्हें पता चलता है कि सब कुछ होते हुए भी वे सदा असन्तुष्ट और अतृप्त हैं जब तक कि वे किसी तरह सौन्दर्य को न पा लें जिसमें भगवान् छिपा है।

—मुझे इन दोनों छोटे-छोटे निबन्धों के बारे में कोई भ्रम न था। वे तुच्छ थे पर उनके स्वीकार होने से मुझे सुख अनुभव हुआ और मैंने गम्भीरता से लिखना शुरू किया जो मेरा पहला बड़ा उपन्यास होता।

मेरे लिए स्वाभाविक था कि उपन्यास के बारे में मैं किसीको कुछ न बताऊं। इसका कारण गोपनीयता नहीं था क्योंकि यदि कोई बताने योग्य होता तो मैंने उसे अवश्य बताया होता, पर उस स्तर का मेरा कोई मित्र न था। यों तो मित्र बहुत थे, सदा ही होते थे, पर मैंने बहुत पहले सीखा था कि वे जहां हैं, उनसे वहीं मिलना चाहिए और मेरे ऐसे मित्र या सम्बन्धी न थे जिनसे मैं अपने लेखन के बारे में बात-चीत कर सकती। मेरे मन में यह बात नहीं आई कि यह कोई नई बात है, या यह कोई अभाव है। मैं बहुत पहले अनेक कमरों में रहने की अभ्यस्त हो चुकी थी।

इधर मैं एक बिल्कुल भिन्न तरह के जीवन का रस भी ले रही थी। सबसे पहले तो मेरा घर और बगीचा थे। यद्यपि मैं कहीं भी रह सकती हूं : गरीबी या अमीरी में एक-जैसे आनन्द से रह सकती हूं, पर मुझे एक परिपार्श्व अवश्य चाहिए, और यदि वह नहीं होता तो मैं उसे बना लेती। इसलिए मैंने अपने रहने के बहुत बड़े और बहुत कुछ शोभाहीन स्लेटी ईंटों के मकान में बगीचा लगाया और थोड़े-से खर्च से मैंने अपनी माता की दी शिक्षा के अनुसार भरसक सौन्दर्य की सृष्टि की। बगीचे से बहुत-से फूल हो जाते थे और सस्ती लकड़ी के सुन्दर फर्नीचर पर सुन्दर चीनी चीज़ों की कम-खर्च गद्दियां लगाई जा सकती थीं। बांस और बेतों से मैं ऊब चुकी थी, पर उन दिनों चीनी लोग घास का बना पतला रस्सा बांसों के मज़बूत ढांचों पर बुना करते थे और ऐसी कुर्सियां आरामदेह और चलने वाली भी होती थीं। पुरानी चीनी ब्लैकवुड की मेज़ें सस्ती मिल ज़ाती थीं और चीनी मिट्टी के बर्तनों की दुकानों में सुन्दर तथा नाज़ुक प्याले और प्लेटें सदा मिल जाते थे। एक दिन एक रेशम की दुकान में मैंने देखा कि उड़े हुए रंग वाला रेशम का बहुत-सा कपड़ा बहुत सस्ती कीमत में मिल रहा है। वह मैंने खरीद लिया और उसे कई रंगों में रंग लिया। फर्श पर बिछे हुए मोटे रंग (गलीचे) तथा धूप से अच्छा वातावरण

बन जाता था और शेष कार्य फूलों से हो जाता था। मुझे सारे कार्य में बड़ा आनन्द आता था, और बहुत बार मैंने मन में सोचा कि यदि मेरी पुस्तकें लिखने की प्रवृत्ति न होती तो मैं मकान बनाने और सजाने में आनन्द लिया करती। पर फिर मुझे रसोई करना भी पसन्द है। मेरे बच्चे जानते हैं कि यदि मुझे पुस्तकें लिखने की तीव्र अभिलाषा न होती तो मैं किसी बड़े परिवार या अनाथालय में मिसरानी होना पसन्द करती और हर किसीके लिए स्वादिष्ट भोजन बनाया करती। परन्तु ऐसी अनेक चीज़ें हैं जो मैं बनना पसन्द करती—उदाहरण के लिए, मूर्तिकार—यदि मैं पुस्तकें लिखने की शौकीन न होती। मेरी खुशकिस्मती है कि मुझे यह फैसला करना नहीं पड़ा। उसपर मैंने एक बार एक स्त्री-मूर्तिकार के बारे में 'दिस प्राउड हार्ट' नामक उपन्यास लिखा और मेरा ख्याल है कि उसमें मैंने लेखकों के विचित्र ढंग से अपना एक स्वप्न पूरा किया है।

अब मैं जो जीवन बिता रही थी, उसकी तुलना में मेरा अपने उत्तरी नगर का जीवन सचमुच सादा था। मैं न केवल ईसाई विश्वविद्यालय में बल्कि प्रान्तीय विश्वविद्यालय में भी कक्षाओं को पढ़ाती थी और मेरे लिए सर्वथा भिन्न समूह होते थे। ईसाई विश्वविद्यालय के तरुण छात्र ईसाइयों के लड़के थे और उन्हें छात्रवृत्तियां मिलती थीं, या वे धनियों के पुत्र थे जो पढ़ाई की मोटी फीस देने में समर्थ थे। वे सब कम से कम अंग्रेज़ी काफी अच्छी तरह समझ लेते थे और वे प्रायः बन्दरगाह वाले नगरों से आए थे और कुछ-कुछ सर्वराष्ट्रीय या कास्मोपालिटन थे तथा उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि निश्चय ही रूढ़िवादी थी। दूसरी ओर राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के छात्र सब के सब गरीब थे और अंग्रेज़ी बहुत ही थोड़ी जानते थे और पढ़ाई की कोई फीस नहीं देते थे। उनमें से अधिकतर को खाना भी अधिक नहीं मिलता था। वे एक तरह की नीली सूती पोशाक पहनते थे जो बाद में 'सन यात-सेन पोशाक' के नाम से प्रसिद्ध हुई। सर्दियों में वे ठिठुरते थे और मुझे भी सर्दी सहनी पड़ती थी क्योंकि उस भवन में गर्मी का प्रबन्ध न था और जब खिड़कियों के शीशे टूट जाते थे तब उनके स्थान पर दूसरे नहीं लगाए जाते थे जबकि ईसाई विश्वविद्यालय में हर चीज़ तरतीब से थी और गरम करने की व्यवस्था थी और बड़ा आराम था। पर मुझे अपने प्रान्तीय विश्वविद्यालय के काम में कहीं अधिक आनन्द आता था क्योंकि वहां मेरे छात्र सीखने के लिए उतावले होते थे और वे मेरे आने की उत्सुकता से प्रतीक्षा करते और कक्षा के बाद मुझे रोकने की कोशिश करते थे।

उनकी अंग्रेज़ी प्रायः समझ में आने लायक न होती थी और यदि मैं चीनी भाषा बोलना न जानती होती तो मैं उन्हें नहीं पढ़ा सकती थी। फिर भी वे अंग्रेज़ी बोलने के लिए उत्सुक रहते थे और इस प्रकार हम संघर्ष करते जाते थे। वे विचारवान् और प्रश्नशील तथा सजीव तरुण और तरुणी थे और मैंने ईसाई विश्वविद्यालय के गम्भीर और सिर हिलाकर मानते जाने वाले पुरुष छात्रों की अपेक्षा इनसे कहीं अधिक सीखा। मैं जब लौटती, तब मेरा शरीर सर्दी से जमा हुआ, पर हृदय उत्साह से पूर्ण और मन उद्दीप्त होता, क्योंकि मेरे और उन तरुण छात्रों के—जो बहुत हल्का कपड़ा पहनते और बहुत मामूली खाना खाते थे— बीच में कोई रुकावट न थी। वे दुनिया की हर चीज़ के बारे में बातचीत करना चाहते थे और हम बातचीत करते थे। अब भी मुझे उनमें से कुछ के, जो कम्यूनिज़्म से बच गए हैं, पत्र आते हैं यद्यपि उनमें से अधिकतर उन युद्धों और क्रान्तियों में मर गए हैं जो हमारे ऊपर हो गुज़री हैं।

उन दिनों सन यात-सेन अभी जीवित थे और देश में एकता लाने का यत्न कर रहे थे। पर दक्षिण में वे पीछे हट रहे थे। नानकिंग में हम युद्धनायक सन चुआन फांग के शासन में रहते थे। यह एक भावुक आदमी था जो देश के अनेक टुकड़ों के मालिक बने अधिकतर युद्धनायकों से छोटा और कुछ दृष्टियों से कम अत्याचारी था, पर फिर भी वह युद्धनायक था। पर हमें तब तक कोई परेशानी न थी जब तक हमारे युद्धनायक की किसी पड़ौसी युद्धनायक से लड़ाई न हो और जिसे इतिहास में अपखण्डन या टुकड़े-टुकड़े होना कहा जाता है। उसका काल मुझे और चीनियों को बहुत स्वाभाविक लगता था। चीन के, जैसा कि मैं बता चुकी हूं, राजवंशों के बीच की कालों में सदा अनेक टुकड़े हो जाते थे और युद्धनायक उसके मालिक बन जाते थे और जनता सदा की तरह धीरज रखती और घटनाओं के अपने-आप आगे बढ़ने की प्रतीक्षा करती। धार्मिक विचार के बिना भी सामान्य चीनी की भगवान् या नियति में अनिर्दिष्ट आस्था रहती थी और वह यह मानता था कि उसकी इच्छा के बिना कुछ नहीं हो सकता। इसका अर्थ यह था कि अन्त में जो कोई भी राष्ट्र का नेतृत्व संभालता, वही नियति की इच्छा के कारण सर्वोत्तम होगा। इधर पारिवारिक जीवन चलता रहता जो सदा की तरह राष्ट्र का केन्द्र और आधार था, और हमारा युद्धनायक हमारे मामलों में दखल नहीं देता था।

मेरी अपनी दिलचस्पी कभी राजनीति में न रही, बल्कि नर-नारियों में रही

है और इसलिए मैं साहित्यिक क्रान्ति के बारे में ही गहराई से चिन्तित रही। १९२० तक बोलचाल की भाषा नये युग की स्वीकृत लिखाई की भाषा हो गई। प्रश्न यह था कि क्या वास्तविक साहित्यिक कृतियां बोलचाल की भाषा में लिखी जा सकती हैं। पुराने ढंग के विद्वान् अब भी यह मानते थे कि इसमें वेन-ली, या प्राचीन लेखन-शैली की तरह अर्थ-व्यंजनाएं कभी अभिव्यक्त नहीं हो सकतीं। पश्चिम की शिक्षा पाए हुए तरुण विद्वानों को यह सिद्ध करना था कि वे अर्थव्यंजनाएं प्रकट की जा सकती हैं। अब तक यह भाषा केवल पत्रिकाओं और अखबारों के लेखन में प्रयोग में लाई गई थी। इसमें भी हू शिह नई विचारधारा का नेता था क्योंकि उसने अपनी प्रसिद्ध रचना 'चीनी दर्शन के इतिहास की रूपरेखा' इसमें लिखनी आरम्भ की। अफसोस कि यह पूरी न हो सकी, पर पहली जिल्द से पुनः यह सिद्ध हो गया कि बोलचाल की यह चीनी भाषा बड़ी सुन्दर, स्पष्ट और अलंकृत लिखित भाषा, लचीली और जीवित भाषा बन सकती है और गहरे से गहरे अर्थ तथा विचार प्रकट कर सकती है।

जब एक बार हू शिह ने नई लिखित भाषा का महत्त्व प्रदर्शित कर दिया, तब तरुण चीनी लेखक उसके पद-चिह्नों पर दौड़ पड़े और बहुत सारी प्रायोगिक सामग्री पुस्तकों के रूप में छपी। इसमें से ज़्यादातर घटिया थी, यह मैं स्वीकार करती हूं और इस निराशाजनक तथ्य के पर्याप्त कारण थे। जो तरुण चीनी अपने-आपको आधुनिक कहते थे, वे विद्रोह और आकांक्षाओं से पूर्ण अस्पष्ट भावनाओं से भरे थे, पर वस्तुतः उनके पास अब भी कहने के लिए कुछ न था। उन्होंने अपने-आपको अपनी परम्परागत जड़ों से बहुत अधिक एकाएक विच्छिन्न कर लिया था और उन्हें बहुत जल्दी-जल्दी और ऊपर-ऊपर से पश्चिमी संस्कृतियों का प्रशिक्षण मिला था। यह ज़रूरी था कि जब उन्होंने लिखना शुरू किया तब उन्होंने अनुकरण करते हुए लिखा और क्योंकि उन्होंने अपने महान् चीनी अतीत के अपने ही साहित्यकारों का अनुकरण करने से मुंह मोड़ लिया था, इसलिए उन्होंने पश्चिमी लेखकों का अनुकरण किया जो उनके आधुनिक या पश्चिमी बनने के संकल्प के बावजूद, उनके लिए विदेशी थे। असल में आधुनिक चीनी कोई न था। वे केवल पश्चिमी रंग में डूबे चीनी थे। उन दिनों उस समय कितनी झल्लाहट होती थी जब आप एक के बाद दूसरा बहुत प्रशंसित चीनी उपन्यास खोलते और यह देखते कि उसमें किसी पश्चिमी उपन्यास के चुराए विचारों के अलावा कुछ नहीं है!

उस समय कितनी निराशा होती थी जब आप किसी तरुण चीनी नाटककार के किसी उत्सुकता से प्रतीक्षित नाटक को देखने जाएं और वहां यह देखें कि यह तो यूजीन ओनील का नाटक है जिसकी असलीयत चीनी नामों से नहीं छिपाई जा सकी !

क्योंकि मौलिक कार्य कुछ विशेष नहीं था, इसलिए अनिवार्यतः नये लेखकों का अधिकतर कार्य शीघ्र ही यह हो गया कि एक-दूसरे की और पश्चिमी पुस्तकों की साहित्यिक आलोचना करते रहें और वह भी उथली चीज़ होती थी। गेटे का 'सारोज़ आफ वर्थर' उपन्यास ज़्यादातर तरुण चीनियों की मनोवृत्ति के उपयुक्त प्रतीत होता था और उन्हें समझने का यत्न करते हुए मैंने सैकड़ों चीनी 'सारोज़' पढ़े। यह उपहासास्पद हो गया और फिर भी ये तरुण और तरुणी इतनी गम्भीरता से लिख रहे थे कि उपहास करने का साहस न होता था। व्यक्तिगत जीवन में पश्चिमी कवियों की बाहरी नकल करने का भी फैशन हो गया और एक सुन्दर तथा कुछ प्रसिद्ध और निश्चय ही बहुत लोकप्रिय तरुण कवि 'चीन का शेले' कहलाने में अभिमान अनुभव करता था। वह मेरे रहने के कमरे में बैठा घण्टा-घण्टा भर बातचीत करता हुआ अपने सुन्दर हाथ मनोहर और भावसूचक मुद्राओं में हिलाया करता था और अब भी मुझे जब उसका ध्यान आता है, तब पहले उसके हाथ दिखाई देते हैं। वह उत्तरी चीन का ऊंचे कद वाला और देखने में काव्यों में वर्णित सौन्दर्य से सम्पन्न था और उसके हाथ बड़े और स्त्री के हाथ की तरह पूर्ण सुन्दर आकार के और चिकने थे और मुझे निश्चय है कि उन्होंने कभी किसी वास्तविक हाथ की मेहनत का अपराध नहीं किया था क्योंकि हमारे तरुण चीनी विद्वान् कम से कम एक इस मामले में पुरानी परम्पराओं को कायम रखे हुए थे। मुझे यह कहते दुःख होता है कि हमारा चीन का शेले जवानी में मर गया—उसमें एक तरह की अपनी शक्ति थी और यदि वह शेले बनने की अवस्था से आगे बढ़ गया होता तो वह अपने असली रूप में आ सकता। पर अपनी पंख लगाने की कामना के कारण, वह सबसे पहले विमान की सवारी करने वालों में था, और एक दुर्घटना में मर गया।

परन्तु आने वाले स्वच्छंदतावाद या रोमांटिसिज़्म ने अपने-आपको धीरे-धीरे शुद्ध कर लिया और सबलतम मस्तिष्क अपने ही लोगों पर लौटने लगे। चाऊ शू-जेन (जो अपने-आपको 'लू हसुन' कहता था) शायद सबसे पहले यह समझ सका कि चाहे उसे प्रेरणा पश्चिमी साहित्य की मारफत मिले पर वह अनुकरणात्मकता से

बच तभी सकता है यदि वह अपने नये प्राप्त भावों को अपने ही लोगों पर लागू करे। इस प्रकार उसने सामान्य आदमी के बारे में रेखाचित्र और कहानियां तथा अन्त में उपन्यास लिखने शुरू किए। कुओ मो-जाऊ मेरा अपना प्रिय लेखक बन गया हालांकि कुछ निन्दक प्रवृत्ति या सिड़ीपन भी उसमें था, जो कभी-कभी केवल खण्डनात्मक होता था। मुझे उस प्रतिभावान् मस्तिष्क का ध्यान आता है जिसकी आदत थी अधिक से अधिक खरापन, और जिसे अत्यधिक उत्साह था सत्य का, और मैं यह आश्चर्य किया करती हूं कि वह आजकल अपने देश के कम्यूनिस्ट शासन में कैसे रह पाता है। मैं सोचती हूं कि क्या उसका मुंह बन्द कर दिया गया है या वह स्वयं औरों की तरह मन मारकर नये जादूगरों का अतिरंजनापूर्ण और निश्चय ही मजबूरन स्तुतिगान करने लगा है। और मुझे यह विश्वास नहीं होता कि तिंग लिंग और पिंग ह् सिन, वे दो अटल और निर्भीक लेखिकाएं जिनपर मुझे गर्व हुआ करता था, बदल गईं। पर मुझे कौन बता सकता है? यह दूसरा जगत् है और मुझे इसकी जानकारी नहीं है। अब उन सब बहादुर तरुण चीनी पुरुष-स्त्रियों के नाम लिखना बेकार है जिन्होंने अपने देशवासियों के मानसिक उद्बोधन का नेतृत्व किया था, और जो या तो मर चुके हैं अथवा जीवित ही मृत्यु के मध्य हैं और भूमण्डल के वर्तमान विभाजन के द्वारा हमारे ज्ञान से विच्छिन्न हो गए हैं। मुझे इतना याद है कि उनसे मुझे अपनी और उनकी उस समय की सांझी दुनिया का स्वच्छतम दर्पण प्राप्त होता था और उनके तथा उनकी पुस्तकों के द्वारा मैंने उन चीज़ों को समझा जिनकी अन्यथा कोई व्याख्या शायद न हो पाती।

यह एक विशेष बात थी कि उनकी पुस्तकें छोटी और यहां तक कि उपन्यास भी छोटे होते थे, जैसे मानो लम्बी पुस्तकें लिखने के लिए उनके पास समय न हो। प्रत्येक नये भाव, प्रत्येक नये ज्ञान को जल्दी से पुस्तक के रूप में ले आया जाता था और एक पुस्तक पूरी करने का मौका भी न मिलता कि दूसरी सिर पर आ जाती। कितने ही प्रकाशन-घर नये खड़े हो गए और मेरे नगर में किताबों की दुकानों पर सस्ती छोटी-छोटी कागज़ की जिल्द वाली पुस्तकें भरी रहने लगीं। मैं एक डालर में एक टोकरी किताबें खरीद सकती थी और कई दिन तक पढ़ती रह सकती थी। और इस कमखर्च सौदे ने मुझे महंगी पुस्तकों के बारे में तभी से अधीर बना दिया है। मुझे सबसे अधिक खुशी तब होती है जब मुझे यह पता चलता है कि मेरी कोई पुस्तक पचास सैन्ट में या इससे भी आगे पचीस सैन्ट में मिल सकती है। कोई जाति तब

तक शिक्षित क्या सुसंस्कृत भी नहीं हो पाती, जब तक पुस्तकें इतनी सस्ती न हों कि हरएक उन्हें खरीद सके।

साहित्यिक क्रान्ति का एक मनोरंजक पहलू था, जिसका चीन के आधुनिक मानस पर स्थायी प्रभाव पड़ा है। कन्फ्यूशियस की चलाई हुई सब बातों की परम्परा के तिरस्कार का यत्न करते हुए ये तरुण आधुनिक लेखक खरे हो गए और उन्होंने भूतकाल के पुराने नैतिकतावादी विचारों का सर्वथा खण्डन किया। मैं समझती हूं कि कन्फ्यूशियस से विद्रोह, जो कम्यूनिज़्म की ओर प्रथम झुकाव का भाग वन गया था, तरुणों के इस अजेय संकल्प में आरम्भ हुआ कि वे नैतिक होने का सारा प्रदर्शन करने से इन्कार करते थे क्योंकि उन्हें अपने बुज़ुर्ग ऐसे पाखंडी प्रतीत होते थे। उन्होंने अपने मन की अधिक से अधिक निजी और भीतरी अवस्थाओं का उद्घाटन करना शुरू किया और वे अपने वर्णनों और अपनी घोषणाओं, अपनी भावनाओं और अपने कार्यों का लेखन करके प्रसन्न होते थे जिससे उनके माता-पिताओं और बुज़ुर्गों को गहरी चोट पहुंचती थी। फिर भी यह एक इलाज का सिलसिला था। उन्हें अतीत के नैतिकतावादी आदर्शों की इतनी अधिक शिक्षा दी गई थी और उनका इतना अधिक अभ्यास कराया गया था कि प्रायः ऐसी हालत थी जैसे वे अब अपने-आपको प्रायः मजबूर अनुभव करते थे कि अपने कपड़े फाड़कर फेंक दें और सड़कों पर नंगे चलें। कन्फ्यूशियस का उन्होंने जो प्रचण्ड खण्डन किया, उसकी कम्यूनिस्टों के धर्म के तिरस्कार से तुलना बड़ी दिलचस्प है, क्योंकि कन्फ्यूशियस ने (यद्यपि वह पुरोहित न होकर दार्शनिक था) चीनी समाज और भावी सन्तान का ऐसा आधार-चक्र बनाया था जिसका परिणाम धार्मिक और नैतिक था। मुझे डर है कि पुनः सन्तुलन आने में बड़ा समय लगेगा और चीनी लोग पुनः यह अनुभव करने लगेंगे कि उनपर अपने महान्तम व्यक्ति कन्फ्यूशियस का कितना बड़ा ऋण है। पर फिर भी यह न समझना चाहिए कि यह विद्रोह आचार या नैतिक आदर्श के विरुद्ध था—बल्कि बिल्कुल उल्टी बात थी। अनेक शताब्दियों के बाद कन्फ्यूशियन धर्म प्रायः पूरी तरह ऊपरी रह गया था। इसके नैतिक नियम भी प्रायः दिखावा मात्र रह गए थे और क्रुद्ध नौजवानों ने अपने बुज़ुर्गों के इन गुणों से विद्रोह किया और विद्रोह करने में उन्होंने कन्फ्यूशियस को भी खिड़की के बाहर फेंक दिया। रूस में कट्टर रूढ़िवादी चर्च का भ्रष्टाचार और ढकोसलेबाज़ी भी इसी प्रकार धर्म के विरुद्ध उस विद्रोह की भयंकरता का उसी

तरह आसानी से समझ में आने वाला कारण बन गए। कारण यह है कि मनुष्य की आत्मा हर बच्चे में नई पैदा होती है और हर प्राणी में एक आयु होती है, यदि उसे बहुत छोटी आयु में बिगाड़ न दिया गया हो—उस आयु में कुछ समय उसे सच और झूठ का भेद साफ दिखाई देता है और ढकोसलेबाज़ी और पाखण्ड पर उसे क्रोध आता है। वह उन्हें माफ नहीं कर सकता जिन्हें सच्चा होना चाहिए, पर हैं झूठे। मैं समझती हूं कि यह क्रोध सारे इतिहास में क्रान्तियों का पहला कारण रहा है।

साहित्यिक क्रान्ति में अखबारों के असाधारण महत्त्व के स्थान की चर्चा मुझे यहां करनी होगी। जब मैं छोटी थी, तब हमारे पास पढ़ने के लिए शांगहाई में अंग्रेज़ी अखबार ही होते थे। मेरे पिता को 'दि चाइनीज़ इम्पीरियल गज़ट' मिल जाता तो वे उसे पढ़ते, पर इसमें अदालती खबरों को छोड़कर कोई और खास चीज़ नहीं होती थी। इसके बाद वे दीवारों के अखबार पढ़ते थे जो शहर के मुख्य द्वार के निकट चिपका दिए जाते थे, और निरे बुलेटिन होते थे। परन्तु अब हर बड़े शहर में पश्चिमी नमूने के अखबार निकले। क्योंकि बोलचाल की भाषा ही स्वीकृत लिखित भाषा थी, इसलिए उन्हें पढ़ना आसान होता था। इसका परिणाम यह हुआ कि साक्षर लोगों ने अखबार पढ़ने शुरू किए और वे उन लोगों को भी खबरों के बारे में बताने लगे जो पढ़ नहीं सकते थे। जगह-जगह यह दृश्य दिखाई देता था कि किसी खूब भरी हुई चाय की दुकान पर एक आदमी एक कोड़ी या इससे अधिक अनपढ़ों को अखबार पढ़कर सुना रहा है। सच्ची बात तो यह है कि पढ़ना-लिखना तब तक समय काटने के एक विलास की कोटि का साधन था जब तक साहित्यिक क्रान्ति ने इसे काम की चीज़ नहीं बना दिया और किसी व्यवहारनिष्ठ आदमी के लिए ऐसे थोड़े-से चुने लोगों के लिए उपयोगी कौशल की कोई आवश्यकता न थी। अतः अब, जब कि अखबार बोलचाल की भाषा में छपते थे जिससे पढ़ी हुई चीज़ समझ में आती थी, हर एक चाहता था कि मैं पढ़ सकूं और ज्ञान के इस साधन के लिए स्त्रियों में भी इच्छा पैदा हो गई। उन दिनों जवान तथा बूढ़ी सब तरह की स्त्रियों को कुछ अक्षर इसलिए पढ़ने की कोशिश करते देखकर कि जिससे वे महसूस कर सकें और कह सकें कि वे पढ़ सकती हैं, मेरा हृदय प्रफुल्लित हो जाता था। अखबार प्रायः भरोसे के अयोग्य और एकपक्षीय होते, पर कम से कम उनमें घटनाओं और स्वार्थों के बारे में चीनी दृष्टिकोण मिल सकता था। इनमें से कुछ

अखबार स्वयं लेखकों ने निकाले और इसी प्रकार बहुत-सी नई प्रकाशन-कम्पनियां लेखकों के समूह-मात्र थीं, पर फिर भी वे इस कारण कम महत्त्वपूर्ण न थीं। मुझे याद है कि लेखक सदा अपने संगठित समाज तथा क्लब बनाते रहते और मुझे मालूम होता कि वे अपनी पत्रिकाओं और पत्रों में मतभेदों में अपनी शक्ति बरबाद करते थे। उनके मतभेदों के बावजूद मुझे उनमें एक बृहत्तर एकता की उगती भावना दिखाई देती, और मैं भयभीत थी। सम्पूर्ण क्रान्ति अब बिल्कुल स्पष्ट सामने दिखाई देने लगी और मुझे इसका रूप लक्षित नहीं होता था। सच पूछिए तो तरुण चीनी मानस में होने वाला विक्षोभ, जो नये प्रकाशनों में रूप ग्रहण कर रहा था, निश्चय ही किसी न किसी प्रकार की हिंसा में सिर के बल कूद पड़ने वाला था, और बुज़ुर्ग लोग अपने लड़कों-लड़कियों को देखकर, जिन्हें वे अब नियन्त्रण में न रख सकते थे, अधिकाधिक विमूढ़ होते जा रहे थे। यदि कोई पिता कन्फ्यूशियस का उद्धरण देकर अपने पुत्र की घृणा का आवेग देखने को मजबूर होता तो फिर मदद पाने के लिए वह किधर मुड़ सकता था।

तरुणों में केवल अपनी परम्पराओं का ही सार्वजनिक रूप से उपहास न था। पश्चिमी साहित्यकारों के प्रति उनका पहला अन्धा और रोमाण्टिक अनुराग प्रथम महायुद्ध समाप्त हो जाने के बाद दूर हो गया और चारों ओर लोगों की आंखें खुल गईं। पश्चिमी संस्कृतियों का भी क्या मूल्य है, यह प्रश्न तरुण चीनी संपादकीय लेखों और वादविवादों में पूछते थे, जबकि पश्चिमी राष्ट्र जंगली लोगों की लड़ाइयों की तरह क्रूर और असभ्य हत्या तथा विनाश का ताण्डव कराने वाले युद्धों में जूझते रहते हैं? अब उन्होंने कहा कि चीनी लोग जिन आदर्शों की खोज में हैं, वे योरुप में नहीं मिल सकते पर यदि योरुप में नहीं मिलेंगे तो कहां मिलेंगे?

मानो इसके उत्तर के रूप में पहले महायुद्ध के अन्त में अनगढ़ और खतरनाक आदर्शवाद की एक लहर पर रूसी क्रान्ति फूट पड़ी। तरुण चीनियों ने देखा कि रूस में उनके ही जैसे तरुण बुद्धिजीवियों ने किसानों को अपना साथी घोषित किया और संयुक्त विद्रोह के बल से उन्होंने एक नई संस्कृति तथा जीवन का निर्माण करने की आशा में परम्परागत शासन को उखाड़ फेंका। 'सामन्तशाही' जो चीन के आधुनिक लेखकों और विचारकों के लिए भी खास बला थी, खत्म कर दी गई और इसके साथ रूसी कम्यूनिस्टों ने घोषणा की 'पूंजीवादी साम्राज्यवाद'। गलियों में किसी गोरे आदमी या स्त्री के गुज़रने पर बच्चे चिल्लाकर 'विदेशी शैतान' की जो

आवाज़ें कसा करते थे उनसे मैं कितनी ऊब गई थी ! 'ता ताओ ती कुओ चू आइ' 'साम्राज्यवाद मुर्दाबाद ! ' बच्चे सोचते थे कि यह कोई शाप है और नौजवान लोग इसमें निहित घृणा से अपने को उत्तेजित करते थे। मैं कहती हूं कि इसका अर्थ उनमें से बहुत थोड़े लोग जानते होंगे, पर उन्हें यह धुंधली धारणा थी कि रूस के सब लोग अब धनी हैं और धनी लोग शहर की सड़कों और गांव के खेतों में गन्दा काम कर रहे हैं।

उनका यह विश्वास पक्का हो गया क्योंकि जब से रूस में बोलशेविक लोग सत्तारूढ़ हुए, तब से सैकड़ों दयनीय बाइलो-रूसी शरणार्थी चीन में दक्षिण की ओर लगातार आ रहे थे और बन्दरगाह नगरों में बस रहे थे। जब मैं नान्ह सूचाऊ में रह रही थी, तब भी उन्हें जानती थी। कभी-कभी दरवाज़े पर कोई ठाप पड़ती और जब मैं दरवाज़ा खोलती, तब देहली पर पुरुषों और स्त्रियों का और शायद बच्चों का भी उदास छोटा-सा झुंड देखती। ये रूस के उच्चवर्गीय लोग थे जो निर्वासित होकर आए थे। वे विमूढ़ और बर्बाद लोग थे, पर फिर भी भीख मांगते हुए भी, जो कुछ उन्हें दिया जाता, वे उसपर गर्व से असन्तोष प्रकट करते थे। 'क्या, आपके पास इससे अच्छे जूते नहीं हैं।' वे पूछते थे या किसी कपड़े या पोशाक की बेचैनी से जांच-परख करते थे। सारी उमर उन्होंने दूसरों से सेवा-टहल कराई थी और अब यह एक दुःस्वप्न ही था कि उनके बड़े मकान और आराम की चीज़ें सदा के लिए उनके हाथ से निकल गई थीं।

तरुण चीनी धनी गोरे लोगों की यह दुरवस्था देखकर खुश होते थे, पर वृद्ध चीनी लोग प्रायः सहानुभूति दिखाते। शायद वे जो कुछ देख रहे थे उसको भविष्य-संकेत समझ रहे थे। मुझे याद है कि एक बार उत्तरी चीन में, जहां मैं एक सम्पन्न बड़े प्राचीन तथा प्रसिद्ध घर में मिलने गई थी, बूढ़ी दादी एक दिन मुझे बड़े नक्काशीदार द्वार के बाहर ले गई और एक गहरी खाई मुझे दिखाकर बोली :

'वहां मुझे दो बार छिपना पड़ा। एक बार तो अपने माता-पिता के साथ जब हमारी ज़मीन के किसान हमारे विरुद्ध खड़े हो गए और दूसरी बार तब जब मेरे अपने बच्चे छोटे थे।'

उसकी वृद्ध तर्जनी, जिसपर लम्बा गोल नाखून था, संकेत करते हुए कांप नहीं रही थी। 'और वहां', वह आगे बोली, 'फिर मेरे बच्चों के बच्चे छिपेंगे क्योंकि गरीब सदा धनियों के विरुद्ध होते हैं।'

खैर, इस प्रकार वे बाइलो-रूसी उच्चवर्गीय लोग चीनी नगरों में जहां-तहां पहुंच गए। वे गरीबी में रहे और बीमार हो गए और मर गए तथा उनकी सुन्दर पुत्रियां शांगहाई और तीन्तसिन के सस्ते काफी-हाउसों में नाचने लगीं और तरुण चीनी आधुनिक पुरुषों ने उनसे टांगो नाच और फौक्सट्रौट नाच सीखना शुरू किया। कद्दावर सुन्दर बाइलो-रूसी लड़के युद्धनायकों और धनी चीनी व्यापारियों के नौकर और अंगरक्षक बन गए तथा उनकी जीवनरक्षा करने लगे और उनके बच्चों को महंगे प्राइवेट स्कूलों में पढ़ने जाने पर अपहृत होने से बचाने लगे। इधर चीन के क्रांति-पक्षपाती लोग यह कह रहे थे कि संसार में केवल रूसी लोग ही इतने बहादुर निकले कि उन्होंने ज़मींदारों और भ्रष्ट शासकों के विरुद्ध खड़े होकर उनसे ज़मीन छीन ली और पुराने अन्धविश्वासों से भरे धर्मों को उखाड़ फेंका और ईश्वर के स्थान पर विज्ञान को प्रतिष्ठित किया। उन दिनों चीन के आधुनिक तरुण लोग रूस का बेतहाशा गुणगान करते थे और मुझे एक सीधे-सादे अमरीकन होने में, जिसे कम्युनिज़म और उसके कार्यों के बारे में सुनी बातें पसन्द न थीं, असुविधा होने लगी।

मैं मानती हूं कि रूसी क्रान्ति में इतनी तीव्र दिलचस्पी होने का कुछ कारण था। यद्यपि हममें से उन लोगों को, जो इतिहास जानते थे, चीन के प्रति रूस की प्राचीन आकांक्षा का बड़ी अच्छी तरह स्मरण था, परन्तु तरुण चीनी इतिहास के सबक से उतने ही अधीर थे जितने हमारे तरुण अमरीकन और इसलिए वे केवल उस बात की ओर ध्यान देते थे जो उनके जीवन-काल में और इसलिए उनके अपने ज्ञान के दायरे के भीतर हो रही थी। गेडरीन सूअर की तरह उन्हें अपने विनाश के मुख में दौड़ जाने से नहीं रोका जा सकता था।

इससे मैं १९२० और १९३० के बीच की दशाब्दी की दूसरी स्मरणीय तिथि पर आ जाती हूं। यह भी एक मृत्यु की ही तिथि है। १९२५ में सन यात-सेन की पीकिंग में जिगर के केन्सर से मृत्यु हो गई और वे वहां इस आशा से गए थे कि अन्त में वे एक सफल युद्धनायक फेंग यू-ह्सियांग की मदद से देश को संयुक्त कर सकेंगे—फेंग यू-ह्सियांग वह उलझनदार विशालकाय कुछ परिहासप्रिय व्यक्ति था, जिसने कम से कम अस्थायी रूप से, दूसरे युद्धनायकों को जीत लिया था और एकाएक इसके बाद अपने-आपको गणतन्त्रीय शासन-पद्धति का पक्षपाती घोषित करके क्रान्तिकारी नेता को अपनी मदद के लिए आने का निमन्त्रण दे दिया था।

अफसोस कि दोनों के मिलने का कोई फल निकलने से पहले ही सन यात-सेन मर गया।

इस व्यक्ति की कहानी कई बार कही गई है और निश्चय ही वह फिर से यहां कहने की आवश्यकता नहीं है। अपने ढंग से सन यात-सेन मेरे लिए उसी तरह एक विशिष्ट व्यक्ति रहे थे जैसे कभी वृद्ध राजमाता थी, पर रोमाण्टिक तत्त्व सर्वथा भिन्न थे। सन उसी प्रकार के व्यक्ति थे जैसे ईसाई-स्कूलों से निकला करते थे, यद्यपि वे कम से कम अपने निःस्वार्थ आदर्शवाद की प्रबल शक्ति की दृष्टि से औसत आदमी नहीं थे। फिर भी, कोई भी बड़ा आदमी जो कुछ पहले हो चुका है उससे बिल्कुल पृथक् एकाकी नक्षत्र के रूप में नहीं होता और सन यात-सेन अकेले कभी वह सफलता न प्राप्त न कर सकते जो उन्होंने अपने थोड़े-से जीवन-काल में प्राप्त की। वे क्रान्ति की एक तरंग के शृंग थे और ऐसी तरंग सदा मानवीय घटनाओं की गहरी उर्मि का उठान होती है और ईसाई मिशनरी स्वयं उस उर्मि को बिना यह जाने बढ़ाते रहे कि वे क्या कर रहे हैं। वे लोग एक मन और एक प्रयोजन वाले नर-नारी थे और जब सौ वर्ष बाद भी यह मालूम हुआ कि विस्तीर्ण चीनी जीवन में ईसाई-मत की जड़ें नहीं जम रहीं, तब उन्होंने इसका कारण पता लगाने का यत्न किया। वे इस निश्चय पर पहुंचे कि उनकी विफलता का कारण अन्य धर्मों की शक्ति उतना नहीं है जितनी सारी चीनी संस्कृति है जो इतनी सशक्त, इतनी कसी हुई और इतनी दृढ़ है कि उसकी बुनियादों पर ही हमला करना होगा। इसलिए उन्होंने इसपर हमला किया और बहुत कुछ उसी तरह जैसे आधुनिक कम्यूनिस्ट इसपर फिर हमला कर रहे हैं। मिशनरियों ने स्कूल बनाए और उन्होंने चीनी बच्चों को यह सिखाया कि उनके अपने धर्म में अन्धविश्वास भरा है, और कि ईसाई ईश्वर के आगे उन्हें बुज़ुर्गों की आज्ञा नहीं मानना चाहिए क्योंकि यह ईश्वर ही एकमात्र सच्चा ईश्वर है। उन्होंने ये शिक्षाएं पश्चिमी जीवन की ऐसी ऐसी व्यावहारिक सुविधाओं के साथ लागू कीं जैसे अस्पताल, आधुनिक चिकित्सा, दुर्भिक्ष-सहायता, लड़कियों के बेबंधे पांव, विवाह में जीवन-साथी चुनने की आज़ादी। इन विचारों का प्रभाव बहुत भारी और गहरा हुआ।

मिशनरियों की तरह सन यात-सेन ईसाई भी थे और यथार्थ-निष्ठ भी। अर्थात् वे प्रार्थना करते थे और कभी-कभी अपनी मनचाही चीज़ पा लेते थे। जब वे वह नहीं प्राप्त कर पाते तब स्वयं काम करने चले जाते। फिर भी उनपर विदेशी धर्म का

बड़ा ऋण था। वह शिक्षा से बहुत बड़ी चीज़ थी। यह अपने राष्ट्रवासियों के लाभ के लिए आधुनिक सुधारों की बलिवेदी पर भीषण आत्मनिवेदन था। आरम्भ में वे विद्रोही नहीं, बल्कि सेवा करने के इच्छुक एक ईसाई थे। उन्होंने चारों ओर सब जगह दुःख, कष्ट और अन्याय देखा और जिसे लोग अपरिवर्तनीय कहते थे, उसे उन्होंने बदलने का बीड़ा उठाया। उन्होंने डाक्टर और सर्जन की शिक्षा प्राप्त की और सफल डाक्टरी का रोज़गार स्थापित किया। उस समय उन्हें अपने काम की असह्य मंदगामिता ने दबा लिया। अविरत परिश्रम जीवन भर करके भी वे सहायता के पात्र करोड़ों में से बहुत ही थोड़ों को मदद पहुंचा सकते थे। वे इस नतीजे पर पहुंचे कि अच्छा और आधुनिक शासन ही उनके देश को बदल सकता है। उन्होंने अपना धंधा छोड़ दिया और अपना जीवन एक इसी संकल्प में बिताया कि मांचू शासन को उखाड़ फेंका जाए और अपने देशवासियों को दूसरा अधिक अच्छा शासन कायम करने में मदद दी जाए, जिसके अधीन चीन शक्तिशाली हो सके।

इस अकेले भावना वाले पुरुष पर आज विचार करने पर दया और दुःख तथा एक अनचाही प्रशंसा अनुभव होती है। वह एक ऐसा आदमी था जिसे जिसने जाना, उसीने प्यार किया। वह अच्छा और अटल ईमानदारी वाला आदमी था और भ्रष्टाचार से भरे उस ज़माने में ये काफी विलक्षण गुण थे। सन यात-सेन के बारे में बुरी अफवाह की हवा कभी नहीं चली। उनपर किसीने अपने लिए धन जमा करने का शक नहीं किया। वे जहां कहीं जाते वहीं चीनी लोग उन्हें रुपया-पैसा देते थे जिससे वे उनके देश की मदद कर सकें और किसीको भी उनकी ईमानदारी पर शक न था। उन्होंने अपने पास लोगों का जमा किया, खास तौर से उन तरुण आधुनिक बुद्धिजीवियों को जिनके पास कहीं नौकरी तलाश करने की जगह नहीं थी, क्योंकि सरकारी प्रशासन में उनका परम्परागत स्थान अब उनके लिए खुला न था। और क्योंकि मिशन स्कूलों के पहले ग्रेजुएटों को परम्परागत विषयों, साहित्य और दर्शन तथा इतिहास की शिक्षा नहीं दी गई थी और उनके लिए सरकारी नौकरियों के दरवाज़े बन्द थे, इसलिए यह स्वाभाविक ही था कि वे सन यात-सेन के पास जमा हो गए, जिसका उद्देश्य खुद सरकार को उखाड़ फेंकना और संयुक्तराज्य अमरीका के नमूने के गणराज्य की स्थापना करना था। यदि वे सफल होते तो पश्चिमी शिक्षा पाए नौजवान उस शासन के पदों पर नियुक्त होते।

और सन यात-सेन ने उनका स्वदेश में भी और विदेश में भी स्वागत किया।

उन्हें भावनापूर्ण भाषण का सामर्थ्य ईश्वरीय वरदान के रूप में मिला था। वे जन्म-जात वक्ता था क्योंकि वे सदा यह विश्वास करते थे कि जो कुछ वे कहते हैं, वह सच है, और जिसका वे स्वप्न देखते हैं, वह सम्भव है। चीन भर में उसने तरुण बुद्धिजीवियों के बीच क्रान्ति के सेल या केन्द्र कायम कर दिए और संघर्ष तथा निराशा और पराजय के, जिनका मृत्यु ने जल्दी ही अन्त कर दिया, अनेक वर्षों में वे उनके नेता बने रहे। उनके जीवन की कहानी एक अर्पित करुण और अकेले आदमी की कहानी है। यह तो कहना ही होगा कि उन्हें विफलता हाथ लगी क्योंकि भावुक वक्ता और क्रान्तिकारी नेता शायद कभी संगठन-कर्ता और अपने ही स्वप्नों को साकार करने वाला आदमी नहीं होता।

जिस समय मैं ये शब्द लिख रही हूं उस समय मेरी पेन्सिलवानिया की पहा-ड़ियों पर शरत्कालीन वर्षा रिमझिम बरस रही है। झील का रंग स्लेटी है और इसके किनारे पीली आभा वाले सरपत के नीचे बगुला अपनी आदत के अनुसार एक टांग पर सिर लटकाए खड़ा है। वर्षों गुज़र गए हैं, फिर भी ऐसे स्पष्ट रूप से मानो आज सवेरे की ही बात है, मुझे सन यात-सेन की मृत्यु की याद है। वह गांधी जैसा महान् न था और कभी मैं सोचती कि उसके राष्ट्रवासी उसे भूल गए थे, पर जब वह मरा तब उन्होंने उसे याद किया और वह उनके लिए जो सपने देख रहा था, जिन्हें वह साकार न कर सका था, उन सबको भी याद किया, और उसके लिए शोक मनाया। और उसका स्थान कौन लेगा? और कोई नहीं था। वह चीनी क्रान्ति के लिए लेनिन बन गया। लोग एक-दूसरे से उसके बारे में बातें करते थे। कैसे उसने कष्ट उठाए थे? कैसे वह उनकी खातिर सदा गरीब रहा था? और उन्होंने अखबारों में उसके अन्तिम समय का ब्योरा पढ़ा। उसने हांफते हुए ये दुःख-भरे शब्द कहे थे—'मैंने सोचा था कि मैं अपनी राष्ट्रीय एकता और शान्ति कायम करने यहां आऊंगा। उसकी जगह एक बेहूदी बीमारी ने मुझे धर-पकड़ा है और अब मैं इलाज की पहुंच से परे हूं······व्यक्ति के नाते मुझे मरने या जीने से कोई फर्क नहीं पड़ता पर इतने साल मैंने जिस चीज़ के लिए संघर्ष किया, उसमें सफल न हो सकने से मेरा अन्तस्तल दुःखी है—मैंने ईश्वर का सन्देश-हर बनने का, अपने राष्ट्र-वासियों को समता प्राप्त करने में और आज़ादी हासिल करने में मदद देने का, यत्न किया है। तुम लोग जो जीवित हो, कोशिश करो—अमल में लाने की···।'

चीन में अच्छे आदमी के अन्तिम शब्द बहुमूल्य होते हैं। वे लकड़ियों पर खोदे

ग्रौर ग्रभिलेखों में लिखकर रखे जाते हैं। पर एक विदेशी डाक्टर ने सन यात-सेन से ग्राराम करने की प्रार्थना की ग्रौर वे कुछ देर सो गए। जब शाम से कुछ पहले वे जागे तब उनके हाथ-पांव ठण्डे थे। फिर भी वे रात भर जीवित रहे ग्रौर उन्हीं स्वप्नों में डूबे रहे। लोगों ने उन्हें बड़बड़ाते सुना, 'शान्ति—संघर्ष—मेरे देश को बचाग्रो—'। सवेरे वे मर गए। उनकी तरुण पत्नी उनके पास थी ग्रौर उनकी ग्रन्तिम नज़र उसपर ही टिकी थी।

हम उन ग्रन्तिम शब्दों को बार-बार पढ़ते ग्रौर रोते थे ग्रौर हम यह भूल गए कि वे सब कुछ न कर सके जिसकी ग्राकांक्षा उनके मन में थी। उन्होंने जो कुछ किया वह था ग्रपने-ग्रापको ग्रर्पित कर देना, ग्रौर उनकी ग्राकृति ग्राशा का प्रतीक बन गई थी। पर ग्राज जब मैं ग्रमरीकन दृश्यस्थली पर नज़र डालती हूं, तब उनके प्रभाव की विशेषता का गहरा विचार किए बिना नहीं रह सकती। उनकी सदा-शयता ग्रौर उनकी ईमानदारी ग्राज भी ग्रक्षुण्ण हैं, पर हम जानते हैं कि ये गुण परम ग्रावश्यक होते हुए भी काफी नहीं हैं। उन्हें ग्रपने देश के बारे में भी थोड़ी जानकारी थी। ग्रपने देशवासियों के प्रति निष्ठा होते हुए भी, बुनियादी तौर से, वे ग्रशिक्षित ग्रादमी थे, ग्रौर उनके ग्रज्ञान से लोगों को हानि हुई। उन्हें इतिहास की कोई धारणा नहीं थी ग्रौर इसलिए ग्रपने ज़माने के बारे में उनमें कोई निर्णय-बुद्धि नहीं थी। जब ग्रकेले सोवियत रूस ने मित्रता का प्रस्ताव किया, तब उन्होंने यह घोषणा की कि भविष्य में चीनी जनता को रूस की ही सहायता लेनी चाहिए।

कारण यह कि प्रथम महायुद्ध के बाद चीन में पश्चिमी राष्ट्रों का दबदबा जाता रहा—कुछ तो इसलिए कि चीनी बड़े युद्ध को नैतिक दिवालिएपन का प्रमाण मानते थे, ग्रौर कुछ इसलिए कि उसके परिणामों से उन्हें प्रत्यक्ष हानि हुई। साम्राज्यवादी जापान ने, जो तथाकथित लोकतन्त्रों के साथ रहा था, चीन-स्थित जर्मनी के प्रदेश संभाल लिए ग्रौर चीनी मुख्य-भूमि पर ग्रपने पांव जमाने का कार्य शुरू कर दिया। चीनी जनता इतनी क्रुद्ध हो गई थी कि जिनेवा में चीनी प्रतिनिधि को वर्साई की सन्धि पर हस्ताक्षर करने की हिम्मत न पड़ी। १९२० तक रूसी कम्युनिस्टों ने रूसी क्षेत्र पर ग्रपना पंजा कसकर जमा लिया ग्रौर इसके बाद उन्होंने एक चतुराई ग्रौर दूरदर्शिता की चाल चली। उन्होंने चीन में राज्य-क्षेत्रा-तीतता का ग्रधिकार त्यागने ग्रौर भविष्य में चीन से एक ग्रादरणीय बराबरी वाले की तरह व्यवहार करने का प्रस्ताव किया। एडोल्फ जोफ रूसी राजदूत बनकर

पीकिंग आया और उसने यह समाचार घोषित किया, और विदेशी राजदूतों ने तो उसकी उपेक्षा की, पर चीन की आम जनता तथा बुद्धिजीवियों ने समान रूप से उसका दावतों और मैत्री से स्वागत किया। इधर किसी भी पश्चिमी शक्ति ने सन यात-सेन की सहायता की अपील पर कान नहीं दिया। १९२१ में उन्होंने मांगना बन्द कर दिया और वे शांगहाई में जौफ से मिले और वहां उन्होंने औपचारिक रूप से सोवियत रूस की सहायता स्वीकार कर ली। चीन में कम्यूनिस्ट शासन नहीं होगा, सन ने कहा, क्योंकि उसका विश्वास था कि सोवियत अर्थ में कम्यूनिज़्म उनके राष्ट्र के लिए ठीक नहीं, पर नेशनलिस्ट या राष्ट्रवादी दल सोवियत सहायता स्वीकार करेगा, चीनी कम्यूनिस्ट दल को मज़बूत बनने देगा और इसका सहयोग स्वीकार करेगा। यह दल तरुण बुद्धिजीवियों में और फ्रांस में रहने वाले चीनी छात्रों में पहले ही बन चुका था। रूसी सलाहकारों की सहायता से कुओमितांग या राष्ट्रवादी दल को कम्यूनिस्ट नमूने पर अब ऊपर से नीचे तक पुनर्गठित किया गया—उसमें वही अनुशासन, वही प्रचार-कौशल और वही निर्दय राजनीतिक कमीसार रखे गए। अब लोकतन्त्र की या गणराज्य की कोई चर्चा नहीं सुनाई देती थी। इसके बजाय यह स्वीकार किया गया कि चीन में एकदलीय शासन की स्थापना की जाएगी, और कि बहुत समय तक प्रशिक्षण या 'जनता के लिए अभिभावकता' की स्थिति कायम की जाएगी।

मुझे याद है कि जब मैंने चीनी अखबारों में ऐसे समाचार पढ़े, तब मुझे कितनी गहरी चिन्ता हुई। तब इंगलिश अखबारों में इस बारे में कोई खास चीज़ नहीं होती थी और संयुक्तराज्य अमरीका से आने वाली पत्रिकाओं और साप्ताहिकों में मैंने इसकी कोई चर्चा नहीं देखी। मैं नहीं जानती थी कि मैं क्यों भयभीत थी। इसका यही कारण रहा होगा कि मैं सदा रूस की शक्तिशाली छाया को अनुभव करती थी। मुझे क्रान्ति से पहले की हुई वहां की यात्रा कभी नहीं भूली थी, जब घटनाओं का अनिवार्य रूप पहले ही पता चलने लगा था, और न मैं अपने पिता की यह भविष्यवाणी भूली थी कि रूस से ही उसका जन्म होगा, जिसे वे 'ईसा-विरोधी' कहते थे। मुझे इसका कुछ भी आशय पता न था, पर उन शब्दों में एक अपना ही आतंक था। और अब रूस मित्र बनेगा, मेरा अपना देश अमरीका नहीं! उन दिनों मेरी कितनी तीव्र लालसा हुई कि मेरी भी कोई आवाज़ हो, मैं भी चिल्ला सकूं और अपने देशवासियों को यह बता सकूं कि क्या हो रहा है, पर फिर भी मैं

क्या कहती और मेरी कौन सुनता ?

यह जानकारी बड़ी दिलचस्प है कि उसी समय एक खाते-पीते किसान का एक नौजवान लड़का था, जो पीकिंग में चेन तुह्‌ सियू के विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में सहायक के रूप में कार्य कर रहा था। उसका नाम था माम्रोत्से तुंग। और पेरिस में चाऊ-एन लाई छात्रों की पहली चीनी कम्यूनिस्ट टोली का सदस्य था। एक तीसरा आदमी चूतेह, जो एक धनी जमींदार का पुत्र था और एक युद्धनायक की सेना में अफसर था, जर्मनी में आधुनिक सैनिक विज्ञान की शिक्षा पा रहा था, और वहां वह भी कम्यूनिस्ट बन गया। जहां तक मेरा और मेरे मकान का सम्बन्ध था, अपने भय के बावजूद हमें सनयात-सेन की मृत्यु के बाद अजीब शान्ति के दो और वर्ष मिले।

मैं नहीं जानती कि मैं इन वर्षों में पूरी तरह अपने लेखन-कार्य में क्यों न डूबी। केवल इतना जानती हूं कि उस समय होने वाली घटनाओं ने ही मुझे निष्पक्ष दृष्टिकोण बनाने में असमर्थ कर दिया जो लेखक के लिए आवश्यक है। ये घटनाएं न केवल मेरे बाहरी जगत् में, बल्कि मेरे घर में भी हो रही थीं। अपने बच्चे के जन्म के बाद मुझे कुछ चिकित्सा के लिए, जो इस समय चीन में नहीं हो सकती थी, कुछ दिनों के लिए अमरीका जाना पड़ा। मैंने कुछ सप्ताह एक अस्पताल में बिताए और कुछ और सप्ताह उत्तरी न्यूयार्क में एक सादे फार्म की ग्रामीण शान्ति में बिताए। फिर मैं जल्दी से चीन लौट आई। अपनी माता की मृत्यु के बाद मुझे अपने पिता को, जो उस समय सत्तर वर्ष के थे, अपने पास लाने और रखने की व्यवस्था करनी भी ज़रूरी थी। इसका अर्थ केवल रहने से कहीं अधिक था क्योंकि उनका अपने कार्य को छोड़ने का कोई विचार नहीं था और उनके कार्य को भी उनके साथ लाना था। हमारे पुराने घर और उसके सब साहचर्यों और सामान को तोड़ना दुःखपूर्ण कार्य था और अपने पिता के लिए नये जीवन की व्यवस्था बहुत मृदुता और सावधानी से करनी थी क्योंकि यह बात उनके मन में न आती कि वे जिस मकान, में रहेंगे, उसके मुखिया न होंगे। यह भ्रम इस अभागे तथ्य के कारण कुछ कम नहीं हुआ कि वे अपने दामाद को पसन्द न करते थे; और प्राइवेट रूप में बहुत बार 'मैंने तुमसे कहा ही था' के ढंग की बातचीत में मुझे जतलाने में भी संकोच नहीं करते थे, जिसे मैं उनके प्रति अपने बढ़ते अनुराग और परिहास-प्रियता

के कारण ही सह पाती थी। पर मेरा पालन-पोषण अपने माता-पिता के प्रति चीनी कर्तव्य-बुद्धि के वातावरण में हुआ था और इससे मुझे बड़ी मदद मिली। अपने से बड़ों से तर्क नहीं किया जाता और न ऐसे शब्द कहे जाते हैं या ऐसा व्यवहार किया जाता है जिससे मां-बाप को दुःख हो। मुझे केवल एक बार की याद है, जब मैं अपने अस्वाभाविक अधैर्य को न संभाल सकी। एक दिन गर्मियों में तीसरे पहर, जब सूर्य अस्त हो चुका था, गर्मी अधिक थी और मैंने दूर से आते तूफान को देखकर मकान को आरामदेह करने के लिए उसमें ठण्डी हवा आने देने के वास्ते खिड़कियां खोल दीं क्योंकि तूफान पास आ जाने पर हमें उससे बचने के लिए सब दरवाज़े तथा खिड़कियां बन्द करनी पड़तीं। ज्यों ही मैंने एक खिड़की खोली, त्योंही मेरे पिता चुपचाप पीछे से आए और उन्होंने उसे बन्द कर दिया और इसका पता चलने पर मैं मुड़ी और मैंने कुछ सख्त शब्द कहे। उन्होंने धीरे से जवाब दिया कि मुझे कौच पर लेटे हुए सर्दी मालूम हो रही है और फिर मैंने उन्हें वे ही शब्द दुहराते सुना जो वे तब कहा करते थे जब मेरी मां का तेज़ स्वभाव उसके काबू में न रहता था, 'ओह, इस तरह मत बोलो!' मैंने उन्हें वाक्य पूरा नहीं करने दिया क्योंकि मेरे अन्तःकरण ने मुझसे विद्रोह कर दिया। मैं लपककर उनके पास गई और उनकी गर्दन में बांहें डालकर मैंने उनसे क्षमा मांगी और उन्हें वचन दिया कि खिड़कियां बन्द कर दी जाएंगी। यह छोटी-सी चीज़ है, पर आज तक मैं यह अनुभव करती हूं कि यह कभी न होती तो अच्छा था। जीवन इतना थोड़ा है, विशेष रूप से माता-पिता के साथ रहने के वर्ष और भी थोड़े हैं, और एक क्षण का भी दुरुपयोग नहीं होना चाहिए।

उन दिनों मेरा घर समस्याओं से भरा था क्योंकि एक ओर तो अपने बच्चे के बारे में मेरा भय बढ़ता जा रहा था और दूसरी ओर मुझे उसके पिता को उसका अपना स्थान और कार्य तलाश करने में मदद देने की ज़रूरत थी। अब भी चीनियों को खेती सिखाने का ढंग आसान न था और इतना ही काफी न था कि अमरीकन पाठ्य-पुस्तकों से अमरीकन खेती सिखा दी जाए। परन्तु सिखाने के लिए और था क्या? मुझे यह बिल्कुल साफ मालूम होता था कि आदमी ज़ो स्वयं नहीं जानता, वह दूसरों को नहीं सिखा पाता और एक दिन एक चिन्ताजनक सायंकाल को, जब इस समस्या का कोई हल दिखाई नहीं देता था, मैंने सुझाव रखा कि सबसे अधिक समझदारी की योजना यह होगी कि पहले चीनी खेती और ग्रामीण जीवन

के बारे में तथ्यों का पता लगाया जाए। चीनी कृषि अर्थ-व्यवस्था के विषय में कभी कोई प्रश्नावली प्रयोग में न लाई गई थी पर फिर भी ईसाई विश्वविद्यालय के कृषि-विभाग में शिक्षा पाने वाले छात्रों की भीड़ थी। मैंने, जो चीनी खेतों और देहाती लोगों के बीच रहकर बड़ी हुई थी, यह अनुभव किया था कि सीखने के लिए कितना कुछ था और हमारे तरुण चीनी बुद्धिजीवी अपने ही देश के ग्रामीण जीवन से कितनी दूर थे। किसानों के बेटे विश्वविद्यालयों में न आते थे और छात्र अधिक से अधिक ज़मींदारों के बेटे थे। असल में वे प्रायः सब धनी व्यापारियों या कालिज के प्रोफेसरों या पंडितों के बेटे थे। वे अपने देश के देहाती लोगों के बारे में जानते ही न थे। उन्हें यह भी पता नहीं था कि उनसे किस तरह बातचीत की जाती है या उन्हें क्या कहकर सम्बोधित किया जाता है। उस समय मेरा खून खौल जाता था जब कोई अनुभवशून्य तरुण बुद्धिजीवी किसी गौरवशाली वृद्ध किसान को 'ऐ, तू' के समानार्थक शब्दों से सम्बोधित करता था। अपने हाथों से काम करने वाले आदमी के लिए बुद्धिजीवी-वर्ग का अवमान हमारे तरुण चीनी बुद्धिजीवियों और रेडिकल या उग्रतावादियों में अपने पिताओं के ज़माने की कहीं अपेक्षा अधिक प्रबल था। मुझे यह प्रकट करने की तीव्र इच्छा अनुभव होती थी कि किसान आदर के पात्र हैं कि वे अनपढ़ होते हुए भी मूर्ख नहीं हैं क्योंकि अपने जीवन के विशेष ज्ञान में और समझदारी तथा दार्शनिक बुद्धि में वे कम से कम आधुनिक बुद्धिजीवियों से और बिला शक बहुत से पुराने पण्डितों से भी, बढ़कर हैं।

इस इच्छा ने मुझे उस योजना में यथाशक्ति सहायता करने के लिए प्रेरित किया जो क्रमशः रूप धारण कर रही थी। चीनी छात्रों को ग्रामीण जीवन के बारे में प्रश्नावलियां दी गई जिन्हें लेकर वे चीनी किसानों में गए और जब उत्तर प्राप्त हो गए, तब सारी सामग्री को इकट्ठा और व्यवस्थित किया गया और इनके निष्कर्ष चीनी अर्थ-व्यवस्था की एक छोटी पुस्तिका में प्रकाशित किए गए। जब शिकागो विश्वविद्यालय से यह पुस्तिका छपी तब इन्स्टीटयूट आफ पेसिफिक रिलेशन्स (प्रशान्त सम्बन्धों की संस्था) का ध्यान इसकी ओर खिंचा और इससे चीनी देहाती जीवन का अधिक व्यापक और सार्थक अध्ययन आरम्भ हुआ।

पर स्थिति वहां तक पहुंचने से पहले बहुत कुछ होना था। सुन्दर प्राचीन नानकिंग में शान्ति से रहते हुए, मेरे दिल में एक गहरी और अव्यक्त आशंका थी

कि ऐसी शान्तिपूर्ण स्थिति जारी नहीं रह सकती। यात्रियों तथा पुस्तकों और पत्रिकाओं के द्वारा महासागर पार करके ये अफवाहें आ गई थीं कि महायुद्ध के विध्वंस से पश्चिमी जगत् स्वयं भी हिल गया है। पहले का स्थायी अमरीकन जीवन जिसकी मुझे अपने छोटे-से कालिज के वर्षों में केवल झांकी मिल सकी थी, अब पहले वाला जीवन नहीं रहा था। अमरीकन लोग उस संसार से जिसमें औरों के साथ रहना बड़ा चिन्ताकारक था, पीछे हट गए और उन्होंने जिसे वे सामान्य जीवन मानते थे, उसे फिर से प्राप्त करने के लिए हताश प्रयत्न किया परन्तु अफसोस कि वे स्वयं ही ऐसे थे जो फिर कभी सामान्य अवस्था में न आ सके यद्यपि वे राष्ट्रसंघ (लीग आफ नेशन्स) से प्रायः पूरी तरह—इसके कुछ टेकनिकल और मानवमात्र के लिए उपयोगी हिस्सों को छोड़कर और सब हिस्सों से पूरी तरह—अलग हो गए थे। उदाहरण के लिए, मेरा भाई हर वर्ष का आधा समय जिनेवा में एक अन्तर्राष्ट्रीय सार्वजनिक स्वाथ्य-सेवा को रूप देने में सलाहकार के तौर पर खर्च करता था। राष्ट्रीय सार्वजनिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में उसका अपना अनुभव सफल और उल्लेखनीय रहा था। उसके द्वारा मुझे बहुत कुछ पता चला कि अमरीका के त्यागपत्र से पंगु हो जाने के बाद भी उसमें क्या कुछ होता रहा। वुडरो विल्सन की तरह उसका भी यह विश्वास था कि इस तरह हटना बुरे से बुरे रूप में देखें तो एक विलाशक घटना थी, और अच्छे से अच्छे रूप में देखें तो यह उसका केवल कुछ देर टलना था जिसकी, चाहे कामन सेन्स या व्यावहारिक समझदारी के नाते ही, सहयोग से बंधे राष्ट्रों की परिषद् के रूप में किसी दिन स्थापना अवश्यम्भावी थी। इस सबमें मुझे बड़ी गहरी दिलचस्पी हुई। मुझे अपने देश की इतनी कम जानकारी थी कि जो झांकियां मुझे मिलतीं, उनसे मैं सदा मुग्ध हो जाती और जिन थोड़े-से अमरीकनों को मैं जानती थी, जो अमरीका की जटिलताओं को समझते थे, उनके पीछे बेशर्मी से पड़ जाती थी। फिर भी मेरी प्रतिदिन की चिन्ता का विषय चीन था। मैं वहां होने वाले प्रत्येक आन्दोलन की जानकारी रखती और मुझे दीर्घकाल से चली आती हुई क्रान्ति की एक नई कला उठती हुई दिखाई दी। यह याद करके अजीब लगता है कि भय बढ़ते जाने के बावजूद मैं इस प्रकार कार्यव्यस्त रहती थी जैसे मेरा नियमित दैनिक जीवन अन्तहीन है। मैं अपनी फुलवारी में लिली और लार्कस्पर तथा स्नैपड्रैगन लगाती थी और शरत्काल में मैं घण्टों ऐसे क्राइसैंथेमम फूलों पर खर्च करती जिनसे मेरा हृदय अभिमान से भर जाता। गर्मियों में गारडे-

निया की झाड़ियां मुझे आनन्द देतीं और बड़े सवेरे सुन्दर श्यामल पत्तियों के आगे रत्नों की तरह खिलते हुए उनके सफेद फूलों की मीठी सुगन्ध मुझे सचमुच नींद से जगा सकती थी। कितनी ही बार मैं अपनी खुली खिड़कियों से उन दूसरी स्त्रियों की ओर देखा करती थी जो मेरी इस निधि का मज़ा लेती थीं ! मेरे चीनी पड़ौसिनें कुछ-कुछ शर्मिन्दा होते हुए मेरे नीचे उतरने से पहले चुपके से दरवाज़े में से आकर अपने बालों के लिए दो-चार खिले फूल तोड़ लेने का प्रलोभन न रोक पाती थीं। गारडेनिया की सुगन्ध उन्हें आनन्द से मस्त कर देती मालूम होती थी, और यद्यपि उन्हें पता था कि मैं उनके आने की परवाह नहीं करती, तो भी वे यह न जानते हुए कि मैं ऊपर से देख रही हूं, सावधानी से वे फूल तोड़ती थीं, जो पत्तों के नीचे होते थे जिससे झाड़ियों का ऊपर का भाग फिर भी पूरी तरह खिला मालूम होता था। वे चुपचाप फूल तोड़तीं और हरएक अपने तेल से चिकने काले बालों की गांठ में तीन या चार फूल खोंस लेती थी, और फिर उतनी ही चुपचाप जितनी चुपचाप वे आई थीं, संभलकर बाहर चली जाती थीं। वर्ष के बाद वर्ष यह हालत जारी रही। निःसन्देह वे जानती थीं कि मुझे पता है, पर वे यह भी जानती थीं कि कुछ भी हो, मैं उन्हें यह न जानने दूंगी कि मुझे पता है, और इस तरह इन सुविधाओं का लाभ उठाया जाता था।

फिर भी मुझे लगता है कि किसी तरह मैं यह स्पष्ट अनुभव कर रही थी कि वह सुन्दर शान्त जीवन सदा नहीं चलता रह सकता क्योंकि मैं अन्दर ही अन्दर बेचैन थी। अब मैं कुलिंग नहीं गई और गर्मियों के महीनों की तेज़ गर्मी सहती रही क्योंकि मैं आम लोगों के बीच में रहना, नित्य की घटनाओं से सम्पर्क रखना, अपनी मैत्रियां और अपना शिक्षण-कार्य जारी रखना चाहती थी। कालिज बन्द हो गए, पर मैं व्यापार और कलाकार्यों में लगे हुए नौजवानों के एक समूह को इंगलिश साहित्य पढ़ाती और उनसे मुझे यह पता चला कि वे क्या सोचते हैं। वे भी उसी सूक्ष्म भय से प्रेरित थे और हम रात की वायु की ठण्डक लेने के लिए बाहर बैठे हुए डरी आवाज़ में बात करते थे। लॉन दो ऊंचाइयों पर था, पर हम ऊपर वाले भाग में बैठते थे जिससे हम घेरे वाली दीवार के ऊपर देख सकें। उन कोमल काली गर्मियों की रातों के उन भव्य और विशाल तथा सुनहरे तारों की स्मृति मेरे मन में अमिट है। हम गोलाई में बैठते थे मानो किसी स्वर्गीय थिएटर में बैठे हों। हम वहां चन्द्रमा के निकलने की प्रतीक्षा करते थे, जो दीवार से परे पगोडा के

ऊपर अपने विशाल और भव्य रूप में उदय होता था। हम जो कुछ बातचीत कर रहे होते, उसे छोड़कर उसका गरिमामय रूप निहारने लगते।

आह, पर सैकड़ों छोटी-छोटी बातों की याद मेरे ऊपर हावी हो जाती है। उनमें से एक का भी मुझसे कोई सम्बन्ध नहीं था क्योंकि उन दिनों में अपने में नहीं जी रही थी। मुझमें उस समय शायद दुःख ही दुःख भरा था और शायद उससे बचना ही होगा। पर मुझे सैकड़ों की संख्या में खिलने वाले गुलाबों की याद है क्योंकि माली उनकी जड़ों में रोज़ टट्टी उलटता था—मनुष्य की टट्टी जो संसार में सर्वोत्तम खाद है। आज भी मुझे यह जानकर दुःख होता है कि हमारे बड़े शहरों की टट्टी के आश्चर्यजनक खज़ाने का कोई उपयोग नहीं होता। कुछ वर्ष पहले मैं न्यूयार्क में ग्रांड सैन्ट्रल स्टेशन में एक प्रदर्शनी देखने गई और वहां मैंने नगर के धरती के नीचे के भाग का एक नमूना देखा, यह जानकर मुझे कितना आश्चर्य हुआ कि मूल्यवान् मल और अन्य बेकार चीज़ों को साफ पानी और अवशेष में अलग-अलग कर दिया जाता है। पानी नदी में बहा दिया जाता है और कीमती ठोस जो धरती की पोषण-सामग्री है, बजड़ों में लादकर समुद्र में ले जाई जाती है, और वहां फेंक दी जाती है! मैं ऐसी मूर्खता से बिल्कुल परेशान होकर लौटी।

नानकिंग में उन प्रतीक्षा की गर्मियों में एक साल की बात मुझे याद है कि एक अजीब बदबू घेरे की दीवार के ऊपर से आने लगी और मैंने सोचा कि यह ताज़ी टट्टी डाल दी गई है। पर नहीं, वह दिन-रात आती थी, यहां तक कि मैंने एक पड़ौसन से पूछा और मुझे बताया गया कि एक तालाब के किनारे की झाड़ियों में एक आदमी की लाश पड़ी सड़ रही है। वह एक स्त्री के पति के परदेस में होने पर उसका यार बन गया था और लौटने पर पति को इस बात का पता चल गया। पति ने पत्नी और यार दोनों को मार दिया, पर उसने अपनी पत्नी की लाश गाड़ दी और उस यार की लाश झाड़ियों में फेंक दी। यह वहीं पड़ी थी और इसे कोई न ले गया, यद्यपि यार के घर वालों को लाश के वहां होने का पता था। उन दिनों, जब स्त्रियों और पुरुषों को परिवार की प्राचीन रूढ़ियां माननी पड़ती थीं, यह अपराध दण्ड के योग्य था। मेरा ख्याल है कि कुत्तों ने सफाई का काम किया, क्योंकि कुछ दिन के बाद सड़ांद आनी बन्द हो गई और इससे यह समझा जा सकता है कि वह न्याय कितना कठोर था और ऐसी दुर्गति से नौजवान कितने डरते होंगे और आज वे अखबारों की सुर्खियों और टेलीविज़न पर होने वाले मुकदमों से जितना डरते मालूम

होते हैं, उसकी अपेक्षा कितना अधिक डरते होंगे।

शरत्काल में दूसरे गोरे लोग, जो गर्मियों में बाहर चले गए थे, फिर लौट आए और विश्वविद्यालय खुल गए तथा यौवन तथा सत्यनिष्ठा की बाढ़ लिए छात्र वापिस आ गए। उन दिनों नौजवान भड़कीले नहीं होते थे, कालिज जाने वाले तो निश्चित ही भड़कीले न थे। मेरे ख्याल से उन्हें अपने ऊपर भविष्य का भार मालूम होता था और वे अत्यधिक सत्यनिष्ठ और अत्यधिक तर्कनिष्ठ होते थे। अगर तड़क-भड़क देखनी हो तो वह सड़कों और खेतों में देखी जा सकती है। वहां मैंने यह निश्चय ही देखी। मुझे शहर के बाहर जाने का, और देहाती लोगों में, जिन्हें इस कारण भविष्य का भय न था कि वे अतीत में इतना कुछ देख चुके थे, घण्टे और दिन बिताने का शौक था, और विशेष रूप से मुझे अब भी रात के समय नगर की सड़कें अच्छी लगती थीं—नानकिंग की वे पुरानी, चक्कर काटती टूटी-फूटी सड़कें, जिनके दोनों ओर छोटी-छोटी दुकानें सब खुली हुई होतीं और कांपती मोमबत्ती की लौ या टिमटिमाते दिये की रोशनी उनके अन्दर मौजूद लोगों के ठोस पारिवारिक जीवन की सूचना देती थीं। गर्मियों में शाम के भोजन के बाद वे बांस की खाटें तथा कुर्सियां गली में निकालते, वहां गपशप करते और चाय पीते और अन्त में आसमान के नीचे सो जाते। हर छोटी-सी दुकान में अपनी ही तरह का सौदा था। वहां बहुत तरह की चीज़ें एकसाथ बेचने वाले बड़े स्टोर नहीं थे। हर परिवार का अपना व्यापार था और यदि कोई विदेशी चीज़ें थी तो प्रायः जापानी थीं। उन दिनों सारे चीन में दिखाई देने वाली औद्योगिक वस्तुओं की अनेक किस्मों से जापान की बढ़ती शक्ति का पता चलता था।

जापान की उन कुख्यात मांगों और बढ़ते ज़ुल्म के बावजूद स्वयं चीनी लोगों में क्रोध जल्दी से नहीं बढ़ा और वे छात्रों और तरुण बुद्धिजीवियों के नारों तथा जोशीले जापानियों के विरोधी भाषणों से भी आसानी से उत्तेजित नहीं हुए। यदि वे सैनिक नेता और बड़े-बड़े उद्योगपति, जिनके हाथों में उस समय जापान के शासन की बागडोर थी, समझदार या जानकारी रखने वाले होते तो वे समझ जाते कि व्यापार और धैर्य से उन्हें एक नये और आधुनिक चीन की उन्नति में अद्वितीय स्थान मिल सकता था। इसके बदले उन्होंने साम्राज्य के लिए उसी पुराने निकम्मे युद्ध के तरीके को चुना और इस प्रकार उन्होंने जो पाया था, या जो वे पा सकते थे, वह सब खो दिया। यह निर्णय की गल्ती थी जिसका नतीजा दूसरे महायुद्ध में जापान

के पराजय के रूप मे हुआ और अब उसका भविष्य यही मालूम होता है कि उसे दो महाविनाशो मे से एक को चुनना है । यह याद करके यह दु खदायी विचार आता है कि यदि इगलैड और अमरीका एशिया मे जापान के प्रथम आक्रमणो को रोकने मे शामिल हुए होते तो कितनी आसानी से इस स्थिति से बचा जा सकता था, और फिर, वे आक्रमण भी उससे पहले आक्रमणो का फल थे जब इगलैड अभी और अपने स्वय के औपनिवेशिक साम्राज्य के अवश्यम्भावी तथा तेजी से आते हुए अन्त की बात सोचने को अभी तैयार न था ।

इधर मेरा जीवन सदा की तरह कई स्तरो पर चलता रहा । अपने घर मे मैं केवल घर-मालकिन थी और इससे ज्यादा कुछ न थी, या यो कहिए कि मैं ऐसा महसूस करती थी। अपने पिता के लिए मै केवल उनकी पुत्री थी—ठीक वैसी ही जैसी तब थी जब मै स्वय बच्ची थी, और अपने बच्चो के लिए मै मा थी। गोरो की बिरादरी मे मै पडौसिन तथा सहेली के रूप मे जमने की कोशिश करती। फिर भी अपने देशवासियो से वर्षो के अलगाव की चेतना मुझमे अधिक से अधिक बढती जाती थी। मेरा बचपन उनका नही हुआ था और न उनका बचपन मेरा हुआ था, और अब मै सोचती हू कि मुझे उनसे सचमुच ईर्ष्या अनुभव हुई क्योकि प्रतिदिन के जीवन मे मै यह महसूस करती थी कि पुराना फटाव गहरा हो रहा है। मेरे जगत् विभाजित हो रहे थे और वह समय आएगा, जब मुझे उनमे से एक का अन्तिम रूप से चुनाव करना होगा। यह बात इस तथ्य के बावजूद सत्य थी कि मेरी यथार्थ भावना और आत्मीयता—मनुष्य-मनुष्य के बीच वह भावपूर्ण और अनुरागमय सम्बन्ध, जो जीवन का एकमात्र निर्माता है—अब भी अपनी चीनी सहेलियो और पडौसियो से और एक दूसरे ढग से अपने छात्रो से भी थी। जब कोई चीज मेरे लिए असह्य हो जाती तब मै प्रोत्साहन तथा प्रेम के लिए चीनी सहेलियो के पास ही जाती थी। औचित्य के सकोच के कारण हम अपनी अन्दर की बाते नही खोलती थी, पर चीनी लोग बिना बहुत से शब्दो के यह समझ लेने मे समर्थ होते है कि क्या चीज अवश्यम्भावी और अपरिहार्य है और इसलिए सहनी ही होगी। उनके घरो मे, या जब वे मेरे घर आती तब उनकी उपस्थिति मात्र से, उनकी करुणापूर्ण और मृदु दयाशीलता से, जो उनका स्वाभाविक वातावरण था मुझे बडी शान्ति मिलती थी।

जब वे इसी प्रकार की सान्त्वना के लिए मेरे पास आती थी, तब भी मुझे शाति मिलती थी। उदाहरण के लिए, मेरे किसी दु ख के बीच जब एक पड़ौसन–जिसे

ऊंची शिक्षा नहीं मिली थी और जो कभी विदेश भी नहीं गई थी, पर समझदार सद्गृहस्थ स्त्री थी—अपना छोटा-सा बच्चा मर जाने पर मेरे पास आई, तब मुझे सान्त्वना मिली थी। वह और मैं साथ लगे हुए मकानों में बहुत दिन रह चुकी थीं। वह मेरे साथ उत्तरी प्रदेश में भी रही थी। उसका पति वहां लड़कों के स्कूल में अध्यापक था और बाद में निमन्त्रण पाकर वे भी नानकिंग विश्वविद्यालय में आ गए थे। बहुत दिनों तक इस दम्पति के कोई सन्तान न थी और फिर उनके एक लड़का हुआ जिससे उन्हें बड़ी खुशी हुई। वह सुन्दर बच्चा था और मैं अपनी सहेली के साथ उसकी वृद्धि और स्वास्थ्य तथा कुशाग्र बुद्धि के बारे में सुखकर बातचीत किया करती थी। एक दिन कोई आदमी दौड़ता हुआ हमारे यहां यह कहने आया कि बच्चा मर गया। मुझे विश्वास न हुआ। सवेरे ही तो मैंने उसे नहाते देखा था और हाथ का काम वहीं छोड़कर मैं तुरन्त सड़क पर दौड़ी। छोटे-से स्लेटी ईटों के मकान का दरवाज़ा खोलते ही मुझे पता चला कि वह भयंकर खबर सत्य थी। बेंत की खाट पर माता-पिता पास-पास बैठे थे और उनके घुटने पर उनका छोटा-सा बालक अपना लाल सूती सूट पहने और सिर पर आभूषण-रहित टोप लगाए बिल्कुल शिथिल और बेजान पड़ा था।

मैं उनके साथ रोने से कैसे रुक सकती थी। अपने इस दुःख के बीच मैंने किस्सा सुना। उसे एक सप्ताह से कुछ पेचिश थी और मेरी सहेली, उसकी मां, उसे इंजेक्शन लगवाने मिशन अस्पताल ले जाती थी। वह आसानी से ठीक हो गया था और आज अन्तिम इन्जेक्शन का दिन था। उसे दुपहर का दूध पिलाकर वह अस्पताल ले गई। पहले वाले की जगह एक नया डाक्टर इन्जेक्शन देने दफ्तर से बाहर आया।

'मैंने देखा,' उसने सुबकते हुए कहा, 'कि सुई वाली शीशी दवा से भरी थी। आम तौर से इसमें केवल थोड़ी दवा होती थी। मैंने डाक्टर से कहा कि यह बहुत अधिक है और वह मुझपर नाराज़ हुआ और बोला कि मुझे अपने काम का पता है और तुम अनपढ़ औरत हो। लाचार मुझे अपने बच्चे की जांघ में उससे सुई लगवानी पड़ी। अईया—बच्चा अकड़ गया और कुछ ही मिनट में मर गया।'

'क्या यह अमरीकन डाक्टर था ?' मैंने पूछा।

'नहीं चीनी था,' उसने रोते हुए कहा।

हम सब फिर रोने लगे, पर इससे मेरे जगतों में बढ़ते हुए विभाजन का पता

चलता है—यद्यपि मेरे दिल में पीड़ा थी, पर फिर भी मुझे यह खुशी थी कि वह डाक्टर चीनी था, अमरीकन नहीं। मुझे यह प्रसन्नता तब भी बनी रही, जब मेरे मित्र कुछ दिन मेरे यहां रहने आ गए जिससे वे इतने स्वस्थ-चित्त हो जाएं कि अपने अकेले मकान में रह सकें। पर मुझे उस सुशिक्षित चीनी डाक्टर पर फिर गुस्सा आया जिसने बच्चे की मां से उजड्डपन से कहा था कि वह केवल अनपढ़ औरत है, और फिर अपने मन में अपने को बड़ा समझने के अभिमान में उसने उसके बच्चे की जान ले ली थी। उसके बुद्धिजीवी-वर्ग के लोग अपने स्वदेशवासियों के प्रति ऐसी ही तिरस्कार-भावना रखते थे और मैं यह बात यहां इसीलिए लिखती हूं कि यह याद रहे क्योंकि यह प्रवृत्ति ही उस अवस्था के लिए ज़िम्मेदार है जिसे लिन यूतांग ने बाद में पूर्ण ईमानदारी से एक बार 'एक सारी पीढ़ी की विफलता' कहा था।

एक और चीनी सहेली की बात मुझे विशेष रूप से याद है। यद्यपि मैं वहुत-सी सहेलियों से प्रेम रखती थी और अब भी रखती हूं, परन्तु उनसे पत्र-व्यवहार करने का मेरे पास कोई उपाय नहीं है क्योंकि अब मैं उन्हें पत्र लिखने का साहस नहीं कर सकती क्योंकि किसी अमरीकन का पत्र मिलने से इस नये कम्यूनिस्ट चीन में, जिससे मैं अपरिचित हूं, उनके जीवन खतरे में पड़ सकते हैं और उनके भी अब कोई पत्र नहीं आते जिनमें वे पहले मुझे लिखा करती थीं कि बच्चे किस तरह बढ़ रहे हैं और किसकी शादी हो रही है और किन विवाहित बच्चों के बच्चे हो रहे हैं। एक दिन सर्दियों में सवेरे के समय—यह तब की बात है जब सन यात-सेन की मृत्यु के बाद कुछ वर्ष बेचैन शान्ति रही—मैंने अपने दरवाज़े पर थपथपाहट सुनी। मैंने दरवाज़ा खोला और देखा कि वहां फटे चीथड़े पहने धूल से भरी एक औरत खड़ी थी जिसे मैं नहीं पहचान सकी। वह उत्तर से आई थी, इतना तो मैं समझ गई क्योंकि उसके आधे बंधे हुए पैर और ढीला पाजामा, उसकी पुराने फैशन की घुटनों तक की मोटी कुर्ती और रूखे अस्तव्यस्त बाल किसी उत्तरी किसान के ही हो सकते थे।

'माताजी,' वह बोली, 'आप मुझे भूल गई ?'

'नहीं,' मैंने कहा, 'पर मेहरबानी करके अन्दर आ जाओ।'

वह ऊपर आ गई और एक कुर्सी के किनारे बैठ गई और उसने मुझे अपना परिचय दिया। उत्तर में मेरे पास कुछ समय एक बदमाश नौजवान माली के तौर पर रहा था। उसे कुछ नहीं आता था और वह काम भी नहीं करता था और मैंने उसे जल्दी ही विदा कर दिया था। अब इस स्त्री ने बताया कि वह इसका पति था पर

अकाल फैल जाने पर वह उसे छोड़कर भाग गया था। मुझे पता था कि यह अकाल का साल है और हम कई महीने पहले ही शरणार्थियों के आने की आशा कर रहे थे पर यह औरत कुछ जल्दी आ गई थी। वह गर्भिणी थी, यह भी मैंने अब देखा।

'तुम्हारे बच्चे नहीं हैं?' मैंने पूछा।

उसने अपना पेट थपथपाया। 'केवल यह है और सब पांचों दस दिन के पागल-पन से मर गए।'

यह 'दस दिन का पागलपन' और कुछ नहीं, टेटैनस या धनुर्वात की ऐंठन थी। इस रोग से बहुत से चीनी बच्चे अपने जीवन के पहले पखवाड़े में ही मर जाते थे। इसका कारण जन्म के समय छूत लग जाना था और इसे आसानी से रोका जा सकता था। मैंने तरुण चीनी स्त्रियों को यह सिखाने में काफी परिश्रम किया था कि बच्चा पैदा होने के समय वे जो कैंचियां और कपड़े के टुकड़े या रुई इस्तेमाल करती थीं, उन्हें कैसे उबालना चाहिए। परन्तु उत्तर में कैंची का प्रयोग नहीं होता था। उसके बदले बच्चे की नाल किसी सरकण्डे की पट्टी या पत्ते से, जो अन्दर से छीला जाता था, काटी जाती थी। किसी तरह के अनुभव से स्त्रियों ने धातु का प्रयोग न करना सीख लिया था और सरकण्डे का साफ होना या न होना उसे छूने वाले पर निर्भर था।

'मैं आपके पास इसलिए आई,' उस औरत ने हृदयस्पर्शी और कहना चाहिए कि परेशानी में डालने वाली सरलता से कहा, 'क्योंकि मेरा और कोई नहीं है।'

मैं यह दिखावा नहीं कर सकती कि इस सरलता से मुझे कोई खुशी हुई या अपने ऊपर उसके विश्वास में मुझे ज़रा भी प्रसन्नता हुई। मै एक गर्भिणी किसान स्त्री को पहले ही उलझी हुई गृहस्थी में कहां रख सकती थी? वह कम्पाउण्ड से बाहर नहीं रह सकती थी क्योंकि अकेली थी और बे-रिश्तेदारों वाली औरत को पड़ौस का कोई भी निकम्मा आदमी तंग कर सकता था और युद्धनायकों और अशान्ति तथा इधर-उधर फिरते सैनिकों के उस ज़माने में ऐसे लोगों की कमी न थी। मेरे अपने बचपन के दिनों की पहले वाली शान्तिपूर्ण निःशंकता खत्म हो चुकी थी और मेरे बच्चे भी देहात में उस तरह नहीं घूम सकते थे, जैसे कभी मैं घूम चुकी थी।

मेरी मेहमान ने मेरे मन में चल रही उधेड़बुन को अवश्य ही समझ लिया था, क्योंकि उसने नम्रता से कहा, 'माताजी, आपके बगीचे के पीछे एक छोटा-सा

मकान है। मैंने दरवाज़े से अन्दर आते हुए वह देखा था। बच्चा होने तक मैं वहां रह जाऊंगी और एक मुट्ठी चावल के अलावा और किसी बात के लिए आपको या किसी और को परेशान नहीं करूंगी और फिर जब मैं समर्थ हो जाऊंगी, तब काम तलाश कर लूंगी।'

वह छोटा-सा मकान मुर्गी-घर था और मनुष्य के रहने के लिए किसी भी तरह उपयुक्त न था और मैंने उसे यह बात बता दी। इसके अलावा एक और कमरा था जो सामान रखने के काम आता था पर बिल्कुल अच्छा था और वह उसके लिए ठीक-ठाक किया जा सकता था। 'पर बच्चा तो तुम्हें अस्पताल में करना चाहिए,' मैंने अन्त में कहा, 'वहां तुम्हारी अच्छी देखभाल होगी।'

श्रीमती लू—कोई कारण नहीं कि मैं उसका असली नाम क्यों न बताऊं क्योंकि अब वह मर गई है, और चीन और अमरीका में जितने स्मिथ हैं, चीन में उतने ही लू हैं—मधुरता से हठ पर अड़ी रहने वाली स्त्री थी। जैसा मैंने देखा, वह मुर्गीघर ही चाहती थी जहां वह अकेली रह सके; और कितना भी समझाने पर किसी विदेशी अस्पताल में जाने को तैयार न थी। उसने आग्रहपूर्वक कहा कि मेरे इतने सारे बच्चे हो चुके हैं कि मुझे यह ठीक-ठीक पता है कि क्या करना होता है, और बच्चा पैदा होने के समय वह अपने पास किसीको नहीं रखना चाहती थी। अन्त में मुझे मानना पड़ा क्योंकि वह किसी भी तरह न मानती थी और मुर्गीघर को साफ करके उसपर सफेदी की गई। दोनों खिड़कियों की मिट्टी और जाले साफ किए गए और बड़ी साफ ईंट का फर्श उसमें नया डलवाया गया। मैंने उस छोटे-से कमरे में एक चारपाई और मेज़ और एक या दो कुर्सियां डलवा दीं और खिड़कियों पर पर्दे लगा दिए जिससे आदमी रात को अन्दर न देख सकें, और उसे दरवाज़े के लिए मज़बूत ताला दे दिया। मैंने उसे जो थोड़े-से पैसे दिए, उनसे उसने अपने लिए एक मिट्टी की चायदानी और दो कटोरे तथा एक जोड़ी भोजन करने की तीलियां तथा थोड़ा-सा अनाज खरीदा। इसके बाद श्रीमती लू कम्पाउंड का हिस्सा हो गई और जब तक बच्चा न हुआ, तब तक वह प्रायः आंखों से ओझल ही रहती थी। इधर मैंने इस बात से परेशान होकर कि वह न तो अस्पताल जाएगी और न हमारी भली आमा को अपने पास रहने देगी, उसके लिए एक छोटा-सा कृमिहीन किट बना दिया जिसमें पट्टियां, कैंची और एक बोतल आयोडीन थी।

एक दिन ताज़गी देने वाले दिसम्बर के सवेरे आमा शुभ समाचार लाई।

श्रीमती लू बहुत देर पहले, अपने छोटे-से मकान से निकलकर उसे यह बता गई थी कि रात में बच्चा हो गया। मैंने ज़च्चा के लिए पोषक भोजन और द्रव्य पहुंचाने का आदेश दिया। पहले खूब बूरा मिला हुआ एक कटोरा गर्म पानी और इसके एक घंटे बाद चिकन का रसा और नूडल। उत्तर में यही चलन था। बूरे से यह समझा जाता था कि खून की कमी पूरी होगी और चिकन तथा नूडल से दूध अच्छा बनता था। इसके बाद मैं ज़च्चा और बच्चा को देखने गई। यह बड़ा भला दृश्य था। छोटा-सा कमरा स्वच्छ और गर्म था क्योंकि श्रीमती लू ने इस घटना के बाद सब चीज़ें ठीक-ठाक कर दी थीं और वह चारपाई पर पड़ी थी, उसका बड़ा चपटा चेहरा हर्षतरंग से खिला था, और मैंने उसे जो साफ बच्चों के कम्बल दिए थे, उनमें लिपटा एक छोटा-सा बहुत मोटा लड़का था। उसने उसे चीनियों में प्रचलित बेल-बूटेदार कपड़ा पहनाकर कम्बलों में लपेट दिया था। सब कुछ ठीक मालूम होता था और मैंने उसे बधाई के तौर पर लाल कागज़ में लिपटे हुए दो चांदी के डालर उपहार में दिए। वह इतनी कृतज्ञ हुई कि मुझे वहां खड़े रहना भारी हो गया और मैं जल्दी ही चली आई।

अगले दिन मैं नाश्ता कर रही थी कि उसी समय आमा ने आकर मुझे बताया कि बच्चा मर रहा है। मुझे विश्वास न हुआ।

'क्या उसने नाल काटने में उबाली कैंची नहीं इस्तेमाल की?' मैंने पूछा।

'की थी, माताजी,' आमा ने कहा, 'पर उसका पेट जल गया।'

यह क्या रहस्य था? मैं तुरन्त उस छोटे मकान में पहुंची और मैंने देखा कि बच्चा सचमुच बहुत बीमार था। श्रीमती लू ने लपेटे हुए कपड़े हटाए और मैंने देखा कि उसके छोटे-से पेट पर नाभि के चारों तरफ जलने के निशान थे। ये आयोडीन से जलने के निशान थे।

'पर मैंने तुमसे कहा था कि आयोडीन बच्चे के ऊपर मत डाल देना,' मैं बोली।

'जी हां, आपने कहा था, माताजी,' श्रीमती लू ने अफसोस से कहा, 'पर मैंने सोचा कि यह दवा अच्छी है तो सारी को ही क्यों न इस्तेमाल किया जाए।'

मैंने कहा कि मैं बच्चे को तुरन्त अस्पताल ले जाना चाहती हूं, पर यह बात श्रीमती लू सुनने को भी तैयार न थीं, न वह बच्चे को विदेशी डाक्टर के हाथ का स्पर्श ही होने देना चाहती थी। पर उसने बच्चा मुझे अपने घर ले जाने दिया और

वहां मैंने उसकी भरसक सेवा की। कुछ दिन मेरे कमरे में रहने के बाद उसके शक्ति-शाली किसान वंशरक्त ने उसकी मदद की। उसने जीने का फैसला किया और मैं उसे उसकी माता को लौटा सकी। उसके एक महीने का होने से पहले उसका पिता, वह भगोड़ा पति, दरवाज़े पर हाज़िर हुआ और परिवार फिर इकट्ठा हो गया। मैंने उसे विश्वविद्यालय के खेतों पर एक नौकरी दिला दी और श्रीमती लू ने हमारे कम्पाउंड की दीवार से ज़रा परे को छोटे-छोटे कमरों का एक मामूली मिट्टी का मकान किराए पर ले लिया।

एक वर्ष का होने से पहले बच्चा एक बार फिर मौत के पास आ गया। यह गर्मियों के बाद की बात है और श्रीमती लू एक दिन रोती हुई और यह कहती अन्दर आई कि बच्चा किसी पिछले पाप के कारण ज़रूर मर जाएगा। उसने उसे पीछे की तरफ घुमाया और उसका नंगा धगड़ा दिखाया और वहां मैंने देखा कि छाले फूटकर कच्चा मांस निकल आया है।

'यह फिर कैसे जल गया,' मैंने चकित होकर पूछा।

'यह जला नहीं है, माताजी,' श्रीमती लू ने कहा। 'मैंने मन में सोचा कि अब यह इतना बड़ा हो गया है कि मुझे आपके दिए हुए पोतड़े इस्तेमाल न करके इसे रेत पर लिटा देना चाहिए जैसा कि हम उत्तर में किया करते हैं जिससे उसके पेशाब करने के बाद धोने की ज़रूरत नहीं रहती पर यहां उत्तर की तरह रेत नहीं है और इसलिए मैंने उसे चूल्हे की राख पर लिटा दिया था।

राख? ओहो निश्चय ही पेशाब और लकड़ी की राख के मिलने से दाहक क्षारीय लेई बन गई। मैंने छोटे-से मीटबाल (मांस का गोला) को—यह उसका प्यार का नाम था—फिर ले लिया और कुछ सप्ताह के उपचार के बाद वह फिर ठीक हो गया।

यह सब बात अपने-आपमें कुछ महत्त्व की नहीं है, पर उन अन्तिम तीन तिथियों के कारण बड़ी महत्त्वपूर्ण है जो मुझे १९२० और १९३० के बीच दशाब्दी की घटनाओं के स्मारक रूप में याद है और जिन्होंने मेरे जगत् को बदल दिया। यह तीसरी तिथि २७ मार्च, १९२७ थी।

जिस समय अपने घर के अन्दर मेरा जीवन इस प्रकार चल रहा था, उस समय भी मुझे बाहर हो रही घटनाओं का ध्यान था। कभी-कभी यह ठीक-ठीक जानना कठिन हो जाता था कि क्या चल रहा है। केवल चीनी अखबारों से ही

कुछ पता चलता था जो संक्षिप्त प्रसंग-रहित खबरें छापते थे जिन्हें सोचकर और अनुमान से किसी तरह सिलसिले में जोड़ना पड़ता था और फिर छात्रों के विश्वासों और शिकायतों की लड़ी से मिलाना पड़ता था। पीकिंग में विशालकाय बड़बोले किसान युद्धनायक फेंग यू-ह्सियांग को, जिसके साथ सन यात-सेन ने अपनी मृत्यु से पहले मेल करने की आशा की थी, मंचूरिया के निरंकुश युद्धनायक चांग त्सो-लिन ने हरा दिया था। पर हम सब जानते थे कि चांग का शासन अधिक दिन नहीं चल सकता और इसे केवल इसलिए सहन किया जा रहा था कि हर कोई इस प्रतीक्षा में था कि देखें नई कुओमिन्तांग क्रान्ति, जो उस समय कैन्टन में रूप ग्रहण कर रही थी, क्या करने वाली है। पहले अफवाह के रूप में और फिर उग्र रूप में न केवल यह बात सुनी गई कि राष्ट्रवादी दल का नये सिरे से संगठन किया गया है, कि अब कम्यूनिस्टों को उसका सदस्य बनने की अनुमति है, कि रूसी सलाहकार नौकर रखे गए हैं, बल्कि हमने यह भी सुना कि नया दल पुराने दल से बहुत भिन्न है। यह सैनिक अनुशासन के अधीन संगठित हुआ है और जिहाद के जोश से यह कार्य किया गया है। हमने सुना कि जब समय आएगा तब यह सेना उत्तर की ओर युद्धनायकों पर धावा बोलेगी और उन्हें जीतकर चीन को एक करेगी। हम परेशान थे पर भयभीत न थे, क्योंकि यह सन्दिग्ध था और निश्चय ही गोरे लोग इसे सन्दिग्ध समझते थे कि 'कैन्टन वाले'—वे उस समय कुओमिन्तांग को इसी नाम से पुकारना पसन्द करते थे—अब शेष देश के उन सख्त और लापरवाह वृद्ध युद्धनायकों से जी सकेंगे जो हठपूर्वक चीन की ऐतिहासिक प्रणाली पर चल रहे थे, अर्थात् एक-दूसरे से लड़ रहे थे जिससे कोई अन्तिम विजेता एक नये राजवंश की स्थापना कर सके और करे। परन्तु छात्र और बुद्धिजीवीवर्ग नई क्रान्ति में उत्साहपूर्वक आस्था रखते और इसके लिए कार्य करते थे जबकि नगर और देहात, दोनों में विशाल जन-समुदाय केवल भविष्य में होने वाली बातों की प्रतीक्षा कर रहा था। वे परम्परागत क्रम पूरा न होने तक उदासीन नहीं, बल्कि निष्क्रिय थे।

यद्यपि सन यात-सेन मर चुके थे पर अब वे पहले से भी अधिक शक्तिशाली रूप में नेता थे। उन्होंने १६२१ में सोवियत रूस से समझौता होने के बाद एक प्रतिभाशाली तरुण सैनिक को आगे सैनिक और क्रान्तिकारी प्रशिक्षण पाने के लिए मास्को भेजा था। यह आदमी चियांग काई-शेक था। वह लौट चुका था और उसने

वाम्पोश्रा में नये सैनिक कालिज की स्थापना की थी। वहां भविष्य की सेना के अफसरों को प्रशिक्षण दिया जा रहा था। यह सन यात-सेन की योजना थी जिन्हें अन्त में यह यकीन हो गया था कि सैनिक उपायों से ही चीन को एक किया जा सकता है। तब सन यात-सेन ने अपने जीवन द्वारा जो किया था, उससे कहीं बढ़कर अपनी मृत्यु द्वारा किया। जीवन-काल में उन्होंने बहुत-सी गल्तियां की थीं और प्रायः अपने लोगों में से बहुत लोगों को दुश्मन बना लिया था, पर मृत्यु के बाद उन्हें दोष-हीन और आदर्श बनाया जा सकता था। और कुओमिन्तांग ने यही करना आरम्भ किया। उनके अन्तिम शब्द, उनका प्रसिद्ध वसीयतनामा और उनका चित्र हर जगह छापे गए और उनके चित्रित चेहरे को देखने मात्र से छात्रों को नये देश-प्रेम और क्रान्तिकारी जोश की प्रेरणा मिलती थी। उदाहरण के लिए, उनकी मृत्यु के लगभग दो महीने बाद शांगहाई में एक घटना हुई जो नये नेता चियांग काई-शेक के लिए एक दर्जन विजयपूर्ण संघर्षों के बराबर थी। एक मिल में, जिसके मालिक जापानी थे, हड़ताल हो गई थी और शांगहाई की अन्तर्राष्ट्रीय बस्ती की पुलिस ने कुछ हड़तालियों को गिरफ्तार कर लिया। उसके शीघ्र बाद एक दिन गिरफ्तारियों का विरोध करने के लिए बहुत सारे स्कूलों के छात्रों की भीड़ प्रदर्शन करने को जमा हो गई और उन्होंने पुलिस की चेतावनियों की भी परवाह न की। तितर-बितर होने का आदेश होने पर भी उन्होंने हटने से इन्कार कर दिया। अन्त में पुलिस ने गोली चलाई और कई छात्र मारे गए। तुरन्त सारे देश में रोष और असन्तोष फैल गया। हर जगह प्रदर्शन हुए और दक्षिण से उत्तर तक एक के बाद दूसरे नगर में जापानियों और अंग्रेज़ों का बाइकाट शुरू हो गया। हांगकांग का बिल्कुल बाइकाट किया गया। और सब वर्गों के इतने क्रुद्ध चीनी अंग्रेज़ों के इस उपनिवेश से चले गए कि इसका जीवन बिल्कुल ही बैठ गया और तब तक यही हालत रही जब तक विदेशी-विरोधी जोश ठण्डा न हुआ। बहुत थोड़े विदेशी चीनी अखबार पढ़ सकते थे। वे सचमुच आतंकित थे और बहुत-से गोरे लोगों को उनके वाणिज्य-दूतों ने भीतरी प्रदेशों से बुला लिया जहां उनकी रक्षा नहीं की जा सकती थी।

मेरी अपनी सहानुभूति पूरी तरह चीनियों के साथ थी क्योंकि यद्यपि पुलिस विदेशियों के नियन्त्रण में होने के कारण अपने अधिकार-क्षेत्र के अन्दर थी, पर उन्हें यह याद रखना चाहिए था कि वे चीन में हैं और कानून के प्रति चीनियों का परम्परागत रुख पश्चिम के रुख से सर्वथा भिन्न था। चीन में कानून केवल

अपराधियों के लिए था, उनके अपराधों की सज़ा के लिए था। जो अपराधी नहीं उसे कानून कुछ नहीं कह सकता था। इसलिए जब पुलिस ने उचित चेतावनी देने के बाद भी निर्दोष व्यक्तियों को और विशेष रूप से तरुण छात्रों और बुद्धिजीवियों को गोलियों से मार डाला, ज़िन्हें परम्परा बहुमूल्य और उच्चवर्ग के व्यक्ति मानती थी, तब लोग कहते थे, पुलिस ने ही हत्या का अपराध किया है, उन निर्दोष नौजवानों ने नहीं जो केवल 'देशभक्त' होने की कोशिश कर रहे थे। यह घटना मेरे दोनों जगतों के भिन्न दृष्टिकोणों का एक दुःखद नमूना थी। ऐसी अनेक भिन्नताएं थीं और उनकी संख्या तथा प्रचण्डता यहां तक बढ़ी कि उन्होंने दूसरे महायुद्ध को प्रत्यक्षतः जन्म दिया और इसीका विस्तार कोरिया के युद्ध के रूप में हुआ।

तीस मई की घटना से—इसे इसी नाम से पुकारा जाता था—कुओमिन्तांग के क्रान्तिवादियों को आश्चर्यजनक सहायता मिली। पीकिंग के युद्धनायक-शासन की सब जगह 'साम्राज्यवाद के पालतू कुत्ते' कहकर निंदा की गई और दक्षिण के क्रान्तिकारियों ने जनता के क्रोध को बुनियाद बनाकर अगले साल आक्रमण की योजना बनाई—यदि यह घटना न हुई होती तो इतनी जल्दी आक्रमण करना उनके लिए सम्भव न होता। १९२६ में यह उत्तर की विजय-यात्रा शुरू हुई। चियांग काई-शेक इसका नेता था और उसके दोनों ओर राजनीतिक और सैनिक दोनों तरह के कम्यूनिस्ट रूसी सलाहकार थे। उनका कोई प्रतिरोध नहीं हुआ। दक्षिणी प्रान्तों के युद्धनायकों ने प्रतिरोध का दिखावा किया, वे फिर सौदेबाज़ी पर उतरे और फिर घुटने टेकने और क्रान्ति में 'शामिल होने' पर आ गए। सन यात-सेन की मृत्यु के बाद दूसरी गर्मियों में क्रान्तिकारी फौज चीन के हृदय-देश में पहुंच गई थी और उन्होंने मध्य-यांगत्से के तीन मार्मिक महत्त्व के औद्योगिक नगरों हेंको, वुहान और हानयांग पर कब्ज़ा कर लिया था। यह सैनिक विजय से कहीं बड़ी चीज़ थी। ज्योंही किसी प्रदेश पर कब्ज़ा होता, त्योंही कम्यूनिस्ट संगठन-कर्ता रूसी हिदायतों के अनुसार प्रदेश में फैल जाते और किसानों को ज़मींदारों के विरुद्ध और नगरों की बड़ी फैक्टरियों के मज़दूरों को उनके मालिकों के विरुद्ध संगठित करते थे। मैं कम्यूनिस्ट कह रही हूं पर फिर भी मैं यह नहीं मानती कि उन दिनों चीनी क्रान्तिवादियों के लिए स्वयं कम्यूनिज़्म का कोई खास अर्थ था। उनके स्वर्गीय नेता ने उनसे कहा था कि सोवियत रूस तुम्हारा मित्र है क्योंकि रूस में क्रान्ति को एक प्राचीन और अत्याचारी शासन को उखाड़ फेंकने और एक नया

शासन संगठित करने में सफलता मिली है—अफसोस कि इस नये शासन के अत्याचारों का लोगों को बहुत कम पता था और चीनियों को तो बिल्कुल ही पता न था—इसलिए तुम चीनी क्रान्तिवादियों को रूस से पथप्रदर्शन प्राप्त करना चाहिए। परन्तु चीनियों में प्रेरणा देने वाली शक्ति राजनीतिक अशान्ति न थी : यह तो वहां गौण चीज़ थी, और न वर्ग-संघर्ष ही प्रेरक बल था। असली प्रेरक शक्ति थी—उन विदेशियों से पिण्ड छुड़ाने का जोशीला संकल्प जो व्यापार, धर्म और युद्ध के रास्ते आकर चीन पर हावी हो गए थे, और अपने देश को सुधारने और आधुनिक बनाने के लिए सरकार की स्थापना करने का दृढ़ निश्चय।

अब मैं ज़रा रुककर कुछ पीछे की बातों पर विचार करती हूं। हाल के वर्षों में बार-बार अमरीकनों ने हार्दिक दुःख से मुझसे कहा कि हमें समझ में नहीं आता कि चीनी लोग हमसे क्यों घृणा करते हैं, जबकि हमने उनके लिए इतना कुछ किया है। असल में हमने उनके लिए कुछ भी नहीं किया है। मिशनरी भेजने के लिए उन्होंने हमसे नहीं कहा था और न उन्होंने हमारा व्यापार चाहा था। दोनों पक्षों से व्यक्तिगत कृपालुता अवश्य रही थी। अमरीका वालों ने अकाल और युद्ध के समय सहायता भेजी है। मुझे निश्चय है कि यदि हमारी हालत चीनियों की जैसी और चीनियों की हमारी जैसी होती तो उन्होंने भी हमारे लिए यही किया होता। कुछ अमरीकन व्यक्तियों, प्रायः मिशनरियों, ने चीन में दयापूर्ण और निःस्वार्थ जीवन बिताया है, परन्तु वे भी अपनी इच्छा से वहां आए और उनकी सराहना की गई। अनेक चीनियों ने मिशनरियों के लिए और अन्य गोरों के लिए विद्रोह या युद्ध के दिनों में अपनी जान की बाज़ी लगाई और कई बार अपनी जान दे दी।

मिशनरियों के इस सारे मामले के प्रति चीनियों का रवैया एक छोटी-सी घटना से बहुत अच्छी तरह स्पष्ट हो जाएगा, जो मैंने एक बार एक भीतर के नगर में अपने पिता के चर्च में होती देखी थी। वे गम्भीरतापूर्वक और कुछ लम्बा उपदेश दे रहे थे और श्रोता लोग बेचैन हो रहे थे। एक-एक करके वे उठे और चल दिए। चीन में ऐसा कोई रिवाज नहीं है कि कोई व्यक्ति भाषण के बीच न उठे। वह जब चाहता है तब ही मन्दिर से या सार्वजनिक कथावाचक के पास से या थियेटर से उठकर चल पड़ता है और उपदेश उसके लिए सर्वथा विदेशी विचार है। पर मेरे पिता क्षुब्ध हो गए और सामने की कतार में बैठी एक कृपालु वृद्ध महिला ने यह देखकर अपना सिर घुमाया और लोगों को इस प्रकार सम्बोधित किया, 'इस भले-

मानस विदेशी को कष्ट मत पहुंचाओ ! वह हमारे देश में एक तीर्थयात्रा कर रहा है जिससे उसे स्वर्ग में सुख मिले। आओ, हम उसे उसकी आत्मा की रक्षा करने में सहायता दें !' इस उल्टी बात से मेरे पिता को इतना आश्चर्य हुआ और फिर भी वे इसकी हार्दिक सत्यता को पूरी तरह समझते थे। उन्होंने श्रोताओं से क्षमा मांगी और तुरन्त अपना उपदेश समाप्त कर दिया।

सचमुच चीनियों के मन में यह बात न आती थी कि मिशनरी लोग चीन में अपने निजी लाभ के अलावा किसी और उद्देश्य से आए थे और अत्यधिक सहिष्णु और व्यष्टिवाद के अभ्यासी होने के कारण वे केवल तब बाधा डालते थे जब कोई मिशनरी व्यक्तिगत रूप में आक्षेप-योग्य हो। इसके अतिरिक्त, यह भी सदा याद रखना चाहिए कि यद्यपि अमरीकनों ने युद्धों और असमान सन्धियों में इससे अधिक हिस्सा नहीं लिया कि उन्होंने बौक्सर विद्रोह के समय पीकिंग में ताजीरी (रक्षित प्रदेश के निवासियों पर लगाए जुर्माने से वेतन पाने वाली) सेना रखी और भीतरी चीनी जलों में युद्धपोत रखे, फिर भी जब कभी किसी दूसरे देश, आम तौर से इंगलैंड, ने कोई नई सन्धि करने के लिए चीन को मजबूर किया, तब हमने यह मांग की कि इसके लाभ हमें भी मिलने चाहिए। अमरीका की प्रसिद्ध 'खुला दरवाज़ा नीति' चीन के लिए उपयोगी थी पर निश्चय ही यह हमारे लिए भी उतनी ही उपयोगी थी। संक्षेप में हमारा स्वार्थ के अलावा (चाहे वह प्रबुद्ध और ऊंचे दर्जे का स्वार्थ ही हो) और किसी बात का दावा करना ढोंग और पाखण्ड होगा। और चीनी लोग, जो सब तरह के स्वार्थ और पाखण्ड के सूक्ष्म से सूक्ष्म रूपों के अभ्यस्त हो चुके हैं, किसीके बारे में भी, चाहे वे अमरीकन ही हों, धोखे में नहीं है, और न कभी रहे हैं। इसलिए हमारा उनकी कृतज्ञता पाने का कोई सच्चा दावा नहीं हो सकता। यह सच है कि हमने चीनी लोगों को सदा पसन्द किया, बशर्ते कि वे कम्यूनिस्ट न हों। पर इसका हमें क्या श्रेय मिल सकता है क्योंकि यह असम्भव है कि जो आदमी उन्हें समझता हो वह उन्हें पसन्द न करे। उन्हें प्रायः सब पसन्द करते हैं, और वे प्रायः सब पसन्द आने के योग्य हैं।

इन वर्षों के बीच में कुछ समय मैंने अमरीका में बिताया और मैं इसकी चर्चा करना प्रायः भूल गई थी क्योंकि इसका मेरे जीवन से कोई प्रासंगिक सम्बन्ध नहीं प्रतीत होता था। फिर भी यह मेरे बच्चे के खातिर आवश्यक था। १९२५ में,

उसी साल जिसमें सन यात-सेन की मृत्यु हुई, मैं अमरीका गई और अपने बच्चे को एक के बाद दूसरे डाक्टर के पास ले गई और जब मुझसे यह कहा गया कि उसके मामले में कोई आशा नहीं है तब मैंने यही बुद्धिमत्ता समझी कि किसी ऐसे तन्मय करने वाले मानसिक परिश्रम में कूद पड़ूं जिससे मुझे अपने बारे में सोचने का समय न मिले। बच्चे के पिता को भी एक साल की छुट्टी मिल गई थी और उसने यह कारनेल विश्वविद्यालय में बिताने का फैसला किया था। हमने एक छोटा-सा बहुत सस्ता मकान तलाश किया और मैंने भी एम० ए० डिग्री के लिए पढ़ने का निश्चय किया।

यह सर्वथा खाली साल नहीं रहा। पहले तो मैंने यह सीखा था कि अमरीकन लोगों के जैसे व्यष्टिवादी समाज में गरीबी का क्या अर्थ हो सकता है। चीन में मैं पढ़ाकर स्वयं अपनी जीविका कमाती थी, पर अब वह नहीं कमाती थी। इसका अर्थ यह था कि मुझे आदमी के अकेले वेतन पर ही जीवन चलाने का उपाय करना था जिससे उसके अध्ययन करने के साथ-साथ मैं भी अध्ययन कर सकूं; और इसका अर्थ था बहुत ज़्यादा किफायत। इससे हमें अपने छोटे-से बिल की अदायगी में भी बड़ी सावधानी बरतनी पड़ती थी। उदाहरण के लिए, मैं प्रतिदिन दो जनों के लिए अण्डे खरीदती थी—एक बच्चे के लिए और एक आदमी के लिए। सप्ताह में एक बार मैं मांस का एक छोटा टुकड़ा खरीदती थी। दूकान से सब्ज़ी-फल खरीदने के बजाय मैंने एक किसान को पैसे देकर एक गाड़ी आलू, प्याज़, गाजर और सेब मंगाए और उन्हें सर्दियों के भोजन के लिए भण्डार में जमा कर लिया। और इनके अलावा मैं हर रोज़ केवल एक सेर दूध और एक डबलरोटी लेती थी। इसके अलावा, एकमात्र खर्च वह छोटी-सी रकम थी जो पड़ोस की एक कृपालु औरत को सप्ताह में दो या तीन बार, जब मुझे अपनी कक्षाओं में जाना होता था, मेरे बच्चे के पास रहने के लिए दी जाती थी। सौभाग्य से मैंने जिस प्रोफेसर से इंग्लिश निबन्ध और उपन्यास का विशेष अध्ययन करना था वह बड़ा समझदार था और कक्षाओं में मेरी बहुत अधिक हाज़री पर ज़ोर नहीं देता था। उसने मेरा गवेषणा-कार्य मुझपर छोड़ दिया और यह मैं रात को कर सकती थी। जब बच्चा सो जाता था और उसका पिता अगले कमरे में अपनी पुस्तकों में जुटा होता था, तब मैं खाली होती थी। तब मैं एक मील जंगल में होकर एक पहाड़ी और बहते नाले के किनारे-किनारे विश्वविद्यालय पहुंचती और तुरन्त लाइब्रेरी जाती थी। अहा, उस पुस्त-

कालय में कितना आनन्द आता था ! मैं अकेली पुस्तकों की अलमारियों में घूमती, जितनों पुस्तकें चाहती, पढ़ती और आज़ादी से सोचती और सीखती । रात काफी गुज़र जाने पर भी मैं अनिच्छा से वहां से चलती और चांदनी या लैम्प की रोशनी में पैदल चलती हुई घर पहुंचती । उस समय न कोई दिखाई देता और न कोई आवाज़ सुनाई देती, और मैं अकेली ही जाती। गहरी ठण्डी घाटी के सीले कोहरे से मेरा चेहरा और बाल भीग जाते ।

परन्तु सख्त किफायत के बाद भी कमी रह गई और क्रिसमस के बाद मैंने देखा कि कुछ धन कमाने के लिए कुछ काम करना ज़रूरी था । एक तो मेरे पास गर्म कोट नहीं था और इसके अलावा, मैं जानती थी कि गर्मियों में चीन जाते हुए मुझे कुछ आवश्यक वस्तुएं ले जानी होंगी । इस तरह दिमाग इधर-उधर दौड़ाने पर मुझे अमरीका आते समय जहाज़ पर लिखी हुई एक कहानी का ध्यान आया । हमने वेनकूवर जाने वाला ठण्डा उत्तरी रास्ता पकड़ा था क्योंकि वह सबसे छोटा था और जब मेरा बच्चा सो जाता, तब मैं डैक पर न जाती थी । मैंने खाने के कमरे में एक कोना तलाश कर लिया था और वहां अपनी नोटबुक और कलम लेकर मैंने एक कहानी लिखनी शुरू की थी जो मेरी पहली कहानी थी और जहाज़ से उतरने से पहले इसे खत्म कर दिया था । मैं इसे भावुकता-भरी कहानी समझती थी और अच्छी कहानी नहीं समझती थी और मैंने इसका कुछ नहीं किया था, पर अब चिन्ता से परेशान होने पर मैंने इसे निकाला और ठीक करके नकल किया । क्योंकि यह एक ऐसे चीनी परिवार की कहानी थी जिसका पुत्र अमरीकन पत्नी घर लाता है, इसलिए मैंने वह एशिया मेगज़ीन को भेज दी । सौभाग्य का चमत्कार देखिए कि मुझे अधिक दिन प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी क्योंकि प्रायः तुरन्त ही (जैसा कि इन मामलों में हुआ करता है) मुझे सम्पादक से (जिस पद पर उस समय श्री लूई फौलिक थे) स्वीकृति का पत्र और एक सौ डालर का वचन मिला । यह राशि एक हज़ार डालर के बराबर मालूम हुई । प्रश्न यह था कि मैं इसके कुछ अंश से कोट खरीदूं या इस सारे का उपयोग स्कूल की फीस और बिल चुकाने में कर लूं । मैंने कोट को अभी टालने और एक और कहानी लिखने का निश्चय किया जो पहली कहानी का बाद का हिस्सा होती ।

इधर मौसम सख्त ठण्डा हो गया । इथाका के चारों ओर का प्राकृतिक दृश्य मेरे लिए अजीब और बड़ा सूखा था और अपने शरीर की तरह हृदय में भी मुझे

ठण्डक महसूस होती थी। वहां की पहाड़ियां मौसम से बचाने वाली नहीं हैं बल्कि लम्बी और ऊंची-नीची हैं और उनमें गहरी घाटियां हैं जिनमें नदियां और झीलें छिपी हैं। विशेष रूप से झीलों से, जो अथाह मालूम होती थीं, मेरा मन उदास हो जाता था और सच्ची बात तो यह है कि वहां ऐसी अनेक उड़ती कहानियां थीं जिनसे पता लगता था कि नौजवान पुरुष और स्त्री नावों में बैठकर इकट्ठे झील पर गए और डूब गए। उनकी नावें उलटी हो गईं और उनकी लाशें कभी हाथ नहीं आईं। इण्डियन लोगों की किम्वदन्तियों से उस नील जलराशि का भय और भी बढ़ गया और वहां मैं कभी प्रसन्न न रही। फिर भी मुझे ईमानदारी से यह मानना चाहिए कि मेरी उदासी अंशतः मेरी अपनी परिस्थितियों की उपज थी।

फिर भी इथाका की कम से कम सुन्दर स्मृति है। इस वर्ष सूर्य का खग्रास ग्रहण हुआ था। सूर्य और चन्द्र के खण्ड-ग्रास ग्रहण मैंने चीन में कई बार देखे थे और उन्हें भूलना कठिन था, पर लोग उनसे डर जाते और यह मानकर कि प्रकाश के स्रोत को आकाशीय सर्प (या केतु) निगल रहा है वे घण्टे और घड़ियाल बजाकर सर्प को डरा भगाने के लिए सड़कों पर दौड़ पड़ते थे। इथाका में ग्रहण न केवल सौन्दर्य में, बल्कि गरिमा में भी भव्य था। मैंने इसे एक पहाड़ की चोटी से देखा। सौभाग्य से दिन बड़ा स्वच्छ था। सर्दियों का मौसम था और मुझे मीलों तक हिमाच्छादित दृश्यावली दिखाई दी और मुझे ऐसी प्रतीक्षा अनुभव हुई जैसी कभी नहीं हुई थी। मुझे थियेटर पसन्द है और पर्दा उठने से पूर्व का क्षण सदा एक खास अनुभव होता है पर इस बार नाटक ब्रह्माण्ड का था और गम्भीरता सीमाहीन थी। शीघ्र ही एक छाया धरती पर सरकती आई, कोमल परन्तु निरन्तर गहरी होती हुई; अंधकार की प्रबल तरंगों से, जिन्हें चीरकर प्रकाश आ रहा था, धरती कांपती मालूम होती थी, यहां तक कि अन्त में सूर्य बिल्कुल छिप गया और काले आकाश में तारे चमकने लगे। पहाड़ी की चोटी पर बैठे मुझे ऐसा सूनापन महसूस हुआ जैसा अन्तिम मनुष्य को तब महसूस होगा जब सूर्य जलकर राख हो जाएगा और धरती को सदा के लिए अंधकार में छोड़ जाएगा। उस समय पुनः विश्वास का उदय कितना सुन्दर था जब धीरे-धीरे प्रकाश लौटा और दिन पूरी चमक से प्रकाशित हो गया! मैं उस समय और उसके अर्थ को कभी नहीं भूली हूं।

दूसरी कहानी मन्दगति से चली क्योंकि मुझपर स्कूल के काम का, घर के काम का और बच्चे की देखभाल का बोझ था और मुझे इस बारे में निराशा होने

लगी थी कि मैं इस कहानी को पूरा न कर सकूंगी। तब मैंने कुछ रुपया कमाने के किसी दूसरे उपाय पर दिमाग दौड़ाया और मुझे ध्यान आया कि विश्वविद्यालय कुछ नकद इनाम दिया करता है। मैंने बिल्कुल भावहीन हृदय से यह पूछा कि सबसे बड़ा पुरस्कार कौन-सा है और मुझे पता चला कि यह, जैसा कि अब मुझे याद आता है, किसी अन्तर्राष्ट्रीय विषय पर सर्वोत्तम निबन्ध पर दिया जाता था। पर मेरे प्रोफेसर ने मुझे बताया कि यह सदा इतिहास-विभाग के किसी ग्रेजुएट छात्र को मिलता है और उसने मुझे इस मुकाबले में उतरने से निरुत्साहित किया।

मैंने उसे तब यह नहीं बताया कि मैंने हर सूरत में इसी मुकाबले में उतरने का निश्चय किया है। यह दो सौ डालर का इनाम था और इतने रुपये से आराम से मेरा साल निकल जाता, चाहे मैं अपना कोट भी खरीद लेती। टर्मों के बीच कुछ सप्ताह होते थे जिनमें मैं निबन्ध लिख सकती थी और मैंने 'चीनी जीवन और सभ्यता पर पश्चिम का प्रभाव' अपने निबन्ध का विषय चुना। मेरा निबन्ध एक छोटी-सी पुस्तक जितना बड़ा हो गया। सब पाण्डुलिपियां बिना नाम के दी गई जिससे निर्णायक निष्पक्ष हो सकें। हां, हमारे नाम कार्यालय में दे दिए गए। एक पखवाड़ा निकल गया और मैं यह सोचने लगी कि मैं रह गई। इसके बाद किसीने मुझसे कहा कि उसने सुना था कि किसी चीना को पुरस्कार मिलेगा क्योंकि किसी चीनी ने ही प्रथम रहने वाला निबन्ध लिखा होगा। मेरे हृदय में हलकी-सी आशा उभरी, पर मैंने उसे दबा दिया क्योंकि कार्नेल विश्वविद्यालय में अनेक प्रतिभाशाली चीनी छात्र थे, परन्तु कुछ दिन बाद मुझे एक पत्र मिला जिसमें मेरे पुरस्कार जीतने की सूचना दी गई और इससे मुझे कितना आनन्द मिला, विशेष रूप से तब जब अपनी अगली कक्षा के बाद, मै अपने शंकालु प्रोफेसर के पास गई और मैंने उसे वह पत्र दिखाया!

खैर ऐसा प्रायः नहीं होता कि आवश्यकता और प्राप्ति का इतना सुन्दर मेल हो जाए और वह भी ऐसे समय जब किसी मानवात्मा की आशा और प्रसन्नता इतनी कम हो गई हो। मेरा हृदय फिर ठीक हो गया और मैंने प्रसन्न मन से अपनी कहानी पूरी की और वह 'एशिया मेगज़ीन' को भेजी और वह फिर स्वीकृत हो गई। अब मैं काफी धनी हो गई थी मैंने अपने लिए गर्म कोट खरीद लिया। यह नरम तेज़ हरे रंग का था और तब तक चला जब तक कि वह क्रान्ति में खोया न गया। उसकी कहानी मैं आगे सुनाऊंगी। और मेरा अपने में विश्वास, जो मेरे जीवन की

दुःखद परिस्थितियों के कारण प्रायः बिल्कुल नष्ट हो गया था, फिर से लौट आया और मैं गर्मियों में चीन चली गई। अब मेरे पास न केवल अपनी आवश्यकता की भौतिक वस्तुएं ही थीं, बल्कि एक हमारा बच्चा भी था—यह मेरी पहली छोटी-सी गोद ली हुई बेटी थी—तीन महीने की ज़रा-सी जान, जिसे अनाथालय ने इस कारण और भी अधिक आसानी से दे दिया था क्योंकि जब वह जन्मी थी तब से उसका तोल आधी छटांक भी नहीं बढ़ा था। उन्होंने मुझसे कहा कि इसे कुछ भी अनुकूल नहीं पड़ता, तब मैंने कहा, 'यह मुझे दे दो।' और उन्होंने दे दी, और उसे जैसे ही यह महसूस होने लगा कि वह मां के पास है, वैसे ही वह खाने और मोटी होने लगी। सुख पैदा करना कितना आसान है और जब वह पैदा कर दिया जाए तब वह कैसे आश्चर्यजनक ढंग से कार्य करता है।

उस वर्ष इथाका में मैंने एक और छोटा-सा काम किया। मुझे पता चला कि कारनेल में एशियन विद्यार्थी प्रायः अकेले और दूसरों से अलग रहते हैं। केवल थोड़े-से अधिक आकर्षक और प्रतिभाशाली विद्यार्थियों से अमरीकनों की दोस्ती होती थी। उनमें से अधिकतर चीनी अपनी पुस्तकों में डूबे रहते थे और इतने गरीब थे कि मनोविनोद पर कुछ खर्च नहीं कर सकते थे। मुझे महसूस हुआ कि यह गम्भीर बात है कि वे अमेरिकन जीवन के बारे में कुछ भी नहीं सीखते। इस दृष्टि से अमरीकन लोग भी चीनियों के बारे में कुछ सीखने का बहुत अच्छा मौका खो रहे थे क्योंकि तब भी मुझे यह दीखने लगा था कि यदि पूर्व और पश्चिम के बीच एक-दूसरे के प्रति समझ-बूझ न होगी तो उनमें किसी दिन भयंकर संघर्ष होगा। इसलिए मैंने इथाका में कुछ समय स्त्रियों को उनके क्लबों और संघटनों के ज़रिए यह समझाने में लगाया कि वे चीनी छात्रों के लिए अपने घर खोल दें और इस बात का ध्यान रखें कि जो नौजवान इतनी दूर से आए हैं, उन्हें घर लौटने पर कम से कम एक अमरीकन नगर और उसके नागरिकों के बारे में तो ज्ञान हो। मुझे विशेष सफलता नहीं मिली। महिलाएं कृपालु थीं, पर वे अपने ही मामलों में उलझी थीं, और अफसोस है कि उनमें से कुछ चीनी लोगों को अपने लड़कों और लड़कियों से मेल-जोल बढ़ाने देने को तैयार न थीं। वे यह नहीं समझ सकती थीं कि ये लड़के-लड़कियां हर सूरत में मेल-जोल बढ़ाएंगे, शान्ति के द्वारा नहीं तो युद्ध के द्वारा।

गर्मियां आ गईं। हमने फिर जहाज़ पकड़ा और चीन लौट आए। यह अब भी घर था।

ग्रीन हिल्स फार्म
पेन्सिलवानिया

लम्बी सुस्ती लाने वाली गर्मियां रातों-रात शुरू हो गई हैं और उनमें ही मैं लिख रही हूं। यहां वैसे तूफान नहीं आते जैसे चीन में हम देखा करते थे, पर आंधियां और बर्फीले अंधड़ तथा उत्तर-पूर्वी तेज़ झोंके आते हैं और परिणाम प्रायः वही होता है, यद्यपि बिल्कुल वही नहीं होता। पर तूफान जैसी भयानक कोई चीज़ नहीं है, बशर्ते कि पश्चिमी साइक्लोन ही न आ जाए जिसका दृश्य मैंने कभी नहीं देखा। यह उत्तरपूर्वी आंधी है। कहीं परे समुद्र पर पवन की भंवर-घेरी शुरू हुई और वह बढ़ते-बढ़ते इतनी बड़ी हो गई कि हमारा प्रदेश भी उसके अन्तर्गत आ गया। और इस प्रकार आज सवेरे, हमारे जलवायु की दृष्टि से बहुत जल्दी, नवम्बर में—हमारी जलवायु को किसीने 'उष्ण देशों का लम्बा पतला सिरा' कहा है—मुझे धरती पर मोटी नरम बर्फ फैली दिखाई दे रही थी। मेरी खिड़की के नीचे आंगन में एक लड़के की छोटी-सी इटालियन प्रतिमा–जिसमें वह अपनी भुजाओं में एक बड़ा घोंघा पकड़े जलाशय के ऊपर खड़ा है–अपने कंधों पर बर्फ का बोझ बहादुरी से उठा रही है। उसके पास कूनबेरी की झाड़ी के मुरझाए पत्ते झड़ गए हैं, परन्तु चमकीले लाल फल बर्फ के आगे और भी अधिक लाल लग रहे हैं। सर्दियों के दिन प्रायः होने वाली घटनाएं होने वाली हैं—नाश्ता जल्दी में तैयार किया गया है जिससे 'स्कई' तलाश किए जा सकें और रास्तों को साफ करने के लिए बेलचे निकाले जा सकें और खेत में बर्फ हटाने का हल ट्रेक्टर में लगा है।

नाश्ते के बाद मैं आंगन पार करके अपने काम करने के कमरे में आ गई हूं और इनसे परे ग्रीन हाउसों में लगे फूल कांच के दरवाजों में से ऐसे चमक रहे हैं जैसे मणियां हैं, और उनपर और छत पर पड़ी बर्फ की सफेद झिलमिलाहट पड़ रही है। सुन्दर छाया की पृष्ठभूमि पर कारनेशन और गुलाब चमक रहे हैं और स्नैपड्रेगन जलती बत्तियों की तरह चमचमा रहे हैं—क्राईसैंथेमम हल्के पीले और लाल रंग के अंगारे जैसे दीख रहे हैं। ग्रीन हाउस मेरे परिश्रम का स्थान है, और जब कोई कहानी कहीं रुक जाती है और उसके पात्र बोलने से इन्कार कर देते हैं, तब घण्टा भर फुलवाड़ी में काम करने से अधिक से अधिक हठीली सामग्री भी प्रायः द्रवित होकर एक जीती-जागती और बोलती हुई चीज़ में बदल जाती है।

मेरा जीवन, जो संसार के इतने दूर के हिस्सों में बिखरा रहा है, एक तरह से

मेरे बगीचों में मिलकर एक हो गया है। लाल कूनबेरी की झाड़ी उस इण्डियन बैम्बू के लाल फलों की यादगार है जो नानकिंग में मकान की ड्योढ़ी के चारों तरफ घना उगता था और वे भी उन गुज़रे वर्षों में हल्की बर्फ में सुन्दर लगते थे। शताब्दियों से चीनी कलाकार बर्फ से ढके लाल फलों के चित्र बनाने के शौकीन रहे हैं और वे अब चाहे जिस शासन में रहते हों, पर शायद यह प्राचीन शौक और इसकी सारी अर्थ-व्यंजना स्थायी वस्तु है।

आज आसानी से मेरा मन उन चीन में बिताए दिनों की ओर चला गया है। १९२६-२७ के घटनापूर्ण वर्ष में मेरे चीन लौटने के बाद की सर्दियां सदा की तरह हल्की थीं, जैसी हमारी यांगत्से घाटी की सर्दियां हुआ करती थीं। पर फिर भी हरे बांसों और ऐल्मों की बे-पत्तों वाली शाखाओं और कांटेदार नारंगियों की, जो घेरे की दीवार को छिपाने के लिए झाड़ी के रूप में लगी थीं, शोभा बढ़ाने के लिए काफी बर्फ पड़ी। पर मुझे याद है कि ये एक अजीब बेचैनी की सर्दियां थीं। क्रान्तिकारी सेनाओं ने तीन नगरों के चारों ओर खाइयां खोद ली थीं और हम बसंत की प्रतीक्षा में थे जब उन्हें फिर आगे बढ़ना था। अखबार सतर्क थे और सुनी-सुनाई अफवाहों पर विश्वास करने के लिए मैं तैयार न थी। गोरे आशावान् या अविश्वासी थे, यह इस बात पर निर्भर था कि चीनी जनता के लिए उनकी भावना क्या है। मिशनरी लोग संभलकर बोलते थे, पर जो कुछ भी होता, उसका स्वागत करने को तैयार थे, बशर्ते कि उन्हें अपना काम बेरोक-टोक करने दिया जाए। मेरी बहन का विवाह हो गया था और उसका छोटा-सा परिवार सुदूर हूनान में था और कम्यूनिस्ट उसके निकट वाली झील पर बस गए थे। कोई भी ठीक-ठीक यह नहीं जानता था कि कम्यूनिस्ट कौन थे। डाकू और लुटेरे भी उनमें शामिल हो गए, पर डाकू और लुटेरे युद्धनायकों के सब शासनों का अनिवार्य हिस्सा थे। कम्यूनिस्टों के बारे में हम जो कुछ सुनते थे, वह वही था जो डाकुओं और लुटेरों के बारे में हम सदा सुनते आए थे। कौन क्या था, यह किसीको पता न था।

उस साल, १९२७ में, बसंत धीरे-धीरे आया, हालांकि सर्दियां भी हल्की रही थीं। ला-मेई वृक्ष चीनी नववर्ष के बाद खिल उठे और वे पहले कभी इतने सुन्दर या सुगन्धित नहीं खिले थे। नंगी और कोणीय शाखाओं पर खिले साफ और मोम जैसे पीले परियों के प्याले जैसे उन फूलों से मेरा मन सदा प्रसन्न हो जाता था। उनके मुकाबले की सुगन्ध कोई नहीं है पर फिर भी वे मैंने चीन को छोड़कर और

किसी देश में नहीं देखे। मुझे याद है कि वे मुश्किल से खत्म ही हुए थे कि मेरी बहन का पत्र आया कि वह और उसका परिवार अपना घर छोड़कर आश्रय के लिए नानकिंग में मेरे घर आ रहे हैं। कुछ ही दिनों में वे हमारे यहां आ गए और बिना कोई हानि उठाए आ गए क्योंकि वस्तुतः कुछ नहीं हुआ था—इतना था कि उन्होंने क्रान्तिकारी सेनाओं के बारे में, जो फिर आगे बढ़ रही थीं और नदी के साथ-साथ नीचे की ओर आने की योजना बना रही थीं, विदेशियों के विरुद्ध व्यवहार के अशान्तिकारक किस्से सुने थे।

मैं खुश थी कि हम सब एक जगह थे—मेरे पिता, मेरी बहन और मैं और हमारे परिवार—और उधर वह अजीब प्रतीक्षा चलती रही। तीन नगर अभी बहुत दूर थे और यह देखने तथा सोचने के लिए काफी समय था कि हमें क्या करना चाहिए। मेरे पिता, जो सदा शान्त रहते थे, यह मानने को तैयार न थे कि नये क्रान्तिवादी विदेशियों के विरुद्ध होंगे क्योंकि वे इस समय तक किसी भी चीनी के बारे में किसी बुरी बात पर विश्वास करने को तैयार नहीं थे और अमरीकन से अधिक चीनी हो गए थे। फिर भी मुझे पिछली बातें याद थीं। अपने सब मित्रों के बावजूद मुझे शांगहाई में अपने शरणार्थी बनकर बिताए हुए दिन और उस आदमी के चेहरे पर अकस्मात् घृणा के भाव, जिसकी चुटिया मैंने एक बार उस समय खींची थी जब मैं नटखट और चंचल थी, और ऐसे अन्य घृणा के भाव जो क्षणस्थायी होते हुए भी मेरी आंखों से नहीं बच सके थे, मुझे याद थे। सबसे बड़ी बात यह थी कि मुझे वे अनेक कारण याद थे जिनसे चीनियों को गोरों से घृणा करनी चाहिए और मुझे भय था कि यदि अब घृणा फिर भड़की तो हममें से कोई भी नहीं बच सकेगा और यह सब कुछ हमारे प्रतिदिन के आने-जाने के, मेरे छात्रों के और मेरे बीच आनन्दपूर्ण बातचीत के, तथा सहेलियों और पड़ौसिनों के बीच होने वाली बात-चीत के दैनिक जीवन के नीचे चलता रहा। किसीने हमें डराने के लिए हमसे कोई बात नहीं की। सड़कों पर भी कोई द्वेषभाव न था।

चीनी नववर्ष ठीक ऋतु में आया और हमारा घर अतिथियों से भर गया। मैंने चाय और अनेक प्रकार के केक और मिठाइयां परोसीं और हमारे बच्चों ने उप-हारों का आदान-प्रदान किया। आह, यह सब कुछ इतना अधिक अन्य वर्षों की तरह ही था कि यह मानना कठिन था कि वह आरामदेह मकान अब हमेशा की तरह सुरक्षित और सुखदायक नहीं रहा! मुझे याद है कि नौकर सदा की अपेक्षा

भी अधिक समझदार और कार्य-तत्पर थे और मेरी चीनी सहेलियां मेरे बच्चों के प्रति बड़ी स्नेहपूर्ण और कोमल थीं। उत्सव का मौसम चला गया और इसके बाद दिन और सप्ताह निकलते गए और मार्च का अन्त आ गया।

जब मुझे २७ मार्च, १९२७ के महत्त्वपूर्ण प्रातःकाल की याद आती है, तब मुझे वह एक दृश्य के रूप में दिखाई देता है मानो उसका मुझसे कोई सम्बन्ध न था। गोरों की एक छोटी टोली स्लेटी ईंटों के एक मकान के हरे लान पर अनिश्चित और अकेली खड़ी है—तीन आदमी, दो औरतें, तीन छोटे बच्चे। तेज़ हवा सीली और ठण्डी है, जो कम्पाउंड-वाल के ऊपर से आ रही है। आकाश बादलों से काला है। वे अपने कोट अपने चारों ओर पकड़कर कांपते खड़े हैं और एक-दूसरे की तरफ घूर रहे हैं।

'हम कहां छिप सकते हैं?' यह वे फुसफुसा रहे हैं।

उनमें एक मैं हूं, बच्चों में से दो मेरे हैं, दूसरी स्त्री मेरी बहन है, दो तरुण व्यक्ति हमारे पति हैं, और लम्बे गौरवशाली वृद्ध सज्जन हमारे पिता हैं। हमारे जीवन का स्वप्न साकार हो गया है। हमें जान का खतरा है क्योंकि एक चीनी नगर में हम गोरे लोग हैं, यद्यपि हमारे सब जीवन मित्रतापूर्ण तरीकों से बीते हैं पर आज इसका कोई अर्थ नहीं है। आज हम उनके कारण कष्ट पा रहे हैं जिन्हें हमने कभी नहीं जाना। योरुप तथा इंगलैंड के आक्रान्ता साम्राज्यवादी गोरे लोग जिन्होंने युद्ध किए और लूट मचाई और राज्य-क्षेत्र पर धावा किया, वे लोग जिन्होंने असमान सन्धियां कीं, वे लोग जिन्होंने राज्यक्षेत्रातीत अधिकारों का आग्रह किया, जो साम्राज्य-निर्माता बने। ओह, मैं उन गोरों से सदा डरती थी क्योंकि वे वही लोग थे जिन्होंने हम सबको एशिया में घृणा का पात्र वनाया! इतिहास का बोझा आज बहुत भारी बनकर हमारे ऊपर पड़ा है—मेरे दयालु वृद्ध पिता पर, जो जिस चीनी से भी कभी मिले हैं उससे सदा भलमनसाहत से पेश आए हैं; हमारे छोटे बच्चों पर, जिन्हें सिवाय इस देश के जिसमें वे आज मौत के खतरे के आगे खड़े हैं, और किसी देश का पता नहीं है।

'हम कहां छिपेंगे?' हम पूछते रहते हैं और कोई उत्तर नहीं दे पाता।

यह सुखद मकान जो अब तक हमारा घर था, अब हमें आश्रय नहीं दे सकता। कमरे वैसे ही खड़े हैं जैसे कुछ मिनट पहले हम उन्हें छोड़ आए हैं। बड़ा चूल्हा हाल में अभी जल रहा है और अपनी आरामदेह गर्मी फैला रहा है। नाश्ते की मेज़

लगी है, नाश्ता आधा खाया गया है। मैं काफी ढाल ही रही थी कि हमारा पड़ौसी वफादार दर्जी दौड़ता हुआ हमें यह बताने अन्दर आया कि क्रान्तिवादी, जिन्होंने रात नगर पर कब्ज़ा कर लिया था, अब गोरों की हत्या कर रहे हैं। वह वहां मेज़ के पास खड़ा था, जहां हम सब बैठे थे। वह खुश था कि लड़ाई खत्म हुई और उसने अपने हाथ पीसे और बोलते हुए उसके गालों से आंसुओं की धाराएं बहने लगीं।

'देर मत करो, वक्त नहीं है। अध्यापक विलियम्स दरवाज़े के बाहर सड़क पर पहले ही मरे पड़े हैं!'

डाक्टर विलियम्स? वे क्रिश्चियन विश्वविद्यालय के उपाध्यक्ष थे!

मेरे पिता ने नाश्ता जल्दी कर लिया था और वे सेमिनरी में पढ़ाने चले गए थे, पर अभी गए ही थे, इसलिए तुरन्त घर का नौकर उन्हें वापस लाने दौड़ता है। मेरी बहन और मैं अब अच्छी तरह जान गई हैं कि मौत सम्भव है और हम जल्दी से उठते हैं और बच्चों के कोट और टोपियां और अपने कोट उठाते हैं और झटपट मकान से बाहर आ जाते हैं जो अब शरणाधार नहीं रहा। और यहां हम ठण्डी गीली तेज़ हवा में खड़े हैं।

हम कहां छिप सकते हैं?

नौकर हमारे चारों तरफ जमा हो जाते हैं। वे अपनी जान के लिए भी कुछ घबराए हुए हैं। वे जानते हैं कि यदि उन्हें हमारे साथ देखा गया तो सम्भव है कि उन्हें भी मार दिया जाए। क्रान्तिवादियों की भीषणता का किसीको पता न था। हमने ऐसी कहानियां सुनी थीं।

'हमारे क्वार्टरों में छिपना बेकार है,' आमा कहती है, 'वहां वे आपको ढूंढ लेंगे।' वह घुटनों के बल बैठ जाती है और अपनी बांहों में मेरे बच्चे को लपेट लेती है और ज़ोर से सुबकने लगती है।

ओह, हम कहां जा सकते हैं? कहीं कोई जगह नहीं है। हमें दूर सड़कों पर हल्ला-सा सुनाई देता है और हम एक-दूसरे की तरफ देखते हैं और बच्चों के हाथ कसकर पकड़ लेते हैं। मेरे वृद्ध पिता के होंठ हिल रहे हैं और मैं जानती हूं कि वे प्रार्थना कर रहे हैं, पर जाने की कोई जगह नहीं है।

एकाएक पिछले दरवाज़े के कब्ज़ों की खचखच सुनाई देती है—कम्पाउंड वाल के कोने में लगा हुआ पिछला दरवाज़ा—और हम सब अपने सिर घुमाते

हैं। यह श्रीमती लू है जो हमारे मकान के सामने वाली सड़क से परे छोटे-छोटे कच्चे मकानों के झुंड में, हमारी दीवार से ज़रा ही परे, रहती है। वह अपने बुरी तरह बंधे हुए पैरों पर जल्दी-जल्दी लपकती आ रही है। उसका लहंगा उसके टखनों पर लटक रहा है। उसके बाल सदा की तरह बे-संवारे हैं। लाल-से भूरे केश उसके गालों से नीचे लटक रहे हैं और उसका दयालु मूढ़ चेहरा, चिन्ता, घबराहट और प्रेम की मूर्ति बना है?

'माताजी,' वह हांपती हुई कहती है, 'आप अपने परिवार के साथ आ जाओ और मेरे छोटे-से आधे कमरे में छिप जाओ! यहां कोई तुम्हें देखने न आएगा। मेरे जैसी औरत का कौन नुकसान करेगा! मेरा निठल्ला फिर नदारद हो गया है। मैं और मेरा लड़का अकेले हैं। चलो, चलो, वक्त नहीं है!' वह मुझे पकड़कर खींचती है, सब बच्चों को एक-साथ उठा लेती है और हम अंधों की तरह बिना सोचे-समझे दौड़ते हुए उसके पीछे चल पड़ते हैं और अपने पीछे दरवाज़ा खुला छोड़ जाते हैं। बहुत आसपास कोई मकान नहीं है। हम शहर की एक खुली जगह में रहते रहे हैं और हम दौड़कर दो-तीन एकड़ मैदान और पुरानी कब्रों को पार करके कुछ ढंग से लगे सब्ज़ी के बगीचों में होते हुए अपनी दीवार के दूर वाली ओर पहुंचकर उन मुट्ठी भर कच्चे मकानों पर आते हैं जिनमें से एक में श्रीमती लू रहती है। वहां लोग हमारी प्रतीक्षा कर रहे हैं—दयापूर्ण गरीब लोग। वे, उसके मित्र और पड़ोसी, हमारी अगवानी करते हैं और हमें जल्दी से उस छोटे-से अंधेरे आधे कमरे में पहुंचा देते हैं जो उसका आधा कमरा है; मुश्किल से इतना बड़ा है कि उसमें एक चारपाई, एक छोटी चौकोर मेज़ और दो बेंचें आ सकें। उसमें कोई खिड़की नहीं है। छप्पर की छत के नीचे केवल एक छेद बना है। यहां प्रायः बिल्कुल अंधेरा है। इस तंग जगह में हम सब घुस जाते हैं और श्रीमती लू दरवाज़ा बन्द कर देती है।

'मैं लौटकर आऊंगी,' वह फुसफुसाकर कहती है, 'और अगर बच्चे रोएं तो तो डरना मत। यहां इतने सारे बच्चे हैं कि उन जंगली फौजियों को यह पता नहीं चलेगा कि तुम्हारा बच्चा रो रहा है या हमारा।'

वह चली जाती है और अजीब चुप्पी में हम वहां रह जाते हैं। हमारे बच्चे रोते नहीं। कोई कुछ नहीं बोलता। हम सब यह समझने का यत्न कर रहे हैं कि क्या हो रहा है। सब कुछ बहुत तेज़ी से हुआ है। इसके बाद मेरे पिता छत के

नीचे वाले छोटे-से छेद के बाहर देखते हैं। हमें एक रोशनी, लाल होते आकाश से एक चमक आती दिखाई देती है।

'वे सेमिनरी को आग लगा रहे हैं,' मेरे पिता कहते हैं। यह वही स्थान है जहां वे प्रतिदिन पढ़ाने और न्यू टेस्टामेन्ट का ग्रीक से चीनी में अनुवाद करने जाते हैं। कोई उनकी बात का जवाब नहीं देता। हम सब चुप हैं।

यह है जो मैं देख रही हूं, यह है जो मैं याद कर रही हूं।

फिर भी, यह सब कुछ नया और अप्रत्याशित होते हुए भी सब कुछ परिचित था। वहां चारपाई के किनारे पर अपनी बहन के साथ बैठे हुए और एक-एक बच्चे को संभाले मैंने अपने मन में कहा कि मैं सदा जानती थी कि यह होगा। बबूल के पेड़ बोए गए थे और उनपर कांटे आ रहे थे और यह संयोग की बात थी कि मैं कांटे लगने के ज़माने में पैदा हुई थी। यह केवल संयोग ही था कि मैं वह काट रही थी जो मैंने नहीं बोया था। इसे भी संयोग ही कहना चाहिए था कि मैं गोरी जाति में पैदा हुई, पर उससे भी मैं बच नहीं सकती थी। मैं इन सब बातों पर विचार करती चुपचाप बैठी थी और जानती थी कि हर कोई अपने ढंग से विचार कर रहा है। मेरे वृद्ध पिता, जो अपनी सारी आयु बिता चुके थे, मेरी छोटी बहन और उसका छोटा-सा लड़का, और मैं तथा मेरा अपरिवर्तनशील बच्चा तथा वह छोटी पुत्री जो मैंने गोद ली थी और जिसे मैं अमरीका से लाई थी, और दो अमरीकन जिनसे मेरी बहन का और मेरा विवाह हुआ था—हममें से कोई भी उन शताब्दियों के इतिहास से न बच सकता था जो हममें से प्रत्येक के जन्म से पहले खत्म हो चुकी थीं और जिनसे हमारा कोई वास्ता न था। मैं समझती हूं कि हमने किसी भी चीनी से थोड़ी-सी निष्ठुरता नहीं की थी, और निश्चय ही हमने उनके लिए न्याय प्राप्त करने के पक्ष में अपना बल लगाया था। उनकी खातिर बार-बार अपनी जाति के लोगों का विरोध किया था। दूसरे लोगों ने जो अन्याय किए थे और जो अब भी कर रहे थे उनको सदा बहुत अधिक महसूस किया था, पर आज किसी चीज़ का कोई अर्थ नहीं है, न दयालुता का, न निष्ठुरता का। हम अपनी जान बचाने के लिए छिप रहे थे, क्योंकि हम गोरे थे।

मुझे याद आता है कि मैं दो स्तरों पर सोच रही थी—एक था इतिहास और इतिहास का जगत् और शताब्दियां। मुझे चीनियों से सहानुभूति हो रही थी जिन्हें गोरों की बुराइयों का पता था, अच्छाइयों का नहीं। यदि मैं तरुण चीनी

होती, यदि मुझे केवल यह शिक्षा दी गई होती कि गोरे ने देश का क्या कर डाला है, तो मैंने भी उससे सदा के लिए छुटकारा पाने की इच्छा की होती। मैं उन्हें दोष नहीं दे सकती थी। पर दूसरे स्तर पर मैं इसी क्षण की ओर बच्चों की बात सोच रही थी। मेरे पिता चुपचाप और शान्ति के साथ अपनी अन्तिम अवस्था का सामना करेंगे, उनके लिए मुझे भय न था : वे अपना जीवन बिता चुके थे। दोनों नौजवान अन्तिम समय में जो कुछ कर सकेंगे, करेंगे। मेरी बहन और मैं भी इतनी काफी मज़बूत थीं कि अभिमान से और बिना भय प्रदर्शित किए अपने को संभाले रहेंगी, पर छोटे-छोटे बच्चों का क्या होगा। मेरा लाचार बच्चा केवल सात साल का था। छोटी गोद ली हुई बेटी केवल तीन साल की थी। मेरी बहन का लड़का भी तीन साल का था। इन्हें छोड़ा नहीं जा सकता था। किसी न किसी तरह हम दोनों माताओं को यह उपाय करना होगा कि अपने मरने से पहले उन्हें मरा हुआ देख लें।

अब भीड़ बढ़ चुकी थी और छोटी-सी झोंपड़ी के बाहर गोलियां चलने की और भीड़ के हल्ले-गुल्ले की आवाज़ हमें सुनाई दी। कानून-व्यवस्था भंग हो जाने पर हर नगर और प्रदेश में सदा भीड़ जमा हो जाती है। इनमें चोर और लुटेरे और आग लगाकर खुश होने वाले तथा वे लोग होते हैं जो शान्ति-काल में दूसरों को मारने से डरते हैं पर शान्ति-व्यवस्था भंग हो जाने पर अपनी खून बहाने की वासना को खुलकर खेलने देते हैं। हमें चीखने और ज़ोर से हंसने और गुर्राने तथा ज़ोर से पीटने की आवाज़ आने लगी। हमें अपने मकान का भारी सामने का दरवाज़ा गिरने की आवाज़ आई और भीड़ के हाल में धंसने पर लालच-भरी खुशी की आवाज़ें सुनाई दीं।

मैं यह सब कुछ ऐसे स्पष्ट रूप से देख सकती थी जैसे मैं वहीं खड़ी देख रही हूं। मुझे वे कमरे उसी रूप में दीख रहे थे जैसे उन्हें हम छोड़ आए थे। उनको मैंने प्यार से सजाया था, अपना घर भरसक आनन्ददायक और सुन्दर बनाया था, खिड़कियों पर पीले पर्दे लगाए थे, फर्श पर हल्के नीले चीनी कालीन बिछाए थे, चीनी फर्नीचर था, कुछ आराम-कुर्सियां थीं और मेज़ों पर फूल थे। मैंने सफेद पवित्र लिलियों के बल्बों की कई सप्ताह सेवा की थी और वे खूब खिले मकान को सुगन्धित कर रहे थे। रहने के कमरे में अंगीठी में कोयले जल रहे थे। ऊपर सोने के कमरे थे और बच्चों का खेलघर था और सबसे ऊपर मेरी अपनी विशेष जगह थी, जहां मैं अपना काम

करती थी । और मुझे याद आया कि सबसे ऊपर के कमरे में डेस्क पर मेरे पहले उपन्यास की पूरी पाण्डुलिपि थी।

यह सब कुछ चला गया था। भीड़ कमरों में चक्कर काट रही थी, जो कुछ वे लोग ले सकते थे उसे उठा रहे थे। कपड़े, बिस्तर और कालीनों तथा मेरी और सब चीज़ों पर झगड़ा कर रहे थे, और मैं किसी विडम्बना से, जिससे मुझे मुस्कराहट-सी आई, अपने सबसे पुराने कपड़े पहने झोंपड़ी में यहां तख्त पर बैठी थी और मेरे पास अपना बढ़िया अमरीकन कोट भी नहीं था। मैंने सोचा था कि उपन्यास खत्म हो जाने के कारण आज ऊपर के कमरे की अच्छी तरह सफाई करूंगी ।

एक के बाद दूसरा घण्टा गुज़रता गया। बहुत देर तक कोई हमारे पास नहीं आया और हमने कोई आवाज़ नहीं की। बच्चे भी चुप थे, वे न रो रहे थे, न फुस-फुसा रहे थे, केवल हमसे चिपटे थे और हमने उन्हें पकड़ रखा था। इस प्रकार अकेले बैठे रहना अजीब लग रहा था क्योंकि हम कई दिन से अकेले नहीं रहे थे। क्रान्ति-कारी सेनाएं जब नगर के निकट आईं और लड़ाई अनिवार्य हो गई, तब हमारे युद्ध-नायक ने घोषणा की कि वह लड़ेगा और उसने नगर के दरवाज़ों पर ताले डाल दिए और अपने सैनिकों को तैयार कर लिया । मैंने समझ लिया कि घेरा पड़ जाएगा और पहले की तरह मैंने डिब्बाबन्द भोजन तथा सुखाए चीनी भोजन, फल तथा अनाज जमाकर लिए थे। हमारे पास छोटा-सा मुर्गीखाना भी था और बच्चों को उनसे अण्डे मिल जाते और अमरीकन डिब्बाबन्द दूध की कुछ पेटियां तथा कुछ आस्ट्रेलिया का डिब्बाबन्द मक्खन खरीद लिया था।

लड़ाई तीन दिन पहले शुरू हुई थी, और पहली गोलियां चलने के बाद से केवल बच्चे ही सोए थे क्योंकि हम सब जानते थे कि यह लड़ाई अन्य लड़ाइयों की तरह न थी। कम्यूनिस्टों ने फौज को संगठित किया था और वे ही नेता थे। हमें बताया गया कि चियांग काई-शेक भी कम्यूनिस्टों के साथ है। इसलिए ये केवल चीनी न थे, कुछ नई और खतरनाक चीज़ उनमें मिली हुई थी । कम्यूनिस्ट विदेशियों के प्रति घृणा पर और भूतकाल के अन्याय पर अपना संगठन खड़ा कर रहे थे। पहले कभी पुरानी घृणाओं को संगठित नहीं किया गया था ।

जैसा कि युद्ध-काल में हुआ करता था, नगर के बहुत-से चीनी हमारे घर भी आए थे। मैं नहीं जानती कि मेरे जैसे दूसरों के घरों में भी वे भरे थे, पर हमारे मकान में हर कमरा चीनियों से भरा था। हमारे साथ हमारे चीनी मित्र और उनके

परिवार तथा उनके मित्र थे। ऐसे समय हर किसीका स्वागत था। जो कुछ भोजन उनके पास होता था, वह वे लाते थे और तीन दिन तक हमने अपने सब साधनों का मिलकर उपयोग किया था पर सीढ़ियों से नीचे की बड़ी कोठरियां, जो अर्ध-उष्ण-देशीय मकानों में अनिवार्य हैं, सड़क के अज्ञात लोगों से भरी थीं। हम उन्हें बाहर नहीं रखते थे। यदि हमारे पास कोई सुरक्षा मिल सकती थी तो हमें खुशी थी। पर आज से पहले तक विदेशियों के साथ सदा सुरक्षा ही रही थी क्योंकि असमान सन्धियों से गोरों के चीनी मित्रों को भी संरक्षण प्राप्त था। मैंने सदा उन सन्धियों से घृणा की थी और अपने लिए मैं कभी भी अपनी इच्छा से उनका संरक्षण स्वीकार न करती, परन्तु व्यवहारतः मैं उनके विरोध में विवश थी। वे गलत तो थीं और अब चीनियों की अनेक पीढ़ियों से संचित घृणा का कड़वा फल उनपर लगा था पर अपनी नफरत के बावजूद मुझे उनका संरक्षण प्राप्त था। लेकिन मैंने अपनी सुरक्षा में कम से कम दूसरों को हिस्सा तो दिया। पिछली रात की बात मुझे याद है। मैंने हंस-कर अपनी बहन से कहा था कि नीचे की कोठरियों में इतने अधिक आदमी भर गए हैं कि मुझे ऐसा लगता है कि जैसे फर्श बोझ के मारे आह भर रहा है। लोग चुप रहने की कोशिश करते थे, पर दबा शोर इकट्ठा हो जाता था और दबाए हुए शोर की तरह छत तक आ जाता था। मैंने यह सोचकर कि वे भूखे होंगे चाय और रोटी नीचे भेजी थी।

अन्त में हम जल्दी सवेरा होने की कामना करते ऊपर सोने चले गए क्योंकि अफवाह यह थी कि सुबह से पहले लड़ाई खत्म हो जाएगी। हमने अपने मन में सोचा कि सवेरे फिर शान्ति होगी। अब हमारे नये शासक होंगे, क्योंकि अब तक यह स्पष्ट हो गया था कि हमारा युद्धनायक पराजित हो जाएगा। सारे जवान, आदर्शवादी तथा देश-प्रेमी दूसरे पक्ष में थे। इस मामले में मैं जानती थी कि मेरे अपने छात्र और मेरे अधिकतर नौजवान मित्र क्रान्तिकारियों के पक्ष में थे। हमारे युद्ध-नायक के सिपाही केवल भाड़ैत थे और पराजय स्पष्ट दीखते ही वे मोर्चे छोड़कर भाग जाते। पर हमें लड़ाइयों की और शासकों के परिवर्तन की आदत पड़ चुकी थी और हम केवल यह आशा कर रहे थे कि नये शासक पुरानों की अपेक्षा अच्छे होंगे। इन युद्धनायकों से तो प्रायः हर चीज़ अच्छी होगी, जो स्वार्थ-परायण और लालची थे, और धैर्यशाली जनता पर एक चुभता हुआ बोझ थे।

उस रात मैं बहुत थकी हुई सोई और सवेरे बहुत जल्दी मेरी नींद खुली, पर

शोर से नहीं, बल्कि इतनी गहरी चुप्पी से कि शुरू में मैं चकित रह गई। अभी पौ ही फटी थी और अपनी मेज़-कुर्सियों की और खिड़की के स्लेटी चौखटे की रूपरेखा मात्र ही मुझे दिखाई देती थी। बन्दूक चलनी बन्द हो गई थी। पुराने ढंग की तोप का धड़ाका समाप्त हो गया था। ठोस चुप्पी से कमरा भरा था। पर कैसी चुप्पी? वहां किसी इन्सान की आवाज़ भी नहीं थी। कोई बच्चा नहीं रो रहा था और नीचे की कोठरी से आती हुई आवाज़ों का रेला खत्म हो चुका था।

मैं उठी और कपड़े पहनकर नीचे गई। जिन कमरों को मैं अपने मित्रों और मित्रों से भरा छोड़ आई थी, वे खाली थे। वहां न कोई बिस्तर था, न कपड़े का निशान था। मैंने नीचे की कोठरी का दरवाज़ा खोला और नीचे गई। वहां कोई परिन्दा भी न था। जगह साफ थी और पीछे कुछ भी न था। केवल रसोई में रसोइया लाल आंखें और पीले गाल किए सन्दिग्ध ढंग से इधर-उधर फिर रहा था।

'क्या हो गया?' मैंने पूछा।

'वे सब चले गए हैं,' वह बोला। 'रात में सब लोग चले गए।'

'क्यों?' मैंने पूछा।

'वे डरे हुए हैं,' वह बोला।

पर मुझे तब भी यह न सूझा कि वे इस बात से डरे हैं कि हमारे साथ दिखाई पड़ जाएंगे। मुझे स्वप्न में भी यह ध्यान नहीं था कि गोरे लोग अब किसीको आश्रय न दे सकेंगे, यहां तक कि अपने को भी नहीं।

छोटी-सी झोंपड़ी में हम घण्टों बैठे रहे और उधर बाहर शोर बढ़ता गया। एक के बाद दूसरा विदेशी मकान धू-धू जलता रहा और हम कुछ न बोले। अन्त में दरवाज़ा खुला और श्रीमती लू एक चायदानी और कुछ कटोरे लिए अन्दर आई।

'आपका मकान नहीं जला है।' उसने चाय ढालते हुए फुसफुसाकर मुझसे कहा। 'उपद्रवी लोग लूट मचा रहे हैं पर उन्होंने आपका मकान नहीं जलाया।'

'इसकी कोई परवाह नहीं,' मैंने फुसफुसाकर जवाब दिया।

उसने फिर धीरे से कहा, 'रसोइया, आमा तथा माली वे सब लूटने का दिखावा कर रहे हैं, पर वे आपके लिए चीज़ें ले रहे हैं। मैंने और यहां के पड़ोसियों ने भी चीज़ें ली हैं, पर वे आपके लिए हैं। आप समझती हैं न कि ये हमने अपने लिए नहीं लीं?'

उसने मेरा गला थपथपाया। 'आपने उस समय मेरी मदद की थी जब मैं बेघर थी। आपने दो बार मेरे बच्चे की जान बचाई।'

यह अजीब मालूम हो सकता है पर इस समय मुझे अपने हृदय में ऐसी शान्ति आती मालूम हुई कि उसकी अब भी मुझे याद है। यहां एक इन्सान था जो अच्छा ही अच्छा था। अपनी जान को जोखिम में डालकर वह हमारी जान बचा रहा था। यह जानकर कितनी सान्त्वना मिली कि यहां वह इन्सान भी था!

पर क्या उसे अपने खतरे की धारणा थी? 'तुम्हें पता है कि अगर हमारा पता चल गया तो वे तुम्हें भी मार डालेंगे?' मैंने फुसफुसाकर पूछा।

'देखूंगी, क्या करते हैं,' उसने सांस रोककर दृढ़ता से कहा, 'मुझे ज़रा छू कर देखें, जंगली जानवर! अच्छे तथा बुरे आदमियों की तमीज़ भी नहीं।' उसने मेरे बच्चे को कंधे से हिलाया। 'छोटे बाबू,' उसने प्यार से फुसफुसाकर कहा और फिर चली गई।

दिन ढलता गया और पागलपन बिना घटे जारी रहा। एक बार फिर दरवाज़ा खुला। इस बार यह मेरी उस सहेली का पति था जिसका बच्चा इन्जेक्शन से मर गया था। वह यह कहने आया था कि बहुत-से चीनी लोग गोरों की तरफ से यत्न कर रहे हैं। वे कम्यूनिस्ट मुख्य सेनापति के पास गए थे और उससे मिल रहे थे और वे उससे प्रार्थना करेंगे कि हमें बख्श दिया जाए।

'हिम्मत रखो,' उसने हमसे कहा, 'हम आपकी रक्षा की कोशिश कर रहे हैं।' मुझे याद है कि वह ज़रा हिचकिचाया और फिर बोला, 'मैं बहुत देर से आप लोगों को तलाश कर रहा हूं क्योंकि श्रीमती लू किसीपर विश्वास नहीं करती। वह कुछ मिनट पहले तक मुझे भी यह नहीं बताती थी कि आप कहां हैं। इस समय यह पता नहीं चलता कि कौन दोस्त है और कौन दुश्मन—इन कम्यूनिस्टों की बदौलत।'

वह चला गया और घण्टों गुज़र गए। फिर दरवाज़ा खुला और एक स्नेहपूर्ण चीनी चेहरे ने अन्दर झांका। यह एक बूढ़ी थी जो उन्हीं झोंपड़ों में रहती थी और उस समय मेरे लिए अपरिचित थी। वह गरम रसे की कटोरियां और नूडल लिए अन्दर आई और उसने वे मेज़ पर रख दिए।

'खा लो,' उसने ऊंची फुसफुसाहट में कहा, 'खा लो विदेशी भलेमानसो, और घबराहट छोड़ दो। वे तुम्हें नहीं ढूंढ सकेंगे। यहां कोई तुम्हारा पता नहीं

बताएगा। हम सब सच्चे हैं। हमारे बच्चे भी नहीं बताएंगे और यदि तुम्हारे बच्चे शोर मचाएं तो मचाने दो। अगर मैं तुम्हारे बच्चे का शोर सुनूंगी तो अपने पोते को पुचकारकर उसे बाहर शोर करने भेज दूंगी जिससे किसीको पता न चले कि कौन चिल्ला रहा है। सब बच्चे एक ही आवाज़ से चिल्लाते हैं।'

वह हमें आश्वस्त करने के लिए सिर हिलाती तथा मुस्कराती हुई चली गई और हमने बच्चों को खिलाया और फिर दिन ढल गया।

अफसोस कि पागलपन बढ़ता गया। हमसे यह बात छिपी न रही कि शोर और उन्माद बढ़ रहा है और रात का अंधेरा हो जाने पर हमारे लिए बहुत कम गुंजाइश है। मैं सोचती थी कि और गोरों का क्या हो रहा होगा। बहुत-सों के ऐसे मित्र होंगे जैसे हमारे थे, पर शायद बहुत-से हमारे जैसा कोई छिपने का स्थान न मिलने के कारण पहले ही मर चुके होंगे। अपने जीवन में पहली बार मैंने पूरी तरह महसूस किया कि मैं क्या हूं। अपने माने हुए राष्ट्र के साथ मेरी चाहे जितनी व्यापक सहानुभूति हो, पर मेरे जन्म का वंश और तथ्य किसी बात से नहीं बदल सकता। मै समझती हूं कि एक तरह से मैंने उसी समय उस छोटी-सी अंधेरी झोंपड़ी में अपना जगत् बदल दिया। मैं जो कुछ थी, उससे बच नहीं सकती थी।

अब किसीने दरवाज़ा नहीं खोला, श्रीमती लू ने भी नहीं। मैं जानती थी कि वह बेवफाई नहीं, बल्कि हमारी रक्षा है। सैनिक बहुत ही पास होंगे इसलिए उसे ऐसा ज़रा-सा भी काम करने की हिम्मत न होगी, जिससे हमारे यहां होने का भेद खुल जाए। हमें उद्दण्डता भरी आवाज़ें, कम्यूनिस्ट गीतों का कर्कश गायन और जलते मकानों की अन्तहीन कड़कड़ाहट और गिरती दीवारों की धड़धड़ाहट सुनाई दे रही थी।

तीसरे पहर इसी समय, जबकि अभी शाम नहीं हुई थी, दरवाज़ा फिर एक वार खुला। यह वही तरुण चीनी था, जो मेरी सहेली का पति था, जो सवेरे आया था। वह अब अन्दर आया और एकदम घुटनों के बल बैठ गया और हमारे सामने प्राचीन चीनी ढंग से साष्टांग लेट गया।

'हम कुछ नहीं कर सकते,' उसने हमसे कहा। उसके गालों पर आंसुओं की धाराएं बह रही थीं। 'हम लाचार हैं। हमसे कहा गया है कि रात होने से पहले सबको मार दिया जाएगा। इसे क्षमा करो। हमें क्षमा करो। हमने आपको बहुत

नुकसान पहुंचाया है। हम आपको कष्ट देकर पाप कर रहे हैं।'

उसने बार-बार साष्टांग किया और हमने उससे उठने की प्रार्थना की और कहा कि हम अच्छी तरह समझते हैं कि आपने भरसक कोशिश की है और इसमें अपनी जान को भी जोखिम में डाला है। वह अकेला ही हमारी सहायता करने वालों में नहीं था। विश्वविद्यालय के छात्र तथा प्रोफेसर, हमारे पड़ोसी तथा मित्र सभी हमारी जान बचाने की कोशिश कर रहे थे।

'आपका धन्यवाद,' हमने कहा और उसके झुककर प्रणाम करने पर हमने भी प्रणाम किया। वह चला गया और अब हम सचमुच अकेले थे। हममें से हरएक ने अपने-अपने ढंग से अवश्यम्भावी का सामना करने का यत्न किया। कुछ बोलना असम्भव था, मेरी बहन और मैं एक-दूसरे का हाथ पकड़े बैठी थीं। फिर यह सोचकर कि उसके साथ उसका पति है, मैं अपने पिता की ओर मुड़ी। वे एक बेंच पर बैठे थे। उनका चेहरा शान्त और मुद्रा स्थिर थी। मैंने उनके प्रति इस समय जितना प्यार कभी नहीं महसूस किया था, या उनके लिए इतना आदर कभी अनुभव नहीं किया था। जहां तक बच्चों का सम्बन्ध था, वे छोटे थे और वे कभी नहीं समझेंगे। मैंने यह समझ लिया कि वे मुझसे पहले जाने चाहिए।

इस अजीब अवाक् प्रतीक्षा में तीसरा पहर बीत गया। भयंकर बेढंगा शोर घट गया। झोंपड़ी में अंधेरा हो गया। उस समय पांच बजे थे, जब अन्तिम बार हम अपनी घड़ियां देख सके तब मैंने अपनी छोटी-सी सोने की कलाई घड़ी उतार ली और उसे श्रीमती लू के बिस्तर के नीचे सरका दिया। कम से कम उसे तो वह मिल जाएगी। भारी कदम दरवाज़े के पास से आते-जाते थे और प्रत्येक क्षण हमें यह आशंका हो रही थी कि अब इसे ज़बरदस्ती खोला जाएगा और यह आज के दिन का अन्त हो जाएगा। इस हताश प्रतीक्षा के बीच एकाएक हमने एक भयंकर आवाज़, एक गरज, छत के ऊपर एक खड़खड़ाहट सुनी। यह क्या था? आवाज़ बार-बार आई। यह तोप ही हो सकती थी पर कौन सी तोप? चीनियों के पास ऐसी कोई तोप न थी जिसकी आवाज़ हमें बहरा करती हुई और मनुष्यों की चिल्लाहट को दबाती हुई आ रही थी। वह आवाज़ बार-बार आई और बार-बार आई।

विदेशी तोप—नदी में युद्धपोत! एकाएक हरेक मन में यही विचार आया। निःसन्देह वही है और क्या हो सकता है? हमने ऐसी सम्भावना की कल्पना नहीं की थी। नदी सात मील दूर थी पर शक्तिशाली शस्त्र वहीं से, अपने गोले हमारे

छिपने की जगह के पास फेंक रहे थे। तोप छूटने की ग्रावाज़ बहुत देर तक ग्राती मालूम हुई, पर ग्रसल में वह कुछ ही मिनट ग्राई थी। जब वह बन्द हो गई तब हमें कोई भी शब्द सुनाई न दिया। चिल्लाने की ग्रावाज़ बन्द हो गई थी। पैरों की ग्राहट भी खत्म हो गई थी। इस ग्राकस्मिक शान्ति को किसी मकान से जलती कड़ी के गिरने की ग्रावाज़ या किसी दीवार के तड़कने की ग्रावाज़ ही भंग करती थी।

ग्रब क्या होगा ? हमने ग्रपने-ग्रापसे पूछा। ग्रहा, कितना ग्रच्छा होता कि श्रीमती लू ग्रा जाती ! पर कोई नहीं ग्राया। हम दो घण्टे या इससे भी ग्रधिक देर तक ग्रकेले चुप्पी साधे बैठे रहे। समय का तो ग्रन्दाज़ ही है, क्योंकि ग्रंधेरे में यह जानना कठिन था कि समय कितने धीरे-धीरे चल रहा है। ग्रौर इस शान्ति का ग्रर्थ क्या था ?

ग्रन्त में दरवाज़ा खुला ग्रौर रात की हवा में उड़ती मशाल की ज्वाला के प्रकाश में हमने फिर ग्रपने चीनी मित्र को देखा। उसके चारों ग्रोर कम्यूनिस्ट सैनिक थे। यह उनकी वर्दियों से दिखाई दे रहा था। उसने देहली के पार कदम रखा ग्रौर दरवाज़े में खड़ा हो गया। उसने न तो प्रणाम किया ग्रौर न कोई ग्रौपचारिक नम्रता दिखाई।

'तुम सबको विश्वविद्यालय भवन में जाना है,' उसने कठोरता से ग्रादेश दिया। 'नये सेनापति का ग्रादेश है कि सब गोरे वहां जमा हों।'

मशाल की रोशनी में मैंने उसके होंठ हिलते ग्रौर पलकें उठती देखीं। उसकी कठोरता का ग्रर्थ हमारी रक्षा के ग्रतिरिक्त कुछ न था। मुझे क्षमा करना,' उसके होंठ चुपचाप कह रहे थे।

बात समझकर मैं तुरन्त खड़ी हो गई ग्रौर दोनों हाथों से एक-एक बच्चे को पकड़े सबसे ग्रागे झोंपड़ी से बाहर ग्रा गई। बाहर ग्रंधेरे में हमें देखने वाले लोगों में मैंने श्रीमती लू को देखा। वह रो रही थी ग्रौर मशाल की रोशनी उसके गीले गालों पर पड़ रही थी पर ग्रौर सबने कोई चेष्टा नहीं की ग्रौर हम इस डर से किसीसे नहीं बोले कि ग्रगर जान-पहचान दिखाकर हम उन्हें ग्रपना मित्र ज़ाहिर कर देंगे तो बाद में उन्हें कष्ट उठाना पड़ सकता है। उन कच्चे मकानों के छोटे-से झुंड से निकलकर सब्ज़ी की क्यारियों के बीच की संकरी मेढ़ों पर चलते हुए—उनकी सब गोभियां ग्रौर प्याज़ भीड़ के पैरों से कुचल गए—ग्रौर फिर घास वाले कब्रिस्तान को पार करके हम विश्वविद्यालय की सड़क पर ग्रा गए। ग्रंधेरे में मेरा लाचार

बच्चा अधीर हुआ और उसने आगे-आगे चल रहे जवान सैनिक को धकेल दिया। उसने अपनी संगीन उठाकर भयंकर गुर्राहट से उसकी तरफ मुड़कर देखा।

'मेहरबानी करो,' मैंने दबी आवाज़ में कहा, जैसे एक बार मेरी मां ने मेरी तरफ से कहा था। 'यह तो निरी बच्ची है। मैं इसकी तरफ से माफी मांगती हूं।'

इसके बाद हम चुपचाप आगे चलते गए और अन्त में विश्वविद्यालय क्षेत्र-में आ गए और शत्रु सन्तरियों के बीच से गुज़रते हुए बड़े भारी विश्वविद्यालय-भवन में घुसे, जहां दूसरे लोग पहले ही प्रतीक्षा कर रहे थे। पर जब हम गुज़रे, तब जलती मशालों की रोशनी सन्तरियों के चेहरों पर पड़ी और मैंने यह देखने की कोशिश की कि क्रान्तिवादी लोग किस तरह के हैं। वे सब के सब तरुण थे। हर चेहरा तरुण था और उनमें एक भी चेहरा परिचित न दिखाई दिया। वे अज्ञानी चेहरे—नशे में चूर लाल और हिंस्र आंखों वाले, और शायद वे शराब के नशे में चूर थे, लेकिन शायद केवल विजय के और घृणा के नशे में ही चूर थे। उन्होंने हमारी तरफ ताका और भयंकर हंसी से मुंह फाड़े, क्योंकि उन्होंने जो कुछ देखा वह गोरे लोगों का, जो इतने समय तक उनके अत्याचारी रहे थे, अधः पतन और मानहरण था। मैं जानती थी, वे जो कुछ अनुभव करते थे, वह मुझे पता था और मैं उनसे घृणा नहीं कर सकती थी। इसलिए मैं फिर अपने पुराने विचारों पर आ गई। कांटों के बीज बोए गए थे और ये उनके फलस्वरूप कांटे, जो इतने पहले ही दिखाई दे गए थे, अनिवार्य और अपरिहार्य थे और यह समय संयोग ही है कि मैं यहां थी।

हम सीढ़ियां चढ़कर बड़े कमरे में पहुंचे और वहां हमें दूसरे गोरे लोग मिले—पुरुष, स्त्री और बच्चे। कुछ अज्ञात थे, कुछ गोलियों से घायल थे, कुछ को पकड़ा-धकड़ी और धक्का-मुक्की में चोट आई थी। और अगवानी हो जाने के बाद हमने मृतों के बारे में अलग-अलग तरह की दुःखद कहानियां सुनीं। ये सब, जो जीवित थे, उन बहादुर चीनियों द्वारा बचाए गए थे जिन्होंने हमारा पक्ष लेने के कारण अपने खतरे और भविष्य के दण्ड का विचार बिना किए गोरों की जान बचाने के लिए लगातार यत्न किया। यह विस्मयकारक और प्रसन्नता का मिलन था और मैंने अपने-आपको लोगों के इतना निकट कभी अनुभव नहीं किया था। साथ ही मैंने चीनियों को भी कभी इतने प्यार और सम्मान से नहीं देखा जितना अब। मुझे पक्का यकीन था कि कहीं और कभी मेरे दोनों महान् राष्ट्र समझ-बूझ वाली और स्थायी मैत्री में आबद्ध होंगे और इस प्रकार वह भयंकर दिन आत्मा के उल्लास में

समाप्त हुआ। हमने बच्चों को उन ओवरकोटों तथा रज़ाइयों में सुलाया जो चीनियों ने इकट्ठी की थीं और अन्त में हम सो गए।

कहने के लिए और क्या बचा है ? हम उस रात और सारे अगले दिन यहां रहे और तब भी हमें यह पता न था कि हमें छोड़ दिया जाएगा या किसी अज्ञात प्रयोजन के लिए पकड़े रखा जाएगा। पर हमारी कैद में कोई अकेलापन न था। उस रात में और अगले दिन एक-एक करके बचे हुए थोड़े-से गोरे जो अभी तक नहीं मिल सके थे, वहां ले आए गए। अब हमें मृतों का पता चला और उनमें एक वृद्ध कैथोलिक पादरी भी था जो इटालियन था और जो उस चीनी विश्वविद्यालय में अध्यापक रहा था जिसमें मैं भी पढ़ा चुकी थी। वहां हम अपनी कक्षाएं भरने की प्रतीक्षा करते हुए प्रायः बातचीत किया करते थे।

पर हमने जो अकेलापन या सूनापन नहीं अनुभव किया, उसका कारण यह था कि चीनी मित्र लगातार आ रहे थे और वे कठोर क्रान्तिकारी संतरियों की परवाह न करते हुए हमारे लिए भोजन और कपड़े और दांतों के ब्रुश और रुपया-पैसा तथा कन्घे और गर्म कपड़े और अपनी समझ में आने वाली हर चीज़ हमारे आराम के लिए ला रहे थे। वे रोते हुए और भग्नहृदय आते थे और हमें उन्हें दिलासा देना पड़ता था और हम उन्हें बार-बार धन्यवाद देते और यह विश्वास दिलाते कि जो हुआ है उसके लिए हमारे मन में किसीके प्रति दुर्भाव नहीं है और सचमुच यह बात सत्य थी क्योंकि उन्होंने जो मित्रता और प्रेम दिखलाया था उससे हमारे हृदय में उत्साह और प्रेम पैदा हुआ था।

अब भी हमें पता न था कि क्या होने वाला है, यद्यपि हमने यह सुना था कि विदेशी युद्धपोतों के कमाण्डर हमारी मुक्ति के लिए बातचीत कर रहे हैं। पर दूसरे दिन तीसरे पहर के पिछले हिस्से में हमसे कहा गया कि हम इकट्ठे हो जाएं और विश्वविद्यालय-भवन से बाहर आ जाएं। हमें बांध तक पैदल जाना था और वहां युद्ध-पोतों पर बैठ जाना था। जब हम बड़े दरवाज़ों पर पहुंचे तब हमने देखा कि कई टूटी-फूटी सवारियां बूढ़ों और छोटे बच्चों वाली स्त्रियों के लिए लाई गई और इस प्रकार अन्य माताओं के साथ मैं सवारी में चढ़ गई और सुपरिचित सड़कों से होती हुई हमारी मोटर चली। यह कितना अजीब था और इतने वर्ष गुज़र जाने के बाद आज भी मुझे यह अजीब लगता है। मुझे ऐसा लगता है जैसे यह कल की ही घटना हो। सड़कों के दोनों तरफ चुपचाप खड़े लोग देख रहे थे, पर इतना

सुपरिचित दृश्य एक ही रात में बदल गया था। क्या मैं फिर कभी इस नगर को देखूंगी ? मैं नहीं जानती थी। पर फिर भी कभी न लौटने की कल्पना करना भी मेरे लिए असम्भव था।

बहुत धीरे-धीरे वे मील गुज़रे। अन्त में हम नदी के किनारे पहुंच गए और वहां हमें अमरीकन नौ-सैनिक मिले जो हमें जंगी जहाज़ पर ले गए और वहां पहुंचते ही हमें पता चला कि हम दूसरी बार बाल-बाल बचे—इस बार अपने ही देशवासियों के हाथ। उसकी कहानी यह है। अमरीकन वाणिज्य-दूत जॉन डेविस जो मेरा पुराना मित्र है, जिसके पिता मिशनरी और मेरे पिता के मित्र थे, उस जंगी जहाज़ पर था जिसपर से अमरीकन कमाण्डर हमारे बचाव के लिए आदेश दे रहा था। नगर के कम्यूनिस्ट सैनिक अफसरों को हमारे पहुंचने के लिए समय का अल्टीमेटम दे दिया गया था और यदि हम निश्चित समय तक, मेरे ख्याल में यह छह बजे का समय था, न पहुंचते तो शहर पर पूरे तौर से अच्छी गोलाबारी की जाती, परसों वाली गोलाबारी की तरह नहीं, जो सावधानी से इस तरह आयोजित की थी कि नगर की दीवार के भीतर खाली स्थानों पर गोले पड़ें। इसलिए उससे केवल दो या तीन आदमी मरे थे। छह बज गए और हम कहीं दिखाई न पड़े और अमरीकन कमाण्डर बमवर्षा का हुक्म देने ही वाला था पर जॉन डेविस ने, जिसे पता था कि चीनियों के लिए ठीक-ठीक समय का कोई अर्थ नहीं है, पन्द्रह मिनट और रुकने की प्रार्थना की और जब उतना समय खत्म हो जाने के बाद भी हम दिखाई न दिए, तब कुछ देर और रुकने के लिए कहा। उसके बाद भी हम कहीं दिखाई न दिए और अमरीकन अफसर तैयार था कि तीसरी बार जॉन डेविस ने कुछ मिनट और प्रतीक्षा करने की प्रार्थना की। इन मिनटों में हमारा पहला मैला-कुचैला काफला नदी के किनारे पहुंचा। यदि तोप चली होती तो हम निःसन्देह अपनी ही गोलाबारी से मारे गए होते। जो भी हुआ, हम सुरक्षित जहाज़ों पर आ गए।

अपने सारे जीवन में उन जंगी जहाज़ों को नदी के किनारे देखती रही थी और मेरी यह आकांक्षा रही थी कि वे वहां न होते। मैंने यह महसूस किया कि वे वहां नहीं होने चाहिए। चीन के भीतरी जलों में विदेशी जंगी जहाज़ नहीं होने चाहिए। अब ऐसा ही एक जहाज़ मेरी और मेरों की रक्षा कर रहा है और हमें किसी शरण की ओर ले जा रहा है। मौत से बचकर मैं खुश थी पर मैं चाहती थी कि मुझे

अपनी इच्छा के विरुद्ध उस चीज़ को उचित मानने की आवश्यकता न पड़ी होती जिसे में अब भी गलत समझती थी। पर अब बेकार अप्रासंगिक बातों की गुंजाइश न थी और अब में अपने ही देशवासियों की ओर मुड़ी। वे केवल नौ-सैनिक थे जो तरुण और असंस्कृत थे और 'विध्वंसक' पर से आए थे पर में उनसे कोई मैत्रीपूर्ण शब्द सुनने के लिए लालायित थी। अफसोस कि वे किसीके प्रति भी मैत्रीपूर्ण न थे। मेरा ख्याल है वे थके हुए थे। मेरा ख्याल है, वे हमसे परेशान हो गए थे क्योंकि हम उस समय नानकिंग छोड़कर नहीं गए जब कई महीने पहले वाणिज्य-दूत ने हमें क्रान्तिकारी चीनी सेना से पैदा होने वाले खतरों की चेतावनी दी थी। निश्चय ही वे तरुण अमरीकन नौ-सैनिक हमारे चीन में रहने की बात ही नहीं समझ सकते थे और वहां हमारी देखभाल करना एक झंझट ही था। जो भी हो, वे कठोर थे और उनमें से कुछ तिरस्कारपूर्ण ही थे और मैं उनसे सकुचाकर दूर हो गई और सचमुच सूनापन अनुभव करने लगी। फिर भी बच्चों की खातिर मुझे उनकी मदद स्वीकार करनी पड़ी और इस प्रकार जहाज़ पर हम अन्त में एक नंगी मेज़ के चारों ओर जमा हुए जहां प्लेटों और छुरी-कांटों तथा चम्मचों का ढेर लगा रखा था और एक नौ-सैनिक ने किसी तरह का शोरबा परोसा। मेरे अलावा हरएक ने खाया, और मे खा न सकती थी। यह केवल अत्यधिक थकान ही नहीं थी, मन का उल्लास उड़ गया था। चीनी, जो हमारे मित्र रहे थे, बहुत दूर थे, और यहां केवल ये उजड्ड नौजवान थे जो बच्चों की ओर देखकर भी न मुस्कराते थे।

रात को हम एक और दुर्घटना के शिकार हुए। नौ-सैनिकों के लिए बनाई गई केबिन में चौदह स्त्रियों और उनके सब बच्चों को भर दिया गया। कुछ स्त्रियां मिशन अस्पताल से आई थीं और नवजात बच्चे लिए थीं और उन्हें सबसे अच्छी जगह दी गई। और स्त्रियां फर्श पर सो गई। मुझे अपने बच्चों के लिए एक बर्थ दी गई और मैंने उन्हें शरीर पर पहने कपड़ों में सुला दिया—उनके पास और कपड़े ही नहीं थे—और मैं क्षण भर आराम करने के लिए बैठ गई। इसके बाद मैंने देखा कि मेरी लाचार बच्ची को बुखार-सा है और मैं कहीं से एक थर्मामीटर मांगकर लाई और ताप के लिए उसे लगाया। वह चिड़चिड़ी हो रही थी और उसने कांच को चबाकर टुकड़े-टुकड़े कर दिया, और मुझे यह चिन्ता हुई कि इसका कुछ भाग पेट में न चला जाए। उसी समय मुझे दूसरों के चेहरों पर कुछ हरापन दिखाई दिया और एकाएक मेरे छोटे बच्चे को उलटी हुई, और अन्य बच्चे भी उल्टी करने लगे।

कुछ ही मिनट में मेरे अलावा और सब स्त्रियों और बच्चों को तेज़ मतली होने लगी और एक मिशनरी डाक्टर, जिसे उन्हें देखने के लिए बुलाया था, केबिन में लड़खड़ाता हुआ घुसा क्योंकि वह स्वयं बीमार था और उसने बताया कि ये सब बीमार हैं। ऐसा मालूम होता था कि शोरबा बहुत दिनों से रखे पुराने डिब्बाबन्द गोश्त से बनाया गया था और इसमें टोमेन ज़हर हो गया था।

ओहो, वह कैसी रात थी! मैं कई बर्तन लिए हुए दौड़ती आती जाती थी, उन्हें खाली करती और धोती और फिर दुबारा भरने के लिए मुंह के आगे पकड़ती। पेशाब-घर केवल एक था, पर सौभाग्य से उसमें फ्लश का प्रबन्ध था और इसी एक से हमने जैसे-तैसे काम चला लिया। एक बार मैं भरे बर्तन लेकर अन्दर गई तो मैंने एक सहेली को, जो मेरी पड़ौसी रही थी, आतुरता से उल्टी में कुछ ढूंढते देखा। उसने अपनी विवाह की अंगूठी पिछले दिन, जब कि एक कम्यूनिस्ट सैनिक ने वह उससे छीनने की कोशिश की थी, निगल ली थी। औरत उसे तलाश कर रही थी। उस रात की बेहूदी भयानकता में उसने वह अपने दृढ़-संकल्प के ज़ोर पर ढूंढ ही ली।

जब हालत कुछ सुधरी और यह स्पष्ट हो गया कि कोई मरने वाला नहीं है, और जब मेरे अपने बच्चे अन्त में सो गए, तब सवेरा होने वाला था और जहाज़ तेज़ी से नदी में बहता शांगहाई की ओर जा रहा था। तब मैं फिर अपनी बर्थ के किनारे बैठ गई और मेरी यह इच्छा हुई कि मेरे पास पढ़ने के लिए कुछ होता, कोई ऐसी चीज़ होती जो मेरे मन को इस भयानक नरक से दूर हटाती और मुझे अज्ञात कल के बारे में सोचने से बचाती। कोई पुस्तक दिखाई नहीं देती थी, पर मानो किसी छठी इन्द्रिय से प्राप्त ज्ञान से मैंने बर्थ के नीचे हाथ डाला और वहां एक खुले कन्वास के थैले में किसी पुस्तक की रूपरेखा मुझे अनुभव हुई। मैंने इसे खींचकर निकाल लिया और दीवार पर लगे बड़े तेल के लैम्प के प्रकाश में इसका नाम पढ़ा। यह 'मोबी डिक' थी और यह मैंने पहले नहीं पढ़ी थी। कभी मत कहो कि देवता दयालु नहीं है! इधर दूसरे लोग बुखार और कष्ट दूर करने के लिए सोते रहे, पर मैं भली-चंगी बैठी रही और फिर शान्त होकर शेष रात पढ़ती रही।

शांगहाई में जहाज़ से उतरने पर मुझे एक आनन्ददायक लापरवाही की अजीब अनुभूति हुई। आदमी का सामान जाता रहे और उसके बारे में कुछ भी न किया

जा सके तो उसका ख्याल तो आता ही है। अपना नानकिंग का घर और उसमें मौजूद छोटी-छोटी वस्तुएं, मेरा बनाया हुआ सुन्दर बगीचा, सहेलियों और छात्रों के साथ मेरा जीवन इन सबसे मुझे मोह था। खैर, वह अब खत्म हो चुका था। मेरे पास अपने पहने हुए पुराने कपड़ों के अलावा और कुछ न था। मुझे उदास होना चाहिए था और मुझे यह अनुभव करके धक्का-सा लगा कि मुझे ज़रा भी उदासी नहीं अनुभव हुई। इसके विपरीत, मुझे केवल जीवित और मुक्त, अपने माल-असबाब से भी मुक्त होने पर किसी साहस-कार्य कर लेने के बाद जैसी जीवन-दायिनी अनुभूति हुई। कोई भी मुझसे कुछ आशा नहीं करता। मुझपर कोई भार नहीं, कोई कर्त्तव्य, कोई काम नहीं। मैं केवल शरणार्थी थी, उस कार्य-व्यस्त तरुण स्त्री-से जो मैं पहले रही थी, कोई सर्वथा भिन्न चीज़ थी। मैंने यह परवाह भी न की कि मेरे उपन्यास की पाण्डुलिपि नष्ट हो गई। जब और चीज़ें चली गईं तो वह क्यों न जाती।

मैं यह सलाह न दूंगी कि ऐसी मानसिक अवस्था को जान-बूझकर बुलाया जाए क्योंकि इसका, असल में, अर्थ यह था कि मेरी जड़ें एकाएक खिचकर टूट गई थीं और उन्हें मैं फिर कभी नीचे उतनी गहराई में नहीं लगा सकती थी। जिसका सारा अभ्यस्त वातावरण आकस्मिक प्रचण्डता से नष्ट हो गया हो, वह मेरा आशय समझेगा और जिनका ऐसे नहीं नष्ट हुआ, उनके लिए समझना असम्भव है, इसलिए उन्हें समझाने की कोशिश करना बेकार है। बस, बात सिर्फ यह थी कि मेरे लिए फिर कभी कोई चीज़ उतनी मूल्यवान् नहीं हुई—न कोई स्थान और न कोई प्रिय वस्तु—क्योंकि मैं अब जानती थी कि हर भौतिक वस्तु नष्ट की जा सकती है। दूसरी तरफ मनुष्य पहले से भी अधिक महत्त्वपूर्ण हो गए और मानवीय सम्बन्ध और भी अधिक मूल्यवान् बन गए। मेरा मन पिछले अड़तालीस घण्टे में मिले विभिन्न लोगों से भर गया; उस क्षण से लेकर, जब हमारा दर्जी हमें चेतावनी देने आया था और मेरी प्रिय श्रीमती लू हमारी रक्षा के लिए खेतों में से दौड़ती आई थीं, अन्तिम रूखे तरुण नौ-सैनिक तक—वे रूखे ही रहे क्योंकि उनमें से एक ने भी न तो ज़हर के लिए ज़रा भी ज़िम्मेदारी दिखाई और न किसी बच्चे के लिए दया।

जब जहाज़ गोदी में पहुंचा, तब शांगहाई के बांध पर हमें देखने के लिए जमा भीड़ को मैंने अच्छी तरह देखा और न मुझे शर्म हुई, न चिन्ता। वहां ऐसे चीनियों की कमी न थी जो गोरे लोगों की एक भीड़ को मैले-कुचैले शरणार्थियों के रूप में

देखकर अपनी प्रसन्नता नहीं छिपा रहे थे, पर वहां दूसरे लोग भी थे जो कृपालु और सज्जन थे, और हमें भोजन तथा आश्रय देना चाहते थे। मैं पहले ही यह सीख चुकी थी कि जहां कहीं भीड़ होगी, उसमें यही वैषम्य होगा। हम सबके लिए स्थान का प्रबन्ध कर लिया गया था और मैं इतनी उदास थी कि अब मुझे यह भी याद नहीं आता कि हम कहां गए थे या कितनी देर रहे थे, सिवाय इसके कि ज़्यादा देर नहीं रहे थे। हम नहाए और हमने अपने लिए इकट्ठे किए गए कपड़ों में से नये कपड़े पहने। मैंने अनुभव किया कि शांगहाई हमेशा से भी कम सहिष्णु है और मुझे यहां से चले जाना चाहिए।

मैं ऊंचे पर्वतों में कहीं जाना चाहती थी, जहां थोड़े आदमी हों और सम्भव हो तो कोई भी परिचित न हो और जहां मैं उस सब पर एक बार विचार कर सकूं जो मुझपर हो गुज़रा है, और यह देखूं कि इसका क्या अर्थ है कि मेरी जड़ें खिचकर टूट गई हैं। आदमी ऐसी जड़ों से क्या करता है, जिनका अब कोई लाभ नहीं था। और क्या जड़ें आवश्यक ही हैं ? यदि नहीं तो उन्हें फिर क्यों जमाया जाए ? इन प्रश्नों का उत्तर मुझे पाना था, और मैंने अपने परिवार से कहा :

'यहां से चलो, जापान चलो। उन नागासाकी और समुद्र के ऊपर वाले पर्वतों पर हम कोई जापानी मकान किराए पर ले लेंगे।'

मुझे याद नहीं कि यह सब कैसे हुआ। इतना ध्यान है कि मिशन के अध्यक्ष ने हमें पैसे के लिए अपनी तनख्वाहें ले लेने दीं। न मुझे यही याद है कि हमें मकान कैसे मिला और न यह याद है कि कैसे और किन उपायों से हम उस ध्येय तक पहुंचे पर हमें एक छोटे-से बहुत भरे हुए जापानी जहाज़ पर जगह मिली और हम समुद्र पार करके जापान से क्यूशू द्वीप पर नागासाकी पहुंच गए। उन दिनों नागासाकी साफ तथा सुन्दर स्थान था और मेरा परिचित था क्योंकि प्रशान्त महासागर से आते-जाते हुए हम कई बार वहां गए थे। वहां भी मेरी सबसे बड़ी बहन बीमार हो गई थी और जहाज़ पर छह महीने की आयु में मर गई थी। जब कि मेरे पिता मेरे जन्म से बहुत पहले छुट्टी मनाकर लौटने पर उसे चीन ले जा रहे थे।

फिर से शान्त स्वच्छ सड़कों पर चलकर, छोटी-सी सराय में जाकर और उसके शान्ति-भरे कमरों में रहकर, देर तक और भिगोने वाला गर्म जापानी स्नान कर, स्वादिष्ट जापानी भोजन खाकर फिर सोकर, घण्टों सोकर रात का आराम मिला ! मुझे याद है कि किस तरह मैंने इस प्रकार फिर अपनी पहली दशा में आने के प्रत्येक

क्षण का स्वाद लिया और जागने के बाद हम मैत्रीपूर्ण विनम्र लोगों के बीच सड़कों पर घूमे और हमने पर्वतों पर सायंकाल कोहरा जमा होते देखा जो मकानों को समुद्र में धकेल रहा-सा मालूम होता था। उन्हीं पर्वतों में ऊपर वह छोटा-सा जापानी नगर छिपा था जिसमें हम कुछ दिनों तक के लिए, जब तक कि हमें यह पता न चले कि हम क्या करना चाहते हैं, घर ढूंढ़ लेने की आशा करते थे।

सब कुछ इतना आसान, सुरक्षित और इतना चिन्ताशून्य काम था। एक जापानी टैक्सी वाले ने हमें चक्करदार सड़कों से पर्वत के अन्दर पहुंचा दिया और हमने एक सराय में कमरे ले लिए जहां रहकर हम अपने लिए मकान तलाश करते और उसमें पहुंच जाते और इस सराय की मुझे इसलिए याद है कि इसमें स्नानघरों में गर्म झरने थे जिनमें बढ़िया स्वच्छ गर्म पानी था जो दवाई-युक्त तथा शान्तिदायक था। पहाड़ में ऐसे कई झरने थे। चट्टानों से भाप के छोटे-छोटे घेरे उठते रहते थे और जापानी लकड़हारे तथा पर्यटक भाप में अण्डे पकाते थे और अपने चावल और सब्जियां गरम करते थे और मैं पिकनिक की टोकरियां भर लेती थी। और बच्चों के लिए वही करती थी।

मेरी बहन तथा उसका परिवार आगे कोबे चले गए क्योंकि उसके बच्चा होने वाला था और डाक्टर के निकट होने की आवश्यकता थी। और मेरे पिता ने, जो अपनी आदत के विपरीत, काम से छुट्टी हो जाने से त्रस्त हो गए थे, स्वयं ही कोरिया जाने का निश्चय किया और इस प्रकार उनजेन में हम केवल चार थे। मैं सदा की तरह होटल में रहने से बहुत जल्दी ऊब गई और कुछ ही दिनों में हम घाटी की दूसरी तरफ एक और छोटे जापानी मकान में चले गए। यह लकड़ी का था, जैसे यहां सब मकान होते हैं, और यह चीड़ के वन में बहुत अन्दर को था। मकान अपने-आपमें एक ऐसा बड़ा कमरा था जिसका सारा सामान दोनों ओर के ऊंचे फट्टों में सरकाया जा सकता था और इसके पीछे तीन डिब्बे जैसे सोने के कमरे थे तथा एक छोटा-सा कमरा था जिसमें नहाने के लिए एक बड़ा अण्डाकार लकड़ी का टब था। पीछे की तंग ड्योढ़ी पर एक अनगढ़ मेज़ थी जो मेरी रसोई बन गई और इसके ऊपर एक लकड़ी की अंगीठी थी जो असल में एक मिट्टी का मरतबान ही था जिसके ऊपर जाली रखी थी, और वहां मैं खाना पकाती थी।

इस सादी जगह मुझे आराम मिला। चीड़ की सुगन्ध हवा में व्याप्त थी और वन की निस्तब्धता साक्षात् शान्ति थी। मैं घर में न कोई नौकर चाहती थी और

न कोई नया आदमी, और सच्ची बात यह है कि सिवाय इसके कुछ काम भी नहीं था कि भोजन बना लिया जाए और फर्श बांस की झाड़ू से बुहार दिया जाए और यह सब करने के बाद, जो हमारे थोड़े-से कपड़े थे उन्हें नाले में धो लिया जाए। रातें लम्बी और शान्त होती थीं और सवेरे में केकड़े बेचने वालियों की हलकी पद-ध्वनि और खुसर-पुसर से ही जागती थी। यदि मैं नहा-धो लेती और कपड़े पहन लेती और बाहर जाती, तो वहां फटे परन्तु साफ सूती किमोनो या लहंगे पहने हुए पांच या छह बूढ़ियों को देखती, जो हमारे रहने के कमरे के फर्श के किनारे' पर, जिधर उसके आगे पेड़ ही पेड़ थे, एक कतार में बैठी होती थीं। वे इतनी भली थीं कि मुझे जगाती नहीं थीं, पर जब एक बार उन्होंने मुझे देख लिया, तब अपनी ताज़े केकड़ों और मछलियों की टोकरियां ऊपर उठातीं जिससे मैं उस दिन के लिए छांट-कर ले लूं। मैं सब से न्याय करने के लिए सबसे खरीदने की कोशिश करती थी और वे कोई शिकायत नहीं करती थीं पर वे सदा इकट्ठी आतीं और इकट्ठी जातीं और और ज़ोर लगाते केकड़ों या भड़कती हुई मछलियों की घास में बंधी लड़ी मेरे हाथ में छोड़ जाती थीं। फरहरा उबाला चावल और किसी तरह की एक सब्ज़ी एक समय के भोजन के लिए काफी थी और हम सादे भोजन से स्वस्थ हो गए और हमारी आंखों में चमक आ गई।

कभी-कभी हम डबलरोटी के, जो मैं सप्ताह में एक बार पकाती थी, सैंडविच बना लिया करते थे और फिर दिन भर के लिए बाहर निकल जाते थे। हम किसी चोटी पर चढ़ते या किसी घाटी में बढ़ जाते और प्रायः हम यह देखते कि और कितने ही पर्यटक सैलानी तथा पैदल यात्री इसी प्रकार घूम रहे हैं क्योंकि जापानियों को अपने पर्वतों और सौंदर्य-स्थलों से प्रेम है और वे सैर-सपाटे से कभी नहीं थकते। मैं वहां बहुत सुखी और निकम्मी रही हूंगी क्योंकि जापान के पर्वतों में बिताए महीनों के बारे में और कुछ भी याद नहीं आता। केवल एक बात याद आती है कि एक बार मैं लकड़ी के टब में रोज़ की तरह नहा रही थी कि मेरी नज़र लकड़ी की दीवार में पहले से बने एक छेद पर पड़ी और मुझे वह हरा नहीं दिखाई दिया, जैसे कि पास के जंगल के कारण सदा दिखाई देता था, बल्कि एकटक देखती काली आंखों से भरा दीखा। मैंने एक क्षण उस आंख की ओर घूरा, फिर अपनी पहली उंगली छेद में डाली जिसपर आंख पीछे हट गई। मैंने विचार किया कि यह आदमी की आंख है या किसी औरत की, पर मैं कुछ न जान सकी। जब मैं स्नान कर चुकी और कपड़े पहन-

कर आई तब पता चला कि वह आंख एक जवान औरत की थी जिसके पास छह अण्डे थे जो वे बेचना चाहती थी। उसने टब में पानी की छपछपाहट सुनी थी और वह यह जानना चाहती थी कि मैं घर पर हूं या नहीं।

मैं अपना घर का काम करने में सुख अनुभव करती थी, या मेरा यह ख्याल था कि मैं सुख अनुभव करती हूं। पर एक दिन सवेरे उठने से पहले मैंने पिछली ड्योढ़ी से एक ऊंची परिचित ज़नानी आवाज़ सुनी और किमोनो पहनकर मैं बाहर गई तो मैंने देखा कि हमारी एक वफादार नौकरानी नानकिंग से आई है। इस उत्साही तथा अदम्य औरत ने निश्चय किया था कि मुझे तलाश करना उसका कर्तव्य है क्योंकि, उसने कहा, उसे निश्चय था कि मुझे उसकी आवश्यकता होगी। वह शांगहाई गई, मित्रों से मेरे बारे में पता लगा था और फिर अपने पैसे से उसने जहाज़ का सबसे निचले दर्जे का टिकट खरीदा और जापानी भाषा का एक शब्द भी न जानते हुए हमारे पर्वत-शिखर पर आई। मुझे समझ में नहीं आया कि उसने यह सब कैसे किया पर जब मैंने उसे पीछे की ड्योढ़ी में नीला सूती जाकेट और लहंगा पहने देखा, उसका सामान एक फूलदार कपड़े में बंधा था और उसका गोल खुशमिज़ाज चेहरा मुस्करा-हट से खिला था, तब मुझे पता चला कि मुझे सचमुच उसकी आवश्यकता थी और मैं उसे देखकर प्रसन्न हुई। हमने एक-दूसरे को बांहों में जकड़ लिया और कुछ मिनटों के अन्दर वह सदा की तरह सारा इन्तज़ाम कर रही थी।

इस औरत की कहानी इतनी उलझन-भरी है कि यहां नहीं सुनाई जा सकती, पर यहां शायद कोई आदमी इसकी बारीकियों को तब तक समझ भी नहीं सकता जब तक उसने स्वयं उससे यह कहानी और सब घटनाओं की व्याख्या न सुनी हो। वर्षों बाद वह बड़े स्थूलरूप में मेरे उपन्यास 'दि मदर' की सामग्री बनी, पर उन दिनों में भी उसकी पूरी रामकहानी नहीं जानती थी। मैंने उसे पहली बार तब देखा था जब वह एक मिशनरी परिवार में आमा (नौकरानी) के तौर पर नियुक्त थी। एक बार हम उस परिवार के साथ उत्तरी चीन के समुद्र-तटवर्ती स्थान पेइताइहो में गर्मियों में एक ही मकान में रहे थे—इस स्थान का मैंने न मालूम क्यों उल्लेख नहीं किया। शायद इसका कारण यह है कि मैं इसे अज्ञात रूप से भूल गई क्योंकि यह वह स्थान था जहां मुझे पहली बार यह पता चला कि मेरा बच्चा कभी भी नहीं बढ़ सकता। जो भी हो, इस स्त्री, ली साऊ-त्से ने—और मुझे बाद की घटनाओं के कारण इसका नाम लिखना पड़ेगा—यह निश्चय किया कि वह मेरे यहां काम

करना चाहती है क्योकि उसका कहना था कि मै चीनी उसकी तरह ग्रासानी से बोल सकती हू पर मैने उसकी मालकिन के प्रति ग्रौचित्य का ध्यान रखते हुए उसे नौकर रखने से इन्कार कर दिया ग्रौर इस तरह गर्मिया खत्म हो गई थी। इसके ग्रलावा, मुझे ग्रामा की जरूरत न थी क्योकि मेरे पास वफादार ग्रामा थी।

कुछ महीनो बाद ली साऊ-त्से नानकिंग ग्राई ग्रौर उसने मेरे यहा काम करने का पक्का निश्चय कर रखा था। उसने मुझसे कहा कि मैने ग्रपनी नौकरी छोड दी है ग्रौर मै वापस न जाऊगी ग्रौर जब मैने कहा कि मुझे केवल खाना खिलाने वाला लडका चाहिए क्योकि मेरा खाना खिलाने वाला लडका ग्रपने वृद्ध माता-पिता की खोज-खबर लेने घर गया है तो वह बोली कि मै उसकी जगह उसीका काम कर लूगी। तब वह इसी रूप मे रह गई। उसके सर्दियो के मोटे कपडो के बावजूद दिन गुजरने पर यह स्पष्ट हो गया कि उसके बच्चा होने वाला है । वह बहुत दिनो से विधवा थी। इसलिए हमारे चीनी समाज मे यह चीज बडी ग्राश्चर्यजनक ग्रौर गड-बड करने वाली थी। मैने बहुत दिन गुजरने से पहले उससे इस बात की चर्चा करना जरूरी समझा जिसपर वह जोर से रोने लगी ग्रौर बोली कि मुझे रास्ते मे उत्तरी चीन काग्रोलियाग खेतो मे एक फौजी ने पकड लिया ग्रौर मुझसे जबरदस्ती की, इत्यादि। यह बात सन्दिग्ध लगती थी क्योकि वह लम्बी-चौडी मजबूत ग्रौरत थी जो, मेरे विचार से किसीसे भी ग्रपना बचाव कर सकती थी। पर मै जानती थी कि फौजी कभी-कभी ऐसी बाते जरूर करते है ग्रौर इसलिए मैने उसका किस्सा स्वीकार कर लिया। वह बोली कि मुझे किसी बात के बारे मे परेशान होने की जरूरत नही, कि वह बच्चा होने पर खुद उसे सभाल लेगी ग्रौर कम्पाउड से बाहर रखकर उसे पाल लेगी। मैने उससे कहा कि तुम उसे कम्पाउड मे रख लेना ग्रौर हम मामला यही खत्म करते है। कुछ सप्ताह बाद, जब मकान महत्त्वपूर्ण ग्रतिथियो से भरा था—वह ग्रमरीका से ग्राया एक तरह का ग्रनुसधानकर्ता दल था, तब वह सवेरे नाश्ता परोसने नही ग्राई ग्रौर नौकर होठ सिए हुए चारो ग्रोर घूम रहे थे। ग्रामा ने यह सुझाव रखा कि मै स्वय उसके कमरे मे जाऊ। मै वहा गई ग्रौर साऊ-त्से के छोटे-से कमरे का दरवाजा खोलने पर मै सचमुच ही खून के तालाब मे ग्रा गई। उसने ग्रपना गर्भपात कर दिया था, पर बहुत देर से किया था, ग्रौर उसने जो तेज चीनी दवाई खाई थी, उससे भयकर रक्तस्राव हो गया था। हमने उसे तुरन्त ग्रस्पताल पहुचाया ग्रौर वह वहा खून मे जहर चढ जाने के कारण कई सप्ताह पडी रही। उसके ठीक

हो जाने के बाद उसका मुझसे अलग होना असम्भव था । उसने कहा कि मेरा जीवन आपका है और यद्यपि कई बार मेरे मन मे यह इच्छा पैदा हुई कि वह मेरा न होकर किसी और का होता क्योकि वह हठी, निष्ठावान् और जोर से बोलने वाली थी, फिर भी, मै उसकी वफादारी से परिचित थी। जब क्रान्ति वाले दिन हम छोटी-सी झोपडी मे छिपे थे तब उसने ही हमारी अधिक से अधिक चीजे बचाने की कोशिश की थी, और उस प्रेमयोग्य तथा उपहास की पात्र स्त्री ने रसोई की पतीलियो और छतरियो तथा तकियो जैसी मूर्खता की चीजो पर अपनी जान जोखिम मे डाली थी और मेरी बढिया पुरानी फ्रच चीनी मिट्टी की वस्तुए तथा वह चादी, जो मेरे पूर्वज हालैड से लाए थे, कूडे मे छोड दी थी ।

जो भी सही, अब वह जापान मे हमारे साथ थी और पहले की ही तरह उन्मत्त निष्ठा से हरएक काम करने का आग्रह करती थी और मुझे मजबूरन खाली रहना पडता था। क्योकि उससे बात करने के लिए मेरे सिवाय और कोई न था, इसलिए मुझे जापानियो के बारे मे उसके लम्बे भाषण सुनने पडते थे और वह कहा करती थी कि जापानी चीनियो से बहुत अच्छे है।

'चीन मे मैने जापानियो की बुराइयो के अलावा कुछ नही सुना,' वह कहती, 'पर यहा मै देखती हू कि वे अच्छे है और चीनियो की अपेक्षा अधिक अच्छे है। देखो, माताजी, जब दो चीनी रिक्शा वाले कही टकरा जाते है, तब वे क्या करते है ? वे गाली-गलौच करते, लडते और एक-दूसरे की मा-बहनो को गन्दी गालिया देते है, पर जब यहा जापान मे दो रिक्शा वाले टकरा जाते है, तब क्या होता है ? वे रुकते है, एक-दूसरे के आगे झुकते है, गुस्सा नही करते, हरएक कहता है कि मेरी गलती है और फिर अपनी-अपनी राह चले जाते है। क्या यह चीनियो से अधिक अच्छा नही है ?'

मै सदा उससे सहमत होती थी क्योकि चुप रहने का यह सबसे आसान रास्ता था।

पर जैसे भी हुआ, इस भलीमानस के आने के बाद उस छोटे मकान का वातावरण बदल गया। वह उन स्त्रियो मे से थी—और ऐसे पुरुष भी होते है—जो प्रत्येक काम युद्ध की तरह करती है। इस प्रकार, जब ली साऊ-से कोई कमरा साफ करती थी, तब वह न केवल इसे साफ करती, बल्कि साफ करते हुए वह हर मेज-कुर्सी का विरोध करती थी, उसकी आलोचना करती थी और उसे साफ रखने के

लिए मजबूर करती थी, और फर्श को दुश्मन से कम नहीं समझती थी। छत की कड़ियों में मकड़ी का जाला है तो उसे हटाने के लिए भीषणता और गुस्से की, कहा-सुनी और धमकियों की ज़रूरत थी और उसे मेरे पास रहते अभी एक सप्ताह भी न हुआ था कि स्थानीय पुलिस तीन बार हमारे यहां चक्कर काट गई। उसने कोई बुरा काम नहीं किया था पर मेरे आसपास की जगह को साफ रखने के लिए उसने दरवाज़े पर पड़ी सुइयों जैसी चीड़-पत्तियों को जला दिया था और इस प्रकार धुंआ ऊपर उठा और पुलिस जंगल में आग लगने की सम्भावना की जांच करने आई। अगली बार वह इसलिए आई कि उसे पता चला कि इसके पास पासपोर्ट नहीं था और यह सच था कि अपने भोलेपन में उसने इस बात पर विचार नहीं किया था और जैसे-तैसे अफसरों से बचकर निकल आई थी। तीसरी बार वह इसलिए आई कि इसने कूड़े-कर्कट से नाले को गन्दा कर दिया था और हमसे नीचे रहने वाले किसानों ने शिकायत की थी।

इस समय तक मेरी बहन का बच्चा हो गया था, इसलिए उसे तथा उसके परिवार को रहने के लिए जगह चाहिए थी और इसलिए कुछ समय उस छोटे-से मकान में इकट्ठे रहने के बाद मैंने सुन्दर दृश्य देखने के लिए यात्रा करने का निश्चय किया। यह पर्यटकों वाली यात्रा नहीं होनी थी। प्रथम तो मेरे पास इतना पैसा न था कि आरामतलबी से सैर करने जा सकूं, और दूसरी बात यह थी कि मैं यात्रा करते हुए जापानियों को देखना चाहती थी और पहले दर्जे के डिब्बे में यह असम्भव था। इसलिए एक दिन सुन्दर प्रातःकाल मैं अपने बच्चों के साथ आनन्द-यात्रा पर निकली। यह आनन्द-यात्रा ही सिद्ध हुई। हमने कोई भी एक गाड़ी पकड़ ली और शरत्-काल के मनोरम दिनों में हम साथी यात्रियों के साथ बैठे जो जापानी थे, स्नेहपूर्ण और विनम्र थे और दूसरों में दिलचस्पी रखने वाले थे। जब हमें भूख लगती, तब हम स्टेशन पर छोटे भोजन के डिब्बे खरीद लेते थे, ठण्डा चावल और चटनी तथा एक टुकड़ा मछली का, एक स्वच्छ लकड़ी के डिब्बे में सफाई से पैक किए होते थे और उनके साथ दो नई बांस की तीलियां होती थीं, और बच्चों के लिए शुद्ध किए हुए गरम दूध की बोतलें खरीद लेते और भोजन के साथ खाने के लिए परसीमन और नाशपातियां और छोटे लाल सेब ले लेते। कभी-कभी अंधेरा होने से पहले हम कहीं भी गाड़ी से उतर जाते थे, और वहां कोई जापानी सराय ढूंढ लेते जो स्वच्छ तथा स्वागतपूर्ण होती थी, और रात में हम वहीं रहते थे और गरम पानी से नहा-

कर सो जाते थे, जैसे कि मैं बचपन के बाद कभी नहीं सोई थी।

रात में जागना और वहां 'तातामी' चटाइयों पर नरम रज़ाइयों के नीचे लेटे होना और बाग की धुंधली चांदनी को देखना स्वप्न-सा मालूम होता था। बाग वहां सदा होता था और हम सदा कागज़ के दल्ले (कांच लगाने की जगह) वाले सरकते दरवाज़ों को पीछे खींच लेते थे जिससे बाहर की कोमल सीली हवा हमारे सोने के छोटे-से कमरे में भर जाती थी। पेड़ों की कोहरे से ढकी शाखाओं और चट्टानों की अस्पष्ट रूपरेखाओं को ज़रा देर देखते रहना, किसी छोटे-से जलप्रपात की कल-कल सुनना और फिर पड़कर सो जाना शुद्ध शान्ति थी और प्रातःकाल हम नौक-रानी की हल्की आवाजों पर जाग उठते जो नाश्ते के लिए चावल, कौंगी, मछली तथा मूली के अचार की प्यालियां लाती थी। अपनी कई सप्ताह की यात्रा में हमें एक भी दुर्घटना या बदमिज़ाजी से वास्ता नहीं पड़ा। मुझे जापान के आश्चर्य-जनक नियन्त्रित सौन्दर्य की आज भी याद है। न केवल मियाजिमा जैसे स्थानों का, जहां सौन्दर्य कला-परिष्कृत और आयोजित है, बल्कि छोटी सरायों और गांवों का विशेष रूप से दैनिक सौन्दर्य याद है। सबसे बढ़कर तो लोगों की दयालुता मुझे याद है। उनका आत्मसंयम बहुत सुन्दर था और उसमें तब ही त्रुटि होती थी, जब वे शराब पिए हुए हो। मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उस समय शराब पिए हुए चीनियों की तरह खुश-मिज़ाज और परिहास-प्रिय होने के बजाय जापानी जंगली और भयंकर हो जाते थे। मैं समझ गई थी कि शनिवार की रातों में देहाती सड़कों पर भी बाहर नहीं निकलना चाहिए क्योंकि किसान, जो वैसे इतने सभ्य-शिष्ट होते थे, अपने लाभ का एक अंश तेज़ जापानी शराब पर खर्च करने के बाद गाते और हुल्लड़ मचाते बाज़ार से लौटते थे।

ग्रीन हिल्स फार्म

इन दिनों मैं नागासाकी के ऊपर पहाड़ों में बिताए अपने महीने की कहानी लिख रही हूं। हमारे पुराने पेन्सिलवानिया फार्म-हाउस के कमरों के चारों ओर एक छोटी आकृति हल्के भूरे या पीले रंग के किमोनोस और हल्के नीले या सुनहरे रंग की चौड़ी कढ़ी हुई ओबी (कुर्ती) पहने हुए चुपके-चुपके घूम रही है। वह जापान से आई है और एक भली सहेली है जो सत्ताइस वर्ष बाहर रहकर

हमारे देश में आई है। बहुत पहले वह वैल्ज़ले की छात्रवृत्ति का पुरस्कार जीतकर तोकियो विश्वविद्यालय से आनर्स छात्रा के रूप में आई थी पर अमरीका में कालिज के वर्ष बिताकर वह अपने देश जापान लौट गई जहां उसने विवाह किया और एक जापानी पत्नी तथा मां का जीवन बिताया और सारे समय गरीबी से मोर्चा लिया और अपने अमरीका-निवास के दिनों में उद्दीपित और विस्तारित मन तथा हृदय के जीवन को जीवित रखने का यत्न करती रही। वह युद्ध के वर्षों में वहीं रही, तोकियो पर हुई बमबारी में उसका घर नष्ट हो गया, फिर भी वह परिवार-सहित बच गई और उसने कब्ज़े के समय की हालत बड़ी बारीकी से देखी थी। इसकी त्रुटियां भी उसने देखी थीं पर अपनी कोमल आवाज़ में और शुद्ध तथा सुन्दर अंग्रेज़ी में उसने हमें बताया कि वह यह अनुभव करती है कि अमरीकन उसके देश में एक शानदार और अविस्मरणीय चीज़ लाए—वे ऐसा सौन्दर्य और मित्रता लाए जिसकी दबाए हुए जापानियों को आवश्यकता थी।

हम आग के पास बैठकर सायंकालों में उसकी बात सुनते रहे हैं, युद्धोत्तर जापान का जो चित्र वह खींचती है, उसे देखने का यत्न करते रहे हैं और उसे कम से कम अपने दुर्बल और सुन्दर शरीर में और उसके उदास तथा सुन्दर चेहरे में देखते रहे हैं, जिसपर भय पैदा करने वाले और दुःखदायी धैर्य की रेखाएं खुदी हुई हैं और वही धैर्य जापान में भी है।

यह बिल्कुल संयोग की बात है कि मेरी जापानी सहेली उसी समय आई जब मैं इस पुस्तक में जापान पर पहुंची क्योंकि इस स्त्री में मुझे जापान के पुराने और नये दोनों रूप, तंग द्वीप भी और चौड़ा रास्ता भी, दिखाई देते हैं। उसे अब अपने देश के लिए, जो पूर्व और पश्चिम के बीच अवस्थित है और जिसपर दोनों की गृध्र-दृष्टि है, कोई बड़ी आशा दिखाई नहीं देती। बिना किसी उत्तर की आशा लिए वह पूछती है कि जापान फिर कैसे खड़ा हो सकता है। वह एशिया से–भारत तथा चीन और इण्डोनेशिया तथा फिलीपीन्स के राष्ट्रों से–सम्बन्ध रखता है और उनसे वह अपने ही सैनिकतावादियों द्वारा विच्छिन्न कर दिया गया और अब अमरीका के साथ मैत्री-सन्धि से, जिससे जापानी डरते हैं पर फिर भी जिसे ठुकराने की हिम्मत नहीं कर सकते, और भी अधिक दूर हो गया है।

एक दिन मैंने हिम्मत करके यह बात कही, 'कितने दुःख की बात है कि तुम्हारे देश के सैनिकतावादियों ने एशिया को विजय करने का युद्ध छेड़ने का हठ किया।

असल मे तुम्हारे देश का, कम से कम चीन मे, और किसी भी देश की अपेक्षा अधिक पाव फैला हुआ था। उन दिनो मै जहा भी गई, चीन के जिस भी छोटे से छोटे दूर वाले नगर मे गई, वही मैने जापानी चीजे देखी जिनका मूल्य एक पेनी से भी कुछ कम मे लेकर एक हजार डालर से अधिक तक था। चीनियो के पास कच्चे सामान की बडी मात्रा थी जिसे वे जापान को बेचना चाहते थ और जापान को कच्चे सामान की बहुत ही अधिक जरूरत थी। सच्ची बात तो यह है कि सारा एशिया जापान को कच्चा सामान बचना चाहता था और जापानिया के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण अवसर था क्योकि वे इतना सस्ता और अच्छा निर्माण कर सकते थे।'

'हमे अब पता हे,' जापान से आई उस छोटी-सी आकृति ने आह भरकर कहा, 'पर उस समय हमे हमारे सैनिकतावादियो ने पूरी तरह धोखे मे रखा और अब हम डरे हुए है क्योकि कही फिर हमे धोखा न दिया जा रहा हो। लोगो के पास सचाई जानने का कोई तरीका नही है और ऐसा कोई आदमी नही जिसपर हम विश्वास कर सके।'

सब राष्ट्रो की यही स्थिति है कि हमारे पास सचाई को जानने का कोई रास्ता नही और न कोई ऐसा आदमी है जिसपर हम विश्वास कर सके। इतने दिन पहले उन वर्षो मे भी जापानियो के देश मे घूमते हुए मुझे जापानी जनता का सन्देह अनुभव हुआ था। भविष्य की घटनाओ का स्वरूप पहले ही स्पष्ट रूप मे निर्धारित हो गया था। फौज बढाई जा रही थी, परिवारों को अपने पुत्र छोडने पड रहे थे, जापानियो को चीन चले जाने और उससे भी अधिक मचूरिया जाने के लिए बढावा दिया जाता था। उद्योगपति पुराने खतरनाक गठबधन मे बधकर सैनिकतावादियो के साथ योजनाए बना रहे थे और सब जगह मुझे जनता की अनिच्छा महसूस हुई जिसके पास सचाई का पता लगाने का कोई रास्ता न था क्योकि उनके पास दूसरे राष्ट्रो के पास पहुचने का कोई उपाय न था।

पर मै वह गति देखने के लिए जापान मे नही ठहरी रह सकी। हम यह आशा करने लगे कि गोरे सुरक्षित चीन लौट सकेगे क्योकि राष्ट्रवादी जनता चियाग काई-शेक के नये नेतृत्व मे नानकिग मे, जहा मेरा घर था, एक सरकार स्थापित कर रही थी। और हमे बताया गया कि कुछ ही महीनो मे हमारे लौट सकने की व्यवस्था फिर कायम हो जाएगी। क्योकि जैसा कि आज हम जानते है चियाग काई-शेक १९२७ मे कम्यूनिस्टो से अलग हो गया था। जिस समय हम श्रीमती लू की झोपडी

में छिपे थे, उस समय वह शांगहाई पहुंच चुका था और चीनी तथा पश्चिमी महाजनों से और अन्य प्रभावशाली लोगों से समझौते की बातचीत कर रहा था। उसे रूसी कम्यूनिस्टों की बढ़ती मदान्धता बुरी लगी थी और उसने उन्हें चीन से बाहर निकालने का और चीनी कम्यूनिज़्म को खत्म करने का दृढ़ संकल्प कर लिया था। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसने अपने-आपको पश्चिम का मित्र घोषित किया और विदेशियों को नानकिंग लौटने का निमन्त्रण दिया, जहां अब राजधानी होनी थी।

यह शुभ समाचार था, पर फिर भी मुझे जापान छोड़ते उदासी अनुभव हुई जहां मुझे आश्रय और शान्ति और मित्रता प्राप्त हुई थी। मैं यहां जापान के लोगों की स्मृति में एक स्मारक कायम करना चाहती हूं। यह छोटा-सा स्मारक होगा क्योंकि मेरे पास कोई बड़ी चीज़ बनाने लायक साधन नहीं है। मैं यह कहना चाहती हूं कि मैं उनके मध्य जिस रूप में रही, बिना दिखावे के और असली गरीबी में रही। उसमें मैंने उनको अपने ही तरीके से अपने परिचित और सब राष्ट्रों की अपेक्षा अधिक सज्जन और अच्छा पाया। आम राष्ट्रों के लोग अधिक प्रगल्भ सौहार्द का अधिक प्रदर्शन करने वाले, तथा आगे बढ़कर दया करने के लिए अधिक तत्पर रहे हैं, पर जापानी दुःख को समझने में इतने नाज़ुक, अपनी सहानुभूति में इतने संयत, फिर भी बहुत गहरे होते हैं। उनकी सांत्वना की मात्रा इतनी बिल्कुल सही होती थी कि वह न कभी पूछती और न कभी बोलती, बस वह केवल होती थी। जब कोई बोल न पाता तो लम्बी चुप्पी से वे डरते न थे। चुप्पी को भंग करने के लिए वे झटपट आवश्यक बातें नहीं छेड़ते थे—केवल उपस्थिति ही काफी थी। इसी प्रकार की चुप्पी यहां फार्म पर हमारी सहेली के साथ अनेक बार सायंकालों में होती रही है। वह बिना बोले आराम से बैठी रह सकती है, इस कारण नहीं कि उसके पास कहने के लिए कुछ नहीं है, बल्कि इस कारण कि वह यह जानने की प्रतीक्षा करती है कि हम में से कोई क्या कहना चाहता है। वह हमारे ही स्तर पर उत्तर देती है और उसकी बातें कोमल, स्निग्ध और हृदय-स्पर्शी होती हैं। प्रायः वह कोई नया और मौलिक विचार भी पेश करती है पर उसी शान्त वाणी में। यह बड़ा शान्तिदायक वातावरण होता है।

और मैं जापान के सौन्दर्य के लिए, हरे-भरे पर्वतों के लिए, जो संसार के सबसे सुन्दर तट के मुंह पर बिल्कुल सीधे उठे हुए हैं, सदा कृतज्ञता अनुभव करती हूं।

मैं उसके चीड वृक्षों और शिलाओं तथा अन्दर आती हुई गोल-गोल लहरों को उत्साह से याद करती हूं। लोग अपने मकान भू-दृश्य के एक हिस्से के रूप में बनाते हैं और छतों की पंक्तिया शिलाओं, और तट तथा पर्वत के तलों के अनुकूल होती है और मकानो के अन्दर मैने सौन्दर्य और संयम का वही दुर्लभ अनुशासन देखा। मुझे और किसी ऐसे देश का पता नही जिसमें सौन्दर्य इतना संयत हो कि एक साफ साचे में डालकर इसे आनन्दातिरेक के रूप मे ले आया गया हो। और सबसे बढकर, मै जापानियों की अपने खतरनाक द्वीपो पर रहने की दृढता की प्रशंसा करती हू क्योकि उन्हे कभी यह पता नही होता कि कब भयंकर भूकम्प उनके मकानों को नष्ट कर देगे या तूफान उनपर हमला कर देगे या ज्वार की तरंगें उनके तटवर्ती मैदानो को बहा ले जाएगी। वे सचमुच ही मौत के आगे खडे होकर जीवन बिताते है और यह बात वे जानते है पर फिर भी शान्त रहते है।

मैने कभी यह विचार किया ही नहीं कि जापानी मेरे दुश्मन हो सकते है या मै उनकी दुश्मन हो सकती हूं। युद्ध एक ऐसी यन्त्रणा थी जिसे यह याद करके चुपचाप सहना पडता है कि जिन लोगो ने युद्ध छेडा, जिन्होने जुर्म तथा जुल्म किए, वे जापानी जनता नही बल्कि उसे धोखा देने वाले लोग थे। पर्ल हार्बर पर बम पडने के अगले दिन, मुझे याद है कि मै तब न्यूयार्क मे अपने कार्यालय मे बैठी थी और महान् जापानी कलाकार यासूओ कुनीयोशी के आने की सूचना मुझे दी गई। वे अन्दर आए और मै तुरन्त उनका स्वागत करने के लिए खडी हो गई।

'कृपया बैठ जाइए,' मैने कहा।

वे मेरे सामने एक कुर्सी पर बैठ गए, बिल्कुल बेज़बान, और उनके गालों पर आसुओं की धाराए बह रही थी। उन्होने उन्हे पोंछा नही, न वे हिले, बस मेरी तरफ ताकते बैठे रहे। उनके गालो से आसू बहते रहे और उनका कोट भिगोते रहे।

'हमारे दोनो देश—' अन्त मे वे फुसफुसाकर बोले और इससे आगे कुछ न कह सके।

'मै जानती हूं,' मै बोली, 'पर हमें याद रखना चाहिए कि हमारे दोनो देशों की जनताए परस्पर शत्रु नही है, चाहे कुछ भी होता रहे।'

और कोई बात नही हुई। उन्होने कुछ देर बाद आंखे पोछी। हमने हाथ मिलाए और वे चले गए। हम एक-दूसरे की भावनाओं को समझते हुए मित्र

बने रहे, अखबारों में चाहे जो खबरें छपती रहें।

एक और ऐसे व्यक्ति का मुझे महीनों बाद, शायद वर्षों बाद, पता चला क्योंकि मैं कभी नहीं नाप सकी और यह अमरीकन स्त्री थी और वह भी औसत दर्जे की। यह लॉस ऐंजल्स की घटना है जहां मैं युद्ध-पीड़ितों की मदद के सिलसिले में कुछ भाषण देने गई थी। जापानी-अमरीकनों को पहले ही नज़रबन्दी कैम्पों में भेज दिया गया था और उनकी सम्पत्ति ज़ब्त करने के बारे में कुछ तर्क चल रहा था। एक दिन एकाएक 'मुझे अमरीकन सिविल लिबर्टीज़ यूनियन' (अमरीकन नागरिक-स्वतन्त्रता-संघ) की ओर से एक जरूरी प्रार्थना मिली कि मैं एक राज्य की सैनेट कमेटी के सामने, जिसकी बैठक उस समय लॉस ऐंजल्स में हो रही थी, जापानी-अमरीकनों की ओर से जाकर गवाही दूं। मैंने तुरन्त टोप लगाया और बैठक-हॉल की तरफ चल दी। वहां मुझे प्रायः तुरन्त ही बुला लिया गया और मैंने यह तर्क रखा कि ऐसे व्यक्तियों की सम्पत्ति ज़ब्त रखना घोर अन्याय होगा, और मैंने पूछा कि क्या संयुक्त राज्य अमरीका में सम्पत्ति ज़ब्त करना कानून से अनुमोदित हो गया है। मैं पेन्सिलवानिया से आई थी, जहां बहुत सारे जर्मन-अमरीकन थे। सच्ची बात तो यह है कि एक गुप्त नाज़ी संस्था का हाल में ही हमारे घर से पांच मील से भी कम दूर पर एक नगर में पता चला था और एक पड़ोसन का खलिहान इस कारण जला दिया गया था कि उसने खुलेआम हिटलर के विरुद्ध कुछ कहा था। जब उसका खलिहान जल रहा था, तब उसे टेलीफोन पर किसी ने बुलाया और एक अज्ञात आवाज़ में कहा, 'इससे तुम्हें फ्यूरर (हिटलर का खिताब) के बारे में बात करने का ढंग आ जाएगा।' फिर भी जर्मन-अमरीकनों की सम्पत्ति ज़ब्त करने की न कोई चर्चा उठी और न कोई वैसा विचार ही था। मैंने कहा कि इस प्रकार दुश्मनों में भी भेदभाव करना उचित नहीं।

मेरी गवाही खत्म हो जाने के बाद एक अधेड़ उम्र की सीधी-सादी औरत ने भी जापानी-अमरीकनों की तरफ से गवाही देने के लिए कहा। उसे अनुमति दे दी गई और उसने बहुत सीधे ढंग से कहा कि मैं इसे अमरीकनों के लिए उचित नहीं समझती कि वे कुछ लोगों की ज़मीन और मकान केवल इसलिए छीन लें कि उनके पूर्वज जापानी थे। उसने कहा कि मेरे कुछ पड़ोसियों ने मुझसे कहा था कि मुझे जापानियों के पक्ष में नहीं बोलना चाहिए, क्योंकि मेरा लड़का इसी समय प्रशान्त महासागर में उनसे लड़ रहा है।

'पर', वह बोली, उसके चेहरे पर ईमानदारी और भलमनसाहत थी और आंखें चमक रही थीं, 'मैं उनसे कहती हूं कि मेरा साम उन्हीं जापानियों से नहीं लड़ रहा है। मैं श्री और श्रीमती ओमुरा को जानती हूं और वे सदा दयालु और भलेमानस लोग और बढ़िया पड़ोसी रहे हैं और मैं नहीं समझती कि हमें उनकी सम्पत्ति पर कब्जा कर लेना चाहिए। जब वे वापस आएंगे, तब उन्हें इसकी जरूरत होगी और ज़रूरत हो या न हो, यह उनकी है।'

उसकी गवाही के बाद इधर-उधर से तालियां बजीं और दो या तीन व्यक्ति और उठे। उन्होंने उसके कथन का समर्थन करने का हौसला किया। मैं नहीं जानती कि हममें से किसीका कोई ऐसा प्रभाव था जिससे हम मेज़ के पीछे बैठे हुए कठोर वृद्ध चेहरों की कतार पर असर डाल सकें, पर जो भी हो, जापानी-अमरीकनों की सम्पत्ति नहीं छीनी गई और बाद में उनके पुत्रों ने इटली में अमरीका की ओर से लड़कर और अपनी जानें देकर अपनी निष्ठा सिद्ध कर दी जबकि नज़रबन्दी कैम्पों में उनके परिवार गौरव और शान से रहे। उन्होंने रेगिस्तान में बाग बनाए और सेजब्रश, जड़ों और पत्थरों से कलात्मक वस्तुएं बनाई।

मैंने एक बार जापानी लोगों के लिए एक तरह का दूसरा छोटा-सा स्मारक बनवाया। वह कोबे में बिताए गए एक दिन के आधार पर बनाया गया। इस दिन के सूना और उदास होने का भय था क्योंकि मैं उस समय अकेली और उदास थी पर उसके बदले यह एक ऐसा अनुभव हो गया जिसे मैंने अपने जीवन के सबसे अधिक प्रिय अनुभवों में समझा है। मैंने इसे बच्चों के लिए लिखी छोटी पुस्तक में दर्ज किया है। इसका नाम है 'वन ब्राइट डे' (एक आनन्दमय दिन) जो सचमुच आनन्दमय ही था।

अच्छा खैर, जब अगली सर्दियों में मैं चीन लौटी, तब मुझे स्निग्धता और सौन्दर्य की बातों से भरी स्मृति की आवश्यकता थी। अब भी हमें नानकिंग लौटने की अनुमति न थी और इसलिए हमें जैसे-तैसे शांगहाई में ही मकान ढूढ़ना था। इस साल यह नगर हमेशा से भी अधिक बुरा था क्योंकि इसमें एक तरह शरणार्थी भरे थे और फ्रेंच तथा ब्रिटिश कनसैशनों में शान से रहने वाले युद्धनायकों और धनियों तथा उनके परिवारों के कारण और भी अधिक बुरा लगने लगा था। वे बड़ी-बड़ी कारों में सड़कों पर घूमते थे और उदास चेहरे वाले बाइलो-रूसी उनकी कारें चलाते थे और जब वे महंगी चीज़ें बेचने वाली फ्रेंच और अंग्रेजी

दुकानों में घुसने के लिए कारों से निकलते थे, तब वर्दी-धारी ऊंचे-ऊंचे तरुण बाइलो-रूसी उनके अंगरक्षक बनकर खड़े रहते थे। ये लोग, जैसा कि मैं बता चुकी हूं, सोवियत रूस में खदेड़े गए उच्च परिवारों और बुद्धजीवियों के पुत्र थे। उनकी बहनें नये रात्रि-क्लबों में होस्टेस या स्वागतिका बनकर अपनी जीविका चलाने की कोशिश कर रही थीं। कभी निराश होकर, क्योंकि उनका कोई भविष्य न था, ये रूसी लड़कियां युद्ध-नायकों की रखैलें भी बन जाती थीं और स्त्रियों तथा बच्चों के मिले-जुले अंतःपुरों में चली जाती थीं। युद्ध-नायकों में—जिन्होंने कुछ कीमत लेकर क्रान्तिकारियों से सन्धि कर ली थी और शांगहाई में अपना निवास कर लिया था—कोई सुन्दर बाइलो-रूसी लड़की रखैल बना लेने का फैशन हो गया था और शीघ्र ही धनी व्यापारी तथा महाजन भी यही कार्य करने लगे।

शांगहाई के जीवन का एक सबसे अधिक बुरा लगने वाला पहलू पतनोन्मुख चीनी बुद्धिजीवियों की बेमेल खिचड़ी से पैदा हुआ। उस नगर में अनेक मूलहीन, विदेशों में शिक्षा पाए हुए तरुण चीनी थे जो कला और साहित्य से अधिक परिश्रम के किसी काम में नहीं उलझना चाहते थे। इनमें पैरिस के लेटिन क्वार्टर के कलाकार, इंगलैंड के कैम्ब्रिज और आक्सफोर्ड के पोस्ट-ग्रेजुएट (एम० ए० पास), जोन्स होपकिन्स के सीखे सर्जन जो प्रेक्टिस (दुकान) नहीं करते थे, कोलम्बिया के पी-एच. डी. जो 'भीतरी प्रदेश' (समुद्र से दूर के प्रदेश में) जीवन नहीं सह सकते थे, तथा हारवर्ड और येल के ग्रेजुएट थे जो अपने हाथ नरम रखते थे तथा अपना समय साहित्यिक क्लबों और काव्य-रचना में बिताते थे, और अंग्रेज़ी में छोटी-छोटी घटिया पत्रिकाएं निकालते थे और यह दिखाते थे कि जैसे चीनी जनसाधारण का अस्तित्व ही नहीं है। ऐसे दलों में थोड़ी-सी अमरीकन औरतें भी थीं जो साहस-कार्यों के लिए चीन आई थीं। वे स्त्रियां भी थीं जो चीनी प्रेमियों के साथ रहती थीं और जिनके बारे में चीनी प्रेमी डींग हांकते थे, और इसलिए जब अमरीकन यह सोचकर खुश होती थीं कि यह सम्बन्ध गुप्त है, तब असल में सब जगह इसका पता होता था। बड़े-बड़े अमरीकन व्यापारियों के घरों में कुछ अमरीकन मेज़बान भी थीं जो ऐसे मिले-जुले दलों को अपने घरों पर निमन्त्रित करके यह सोचती थीं कि वे 'नये चीन' का रूप देख रही हैं, पर असल में वे विदेशों से लौटे लोगों को ही देखती थीं जिन्हें अपने देश के बारे में सचमुच कुछ भी पता न था।

शांगहाई के जीवन में कोई चीज़ स्वच्छ और अच्छी न थी। इसका चीनी भाग गन्दा और घिचपिच था और विदेशी कन्सेशन सब देशों के अपराधियों को अपने दौलत और शान-शौकत के आडम्बर के पीछे छिपा लेने वाले स्थान थे। सड़कों पर भिखारी और जीवन-संघर्ष में लगे लोग एक-दूसरों को धक्का देते और जल्दी-जल्दी चले जाते थे। यदि मुझे उस समय के शांगहाई का कारटून बनाना हो तो मैं एक बेचारा गरीब रिक्शा वाला दिखाऊं जिसका रिक्शा काम करने के बाद घर लौटते हुए पांच या छह फैक्टरी मज़दूरों से भरी हुई है और जिसे एक कद्दावर अंग्रेज़ पुलिस वाला या पगड़ीधारी सिख ब्रिटिश कन्सेशन में धमका रहा है और साटन के कपड़ों में सजे किसी भी राष्ट्र के, पर आम तौर से चीनी, लोगों से भरी कार के लिए रास्ता करा रहा है। मैं उनमें से नहीं हूं जो यह समझते हैं कि गरीब आदमी हमेशा सही पक्ष में होता है क्योंकि मैं जानती हूं कि वे प्रायः भूखे और गलती करने वाले होते हैं और धनी केवल इस कारण गलत नहीं होते कि वे धनी हैं, किन्तु शांगहाई की बात सोचने पर मुझे यही दिखाई देता है।

एक सहेली ने हाल में ही मुझे एक पत्र की नकल भेजी है जो मैंने उसे उसी वर्ष १९२७ में २६ दिसम्बर को शांगहाई से व्हाइट प्लेन्स, न्यूयार्क, भेजा था। मैं इसे यहां इसलिए दे रही हूं कि इसमें एक भविष्यवाणी है, एक ऐसी भविष्यवाणी है जो मैंने २६ साल पहले लिखी थी परन्तु इससे मेरा भविष्यज्ञता का दावा नहीं है। अगर उन दिनों मुझे दूसरे गोरों की अपेक्षा कोई विशेष सुविधा थी तो यही कि मेरे जीवन का केन्द्र अपनी ही जाति के संकुचित विदेशी दायरे में न होकर चीन तथा चीनी जनता में था। जो थोड़े-से विदेशी मेरी तरह वहां रहे थे, वे भी निश्चित रूप से कम से कम उतना जानते थे जितना मैं जान सकी थी। पत्र यह है :

१०५६ ऐवे. जोफ्रे
शांगहाई
दिसम्बर २६, १९२७

प्रिय............

औरों को लिखी तुम्हारी चिट्ठियां मुझे देखने का मौका मिला और आज चूंकि क्रिस्मस के बाद का दिन है और बच्चे अभी अपने खिलौनों में मस्त हैं, इसलिए मैं एकमात्र इस स्वार्थ-भरी आशा से कि तुम मुझे पत्र लिखोगी, फ़ुरसत की एक अन-

भ्यस्त भावना से प्रेरित होकर तुम्हें पत्र लिखने लगी हूं।

तुम्हारे पत्रों से लगता है कि तुम्हारे अमरीकन घर में बड़ा आनन्दपूर्ण स्निग्ध जीवन है। मैं बहुत कुछ वैसा अनुभव कर रही हूं जैसे कोई गरीब छोटी लड़की अलभ्य आनन्दप्रद वस्तुओं से भरी हुई दुकान की अलमारी देख रही हो पर उसी छोटी-सी गरीब लड़की की तरह मेरी इस कमी की पूर्ति हो रही है। इन दिनों चीन में रहना एक बड़े भारी नाटक के दर्शक होने के समान है जिसमें कम्यूनिस्ट खल-नायक की भूमिका में हैं और नानकिंग सरकार विपत्तिग्रस्त सुन्दरी की। चरम-बिंदु तेज़ी से पास आ रहा है और दर्शक तथा नायिका भी बेचैन होकर नायक को खोजने लगे हैं जो अभी तक मंच पर नहीं आया, या शायद अभी पैदा भी नहीं हुआ! इधर खलनायक उद्दाम और भीषण होता जा रहा है और कोई भी यह नहीं कह सकता कि अन्त क्या होगा······

जहां तक स्वयं चीन का सम्बन्ध है, यहां भविष्य के बारे में कहना बड़ा कठिन है। हम हर रोज़ प्रतीक्षा करते रहे हैं। अगर कोई और देश होता तो कहा जा सकता था कि ऐसी अव्यवस्था की दशा चलती नहीं रह सकती। पर चीन में कोई भी चीज़ तब तक अनिश्चित काल तक चल सकती है जब तक लोगों के पास भुख-मरी से बचने के लिए काफी भोजन हो। बढ़िया फसल और ढलाई के अभाव ने मिलकर इस वर्ष मध्यचीन में चावल अस्वाभाविक रूप से सस्ता कर दिया है और इसलिए अव्यवस्था को और भी अधिक दार्शनिक ढंग से सह लिया जा रहा है।

तुमने सोवियत लोगों से पिण्ड छुड़ाने के राष्ट्रवादियों के प्रयत्न का वृत्तान्त पढ़ा होगा। उन्होंने रूसी वाणिज्य-दूत को और जितने लाल रूसियों को वे पकड़ सके उन सबको वापस भेज दिया है। बहुत-से रूसियों से हैंको और कैन्टन में बड़ा जंगली व्यवहार किया गया है। मुझे बोलशेविज़्म से नफरत है पर जंगलीपन से भी नफरत है। इस मामले में चीनियों के जंगलीपन से हरएक को चोट पहुंची है।

परन्तु इन दिनों चीन में रहने के बारे में सबसे कठिन चीज़ है वह भ्रम-निवारण और निराशा की भावना जो सब जगह बढ़ रही है। श्रेष्ठ चीनी राष्ट्रवादियों की विफलता से, जो पहले ही दीखने लगी है, इतने उदास हैं कि दिल टूटने लगता है। राष्ट्रवादी लोग पुराने सैनिकवादी तरीके बरत रहे हैं—भारी गैरकानूनी कर और बेईमानी से खर्च। वही पुरानी चीज़ हम सुन रहे हैं कि चियांग काई-शेक धनी आदमी हो गया है और यह सच हो या न हो, पर इस शोहरत से पता चलता है कि

लोगों का भ्रम दूर हो गया है।

यह सब सहन करना कठिन है। राष्ट्रवादी दल में अधिकतर नेता विदेशों से लौटे विद्यार्थी है जो यह मानते रहे है कि चीन का कल्याण आधुनिक शिक्षा से ही हो सकता है। उन्हें इससे धक्का लगा है परन्तु सारे मामले में आशा की बात यही है कि इस निराशा और भ्रम-निवारण से गम्भीरता से अपने-आपको देखने की और इस तथ्य का सामना करने की शुरूआत हो सकती है कि चीन की मुसीबतों की जड़ उसके उच्च वर्गों की नैतिक कमज़ोरी और किसानों की विवशता में है। पूर्ण विनय और सचाई का सामना करना ही मेरी समझ में इस देश के लिए एकमात्र आशा है। बहुत-से लोग यह बात अनुभव कर रहे है, पर यहां शांगहाई में चीनी धनी आदमियों की बेपरवाह फिजूलखर्ची से मेरा दिल दहल गया है। मुझे ऐसा लगता है कि जैसे फ्रेंच क्रान्ति शुरू होने से पहले के फ्रांस के लुई की राजधानी में रह रही हू। सड़कों पर भूखे, उदास और कमजोर आदमियों की भीड़ रहती है और उनके बीच में धनी चीनियों की सेडान और लिमोसीन घूमती फिरती है, जो दूसरों को बिल्कुल भूलकर मौज, भोजन और कपड़े पर अकल्पित पैसा खर्च कर रहे है। यह हालत हमेशा नही चल सकती। व्यक्तिगत रूप से मै अनुभव करती हू कि इसे बदलने के लिए कुछ न हुआ तो वास्तविक क्रान्ति आरम्भ हो जाएगी जिसके आगे अब तक हुआ सब कुछ गर्मियों की शाम के गेंद के खेल-सा होगा। तब यह सचमुच अनपढ और गरीब लोगों का सम्पत्ति वालों के विरुद्ध विद्रोह होगा। यह कब होगा, कोई नही कह सकता। अच्छी फसलों ने इसे कुछ देर टाल दिया है, पर लोग अब बड़े बेचैन और क्रुद्ध है······शांगहाई बेघर बाइलो-रूसियों से भी भरा है। वे धन या काम या कोई भी चीज पाने के लिए व्याकुल होकर उत्तर से आते जा रहे है। वे छोटे से छोटा मजदूरी का काम करते है और बहुधा सबसे अधिक दयनीय प्राणी है। हमारे पास के एक चीनी मकान में रात का पहरेदार किसी समय एक रूसी विश्वविद्यालय में साहित्य का प्रोफेसर था—एक सुसंस्कृत, भद्र पुरुष। कभी-कभी आदमी का दिल संसार के दुःखों से इतना भर जाता है कि टूटने लगता है·····

तुम्हारी,
पर्ल

शहर में मेरा जो अपना स्थान था वह एक काफी आरामदेह मकान में तीसरी

मंज़िल पर एक छोटा-सा फ्लैट था और उस मकान में दो और अमरीकन परिवार थे। शांगहाई में मैंने जितने महीने बिताए, उसकी कोई भी बताने लायक घटना नहीं है। बस क्रिस्मस के बाद का एक सुन्दर दिन उल्लेखनीय है। उन दिनों किसी समय मैंने कोई कहानी लिखी और वह मेरे एजेन्ट ने अमरीका में बेच दी। हां, उस समय मैंने एक एजेन्ट रख लिया था क्योंकि अस्वीकृति की प्रतीक्षा करते कई महीने लग जाते थे । शायद एक महीना कहानी लिखने और टाइप करने में, एक महीना इसे न्यूयार्क भेजने में, जहां सब के सब पत्रिका-सम्पादक और प्रकाशक रहते मालूम होते थे, दो या तीन मास अस्वीकृति का फैसला हाने में और एक और महीना अस्वीकृति के मुझे तक पहुंचने में लगता था। यह मुझे अनन्तकालीन प्रतीक्षा-सी लगती थी। एक दिन जब मैं 'केली एंड वाल्श' की किताबों की दुकान के पास से जा रही थी, तब मैं अन्दर चली गई और कुछ सेकन्डहेंड पुस्तकों में मुझे एक मैली-सी छोटी किताब मिली जिसका नाम था 'दि राइटर्स गाइड' (लेखकों की गाइड) यह लन्दन में छपी थी और मैंने अनुक्रमणिका में ढूंढ़कर दो ऐसे साहित्यिक एजेन्टों के नाम निकाले जिनके दफ्तर न्यूयार्क में भी थे ।

मैंने उन दोनों को पत्र लिखे। उनमें से एक ने दो महीने बाद जवाब दिया कि वह मेरी सामग्री पर विचार करने को तैयार नहीं क्योंकि 'चीनी विषयों में किसी की दिलचस्पी नहीं।' दूसरे डेविड लायड ने उत्तर दिया कि वह मेरी सामग्री देखना चाहता है। मैंने उसे दो कहानियां भेजीं जो एक बार एशिया मेगज़ीन में छपी थीं और यह सुझाव दिया कि उनसे एक उपन्यास बन सकता है। असल में ब्रेन्टानो वालों ने मुझे पहली कहानी को बढ़ाकर उपन्यास का रूप देने के लिए लिखा था, पर सोच-विचार करने पर मैं इस नतीजे पर पहुंची कि वह कहानी छोटी है, और उसे बढ़ाया नहीं जा सकता, और उन्होंने दूसरी कहानी को मिलाकर उपन्यास बनाने की बात को पहले ही अस्वीकार कर दिया था। बहुत दिनों तक श्री लायड का और पत्र नहीं आया और मैं कहानियों की बात भूल गई ।

पर कोई और छोटी कहानी बेची गई थी और अब याद नहीं आता कि वह कहां बेची गई। वह शांगहाई का क्रिस्मस मेरा सबसे अधिक उदासी-भरा और बुरा गुज़रा था और उससे मेरी स्थिति की व्यापक उदासी और बढ़ गई और मुझे कोई एक भी मतलब का उपहार नहीं मिला। मैं उपहारों की परवाह करने वाली नहीं हूं और आशा करती हूं कि विचारशीलता के लिए अकृतज्ञ भी नहीं हूं, पर उस वर्ष

मुझे सिर्फ एक असली उपहार की आवश्यकता थी।

उस मनहूस क्रिस्मस के अगले दिन मैंने एक ऐसा निश्चय किया जो मेरी दृष्टि से एक तरह से अपराध था। मैंने जो थोड़ा-सा रुपया बचा रखा था, उसे मैंने खर्च करने का निश्चय किया और इस प्रकार बिल्कुल स्वार्थी होकर मैं एक धुंधले दिसम्बर के दिन बाहर निकल पड़ी और अपने लिए क्रिस्मस के उपहार खरीद लाई।

मैं चाहती हूं कि मैं यह कह सकती कि बाद में मुझे शर्म महसूस हुई, पर आज भी मुझे सन्तोष के सिवाय कुछ नहीं अनुभव होता क्योंकि उन थोड़ी-सी सुन्दर वस्तुओं का, जो मेरे बचाए डालरों से आ सकीं, मेरी आत्मा पर इतना स्वास्थ्यकारक प्रभाव हुआ कि उसके बाद मुझमें नई हिम्मत पैदा हो गई। और शांगहाई की उन सर्दियों की कोई बात याद नहीं आती—बेशक इसका कारण मेरी अपनी इच्छा है क्योंकि हमारे भरे-पूरे मकान में था तो बहुत कुछ।

नहीं ठहरिए—मुझे याद है ली साऊ-त्से और उसके रोमांस की, जो छोटा मामला होते हुए भी समसामयिकता की दृष्टि से चियांग काई-शेक और सूंग मे-लिंग (जो उस समय शांगहाई में नई ही आई हुई तरुणी थी) के रोमांस से सम्बन्धित था।

ज़बरदस्त ली साऊ-त्से जापान से हमारे साथ आई थी और उसने हमारे तीन परिवारों के मकान के तहखाने के रसोईघर में अपना इन्तज़ाम कर लिया था और वह हमारा भोजन पकाने लगी। तीन आमाओं से, उसने कहा, मैं प्रबन्ध कर लूंगी, यद्यपि वाद में मुझे एक परोसने वाले लड़के की भी ज़रूरत हो सकती है पर वह लड़का मैं स्वयं पसन्द करूंगी। हम इस बात के लिए तैयार थे कि वह प्रबन्ध करे और परोसने वाले लड़के के बारे में कोई विचार नहीं किया पर एक दिन सवेरे नीचे से, जहां ली साऊ-त्से रह रही थी, हमने बहुत जोर का शोर आता सुना। एक आदमी की आवाज़ थी जो ज़ोर से विरोध कर रहा था। आदमी? हमारे यहां सब औरतें ही नौकर थीं। मैंने एक आमा को भेजकर ली साऊ-त्से को बुलवाया और कुछ देर बाद वह हांफती और लाल मुंह किए आई और उस आदमी की आवाज़ ज़ोर-ज़ोर से आती रही।

'ली साऊ-त्से,' मैंने पूछा, 'यह क्या हो रहा है?'

उसने बात समझाई। क्योंकि नया ज़माना है, इसलिए पिछली सर्दियों में वह एक पड़ौसी के परोसने वाले लड़के के प्रेम में पड़ गई थी और कुछ प्रेम का आदान-प्रदान और वचन-वायदे हुए थे। इसके बाद वह आदमी नदारद हो गया।

'यह वे कम्यूनिस्ट थे न,' वह बोली, 'जब वे आए और अन्य सब चले गए, तब मेरा आदमी पागल हो गया। सब कुछ उलट-पलट हो गया था, आप समझीं। न कोई कानून था, न रिवाज। इस समय एक और औरत ने उसे मुझसे छीन लिया और उसका पता न चला। फिर मैं आपके पास काम करने जापान गई, पर जब कल मैं आपकी सब्ज़ी लेने गई तब मैंने उसको देखा। वह मुझसे भी अधिक उम्र की और कुरूप है। वह उसके साथ था और मैंने उसे उसकी आंखों के सामने ही पकड़ लिया और यहां ले आई और अपने कमरे में बन्द कर दिया। हम शादी करेंगे।'

'उसे यहां लाओ,' मैंने कहा। 'मैं उससे बात करूंगी और देखूंगी कि वह तुमसे शादी करना चाहता है या नहीं। हम मकान में यह शोर नहीं होने देंगे।'

वह अनिच्छुक मालूम हुई और चली गई तथा शीघ्र ही एक लम्बे खूबसूरत नौजवान के साथ लौटी।

'यह सब क्या मामला है?' मैंने उससे भरसक सख्ती से पूछा।

वह मुझे सारा घटनाक्रम बताने के लिए बिल्कुल तैयार था। 'आजकल जब कि क्रान्ति हो रही है, मेरे लिए बड़ी मुश्किल है,' वह बोला। 'दो स्त्रियां मुझे पति बनाना चाहती हैं। यह सच है कि वे दोनों विधवा हैं पर ऐसी औरतें आजकल बेशर्म हो गई हैं।'

'क्या तुम उनमें से किसीसे शादी करना चाहते हो?' मैंने पूछा।

'किसीसे भी काम चल जाएगा,' उसने बिल्कुल ईमानदारी से कहा, 'और मैं तो पत्नी चाहता हूं। क्वांरी लाने में अब भी खर्च पड़ता है पर विधवा बिना खर्च के मिल सकती है। मैं तैयार हूं।'

'पर किसके लिए?' मैंने ज़ोर देकर पूछा।

'ली साऊत्से और वह दोनों एक-सी हैं,' उसने उत्तर दिया। 'फिर भी मैं ताले में बन्द नहीं होना चाहता।'

ली साऊ-त्से ने, जिसे रसोई में होना चाहिए था, अब उसे धमकाने के लिए अपना सिर दरवाज़े में किया। 'अगर मैं तुझ निठल्ले को ताले में बन्द न करूं तो तू दूसरी के पास चला जाएगा।'

वह आदमी ज़रा अच्छी तरह मुंह चौड़ा करके मुस्कराया। 'आओ, हम शादी कर लें,' उसने सुझाव दिया।

सारा काम बिल्कुल बिना रूढ़ियों के हुआ, पर यह, कम से कम तटवर्ती चीन

में, बदले समय का प्रतीक था । विवाह स्वतन्त्र रूप से किए जा रहे थे । तलाक आसान थे। अखबार में नोटिस निकाल देना ही काफी था और अपने ही घर में हुई इस घटना ने मुझे यह बता दिया कि पुराना चीन सचमुच खत्म हो गया।

इस प्रकार उनकी शादी हो गई। हमने शादी की दावत दी और कुछ दिन तक सब ठीक चलता रहा। ली साऊ-त्से जैसे हर किसीको अपने प्रबन्ध में रखती थी वैसे ही परोसने वाले को भी अपने प्रबंध में रखने लगी, जो अब उसका पति था, और क्योंकि वह दिल की अच्छी थी, इसलिए मैंने यह सब चलने दिया। अफसोस कि वर महाशय को ली साऊ-त्से के ज़बरदस्त प्रेम के अधीन रहते हुए उस स्त्री के सौन्दर्य की स्मृतियां तीव्र हो आईं और एक रात उसने उससे कहा कि मैं यहां से जाना चाहता हूं। ली साऊ-त्से ने उसे तुरन्त ताले में बन्द कर दिया और हम सुबह उसके चिल्लाने और दरवाज़े पर थपथपाने की आवाज़ से जागे।

एक बार फिर मैंने प्रचण्ड वधू को बुलवाया । 'तुम बड़े आदमी को ताले में बन्द नहीं रख सकती,' मैंने विरोध करते हुए कहा।

वह गम्भीर हो गई और उसने अपनी छाती पर दोनों भुजाएं बांध लीं। 'क्या आपको पता है कि यह क्या चाहता है ?' उसने पूछा। 'वह दूसरी औरत भी चाहता है—दोनों !'

'बहुत-से चीनी पुरुष एक से ज़्यादा पत्नी रखते हैं,' मैंने उसे याद दिलाया।

'नहीं,' वह प्रभावोत्पादक ढंग से बोली। 'क्रान्ति के बाद से नहीं और वह एक साधारण आदमी है, कोई चियांग काई-शेक तो नहीं है।'

इधर यह रसोईघर का रोमांस चल रहा था, पर उधर नई राष्ट्रीय सरकार में एक बहुत अधिक महत्त्वपूर्ण रोमांस चल रहा था। चियांग काई-शेक सूंग मे-लिंग के साथ अपने कोर्टशिप या पूर्वराग को बढ़ा रहा था और यद्यपि इसे गुप्त समझा जाता था, परन्तु हर किसीको सब कुछ पता था । उन्हें पता था कि वृद्ध माता सूंग को, जो पक्की मेथोडिस्ट ईसाई थी, इस बात पर आपत्ति थी कि उसके पहले ही तीन पत्नियां हैं, जैसा कि कहा जाता था। उस तरुणी को, जिसका पालन-पोषण अमरीका में हुआ था, स्वयं भी इस पुराने ढंग की होड़ पर आपत्ति थी, यह सुनने में आया था। उसका आग्रह था कि अकेली ही पत्नी होकर रहेगी। उसकी बड़ी बहन ने भी सन यात-सेन से यही मांग की थी। लोग कहते थे कि उसने यह मांग की है कि पहली तीन चियांग-पत्नियों को न केवल दूर किया जाए, बल्कि

उनसे तलाक किया जाए, यद्यपि ऐसा लगता था कि चियांग काई-शेक इतनी सख्ती करने को तैयार न था और लोकमत पहली पत्नियों के पक्ष में था जो निर्दोष और पति-परायण थीं। पर मध्य-मार्ग की बातचीत सूंग-परिवार नहीं कर रहा था, बल्कि राष्ट्र कर रहा था जिसकी इसमें दिलचस्पी थी। इस मध्य-मार्ग पर ही ली साऊ-त्से को परेशानी थी। चियांग काई-शेक जो चाहे वह रख सकता है, पुरानी भी और नई भी, पर उसका वह साधारण आदमी नहीं। फिर भी इसके आगे यह हुआ कि उसने मेरे आग्रह पर अपने वर महाशय को मुक्त कर दिया और वह तुरन्त भाग गया। इसपर वह कई दिन तक रोती रही। जब उसने उसे फिर देखने की आशा छोड़ दी थी, तब एकाएक वह एक दिन बिना कोई स्पष्टीकरण दिए लौट आया और तब से वह एक आदर्श पति बनकर रहा।

यह सुखद अन्त था और बिल्कुल असम्भावित था। जब मैंने अन्तिम बार ली साऊ-त्से को देखा, तब वह गर्व से एक बच्चे की मां बनी हुई थी। वह उसका अपना नहीं था क्योंकि उस भयंकर गर्भपात ने उसका मां बनना असम्भव कर दिया था जिसका उसे बड़ा दुःख था। आवश्यकता के फेर में पड़कर उसने फिर पुराने चीन के ढंग अपनाए। उसने अपने पति के लिए एक भली-सी कुरूप रखेल छांटी और उस कृतज्ञ लड़की ने शीघ्र ही एक सुन्दर लड़के को जन्म दिया जिसे ली साऊ-त्से ने तुरन्त अपना बना लिया। वह उससे लाड़ करती और उसे सुन्दर कपड़े पहनाती, मातृत्व का गर्व लिए हुए उसे औरों को दिखाती और उसकी कुशाग्रबुद्धि की डींग हांकती थी। वह कहती थी कि छह महीने की आयु में यदि वह एक खास ढंग से सीटी बजाएगी तो लड़का तुरन्त पेशाब करेगा और वह यह बात किसीके भी सामने किसी भी समय और किसी भी जगह सिद्ध करने को तैयार थी।

उधर चियांग काई-शेक को, जिसका ऊंचे दर्जे का रोमांस इस सीधे-सादे रोमांस के साथ ही चल रहा था, अपनी पत्नियों को कुर्बान करना पड़ा, या यों कहें कि हमें यह बताया गया था, और एक बड़ा फैशनेबल और ईसाई विवाह-समारोह हुआ और सूंग मे-लिंग देश की प्रथम महिला बन गई। उनकी जोड़ी बड़ी सुन्दर थी—चियांग ऐसा सीधा और सैनिक भव्यता से सम्पन्न और सूंग गर्व और सौन्दर्य की प्रतिमा। विवाह के बाद मैंने एक चीनी सज्जन से कहा, 'लोग इस शादी के बारे में क्या सोचते हैं?'

उसने चकित होकर मेरी तरफ ताका। 'क्या इसका कुछ महत्त्व है ? आदमी

की शादियां उसका अपना काम हैं।'

क्यों नहीं, यह एक पुरुष का दृष्टिकोण था !

इधर राष्ट्र में इस समय हो रही घटनाएं रोमांस से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण थीं। चियांग काई-शेक नानकिंग में अपनी सरकार को दृढ़ कर रहा था। वह यह जांच करने का समय था कि क्रान्ति में ऐसे कौन से तत्त्व हैं जो उसके नेतृत्व में बने दक्षिण पक्ष का अनुसरण करेंगे। नदी से ऊपर वाले तीन नगर अनिश्चित थे। फिर उन्होंने उसके पक्ष में निश्चय कर लिया और हम सब आशा से भर गए। कम्यूनिस्ट पार्टी को दृढ़ता से कुओमितांग से निकाल दिया गया था और चीन में उसके अस्तित्व पर भी रोक लगा दी गई। सब सोवियत सलाहकारों को रूस भेज दिया गया। इसके अतिरिक्त, राष्ट्रवादी सेना विजय करती पीकिंग जा पहुंची और उसने साम्राज्य के उस केन्द्र में बैठे अन्तिम युद्धनायक चांग त्सो-लिन को बाहर खदेड़ दिया।

ये सब घटनाएं कम से कम गोरों के लिए तो संतोषजनक थीं जो चियांग काई-शेक को तत्कालीन नेताओं में सर्वोत्तम और निश्चय ही ऐसा व्यक्ति समझते थे जो उनसे अधिक मांग नहीं करेगा। वे अपनी ओर से सहायता देना चाहते थे और इसलिए उन्होंने अपनी छोटी सुविधाएं छोड़ दीं। हेंको और छोटे बन्दरगाहों के कन्सेशन चीनियों को लौटा दिए गए, यद्यपि सचमुच महत्त्वपूर्ण सुविधाएं अपने पास रखीं, जैसे राज्यक्षेत्रातीत अधिकार। यह मध्यमार्गीय समझौता था और दोनों पक्ष इसे इसी रूप में समझते थे।

पर कम्यूनिस्ट इतनी आसानी से पराजित नहीं हुए। चौथी सेना के एक हिस्से ने चु तेह के नेतृत्व में कियांगसी में चियांग के खिलाफ गदर कर दिया और उसे तुरन्त लाल (कम्यूनिस्ट) सेना के रूप में संगठित कर लिया। यह लाल सेना खतरनाक थी क्योंकि इससे एक ऐसा केन्द्र बन गया जिसके चारों ओर सब असंतुष्ट व्यक्ति जमा हो सकते थे। और भी खतरनाक बात यह हुई कि अधिकतर बुद्धिजीवी पश्चिम की शिक्षा पाए पढ़े-लिखे लोग कम्यूनिस्टों को छोड़कर चियांग काई-शेक के पास आ गए जिसने उन्हें सरकारी नौकरियों का वचन दिया, पर उधर किसानों के लिए कोई सहारा न रहा जिन्हें कम्यूनिस्टों ने पहली बार संगठित किया था। वे अधिकतर कम्यूनिस्टों के साथ रहे क्योंकि किसानों को चियांग काई-

शेक ने कोई वचन न दिए थे। किसान और बुद्धिजीवी का यह विभाजन नई सरकार के लिए पहला खतरा था। चीन के इतिहास में ऐसी कोई सरकार कभी सफल नहीं हो सकी जिसके समय में किसान और बुद्धिजीवी में विभाजन रहा हो।

पर मैं यह बात तुरन्त ही नहीं समझी। अमरीकन वाणिज्य-दूत ने हमें नानकिंग लौटने की अनुमति दी और मुझे फिर वहां घर बनाने का विचार करना पड़ा। मैंने सुना कि हमारा मकान बहुत-से रहने वालों के आने-जाने के बाद अन्त में खाली हो गया है और सौभाग्य से यह जलाया नहीं गया था, परन्तु इसे हाल ही में सरकारी हैज़ा-केन्द्र के रूप में प्रयुक्त किया गया था और इसे पूरी तरह साफ और कृमिहीन करना होगा। मेरे उन कृपालु चीनी मित्रों ने फिर मेरी सहायता की जिनका छोटा लड़का इंजेक्शन में दवा की अधिकता से मर गया था। मैंने उनका अल्ल या वंश नाम प्रयुक्त नहीं किया क्योंकि उसे लिखना शायद आज के अजीब दिनों में, जब वहां कम्यूनिस्टों का शासन है, खतरनाक होगा। यद्यपि अब मैं हज़ारों मील दूर हूं और हमारे बीच एक महासागर फैला हुआ है और इतने साल गुज़र चुके हैं। हम उन्हें चाओ कहेंगे क्योंकि यह उनका नाम नहीं है। खैर, कहने का मतलब यह कि उन्होंने मुझे और मेरे छोटे-से परिवार को तब तक रहने का निमन्त्रण दे दिया जब तक मुझे रहना ज़रूरी हो और मैं अपना मकान रहने योग्य बनाऊं।

हम वापस चले गए। लौटने वाला यह पहला अमरीकन परिवार था, यद्यपि अजेय वृद्ध पिता कुछ महीने पहले लौट आए थे और शहर में एक चीनी परिवार के साथ शान्ति से रह रहे थे। नगर के उन्हीं दरवाज़ों पर चढ़ना कितना विचित्र लगता था जो इस प्रकार अन्तिम रूप से हमारे लिए उस समय बन्द कर दिए गए थे जब हम बेघरबार होकर नंगे-हाथ यहां से गए थे! मुझे कोई खास परिवर्तन नहीं दिखाई दिया। हमारी गाड़ी पहले ही की तरह मैली-कुचैली और टूटी-फूटी थी तथा क्रान्ति के बाद भी घोड़ा पहले की ही तरह बेआराम था और सड़कें वैसी ही भरी और गन्दी थीं। कुछ भी तो नहीं बदला था, न तो बदली थी नगर का बड़ी दीवार, दरवाज़े, पगोडा और मन्दिर, और न बदला था गुलाबी पर्वत का गगनचुम्बी शृंग ही।

मैं कह रही हूं कि कुछ नहीं बदला था, पर बग्घी शहर के दरवाज़े से गुज़री भी न थी कि मुझे परिवर्तन अनुभव हुआ। यह परिवर्तन था लोगों में। शहर में

ऐसी भीड़ थी जो हमें अजीब उत्सुकता और अमैत्री की नज़र से हमारी तरफ ताकती थी। मुझे परिचित चेहरे भी दिखाई दिए और मूंगफली बेचने वाला जो ड्रमटावर के कोने में खड़ा रहता था, अब भी वहीं था। ली परिवार के उद्यान पर दरवाज़े का सन्तरी, और कहीं कोई रिक्शा वाला, व सड़क पर गुज़रने वाले पहले ही वाले थे, पर न वे मुस्कराए और न मैं। इतनी जल्दी यह न जाना जा सकता था कि पुराने मित्र पहचाने जा सकते हैं या नहीं।

और इस प्रकार हम अपने थोड़े-से सामान के साथ झटके खाते हुए चाओ भवन पहुंचे। यह विश्वविद्यालय-भवन के नीचे घाटी में एक मध्यम आकार का मकान था और वहां हमें श्री और श्रीमती चाओ और उनकी नवजात लड़की तथा उनके वृद्ध माता-पिता हमारी प्रतीक्षा करते मिले। वे छोटे-से सोने के कमरे में थे और मैंने महसूस किया कि वे अब भी बेचैन थे और उन्हें हमारा स्वागत करने के लिए बाहर आने की हिम्मत न हुई। पर वे पहले की ही तरह कृपालु और स्नेहपूर्ण थे और श्रीमती चाओ हमें हमारे लिए निश्चित किए गए दो छोटे कमरों में पहुंचा आई।

हम वहां एक महीना रहे। मैं इस चीनी परिवार की रोज़ की विनयशीलता कभी नहीं भूल सकती। यद्यपि उन्हें असुविधा थी या हमारे वहां रहने से खतरा था तो भी उन्होंने मुझे कभी पता न लगने दिया। यद्यपि मेरे दोनों बच्चे शैतान थे तो भी मैंने इसके बारे में कभी कुछ नहीं सुना। हां, एक दिन मेरी आमा ने बताया कि बड़े बच्चे ने सोयाबीन के अचार के बर्तन में मिट्टी डाल दी थी। यह अचार हर परिवार में बड़ी स्पृहणीय वस्तु होती है। श्रीमती चाओ पुराने ढंग की गृहस्वामिनी होने के कारण अपना अचार स्वयं डालती थीं और यह सदा एक साल तक आंगन में मकान के छज्जों के नीचे लकड़ी के ढक्कन से ढका हुआ उफनता रहता था।

'इसका ज़िक्र मत करना,' आमा ने कहा। 'उसने मुझसे वायदा करा लिया था कि मैं आपसे न बताऊंगी, पर मैं इसलिए बता रही हूं कि मौका पड़ने पर वदले में उसके प्रति कुछ विशेष कृपा दिखाना आवश्यक होगा।'

मौका कुछ ही दिन बाद आ गया जब मैंने श्रीमती चाओ के रहने के कमरे की कांच के किवाड़ों वाली विदेशी चीनी के सामान की अलमारी में एक बढ़िया बड़ी प्लेट देखी जो मेरे हेविलैंड चाइना सेट की थी। यह स्पष्ट था कि यह वही

है और जब मैंने इसे पहली बार देखा, तब मैं करीब-करीब चिल्लाने को हो गई—ओह, आपको यह मेरी प्लेट कहा से मिली ?

पर अपनी आमा की चेतावनी का ध्यान कर मै चुप रही और जैसे-जैसे दिन गुजरते गए, दूसरी चीजे भी मैंने देखी, जो कभी मेरे घर मे थी, एक तिपाई, एक सिलाई की मशीन, एक बिक्ट्रोला और रिकार्ड इत्यादि।

'ये चीजे इसके पास कहा से आई ?' मैंने अपने कमरे मे आमा से चुपचाप पूछा।

'उसने ये चोरो के बाजार मे खरीदकर ईमानदारी से प्राप्त की है।' आमा ने कहा, 'कम्यूनिस्टो के आने पर विदेशियो की लूटी चीजे लूटने वालो ने ही बेची थीं।'

'क्या यह अजीब बात नही कि वह मुझसे यह नही पूछती कि ये मुझे वापस चाहिए या नही ?' मैंने आमा से पूछा। मैंने सोचा था कि मैंने अपने चीनी मित्रो को समझा है, पर यह एक नया अनुभव था।

आमा चकित दिखाई दी। 'पर आप तो ये चीजे खो चुकी थी।' उसने मुझे याद दिलाया। 'ये आपकी नही रही और फिर वह आपकी मित्र है—ये उसकी क्यों नही ?' मैं यह न बता सकी कि यह किस प्रकार गलत तर्क मालूम होता है, पर फिर भी यह गलत मालूम होता था। मैं जितना समझती थी, उससे अधिक अमरीकन थी। 'मुझे अपनी हैवीलैंड प्लेट के अलावा और किसी चीज की परवाह नही है,' मैंने जिद्द से कहा। 'वह मुझे जरूर वापस चाहिए।'

'सोयाबीन के अचार को भी याद रखिए,' मेरी आमा ने सलाह दी। 'यदि आप धीरज रखेंगी', वह फिर बोली, 'तो सम्भव है कि किसी दिन वह प्लेट बिना मित्रता खोए आपको वापस मिल जाए।'

मैं जानती थी कि आमा ठीक कह रही है। दोस्ती से हाथ धोना एक मानवीय सर्वनाश है और इसलिए मैंने शान्ति बनाए रखी और प्लेट को अनदेखा कर दिया। इधर मैं प्रतिदिन अपने मकान मे मरम्मत की देखभाल करती और जब मैं काम से सन्तुष्ट न होती तब स्वय फर्श रगडने बैठ जाती थी और तख्ते के बीच की हर दरार को कृमिहीन करती और भरती थी। सब दीवारों पर सफेदी होनी थी और लकडी और पत्थर की सब चीजों को लाईसोल से धोना था। मकान मे बड़ी बुरी गन्ध आने लगी पर अन्त में वह साफ और फिर रहने के लिए सुरक्षित हो गया, और मैं

कुछ मेज़-कुर्सी इकट्ठी करने लगी और नये पर्दे लटकाने लगी।

घर की कुछ वस्तुएं, जो हमारे शरीफ नौकरों ने हमारे लिए बचा ली थीं, मित्रों के मकानों में छिपाए स्थानों से वापस आ गईं और वे इतनी काफी थीं कि जो कुछ पहले था, उसकी याद जहां-तहां मौजूद हो गई। और इसकी चर्चा करते हुए मुझे 'दि एग्ज़ाइल' की पाण्डुलिपि के बारे में भी बता देना चाहिए, जो मैंने एक दीवार की अलमारी में रख दी थी। वहां भीड़ की नज़र से यह बच गई पर बाद में मेरे विद्यार्थियों को, जो मेरी किताबें बचाने के लिए मेरे मकान में गए थे, मिल गई। उन्होंने मेरी बहुत सारी पुस्तकें बचा लीं और वे अब यहां मेरे अमरीकन घर में पुस्तकालय के फट्टों पर रखी हैं। उनके पृष्ठ फट गए और जिल्द मैली हो गई हैं, पर मेरे लिए वे कीमती हैं। मेरे पास दस पुरानी डिकेन्स की पुस्तकें भी हैं जो मैं बचपन में बहुत अधिक पढ़ा करती थी। जब ये पुस्तकें लौटाई गईं तब उनमें मेरी पाण्डुलिपि मुझे बिल्कुल सुरक्षित मिली, बल्कि वह उसी डिब्बे में थी जिसमें मैंने उसे रखा था और एक भी पृष्ठ गायब न था। और मेरा ख्याल है कि जिस दिन हम चाओ भवन से आए, उससे पहले दिन असावधानी से मेरी आंखें हैवीलैंड प्लेट पर जाकर टिक गईं। मैं अब इसके बारे में नहीं सोचती थी, पर असावधान होने से मेरी आंखें उसपर जा पड़ी थीं और श्रीमती चाओ ने इसे लक्ष्य किया। वह अपनी मधुर शान्त आवाज़ में बोली, 'मैंने आपकी वह बड़ी प्लेट खरीद ली थी जिससे मेरे पास एक ऐसी प्लेट हो जाए जिसपर मैं एक पूरी मछली रख सकूं पर यह बहुत सपाट है—चटनी बहकर बाहर चली जाती है।'

'आपने हमपर इतनी कृपा की है,' मैंने उदासीन बनने की कोशिश करते कहा। 'मैं साऊथ सिटी की चीनी बर्तनों की दुकानों से एक बड़ी मछली रखने की प्लेट आपके लिए खरीद देना चाहती हूं।'

'आप तकलीफ मत कीजिए,' उसने कहा। 'क्या हम मित्र नहीं हैं?'

यह सच था कि हमारी मित्रता अधिक गहरी थी। हम एक महीना आनन्द से इकट्ठे रहे थे और इस चीनी परिवार ने ज़रा भी परेशानी का हल्का-सा संकेत भी नहीं किया था, यद्यपि ऐसे समय अवश्य आए जब हमारा वहां होना सचमुच बोझ था। मुझे शक है कि चीनी के अलावा शायद ही कोई और परिवार अपनी विनयशीलता ऐसी अक्षुण्ण रख सकता। क्योंकि शायद और किसी राष्ट्र के लोग मानवीय सम्बन्धों की कला में इतने अभ्यस्त नहीं हैं।

अन्त में हम अपने मकान में आ गए और उपहार अपने पीछे छोड़ आए। उपहारों में एक बढ़िया बड़ी मछली रखने की डिश भी थी जो मेरी आमा साउथ सिटी से मेरे लिए खरीद कर लाई थी। जिस दिन हम अपने मकान में गए, उससे अगले दिन श्रीमती चाओ की आमा मेरी हैवीलैंड प्लेट लेकर पहाड़ी के ऊपर आई।

'मेरी मालकिन ने मुझसे आपको विशेष रूप से मछली रखने की डिश के लिए धन्यवाद देने को कहा है,' वह मेरे सामने जाकर बोली। 'उन्होंने मुझसे यह कहने के लिए कहा है कि चूंकि अब उनके पास मछली रखने की डिश है, इसलिए यह प्लेट वह आपको भेंट करना चाहती हैं।'

उसने दोनों हाथों से लाल कागज़ में लिपटी मेरी प्लेट मुझे भेंट की और मैंने इसे मूल्यवान् उपहार की तरह दोनों हाथों से ही ग्रहण किया जिसे मैंने पहले कभी नहीं देखा था।

'आपने देखा ?' मेरी आमा बाद में बोली। 'यदि आपसी सम्बन्ध सम्मान के साथ संभाले जाएं तो उनका इनाम अवश्य मिलता है।'

'मुझे सीख देने के लिए, तुम्हें धन्यवाद,' मैंने कहा।

श्रीमती चाओ के साथ मेरी मित्रता वर्षों जारी रही। हम किसी भी पारिवारिक संकट की सूक्ष्म से सूक्ष्म बातों पर विचार करतीं, पर उस प्लेट के शिष्टाचार का कभी अतिक्रमण न करतीं, जो पहले मेरी थी, फिर उसकी हुई और अब फिर मेरी हो गई। यह अपने-आपमें एक बड़ी मामूली घटना थी पर मेरे लिए यह अविस्मरणीय हो गई। चीन में बिताए अपने यौवन-काल में मैंने यह सीखा था कि मानवीय सम्बन्धों को उचित ढंग से चलाना जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण पाठ है। अब यह शिक्षा मूर्त रूप में आ गई थी। मैंने इसक कला भी सीखी और सिद्धान्त भी; कला है एक-दूसरे का लिहाज़ और ख्याल जिसका प्रयोग धैर्य से और इस निश्चित विश्वास से किया जाता है कि हर मनुष्य तथा स्त्री में बुद्धि है। जो कुछ भी कहा या किया जाता है, उस सबका कारण होता है। कोई निर्णय करने और उसके अनुसार काम करने से पहले उस कारण को जानना और समझना चाहिए। आम तौर से बड़े सरल और प्रतिदिन के तरीकों से बड़े-बड़े पाठ सीखे जाते हैं। यही बात मेरी चीनी सहेली और मेरे बीच हैवीलैंड प्लेट और मछली रखने की डिश की अदला-बदली में हुई थी। अब इतने वर्ष बीत चुके हैं कि मैं नानकिंग में उस लूट में

बरबाद हुए मकान में लौटने की कठिनाइयां भूल गई हूं—जो चीज़ मुझे याद है वह है मित्रता का पाठ; यह एक स्थायी सम्पत्ति है।

में पक्की घर सजाने वाली हूं। यह मेरे लिए आनन्द भी है और मनोरंजन भी, तथा मेरी कमज़ोरी भी है। यदि मैं पुरुष होती तो मेरी पुस्तकें फ़ुर्सत में लिखी गई होतीं और उनकी संभाल एक पत्नी, एक सैक्रेटरी और घर के कई और कर्मचारियों द्वारा की गई होती। पर मैं औरत हूं, इसलिए मेरा काम घर के काम के बीच-बीच में होता है। इस प्रकार अपना नानकिंग वाला मकान और बगीचा फिर जमाने में महीनों लग गए। मैं कट्टर शुद्धतावादी नहीं हूं। मुझे वे फर्श पसन्द नहीं हैं जिनपर चला नहीं जा सकता, या ऐसी पुस्तकें पसन्द नहीं जिन्हें जहां-तहां नहीं छोड़ा जा सकता, या ऐसी मेज़-कुर्सियां पसन्द नहीं जिन्हें छुआ नहीं जा सकता, पर बनाव-कौशल की प्रबल अनुभूति और व्यवस्थित सौन्दर्य से प्रेम जीवन के आवश्यक तत्त्व हैं—न केवल कर्तव्य के रूप में मेरे परिवार के लिए, बल्कि पृष्ठभूमि के रूप में मेरे अपने लिए भी। मैं जिस किसी भी तरह नहीं रह सकती। अगर मेरे पास एक भी कमरा होता तो भी मधुमक्खी की तरह नैसर्गिक प्रेरणा से मजबूर होकर मैं उसमें व्यवस्था की सृष्टि कर दूंगी। यदि मैं जीवन की यह पृष्ठभूमि पहले की तरह बना लूं तो मैं पुस्तकें लिखने में अपना मन नहीं लगा सकती। यह आवश्यकता अलग-अलग और मिलाकर एक अभिशाप और एक वरदान भी है पर यह तो है ही।

इसलिए यह देख सकने से पहले कि मेरे चारों ओर क्या हो रहा है, मुझे अपना घर जमाना था और नित्यचर्या कायम करनी थी। मेरे पिता अपने कमरों में वापस आ गए। मेरे बच्चे अपने बच्चों के कमरे में प्रसन्नता से खेलने लगे। रसोई की व्यवस्था ठीक हो गई। एक असाध्य माली के अलावा, और वह माली कम्यूनिस्टों के साथ चला गया था और सब नौकर फिर काम पर रख लिए गए और ऊपर से सब तरफ से मेरा जीवन पहले जैसा ही हो गया, परन्तु पहले जैसा यह न था और न फिर कभी हो सकता था। हम दूसरी दुनिया में रह रहे थे, अपने युद्ध-नायक और प्राचीन नगर की दुनिया में नहीं। जैसे ही मैंने मकान से बाहर घूमने का उपक्रम किया, वैसे ही मैंने देखा कि वहां एक ऐसी सरकार थी जो मेरी पूर्व-परिचित किसी भी सरकार के सदृश नहीं थी। यह चीन की राष्ट्रवादी सरकार थी और इसका प्रधान चियांग काई-शेक था जो एक चुस्त सीधा

तना हुआ व्यक्ति था, जिसे हम मुश्किल से ही कभी देखते थे, पर वह नगर में अपनी उपस्थिति महसूस कराने वाला एक बल तथा एक व्यक्तित्व था। मैंने सड़कों पर और अपने मित्रों के घरों में उनके बारे में चर्चाएं होती सुनीं। उदाहरण के लिए, एक बार योरुप के किसी अभ्यागत राजा का जलूस निकलना था और उसके लिए लम्बी-चौड़ी तैयारियां की गई, यहां तक कि सैकड़ों चटाई के झोंपड़े, जिनमें नगर की दीवार के साथ-साथ भिखारी रहते थे, और जो ततैयों के छत्तों की तरह एक जगह जमा थे तोड़ फेंके गए। पर पुरानी दुकानें और गन्दी बस्तियां तोड़कर नहीं फेंकी जा सकती थीं, इसलिए विदेशी नरेश की आंखों से प्राचीन मकानों के गन्दे हिस्सों को बचाने के लिए तीस फुट ऊंची चटाइयों की दीवारें बनाई गई। ओह, उन दिनों तरुण पश्चिमी शिक्षा पाए चीनी नर-नारी अपने देश पर और उन लोगों पर, जिन्हें वे इतना प्यार करते थे, कितने शर्मिन्दा थे और यह शर्म कितनी मर्मस्पर्शी और करुण थी! खैर, जलूस के दिन सवेरे मैं भीड़ से बचने के लिए बहुत जल्दी बाहर निकल गई। मुझे भोजन के कमरे का पर्दा बनाने के लिए सादे रेशम की डोरी की ज़रूरत थी। जनता जलूस देखने के लिए जमा होने लगी थी और लौटते हुए मैं भीड़ में फंस गई और उनके हटने की प्रतीक्षा करने लगी। मेरे आगे छोटी डबल-रोटियों वाला एक फेरी वाला खड़ा था। उसने अपनी टोकरी अपनी बांह पर रखी हुई थी और डबलरोटियों को धूल तथा मक्खियों से बचाने के लिए गन्दे स्लेटी रंग के आम प्रचलित कपड़े से ढका हुआ था। प्रायः चलन के अनुसार ही वह बात-चीत भी कर रहा था। हर कोई हमेशा सड़क पर हर किसीसे बात करता था और चीन में रहने का एक यह भी आनन्द था।

'यह बूढ़ा चियांग काई-शेक,' फेरी वाला बोला, 'यह डकैत युद्ध-नायकों से सब लड़ाइयों में जीत रहा है। जैसे ही वह विदेशी राजा यहां से जाएगा, वैसे ही वह उत्तर में लड़ाई शुरू कर देगा।'

'क्या वह जीतेगा?' मैंने जानना चाहा।

'यह मौसम पर निर्भर है,' फेरी वाले ने विवेकपूर्वक जवाब दिया। वह बड़ा पुराना आदमी था, दो-चार सफेद बाल उसकी झुर्रियों वाली ठोड़ी पर कहीं-कहीं नज़र आते और उसकी आंखें रोहों के कारण गीद से भरी थीं।

'मौसम पर?' मैंने दोहराते हुए कहा।

'बिल्कुल मौसम पर,' उसने जवाब दिया। 'यह चियांग नदी का देवता (वरुण)

है जो मनुष्य के रूप में उतरा है। मुझे कैसे पता चला ? उसे फूकिएन में एक नदी ने जन्म दिया था। उसके जन्म से पहले उस नदी में हर साल बाढ़ ग्राती थी। जब से उसका जन्म हुग्रा है इसमें एक बार भी बाढ़ नहीं ग्राई। इसलिए यदि सूर्य चमकता है तो वह लड़ाई में सदा हारता है ग्रौर यदि बरसाती दिन हो तो वह सदा जीतता है। हमें प्रतीक्षा करके यह देखना होगा कि ईश्वर क्या विधान करता है।'

तो चियांग काई-शेक पहले ही ग्रनुश्रुति बन चुका था ! न केवल उसके बारे में, बल्कि उसकी नई तरुण पत्नी के बारे में भी प्रतिदिन ग्रधिकाधिक ग्रनुश्रुतियां ग्रौर किस्से सुनाई देते थे। नानकिंग के लोग ग्रन्य चीनियों की तरह ही मज़ाकपसन्द ग्रौर कुतूहली थे। वे उन समस्याग्रों से ग्रच्छी तरह परिचित थे जो किसी ऐसे चीनी सैनिक व्यक्ति को—जो कभी पश्चिमी देशों में नहीं गया, ग्रौर जिसका दृष्टिकोण ग्रब भी सारतः पुराने ढंग का था—एक उत्साहपूर्ण ग्रौर सुन्दर तरुण स्त्री के साथ पैदा होती होंगी, जिसे उसके देश वाले विदेशी समझते थे क्योंकि वह नौ वर्ष की ग्रायु से ग्रमरीका में रही थी। वह ग्रच्छी चीनी नहीं बोल सकती थी ग्रौर उसे चीन के इतिहास का ज्ञान नहीं था। उसकी ग्रादतें ग्रौर रहन-सहन ग्रौर चालढाल पश्चिमी थे। सबसे बुरी बात यह थी कि चीनियों की राय में वह ज़बरदस्त मुंहफट थी ग्रौर इस कारण उनकी सहानुभूति उसके पति के साथ थी। राष्ट्रपतिभवन में काम करने वाले नौकर मनोरंजक ग्रौर उत्तेजक घटनाएं सुनाते ग्रौर एक नये फैशन की ज़बरदस्त ग्रौरत से विवाहित पुराने फैशन के एक ज़बरदस्त ग्रादमी की स्थिति का सारा नगर मज़ा लेता था। इस बात पर शर्त बदी जाती थी कि किसी ग्रानें वाले पूर्वनिश्चित ग्रवसर पर कौन जीतेगा। क्या उस महिला को सरकार के मन्त्रिमण्डल की बैठकों में जाने दिया जाएगा ? दाँव प्रायः दोनों पक्षों में बराबर रहते थे ग्रौर बहुत थोड़ा-सा ही चियांग के पक्ष में होते थे। सन्तरियों को ग्रादेश दे दिया गया था कि वे उस महिला को प्रवेश न करने दें, पर जब ग्रन्तिम क्षण वह उनके सामने ग्राकर खड़ी होगी, तब क्या वे उसे रोकने की हिम्मत कर सकेंगे। वह बड़ी चतुर है, इसलिए ग्रपने पति के साथ नहीं ग्राएगी। वह बाद में ग्राएगी, जब वह काम में लगा होगा ग्रौर उस समय ग्रपने बूते पर क्या वे उससे यह कहने का साहस कर सकेंगे कि उसने क्या हुक्म दिया है। वे किससे ज़्यादा डरते हैं, शेर से या शेरनी से ?

इन बातों से मनोरंजन न ग्रनुभव करना ग्रसम्भव था ग्रौर खास इस घटना के

बारे में नतीजे का छिपाना भी ठीक नहीं होगा। जिन्होंने चियांग काई-शेक की ओर दांव लगाया था, वे जीते। इसके बाद दांव सदा उसके पक्ष में ही होते थे परन्तु वर्षों बाद वह एक बार फिर हारा जब श्रीमती चियांग अमरीका जाना चाहती थी। एक प्रत्यक्षदर्शी ने, जिसके नाम का कोई महत्त्व नहीं है, मुझे बताया कि एक दिन वह महान् पुरुष अपने कमरे से चिड़चिड़ा-सा बाहर निकला।

'बड़ा झंझट है,' उसके कहने का सारांश यह था, 'रोज़ वही बात होती है। वह अमरीका जाना चाहती है।'

मेरे मित्र ने सहानुभूति का भाव दिखाया, पर मुंह से कुछ कहा नहीं। शेरों के बीच में पड़ना ठीक नहीं होता।

उस दिन सवेरे, उस महान् पुरुष ने आगे कहा, उसने एक नया तर्क पेश किया। वह उससे बोली कि अमरीका का राष्ट्रपति श्रीमती रूज़वेल्ट को जहां उसकी इच्छा हो वहां जाने देता है। इसका कारण यह है कि अमरीका का राष्ट्र-पति एक आधुनिक आदमी है। वह बोली कि इसी समय श्रीमती रूज़वेल्ट इंगलैंड की सैर कर रही है और खूब मौज उड़ा रही है। इधर वह, जो श्रीमती रूज़वेल्ट से किसी भी तरह पद-मर्यादा में कम नहीं है क्योंकि वह एक गणराज्य की प्रथम महिला है, मौज करने विदेश में कहीं नहीं जा सकती! तब महान् पुरुष ने उसे जाने के लिए कह दिया, पर उसने इससे एक से अधिक अर्थ लगाए।

मेरे मित्र ने मज़ा लेते हुए अपना किस्सा खत्म किया। वह बोला कि बाद में वह महान् पुरुष अपनी पत्नी की राजकीय यात्रा पर स्तब्ध हो गया, खास तौर से तब जब उसे अमरीका की कांग्रेस में भाषण देने के लिए निमंत्रित किया गया क्योंकि उसने समझा था कि वह केवल सैर-सपाटे और खरीद-फरोख्त की यात्रा करना चाहती है। पर हो सकता है कि रानी ही उस शयनागार में केवल स्त्री हो जिसमें वह और राजा साथ रहते हैं। कौन जाने?

नई सरकार के बारे में मेरा भय एक दिन चरम अवस्था में पहुंच गया। हमने उस नये नगर की बड़ी चर्चा सुनी थी जिसे हमारी दक्षिणी राजधानी बन जाना था। हमें इस बात पर अभिमान था कि विदेशी दूतावासों की शिकायतों के बाव-जूद, जो इतने दिनों से साम्राज्य की राजधानी पीकिंग में आराम से जमे थे, नानकिंग को नई सरकार की राजधानी बनाया गया था। हमने सोचा कि भूत-काल से स्पष्ट विच्छेद अच्छा है। इसके अतिरिक्त, अन्तिम असली चीनी राज-

वंश, मिंगवंश, ने अपनी राजधानी नानकिंग में ही बनाई थी और नगर के बाहर अब भी पत्थर के प्राचीन स्मारक मौजूद थे। यह सच था कि मिंग राजवंश के बाद के शासक राजधानी पीकिंग ले गए थे और चियांग काई-शेक के लिए यह बात तभी अनुकरणीय होती जब वह सब युद्धनायकों को जीत लेता जो अब भी उत्तरी प्रदेश के अनेक भागों में बचे हुए थे, और वह भी तब जब वह सचमुच अन्त में पीकिंग जाने का फैसला करता ही। हमें बताया गया कि इधर नानकिंग को एक आधुनिक नगर बनाया जाएगा जिसमें चौड़ी सड़कें, बिजली तथा टेलीफोन और मोटरें तथा बड़ी दुकानें होंगी। नये सरकारी मकान बनाए जाएंगे और सिनेमाघर तथा राजभवन बनाए जाएंगे और आधुनिक ढंग की सफाई की पद्धति और शहर के लिए पानी की व्यवस्था भी होगी। हम सुन-सुनकर चकित होते थे। हमारा नगर उतने ही पुराने फैशन का था जितना प्राचीन जेरूसलम। इसकी टूटी-फूटी सड़कें तंग और चक्कर-दार थीं और यदि किसी रिक्शे या पालकी को गुज़रना हो तो लोगों को मकानों की दीवारों से चिपटकर खड़ा होना होता था। सड़क के दोनों तरफ नालियां थीं और उनमें मकानों में रहने वाले रसोई और नहाने का बेकार पानी डाल देते थे। हवा में, विशेष रूप से वर्षा ऋतु में, पेशाब की हल्की दुर्गन्ध आती थी क्योंकि स्त्रियां और लड़कियां तो अपने सोने के कमरों में अच्छी बनी लकड़ी की बाल्टियों का प्रयोग करतीं, पर आम आदमी बेतकल्लुफी से अपने सामने के दरवाज़े से बाहर आता और दीवार की ओर मुंह करके खड़ा हो जाता, और बच्चों को कुछ समय के बाद नालियों पर सुसकारा जाता था। और दुकानों का क्या हाल था! सब्ज़ियों और फलों तथा मछली और मांस के ढेर सड़क के किनारे तक लगे रहते और जो जगह बचती वह ज्योतिषियों की मेज़ों और सैकंडहैंड पुस्तक बेचने वालों की दुकानों से घिर जाती। दैनिक जीवन के इन सब आवश्यक पहलुओं का क्या होना था, हमें कुछ पता न था।

मैं अफवाहें सुनती थी पर किसी चीनी नगर में दैनिक अखबार और नियमित रिपोर्टर न होने के कारण सदा अफवाहें सुनाई देती थीं। मैं यह कल्पना न कर सकती थी कि हमारी पुरानी राजधानी से एक आधुनिक नगर कैसे बनाया जा सकता था, तब एक दिन मेरी समझ में आया। हमारा दर्ज़ी, वही जो शहर में कम्यू-निस्टों के प्रवेश की बात हमें सबसे पहले बताने आया था और वही जो—प्रसंगतः यही बता देना अच्छा है—बाद में मेरी एक कहानी 'दि फ़िल' का दुःखी नायक बना,

मुझे यह बताने आया कि 'वे' एक दैत्याकार मशीन से लोगों के घर गिरा रहे हैं। 'वे' का अर्थ उस समय नई सरकार हो चुका था।

'ज़रा समझाकर कहो,' मैंने विश्वास न करते हुए कहा।

'मैं समझा नहीं सकता,' उसने जवाब दिया। 'यह किया जा रहा है।'

मैंने अपनी कुर्ती पहनी और स्वयं देखने गई। हम शहर में गुज़रने वाली मुख्य सड़क से बहुत दूर नहीं रहते थे और कुछ ही मिनटों में मैं घटनास्थल पर पहुंच गई। वहां मैंने एक दैत्य जैसी मशीन देखी जो मैंने पहले कभी देखी या सुनी नहीं थी। इसलिए उसका मैं कोई नाम भी नहीं बता सकती। इसपर एक आदमी चढ़ा था, जो एक तरुण चीनी आदमी था, जो मज़दूर न होकर पश्चिमी शिक्षा पाया हुआ था और वह इसे धीरे-धीरे सड़क की एक ओर, और फिर दूसरी ओर चला रहा था। वह क्या कर रहा था? वह मकान गिरा रहा था—वे पुराने एक-मंज़िले मकान, जो हाथ की शक्ल की ईंट, और चूने के मसाले से जोड़कर बनाए गए थे, सैकड़ों वर्ष से आश्रय दे रहे थे, पर वे उस समय से बहुत पहले बनाए गए थे जिस समय पश्चिम के किसी आदमी के दिमाग में ऐसी मशीन की कल्पना पैदा हुई और वे इसकी चोट के आगे खड़े न रह सके। वे टूटकर मलवा बन गए।

यदि यह घटना मेरे पहले वाले जगत् में हुई होती तो मैंने उस आदमी को रोककर पूछा होता कि वह क्या और क्यों कर रहा है, पर अब यह दूसरा जगत् था और मैंने नहीं पूछा। मैं विदेशी थी। अब मैं यह जानती थी और मुझे पूछने की हिम्मत नहीं पड़ी। मैं चीनी लोगों के बीच खड़ी चुपचाप वेदना से देखती रही और वह नौजवान एक शब्द भी नहीं बोला, यहां तक कि तब भी नहीं, जब एक बूढ़ी दादी ने, जो उस मकान में अपने जन्म से ही रह रही थी, ज़ोर-ज़ोर से और अनाप-शनाप चिल्लाना शुरू किया। मैंने उसके लड़के से कान में पूछा कि क्या इन परिवारों को अपने घरों की हानि का मुआवज़ा दिया गया है, और उसने कान में जवाब दिया कि देने का वायदा किया गया है, पर हममें से कोई भी वायदों पर विश्वास नहीं करता। मुझे कभी यह पता नहीं चला कि उन्हें मुआवज़ा मिला या नहीं। मेरे विचार से यह हुआ होगा कि कुछ को मिला होगा और कुछ को नहीं, और यह उन लोगों की व्यक्तिगत ईमानदारी पर निर्भर होगा जिनकी मार्फत सरकार अलग-अलग मकान वालों से व्यवहार करती थी। पर गिराए गए मकानों का रुपये की शक्ल में कुछ भी मुआवज़ा नहीं हो सकता। उनके साथ न मालूम कितनी प्राचीन

परम्पराएं और स्मृतियां थीं।

मैं सचमुच भारी दिल से अपने नये बनाए घर में लौटी क्योंकि मैं समझ गई कि इसी दिन से नई सरकार का अन्त में अवश्य विफल हो जाना निश्चित हो गया। क्यों? क्योंकि यह सरकार जिनपर शासन करना चाहती थी, उनके हृदय को समझने से पहले ही विफल हो गई थी और जब कोई सरकार शासितों के लाभ के लिए शासन नहीं करती, तब देर-सबेर वह सदा विफल होती है और इतिहास हर पीढ़ी को यह पाठ पढ़ाता है, चाहे उसके शासक समझें या न समझें। और चीन में कम्यूनिस्टों को अपनी पहली विजय उसी दिन प्राप्त हो गई यद्यपि वे भागते दिखाई दे रहे थे। सच है कि लोग यह नहीं जानते थे कि कम्यूनिस्ट कौन है, सच है कि अभी यह नाम नाम ही था, पर जब तरुण राष्ट्रवादियों ने ही देशवासियों के हृदय में असन्तोष के ये पहले बबूल के बीज बो दिए थे, तभी उन्होंने उन कांटों की तैयारी कर ली जो लोगों को केवल इस कारण उनके शत्रु की ओर मोड़ देंगे कि वह उनका शत्रु है जिनसे लोग रुष्ट और असंतुष्ट हैं। यह व्यष्टि के रूप में भी और व्यापक रूप में भी एक स्वाभाविक मानवीय वृत्ति है कि जब आदमी घृणा करता है, तब वह घृणा घृणास्पद के शत्रु के लिए हितकर बन जाती है। इस प्रकार नया शासन अभी अच्छी तरह जमा भी न था कि इसने लोगों को अपने से दूर कर लिया।

और फिर भी, क्योंकि मुझपर सदा प्रश्न के दोनों पहलू देखने की ज़रूरत का अभिशाप पड़ा हुआ है, मुझे तरुण राष्ट्रवादियों से, और विशेष रूप से जिनकी शिक्षा संयुक्तराज्य अमरीका में हुई थी उनसे, गहरी सहानुभूति अनुभव हुई। वे अपने सम्मान और अपनी उपाधियों पर गर्व करते हुए सच्ची देशभक्ति की भावना लिए हुए बड़ी उत्सुकता से स्वदेश लौटते थे पर अपने विदेशों में रहने के दिनों में वे यह भूल गए थे कि उनका देश क्या था—बहुत बड़ा, अनपढ़, मध्ययुगीन, या जैसे वे इसे कहना पसन्द करते थे, 'सामंतीय'। मेरे लिए, जो सदा वहां रही थी, वह अपने चले आते हुए गन्द, अपनी निरक्षरता और अपनी मध्ययुगीनता के बावजूद सुन्दर था, बल्कि यह अपनी प्राचीनता और अपनी बुद्धिमत्ता के विस्तृत संचय के कारण ही सुन्दर था। ऐसे तर्कसंगत, आवश्यकता समझ जाने पर बदलने के लिए ऐसे तत्पर लोगों को आसानी से समझाया और अपने पीछे ले जाया जा सकता था, पर उन लोगों को दबाकर उनका रूप बदलना सबसे कठिन काम था। मुझे ऐसा मालूम

होता था कि चीनी लाग संचित बुद्धिमत्ता, स्वाभाविक कलात्मकता, और बुद्धि-सम्पन्न सरलता लेकर ही पैदा होते हैं, और यदि उन्हें छोटी आयु में ही दूसरी जगह न रख दिया जाए तो उनमें ये गुण परिपक्व हो जाते हैं। किसी किसान और उसके परिवार से भी, जिनमें से कोई भी पढ़ या लिख नहीं सकता था, बातचीत करने पर प्रायः बड़ी समझदारी और परिहासपूर्ण दर्शन या फिलासफी सुनने को मिलती थी। अब यहां अपने देश में घुल-मिल जाने पर भी यदि कभी मेरे मन में चीन को याद करके उदासी आती है तो तभी, जब मैं यह देखती हूं कि यहां कोई फिलासफी या दर्शन नहीं है। हमारे लोगों के पास रायें हैं, मत हैं, पूर्वाग्रह हैं, और विचार हैं पर अभी तक कोई दर्शन नहीं है। शायद यह चीज़ हज़ारों वर्ष पुराने राष्ट्र में ही आ सकती है। और उदासी तथा भय पैदा करने वाला तथ्य यह था कि जो तरुण और उखड़े चीनी पश्चिमी विश्वविद्यालयों में या चीन में मिशनरी स्कूलों और अन्य आधुनिक स्कूलों में शिक्षित हुए थे, वे चीनी दर्शन या फिलासफी खो चुके थे। वे न पूर्व के थे और न पश्चिम के, और वे दयनीय थे क्योंकि उन्होंने अपने देश की उन्नति के लिए अपने-आपको अर्पित कर रखा था, पर वे यह नहीं समझ सकते थे कि उनके लिए अपने देशवासियों को बचाना असंभव था, क्योंकि वे स्वयं खोए जा चुके थे। वे अब भी न जानते थे कि अपने देशवासियों से कैसे बोलना चाहिए। मैंने जब एक सच्चे दिल तरुण चीनी को, जिसपर हाल ही में पाई हुई अमरीकन डाक्टरेट की डिग्री का प्रभाव अभी खत्म नहीं हुआ था, अपने नगर में या किसी गांव में, जहां मैं उस दिन किसी कारण से थी, एक सड़क पर एक चीनी भीड़ के सामने लच्छेदार भाषण देते सुना, तब मैं शर्म से गढ़ गई। वह इतना पतला, इतना तीव्र और इतने परोपकार के उत्साह से भरा हुआ सफाई या अच्छी खेती या नई सरकार या विदेशी साम्राज्यवाद या असमान सन्धियों या और भी कोई बात जो उसका दिल दुखा रही थी, उसकी बात कर रहा था। और उसे पता नहीं था कि जो शब्द वह बोल रहा है, उस हर एक शब्द से वह अपनी ही आशाएं नष्ट कर रहा है। क्यों? क्योंकि वह अनुभवी वृद्ध पुरुषों से इस तरह बात कर रहा था जैसे वे गुलाम, मूर्ख और अज्ञानी हों। और मन ही मन वह उनपर क्रुद्ध हो रहा था क्योंकि वे उसके सामने बिना प्रभावित हुए खड़े थे और हंस रहे थे जब कि उस बेचारे के तरुण गालों से पसीना बह रहा था। वह इतना क्रुद्ध था कि उसे रोना आ गया। और मुझे निश्चय है कि यदि बिजली गिर जाती और वे सब मर जाते तो

उसे खुशी होती, पर आसमान ने उसकी कभी न सुनी और उसकी तरह उनके ऊपर वर्षा होती रही, सूर्य चमकता रहा । ऐसे दैवीय अन्याय से अच्छे से अच्छे सुधारक भी विभ्रान्त हो जाते हैं।

और मैं, जो मौन रहने का पाठ पढ़ चुकी थी, लोगों की अपेक्षा मशीन पर चढ़े नौजवान के लिए अधिक अफसोस महसूस करती हुई वहां से हट ही सकती थी क्योंकि लोग मज़बूत थे पर वह न था और मुझे लोगों की जीत के बारे में कभी यह संशय नहीं हुआ। बाद में मैंने नये नगर के निर्माण पर एक कहानी लिखी जिसका शीर्षक था 'दि न्यू रोड' और हृदयस्पर्शी और सच्चे नौजवान और उसके जैसे हज़ारों और लोगों का वर्णन एक और कहानी 'शांगहाई सीन' में किया।

इन दिनों भी हमारे सुन्दर गुलाबी पर्वत के एक पार्श्व पर एक अजीब परिवर्तन हो रहा था। अपनी दूर-स्थित ऊपर की खिड़की से मुझे एक सफेद धब्बा-सा दिखाई देता था जो चीड़ों और बांसों के बीच प्रतिदिन बड़ा होता जा रहा था। यह सन यात-सेन का मकबरा था क्योंकि नई सरकार ने यह निश्चय किया था कि सन के अभ्यंजित शरीर को उत्तर से लाया जाएगा और दक्षिणी राजधानी में दफनाया जाएगा। इसकी आधारशिला उसकी मृत्यु के प्रथम वार्षिक दिवस पर रखी जा चुकी थी। मैं इसके निर्माणकाल में बीच-बीच में जाकर इसे देखा करती थी और मैंने इसे शिलाओं और मिट्टी के अस्तव्यस्त स्थान से बढ़ते-बढ़ते एक ऐसे बड़े दोगले स्मारक तक बनते देखा जिसके बारे में लोगों को समझ न आती थी कि इसे विदेशी मानकर अस्वीकार करें या इसपर अभिमान करें कि यह अंशतः चीनी था। नीचे एक द्वार-घर था और वहां से बहुत सारी सफेद संगमरमर की सीढ़ियां पर्वत तक पहुंचाती थीं। अगले दस वर्ष में मैं उन सीढ़ियों पर इतनी बार चढ़ी और मैं यह सोचती थी कि मैं कभी नहीं भूल सकती कि वे कितनी हैं, फिर भी मैं भूल गई हूं, क्योंकि उसके बाद मेरे पैरों ने बहुत-से देशों और दूर-दूर के स्थानों के चक्कर लगाए हैं। संगमरमर की सीढ़ियां चढ़ने के बाद स्मारक हाल था और उसके पीछे मकबरा था। नीले टाइल की छत प्राचीन मन्दिरों की शैली से ऊपर को मोड़ लिए हुए थी और मकान के सामने संगमरमर का बुर्ज बड़ा प्रभावोत्पादक था। क्योंकि भीतर के ऊपर से कई मील तक देहात दिखाई देता था। दाईं ओर गोल चक्कर काटती हुई नगर की दीवार थी और इसके अन्दर बहुत पास-पास बने मकानों की छतें थीं।

उस मकान का अन्तिम कार्य गर्मियों के एक गरम दिन होना था। यह दिन सन यात-सेन के मृत्यु के चार वर्ष बाद १६१६ में उनकी अन्तिम क्रिया का दिन था। महीनों से तैयारियां हो रही थीं और अधिक कठिन चीज़ यह थी कि मैडम सन यात-सेन में और उनके शेष परिवार में, जिसमें अब चियांग काई-शेक भी शामिल था, आवश्यक, चाहे अस्थायी ही, समझौता हो जाए; क्योंकि मैडम सन यह समझकर कम्यूनिस्ट पक्षपाती थी कि उसका पति कम्यूनिस्ट-पक्षपाती रहा था। वह अंतिम क्रिया में आएगी या नहीं? लोग सोच रहे थे। वह आई और हर किसीको चैन मिला। उस नेता को इस तरह दफनाना कि उस अवसर पर उसकी पत्नी न हो, विचारातीत बात थी। फिर भी, लोगों में बहुत-से किस्से और अफवाहें थीं कि वह आएगी पर परिवार के किसी व्यक्ति से नहीं बोलेगी। फिर भी तैयारियां चलती रहीं।

और सन यात-सेन की अन्तिम क्रिया की रौनक के उन दिनों में मेरे दो अतिथि थे—एक डाक्टर ऐल्फ्रेड ज़े, जो वाशिंगटन में चीनी राजदूत और मेई मेई ज़े के जो अमरीका में काफी प्रसिद्ध हो गई है, पिता थे और दूसरे डाक्टर टेलर, वह मिशनरी डाक्टर जिसने सन यात-सेन के शरीर के शव को मसाले लगाकर सुरक्षित किया था।

डाक्टर ज़े एक ऊंचे सुन्दर आदमी थे जो पूर्व तथा पश्चिम दोनों की संस्कृतियों से समान रूप से सुसंस्कृत थे और नानकिंग की परेशानियों पर अपनी चिन्ता न छिपा सके। मुझे इस कारण उनका आतिथ्य करने के लिए कहा गया था क्योंकि हमारा मकान कुछ अन्य मकानों की अपेक्षा अधिक आरामदेह था। पर फिर भी हमारे यहां बिजली या पानी का नल या और कोई आधुनिक सुविधा—जिनकी डाक्टर ज़े को इतने वर्ष विदेशों में रहने पर अभ्यास पड़ गया था—नहीं थी। उन्होंने मुझे मेरे अपने देश की जो झांकियां दीं वे अत्यधिक प्रबोधकारी और आनन्ददायक थीं और मैंने उनके देश के बारे में उनके निरुत्साह को दूर करने का यत्न किया, पर जो चीज़ मुझे बड़े स्पष्ट रूप में याद है वह है अपने और अतृप्य, ली साऊ-त्से के बीच भोजन के बाद की एक मज़ेदार बातचीत जो अपना पद पहले की अपेक्षा बहुत नीचा हो जाने और केवल रसोई-सहायक रह जाने के बावजूद अब भी हमारी गृहस्थी का प्रबन्ध कर रही थी।

'दुःख की बात है,' उसने अपनी ऊंची प्रचंड आवाज़ में कहा, 'कि हमारे इस

अतिथि जैसे भलेमानस को बचपन में चूज़ों के पैर बहुत खिलाए गए थे।'

'तुम्हें कैसे पता है कि उन्हें चूज़ों के पैर खिलाए गए थे?' मैंने पूछा।

वह सदा की तरह रसोई में सफाई पर रही थी, क्योंकि रसोइया हाकिमों की तरह यह मैला काम उसके ऊपर डालकर चला गया था।

'आपने देखा नहीं कि उसके हाथ हर समय कैसे कांपते रहते हैं?' उसने पूछा।

'ठीक है,' मैंने उत्तर दिया। डाक्टर ज़े के हाथ हल्के स्नायविक रोग के कारण सचमुच कांपते थे।

'इसका कारण', ली साऊ-त्से ने ऐलान किया, 'यह है कि उन्हें बचपन से चूज़ों के पैर बहुत खिलाए गए।'

'बेशक, मैंने कहा। उसकी बात का खण्डन करने के बारे में मैं काफी जानकारी प्राप्त कर चुकी थी। यदि मैं असहमत होती तो वह खुशी से घण्टों लगाकर यह सिद्ध करती रहती कि मेरा विचार गलत है, और देर पहले ही काफी हो चुकी थी।

डाक्टर टेलर के बारे में तो मुझे यह याद है कि वे इस बारे में चिन्तित थे कि कहीं जून की गर्मी में सन यात-सेन का मसाले लगाया हुआ शव बिखरने न लगे। उस समय बड़ी हलचल थी क्योंकि लोग अपने मृत वीरपुरुष को देखना चाहते थे और उसका अर्थ यह था कि शव-पेटी को कई घण्टे खुला रखा जाए। क्या वह पवित्र शव हवा की खराबी को सह सकेगा? फिर भी डाक्टर टेलर की चिन्ता और परेशानी के बावजूद शव-पेटी कुछ घण्टों के लिए खोली गई और सन यात-सेन का शव बिना बिखरे रुका रहा परन्तु उनके हाथ बिखरने लगे लेकिन उनपर दस्ताने पहना दिए गए और सब ठीक-ठाक हो गया।

अन्तिम क्रिया के बारे में मेरी अपनी स्मृतियां एक दर्शक की तरह ही हैं पर अन्ततः वही शायद सबसे अधिक मनोरंजक दृष्टिकोण है। मैं उस सड़क पर मीलों जमा भीड़ के बीच खड़ी थी जिसपर से शव का जलूस गुज़रना था और मैं एक ओर एक बदबू-भरे भिखारी और दूसरी ओर एक मोटी-ताज़ी मसखरी देहाती स्त्री के बीच में दब रही थी। मैंने सामने सिरों के बीच में से झांका और जब वह राजकीय जलूस गुज़रा तब पीछे से मुझपर अज्ञात व्यक्तियों का धक्का लगा—स्काउट लड़के और स्काउट लड़कियां वर्दी पहने हुए प्रतीक्षा में थकी हुई, उनके चेहरों पर पसीना बहता हुआ, छात्र और नौजवान लोग, सब संगठनों के प्रतिनिधि, सैनिक तथा बैंड

यह अन्तहीन जलूस चलता गया। अन्त में मैंने अन्य देशों के गण्यमान्य व्यक्तियों को देखा। सुन्दर और बढ़िया वस्त्र पहने हुए ब्रिटिश लोग, जो अपने सवेरे के वस्त्र और ऊंचे रेशमी टोप लगाने के बावजूद उत्साहहीन दिखाई दे रहे थे, अपनी छातियों पर चमकीले धारीदार रिबन और सम्मान-चिह्न लगाए योरपियन लोग, भारत के ऊंचे पगड़ीधारी लोग, छोटे जापानी लोग, जो अपने शरीर से बड़े पश्चिमी वस्त्र पहने थे, कामकाजी अमरीकन लोग जो अफसर की अपेक्षा मुनीम अधिक लगते थे—वे मौन और व्यवस्था में रहते हुए गुज़रे और अन्त में झण्डे और रेशम से ढकी बड़ी भारी शव-पेटी धीरे-धीरे गुज़री जिसके पीछे-पीछे परिवार के लोग और चीनी प्रतिष्ठित लोग थे।

हम घण्टों खड़े रहे थे। अब हमें जो सवारी मिली, वही लेकर हम नगर की दीवार से बाहर अन्तिम क्रिया में फिर खड़े होने के लिए भागे। छोटा-सा मकबरा प्रतिष्ठित लोगों से भर गया था और मैंने फिर अपनी जगह संगमरमर की सीढ़ियों के नीचे विशाल भीड़ के बीच बनाई। मुझे याद नहीं कि कार्यक्रम क्या था, परन्तु इतना याद है कि वहां कई भाषाओं में भाषण हुए, मालाएं भेंट की गई, गीत गाए गए और इन सबकी सूचना हमें लाउडस्पीकरों से मिलती रही जो मैंने पहली बार ही देखे थे। पर एक बात मुझे अवश्य याद है कि कार्यक्रम बीच में भंग हो गया और हम खड़े-खड़े प्रतीक्षा ही करते रहे। मैं यही सोचती रही कि क्या हुआ और सब कुछ हो चुकने के बावजूद अपनी पुरानी आदत के कारण मैं फिर चीनियों के साथ अपने को अभिन्न करके यह चिन्ता करने लगी कि कहीं गलती के कारण विदेशियों के सामने इस अवसर का कार्यक्रम बिगड़ न जाए। जैसे मेरे विचार कोई भविष्य के पूर्वाभास थे, लाउडस्पीकरों पर ऊंची और उतावली तथा स्पष्ट सुनाई देने वाली फुसफुसाहट सुनाई दी।

'जल्दी करो, जल्दी करो—विदेशी लोग हमारी हंसी न कर सकें।'

जो कोई भी देर कर रहा था, उसने जल्दी की और कुछ ही मिनट में कार्यक्रम फिर चालू हो गया। इस बीच मैंने किसी चीनी को और नहीं देखा और यह दिखावा किया कि मैंने वह फुसफुसाहट नहीं सुनी है। मेरा ख्याल है, अधिकतर विदेशियों ने उसे नहीं समझा क्योंकि उनमें से अधिकतर चीनी बिल्कुल नहीं या बहुत कम जानते थे।

जब कार्यक्रम समाप्त हो गया और लगभग सब लोग चले गए, तब मैं संगमर-

मर की सीढ़ियां चढ़कर मकबरे के स्वागतकक्ष में गई। उस समय चियांग काई-शेक एक अन्दर की कोठरी से बाहर आया। उसने राष्ट्रवादी वर्दी पहनी हुई थी और उसकी छाती पर सम्मान-सूचक पदक और चिह्न लगे हुए थे और उसकी आंखें सीधे आगे की ओर थीं। वह संगमरमर के फर्श को पार करके चौड़े दरवाज़े में खड़ा हो गया और घाटियों की ओर देखने लगा। मैं उसके पास खड़ी हुई उसका चेहरा ध्यान से देखती रही। वह शेर के चेहरे से इतना अधिक मिलता था। ऊंचा माथा ढालदार था, कान पीछे की ओर मुड़े थे, चौड़ा मुंह सदा मुस्कराने को तैयार पर फिर भी सदा क्रूर मालूम होता था। पर उसकी आंखें सबसे अधिक आकर्षक थीं। वे बड़ी-बड़ी बहुत काली और सर्वथा निर्भीक थीं। यह मानसिक या बुद्धि की निर्भीकता न थी बल्कि शेर की ही थी, जिसे अपनी शक्ति के कारण और किसी पशु से डरने के लिए कोई हेतु नहीं दिखाई देता।

वह तीसरे पहर की चमकीली धूप में बहुत देर खड़ा रहा और मैं छाया में खड़ी रही और हिली नहीं। मैं अब भी सोचती हूं कि वह उस समय क्या सोच रहा होगा और अब उस द्वीप पर निर्वासित होने के बाद जिसकी जनता आज भी अपने को चीन का या चीनियों का हिस्सा नहीं मानती, उसे क्या याद होगा?

मुझे चियांग काई शेक के शासनकाल में शान्ति की कोई स्मृतियां नहीं हैं। उसके सामने हल करने के लिए कठिन समस्याएं थीं और उन्हें हल करने के लिए आवश्यक शिक्षा उसे नहीं प्राप्त हुई थी। वह एक सैनिक था और उसका एक सैनिक का ही मस्तिष्क था और वह न तो अपने स्वभाव से और न अनुभव से ही किसी गण-राज्य का नागरिक-शासक बनने के लिए उपयुक्त था। मैं पढ़ती हूं कि आज बूढ़ा शेर सवेरे जल्दी उठता है और प्रार्थना करता है। कहते हैं कि उसे फारमोसा की सड़कों पर चुपचाप घूमना अच्छा लगता है और उसकी पत्नी उसके साथ होती है। ठीक है, वह बूढ़ा हो रहा है। मैं सुनती हूं कि वह कविता पढ़ता है और ध्यान करता है। यदि ऐसा है तो वह युद्ध-नायकों की परम्परा पर चल रहा है। वृद्ध वू पेई-फू, जो चीन का सबसे कुख्यात युद्ध-नायक हुआ है, अपने बुढ़ापे के वर्षों में न केवल कविता पढ़ा करता था, बल्कि लिखने की भी कोशिश करता था और अनेक बूढ़े चीनी सैनिक नेताओं की तरह वह भी यह चाह प्रकट किया करता था कि भविष्य की पीढ़ी उसे लड़ाइयां और युद्ध लड़ने वाले के रूप में याद न करके एक बुद्धिमान् तथा दयालु मानव के रूप में याद करे। चीनी लोगों की हृदय की गहराई में प्राचीन तरीके

अब भी कायम हैं। हों भी क्यों नहीं, क्योंकि लोग शताब्दियों से जो कुछ हैं उससे एक दिन या एक रात में नहीं बदलते, और बहुत पहले कन्फ्यूशियस ने यह लिख दिया था कि शान्ति के रास्ते ही सम्मानित रास्ते हैं, कि उत्कृष्ट आदमी लड़ता और मारता नहीं, बल्कि पहले अपने ऊपर और फिर अपने घर पर और अन्त में अपने राष्ट्र पर शासन करता है।

मुझे शान्ति की कोई याद नहीं है क्योंकि ये वे वर्ष थे जिनमें चियांग काई-शेक की सेना कम्यूनिस्टों का पीछा करती उन्हें देश के परली ओर और सुदूर उत्तर-पश्चिम में खदेड़ रही थी। यह पीछा बहुत दूर तक किया गया, पर इसका आरम्भ हमारे ही नगर में हुआ और मैंने यह अपनी कक्षाओं में भी देखा। अनेक बार मैंने देखा कि स्कूल के कमरे में बहुत-से स्थान खाली थे। जब मैंने पूछा कि मेरे बाकी छात्र कहां हैं तब दूसरे छात्रों ने अर्थपूर्ण मुद्राएं बनाईं, जिनसे मुझे पता चला कि वे बद-किस्मत लोग कम्यूनिस्ट कहकर गिरफ्तार कर लिए गए हैं। कभी-कभी मैंने उन्हें जेल से नहीं, पर मौत से बचाने की कोशिश की और कभी-कभी मैं बचा सकी, पर आम तौर से नहीं बचा सकी। मैं समझती हूं कि उनमें कम्यूनिस्ट भी थे, पर वे बहुत कम आयु के थे और शायद उन्हें उधर से मोड़ा जा सकता था, पर उन्हें मुड़ने का अवसर नहीं दिया गया। उन्हें मार डालना अपेक्षाकृत सरल था पर उनमें से अधिकतर कम्यूनिस्ट न थे, यह मैं अच्छी तरह जानती हूं। वे उदार पत्रिकाएं पढ़ने पर शायद कभी संयोगवश और बिना जानते हुए किसी कम्यूनिस्ट सहपाठी के साथ रहने से या नई सरकार की आलोचना करने पर पकड़े गए थे। इस तरह सारे चीन में कम्यूनिज़्म के नाम पर ऐसे हज़ारों तरुणों और तरुणियों को मार दिया गया जो कम्यूनिस्ट न थे। और हम लोग तब तक विवश थे जब तक हमें उस छात्र का नाम इतनी जल्दी न पता चल जाए कि हम उसकी तरफ से कुछ कह सकें। उस बुरे वक्त के बारे में मैं अधिक नहीं कहूंगी क्योंकि उन तरुणों और तरुणियों की हड्डियां पहले मिट्टी बन चुकी हैं। पर तब मेरी समझ में यह आया कि कोई भी आदमी जिसमें अपने विरोधियों या अपने विरोधी लगने वालों को कुचलने की दृढ़ इच्छा हो और सत्ता जिसकी आकांक्षा और सन्तुष्टि हो, वही क्रूरताएं कर सकता है, और तब मैंने सीखा कि ऊंचे से ऊंचा लक्ष्य नष्ट हो जाता है यदि साधन उसीके अनुसार ऊंचे न हों। इस प्रकार किए गए प्रत्येक अन्याय से राष्ट्रवादी सरकार और कमज़ोर होती गई और १९३० में ही बंद मकानों के अन्दर और

गांवों में लोग विद्रोह के गुप्त गीत गा रहे थे। वे कम्यूनिस्ट न थे, पर वे अन्याय के विरुद्ध थे क्योंकि वे जानते थे कि जो सरकार अपनी जनता के प्रति अन्याय के आधार पर खड़ी होती है, वह टिक नहीं सकती, चाहे वह कम्यूनिस्ट हो या राष्ट्र-वादी हो, या कोई और हो।

और इस तरह चुपचाप और नम्र चेहरों से, हमारे नगरों और देहात के लोग बहादुर तरुण अफसरों, पश्चिम में शिक्षित विशेषज्ञों और सच्चे हृदय वाले बुद्धि-जीवियों, छात्रों और उत्साही सुधारकों को सामान्य मानवों की राह जाते देखते रहे। परम्परा के अनुसार चीन में कानून अपराधियों के लिए था, अच्छे नागरिकों के लिए नहीं, और सरकारी अफसरों के लिए तो निश्चय ही नहीं, और इस प्रकार परम्परा के अनुसार ही नये अफसर और बुद्धिजीवी जो कानून बनाते, उन्हें ही तोड़ते थे। वे मोटरों के नये रफ्तार-सम्बन्धी कानूनों को भी नहीं मानते थे क्योंकि वे घमण्डी और अपनी मनमानी चलाने वाले हो गए थे और व्यापक घूसखोरी की बातें भी चुपके-चुपके कही जाती थीं। पुरानी बुराइयां अब भी हमारे साथ थीं। इसका एक उदाहरण मुझे अपनी कक्षाओं में ही एक उच्च सरकारी परिवार के सुन्दर पुत्र के रूप में मिला। वह हर रोज़ एक अमरीकन कार में आता था जिसे एक बाइलो-रूसी चलाता था। वह लम्बा युवक एक वर्दी पहनता था और अपने नाम से पहले 'लैफ्टिनैन्ट' लगाता था, और रोज़ औरों के बाद आता था और चलते हुए उसके चमकीले जूते मचमचाते थे। टर्म के अन्त में वह परीक्षा में नहीं बैठा और मैंने उसे छमाही के कार्य के आधार पर फेल कर दिया, विशेष रूप से इस कारण कि उसने कक्षा में दिया गया कार्य या तो देर से किया या बिल्कुल नहीं किया। वह बहुत कुपित हुआ।

'क्या आपको पता नहीं कि मैं चीनी राष्ट्र की गणराज्य सेना में लैफ्टिनैन्ट हूं ?'

'जहां तक मेरा वास्ता है, तुम केवल इस विश्वविद्यालय के एक छात्र हो जो मेरी भी एक कक्षा में आते हो,' मैंने उत्तर दिया।

'मेरे पिता…।'

'मेरे लिए उससे कुछ फर्क नहीं पड़ता,' मैंने कहा और फिर उस गर्वीले और अन्धविश्वासपूर्ण तरुण चेहरे पर न हंसने की कोशिश करते हुए मैंने उसे किसी आधुनिक राज्य के लोकतन्त्र पर भाषण देना आरम्भ कर दिया।

वह बहुतों में से एक था। और कुछ भी हो, चीनी लोग नये अफसरों को माफ

नहीं कर सकते थे क्योंकि वे इतना अधिक पुरानों की तरह थे। उन्होंने नई सरकार से कुछ अधिक आशा की थी। वे एक नई दुनिया की आशा लगाए हुए थे।

इन वर्षों के बीच में मैंने अपनी अपाहिज बच्ची को किसी स्थायी स्कूल में रखने के लिए अमरीका की संक्षिप्त यात्रा की। यह निश्चय इसलिए और जल्दी करना पड़ा क्योंकि मुझे चीन में युद्धों और क्रान्तियों को देखते हुए भविष्य इतना अनिश्चित मालूम हुआ कि लाचार बच्ची के लिए एकमात्र सुरक्षा किसी जीवन के शरणागार में थी। १६२६ में अमरीका में रहने के उन थोड़े-से महीनों में ही मैंने यह सुना कि मेरा पहला उपन्यास 'ईस्ट विंड : वैस्ट विंड' प्रकाशन के लिए स्वीकृत हो गया है। मैंने वह छोटी-सी पाण्डुलिपि एक वर्ष पहले डेविड-लायड को भेजी थी और इसके बाद इतना कुछ हो चुका था कि मैं इसे बिल्कुल ही भूल गई थी। मैं बफैलो में एक मित्र के घर मिलने गई थी कि वहीं डेविड लायड का एक समुद्री तार, जो चीन से लौटकर आया था, मुझे मिला उसमें लिखा था कि वह पुस्तक जॉन डे कम्पनी ने ले ली है और कुछ हेर-फेर के बारे में बातचीत करने के लिए मुझसे कम्पनी के कार्यालय में आने को कहा गया था। यह समाचार एक दिन सवेरे आया, जब मैं अपनी बच्ची से बिछुड़ने की सम्भावना पर उदासी अनुभव कर रही थी और यद्यपि इससे उस दुःख का निवारण नहीं हुआ पर फिर भी इसने अपने ही ढंग से जीवन में कुछ उत्साह पैदा कर दिया। मुझे बताया गया है कि एजेन्ट और प्रकाशक दोनों को इस बात पर आश्चर्य हुआ कि मैंने इतनी शान्ति से उत्तर दिया और न्यूयार्क पहुंचने में कई सप्ताह लगा दिए। मेरा ख्याल है कि समय के बारे में मेरी आदतन असावधानी एक समयहीन देश में इतने दिन रहने का परिणाम है।

परन्तु समय पर मैं न्यूयार्क पहुंची और वहां डेविड लायड से मिली जिसे मैंने पहले कभी न देखा था और उसके साथ जॉन कम्पनी के कार्यालय गई जहां मैं धैर्य से ड्योढ़ी में पड़ी एक लम्बी पेन्सिलवानिया डच बेंच पर प्रतीक्षा करती रही। प्रसंगतः यह बेंच अब हमारे भोजन के कमरे में उपहार के रूप में आई हुई पड़ी है। जॉन डे कम्पनी का अध्यक्ष उस दिन लंच के बाद काम के लिए देर से लौटा। जब वह आया तब मुझे यह जानकर दिलचस्पी पैदा हुई कि मेरी छोटी-सी पुस्तक को प्रकाशित करने का फैसला उसने किया था क्योंकि उसका सम्पादकीय मण्डल इसके

पक्ष और विपक्ष में आधा-आधा बंटा हुआ था और उसने ही निर्णायक मत दिया। उसने मुझे बिल्कुल साफ तौर से बताया कि मैंने इसलिए इसके पक्ष में मत नहीं दिया कि मैं इसे बहुत अच्छी पुस्तक समझता हूं (क्योंकि मैं इसे अच्छी नहीं समझता) बल्कि इस कारण दिया कि मुझे इसके एक ऐसे लेखक का दर्शन हुआ जो आगे वृद्धि करता रहेगा। डेविड लायड ने मुझसे पहले ही कह दिया था कि मेरी पाण्डुलिपि न्यूयार्क के हर प्रकाशक के पास भेजी गई थी और यदि जोनेडे कम्पनी ने इसे स्वीकार न किया होता तो वह इसे वापस ले लेता। इसलिए मैं उचित विनम्र मानसिक स्थिति में थी, पर बहुत पहले श्री कुंग ने ही इसकी व्यवस्था कर दी थी और मैं न खिन्न हुई और न फूली। इसके तुरन्त बाद मैं चीन लौट गई।

नानकिंग में मेरी छोटी-सी बड़ी वाली लड़की के अभाव में सारा मकान खाली था और सारे मित्र और सारा परिवार भी इसे नहीं भर सकते थे। मैंने फैसला किया कि वास्तव में लिखना शुरू करने का समय यही है। इसलिए एक दिन सवेरे मैंने अपना ऊपर का कमरा ठीक किया और अपनी बड़ी चीनी डेस्क पर्वत की ओर मुंह करके रखी और वहां प्रतिदिन सवेरे, जब घर का कार्य दिन भर के लिए व्यवस्थापूर्वक चलने वाला हो जाता था, मैं टाइपराइटर पर बैठ जाती और 'दि गुड अर्थ' लिखना शुरू करती थी। मेरी कहानी बहुत दिनों से मेरे मन में स्पष्ट थी। सच्ची बात तो यह है कि यह मेरे जीवन की घटनाओं की दृढ़ता से और तेज़ी से निर्मित थी और इसमें अजीब क्रोध था जो मैं चीन के किसानों और जनसाधारण के खातिर अनुभव करती थी, जिसे मैं प्यार और प्रशंसा की दृष्टि से देखती थी और आज भी देखती हूं। अपनी पुस्तक के दृश्य के लिए मैंने उत्तर के प्रदेश को चुना और दक्षिण के सम्पन्न नगर के लिए मैंने नानकिंग को चुना, इसलिए मेरी सामग्री मेरे आसपास ही थी और लोगों को मैं उसी तरह जानती थी जैसे अपने-आपको।

अपनी सब पुस्तकों में मैंने मिश्रण किया है। उदाहरण के लिए, वर्षों बाद मैंने किनफोक में उसी उत्तरी प्रदेश के कुछ अंश रखे हैं। चाचा ताओ की रसौली, जिसे वह हर एक के देखने के लिए इतने अभिमान से संभालकर कांच की बोतल में रखता था, पहले और वास्तव में मेडम चांग के मोटे-ताज़े शरीर में पैदा हुई थी। उसने भी इसे कटवा डालने का साहस किया और ऐल्कोहल की एक बोतल में डाल दिया और उसे हरएक के देखने के लिए अपने मुख्य हाल में मेज़ पर रख दिया। 'क्या आपके पात्र सचमुच के लोग हैं ?' सैकड़ों बार मुझसे यह प्रश्न पूछा जाता है और

बेशक वे सचमुच के लोग हैं जो याद की मिट्टी में प्रेम के प्राण भरकर रचे गए हैं। फिर भी उनमें से कोई भी मेरी पुस्तकों से बाहर ठीक उसी रूप में न था जिस रूप में पुस्तकों के अन्दर।

अपने बच्चे से बिछुड़ने पर वे दिन कितने लम्बे हो गए थे यद्यपि मैं उन्हें अधिक से अधिक भरा रखती थी। तीसरे पहर में नये सरकारी विश्वविद्यालय में अपनी कक्षाएं लेती थी और जब चार बजे लौटती तब सदा चाय के लिए अतिथि उपस्थित होते--तरुण चीनी बुद्धिजीवी, दूसरे चीनी मित्र, उस भाषा-विद्यालय के तरुण अमरीकन और अंग्रेज़ जो नानकिंग में मिस्र बोर्डों के सहयोग से खोला गया गया था। फिर भी दिन काफी लम्बे थे क्योंकि शाम का समय होता था और सप्ताह के अन्तिम दिन होते थे और गर्मियों के गरम लम्बे दिन होते थे, जब कि स्कूल बन्द हो जाते। और मैं अब कुलिंग जाने की परवाह नहीं करती थी। गर्मियों में मुझे अधिक समय होता था क्योंकि मेरे पिता गर्मियों के दो सबसे गर्म महीने सदा पर्वत पर मेरी बहन के परिवार के साथ बिताते, अतः पीछे मकान और भी खाली हो जाता था। उस समय ही मैंने महान् चीनी उपन्यास शुई हू चुआन का अनुवाद शुरू करने का निश्चय किया जिसका नाम मैंने बाद में 'आॅल मेन आर ब्रदर्स' रखा। चीनी नाम अंग्रेज़ी में अर्थहीन है यद्यपि चीनी में काफी व्यंजक है जहां नदियों और झीलों के पानी वाले किनारों के आसपास डाकू तथा लुटेरे सदा जमा होते रहे हैं और चीनी शब्दों में उनका निर्देश है। उस बृहत्काय पुस्तक के अनुवाद पर मैंने चार वर्ष लगाए और मैं इसपर अपना वह सारा समय लगाती थी जिसमें मैं अपनी पुस्तकें नहीं लिख सकती थी और पढ़ाती न थी। यह गहरा अनुभव था, क्योंकि यद्यपि यह पुस्तक पांच सौ वर्ष पहले लिखी गई थी, पर चीनी जीवन की तड़क-भड़क अब भी वही थी और कम्यूनिस्टों के रूप में, जो अब उत्तर-पूर्व में भाग रहे थे, मुझे वे असंतुष्ट विद्रोही दिखाई दिए जो साम्राज्य के पुराने दिनों में सरकार के विरुद्ध खड़े हुए थे।

वही ? नहीं, अब कुछ और खतरनाक चीज़ थी। ये पहले के डाकू किसी अशुभ नये झण्डे के नीचे खड़े न थे। वे केवल चीनी विद्रोही थे जो उन चीनी लोगों से नाराज़ थे जो उनपर अन्याय से शासन करते थे और उनमें न्याय की एक स्थूल समझ थी जिसके कारण वे अच्छे आदमी की सहायता करते थे और अत्याचारी को नष्ट कर डालते थे, चाहे वह सरकारी अफसर हो और चाहे कोई गांव का

आतंक हो। पर इस समय तक मैं जान गई थी कि कम्यूनिस्ट एक विश्वव्यापी आंदोलन के अंग हैं और जब चीनी असंतुष्ट और विद्रोही रूसी कम्यूनिज़्म के साथ मिलकर लड़ते थे, तब यह एक ऐसी चीज़ थी जो हमने पहले कभी नहीं देखी थी।

फिर भी मैं अभी केवल दर्शक थी। उन दिनों किसी विदेशी का तरुण बुद्धि-जीवियों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता था, सिवाय उन सलाहकारों के जो विदेशों से बड़ी तनखाहों पर लाए जाते थे। उदाहरण के लिए इंगलैंड से बर्ट्रेण्ड रसल जो डोरा ब्लैक के साथ आए थे और जिन्होंने हमारे तरुणों और तरुणियों को अस्त-व्यस्त कर दिया था और शीघ्र ही वे सब उन्मुक्त प्रेम की चर्चा करने लगे थे जिससे उनका आशय था अपने पति और पत्नियां चुनने का अधिकार और इससे मेरे बुज़ुर्ग चीनी मित्रों, उनके माता-पिताओं के दिल कांप गए थे।

'क्या गणराज्य होने का यह अर्थ है ?' इस प्रकार मेरी वृद्ध पड़ोसन मेडम लू जब कभी हम मिलते कम से कम मुझसे दो बार पूछती थी और मैं कुछ उत्तर न दे पाती, क्योंकि उस समय मैं स्वयं यह न जानती थी कि गणराज्य में रहने का क्या अर्थ होता है।

पाल मनरो और जॉन ड्यूई नये पब्लिक स्कूल संगठित करने में मदद देने आए और उन्होंने हर प्रान्त में एक विश्वविद्यालय, हर ज़िले में एक हाई स्कूल जिसे हम मिडल स्कूल कहते थे। और हर नगर में एक प्राइमरी स्कूल की आयोजना बनाकर ठोस काम किया। अभी अनिवार्य शिक्षा की बात करना असम्भव था क्योंकि आधुनिक स्कूलों में पढ़ाने के लिए बहुत थोड़े अध्यापक थे। अभी कम से कम एक पीढ़ी तक चीन के पचहत्तर प्रतिशत बच्चों को बिना स्कूलों के रहना होगा। अब अपने देश में अनेक वर्ष तक पब्लिक स्कूल देख लेने के बाद मैं कभी-कभी सोचा करती हूं, चाहे इससे कितनी ही अनास्था प्रकट होती हो, कि क्या हमारे पूर्वजों ने इसे केवल अनिवार्य स्कूल-पद्धति बनाने की बात सोची थी। अमरीका में अध्यापक का काम बड़ा कठिन है। मैं देखती हूं कि कक्षाओं में निकम्मे फिरते अनिच्छुक किशोर छात्र भरे हैं और स्कूलों में शोर हो रहा है। दंगाई बच्चों को, वे चाहें या न चाहें, शुरू की शिक्षा देनी है। और सबसे कठिन चीज़ यह कि ईंट पाथने वाले और ट्रक-ड्राइवर तथा मिस्त्री—जो अच्छे कारीगर हैं पर निश्चय ही अनपढ़ हैं—अध्यापकों से या अधिकतर दिमागी काम करने वालों से ज़्यादा तनखाह पाते हैं। यह देखकर मैं अमरीकन बच्चों के दिमाग की

अस्पष्टता पर उन्हें दोष नहीं देती। शायद यह बिल्कुल सच है, जैसा कि एक किशोर लड़के ने मुझसे उस दिन कहा कि कालिज में पढ़ने का कुछ भी लाभ नहीं जबकि आदमी हाई स्कूल के बाद शिक्षा समाप्त करके और ट्रक ड्राइवर का कार्य अपना कर कालिज के प्रोफेसर से अधिक धन कमा सकता है। चीन में दिमागी काम करने वाले बुद्धिजीवी को सबसे ज़्यादा तनखाह मिलती थी क्योंकि वहां ज्ञान का मान है, न केवल इसके अपने खातिर बल्कि इस कारण कि यह जीवन के संचालन की समझदारी और बुद्धिमत्ता का स्रोत है और इसके लिए 'टेकनीकल ज्ञान काफी नहीं समझा जाता था।

इसलिए दर्शक के रूप में मैं अपनी आंखों के आगे चीनी जगत् को बदलता देख रही थी। दर्जनों सरकारी विभाग खड़े हो गए जिनमें काम करने वाले चतुर तरुण चीनी लोग थे जो चीनी भाषा की अपेक्षा अंग्रेज़ी या फ्रेंच या जर्मन अधिक अच्छी बोल सकते थे। मुझे याद है कि एक रात एक बड़े भोज में मैं एक ऐसे नौज-वान के पास बैठी थी। उसने मुझसे पूछा कि आपने आज मनोरंजन के लिए क्या किया। मैंने कहा कि मैं घोड़े पर चढ़कर लियांग वंश के प्राचीन पत्थर के शेर देखने एक दूर के गांव तक गई थी। यह शरद् काल का एक सुन्दर दिन था, हवा सुनहरी तथा शान्त थी। चीनी का देहात उतना सुन्दर कभी नहीं होता जितना शरद् ऋतु में धान कट जाने के बाद होता है और बचे दाने चुगने वाले नीले सूती कपड़े पहने और अपनी बांस की टोकरियां लिए हुए वहां बड़े अनाज के दाने बीनने के लिए कटे खेतों में निकलते हैं। उनके बाद सफेद हंसनियों के झुंड अनिवार्यतः आते हैं जो अनाज बीनने वालों से छूटे एक-एक दाने को उठा लेते हैं। मैं प्राचीन पत्थर की सड़क के बाद वाले कच्चे रास्ते पर प्रसन्नता से और अकेली घोड़े पर चली गई और इस प्रकार लियांग शेर गांव में पहुंच गई और वहां उतर गई। फसल कटने के बाद यहां बड़ी रौनक थी। तरुण स्त्रियां आंगनों में, जो अब झाड़ू से साफ कर दिए गए थे, बच्चों से खेल रही थीं और वृद्ध स्त्रियां दरवाज़ों में बैठी चरखा कात रही थीं। मैं वहां पहले कभी न गई थी, पर चीनी मूर्तिकला के बारे में पश्चिमी पुस्तकों से मुझे बहुत पहले से पत्थर के शेरों का पता था और इसलिए मैंने गांव की सड़क के अन्त में उन्हें पहचान लिया यद्यपि वे उस समय गांव के धोए कपड़ों से ढके थे। फटे-पुराने नीले कोटों और पाजामों के नीचे से वे भव्य पशु सदियों से कायम जीवन को धैर्यमय कोमल भाव से देख रहे थे। गांव वालों को

अच्छी तरह पता था कि वे लियांग कलाकृतियां हैं और उन्होंने मुझे उनके इति-हास का सजीव और काफी सही वर्णन दिया।

मैंने उस सायंकाल अपने भोज के साथी को यह लम्बा वृत्तान्त सुनाया। वह एक चुस्त नौजवान था जो अच्छी कटाई वाला पश्चिमी सूट पहने था। मुझे दीख रहा था कि उसका मन और चीज़ों पर है, जबकि में बोलती जा रही थी : क्योंकि वह चाय पी रहा था, और अपनी उंगलियों से मेज़ को तबले की तरह बजा रहा था, खांस रहा था और अपनी कुर्सी पर बैचैनी से हिल रहा था। जब मैंने अपनी बात खत्म की तब वह फैसले के से ढंग से बोला, 'नानकिंग के पास कोई लियांग काल के पत्थर के शेर नहीं हैं।'

उसकी इतिहास को अस्वीकार करने की इस चेष्टा से मैं चौंकी और मैंने हल्के रूप में उसकी बात का विरोध किया। 'पश्चिमी विद्वान् इन पत्थर के शेरों की बहुत दिनों से प्रशंसा करते रहे हैं। और आप इनके फोटो और अन्य जानकारी देखना चाहें—'

'नानकिंग के पास लियांग वंश के पत्थर के शेर कोई हैं ही नहीं,' उसने फिर पहले से भी अधिक ऊंची आवाज़ में कहा।

मैं पहले ही यह जान चुकी थी कि कुछ लोग ऐसे होते हैं जिन्हें कोई जानकारी नहीं प्राप्त कराई जा सकती और इसलिए मैं शान्त बनी रही। अब जब मैं उन नौजवानों की बात सोचती हूं जो हमारी नई सरकार के विभागों का संचालन करते थे तब मुझे सदा उस घटना का ध्यान आ जाता है और मैं इसे यहां अज्ञान के खतरों के प्रमाण नहीं, पर उदाहरण के लिए पेश करती हूं। जहां तक लियांग शेरों का सम्बन्ध है, मुझे पक्का यकीन है कि वे उसी तरह वहां खड़े हैं जैसे सैकड़ों वर्ष से वहां खड़े रहे हैं और मुझे यह भी पक्का यकीन है कि गांव की औरतें उनके पत्थर के कंधों और कमर पर अब भी अपने उतरे रंग वाले कपड़े लटकाती हैं, चाहे आज पीकिंग में माओ त्से-तुंग के नाम पर शासन-कार्य होता है, जैसे कि उन दिनों नानकिंग में चियांग काई-शेक के नाम पर होता था।

नाम पर शासनकार्य ? हां कुछ-कुछ ऐसा ही था क्योंकि उसे एक गणराज्य के अध्यक्ष के रूप में कार्य करने में काफी कठिनाई हो रही थी। उसे आधुनिक लोक-तन्त्रीय शासन या शायद सैनिक शासन के अलावा और किसी शासन के बारे में कुछ पता नहीं था। उसे ऐसे लोगों के साथ काम करने की आदत थी जो उसके

'ग्राग्रो' कहने पर ग्राते ग्रौर 'जाग्रो' कहने पर चले जाते। सैनिकों की शिक्षा सारे संसार में एक-सी होती है ग्रौर हमारा राष्ट्रपति एक सैनिक था परन्तु उसके मन्त्रि-मण्डल में कुछ ज़िद्दी ग्रसैनिक थे ग्रौर वे प्रायः उसका मर्दानगी से विरोध करते थे। जब वह उन्हें गरजकर न दबा सका तब उसने उनकी जान लेना शुरू कर दिया। इस धींगामुश्ती से ऐसा विरोध पैदा हुग्रा कि वह चकित होकर कुछ रुका ग्रौर उसे यह पता चला कि स्पष्टतः राष्ट्रपति सम्राट् नहीं है। मैं यह मानती हूं कि वह हृदय से ग्राधुनिक बनना चाहता था, चाहे उसे इसके लिए उचित शिक्षा नहीं मिली थी, क्योंकि निश्चय ही उसके मास्को में बिताए वर्ष ग्रौर उसके जापान में एक सैनिक स्कूल में बिताए ग्रन्य वर्षों ने उसे लोकतन्त्र के लिए शिक्षित नहीं किया था। यह उसके लिए प्रशंसा की बात है कि उसने ग्रपनी क्रूरता में परिवर्तन किया ग्रौर उसे कैद में ग्रौर ग्रन्त में काफी प्रसन्नता-दायक कैद में परिवर्तित कर दिया। नानकिंग के पास ही एक गर्म पानी का चश्मा था जहां उसने ग्रपने ग्रौर ग्रपनी पत्नी के लिए एक मकान बनवाया था। इस मकान को उसने ग्रपने से मतभेद रखने वाले ग्रपने मन्त्रिमण्डल के सदस्यों को नज़रबन्द करने का स्थान बना दिया। वे वहां जाते ग्रौर तब तक वहां रहते थे जब तक उनका दिमाग सीधा न हो जाए। ग्रौर मुझे याद है कि जब कभी-कभी मैं नगर की दीवार से बाहर घोड़े पर चढ़कर जाती थी ग्रौर वहां से गुज़रते गांव वालों से पूछती थी कि ग्राजकल जेल में कौन है तब उन्हें सदा पता होता था। जहां तक छोटी ग्रायु के विरोधियों का सम्बन्ध था, या तो ऐसा कोई था ही नहीं जो हमारे राष्ट्रपति का विरोध करने का साहस करे ग्रौर या वह उन्हें कम भलमनसाहत के तरीकों से ठिकाने लगा देता था।

इन कामों के लिए मैं ग्रब उसे दोष देने नहीं बैठी हूं। वह एकाएक ग्रौर बिना तैयारी के महान् सत्ता के पद पर पहुंच गया था ग्रौर यह ग्रनिवार्य ही था कि वह उन्हीं तरीकों से व्यवहार करता जो उसे ग्राते थे, जो सैनिक विजेता के परम्परा-गत तरीके थे—वह शत्रुग्रों के सौदा न करने पर उन्हें मार डालता। ग्रौर कम्यूनिस्ट सलाहकारों ने भी–जिनके कहने पर पहले चियांग काई-शेक चलता था, ग्रौर जिन्हें बाद में उसने धता बता दी–परम्परा में वस्तुतः परिवर्तन नहीं किया था। शायद ग्राधुनिक कम्यूनिज़्म भी ग्रपने-ग्रापमें नया नहीं है क्योंकि इसका रूप प्राचीन रूसी शासकों की ज़बरदस्तियों से ग्रौर क्रूरताग्रों से बना है। चियांग काई-शेक जो कुछ जानता था, वही उसने सचाई से किया, पर वह काफी नहीं जानता

था। मै नही जानती कि अज्ञानी को अपराधी कहा जा सकता है या नही। यदि कहा जा सकता है तो इस ससार मे बहुत-से अपराधी है और यहा अपने ही देश मे मै उन्हे उच्च पदो पर देखती हू ।

इधर मै 'दि गुड अर्थ' लिख रही थी। मैने तीन महीने मे यह कार्य किया और इस समय मे पाण्डुलिपि को दो बार स्वय टाइप किया। मेरा भाई उस वर्ष न्यूयार्क के मिलबैंक मेमोरियल फण्ड की तरफ से चीन आया हुआ था और उसे जेम्स येन द्वारा चलाए हुए जनता-शिक्षा-आन्दोलन की इस दृष्टि से जाच करनी थी कि उस प्रशसनीय कार्य के लिए एक बडी धन-राशि दी जाए या नही। उसके पास मेरे यहा रहने के लिए बहुत थोडे दिन थे और उस समय बडे सकोच से मैने कहा कि मैने एक उपन्यास लिखा हे। वह सदा की तरह भला था। उसने दिलचस्पी दिखाई पर इतनी काफी नही कि मै यह महसूस कर सकू कि मै उससे अपनी पाण्डुलिपि पढने मे उसका अमूल्य समय लगाने और यह बताने के लिए कह सकू कि यह कुछ काम की चीज बन गई या नही। मेरे वृद्ध पिता निश्चय ही मुझे नही बता सकते थे, और दूसरा कोई था नही। इसलिए मैने उन पृष्ठो को बाधकर स्वय न्यूयार्क भेज दिया और इन्तजार करती हुई इधर दूसरे कामो मे व्यस्त हो गई।

अपने जीवन के तथा चीन के इतिहास के इस काल मे मै चीनी किसान, उसकी आश्चर्यजनक शक्ति और भलमनसाहत, उसकी मनोरजक और प्राय चिन्ता-कारक चतुरता और समझदारी, उसकी दोषदर्शिता और सरलता, जीवन के प्रति उसकी सीधी प्रवृत्ति—जो गहरी और स्वाभाविक दुनियादारी की आदत होती है—से अच्छी तरह परिचित हो चुकी थी। मुझे ऐसा प्रतीत होता था कि चीनी किसान, जो चीन की आबादी का पचासी प्रतिशत था, इतना उत्कृष्ट कोटि का मानव-समुदाय है कि अनपढ होने के कारण उसका बे-आवाज होना मानव-जाति के लिए एक हानि है। और इतने मोहक, वीर्यवान् और अनपढ होते हुए भी, और जीवन की कुछ अनुन्नत अवस्थाओ के बावजूद—जो आधुनिक विचार-पद्धति और आविष्कार की धाराओ से मन के बाधित पार्थक्य का प्रमाण मात्र हो सकती है—इतने वस्तुत 'सभ्य समूह को ही ये जडहीन और दयाहीन आधुनिक तरुण 'शिक्षित करने' निकले है। कम्यूनिस्ट विचार-पद्धति की और किसी बात से मुझे इतना क्रोध पैदा नही होता जितना त्रात्स्की की इस हृदयहीन उक्ति से कि किसान किसी राष्ट्र

के 'लद्दू घोड़े' होते हैं। किसने उन्हें लद्दू घोड़ा बनाया और ये 'लद्दू घोड़े' किस ऊंचाई तक नहीं पहुंच सकते, यदि उन्हें भारवाही पशुओं के बजाय इन्सान समझा जाए? कारण यह कि चीन में अपने सारे निवास के वर्षों में मुझे सदा उस समय असह्य पीड़ा और क्रोध अनुभव होता रहा, जब मैं किसी चीनी किसान के पतले बुद्धिमत्तापूर्ण चेहरे को निरी शारीरिक यंत्रणा के कारण विकृत हुआ देखती थी क्योंकि उसकी पीठ पर इतना भारी बोझ रक्खा होता था, जो एक पशु के लिए भी अधिक है। मैंने चावल की दो सौ पौण्ड (ढाई मन) की बोरी के भार से या किसी विदेशी पर्यटक यात्री के बड़े कपड़ों के ट्रंक के बोझ से उसकी पतली टांगों को कांपते देखा है। एडविन मार्खम की कविता 'दि मैन विद दि हो' (हल चलाने वाला) से जिसका मुझे देर से पता चला, मुझे एक आश्चर्यजनक आत्मा का विरेचन और विशदता अनुभव हुई। यह अमरीकन एशिया की सारी समस्या समझ सकता था और एशियाई नेताओं के बारे में मुझे यह अफसोस रहा है कि उन लोगों ने अपने किसानों की श्रेष्ठता को नहीं समझा और इसलिए वे धरती के इस शक्तिशाली और सामान्य आदमी का मूल्य नहीं लगा सके और उनमें कम्यूनिस्ट सबसे बड़े अपराधी हैं क्योंकि उनकी सब बातों के बावजूद, मुझे यह नहीं दीखता कि उन्होंने भी इस आदमी का मूल्य आंका है, और उनका उसके सामने अपने को बड़ा समझना मेरी आत्मा को खिन्न कर देता है। कल न्यूयार्क में एक तरुण चीनी स्त्री मेरे छोटे-से सोने के कमरे में बैठी बड़े उत्साह से उन महान् अद्भुत परिवर्तनों का ज़िक्र कर रही थी जो चीन में कम्यूनिस्ट कर रहे हैं। उसके शब्दों में भी मुझे बड़प्पन की पुरानी बू आई।

'दि गुड अर्थ' खत्म कर लेने के बाद मेरे मन को चैन न मिला और प्रायः तुरन्त ही मैंने एक और उपन्यास 'दि मदर' लिखना आरम्भ किया जिसमें मैंने एक चीनी किसान औरत का चित्रण किया, पर इससे बड़ी बात यह थी कि यह कहीं की भी ऐसी स्त्री का जीवन था जिसे अपने निजी अनुभव और समझदारी के सिवाय कोई और शिक्षण नहीं मिला। संसार में हर जगह ऐसी स्त्रियां करोड़ों हैं। उन दिनों मैंने समझा था कि निश्चय ही मेरे अपने देश में वे नहीं हैं, पर जब मैं यहां रहने आई तो मैंने उसे यहां भी देखा—अनेक फार्म-हाउसों में, जो मेरे ये पृष्ठ लिखने के स्थान से दूर नहीं हैं और निश्चय ही सुदूर दक्षिण में, जहां प्रायः नीग्रो है या पश्चिमी राज्यों के रेगिस्तानों पर, जहां उसे किसी दूसरे प्राणी से मिलने के लिए मीलों चलना होगा, अथवा न्यू इंगलैंड के पर्वतों में घिरे रहना होगा। परन्तु

चीन में वह स्त्री मेरे अपने देश की पुस्तक पढ़ने वालों से और निश्चय ही आलोचकों और समीक्षकों के मन के इतनी अधिक दूर है कि वे उसे नहीं समझ सकते—तब तक मैं समझती थी कि वह अजनबी चीज़ है जब तक मुझे यह ध्यान न आया कि विलियम फाकनर के उपन्यासों के मुड़े-तुड़े और विकृत लोग मेरे लिए कितने अजनबी हैं। मैंने ऐसे लोग चीन में कभी नहीं देखे, पर मैं यह मानकर चलती हूं कि वह यहां उनके बीच रहता है क्योंकि वे उसकी प्रसिद्ध पुस्तकों की सामग्री हैं। पर यहां से बाहर, फ्रांस में और इटली में और अन्य देशों में, जहां किसान स्त्री शक्तिमती और सजीव है, मेरे पाठक उसे जानते थे और मेरी पुस्तक उनकी समझ में आई। लेखक के लिए यह भी एक क्षतिपूर्ति है कि कहीं न कहीं सदा ऐसा पाठक मौजूद है जो उसकी बात समझता है। मुझे याद है कि न्यूयार्क में एक ईमानदार.आलोचक ने एक बार मेरी पुस्तक 'पेविलियन आफ विमेन' के बारे में कहा कि उसको यह 'समझ में' नहीं आया कि यह किसके बारे में है। उसे क्यों समझ आता, कैसे समझ आता ? पर दुनिया भर से मुझे स्त्रियों ने पत्र लिखे और उस पुस्तक की सराहना करके मुझे सांत्वना दी। फिर भी यहां यह बात न लिखूं तो ईमानदारी नहीं होगी कि जब मैंने 'दि मदर' समाप्त कर ली, तब मैं इससे ज़रा भी संतुष्ट नहीं हुई और मैंने इसे अपनी डैस्क के पास रद्दी की टोकरी में फेंक दिया। यह वहां पड़ी रही और संयोग की बात है कि यह स्थायी रूप से बाहर नहीं फेंकी गई। घर में काम करने वाला लड़का कुछ दिन के लिए बाहर गया था और टोकरियों का कूड़ा फेंका नहीं जाता था। एक नौकर इस डर से दूसरे का काम नहीं करता था कि कोई यह न समझे कि वह स्वयं इस काम को लेना चाहता है। तब लड़के के लौटने से पहले मैंने अपनी पाण्डुलिपि फिर से जांचने के लिए और यह देखने के लिए कि मेरा विचार गलत तो नहीं, मैंने वह संभालकर रख ली। अन्त में यह पुस्तक के रूप में छपी, यद्यपि इसे सन्दिग्ध मन से अपने प्रकाशकों सामने रखने को में कई वर्ष तक टालती रही।

प्रसंगतः उस लड़के को भाग्य और देवताओं में विश्वास रखने की विचित्र आदत थी। वह ऊंचा फीका-सा गमगीन मौन रहने वाला लड़का था और हमेशा निराशावादी बना रहता था। एक दिन वह इतना अधिक फीका दिखाई पड़ा कि उसका पीला चेहरा सफेद हरा-सा हो रहा था और मैंने उसे पूछा कि क्या तुम बीमार हो। उसने कहा कि मैं तो बीमार नहीं पर मेरी पत्नी को टाइफाइड था

ग्रौर मुझे उसकी ग्रौर बच्चे की देखरेख करनी पड़ी ग्रौर नींद बिल्कुल नहीं मिली। मै डरी ग्रौर मेरा डरना उचित था, क्योंकि वह प्लेटों ग्रौर डिशों को हाथ लगाता ग्रौर भोजन परोसता तथा रसोइए की मदद करता था। मैंने उससे कहा कि ग्रपनी पत्नी को ग्रस्पताल ले जाग्रो, पर उसने इनकार कर दिया ग्रौर कहा कि मरने की सम्भावना होने पर ही कोई विदेशी ग्रस्पताल में जाता है। मै यह जानती थी, इसलिए मैंने इस बात पर जोर नहीं दिया क्योंकि यदि ग्रौरत मर ही गई तो ग्राग्रह करने के कारण मुझे जिम्मेदार ठहराया जाएगा इसलिए मैंने केवल यही कहा कि तुम घर रहो ग्रौर ग्रपनी पत्नी के ग्रच्छे न होने तक उसकी तीमारदारी करो। उसने कुछ देर इसपर विचार किया। वह मेरे ग्रागे जड़वत् खड़ा रहा। उसका खिन्न सिर नीचे झुक रहा था ग्रौर ग्रन्त मे उसने कहा कि मै उसे ग्रस्पताल ले जाऊंगा क्योंकि दिन के समय भी बच्चे की देखभाल करने के लिए कोई नहीं है ग्रौर यदि मै घर पर रहूं तो भी पत्नी ग्रौर बच्चे को नहीं संभाल सकता क्योंकि मै छह रातों से नहीं सोया। इस तरह वह ग्रस्पताल गई ग्रौर उसकी हालत सुधरती दीखने के बाद एक दिन एकाएक बिगड़ने लगी। वह ग्रादमी मुझसे कहने ग्राया कि वह मर रही है,जैसा कि उसे विदेशी ग्रस्पताल में भेजने पर होने का डर था ग्रौर कि ग्रब मै उसे घर लाना चाहता हूं। क्योंकि खबर यह थी कि वह मौत के निकट है, इसलिए मैंने उससे कहा कि उसे शान्ति मे रहने दो। पर नहीं। उसका इरादा बन चुका था। हम सब विवश थे ग्रौर वह उसे ग्रचेत हालत में रिक्शे में घर ले गया ग्रौर मुझसे कह गया कि मैं ग्रापको कहलवा दूंगा कि कब काम पर लौट सकूंगा। मुझे कुछ-कुछ यह सम्भावना थी कि मै उसे फिर कभी न देखूंगी क्योंकि यह बिल्कुल सम्भाव्य था कि ग्रपनी सदा की कमजोर हालत में उसे खुद को यह रोग हो जाएगा।

मुझे ग्राश्चर्य हुग्रा जब वह लगभग दो सप्ताह में लौट ग्राया ग्रौर ग्रब पहले से ग्रधिक तरो-ताजा ग्रौर मोटा तथा कम उदास दिखाई दे रहा था। उसने मुझे ग्रौर मेरे जैसे ग्रन्य लोगों को विजय-हर्ष मे सुनाया कि मेरी पत्नी ग्रच्छी हो गई है। उसने बताया कि उसे घर लाकर मैंने बिस्तर पर लिटा दिया ग्रौर पांच दिन तक उसके ग्रौर बच्चे के पास कमरे में ही रहा ग्रौर उसे शोरबा ग्रौर चावल की खिचड़ी खिलाता रहा ग्रौर उसे गर्मी में रखता रहा। 'ग्रस्पताल में वे लोग उसे बहुत धोते थे,' उसने समझाते हुए कहा, 'वे उसका जीवन धोकर बहा रहे थे।

मैंने उसे नहीं धोया और वह अच्छी हो गई और अब वह सब काम पहले की तरह कर रही है।'

मैंने खुशी प्रकट की और शेष कुछ नहीं कहा। बहुत बार मैंने देखा है कि डाक्टर भ्रांत सिद्ध हुए हैं और प्रेम और दृढ़ संकल्प से विज्ञान की हीनता प्रकट हुई है।

१९३१ का वर्ष मेरे लिए अनेक तरह से स्मरणीय था। उस वर्ष मेरे प्यारे वृद्ध पिता का अस्सीवें वर्ष में देहान्त हुआ। उस वर्ष यांगत्से नदी में अभूत-पूर्व वर्षा से बाढ़ आई और हमारा सारा देहाती प्रदेश बाढ़ से भर गया। यह दृश्य किसीने भी अपने जीवन-काल में न देखा होगा। और उस वर्ष जापानी साम्राज्य-निर्माताओं ने मंचूरिया पर कब्ज़ा कर लिया और सब विचारशील चीनियों ने और कुछ गोरे लोगों ने इस आकस्मिक कार्य का पूर्ण भविष्य समझ लिया। वृद्ध चीनी विद्वान् श्री लुंग, जो मेरे साथ शुई हू चुआन के अनुवाद का कार्य कर रहे थे, मुझसे प्रायः चिन्तासहित कहा करते थे, 'क्या यह सम्भव है कि अमरीकन और अंग्रेज़ यह नहीं समझते थे कि मंचूरिया पर जापान का कब्ज़ा हो जाने का क्या अर्थ है। एक दूसरा महायुद्ध होकर रहेगा।'

मैं कहती थी कि इस बात को न अंग्रेज समझ सकते हैं और न अमरीकन ही समझ सकते हैं।

मेरे लिए निःसन्देह हृदयस्पर्शी घटना मेरे पिता की मृत्यु थी। उनकी कहानी मैंने अन्यत्र लिखी है और इसलिए मैं उसे यहां नहीं दोहराऊंगी। पिछले दो वर्षों में उनका लम्बा तपस्वी शरीर अधिकाधिक दुर्बल हो गया था। उनका स्वभाव और भी अधिक साधु हो गया था और इन परिवर्तनों को देखते हुए मुझे आशंका थी कि उनके जीवन के अधिक वर्ष नहीं रहे। पर उस वर्ष गर्मियों में वे सदा की तरह मेरी बहन के पास कुलिंग गए थे और उन्होंने पुराने मित्रों तथा मेरी बहन के छोटे-से परिवार के साथ सुख से दो महीने बिताए थे। जब वे मेरे पास लौटने की तैयारी कर रहे थे, तब ही उन्हें एकाएक उनकी पुरानी दुश्मन पेचिश ने पकड़ लिया। वे बड़ी जल्दी कमज़ोर हो गए और कुछ ही दिनों में चल बसे। मैं उनकी अन्तिम क्रिया में न जा सकी क्योंकि नदी बड़ी भयंकर चाल से बढ़ रही थी और सब जहाज़ लेट थे। अपने पिता की मृत्यु के साथ मेरे बचपन के जीवन का अन्तिम अवशेष भी समाप्त हो गया और उसके बाद से मैं संघर्ष और व्यामोह की नई दुनिया

में रहने लगी। उनका यह अटल विश्वास, कि सब चीज़ें मिलकर अच्छाई के लिए कार्य कर रही हैं, मेरे घर से निकल गया।

एक बार स्वीडन में एक सभा में मुझको पर हेलस्ट्रौम के मुख से अपने पिता और माता के जीवन-चरित्रों का उल्लेख सुनकर शान्ति मिली थी। असल में मैंने अपने पिता की कहानी उनकी मृत्यु के वर्षों बाद लिखी थी और वह 'फाइटिंग एंजल, पोर्ट्रेट आफ ए सोल' में लिखी है। वह पुस्तक मैंने इस कारण लिखी क्योंकि मेरे कुछ अमरीकन पाठक 'दि एग्ज़ाइल' में लिखी मेरी मां की कहानी से इतने भ्रम में पड़े—क्योंकि उस समय तक वह पाण्डुलिपि प्रकाशित हो चुकी थी जो मैंने अपने बच्चों के लिए लिखी थी—कि वे यह समझने लगे कि मुझे अपने पिता से प्यार न था। इसके विपरीत, मैंने उनसे उत्साह और आदर से प्यार करना तब सीखा जब मैं इतनी बड़ी हो गई कि उन्हें समझ सकूं और उनका महत्त्व आंक सकूं। उनकी आत्मा की शायद सर्वोत्तम अभिव्यक्ति उन दो उद्धरणों में हो सकती है जो मैंने उनके बारे में अपनी पुस्तक के आरम्भ में रखे थे :

ऐंजल (फरिश्ता)

> उन आत्मिक सत्ताओं के एक गण का व्यक्ति, जो ईश्वर के सेवक और सन्देश-हर हैं और जिनके बारे में आम तौर से यह कहा जाता है कि उन्हें ईश्वर ने विश्व के मामलों का, और विशेष रूप से मनुष्य के मामलों का व्यवस्था करने के लिए नियुक्त किया है। समान्यतः वे शरीरहीन बुद्धियां माने जाते हैं।
>
> —सेंचुअरी शब्दकोष

> जो अपने फरिश्तों को आत्मा बनाता है और अपने धर्मसेवकों को अग्नि की ज्वाला।
>
> —हिब्रुओं को पत्र।

और १९३१ की वह दानवी बाढ़—पीली जलराशि को शहर से सात मील दूर वाले बांध की दीवारों पर चढ़ते हुए और फिर सड़कों पर रेंगते और सरकते हुए, नगर की दीवार के बाहर के उपजाऊ खेतों में फैलते हुए देखना कितना अजीब दृश्य था! पर्वत को जाने वाली सड़क खेतों से इतनी ऊंचाई पर बनाई गई थी कि

पानी उसपर नहीं आता था और मैं उस भूदृश्य को देखने के लिए, जो एक कीचड़-भरा समुद्र हो गया था, प्रायः घोड़े पर चढ़कर गुलाबी पर्वत की ओर निकल जाती थी। हमारे अपने लोग अब शरणार्थी थे। यह एक अजीब अनुभव था और हमें स्थानीय सहायता-कार्य में लगना पड़ा जो भारी काम था, और अन्त में पानी फिर पीछे हट गया। स्थल वाले लोग नाव वाले बन गए और उन किसानों ने जो सदा धरती से जीविका प्राप्त करते रहे थे, अब अपने परिवारों को नावों पर रखा और मछली और केकड़ों पर जीवन बिताया, और यह सब बड़ी शान्ति और खुशमिज़ाजी मे, उस सर्वनाश के लिए किसीको भी दोषी न ठहराते हुए। सच है कि मैंने कुछ लोगों को यह बड़बड़ाते सुना कि यदि चियांग काई-शेक अपने पिछले जन्म में नदी-देवता न होता तो इतनी बड़ी बाढ़ नहीं आ सकती थी। पर हमारे राष्ट्रपति ने इस समय तक ऐसी साख जमा ली थी कि बहुत कम लोगों को अब खुलेआम शिकायत करने की हिम्मत होती थी, और जो कुछ असंतोष था भी, वह सड़कों पर गाई जाने वाली गीत-कथाओं और तुरन्त बनाए गीतों के रूप में, जो अन्धे गाने वाले अपने इकतारे पर गाते फिरते थे, या ऐसे मजाकों के रूप में होता था जो कान पर हाथ रखकर मुंह से खुसर-पुसर में कहे जाते थे। प्रसंगतः, अन्धे आदमी से हर कोई डरता था क्योंकि यह समझा जाता था कि अपनी अन्धी आंखों के बदले में उन्हें अज्ञात को जानने की दैवी शक्ति प्राप्त हो जाती है और कोई भी किसी अन्धे को बुरा-भला कहने की हिम्मत नहीं करता था। यह भी बता देना ठीक होगा कि कभी-कभी कोई अन्धा आदमी ऐसी ख्याति का अधिक से अधिक लाभ उठाता और प्रायः सचमुच बड़ा शरारती जीव होता था।

उस बाढ़ की दुष्टता और उससे हानि के बावजूद मुझे उसका एक स्वच्छन्द सौन्दर्य बड़ा पसन्द आया और आकाश के रंग उसपर प्रतिफलित होते थे। और गुलाबी पर्वत की चोटी पर बैठने से (जहां मैं कभी-कभी बैठा करती थी) और उस दृश्य का सर्वेक्षण करने से सचमुच मन बड़ी ऊंचाई तक उठ जाता था। दाईं तरफ बृहत्काय और भव्य नगर की दीवार पानी में प्रतिबिम्बित होती थी। कमल-सरोवर, जिसमें हम अपनी गर्मियों की शाम प्रायः किसी नौका-विहार में बिताते थे, इस नये सागर की एक भुजा मात्र बन गया था, और जब सुदूर पहाड़ियों के पीछे सूर्य छिपता था, तब सारा समुद्र प्रकाशित हो जाता था। इसके गंदलेपन का ध्यान न रहता था। वह गुलाबी और सुनहरा हो जाता था। जब मैं पहाड़ से नीचे उतरती.

तब मुझे नाव से वहां जाना पड़ता था जहां मेरा घोड़ा रहने के लिए ऊंचाई पर बने हुए किसी अकेले फार्महाउस के पास पेड़ से बंधा प्रतीक्षा करता होता था और नाविक ऐसा मल्लाह होता जो सूखे समय में भी नगर के बाहर वाली नहर पर रहता था। सामान्य वर्षों में वह नाव कोयले का बजड़ा होती थी और यद्यपि अब मुसाफिर ढोने के काम में यह अधिक फायदेमन्द थी पर थी पहले की तरह ही काली और मैली। और ऐसा ही नाविक था। रास्ते में उसे प्यास लगी और उसने अपना मिट्टी का कटोरा पानी में डुबाया और बाढ़ का पानी, जैसा था उसे वैसा ही पी लिया, जो मरे हुए प्राणियों से और देहात के तमाम गन्द-कबाड़ से गंदा हो रहा था।

'क्या तुम्हें यह डर नहीं लगता कि तुम बीमार हो जाओगे ? मैंने पूछा।

वह खुशमिज़ाज था और खुलकर हंसा। 'यदि तुम इसे पियो तो तुम बीमार हो जाओगी,' उसने ऊंची प्रसन्न आवाज़ में मुझे विश्वास दिलाया, 'पर मेरे लिए यह निरापद है। नदी के देवता जानते हैं कि मैं अपने जीवन के लिए उनपर भरोसा करता हूं और वे मुझे अपना पानी पीने के कारण नहीं मरने देंगे।'

मैं कुछ न बोली और मुस्कराई और मैंने उसे यह समझने दिया कि मैं प्रभावित हुई क्योंकि मैं बहुत पहले यह सीख चुकी थी कि उपदेश कितना व्यर्थ होता है, और कौन जाने कि कीटाणुओं के संचय ने उसको क्या लाभ पहुंचाया था। हमें बताया जाता है कि मनुष्य-शरीर के रणक्षेत्र में कीटाणु एक-दूसरे से लड़ते हैं और उसका परिणाम होता है रोग से उन्मुक्ति--बशर्ते कि शरीर पहले ही नष्ट न हो जाए।

और कमल-सरोवर की चर्चा के प्रसंग में यह भी बता दूं कि वहीं और उस बाढ़ के वर्ष ही चार्ल्स और एन लिंडबर्ग सहायता-कार्य में मदद देने अपने विमान में अमरीका से चलकर आए थे। वह क्या घटना थी और किस तरह लोग उस बहादुर तरुण दम्पति को देखने के लिए, जो इतनी दूर आए थे, सड़कों और गलियों में जमा हो गए थे! अपनी आदत के अनुसार मैं भीड़ के बीच में खड़ी, जो कुछ दीखता था वह देख रही थी और जब वे दोनों अमरीकन चलते हुए गुज़रे—लिंडबर्ग बहुत लम्बा लग रहा था और उसकी पत्नी छोटी तथा कोमल और स्निग्ध लग रही थी—तब मैं चीनियों के चेहरे देख रही थी और उनकी बातें सुन रही थी। पर उस दृश्य का ध्यान आने पर मुझे जिसकी याद आती है वे चीनी नहीं, बल्कि एक छोटा-सा आठ या दस साल का अमरीकन लड़का है जो मेरे पास खड़ा था। उसका चेहरा

उत्साह से उद्दीप्त हो रहा था और उसकी नीली आंखें चमक रही थीं। लिंडबर्ग उसका वीरनायक था जैसा कि कोई भी देख सकता था, और उसकी सारी दुनिया में केवल दो व्यक्ति थे—उसका वीर नायक और वह स्वयं। ठीक पहले से सोचे क्षण में जब लिंडबर्ग उसके एक फुट पास आ गया, वह छोटा-सा लड़का ज़ोर से चिल्लाया, 'हैलो, लिंडी!' लिंडबर्ग ने भावशून्य आंखों से नीचे लड़के के चेहरे को देखा और वह बिना बोले आगे बढ़ गया। मेरा ख्याल है कि वह अपने ही विचारों और प्रेक्षणों में डूबा हुआ था और निःसन्देह लड़के की आवाज़ उसके चेतन मन में नहीं पहुंची, पर किसी बच्चे को यह कैसे पता चल सकता था। जो कुछ मुझे याद है वह है एक विदेशी भूमि में एक अमरीकन बच्चे का मुरझाया चेहरा जिसके अमरीकन देवता ने उसकी बात का उत्तर नहीं दिया था। आह, ठीक है, मेरा ख्याल है कि हम सब कभी न कभी भोले लोगों को ऐसी चोट पहुंचाने के अपराधी हैं।

लिंडबर्ग दम्पति ने असल में हम में से उन लोगों की बड़ी सेवा की जो बाढ़-सहायता-कार्य में लगे थे। उन्होंने अपना विमान सारे क्षेत्र के ऊपर उड़ाया और घिरे हुए गांवों का पता लगाया और इस प्रकार बहुत-से लोगों की प्राण-रक्षा की। और फिर उनके अपने जीवन नष्ट होते-होते बचे क्योंकि जब वे चले, तब बाढ़ से उमड़ी हुई यांगत्से नदी से चले और उनका विमान करीब-करीब उलटा हो गया, या हमने ऐसा सुना। हमारे दिल की धड़कन बढ़ गई क्योंकि उस नदी में गिरकर जीवित बचने वाले मनुष्य थोड़े थे।

पर लिंडबर्ग दम्पति के बारे में मेरी अन्य स्मृतियां एक भोज से सम्बन्धित हैं जो हमारे अमरीकन वाणिज्य-दूत ने उनके पहुंचने पर शाम को उन्हें दिया था और जिसमें मुझे उनसे मिलने के लिए निमन्त्रित किया था। लिंडबर्ग बेचैन और तल्लीन था। उसका मन उस कार्य पर एकाग्र था जो करने के लिए वह आया था और शाम का समय अधिकतर उसने यांगत्से नदी के प्रवाह-मार्ग के नक्शे का गहरा अध्ययन करने में लगाया। परन्तु श्रीमती लिंडबर्ग बड़ी मोहक थी और कमरे में चल रहे विचार की प्रत्येक धारा और प्रत्येक बातचीत की प्रवृत्ति बड़ी सचेत और सजग थी और मैं उसके जल्दी-जल्दी बदलते चेहरे को ध्यान से देखती बैठी थी, जो इतना परिवर्तित होने वाला होते हुए भी इतना नियन्त्रित था। आज भी जब मैं उसकी कोई दुर्लभ पुस्तक पढ़ती हूं, तब उस रात का चेहरा देख सकती हूं और उसकी आवाज़ सुनती हूं, और यद्यपि यह उस समय से बहुत पहले की बात है जब

उसके नष्ट बच्चे की महान् दु:खदायी घटना उसके सिर पर पड़ी, फिर भी न मालूम कैसे उसके चेहरे और चाल-ढाल में पहले ही दु:खद घटना दिखाई देती थी।

उस वर्ष बाढ़ के दिनों में मुझे एक और अमरीकन विल रोजर्स का सन्देशा मिला। उसने शांगहाई से तार दिया कि वह आकर मुझसे मिलना चाहता है और यद्यपि अमरीकन रंगमंच पर उसके महत्त्व की उस समय मुझे कुछ भी धारणा न थी फिर भी में उसके बारे में इतना काफी जानती थी कि मैंने उत्सुकता से उसके आने की प्रतीक्षा की। अफसोस कि बाढ़ के कारण उसके आने में रुकावट पड़ गई और इसलिए उस समय मेरी उससे मुलाकात नहीं हुई, पर दो वर्ष बाद, जब मैं न्यूयार्क में थी, वह और श्रीमती रोजर्स पुराने 'मरे हिल' होटल में मेरे साथ चाय पीने आए और बहुत देर रहे और उनके साथ अकेले बैठने में मुझे बहुत आनन्द आया, क्योंकि तब तक में जान चुकी थी कि वह क्या है और उसने 'दि गुड अर्थ' की प्रशंसा करके और बाद में मेरे बारे में लिखे और कहे शब्दों द्वारा मेरे लिए कितना अधिक किया था—उन शब्दों को सोचकर आज भी मैं शर्म से लाल हो जाती हूं क्योंकि वे बहुत हो कृपापूर्ण शब्द थे। विल रोजर्स में कोई ऐसी सत्यनिष्ठा और घरेलू सादगी, पर साथ ही सतर्कता और तीव्र व्यवहार-बुद्धि थी कि आदमी न केवल सत्यनिष्ठा के लिए बल्कि सामान्य समझदारी के लिए ही किसी भीतरी प्रेरणा से उसपर विश्वास करने लगता था। और उसने मुझे इतना हंसाया कि मैं अब भी उसे सबसे अधिक धन्यवाद हंसी के लिए देती हूं। उन दिनों हंस सकना मेरे लिए बड़ा विस्मयकारक था और मैं इसे फिर सीख रही थी और विल रोजर्स में मुझे हंसाने की प्रतिभा थी क्योंकि जो कुछ उसने कहा वह सचमुच हंसाने वाला था और उसमें वक्रता या व्यंग्य नहीं था। भगवान् करे उसकी स्मृति सदा बनी रहे।

और मुझे उस बाढ़ के साल एक और अमरीकन के आने की भी याद है। पर यह कुछ पहले की बात है, जब बाढ़ अपने उच्चतम रूप तक नहीं पहुंची और हमारे नगर तथा तट के बीच यातायात अभी खुला था। वह अमरीकन लेविस गेनेट था और मुझे याद है कि मैंने सोचा था कि मैंने पहली बार ही एक सजीव समालोचक देखा था। वह कृपापूर्ण, खुशमिज़ाज, बिल्कुल अमरीकन दिखाई देता था और मुझे सदा यह प्रसन्नता बनी रही कि वह मेरे पिता से मिला क्योंकि बाद में जब उसने न्यूयार्क के 'हेरल्ड ट्रिब्यून' में फाईटिंग ऐन्जल का पर्यालोचन किया, तब मेरे पिता का उल्लेख किया और वह उनके बारे में 'वह लिंकन-सदृश आकृति' लिख सका।

सचमुच वे ऐसे ही थे।

यहां मुझे यह बता देना चाहिए कि उसी १६३१ के वर्ष के बसंत में दो मार्च को, मेरे पिता के मरने और बाढ़ आने से पहले ही 'दि गुड अर्थ' प्रकाशित हो गया था। मुझे याद है कि जब इसकी पहली प्रति मेरे पास पहुंची, तब मुझे इसके बारे में संकोच अनुभव हुआ क्योंकि किसीको भी इसके होने के बारे में पता न था, या पता था पर सब बात भुलाई जा चुकी थी और मैं अपने पिता के पास गई और उन्हें पुस्तक दिखाई, पर सच्ची बात यह है कि मुझे उनसे कोई आशा न थी क्योंकि वे उपन्यास नहीं पढ़ा करते थे। उन्होंने इसके बारे में बड़ा स्नेह दिखाया, पुस्तक प्रकाशित होने पर मुझे बधाई दी और पूछा कि इसके लिखने के लिए मेरे पास समय कब निकल आया और फिर कुछ दिन बाद उन्होंने धीरे से यह कहते हुए मुझे वह लौटा दी कि उन्होंने इसपर सरसरी नजर डाली है, पर इसे पढ़ने का सामर्थ्य नहीं अनुभव हुआ।

'मेरे ख्याल से मेरे लिए इसे पढ़ना सम्भव नहीं,' उन्होंने कहा। यह तो मेरी उस दूर की दुनिया में पुस्तक के बारे में इतनी बात हुई।

नहीं, थोड़ी-सी बात और है। मुझे याद है, यद्यपि इन अनेक वर्षों में मैं इसे भूल गई हूं, कि पुस्तक के बारे में अमरीका से पहला पत्र मुझे एक धर्म-परायण ईसाई का मिला, जो एक मिशन बोर्ड का पदाधिकारी था, जिसमें उसने कई पृष्ठों में इस बात पर मेरी बड़ी भर्त्स्ना की थी कि मानव-जीवन के बारे में मैंने इतना खुलकर लिखा था। उसने एक और इससे भी गन्दा शब्द प्रयुक्त किया था, पर इस बात को यहीं छोड़िए। मेरा पालन-पोषण चीनी जीवन की प्राकृतिकता में हुआ होने के कारण मुझे बहुत दिन तक उसका असली अर्थ पता नहीं चला, पर आज मुझे पता है। मैं जिन संसारों में रही और बड़ी हुई, उन्होंने मुझे ऐसा व्यक्ति बना दिया है जिसे विवादास्पद व्यक्तित्व ही कहना होगा, जैसा कि मुझसे बहुत बार कहा गया है, और इसका कारण यह है कि अनिवार्यतः, अपने अनुभव और प्रकृति के कारण, मैं हर मनुष्य का दूसरा पहलू देखती हूं। यदि वह अच्छा है तो उसका एक और दूसरा पहलू है। यदि वह बुरा है तो भी उसका दूसरा पहलू है, और यदि इन दोनों की तर्कसंगतता को समझने की योग्यता उन लोगों को विस्मय में डालने वाली मालूम होती है जो एक आयाम या पहलू से ही सन्तुष्ट हो जाते हैं, तो दूसरे लोगों के लिए और मेरे लिए भी यह दिलचस्पी और मनोविनोद का अक्षय स्रोत और

प्रेम तथा जीवन के लिए अवसर है। हमारा कोई वैरी नहीं है, हम लोगों के लिए वसुधा ही कुटुम्ब है क्योंकि हम किसीसे घृणा नहीं करते और जहां घृणा नहीं, वहां प्रेम से दूर रहना सम्भव नहीं।

बाढ़ से लोगों का नई सरकार के प्रति अधिक झुकाव होने में कोई मदद नहीं मिली। वे इतने तर्कहीन नहीं थे कि ईश्वरीय प्रकोप का दोष चियांग काई-शेक पर डालें, पर फिर भी, जैसा कि अन्य राष्ट्रों के लोग करते हैं, वे ज़माने की आम मुसीबतों पर रोष अनुभव करते थे और चिड़चिड़े होकर और धीरज खोकर गुन-गुनाते थे कि जीवन को और अधिक सह्य बनाने के लिए कुछ किया जा सकता है और किया जाना चाहिए। बाढ़ की स्थानीय विपत्ति के अलावा जापानी सैनि-कतावादियों के, जिन्होंने अब मंचूरिया में मज़बूत पांव जमा लिए थे, लालच की चुभन भी महसूस हो रही थी और जब वे अगली बार महत्त्वपूर्ण जेहोल प्रान्त में घुसे—यह आक्रमण १६३१ से १६३३ के वर्षों में हो रहे थे—तब भी राष्ट्रवादी सरकार ने कुछ नहीं किया। चीनी विदेश-मन्त्रालय केवल पश्चिमी देशों और पुरानी असमान सन्धियों और कन्सेशनों के बारे में शिकायत करने में लगा रहा और इन शिकायतों से लोगों में क्रोध और बेचैनी कायम रही क्योंकि उन्होंने देखा कि हम दुनिया में मित्रहीन हैं। अन्त में जापान ने उत्तरी चीन पर लगभग आधि-पत्य ही कर लिया और अपने आक्रमणों के लिए शांगहाई को अपना अड्डा बनाया जहां शहर के बहुत-से भाग को जला दिया गया और बरबाद कर दिया गया। किसीको पता न था कि वे यांगत्से तक आने की योजना बना रहे हैं या नहीं और यदि बना रहे हैं तो कब तक।

अब अमरीकन वाणिज्य-दूतों ने नानकिंग में रहने वाले सब अमरीकी परि-वारों को अपनी स्त्रियां और बच्चे बाहर भेज देने की सलाह दी। और मैं निरन्तर बढ़ती विदेशी-विरोधी भावना देखकर अपनी छोटी लड़की को लेकर पीकिंग चली गई। मैं वहां कुछ समय ठहरने की बहुत दिनों से इच्छुक थी और शुई हु-चुआन के प्राचीन संस्करणों में इस आशा से कुछ अनुसन्धान भी करना चाहती थी कि उनमें वे पुराने चित्र मिल जाएंगे जिनके बारे में मैंने सुन रखा था। आज इतने समय बाद वे महीने एक मामूली घटना—एक ऐसा आनन्दमय विष्कम्भक—मालूम होते हैं जो चीनी जीवन के विपुल विस्तार में मुझे हमेशा किसी न किसी तरह मिल जाने

सम्भव मालूम होते थे, और फिलहाल इतिहास और सैर-सपाटे में तथा अनेक राष्ट्रों के नर-नारियों से मिलने में मग्न मैं पूर्णतया सुखी थी। पीकिंग के बारे में इतना अधिक लिखा गया है और उसका इतना अधिक वर्णन किया गया है कि जो चीज़ें और जगह मिलती हैं उन्हें यहां दोहराना बेकार है परन्तु मेरे लिए यह अनुभव ताज़गी देने वाला था क्योंकि इसने मेरा मन पुनः चीन के अतीत की गहरी जड़ों पर केन्द्रित कर दिया और तेज़ी से बदलते वर्तमान काल का परिदृश्य मुझे प्रदान किया। पीकिंग में ही मुझे यह निश्चय हुआ कि देर-सबेर मुझे चीन से चले जाना होगा और स्थायी रूप से अपने ही देश लौट जाना होगा क्योंकि भविष्य में ऐसे युद्ध और विस्फोट होने वाले हैं कि किसी गोरे को नहीं रहने दिया जाएगा। यह साफ होता जा रहा था कि चियांग काई-शेक की 'बाहरी हमले से पहले भीतरी एकीकरण' की नीति विफल होकर रहेगी क्योंकि उधर जापान तो जर्मनी में शिक्षा पाए अफसरों के नेतृत्व में अपनी सेना के साथ पूरी ताकत से आगे बढ़ता जा रहा था और इधर चियांग काई-शेक अभी कम्यूनिस्टों से लड़ रहा था जो सामरिक दृष्टि से उत्तर-पश्चिम में हट आए थे जहां वह उनके पास नहीं पहुंच सकता था। उसका यह विश्वास निःसन्देह था कि कम्यूनिज़्म चीनी जीवन-प्रणाली का बुनियादी दुश्मन है, पर जो बात वह नहीं समझता था, वह यह थी कि जापानी आधिपत्य की भीषण विपुलता को उपेक्षित करके वह अपने देशवासियों से दूर हो रहा था जो अभी कम्यूनिज़्म के खतरों को नहीं आंक सकते थे, विशेष रूप से उस अवस्था में, जबकि यहां कम्यूनिस्ट स्वयं चीनी थे, पर जो अपनी कमज़ोरी को और जापानी ताकत के खतरे को अच्छी तरह देख सकते थे। इस प्रकार चियांग अपने लोगों का समर्थन और भी अधिक खो रहा था और वर्षों बाद, जब उसे कम्यूनिस्टों के मुकाबले में जनता को अपने पीछे इकट्ठा करने की और भी ज़रूरत थी, तब वह पहले ही उसके हाथ से निकल चुकी थी।

कम्यूनिस्टों ने भी, जिनका वह सब कुछ दांव पर लगाकर पीछा कर रहा था, रूसी सलाह पर चलकर मूर्खतापूर्ण कार्य किए। रूसी कम्यूनिस्टों ने चीन छोड़ने से पहले चीनी कम्यूनिस्टों को, और विशेष रूप से उनके सैनिक नेता चू तेह को, नगरों पर कब्ज़ा करने की सलाह दी थी, जहां उनका कहना था कि फैक्टरी मज़-दूर या 'असली सर्वहारा' उनकी मदद के लिए इकट्ठा हो जाएगा। पर बहुत थोड़े चीनी नगरों में फैक्टरियां थीं। रूढ़ कम्यूनिस्ट अर्थ में वहां सर्वहारा-वर्ग न था,

और इसके अतिरिक्त चीनी लोगों का, जो अब भी अपने बहादुर वृद्ध युद्ध-नेताओं के शासन में थे, चू तेह के, जिसे वे नहीं जानते थे, आधिपत्य में आने का इरादा नहीं था। जब उसने चांगशा और कैन्टन और फिर एमोय पर हमला किया, तब जनता ने अपनी स्थानीय सेनाओं की सहायता की और कम्यूनिस्टों की बहुत बड़ी संख्या नष्ट कर दी जो अन्त में पूरी तरह पराजित होकर दुर्गभ पर्वतों में छिपने को मजबूर हो गई। वहां एक प्रसिद्ध मिलन-स्थान चिंग-कांग-शांग में अपनी हार से बहुत खिन्न सैनिक नेता चू तेह माओ त्से-तुंग से, जो असैनिक था और एक सम्पन्न किसान का पुत्र था, मिला और उन्होंने मिलकर चीनी कम्यूनिस्ट पार्टी का पुनर्गठन किया। इस बार यह कार्य सोवियत रूस की मदद और सलाह के विना किया गया जो चियांग काई-शेक के प्रत्याख्यान के बाद चू की पराजयों से चकित और परेशान होकर असल में अब तक रंगमंच से हट चुका था। इसके बाद माओ और चू के अधीन पुनर्गठित चीनी कम्यूनिस्ट पार्टी कृषक-वर्ग में अपना पांव जमाने के लिए बढ़ी क्योंकि, जैसा कि चू ने कहा था, 'जनता समुद्र है हम मछली। और हम तब तक जीवित रह सकते हैं, जब तक उस समुद्र में तैरते रह सकें।'

यह सब प्रक्रिया सोवियत रूस वालों द्वारा निर्दिष्ट रूढ़ कम्यूनिज़्म के विरुद्ध थी और आज यह याद करके मनोरंजन अनुभव होता है कि उन्होंने बहुत समय तक माओ त्से-तुंग का ज़ोर-शोर से प्रत्याख्यान किया। पर इस प्रत्याख्यान से चीनी कम्यूनिस्टों को लाभ ही हुआ क्योंकि इस प्रकार उन्हें अपने ही लोगों के ध्यान और अनुभव का सहारा रह गया और उन्होंने किसानों का मन जीतने के लिए यथाशक्ति सब कुछ करने का पक्का निश्चय किया। इसमें उन्होंने उन लोगों को अपना दुश्मन घोषित करके सफलता पाई जिन्हें किसान परम्परा से अपना दुश्मन समझते थे। ये थे ज़मींदार, टेक्स जमा करने वाले, महाजन और बीच के लोग। इस प्रकार की रीति से किसानों को जीता गया और उन्होंने कम्यूनिस्टों की हर तरह से भरसक सहायता की। वे उन्हें राष्ट्रवादी सैनिकों के आने की खबर दे देते थे और इस प्रकार चियांग काई-शेक के उद्देश्य आम तौर से विफल कर देते थे, पर असल में यह न जानते थे कि उन्होंने क्या किया है। हर जगह का किसान सीधा और साफ दिल वाला आदमी होता है और वह उनकी मदद करता है जो उसे मदद देते हैं। यह सिद्धान्त-सूत्र राष्ट्रवादी सरकार का कार्य-संचालन करने वाले तरुण बुद्धिजीवी लोग कभी नहीं समझ सके। इस समय तक हर आदमी (और मैं भी) यह साफ देख

रहा था कि इस समय न राष्ट्रवादी जीत सकते हैं, न कम्यूनिज़्म; क्योंकि दोनों में से किसीको भी किसान और पंडित दोनों का प्राचीन और अजेय संयुक्त समर्थन प्राप्त नहीं था और इसलिए लम्बा संघर्ष चलने की सम्भावना थी, विशेष रूप से इस कारण कि उसी समय, जब चीन इस प्रकार विभाजित था, जापान उसे जीतने पर तुला था।

अन्त में कम्यूनिस्ट जीतेंगे या राष्ट्रवादी—मेरे विचार से, इस प्रश्न का उत्तर इस बात पर निर्भर था कि इनमें से कौन पहले जापान के खतरे को पहचानता है। दुर्भाग्य से कम्यूनिस्टों ने इसे पहले पहचाना और उन्होंने चियांग को जापान से लड़ने के लिए करीब-करीब मजबूर कर दिया यद्यपि जापान के विरुद्ध उनकी अपनी युद्ध-घोषणा उपहासास्पद रूप से दुर्बल और स्पष्टत: प्रोपेगेण्डा-मात्र थी। फिर भी चियांग को जापान का खतरा महसूस करने के लिए मजबूर करने का उन्हें एक बड़ा भारी लाभ हुआ जो दूसरे महायुद्ध के बाद राष्ट्रवादियों के साथ, जिनका नेता अब भी चियांग काई-शेक था, पुन: संघर्ष शुरू होने पर उनके पास कायम रहा। इस लाभ के मुकाबले में पश्चिम का कोई भी प्रभाव खड़ा न हो सका या खड़ा न हो सकता था जब तक कि चियांग काई-शेक अपनी आदतों और अपनी नीतियों में ही पूरी तरह परिवर्तन न कर लेता। नि:सन्देह उससे यह करने के लिए कहना बहुत बड़ी बात थी। वह अपने तरीकों पर चलता हुआ बूढ़ा हो गया था और अब कोई भी उसके मन तक नहीं पहुंच सकता था, न केवल इस कारण कि वह स्थिर था, बल्कि इस कारण भी कि उसमें अपने चारों ओर ऐसे लोग जमा रखने की घातक दुर्बलता थी जो उससे सच्ची बात कहने का हौसला नहीं कर सकते थे। एक चीनी मित्र ने मुझे बताया कि उसने नानकिंग में यह सुना था कि दूसरे महायुद्ध के बाद, जब मुद्रा-प्रसार अपनी बेतुकी और खतरनाक ऊंचाई पर पहुंच गया था, तब भी चियांग काई-शेक को यथार्थ स्थिति का पता न था और जब किसी विदेशी ने उसे अकेले ही सावधानी से मुद्रा के फैलाव के बारे में बताया तब उसने कहा कि मैं स्वयं जाकर देखूंगा और इसपर उसने एक सार्वजनिक रेस्टोरेन्ट में एक साधारण भोजन का आर्डर दिया। उसके चारों ओर रहने वाले लोग डर गए और उन्होंने पहले ही जब आदेश भेज दिया कि कीमतें युद्ध से पहले वाली ही रखी जाएं और रेस्टोरेन्ट-मालिक को अलग से पैसे दे दिए जाएंगे। इसलिए उस महान् पुरुष ने बेफिक्री से युद्ध से पहले की कीमतों पर भोजन किया और उसे यह विश्वास हो

गया कि जो कुछ उस बतलाया था, वह गलत था। यह किस्सा सच्चा हो, या न हो, पर चीनी इसपर विश्वास करते थे और जनता पर यही प्रभाव था। अकेले चियांग को हठपूर्ण अज्ञान का दोष नहीं दिया जा सकता। ऐसे ऊंचे पद वाले किसी व्यक्ति के लिए भी किसी बात के बारे में सचाई जानना असम्भव है क्योंकि उसके चारों तरफ सदा ऐसे लोग होते हैं जिनकी दिलचस्पी सत्य को छिपाने में होती है क्योंकि जब कोई शासन-व्यवस्था गिरती है तब उसके साथ बहुत-से लोग गिरते हैं।

इसलिए अब चीनी कम्यूनिस्टों ने चतुराई से चियांग की भीतरी नीति का पूरा लाभ उठाया, और जैसे उन्होंने ज़मींदारों के प्रति, किसानों की घृणा का लाभ उठाया था वैसे ही अब जापानी आक्रमणकारियों के प्रति चीनी जनता की घृणा का लाभ उठाने का यत्न किया। उन्होंने अब अपना नया नारा यह बनाया कि 'चीनी चीनियों से नहीं लड़ते,' जिसका अर्थ यह था कि वे दोनों के शत्रु से लड़ने के लिए राष्ट्रवादियों के साथ मिल जाने को तैयार थे और यह निश्चय है कि मन ही मन वे जानते थे कि राष्ट्रवादी उनका प्रस्ताव नहीं मानेंगे।

उन दिनों नई सरकार की हालत गिरती देखकर दुःख होता था, पर उसे न देखना असम्भव था क्योंकि इधर राष्ट्र तो फूट और संघर्ष से छिन्न-भिन्न हो रहा था और जनता, जो कुछ हो रहा था उसपर, मूढ़ और क्रुद्ध थी। और उधर बुद्धिजीवी तथा पार्टी के सदस्य अब भी ऐसी कागज़ी बातों पर आपस में लड़ रहे थे जैसे संविधान और नये कानून और यह कि मज़दूरों की यूनियनों को किस रूप में होना चाहिए। ये सब बातें अच्छी विचारणीय बातें थीं, पर तात्कालिक और दुःखद खतरे के सामने होने पर अप्रासंगिक थीं। यह एक तरह से रोम से जलते हुए होने पर सारंगी बजाना था, पर फिर भी हमारे नौजवान नीरो नहीं थे, बल्कि बड़े दिल के सच्चे और सदाशय ज्ञान-दुर्विदग्ध या न जानते हुए जानने का दिखावा करने वाले थे। एक चियांग काई-शेक, जो स्वयं परेशान और विवश था, न केवल अपनी सरकार के अफसरों से बल्कि विद्रोही युद्धनायकों से भी कुछ समझौता करने की कोशिश कर रहा था, जिन्हें वह वास्तव में जीत नहीं सका और इसके लिए उसको सौदेबाज़ी करनी पड़ी। और वे बात के धनी न थे क्योंकि जब उन्होंने उसकी स्थिति कमजोर होती देखी, तब नई मांगें पेश कर दीं। मतभेद ऐसी स्थिति को पहुंच गए थे कि प्रचण्ड और ज़िद्दी आदमी फेंग यू-ह्सियांग ने, जो अब भी युद्धनायकों में सबसे अधिक ध्यान खींचने वाला था, १९३० में सब सौदेबाज़ी छोड़कर पीकिंग में

एक प्रतिद्वन्द्वी सरकार कायम कर दी थी जिससे परेशान राष्ट्रपति की परेशानी और भी बढ़ गई।

तो जब दो साल बाद मैं पीकिंग में थी, तब यह साफ हो गया कि यदि मैं अपना जीवन एक ऐसी उथल-पुथल में नहीं बिताना चाहती जिसे मैं न तो रोक सकती थी और न मदद दे सकती थी, तो मुझे अपना देश, और उसके साथ अपना संसार बदलना ही होगा। मैं इस परिवर्तन से डरती क्योंकि चीन से मुझे गहरा प्यार था और उसके लोग मेरे अपने ही थे। मुझे याद है कि पीकिंग के उन वसंत के दिनों में मैंने कितनी अधिक देर तक विचार किया। उत्तरीय रेगिस्तानों के धूल के अंधड़ नगर पर उड़ते आते थे और तेज हवा ठण्डी और सूखी होती, पर फिर भी मैं शानदार राष्ट्रीय पुस्तकालय में अपना सवेरे का काम करने के बाद तीसरे पहर शहर में चक्कर काटती थी और अपनी पहले की जानकारी को नया करती थी। मुझे चीन से चले जाना चाहिए या नहीं, इसका फैसला करने के लिए यह अच्छी जगह थी क्योंकि चीन का सौन्दर्य इतना अधिक और बिखरा हुआ और कहीं नहीं जितना पीकिंग में। मैं चौड़ी सड़कों की, जो राजोपम लोगों के लिए बनाई गई थीं, और उन महलों तथा मकबरों की, जो शानदार स्मारक बने हुए मौजूद थे, भव्यता अनुभव करती। फिर भी ये स्मारक धीरे-धीरे खराब हो रहे थे और मुझे उस दिन की उदासी याद है जब मैं वही महल देखने गई जिसमें रहना पुरानी सम्राज्ञी को सबसे अधिक अच्छा लगता था। उसपर संतरियों का पहरा था, क्योंकि नई सरकार—हम उसे अब भी इसी नाम से पुकारते थे—अपनी राष्ट्रीय निधियों के बारे में सजग थी, और पुराने ज़माने के बड़े से बड़े शाही भवनों पर सैनिक पहरा था।

उस दिन मैं उस निषिद्ध नगर में देर तक फिरती रही। निकम्मे सैनिक कौतूहल से मेरी तरफ घूरते थे और अन्त में उनमें से एक ने मुझे संकेत से बुलाया और वह मुझे अपने पीछे-पीछे एक महल के कोने के दूसरी तरफ ले गया। मैं यह सोचकर उसके पीछे चली गई कि वह मुझे एक ऐसी चीज़ दिखाना चाहता है जो मैंने अब तक नहीं देखी, पर जब मैं वहां पहुंची जहां वह खड़ा था, तब उसने एक नीची छत के किनारे से पोर्सलेन की एक शानदार टाइल ऊपर हाथ करके खींच ली। यह पुराने शाही पीले रंग की टाइल थी जिसके ऊपर एक अजगर बना था।

'एक चांदी का डालर,' वह चीनी भाषा में बोला।

मैंने अपना सिर हिलाया और यह फैसला करने की कोशिश की कि मैं इसे

फटकारूं या चुप रहूं और अपना रास्ता देखूं। मैं अपने रास्ते चल पड़ी। फटकारने से क्या लाभ था ? वह उस आदर्शवाद को अनुभव नहीं करता था जिसके होने पर वह अपने कर्तव्य का पालन कर सकता था। आदर्शवाद ? यही तो कमज़ोरी थी। नई सरकार ने अपने लोगों के सहारे के लिए कोई आदर्शवाद प्रस्तुत नहीं किया। और हम सबकी तरह चीनी लोग भी केवल रोटी पर नहीं रह सकते। कोरा राष्ट्र-वाद काफी नहीं था। एक ऐसी चीज़ की ज़रूरत थी जिसके बल पर वे जी सकते। सबसे बड़ी बात यह है कि एक ऐसे नेता की ज़रूरत थी जिसकी वे पूजा कर सकें। जनता के फैसले प्रायः क्रूर होते हैं। शायद कोई भी आदमी इतना शक्तिशाली और महान् नहीं हो सकता था कि समय रहते चीन का संगठन करके उसको बचा सके। जो होता सो होता, पर चियांग काई-शेक न तो इतना शक्तिशाली था, न इतना महान्। अब लोगों ने यह बात जान ली थी और लेखकों ने यह बताया कि चीनियों को तानाशाही पर कोई आपत्ति भी न थी, यदि वह इतना शक्ति-शाली हो कि उनका आदर पा सके। यह सच है कि उनकी लोकतन्त्र की धारणा अमरीका वालों की धारणा से बिल्कुल अलग है क्योंकि उनकी एक राष्ट्र की धारणा भिन्न प्रकार की है। चीनी सरकार का प्रधान, चाहे वह सम्राट् हो या राष्ट्रपति, या कम्यूनिस्ट तानाशाह, जनता के पिता की स्थिति में होता है। पिता की तरह वह इनके सम्मान और आज्ञापालन के योग्य, वीर पुरुष, समझदार, दृढ़संकल्प, साथ ही तर्क-संगत, आदेश देने और अपने आदेशों का पालन कराने में समर्थ, पर फिर भी न्यायी और बदमिज़ाजी और वैर-विद्वेष की तुच्छता से मुक्त होना चाहिए। यदि इन सब बातों के साथ उसमें विनोदप्रियता भी हो तो उसका आधिपत्य निरं-कुश हो जाता है, पर सदा जनता की इच्छा से ही होता है। यदि उसमें ये गुण न सिद्ध हों तो लोग उसका साथ छोड़ देते हैं और दूसरे की तलाश करते हैं। वह अपने लोगों के पिता के रूप में अच्छा अन्नदाता भी होना चाहिए क्योंकि चीनी कहावत में कहा गया है, 'जब चावल की कीमत आम आदमी के सामर्थ्य के बाहर होती है, तब ईश्वर शासकों का परिवर्तन कर देता है।'

संक्षेप में, चीनी लोग स्वेच्छा से ग्रहण की गई अधीनता की ज़रा भी परवाह नहीं करते, बशर्ते कि उनका शासक ऐसा हो जिसकी शक्तियों का वे सम्मान और प्रशंसा करते हों, पर इससे कम समर्थ आदमी के पीछे वे नहीं चलेंगे और विशेष रूप से ऐसे आदमी के पीछे जो अपने दल में भी व्यवस्था नहीं रख सकता। अफसोस

है कि बीस वर्ष पहले चीनी जनता ने चियांग काई-शेक को ठुकराना शुरू किया और यह न तो एकाएक शुरू किया और न धूम-धड़ाके से, पर फिर भी बिल्कुल पूरी तरह ठुकराना शुरू किया। इस तथ्य को पहचानने की अक्षमता ही बाद की अमरीकन नीति की पहली विफलता थी। यदि हमने समय पर यह बात पहचान ली होती तो हम एक ऐसे कम्यूनिस्ट नेता का अभ्युदय शायद रोक सके होते जो इस कारण सत्ता पर अधिकार कर सका कि वह अपेक्षाकृत अनजाना या कम से कम अनजांचा था। सारा प्रकरण चीनी इतिहास की परम्परा से मेल खाता था। जर्जर होता राजवंश शासकों की अक्षमता के कारण गिर जाता था और नये शासक खड़े हो जाते थे जिन्हें तब तक के लिए जनता की निष्ठा मिल जाती थी जब तक यह सिद्ध न हो जाए कि वे भी अक्षम हैं। जब यह दिखाई देने लगा कि चियांग जनता को अपने काबू में नहीं रख सकता, तब भ्रष्टाचार और विघटन आरम्भ हो गया। यह भ्रष्टाचार जनता की विमुखता का कारण न था और न राष्ट्रवादियों के पतन का कारण था, यद्यपि इसे प्रायः इनका कारण बताया गया है। सचाई यह है कि पतन की ओर जाती हुई हर सरकार में भ्रष्टाचार आ जाता है और यह तथ्य ही इसके निकट आते अन्त का प्रमाण होता है। कोई आदर्शवाद बाकी नहीं बचा था। जनता के लिए जीवन में सुधार करने की कोई आशा नहीं रही थी और इस निराशा ने चीन कम्यूनिस्टों को सौंप दिया। अन्य सब कारण गौण और सहवर्ती थे।

यह बात मुझे पीकिंग में उस वसंत ऋतु में स्पष्ट हो गई जब जापानी लोग उत्तरीय और मध्य चीन के प्रत्येक मुख्य बन्दरगाह के लिए खतरा पैदा कर रहे थे, और फिर भी चीन से मैंने इतना प्यार कभी नहीं किया था। मैं नये आनन्द से अपने मित्रों में घूमी और उनके घर गई जिनमें से कुछ को मैं पहले न जानती थी, पर कुछ को सदा से जानती थी। इस प्रकार मुझे ओवन लैटिमोर के घर एक उल्लेखनीय भोज की याद है। लैटिमोर अभी मंगोलिया और मंचूरिया की लम्बी यात्रा से आया था और मैं उससे जापान की विजयों के बारे में जानने के लिए उत्सुक थी। वह और उसकी पत्नी तथा छोटा पुत्र एक सुन्दर चीनी मकान में रह रहे थे, जहां उस दिन हमने उसके मंगोल मित्रों के साथ मंगोल मांस का भोजन किया और फर्श पर बैठकर एक नीची मेज़ पर भोजन खाया। मंगोल और हमारे मेज़बान के शरीर से भी बकरी के मांस और दही की तीव्र गन्ध आ रही थी और मुझे याद है कि यद्यपि दीर्घकाय मंगोल पुरुषों की मैंने बड़ी सराहना की और उनकी लोट-पोट

करने वाली उन्मुक्त हंसी और हाज़िरजवाबी का बड़ा आनन्द लिया, पर वह गन्ध मुझे अप्रिय लगी। ओवन लैटिमोर उनकी भाषा धाराप्रवाह बोलता था, पर वह उतनी ही आसानी से अनुवाद भी कर देता था और अंग्रेज़ी के द्वारा में भी बातचीत में हिस्सा ले सकी क्योंकि मंगोलों को चीनी नहीं आती थी। मंगोलों में मेरी दिलचस्पी कायम है क्योंकि वे एक बहादुर और सुन्दर जाति हैं और दिलोवा हूतूखुतु,या जीवित बुद्ध, के साथ अपनी मित्रता के द्वारा मैं उनकी प्रकृति के बारे में कुछ अधिक समझ सकी हूं—दिलोवा हूतूखुतू का तिब्बती धर्म में ऊंचा पद है और उसे ओवन लैटिमोर ने कुछ वर्ष पहले आक्रमणकारी कम्यूनिस्टों के हाथों उसके ही देश में मारे जाने से बचाया था। दिलोवा ने, जो अपने ही मन वाला और अजेय भावना का आदमी था, कम्यूनिस्टों के आने पर उनका आदेश मानने से इन्कार कर दिया था, और उसे जेल में डाल दिया गया। उसके देशवासियों की निष्ठा और भक्ति के कारण कम्यूनिस्ट उसे रिहा करने को मजबूर हुए, पर उन्होंने उसे यह धमकी दी कि यदि वह उनका विरोध करेगा तो वे उसे मार देंगे। ओवन लैटिमोर ने उसे अमरीका पहुंचने में सहायता दी और उसके साथ दो तरुण मंगोल राजकुमारों और उनके परिवारों को मिलाया जिन्हें कम्यूनिस्टों ने प्रतिक्रियावादी कहकर खतरा पैदा कर रखा था। यहां वे तीनों मंगोल यदि सब सुख से नहीं तो भी सुरक्षित तो रहे हैं क्योंकि अनेक बार उनके मूलवंश का ज्ञान न रखने वाले अमरीकनों के कुसंस्कारों से उन्हें परेशानी हुई है, पर वे अपनी विशिष्ट उदारता से इसे नज़रन्दाज़ कर देते हैं और आतिथ्य के लिए कृतज्ञता ही अनुभव करते हैं।

और पीकिंग में मेरा एक सबसे अधिक सुख का दिन महान् चीनी अभिनेता, और स्त्री का पार्ट करने वाले मेई लान-फांग के साथ उसके सुन्दर मकान में बीता। उसने बहुत-से मामलों पर बातचीत की और मुझे गाना और बांसुरी सुनाई और मुझे अपना संगीत के वाद्यों का अमूल्य संग्रह दिखाया, और रसोइये ने, जो पीकिंग के सबसे प्रसिद्ध रसोइयों में था, हमारे लिए स्वादिष्ट मंगोल मिठाइयां तथा उत्तम चीनी पेस्ट्रियां तैयार कीं, और मेई लान-फांग ने भारी मन से उनका आनन्द लिया क्योंकि वह पहले ही थुल-थुल हो रहा था, और छरहरी नायिकाएं, जिनके रूप वह बनाता था, प्राचीन चीनी नाट्य के लिए अनिवार्य थीं। मैंने सुना कि जापान से युद्ध के दिनों में वह शांगहाई चला गया और उसने गाने और अभिनय करने से इन्कार कर दिया और दाढ़ी तथा मूंछ भी रख ली ताकि सुन्दर स्त्री का अभिनय

करना असम्भव हो जाए और उसे विजेताओं के हित-साधन के लिए अभिनय करने को मजबूर न होना पड़े। जब युद्ध समाप्त हो गया, तब वह अपने बड़े मकान में लौट आया और उसने अपनी दाढ़ी-मूंछ साफ करा दी और वह फिर चिर-तरुण ढंग से दर्शकों को आनन्दित करने लगा। मुझे बताया गया कि अब कम्यूनिस्ट शासन में वह अभिनेताओं का प्रधान है और मैं सोचा करती हूं कि दूसरी चोटी के अभिनेताओं और साहित्यकारों की तरह क्या उसे भी कम्यूनिस्ट पार्टी द्वारा निश्चित किए मार्ग पर चलना पड़ता है। अब हमारा कोई पत्र-व्यवहार नहीं है और उसके विषय में मैं ऐसा लिखने का साहस इस कारण कर रही हूं कि मैं यह विश्वास करती हूं कि वह इतना महान् है कि किसी भी शासन के अधीन रहते हुए वह अपनापन कायम रख सकता है। और अब तक वह सचमुच ही बूढ़ा हो गया होगा पर मुझे निश्चय है कि रंगमंच पर अब भी सुन्दर लगता होगा, क्योंकि उसका सौन्दर्य आन्तरिक गरिमा का था।

आह, जब मैं पीकिंग की बात सोचती हूं तब आज भी मेरा दिल घुलने लगता है क्योंकि चीनी जनता की सच्ची आत्मा वहां थी। और यह कोई आश्चर्य की बात नहीं कि अनेक विदेशी उसे देखने जाते और वहां बहुत दिन रहते थे। अब वहां से बाहर खदेड़ दिए जाने पर अब वे सदा के लिए निर्वासित हो गए हैं। पर मेरे आनन्द का स्थान विदेशियों का राष्ट्रीय भेद-भाव से रहित जीवन नहीं था, यद्यपि वे मुझसे काफी स्नेह करते थे। मुझे तो गलियों में अकेले मटरगश्ती करने, महलों और बागों में, और कभी-कभी नगर के बाहर नंगे पहाड़ों में घुड़सवारी करने तथा निर्जन और सुनसान ग्रीष्म महल को ताकने में आनन्द मिलता था; मुझे तो लोगों को भाषाओं की रानी चीनी मण्डारिन के उस शुद्धतम रूप में बातचीत करते सुनकर, और उन लोगों को, जो धरती की सबसे अधिक गौरवपूर्ण जाति थे, आते-जाते देखकर आनन्द मिलता था।

और ये पंक्तियां लिखते हुए एक बात और याद है—उस वसंत में विदेशियों की एक छोटी नाटक-मण्डली ने अंग्रेज़ी-भाषी समुदाय के लिए एक नाटक खेला था। उसका नाम था 'दि बैरेट्स आफ विम्पोल स्ट्रीट'। और अभिनेताओं की तो मुझे याद नहीं, पर केवल एक उस छोटी-सी दुबली-पतली औरत की याद है जिसका नाम मैं भूल गई हूं, जिसने एलिज़ाबेथ बैरट का पार्ट किया था। मुझे बताया गया कि वह मिशनरी थी शर्मीली कुमारी स्त्री, न बहुत तरुण न वृद्ध, जिसे

कोई भी नहीं जानता था, पर उसकी बड़ी-बड़ी काली उदास आंखें थीं और छोटा-सा जैतून के रंग का चेहरा था, तथा घने काले बाल थे और हल्की नरम पद-चाप थी। मंच पर वह स्वयं एलिज़ाबेथ बन गई, एक कवि की प्रेयसी बन गई। और हमारी चकित आंखों के सामने उसने ऐसे भावपूर्ण, ऐसे सच्चे और कविजनोचित प्रेम को सूक्ष्मता से समझने की त्रुटिहीन परिपूर्णता से इतना बिल्कुल स्तब्ध कर देने वाला अभिनय किया कि मैं इसे कभी नहीं भूली, और सचमुच जब मैंने हमारी महान् अभिनेत्री कैथरीन कार्नेल को पुनः अभिनय में वहीं पार्ट करते देखा, तब मैंने यह महसूस किया कि वह छोटी-सी मिशनरी स्त्री उसके अभिनय को भी मात कर गई थी। पर जब नाटक खत्म हो गया तब वह भलीमानस फिर दुबक गई और जब उसे एक और नाटक में परखा गया तब मुझे बताया गया कि वह बिल्कुल औसत दर्जे की साबित हुई। मेरा ख्याल है कि उस नाटक और उसके उस एक पात्र में कोई ऐसी चीज़ थी जो उस समय उसके अपने जीवन की भावात्मक आवश्यकता से मेल खाती थी। वर्षों बाद उस घटना को लेकर मैंने एक कहानी लिखी।

चीन से जाने का फैसला मैंने जल्दी से आसानी से नहीं कर लिया और तथ्य यह है कि उस फैसला को अन्तिम रूप में आने में दो वर्ष लगे। १९३२ हमारा छुट्टी का वर्ष था और वह हम अमरीका में बिता रहे थे और मैं समझ रही थी कि उन महीनों में मुझे यह जानने का मौका मिलेगा कि भविष्य में क्या होना चाहिए। रवानगी के बारे में मुझे बहुत कुछ याद नहीं मालूम होता, पर मैं पीकिंग से अपने नानकिंग वाले मकान में लौटी अवश्य, और उसे वहां से जाने की दृष्टि से संभाला गया और सब चीनी मित्रों और वफादार नौकरों से मैंने विदा ले ली। मैं अब तक इतनी निःसंग हो चुकी थी कि मैंने दुःख नहीं मनाया, जैसे कि कुछ वर्ष पहले मैंने मनाया होता और इसके अतिरिक्त, मुझे यह सोचकर खुशी हो रही थी कि मैं अपने बड़े बच्चे से मिलूंगी जिससे मैं तीन साल से अलग थी। मेरे अमरीका में रहने के निश्चय पर उसकी राय का भी असर पड़ेगा। मुझे प्रशान्त महासागर के पार की गई यात्रा की बात याद भी नहीं है। केवल इतना याद है कि मेरी चिन्ता की मुख्य वस्तु एक चमड़े का थैला था जिसमें शुई हू चुआन का मेरा किया पूरा अनुवाद और पीकिंग में एक प्राचीन प्रति से खींची गई सैकड़ों चित्रों की फोटो कापियां थीं। उस समय मैं पुस्तकों में चित्र छापने की कठिनाइयों और खर्च से परिचित न थी और यह आशा करती थी कि इन सब चित्रों का उपयोग करके

अंग्रेज़ी अनुवाद को सर्वोत्तम चीनी संस्करण के यथासम्भव सदृश बना दूगी। यात्रा में कई स्थानों पर उतरते-चढते हुए दो या तीन बार वह मूल्यवान् चमड़े का थैला जल्दी में इधर-उधर रखा गया और हर बार और सब काम बन्द करके उसे तलाश किया गया।

मुझसे कहा गया था कि इस बार अमरीका जाने पर मुझे अपने आगे एक दूसरी दुनिया दिखाई देगी जो उस दुनिया से भिन्न होगी जिससे मै पहले प्रसगतः परिचित थी। पर इस तरह की बातो का मेरे ऊपर कोई खास असर नही पड़ा क्योंकि मै उस भविष्य की कल्पना नही कर सकती थी। मेरा प्रकाशक माण्ट्रीयल स्टेशन मे मेरी ट्रेन पर निर्णय करने के प्रश्नों की एक सूची लेकर कार पर आया और शीघ्र ही मुझे यह समझ मे आ गया कि वह वर्ष, जिसे मैं कुछ निकम्मा और खाली समझ रही थी, न निकम्मा होगा और न खाली। पर उन घटनाओं का उल्लेख करना मेरे लिए भी दिलचस्पी की चीज नही है जो सबसे ज्यादा बिकने वाली पुस्तक के, जैसे कि 'दि गुड अर्थ' सावित हुई थी, लेखक के लिए प्रायः निश्चित हो गई थी। भोज, काकटेल पार्टियो, दर्शन करने और देने, भाषण देने और हर विषय पर राय देने के लिए निमन्त्रण अपने-आपमे कुछ दिलचस्प थे पर जिस चीज की मै गहराई से खोज कर रही थी वह इन हलचलों मे नही मिल सकती थी। मै सबसे पहले अपने देश के लोगों को जानना चाहती थी क्योकि मैं समझ रही थी जब तक मैं उन्हें न जानूगी, तब तक मैं अपने देश मे अपनी जडे नही जमा सकती और दूसरे, मै कला के अपने क्षेत्र में सहृदय मित्रों का एक मण्डल पाने की आशा करती थी।

देश का परिवर्तन एक सर्वागव्यापी और शायद विध्वसकारी अनुभूति है। मैंने अपने चीन से रवाना होने के बाद बीते वर्षों मे उस अनुभूति को समझा और सारे अंतःप्रवासियों के प्रति मेरा आदर और सहृदयता निरन्तर बढ़ती गई। किसी जमे-जमाए समाज से—चीनी समाज ऐसा ही था और क्रान्ति तथा अस्थायी सरकारों के विस्फोटों के बावजूद वैसा ही मौजूद है—अलग होकर एक अस्थिर और नये समाज मे (जैसे अमरीकन अब भी है और निश्चय ही अनेक दशाब्दियों या शायद शताब्दियों तक बने रहेगे) आना देश बदलने मात्र से कुछ बड़ी चीज है। यह संसारों का और युगों का बदलना है। इसके अतिरिक्त एक बात जो मै उस समय नहीं समझती थी, पर जिसे मैंने बाद में सत्य पाया—वह बात

यह थी कि हमारी अमरीकन संस्कृति के, जिसे वैज्ञानिक आविष्कार और खोज के कारण मजबूरन आरम्भिक अवस्था से अत्यधिक उद्योग-युक्तता की अवस्था तक बहुत तेज़ी से चलना पड़ा था, स्वभावतः बदलते हुए स्वरूप या किस्म को प्रथम महायुद्ध से भीषण धक्का लगा था। उस युद्ध के प्रभाव का भौतिक या मनोवैज्ञानिक दृष्टि से जो प्रभाव हुआ उसे अभी पूरी तरह न तो समझा गया था और न आंका गया था, पर हम अपने राष्ट्रीय जीवन के स्वाभाविक क्रम में ही परिवर्तमान लोग नहीं हैं, बल्कि महायुद्धों के परिणामस्वरूप परिवर्तित जातिं हैं।

मैं इन सबके लिए तैयार नहीं थी। मेरे माता-पिता १८८० में मेरे जन्म से वर्षों पहले अपना देश छोड़ गए थे और इसके बाद वे संयुक्तराज्य अमरीका में कभी इतने ज़्यादा दिन नहीं रहे कि वे इसके परिवर्द्धन को समझ सकें। मेरी मां हमारे पास आने वाले अमरीकन अखबारों और पत्रिकाओं को पढ़कर गम्भीरता से सोचा करती थी और इस बात पर चिन्तित हुआ करती थी कि अमरीका में बाहर से आने वाले लोगों की लहरें आ रही हैं और वे राष्ट्रीय जीवन पर कैसा प्रभाव डाल रही हैं, पर वह मुझे, जो हम कुछ पढ़ते थे, उससे अधिक नहीं बता सकती थी। कालेज के दिनों में मेरा कोई घर न था और इस प्रकार मैं कभी अमरीकन दृश्यपट का भाग नहीं बनी थी। यह सच है कि इस एकाकी जीवन में मैं यह अच्छी तरह समझ गई कि किस प्रकार चीनी छात्र अमरीकन विश्वविद्यालयों में चार या सात वर्ष बिताकर भी हमारे राष्ट्र के ढांचे या हमारे लोगों के चरित्र से बिल्कुल अपरिचित रह जाते हैं और मैं यह देख चुकी थी कि जिस देश में मनुष्य का निवास या शिक्षा हो, उसे न जानना कितना विनाशकारी है। बहुत सारे गोरे लोग, बल्कि मेरा ख्याल है अधिकतर गोरे लोग, चीन में भी दूर-दूर रहते हुए चीनियों की संस्कृति या रीति-रिवाजों को या भाषा को बिना समझे निवास करते थे। मैं अपने देश में इस तरह नहीं बनना चाहती थी। फिर भी मैंने जल्दी ही देख लिया कि अमरीका में निर्वासित रूप में रहना आसान होगा। इतने बड़े देश में सिर्फ एक अच्छी-सी जगह छांट लेना, जिसे मैं अपना घर कह सकूं: और वहां अपनी तरह-तरह की मृदु दिलचस्पियों में जीवन बिताना आसान काम होगा। मैं ऐसा नहीं करना चाहती थी। मैं 'अमरीकन' शब्द के पूरे अर्थ में अमरीकन बनना चाहती थी।

तो जब पहला वर्ष मैंने मुख्यतः न्यूयार्क में साहित्यिक और सामाजिक कार्यों

मे बिताया, तब मेरी असली दिलचस्पी उन अनेक किस्म के लोगो मे थी जिन्हे मै देखती, मिलती या जानने का मौका पाती थी। मुझे शीघ्र स्पष्ट हो गया कि यूरोपीय अर्थ मे या चीनी अर्थ मे भी यहा साहित्यिक लोगो का कोई समाज नही है। हू शिह और अन्य लेखको के नेतृत्व मे कार्य कर रहे साहित्यिक क्रान्तिकारियो के प्रतिभाशाली तरुण समूह जैसा कोई लेखक-वर्ग मेरे अपने देश मे निश्चय ही नही था। मेरे प्रथम परिचितो मे अलेक्जेण्डर वूलकाट था जिसका उस समय अमरीकन साहित्यिक क्षेत्र मे एक विशिष्ट स्थान था। वह स्रष्टा की अपेक्षा सकलयिता और मूल लेखक की अपेक्षा आलोचक अधिक था। उसने मुझे अपने साथ भोजन करने के लिए निमन्त्रित किया। और मुझे सलाह दी गई कि मेरा जाना अच्छा होगा क्योकि अपने ढग से वह एक छोटा-मोटा राजा था। वह एक मनोरम फ्लैट मे रहता था और मै उसके पुस्तकालय का लोभ मुश्किल से सवरण कर सकी जिसमे मै शाम का समय अकेले बिताना पसन्द करती बशर्ते कि मै ऐसी अशिष्टता की जोखिम उठाने का हौसला करती। हुआ यह कि मै अमरीकन साहित्यमच पर उसकी अविरत टिप्पणिया दो या तीन घण्टे तक ध्यान से सुनती बैठी रही जिसमे मुझे यह पता चला कि उसका स्थान मूर्धन्य आलोचक का है। यह मनोरजक और इसलिए आनन्दमय प्रसग था। वहा से चलते समय जितना उसने मुझे जाना, उससे अधिक मैने उसे जान लिया, पर वह शायद हम दोनो के लिए ही बहुत महत्त्वपूर्ण जानकारी थी। एक-एक करके मै लेखको और आलोचको से मिली और शीघ्र ही मुझे पता चल गया कि अमरीकन लेखक साथियो की तरह और आदान-प्रदान के लिए इकट्ठे मिलने के बजाय एक-दूसरे से दूर होने की और किसी केन्द्र से दूर अलग-अलग स्थानो पर अकेले कार्य करने की प्रवृत्ति रखते है। जब वे इकट्ठे होते थे, तब बडे सावधान और सयत मालूम होते थे और उन लोगो से बहुत कम बोलते थे जिनके साथ मेरी कल्पना थी कि वे खुले होगे। उनमे खुलकर बात नही होती थी और मै प्राय इसपर विचार करती थी और इसका कारण समझने की कोशिश करती थी। इसका कारण ईर्ष्या नही हो सकती थी क्योकि उनमे बहुत सारे इतने महान् थे कि ऐसा तुच्छ अवगुण उनमे नही हो सकता था। इसका कारण हमारे तरल समाज मे उनकी अनिश्चिन्तता हो सकता था, जिसमे लेखक के जीवन का अर्थशास्त्र जनता की बदलती रुचि पर निर्भर है, पर जो फिर भी बुद्धिजीवी को सदा भय-मिश्रित हल्के अवमान की दृष्टि से देखती है। इसका कारण यह भी हो सकता

है कि लेखक अपनी बुद्धिमत्ता के कारण यह जानते हैं कि उनके साधन-स्रोत एक-दूसरे में नहीं हैं, बल्कि देश के सामान्य जीवन में हैं और वह जीवन इतना वैविध्य-पूर्ण और सम्पन्न है कि उसमें सबके लिए पर्याप्त सामग्री है। फिर भी मैं यह अनुभव करती हूं कि तब कुछ न कुछ हानि होती है जब साहित्य-स्रष्टा आपस में मिलकर उन विचारों और प्रश्नों पर खुलकर और आसानी से विचार-विनिमय नहीं कर सकते जिनमें हमारा मन डूबा रहता है। मस्तिष्क को तीक्ष्ण करने के लिए मस्तिष्क की ज़रूरत होती है और वह वाग्वैदग्ध्य और वक्रोक्तियों से उतना तीक्ष्ण नहीं होता जितना गम्भीर विचार-विनिमय से।

द्वितीय और तृतीय कोटि के लेखकों में परस्पर बहुत आना-जाना था परन्तु क्योंकि यह 'स्पीक ईज़ी' (एक तरह की हल्की शराब की गैर-कानूनी दुकान) का ज़माना था, इसलिए इसमें अच्छी तरह न पचाई हुई शराब की मूढ़ता बहुत थी। एक बार उन सर्दियों में मैं निमन्त्रित अतिथि होकर एक 'स्पीक ईज़ी' पार्टी में गई और वहां मैंने अपने जीवन में पहली बार शराब के नशे से मृत आदमी देखा। चीनी लोग गरम शराब काफी मात्रा में पीते हैं पर वे अपने भोजन के साथ पीते हैं और इसलिए मैंने चीन में शराब से बदहवास लोग नहीं देखे थे। जापान में मैंने सप्ताह के अंतिम दिन बाद शहर से घर आते हुए शराब से बदहवास लोग देखे थे, पर वे उत्ते-जित थे, मृत नहीं, और मैंने अपने बचपन के नगर में यांगत्से नदी पर खड़े विदेशी युद्ध-पोतों के बहुत-से नाविकों को नशे में देखा था, पर वे भी मृत नहीं। इसलिए जब मैंने एक आदमी को न्यूयार्क में एक 'स्पीक ईज़ी' के तहखाने में एकाएक अकड़ाते और फिर गिरते देखा, तब पहले मैंने सोचा कि वह मर गया है और मैंने आश्चर्य-सा प्रकट किया क्योंकि किसीको उसकी परवाह नहीं मालूम होती थी। मेरा मेज़बान क्रिस्टोफर मार्ले इसपर खुलकर हंसा और उसने परिस्थिति स्पष्ट की जो बिल्कुल सामान्य चीज़ थी, और इसपर मैंने इसमें दिलचस्पी लेनी छोड़ दी और ऐसे स्थानों पर जाना बन्द कर दिया। मनुष्य का अपने ऊपर नियन्त्रण हट जाने को लापरवाही से देखना मैं कभी नहीं सीख सकी और मुझे लगता है कि इसका मूल भी श्री कुंग के दिनों में है, जिन्होंने मेरे अन्दर प्राचीन कन्फ्यूशियन सदाचार की यह भावना भर दी थी कि उत्कृष्ट व्यक्ति स्वभाव में या शराब पीने में आत्मसंयम नहीं खोता।

पर साथ ही मैं यह जानती थी कि आठवीं शताब्दी तथा तांग राजवंश का प्रिय चीनी कवि ली पो पियक्कड़ था। मैं नानकिंग के बाहर उसके नाम पर बने

मन्दिर में कई बार गई थी और मैंने पुजारियों से उसकी जीवन-कहानी सुनी थी। मन्दिर से परे वाली चट्टानों से यांगत्से की चंचल पीली जलराशि पर वह प्रसिद्ध स्थान दिखाई देता था जहां कहा जाता था कि एक रात वह अपने मित्रों के साथ नौका-विहार करता हुआ डूब गया क्योंकि वह जलधारा पर पड़ते हुए चन्द्र-बिम्ब को पकड़ने के लिए बहुत अधिक झुका।

इस कवि के बारे में एक दरबारी ने सम्राट् ह्सु आन त्सुंग से जो उस समय राज्यासीन था, इस प्रकार कहा था, 'मेरे मकान में आज तक का सबसे महान् कवि मौजूद है। मैंने महामहिम से उसके बारे में चर्चा करने की हिम्मत नहीं की क्योंकि उसमें एक दोष है जिसे सुधारा नहीं जा सकता। वह पीता है और कभी-कभी अति कर जाता है। पर उसकी कविताएं सचमुच सुन्दर हैं। आप स्वयं देखिए, महाराज!'

और उसने सम्राट् के हाथ में पाण्डुलिपि पकड़ा दी।

'इस कवि को तुरन्त मेरे पास लाओ!' सम्राट् ने उत्तर में कहा और इसके बाद से ली पो, वह पिए हुए हो या बिना पिए, राजकीय संरक्षण में रहा। उसका शेष जीवन दोस्तों से घिरा रहा। आहा! वह कैसा अच्छा ज़माना था!

मेरी वापसी का यह साल, १९३२, अमरीका में भारी मन्दे का साल था, फिर भी यह अर्थपूर्ण बात है कि मेरा इसकी ओर ध्यान नहीं गया। जब मैंने यह बात कही, तब मेरा घरेलू आलोचक बोला, 'क्या तुम्हें सड़कों पर सेब बेचते लोगों की याद नहीं? क्या तुम्हें भिखारियों का स्मरण नहीं?' तथ्य यह है कि मैं सदा ऐसे स्थान पर रही जहां भिखारी समाज का एक स्वीकृत समूह थे, जो उन दूसरे लोगों के लिए, जो स्वर्ग का सुख पाने के लिए आवश्यक सत्कार्य करना चाहते थे, अपने अस्तित्व से पुण्य का एक माध्यम प्रस्तुत करते थे, और इसलिए मैंने न्यूयार्क की सड़कों पर भिखारियों की तरफ ध्यान नहीं दिया। बस इसी बात पर मैं चकित रही कि वे कितने थोड़े हैं। यदि यह महान् सम्पन्न नगर चीन या भारत में होता तो भिखारी कई गुना अधिक होते। और मैं अपने सारे जीवन किसी नगर की सड़कों पर फलों की छोटी दुकान लगाकर फल बेचते हुए दुकानदारों को देखने की अभ्यस्त थी, इसलिए उस साल न्यूयार्क में फेरी लगाकर सेब बेचने वाले थोड़े-से लोगों पर मेरा ध्यान नहीं गया। मन्दी का पहला असली बोध मुझे उस दिन हुआ जिस दिन नये राष्ट्रपति फ्रैंकलिन रूज़वेल्ट ने राष्ट्र की

वित्त-व्यवस्था को पुनर्गठित करने के लिए बैंक बन्द कर दिए और तब सचमुच मैंने चिन्तातुर भयभीत लोगों की भीड़ें देखीं । पर मेरे अनुभव में बैंकों का भी कोई महत्त्व नहीं रहा था और मैं अपने देश के आर्थिक ढांचे में उनके अस्तित्व के बुनियादी रूप को पूरी तरह नहीं समझती थी।

मुझे याद है कि उस दिन प्रातःकाल निर्मल था। समुद्र से आती हवा स्वच्छ थी जैसी कि न्यूयार्क में वह कभी-कभी हो सकती है, और मैं मनोरंजक कार्यक्रमों और आनन्ददायक उत्तेजना से भरा आगे का समय बिताने के लिए बड़े उत्साह से उठी थी। नाश्ते के बाद मैं सड़कों पर निकल पड़ी जिसका कि मुझे शौक है, और शीघ्र ही मैं एक ऐसी जगह आ गई जहां लोगों की एक बड़ी भीड़ एक बन्द भवन पर घिरी थी । मैं चकित हुई कि ये लोग यहां क्यों जमा है और ये सब चुप और चिन्ताकुल क्यों हैं । मैं भीड़ का भाग बन गई, जैसे कि मैं चीन में किया करती थी और शीघ्र ही मुझे पता चला कि वे इस कारण भयभीत हैं क्योंकि वे सोचते हैं कि उन्होंने कठोर महनत से पैसा-पैसा बचाकर जो कुछ थोड़ा-सा संचय किया है, वह नष्ट हो जाएगा, क्योंकि वे मज़दूर थे, जैसा कि उनके कपड़ों और हाथों से मालूम हो रहा था। इस प्रकार मुझे पता चला कि उनकी निश्चिन्तता परिवार में और मानवीय सम्बन्धों में नहीं, बल्कि बैंक जैसी एक जड़ वस्तु में थी और बैंक उनके लिए, और जो कुछ उनका था उसके लिए, अपने दरवाज़े बन्द कर सकता था। बाद में तब बड़ा चैन मिला जब हमारी वित्तीय व्यवस्था में ऐसा संशोधन किया गया जिससे यह आशा होने लगी कि ऐसी विपत्ति फिर कभी नहीं आ सकती।

और जब मैं भीड़ की बात सोचती हूं तब मुझे अपने पहले चलचित्र की, और उस महल जैसे सिनेमाघर की, जिसमें वह मैंने देखा था, याद आ जाती है। अथवा आप कह सकते हैं कि वह मुझे महल मालूम हुआ, क्योंकि मैंने क्रान्ति के बाद नानकिंग में दो-चार चलचित्र, मुख्यतः चार्ली चैपलिन और हैरल्ड लायड के प्रहसन देखे तो थे और उनका आनन्द भी खूब लिया था, पर वे मैंने एक बड़े चटाई की छत वाले शेड में सख्त, बिना पीठ की, लकड़ी की बेंच पर बैठकर देखे थे । मेरे चारों ओर चीनी दर्शकों की भीड़ थी और मेरा कुछ आनन्द देखे हुए पर उनकी लगातार चलती हुई आलोचनाओं और मज़ाकों में उनकी हंसी की फुहारों में और चुम्बनों के समय प्रकट उनकी सजीव घृणा में निहित था । वृद्ध महिलाएं अपनी बांह सुन्दर ढंग से अपनी आंखों के आगे करके उसके पीछे से झांकती हुई होंठों के

ऊपर होंठ के घृणाकारक दृश्य पर आनन्दित घृणा के उद्गार प्रकट करती थीं। देखो, तो, ये विदेशी किस तरह व्यवहार करते हैं। इसलिए, दर्शकों के मन में यह भावना ध्वनित होती थी, चीनी होना और उत्कृष्ट व्यक्ति होना कितना अच्छा है।

पर अमरीकन सिनेमा-घरों में मुझे पहले जो असुविधा हुई, वह उस चीज़ से नहीं हुई जो मैंने देखी, बल्कि उससे हुई जो मैंने सूंघी। मैं इतने समय चीनियों में रही और मैंने भोजन उनका किया क्योंकि मुझे वह पश्चिमी भोजन से अधिक पसन्द था और इसलिए मेरा शरीर उनके जैसा हो गया था। उनकी तरह मैं भी दूध और मक्खन से बचती थी और मांस कम खाती थी। इसलिए अपने लोगों में मुझे एक तेज़ चुभने वाली गन्ध मालूम हुई जो बिल्कुल सड़ान तो नहीं, पर निश्चय ही बहुत परेशान करने वाली, और उस समय मेरे लिए अपरिचित भी थी क्योंकि यह दूध और मक्खन तथा गाय के मांस की गन्ध का मिश्रण थी। मुझे याद आया कि किस तरह मेरे चीनी मित्र गोरों की गन्ध की शिकायत किया करते थे और उनमें सचमुच वह गन्ध होती थी। कभी-कभी चित्र समाप्त होने से पहले, विशेष रूप से हवा गर्म हो जाने पर, मैं सर्वथा विवश होती थी और तब मुझे कहानी का अन्त देखने की सच्ची इच्छा होते हुए भी सिनेमाघर से निकल जाना पड़ता था। एक वर्ष या कुछ अधिक तक अमरीकन भोजन—परन्तु फिर भी दूध मैं आज तक नहीं पीती—खाने के बाद ही मैं अपनी जाति के लोगों में सायंकाल बिताने में समर्थ हो सकी और इसका कारण यह है कि अब मुझमें भी उन जैसी गन्ध आती है। इस बेहूदे विचार में कुछ भी सचाई नहीं है कि विभिन्न जातियों में गन्ध का भेद किसी सहजात कारण से होता है। सब जातियों के अनधोए या न नहाने वाले लोगों में अनधोएपन की गन्ध आती है और इससे आगे उनकी गन्ध भोजन पर निर्भर है। मुझे याद है कि नानकिंग में मेरी पड़ौसिन श्रीमती ली ने अपने पुत्र के चार वर्ष तक हार्वर्ड में रहकर लौटने पर मुझसे बहुत शिकायत की क्योंकि उसमें से विदेशी जैसी गन्ध आती थी। उसमें फिर चीनियों जैसी गन्ध आने में एक वर्ष या इससे भी अधिक समय लगा।

दावतें और उत्सव तथा मौज-बहार वहां मेरे लिए बहुत कुछ थी। बहुत स्नेह और उदार प्रशंसा भी रही, पर जो चीज मुझे याद है, वह यह नहीं है। प्रथम तो मुझे न्यूयार्क में नीग्रो लोगों के चित्रों की एक प्रदर्शनी देखने के निमन्त्रण की याद

है। मैं उत्सुक्तावश गई और मैंने जो कुछ देखा, उससे मैं विमूढ़ हुई। इन चित्रों में कल्पनातीत विभीषिकाएं थी। मैंने उदास काले चेहरे देखे, पेड़ों से झूमती मृत लाशें देखीं, मकानों और दुःखद बच्चों के अधजले अवशेष देखे, मैंने तंग गन्दी गलियां और झुके हुए कंगाली के मारे लोग देखे, धैर्यशाली अज्ञानी चेहरे देखे और वहां भीड़ में अपने स्वागत करने वालों में मैंने शिक्षित नीग्रो नर-नारियों के सहृदय और मेधावी चेहरे देखे। उनसे मैंने उन चित्रों की व्याख्या करने के लिए कहा। उन्होंने मेरे सामने उनकी व्याख्या की। जो कुछ मैंने देखा, वह उनका असली जीवन था। मैंने अमरीका के नागरिकों को कुसंस्कार और अलगाव के कारण, तथा इस कारण अवसर न मिलने की बात सुनी क्योंकि वे काले हैं। मैंने लिंचिंग (कानून के प्रचलित तरीके को छोड़कर लोगों की भीड़ के खुद फैसला करने और मार डालने) की बात सुनी।

यह ऐसा धक्का था जिसे मैं न संभाल सकी। मेरे लिए अमरीका सदा स्वर्गोपम देश रहा था—यह ऐसा देश रहा था जहां सब कुछ स्वच्छ और स्नेहपूर्ण तथा मुक्त है। मैंने अन्य स्थानों पर गोरों को काले लोगों के प्रति क्रूरता करते देखा था पर वे गोरे अमरीकन नहीं थे और इसलिए मैं इसी रूप में बचपन से ही यह समझती रही थी कि कोई अमरीकन ऐसे लोगों के प्रति क्रूर नहीं होता जिनमें एकमात्र यह अन्तर है कि उनकी चमड़ी काली है। और मूलवंशीय कुसंस्कार की विभीषिकाओं और खतरे से मैं कितनी अच्छी तरह परिचित थी! क्या मैं गोरी होने के कारण अपने बचपन में ही इसका कष्ट नहीं पा चुकी थी। आह! नीग्रो नर-नारियों की बातें सुनते हुए, जिन्होंने मेरे सामने चित्रों की व्याख्या की, मुझे यह मालूम हुआ कि मैं जो कुछ जानबूझकर भूल गई थी, वह सब मुझे याद था। किस तरह बचपन में मैंने देखा था कि दूसरे बच्चे मुझे इस कारण 'विदेशी शैतान' कहते थे कि मैं गोरी थी और वे पीले थे, और किस तरह वे मेरी नीली आंखों को 'जंगली पशु की आंखें' कहते थे और जब मैं कोई नाटक देखने के लिए किसी चीनी नाटकघर में या कभी गर्मियों में घूमते-फिरते गायकों और स्वांग वालों का आनन्द लेने के लिए किसी मन्दिर के आंगन में बैठती थी, तब किस प्रकार नाटक के बदमाश और दुष्ट पात्रों की आंखें सदा नीली, बाल लाल और नाक लम्बी होती थी, और मुझे इससे स्पष्ट रूप से चोट पहुंचती थी क्योंकि इसका अर्थ यह था कि चीनी मेरी जाति के लोगों को बुरा समझते थे। मुझे याद था कि किस तरह क्रान्ति के बाद

सड़कों पर चीनियों ने मुझपर कभी-कभी थूका था, जो मेरे बारे में इसके अति-रिक्त कुछ नहीं जानते थे कि मैं विदेशी हूं। सबसे बढकर, मुझे वह दिन याद आया जब केवल विदेशी होने के कारण मेरा जीवन नष्ट होने के बिन्दु पर पहुंच गया था, यद्यपि मैंने अपना जीवन चीन में बिताया था और मैं अंग्रेजी से अच्छी चीनी बोलती थी, और इससे भी आगे मुझे यह याद आया कि सारे संसार में गोरे अब भी अल्प हैं, क्योंकि ससार की अधिकतर जातियां काली हैं।

पर जिस बात से मेरा दिल टूटा वह यह नहीं थी कि इनमें से कोई मुसीबत मुझे भुगतनी पड़ी, बल्कि यह थी कि मेरे अपने लोग दूसरों से ऐसे दुष्कृत्य कर सकते हैं और कि ये दूसरे उनके अपने ही देश के नागरिक हैं। अमरीकन ऐसा कर सकते हैं! मैं उन लोगों के लोमहर्षक चित्रों के आगे खड़ी होकर उन्हें ताकती रही और उनका अर्थ सुनती रही और बस मेरा दिल भर आया। मैं बोलती या रोती और मेरा ख्याल है मैंने दोनों कार्य किए। मुझे याद नहीं कि मैंने क्या कहा पर न मालूम कैसे मैंने अपने-आपको उन लोगों के एक समूह के सामने भाषण करते पाया जिनमें काले और गोरे भी थे जो मेरे चारों ओर इकट्ठे हो गए थे। और उनके सामने, जो मेरे लिए अपरिचित थे पर फिर भी मेरे अपने ही थे, मैंने अपना दिल उड़ेल दिया। मैंने उन्हें यह बताने की कोशिश की कि यदि हम अमरीकनों ने अपना निर्धारित ध्येय पूरा न किया, यदि हमने मानव-समता के उन महान् सिद्धान्तों पर आचरण न किया जिनपर हमारे राष्ट्र की बुनियाद खडी की गई है, वे सिद्धान्त जो हमारी एकमात्र सच्ची उत्कृष्टता है तो हमें संसार के सब स्थानों में गोरों द्वारा किए गए सब पापों की सजा भुगतनी होगी। हमें एशिया द्वारा गोरों को दण्ड दिया जाना सहना होगा, और कि यदि हम उन गोरों से, जिनसे हम नही हैं, अपना अन्तर सिद्ध करना चाहते हैं तो हमें तुरन्त ही उसकी शुरुआत करनी चाहिए और इसके लिए अपने उन नागरिकों के प्रति, जो गोरे नहीं हैं, अपने आचरणों द्वारा प्रकट करना चाहिए कि हम और वे एक हैं, सब अमरीकन समान हैं; सब एक महान् राष्ट्र के नागरिक हैं, एक शरीर के अंग हैं।

कुछ-कुछ इस तरह की बातें मैंने कहीं और उन अमरीकनों को यह समझाने की कोशिश की कि यदि हम अपने देश में केवल चमड़ी के रंग के कारण लोगों को हीन गिनते हैं तो इतना ही नहीं है कि एशिया में कोई हमारा विश्वास नहीं करेगा, साथ ही हम सब मानव-प्राणियों को अपने बराबर न समझकर अपने-आपसे और

एक स्वतन्त्र जाति के रूप में अपने ऊंचे कर्तव्य के आदर्श से गद्दारी करते हैं। भाषण समाप्त करने के बाद मैं तुरन्त वहां से चली गई और कई दिन तक अकेली रही। मेरी किसीको देखने या मनुष्य की आवाज़ सुनने की तब तक इच्छा ही नहीं हुई जब तक मैंने अपने ही देश में इस भयंकर स्थिति के पूरे अर्थ और सम्भावना को सामने रखकर समझ नहीं लिया। यह ऐसी स्थिति थी जिससे हम एशिया में, चाहे वह भूमण्डल के दूसरी ओर था, गोरों के लिए मौजूद सारे खतरे में उलझते थे। इसके बाद मैंने उस विषय पर भरसक सब कुछ पढ़ा और मैं बहुत-से नीग्रो नर-नारियों को जान गई और मैंने यह संकल्प किया कि यदि मैं अपने देश में रहने के लिए कभी लौटी तो मैं अपनी चिन्ता का पहला विषय उन्हें बनाऊंगी। अब मैं जानती हूं कि इस तरह आंखें खुलने से मैंने चीन लौटने के फैसले में जल्दी की और इस तरह इस प्रश्न का अन्तिम निर्णय स्थगित कर दिया कि मुझे एशिया छोड़ना चाहिए या नहीं।

एक अन्तिम सुखद घटना और थी। यह विलियम लियोन फैल्प्स और उसकी पत्नी से मिलने के लिए की गई न्यू हैवन की यात्रा थी। वहां मैं येल विश्वविद्यालय से एक आनरेरी उपाधि स्वीकार करने दीक्षान्त-समारोह पर गई थी। यह जून का गरम दिन था और जब मैंने गाड़ी से बाहर पांव रखा तो अपने-आपको सुन्दर कपड़ों वाले और प्रसन्न माता-पिताओं की भीड़ में पाया जो अन्ततः अपने पुत्रों के डिग्री पाने पर चैन और उत्सुकता अनुभव कर रहे थे। मेरा ज़रा बड़ा बैग उठाने के लिए कोई कुली नहीं मिला और जब मैंने एक बड़े नीग्रो के पास जाकर पूछा, तब उसने यह कहकर मुंह फेर लिया कि उसे फुरसत नहीं है। मैंने बैग उठाया और इसे लेकर लड़खड़ाती हुई चल रही थी कि इतने में रेशमी रंग का सफेद सूट पहने स्वयं डाक्टर फैल्प्स प्रसन्नतापूर्ण आवाज़ करते हुए जल्दी-जल्दी मुझसे मिलने आ रहे थे क्योंकि उनमें प्रत्येक अतिथि को यह अनुभव कराने की खूबी थी कि उसके आने का स्वागत हो रहा है। यह देखकर विशालकाय कुली ने अपने उठाए हुए अनगिनत बैग तुरन्त नीचे डाले दिए और प्लेटफार्म पार करके वह जल्दी से मेरा बोझ छीनने के लिए आया और पछतावे की आंखों से मेरी तरफ देखने लगा।

'तुमने मुझसे क्यों नहीं कहा कि तुम श्रीमान् बिली फैल्प्स से मिलने आ रही हो,' उसने उलाहना-सा देते कहा, 'मैं उनके आदमी का काम हमेशा पहले करता हूं।'

मैं प्रसन्न होकर चल पड़ी। डाक्टर फैल्प्स मुझे बांह पकड़कर घसीटते ले चले।

कुली हमें जाता देखने और अपनी टोपी उठाने के लिए देर करता रहा। वहां से हम सड़क पर चले। डाक्टर फैल्प्स बिना रुके बोलते रहे और उनकी कार भयानक तेज़ी से इधर-उधर दौड़ती हुई चली और अन्त में उन्होंने उसे एक सुन्दर लाल ईंटों के मकान के आगे, जो उनका घर था, झटके से रोक लिया। अन्दर उनकी पत्नी आनाबेल हमारी प्रतीक्षा कर रही थी। वह बड़ी शान्त और स्वाभाविक माधुर्य से सम्पन्न और संयत थी और मुझे एक बड़े चौड़े शयनकक्ष में पहुंचा दिया जहां पलंग इतना ऊंचा था कि उस रात सोने के लिए मुझे स्टूल पर चढ़कर उसपर पहुंचना पड़ा।

परन्तु उस मनोरम मकान में, मनुष्य का वस चले तो वह कभी भी जल्दी न सोए। निचली मंज़िल का बड़ा कमरा पुस्तकालय भी था और वहां मैंने बड़ा आनन्दमय संध्या-काल गुजारा। वहां मैंने अलभ्य पुस्तकें देखीं और पहली बार अपने प्रिय अंग्रेज़ी लेखकों की, जिनमें से बहुत सारे बहुत दिन पहले मर चुके थे, स्वाक्षरियां (आटोग्राफ्स या हस्ताक्षर) देखीं। इस प्रकार मैंने चार्ल्स डिकैन्स और राबर्ट ब्राऊनिंग, थैकरे और लार्ड बायरन तथा जार्ज इलियट का हस्त-लेख देखा और डा० फैल्प्स ने मुझे पुस्तक-चोरों की बदमाशी के किस्से सुनाए और बताया कि किस तरह अनेक व्यक्तियों के हाथों, जिन्हें उन्होंने ईमानदार समझा था, उन्हें मूल्यवान पुस्तकों की हानि उठानी पड़ी और कहा कि यह हालत तब है जब मैं दरवाज़े के पास मेज़ पर पुस्तकें रखे रखता हूं जिनमें से कोई भी कोई पुस्तक ले जा सकता है—इतना ही है कि वे सब आधुनिक पुस्तकें हैं और मूल्यवान नहीं हैं। उन्होंने स्वीकार किया कि वे प्रकाशकों द्वारा मुफ्त भेजी गई हैं, जो प्रशंसा करने में इनकी उदारता से परिचित होने के कारण, सम्भवत. उनकी प्रशंसा के इच्छुक होते थे। विलियम फैल्प्स इतने दयापूर्ण थे कि आलोचक नहीं हो सकते थे और इसका कारण यह था कि वे स्वयं लेखक होते-होते रह गए हैं। उनमें लेखक का स्वभाव था और वे अच्छी तरह समझते थे कि पुस्तक की रचना करना और क्षण भर में उसका ऐसे व्यक्ति द्वारा नाश किए जाते देखना, जो स्वयं उपन्यास का एक पृष्ठ भी नहीं लिख सकता, क्या चीज़ है। मुझे इसमें सन्देह नहीं कि लेखक आम तौर से घटिया आलोचक होते हैं और अपने बारे में तो निश्चय ही, पर इसका विलोम और भी अधिक सच है। फिर भी विलियम फैल्प्स जितने लगते थे उससे अधिक गहरे थे, और वे किसी पुस्तक के अन्तिम महत्त्व को अच्छी तरह जांच सकते

थे और जब वह उनकी पसन्द न होती, तब उसकी पूर्णतया उपेक्षा कर देते थे।

यह बड़ा शानदार सायंकाल था। मैंने इसका पूरा आनन्द लिया और किसी और प्रतिभाशाली, चपल, हाज़िरजवाब आदमी को, उसकी आनाबेल अधिक त्रुटि-हीन पत्नी नहीं मिली होगी, जो उससे प्यार करती, हंसी करती और हल्का-सा डांटती थी, और हर समय उसे संसार का सबसे अधिक आकर्षक पुरुष समझती थी और वह यह बात जानता था। दिन के समय उसने बड़ी तेज़ी से गुनगुनाकर प्रार्थना की थी और बड़ा आनन्द लेते हुए यह घटना सुनाई थी कि किस प्रकार उसकी आनाबेल ने एक बार यह शिकायत की कि वह उनकी प्रार्थना का एक शब्द भी नहीं समझ सकी और किस प्रकार उसने जवाब में कहा था, 'मैं तुमसे तो बात नहीं कर रहा था!' उसने बड़ी तेज़ी से भोजन किया, उसकी स्नायविक ऊर्जा उसकी खाई हुई कलरियों को खत्म करती जाती थी और शेष सायंकाल फिर पुस्तकों में और कुछ मित्रों का स्वागत करने में बीता, जो आए और चले गए, और इसके बाद उसने ठीक वहीं से तुरन्त अपनी बातचीत फिर आगे शुरू की, जहां वह छोड़ी थी। इसीमें स्पष्टतः सोने का समय हो गया और फिर कल का कार्यक्रम भी था और उस अगले दिन जलूस में उसके पास चलने को मैंने कितना मूल्यवान समझा और फिर दीक्षांत-भवन के मंच पर उसकी बहुत अधिक उदार विरुदावली सुनते हुए मैंने कितना अभिमान अनुभव किया—अभिमान इस कारण कि मैं उसकी उच्च भावना और उसके स्नेहपूर्ण हृदय और उसकी उदार मानवता को, जो ऐसी सादगी और सरलता से घिरी मालूम होती थी, जो कि परिष्कार का अन्तिम रूप है, जानती और मूल्यवान समझती थी। वह किसी भी देश के किसी भी आदमी से बातचीत कर सकता था और उस बातचीत में आनन्द लेता था क्योंकि उसकी दिलचस्पी के विषय सारे संसार जितने व्यापक थे। जब वह कुछ वर्ष बाद मर गया, तब मेरे सर्वोत्तम अमरीकन मित्रों से एक जाता रहा।

उस वर्ष की एक और अन्तिम घटना कोलम्बिया विश्वविद्यालय के चीनी छात्रों द्वारा मुझे दिया गया भोज था। इस समय तक मुझे यह पता चल गया था कि कुछ चीनी बुद्धिजीवी 'दि गुड अर्थ' की सफलता से खुश न थे। उन्होंने इस बात पर मुझे उलाहना दिया कि मैंने उन लोगों के बजाय किसानों के बारे में अपनी पुस्तक लिखी और जब मैं उस वर्ष अमरीका में थी, तब उनमें से एक ने 'न्यूयार्क टाइम्स' के द्वारा भी मेरी निन्दा करने का यत्न किया। उसका पत्र इतना मनोरंजक था और बुद्धि-

जीवियों की भावनाओं को इतनी अच्छी तरह प्रकट करता था कि उसका एक अंश मैं नीचे देती हूं और अपने साथ न्याय करने के लिए अपना उत्तर भी पुनः यहां प्रकाशित कर देती हूं।

'चीनी चित्रकला बहुत समय पहले अपने उत्कर्ष की उच्च अवस्था में पहुंच गई थी और सुंग तांग और बहुत बाद के चिन-राजवंशों की कलाकृतियां भी पश्चिमवालों को उनका परिचय होने के बाद से पश्चिमी कलाकारों और पश्चिमी कला-मर्मज्ञों के लिए प्रेरणा की स्रोत रही हैं परन्तु भित्ति-चित्रों और पीतल पर सुनहरे पालिश के काम को छोड़कर अन्य चीनी चित्र सदा रेशम या कागज़ पर स्याही और ब्रुश से काले और सफेद रंगों में या विविध रंगों में बनाए जाते हैं, और चीन में तेल-चित्र कभी नहीं बनाए गए। पूर्वजों का चित्र–जो व्यक्ति के जीवित होने पर बनाया जाता है, पर पूरा मृत्यु के बाद किया जाता है, जिसमें भावी पीढ़ियां उसकी पूजा कर सकें–विशेष रूप से सूक्ष्मतापूर्ण रूढ़ि और सुनिश्चित कलाशिल्प का विषय होता है। प्रस्तुत व्यक्ति का दोनों कानों सहित पूरा चेहरा दिखाया जाना चाहिए और वह उत्सवोचित वेष में होना चाहिए, उसके उचित सरकारी पद का संकेत रहना चाहिए और वह परम्परा से निर्धारित स्थिति में बैठा होना चाहिए।

'एक बार एक चीनी अफसर पश्चिमी कलाशैली के एक कलाकार से अपना चित्र बनवाने बैठा। काम खत्म हो जाने पर उसने देखा कि उसका सरकारी बटन, जो उसकी टोपी के ऊपर था, छिप गया है और इसके अतिरिक्त, उसका चेहरा आधा काला और आधा सफेद था। वह बड़ा क्रुद्ध हुआ और कलाकार के किसी भी स्पष्टीकरण या क्षमा को स्वीकार करने को तैयार न हुआ––सही छवि-अंकन (पोर्ट्रेचर) और नेत्र-दृश्य (प्रोस्पैक्टिव) के प्रयोग की उनकी धारणाओं में कितना अधिक अन्तर था।

'मेरे मन में पर्ल एस. बक के चीनी जीवन के उपन्यास पढ़ने पर प्रायः वही भावना पैदा होती है। चीन का अंकन उसके अपने दृष्टिकोण से बिल्कुल सच्चा हो सकता है पर वह निश्चय ही चीन का आधा काला और आधा सफेद चेहरा बनाती है, और सरकारी बटन नदारद है! इसके अतिरिक्त, उसे सामान्य मानवीय रूपों को अपने-अपने उचित अनुपात में पेश करने की अपेक्षा कुछ विचित्रताओं और त्रुटियों का भी वर्णन करने में अधिक आनन्द आता मालूम होता है। वह ऐसी बातों

को विस्तार देती है, उन्हें तीव्र बनाती है और कभी-कभी उस तरह की बहुत सारी और बहुत अधिक चीज़ एक व्यक्ति पर 'ला फेंकती है' और इस प्रकार उस व्यक्ति को वास्तविक जीवन में लगभग असम्भव बना देती है। इस दृष्टि से पर्ल बक छवि चित्रकार की अपेक्षा विद्रूप-व्यंगकार अधिक है।

'मुझे स्वीकार करना चाहिए कि मैंने चीन के विषयों पर पश्चिमी लेखकों की रचनाएं पढ़ने की ओर ध्यान नहीं दिया और चीन के बारे में उनके उपन्यासों की तो और भी कम परवाह की। अपने बहुत-से अमरीकन और कनाडिया मित्रों के बार-बार पर्ल बक की रचनाओं के बारे में पूछने पर मैंने 'दि गुड अर्थ' उठाया और एक दिन शाम को उसपर नज़र डाली। मुझे बार-बार कुछ नीची जाति के चीनी पात्रों की कुछ विचित्रताओं और त्रुटियों का उसका सूक्ष्म वर्णन पढ़कर बेचैनी हुई। जिस चीनी जीवन को मैं जानता हूं, उसमें वे पूरी तरह अयथार्थ न होते हुए भी, निश्चय ही बहुत असामान्य हैं।

'उसे मानव-स्वभाव के कमजोर स्थल, अर्थात् यौन पहलू की आलोचना करने का शौक है। उसके कुछ चतुराई-भरी व्यंजनाएं इस हर-दिल-पसन्द मामले को पाठक के लिए असाधारण रूप से मर्मस्पर्शी और रोमांचकारी बना देती हैं। यह सच है कि जीवन का केन्द्र-बिन्दु यौन है, और यह भी सच है कि यौन जीवन के विश्लेषणात्मक अध्ययन से यह भोजन और पानी की तरह सीधा और आवश्यक सिद्ध होता है, पर अश्लील व्यंजनाएं घृणापूर्ण वर्णन से बुरी चीज़ हैं। इसी कारण पतले मोज़े और ऊंचे लहंगे नग्न चित्रादर्श (माडल) की अपेक्षा अधिक कामोत्तेजक होते हैं। मैं यौन नैतिकता के बारे में किसी रूढ़ आदर्श का समर्थन नहीं करना चाहता, पर यह अवश्य मानता हूं कि काम-भाव को जितना कम आन्दोलित किया जाएगा, मनुष्य के लिए उतना ही अच्छा होगा। हमारी नई पीढ़ियों के लिए स्वाभाविक स्वस्थ और अबाध यौन अभिव्यक्ति बहुत अधिक अभीष्ट है, पर उस तरह की दयनीय और अस्वस्थ प्रकार की अभिव्यक्ति अभीष्ट नहीं जो पर्ल बक की रचनाओं में मुख्यतः पेश की गई है।

'अपनी रचनाओं में वह उन चीनी मज़दूरों और नौकरानियों के प्रभाव में बिताया हुआ अपना बचपन का जीवन भी चित्रित करती है जो प्रायः यांगत्से कियांग कांठे के उत्तर के सबसे निचले वर्ग के गरीब परिवारों के लोग होते हैं। निःसन्देह उनमें काफी ईमानदार और अच्छे देहाती लोग भी होते हैं जो घर के काम

में परिश्रम और वफादारी से सेवा करते हैं। जीवन के बारे में उनका विचार अजीब होता है और उनका सामान्य ज्ञान सीमित होता है। चीनी आबादी में उनकी बहुत संख्या हो सकती है पर निश्चय ही वे चीनी जनता के प्रतिनिधि नहीं हैं।'

इस पत्र पर मैंने 'न्यूयार्क टाइम्स' की प्रार्थना पर अपना जो उत्तर लिखा और जो उसी अंक १५ जनवरी, १९३३, में प्रकाशित हुआ, उसका कुछ अंश निम्न था :

'अपनी रचना के बारे में किसी चीनी सम्मति में, चाहे वह कितनी ही एकांगी हो, मेरी सदा दिलचस्पी रहती है, और सचाई से प्रस्तुत दृष्टिकोण से, चाहे वह कुछ भी हो, मुझे पूरी सहानुभूति रहती है। उसी सचाई की भावना से में प्रोफेसर कियांग द्वारा उठाए गए कुछ नुक्तों पर विचार करूंगी।

' प्रथम तो मैं यह कहना चाहती हूं कि उनका यह कथन स्पष्टतः सही है कि मैंने चीनियों का वह चित्र खींचा है जो सामान्य चित्र नहीं है, और उन चित्रों जैसा भी नहीं है जो आम तौर से चित्रादर्श की मृत्यु से पहले पूरे नहीं किए जाते। जो उन चित्रों के बारे में जानता है उसे यह महसूस हुए बिना नहीं रहता कि वे जीवन के सत्य से कितनी दूर होते हैं—एक निश्चित आसन, व्यवस्थित सलवट, गम्भीर भव्य मुख-मुद्रा, सरकारी बटन। मैंने प्रकाश और छाया का प्रयोग किया है। सरकारी बटन मैंने जान-बूझकर छोड़ दिया है। मे चित्र के आदर्श से यह नहीं पूछती कि वह अपने-आपको पहचानता है या नहीं——मुझे भय रहता है कि कहीं वह सरकारी बटन से युक्त चित्र ही अधिक पसन्द न करता हो! मैं उसे केवल वैसा चित्रित करती हूं जैसा वह मुझे लगता है। न मैं क्षमा-याचना करती हूं······

' पर मेरे लिए मेरी पुस्तक से सम्बन्धित मामलों की अपेक्षा, जो आखिरकार अपनी-अपनी राय के मामले हैं और इसलिए महत्त्व के नहीं, अधिक दिलचस्प वह दृष्टिकोण है जो प्रोफेसर कियांग के पत्र में प्रकट हुआ है। जब वे कहते हैं, 'उनकी'—जिससे उनका अभिप्राय है चीन की आम जनता—'चीन की आबादी में बहुसंख्या हो सकती है, पर वे निश्चय ही चीनी जनता के प्रतिनिधि नहीं,' तो मैं यह पूछे बिना नहीं रह सकती कि किसी देश की बहुसंख्या उस देश की प्रतिनिधि नहीं तो आखिर कौन उसका प्रतिनिधि है ?

' पर मैं जानती हूं कि प्रोफेसर कियांग क्या चाहते हैं : उनके जैसे अन्य कई

लोग भी हैं। वे चाहते हैं कि चीनी जनता का प्रतिनिधि उसके मुट्ठी भर बुद्धि-जीवियों को माना जाए और वे चाहते हैं कि विशाल, सम्पन्न, गम्भीर, हर्षपूर्ण चीनी जीवन का प्रतिनिधि केवल उसके पुराने इतिहास को, मृतों के चित्रों और प्राचीन और अभिजात-साहित्य को माना जाए। ये चीजें मूल्यवान् हैं और निश्चय ही चीनी सभ्यता का भाग है, पर वे केवल सरकारी बटन हैं, क्योंकि क्या जनता को, चीन के शानदार जनसाधारण को, जो विनाशकारी प्रकृति, युद्धच्छिन्न सरकार और छोटे-से उदासीन बुद्धिजीवियों के उच्चवर्ग की कठिनाइयों का सामना करता हुआ अपना विशाल सचेष्ट जीवन बिता रहे हों, नगण्य माना जाएगा? सत्य का पक्ष देखते हुए मैं कभी इस बात से सहमत नहीं हो सकती।

'मैं अपने हज़ारों अनुभवों से उस प्रवृत्ति से परिचित हूं जो प्रोफेसर कियांग के इस लेख में फिर प्रकट हुई है। मैंने इसे मेहनतकश पर किए जा रहे क्रूर कार्यों में, सत्यनिष्ठ अनपढ़ किसान के प्रति तुच्छ भावना में, सर्वहारा के हितों की सर्वांगीण उपेक्षा में प्रकट होते देखा है और इसका ही परिणाम यह है कि संसार के किसी देश के जनसाधारण को अपने ही आर्गनिक, सैनिक और बौद्धिक नेताओं के हाथों उतना कष्ट नहीं भोगना पड़ा जितना चीनी लोगों को भोगना पड़ा है। चीन में आम जनता और बुद्धिजीवियों के बीच अलगाव बड़ा अर्थपूर्ण है। यह ऐसी खाई है जिसका पटना असम्भव है। मैं आम लोगों के साथ रही हूं और पिछले पन्द्रह वर्षों में मैं बुद्धिजीवियों के साथ रही हूं और मैं जानती हूं कि मैं कहां की चर्चा कर रही हूं।

'प्रोफेसर कियांग जब तुच्छता-व्यंजक शब्दों में अपने लोगों को 'कुली', 'मज़-दूर' और 'नौकरानी' कहते हैं, तब वे स्वयं अपने लोगों को गलत रूप में समझने की प्रवृत्ति का नमूना पेश करते हैं। यदि वे 'मज़दूरों' को समझते होते तो उन्हें पता चलता कि उन लोगों को यह नाम डंक की तरह चुभता है। 'आमा' भी नौकर का वाचक शब्द मात्र है। मेरे बचपन के घर में हमारा माली किसान था जिसका हम आदर करते थे और हमें कभी उसे 'कुली' कहने की छूट न थी और न मेरे अपने बच्चों को अब हमारे घर में इसका प्रयोग करने की छूट है। अपनी परिचा-रिका को हम कभी भी 'आमा' नहीं कहते थे, बल्कि सदा धाय कहते थे और उसने हमें सदा अच्छी बातें सिखाईं और हम उससे बड़ा प्यार करते थे और उसकी आज्ञाएं वैसे ही मानते थे जैसे मां की। यह सच है कि वह देहाती थी पर यदि उसकी

जीवन की धारणा 'अनिवार्यतः अजीब' थी और 'उसका सामान्य ज्ञान सीमित' था तो मुझे इसका कभी पता नहीं चला। मेरे लिए तो वह मेरी धाय थी। आज मेरे घर में मेरे बच्चे एक और देहाती स्त्री से इतना प्यार और आदर करते हैं और उसे भी वे 'आमा' न कहकर उसी पुराने मधुर नाम से पुकारते हैं क्योंकि यह स्त्री निरी नौकर नहीं बल्कि हमारी निष्ठावान मित्र और बच्चों की सच्ची धाय है। मैं उसके प्रति कभी वैसी धारणा नहीं रख सकती जैसी प्रो. कियांग रखते हैं।

'जो बात कुछ चीनी बुद्धिजीवियों की पकड़ में नहीं आती मालूम होती वह यह है कि उन्हें अपने जनसाधारण पर अभिमान करना चाहिए, कि जनसाधारण चीन की शक्ति और गौरव है। अब यह सोचने का समय गुज़र चुका कि पश्चिम-को यह विश्वास कराया जा सकता है कि चीन की जनता पूर्वजों के छवि-चित्रों की तरह लगती है। अखबार और पर्यटक चीन के डाकुओं और अकालों तथा गृहयुद्धों के बारे में सब बताते रहते हैं। 'मन्स' में वर्णित एक घटना भी ऐसी नहीं जिसके समकक्ष घटना पिछले पन्द्रह वर्षों में मेरे अपने ज्ञान के अन्दर न घटी हुई हो। सारी तस्वीर में हल्का करने वाली बात जन-साधारण की श्रेष्ठता ही है जो अपने ज़माने के उतार-चढ़ावों को ऐसी उच्च कोटि की दृढ़ता से सहन करते हैं .....

'पर मैंने काफी कह दिया है। मेरी पुस्तकों में अश्लीलता होने का जो आरोप प्रोफेसर कियांग ने लगाया है, उसके बारे में मैं कुछ नहीं कहूंगी। मिशनरियों के सबसे अधिक तंग विचारों वाले सम्प्रदाय उनसे सहमत हैं और मैं समझती हूं कि प्रकृत यौन जीवन का यह भय किसी तरह के प्रशिक्षण का परिणाम है। मुझे पता नहीं। इतना कहना काफी है कि मैंने वैसा ही लिखा है जैसा देखा और सुना है।

'इस प्रश्न का उत्तर तो समय ही देगा कि मैं अपनी पुस्तकों में चीन की सेवा कर रही हूं या नहीं। मुझे लोगों के बहुत-से पत्र मिले हैं जिन्होंने लिखा है कि मेरी पुस्तकें पढ़कर उन्हें चीन में पहली बार दिलचस्पी पैदा हुई है, कि अब उन्हें चीनी लोग मनुष्य दिखाई देते हैं, और इसी तरह की अन्य बातें हैं। जहां तक मेरा सम्बन्ध है, मेरे मन में कोई हितकर प्रचार की या कोई सेवा करने की भावना नहीं रही। मैं इसलिए लिखती हूं कि लिखना मेरा स्वभाव है और मैं वही लिख सकती हूं जो मैं जानती हूं, और चीन के अलावा मैं और कुछ नहीं जानती क्योंकि मैं सदा वहीं रही हूं। मेरे अपनी जाति के बहुत कम मित्र थे और उनमें भी घनिष्ठ प्रायः कोई नहीं था और इसलिए मैं उनके बारे में लिखती हूं जिन्हें मैं जानती हूं। मुझे चीन

के उन लोगों में रहना सबसे अच्छा लगता है जो चीन के रोज़मर्रा के लोग हैं जो सरकारी बटनों की कोई परवाह नहीं करते।'—पर्ल एस. बक।

अगले दिन 'न्यूयार्क टाइम्स' ने अपने सम्पादकीय पृष्ठ पर इस कथन पर जो टिप्पणी की, उसका कुछ अंश निम्न है :

'प्रोफेसर कियांग कांग-हु ने अपने 'पूर्वजों के चित्र' वाले दृष्टांत से अपना पक्ष स्वयं गिरा लिया। यद्यपि वह चित्रादर्श के जीवित होते हुए बनाया जाता है पर उसे पूरा मृत्यु के बाद किया जाता है और उसे एक निश्चित कला-शिल्प से ही अंकित करना पड़ता है। प्रस्तुत व्यक्ति को नियत आसन में—'दोनों कानों सहित पूरा चेहरा'—और उत्सवोचित वेश में दिखाना होगा, कुछ रूढ़ियों का अनुसरण करना होगा; चाहे उनसे सच्ची प्रति बनाने में रुकावट पड़े और नेत्र-दृश्य (पर्स्पेक्टिव) तथा प्रकाश और छाया के सब नियमों का अतिक्रमण हो जाए। जहां तक चीनी अफसर का सम्बन्ध है, सरकारी बटन अवश्य दीखना चाहिए। चीनी जीवन के जो चित्र श्रीमती बक ने खींचे हैं, उनपर प्रोफेसर कियांग की यह आलोचना है कि उन्होंने रूढ़ियों का पालन नहीं किया : कि चीन को 'आधे काले और आधे सफेद चेहरे' वाला चित्रित किया गया है और कि सरकारी बटन नदारद है।

'श्रीमती बक स्वीकार करती हैं कि उन्होंने रूढ़िबद्ध चित्र नहीं खींचा। उन्होंने चीनी व्यक्ति को, जन-साधारण में और बुद्धिजीवियों में भी, जैसा अपने जीवन में देखा, उसे वैसा ही उपस्थित करने में प्रकाश और छाया का प्रयोग किया है। जहां तक सूक्ष्म विवरण की यथार्थता का प्रश्न है, वे चीन के क्षेत्र से, जिसमें उन्होंने अपने बचपन से लेकर काफी वर्ष बिताए हैं, प्रचुर साक्ष्य प्रस्तुत कर सकती हैं। चीन में स्थानीय रीति-रिवाजों में इतना भेद है कि कोई भी व्यक्ति कोई सामान्य और व्यापक कथन नहीं कर सकता। उन्होंने अपने स्थानीय विवरणों की सत्यता की पुष्टि अपने पड़ौसी चीनी मित्रों को सुनाकर कर ली है। प्रोफेसर कियांग की आलोचना यह है कि श्रीमती बक चीनी कुलियों और आमाओं पर अधिक निर्भर हो गई है, 'मुट्ठी भर बुद्धिजीवियों पर नहीं'—जैसा कि श्रीमती बक ने जन-साधारण की तुच्छता-व्यंजक शब्दों में चर्चा करने वालों को निरूपित किया है—और इस जन-साधारण तथा बुद्धिजीवीवर्ग के बीच अर्थपूर्ण खाई है, जो श्रीमती

बक को मालूम होता है कि पार्टी नहीं जा सकती।

'श्रीमती बक के लिए वे लोग, जो चीन की आबादी का बहुत बड़ा बहुसंख्यक भाग है, चीनी जीवन के—विशाल, सम्पन्न, गम्भीर, हर्षपूर्ण चीनी जीवन के—सचमुच प्रतिनिधि हैं, जो शानदार जन-साधारण है जो विनाशकारी प्रकृति, युद्ध-छिन्न सरकार तथा छोटे-से उदासीन बुद्धिजीवीवर्ग की कठिनाइयों का सामना करते हुए अपना विशाल सचेष्ट जीवन बिता रहे हैं।

'वे चीन की शक्ति और गौरव हैं जो अपने ज़माने के उतार-चढ़ावों को उल्लेखनीय दृढ़ता से सह रहे हैं। आज चीन को समझने और उसका स्वरूप प्रकट करने के लिए पुराने ग्रंथ पढ़ने की आवश्यकता नहीं, जिसे प्रो. कियांग आवश्यक समझते हैं। वहां के जीवन के किसी रूढ़िबद्ध चित्रण से पश्चिम वालों को यह नहीं समझाया जा सकता कि लोग सचमुच उन पूर्वजों के चित्रों-से लगते हैं जिन्हें प्रो० कियांग हमें स्वर्गोपम साम्राज्य का सच्चा प्रतिनिधि मानने के लिए कह रहे हैं। श्रीमती बक ने हमें एक पीड़ित जनता के धैर्य, मितव्ययिता, उद्योग और अदम्य विनोद-प्रियता देखने और समझने में समर्थ बनाया है जिसके घरों को शासन-कर्ता बुद्धि-जीवी दुनिया की नज़रों से छिपाना चाहते हैं।'

आइए, फिर न्यूयार्क में छात्रों के भोज पर लौट आएं—यह आनन्ददायक अवसर था, पर वर्षों तक चीनियों में रहने से मेरे अन्दर जो छठी अन्तर्ज्ञान कराने वाली इन्द्रिय परिवर्धित हो गई थी, उसने मुझे चेताया कि इसका केवल सौजन्य-प्रदर्शन से अधिक गहरा प्रयोजन है। यह प्रयोजन निःसन्देह अन्तिम भाषण में प्रकट होता और इसलिए मैं पूर्वज्ञान से मनोरंजन अनुभव करती हुई प्रतीक्षा करती रही। यथासमय अन्तिम वक्ता खड़ा हुआ। वह एक सुन्दर, दिल की बात कहने वाली तरुण चीनी थी जिसका नाम मैं भूल गई और खुशामद तथा बधाई के बाद उस संध्या का सारतत्त्व सामने आया। वे यह नहीं चाहते थे कि शुई हू चुआन का अनुवाद या 'सब मनुष्य भाई हैं,' को पश्चिम वालों के पढ़ने के लिए प्रकाशित न किया जाए। कारण क्या था? क्योंकि, उस नौजवान ने कहा, इसके एक भाग में यह वर्णन है कि एक पतित पुजारी भूख से विवश होकर मनुष्य का मांस खाता है।

'यदि पश्चिम वाले यह पुस्तक पढ़ेंगे तो यह सोचेंगे कि हम चीनी लोग असभ्य हैं,' उस सुन्दर नौजवान ने शर्म से लाल होते हुए कहा।

इतने बढ़िया भोज के बाद उनकी प्रार्थना अस्वीकार करना कठिन था और मैंने भरसक नम्रता से पर दृढ़ता से उत्तर दिया। मैंने उनसे यह विचार करने की प्रार्थना की कि वह पुस्तक सैकड़ों वर्ष पुरानी है, यहां तक कि शेक्सपियर से भी पहले की है। यदि उदाहरण के लिए, अंग्रेज़ों ने जादूगरनियों के कारण मैकबेथ का प्रचार रोकना चाहा होता तो संसार में सब देशों के साहित्य को कितनी हानि होती! निश्चय ही यह चीन की महानता है, इत्यादि।

जिस बात से मुझे खिन्नता हुई वह यह थी कि यहां न्यूयार्क में लम्बी मेज़ के इर्द-गिर्द जमा वही चीनी मैंने देखे जो गम्भीरता से और न जानते हुए अपने देश और संस्कृति का विनाश कर रहे थे। फिर भी वे जो कुछ कर रहे थे, उमे समझ नहीं सकते थे क्योंकि जब उन्हें बताया जाता तब वे उसपर विश्वास नहीं कर सकते थे। मैं पहले ही यह समझ चुकी थी कि लोगों को वही बात सिखाई जा सकती है जिसे सीखने के वे योग्य हैं। यह पाठ मुझे वर्षों बाद अपने ही देश में याद करने की आवश्यकता पड़ी। उस समय तक डाक्टर कियांग चीन में एक कम्यूनिस्ट जेल में मर चुके थे और वहां कम्यूनिस्ट शासक थे।

मैं उस साल योरुप के रास्ते इंगलैंड और मनोरम लेक कन्ट्री में कुछ दिन अधिक लगाकर चीन लौटी। उस युद्ध-पूर्व के इंगलैंड की स्मृति के ऊपर एक सुन्दर कोहरा पड़ा है, दृश्यों और अनुभवों का एक सिलसिला है, शान्त कस्बों और पुराने नगरों में दूसरा महायुद्ध वैसा ही असम्भव मालूम होता था, जैसा कभी प्रथम महायुद्ध मालूम होता था और देहात सौन्दर्य में डूबा हुआ था।

एक दिन स्मृति में से उछलकर उभर आता है। सिडनी वैब दम्पति ने मुझे दोपहर के भोजन का निमन्त्रण दिया था और वह मैंने स्वीकार कर लिया था। वे वृद्ध हो चुके थे और देहात में रह रहे थे और यद्यपि उन्होंने मुझे रास्ते के बारे में विस्तृत निर्देश दे दिए थे, पर मैं एक या दो बार कुछ रास्ता भटक गई और थोड़ी देर से पहुंची। अन्त में मैं सम्भाव्य गली में मुड़ी और वहां परले सिरे पर मैंने दो आकृतियां देखीं जो निश्चय ही इंगलैंड के अलावा और कहीं नहीं हो सकती थीं। एक लकड़ी की बेंच पर स्थिर और राह पर आंखें लगाए वे इकट्ठे बैठे थे। सिडनी वैब के हाथ अपनी छड़ी की सोने की मूठ पर एक-दूसरे के ऊपर थे और एकटक गली की ओर ताकते हुए उसकी दाढ़ी ऊपर को उठी थी और उसके पास

श्रीमती वैब नीचे तक का लहंगा और स्लेटी सूती फ्राक तथा सफेद टोप पहने बिल्कुल सीधी बैठी हुई सड़क पर टकटकी लगाए हुए थी। जब उन्होंने मेरी कार देखी, तब वे अगल-बगल खड़े हो गए और हाथ हिलाने लगे और फिर रास्ता दिखाने के लिए आगे बढ़ आए। श्रीमती वैब बीच-बीच में मुड़कर मुझे उतरने के लिए कार रोकने से मना करने के अभिप्राय से अपना सिर हिलाती थी और फिर हाथ फैलाकर संकेत करती थी कि मैं आगे बढ़ती जाऊं। कुछ मिनटों में हम एक साफ-सुथरे लॉन और मध्यम दर्जे के मकान में पहुंचे। मैं रुकी और बाहर निकली और हमने हाथ मिलाए।

'तुम रास्ता भूल गई' श्रीमती वैब ने दोष देने की ध्वनि में कहा।

'जी, हां,' मैंने उत्तर दिया और क्षमा मांगी।

'निश्चय ही निर्देश तो स्पष्ट थे?' उन्होंने अब भी ज़रा सख्ती से कहा।

मैंने दिशा-ज्ञान के बारे में अपनी स्वभावगत मूढ़ता बताई जिसे उन्होंने बिना प्रतिवाद के स्वीकार कर लिया।

हर कोई प्रतीक्षा कर रहा था। नौकरानियां, एक कुत्ता और एक और अतिथि। यह एक अमरीकन पुरुष था और प्रायः तुरन्त ही हमें मेज़ पर पहुंचा दिया गया। श्रीमती वैब अब भी मौब कैप (घर में लगाने का टोप) लगाए थी जिसका रफल (छज्जा) उसके चेहरे पर इतना लटका था कि लेडी तथा मार्क्विस डिक स्विवेलर का स्मरण आ जाता है। उस स्मरणीय दिन की मुझे केवल यही घटनाएं याद हैं जो मुझे सचमुच चकित करने वाली थीं। भोजन के बीच में बात-चीत होती रही, पर वह वैब दम्पति के बीच ही होती रही और दोनों अतिथि ध्यान से सुनते रहे। अमरीकन ने—जो ज़रा भावुकता-शून्य और विनोद-हीन-सा नौज-वान था और इंगलैंड में नया ही आया था—सोडावाटर की साईफन बोतल को गलत ढंग से पकड़कर और अकस्मात् पानी की पूरी फुहार सिडनी वैब के चेहरे पर छोड़कर हम सबको चौंका दिया। वह इस समय बोल रहे थे और जो कुछ हो गया उसपर अमरीकन इतना अवाक् हो गया था कि वह साईफन से तुरन्त अपनी उंगली नहीं हटा सका। पानी की धार सिडनी वैब के गालों से चूने लगी और उसकी दाढ़ी को भी गीला करती हुई उसकी प्लेट में गिरी। उन्होंने एक बार दबी सांस छोड़ी और फिर सीधे इस तरह चलते गए जैसे कुछ भी नहीं हो रहा था। श्रीमती वैब ने दृढ़तापूर्वक उस घटना को उपेक्षित कर दिया। वह स्थिर चित्त से

अपने भोजन में लगी रही और उधर नौकरानी ने अमरीकन से बोतल छीनी और दूसरी ने सिडनी वैब की प्लेट उठा ली। इसके बाद बातचीत का सूत्र साहस के साथ श्रीमती वैब ने संभाला और सिडनी वैब ने चुपचाप तौलिए से अपना मुंह पोंछा। उसकी दिलचस्पी नम्रतापूर्वक श्रीमती वैब के कथन पर लगी रही। अमरीकन के मुंह से कोई बात न निकली और भोजन के अन्त तक वह ऐसा ही रहा।

भोजन के समाप्त हो जाने पर श्रीमती वैब ने कहा कि हम थोड़ी सैर करेंगे जो उनके पति के स्वास्थ्य के लिए अच्छी है। सिडनी वैब इसके लिए अनिच्छुक दिखाई दिए, यद्यपि वे उनके कहने पर तैयार हो गए और जब हम बाहर गए तब हमने अमरीकन को श्रीमती वैब के साथ आगे जाने दिया और सिडनी वैब ने मुझसे धीरे से कहा कि मुझे यह घूमना नापसन्द है। फिर भी हम चलते गए श्रीमती वैब बड़ी तेज़ चाल से चल रही थी और थोड़ी-थोड़ी देर बाद रुककर मुड़कर हमें आगे आने को कहती थी। एक घण्टा घूमने के बाद हम घर आए और मैंने जाने की अनुमति मांगी, पर श्रीमती वब्र मुझे जाने देना चाहती थी। अब भी मौबकैप पहने हुए उन्होंने अपनी तर्जनी मेरी ओर उठाई।

'अब यह बताओ,' उन्होंने अपनी बहुत निश्चयात्मक आवाज में और भेदने वाली स्पष्ट दृष्टि मुझपर गड़ाते हुए कहा, 'तुमने अपने गुड अर्थ में समकामिता (पुरुष की पुरुष के प्रति या स्त्री की स्त्री के प्रति कामुक प्रवृत्ति) क्यों नहीं रखी क्योंकि यह तो है ही, तुम जानती हो पुरुषों में!'

में एकाएक चौंक जाने के कारण हल्का-सा जवाब दे सकी, 'मैंने इसके बारे में कभी सोचा नहीं।'

'आह, तुम्हें सोचना चाहिए,' श्रीमती वैब ने उलाहना देते हुए कहा।

में प्रकृतिस्थ हो गई। 'असल में, श्रीमती वैब, मेरा ख्याल है कि मुझे इस विषय में कोई जानकारी नहीं है और यदि आप मेरी राय पूछें तो मैं यह कहूंगी कि औरों की अपेक्षा चीनियों में कम समकामिता है।'

'ठहरो, ठहरो,' श्रीमती वैब ने अब भी अपनी तर्जनी ताने हुए कहा, 'तुमने अभी तो कहा कि तुम्हें कोई जानकारी नहीं है।'

'नहीं, पर जैसे ज़रा ऊंचे स्वर से सोच रही हूं, 'श्रीमती वैब,' मैंने कहा, 'आप जानती हैं, चीनी परिवार अपने पुत्रों का विवाह जल्दी कर देते हैं, और इसके अतिरिक्त, उन देशों में कभी अधिक समकामिता नहीं रही। जहां वास्तविक सैनिक-

वादिता नहीं है जहां नौजवानों को उस समय छोटी आयु में, जबकि उनके काम-आवेग सबसे अधिक उद्दाम होते हैं, अलग कैम्पों में नहीं डाला जाता, इत्यादि।

वे एकाएक मान गई और उनकी तर्जनी पीछे हट गई। 'शायद तुम्हारा कहना ठीक है,' उन्होंने सहसा कहा।

मैं चल पड़ी और मेरे साथ अमरीकन भी था। और गली के मोड़ पर हम पीछे मुड़कर देखने के लिए रुके तो स्नेही वृद्ध दम्पति हमारे पीछे-पीछे आए थे और फिर अगल-बगल बेंच पर बैठे थे। सिडनी वैब के हाथ उसकी सोने की मूठ वाली छड़ी पर एक-दूसरे पर रखे थे और श्रीमती वैब सीधी बैठी थी। उनकी मौब कैप का बर्फ-सा सफेद किनारा हवा में फड़फड़ा रहा था।

अंग्रेज़ी देहात से मैं फिर एक बार लन्दन आ गई—जान-बूझकर लन्दन के डिकेन्स-कालीन अतीत का पता लगाने के लिए, जिसे पहली बार मैंने बहुत दिन पहले उस चीनी पहाड़ी पर अपने बंगले के चौड़े दक्षिणी बरामदे पर देखा था। मुझे याद है कि एक दिन शहर में चक्कर काटते हुए मैं पुरानी अद्भुत वस्तुओं की दुकान पर पहुंच गई। यह वैसी ही थी जैसी मैंने कल्पना की थी और मैं कई मिनट तक आनन्दमय स्वप्न में इसे ताकती खड़ी रही जिससे मेरे खड़े होने की जगह पटरी का रास्ता रुक गया और मानवीय भंवर पैदा हो गई जिससे पैदल चलने वालों को मजबूरन मेरे एक तरफ अलग होना पड़ता था और फिर दूसरी तरफ वे मिल पाते थे, और वे अविचल अंग्रेज़ी धैर्य से यह करते थे। इसी प्रकार इनर टैम्पल की धुंधली और तंग गलियों में चार्ल्स लैम्ब भी पुनः जीवित हो गया।

लन्दन से फिर मैं स्वीडन गई और मैंने इसे इतना आधुनिक देश पाया कि बहुत-सी दृष्टियों से मुझे इसे देखकर अमरीका का ध्यान आया। अन्तर इतना था कि छोटा देश होने के कारण यह अधिक सुसंगठित और सुशासित था। शान्तिकाल में और युद्धकाल में भी, छोटा होने के लाभ हैं। मैं समझती हूं कि स्विटज़रलैंड ने और स्वीडन ने भी तटस्थ और समृद्ध जीवन की निश्चयात्मक शक्यता सिद्ध की है बशर्ते कि वह देश विजयाभियान के मार्ग पर न हो। दूसरी तरफ हिटलर का द्रुत अभ्युदय किसी छोटे, अपेक्षाकृत इकसार, देश को छोड़कर और किसी देश में कभी नहीं हो सकता था। आजकल जब मैं अपने ही देश की कुछ ऐसी घटनाएं देखकर बार-बार बेचैनी अनुभव करती हूं, जिनसे मुझे द्वितीय महायुद्ध के पहले का स्मरण

हो आता है, तब मैं अपने देश के आकार और विविधता पर विचार करके ही अपने को पुनः आश्वस्त करती हूं। मैं अब भी मानती हूं कि हमारे देश को तानाशाही रूप देने के लिए किसी अति प्रबल मस्तिष्क से भी बड़ी चीज़ की ज़रूरत होगी, पर युद्ध के बाद मुझे बड़ी बेचैनी रही यद्यपि हिटलर ने अपनी धज्जियां स्वयं उड़ा ली थीं, और मैंने एक मेधावी जर्मन स्त्री से, जिसने नाज़ी नाटक का उत्कर्ष देखा था, यह ठीक-ठीक समझाने के लिए कहा कि जर्मनी में वह सारी क्रूरतापूर्ण प्रक्रिया कैसे हुई और उसने जो कुछ बताया, उसे मैंने एक पुस्तक में रखा है जिसका नाम है 'हाऊ इट हैपन्स'। उस पुस्तक की अन्तिम पंक्तियां ये हैं :

" 'हमारे बीच बड़ी देर तक चुप्पी रही।'

" 'क्या हमारी पुस्तक पूरी हो गई ?' अन्त में मैंने पूछा। उसने अपना सिर उठाया और मैंने उसकी गमगीन भरी आंखें देखीं। वह बोली—

"मैं एक कहानी सुनाना चाहती हूं जो एक छोटे कस्बे में रहने वाली अमरीकन लड़की के बारे में है। मुझे वह बहुत पसन्द है। वह सद्भावना से भरी हुई है। वह सामाजिक कार्यकर्ता बन गई है और मदद देना चाहती है। वह इतनी खुले दिमाग वाली है—अमरीकनों का यही गुण मुझे पसन्द है कि वे इतने खुले दिमाग वाले होते हैं, चाहे बात न भी समझें। इस लड़की का किशोर मित्र जर्मनी में था और जिस दिन जापान के साथ अस्थायी सन्धि की घोषणा हुई उस दिन वह मुझसे मिलने आई और बोली, अब यह सब निपट गया !' वह हम सबकी तरह इस बात पर खुश थी कि भीषण युद्ध खत्म हो गया, पर अगले क्षण फिर बोली, 'हमें इस सबको यथासम्भव जल्दी भूल जाना चाहिए !'

"तब मैंने कहा, 'नहीं, इसे हमें कभी नहीं भूलना चाहिए। हमें इसे सदा याद रखना चाहिए। हमें यह जानना चाहिए कि यह कैसे हुआ था ताकि यह फिर कभी न हो सके।'

" 'यही बात मैं सब अमरीकनों से कहना चाहती हूं।' "

पर उन दिनों दूसरे महायुद्ध, हिटलर के अभ्युदय, फासिज़्म के सतत दुष्ट प्रभाव की बात की कम से कम मुझे तो स्वप्न में भी सम्भावना न थी, और स्वीडन में मैंने मौज की। जब मैं वहां से चली तब मैंने विमान से पहली यात्रा की और

ऐम्सटरडम पहुंची। और मैंने देखा कि आकाश में होने पर मैं असाध्य रूप से रोगी हो जाती हूं जिससे सिद्ध हुआ कि मैं वही थी जो मैं सदा समझती रही हूं, अर्थात् आकाशीय इच्छाओं से शून्य, धरती से बंधी प्राणी। फिर मैं हालैंड में कुछ दिन रही क्योंकि मेरी मां के पूर्वज यूट्रक्ट से आए थे और बाद बेल्जियम होती हुई मैं फ्रांस गई और फ्रांस में मुझे अमरीकन मृतों के छोटे-छोटे सफेद क्रास-चिह्नों से भरे खेतों की याद आती है, और उन कब्रों की याद आती है जिनकी दीवारों पर, जैसा कि मैं कह चुकी हूं, हमारे देश के हज़ारों मृत नौजवानों के नाम खुदे हैं और मैंने तब भी यह विचार किया था कि यदि हमारे देश के योरोपीय युद्ध में पड़ने पर हमें इतनी हानि हो सकती है तो यदि हमें कभी एशिया के साथ युद्ध में पड़ना पड़े तो कितनी हानि होगी। इस सम्भावना की उपेक्षा करना असम्भव था क्योंकि अब मेरे मन में यह बात बार-बार आ रही थी कि मेरे अपने देश में नीग्रो लोगों की अवस्था और औपनिवेशिक एशिया के लोगों की अवस्था में बहुत सादृश्य है। मैंने उस दिन न्यूयार्क में नीग्रो चित्रों के सामने खड़े होकर बहुत-सी कहानियां सुनी थीं। वे वही थीं जो दुनिया के दूसरे भाग में मैं पहले जान चुकी थी और मैंने देखा था कि चित्रों में नीग्रो लोगों के मन का जो स्वरूप प्रकट हुआ था, उसमें वह उन्हीं गहरे अन्यायों और क्रूरताओं से ग्रस्त थे जो चीनी क्रान्तिकारियों के मनों और हृदयों को भी जला रही थीं। मैंने निश्चय किया कि यदि मैं कभी अपने देश में रहने के लिए लौटी तो वहां लौटने से पहले मैं भारत और हिन्दचीन तथा इण्डोनेशिया की यात्रा करूंगी और वहां के लोगों की भावनाओं का पूरा रूप स्वयं देखूंगी जिससे मनुष्य के मूल-वंशों के पारस्परिक सम्बन्धों के बारे में मेरा विश्वव्यापी दृष्टिकोण बन सके।

मेरी यूरोप-यात्रा इटली में खत्म हो गई क्योंकि वीनिस में ठहरने के बाद मैंने फिर लालसागर के रास्ते से चीन जाने वाला जहाज़ पकड़ लिया। उस सुन्दर इटालियन जहाज़ पर की गई उस यात्रा के बारे में कोई विशेष चीज़ याद नहीं है। मैंने अपना अधिकतर समय एकान्त में उन बातों पर विचार करते हुए जो मैंने अपने देश में वर्ष भर में जानी थीं, और अगले वर्ष के लिए अपने-आपको तैयार करते हुए बिताया। मैंने अपने मन में कहा कि यदि सचमुच मेरे पास चीन में बिताने के लिए एक वर्ष और हो तो वह कैसे बिताना चाहिए? निश्चय ही पढ़ने और लिखने के अलावा और किसी काम में नहीं। और जब जहाज़ शान्त समुद्र पर चलता हुआ भारत के तट की ओर बढ़ रहा था, तब डेक पर लम्बे गरम दिनों में मैंने उप-

न्यासों की एक माला का विचार सोचा जिनमें से प्रत्येक में चीनी जीवन का—शायद एशियन जीवन का ही, यदि मैं वह जानकारी संचित कर सकती—मूलगत पहलू सामने आए। पर चीन को मैं अपने हृदय के अन्तस्थल तक और अपने मस्तिष्क की अन्तिम तह तक जानती थी और जो कुछ चीन में हो रहा था, वह एशिया के किसी भी देश में होना सम्भव था बशर्ते कि पश्चिम में कोई अपूर्वदृष्ट समझदारी समय रहते स्थिति समझकर इसे रोक न दे। इस प्रकार मैंने अपने अगले उपन्यास की योजना बनाई जिसका केन्द्र चीनी इतिहास के प्रधान पात्र युद्धनायक को बनाने का निश्चय किया। निश्चय ही मैं उसे जानती थी क्योंकि अनेक दशाब्दियों तक उसके शासन के अधीन रह चुकी थी। यह मेरे अगले उपन्यास 'सन्स' का आरम्भ था।

मैं बम्बई में और फिर कोलम्बो में तट पर उतरी, पर तब मैंने भारत को बहुत अधिक देखने की कोशिश नहीं की क्योंकि मैं जानती थी कि मैं वापिस लौटूंगी। इस बार मैं केवल चीन ही नहीं लौटी बल्कि सारे एशिया को लौट रही थी। यह एशिया प्राचीन से प्राचीन था, मध्यकालीन था और फिर इसके अनेक अजीब पहलू बिल्कुल नये थे।

शांगहाई पहुंचने से पहले, जबकि मैं अभी जहाज़ पर थी, मुझे एक अमरीकन महिला का, उसके मकान पर, 'चाईना क्रिटिक' के कार्यकर्ताओं से एक भोज में मिलने का निमन्त्रण मिला। यह पत्रिका साप्ताहिक थी जिसका प्रकाशन चीनी साहित्यकारों के एक बहुत आधुनिक पश्चिमी शिक्षा पाए छोटे-से समूह द्वारा किया जाता था जिसमें लिन यूतांग भी था। तब तक मैं उससे नहीं मिली थी पर मैंने चीनी भाषा में तथा इंगलिश में 'चाईना क्रिटिक' में उसके लेख पढ़े थे। वह निबन्धकार, व्यंगकार तथा परिहास-लेखक था। उसके प्रतिस्पर्द्धी कहते थे कि उसमें गहराई नहीं, पर मुझे उसके चुभने वाले मज़ाकों और तीक्ष्ण कटाक्षों में एक चातुर्य व्यंजक यथार्थता अनुभव होती थी। उन दिनों वह चियांग काई-शेक और राष्ट्रवादी सरकार की ऐसी भयानक ईमानदारी और निर्भयता से आलोचना कर रहा था कि उसके मित्रों ने उससे 'शेर की पूंछ न मरोड़ने' की प्रार्थना की। पर वह सदा हल्केपन से लिखता था, लापरवाही से हंसने का साहस करता था जिसे कोई भी बहुत गम्भीर दृष्टि से नहीं देखता मालूम होता था पर फिर भी सब लोग इस कारण उसका आभार मानते थे कि वह काफी मात्रा में वे बातें कह देता था जिन्हें वे केवल अनुभव करने का साहस मात्र कर पाते थे।

मैंने मुख्यत: उससे मिलने के लिए भोजन का निमन्त्रण स्वीकार कर लिया और एक ऐसा आश्चर्यजनक सन्ध्याकाल बिताया जिसमें एक अन्यदेशीय अन्तर्राष्ट्रीय सुसंस्कृत-वर्ग के वाग्वैदग्ध्य और कलंककारी गपशप की पंचमेल खिचड़ी मच रही थी, जो सारी मधुर ही नहीं थी। मैं आदत के अनुसार सुनती रही और बहुत कम बोली और मैंने लिन यूतांग का, उसके घर जाने और उसकी पत्नी से मिलने का और भोजन का निमन्त्रण स्वीकार कर लिया। उसमें दूसरा अतिथि केवल हू शिह होना था।

यह दूसरा सन्ध्याकाल अधिक मनोरंजक था, क्योंकि उसके मकान पर मैं श्रीमती लिन यूतांग से, जो प्रेममयी पूर्णतया चीनी महिला थी, और उसकी छोटी लड़कियों से मिली। भोजन स्वादिष्ट था और इसका आनन्द लेते हुए अब भी मैं सुनती ही रही। इस बार यह दो प्रमुख परन्तु अजीब वैषम्य वाले चीनी सज्जनों का वार्तालाप था। दोनों आदमियों में एक-दूसरे को समझने का अभाव पहले ही स्पष्ट हो गया। हू शिह में उस अदम्य तरुण व्यक्ति के प्रति हल्का नफरत का भाव था। वह जल्दी ही चला गया और इसके बाद लिन यूतांग ने मुझे बताया कि वह स्वयं चीन के बारे में एक पुस्तक लिख रहा था। वही प्रसिद्ध पुस्तक 'माई कन्ट्री एन्ड माई पीपल' थी।

मैं वहां से बहुत देर से गई, और एक चीनी लेखक और वह भी ऐसे निडर लेखक द्वारा इंगलिश में पुस्तक लिखे जाने के विचार से मैं उत्तेजित होकर चली। मैंने सोचा कि इसके प्रभाव की कोई सीमा न होगी और मैंने तुरन्त न्यूयार्क की जॉन डे कम्पनी को पत्र लिखकर यह सिफारिश की कि इस चीनी लेखक की ओर, जो अब तक पश्चिम के लिए अपरिचित है, वह तत्काल ध्यान दे।

नार्नकिंग में वह सलेटी मकान वैसा ही खड़ा था जैसा मैं छोड़ आई थी, और मैं यह कहना चाहती हूं कि जब मैं सामने के दरवाज़े में चली, तब वह मुझे खाली लगा। नौकरों ने अपनी भरसक कोशिश की थी और सब कुछ साफ था, पर न जाने क्यों यह अब घर नहीं रहा था। मैं जितना जानती थी, उससे अधिक बदल चुकी थी। सचाई यह है कि मैंने सोचा कि फिर इसे घर बनाना होगा—शांगहाई में खरीदे हुए नये गलीचे बिछाने चाहिए और दरवाज़ों के आगे चबूतरा बनाना चाहिए। अगर मैं कुछ फिज़ूलखर्ची करूं तो मकान को गरम रखने की व्यवस्था भी

करनी चाहिए। जबकि मैं अमरीकनों की आरामतलबी की अभ्यस्त हो गई थी, तब उसमें से कुछ यहां मुझे कायम कर लेनी चाहिए जिससे चीन से जाने का प्रश्न इस तथ्य से न मिल जाए कि अमरीका में जीवन-यापन शायद शारीरिक दृष्टि से अधिक आनन्ददायक है।

अब मैं जानती हूं कि यह मेरे स्त्री-स्वभाव की आदत थी कि जब कभी मेरे सामने मानसिक और आत्मिक समस्याएं आतीं और मुझे उन्हें हल करना पड़ता तब मैं मकान की देखभाल और बागबानी में गहरी डूब जाती थी। इसलिए अगले महीनों में मैंने इतना ही किया कि मकान को आनन्ददायक बनाया, अपने बाग को फल-फूलों से हमेशा जैसी समृद्ध दशा में पहुंचाया, अपने पड़ौसियों से अपनी मित्रता फिर ताज़ी की और नगर तथा राष्ट्र की जो खबरें मेरे कानों में बड़ी मात्रा में डाली गईं, उन सबको ध्यान से सुना।

आसार कुछ अच्छे नहीं थे। मैंने देखा कि गोरों और चीनियों के बीच की खाई रोज़ गहरी होती जा रही है। गोरों के दोनों समूह, व्यापारी और मिशनरी, समान रूप से अप्रसन्न थे। नई सरकार ने ऐसी व्यवस्था कायम की थी जिसने, उसके नियम चाहे जितने न्यायोचित हों, अपने गोरे मित्रों को भी विरोधी बनाया था और अमित्रों को तो क्रुद्ध कर दिया था। मिशन स्कूलों को सन यात-सेन के चित्र के सामने, जिसे हर किसी उपासना-घर या सभा-भवन की दीवार पर लटकाना पड़ता था, झुकने के सरकारी नियम का पालन करने को मजबूर किया गया। प्रसिद्ध वसीयत, जो अब एक पवित्र लेख्य है, सप्ताह में एक बार ऊंचे स्वर से पढ़नी पड़ती थी और श्रोताओं को खड़े रहना होता था। मिशनरियों को इसमें दूसरे देव-ताओं की पूजा की गन्ध आती थी। फिर भी उन्हें इसका पालन करना पड़ता था, अन्यथा उन्हें अपने स्कूल बन्द करने की सम्भावना का सामना करना पड़ता। ईसाई चर्चों में चीनी सदस्य स्वशासन और विदेशी मिशनों पर नियन्त्रण की मांग कर रहे थे, यद्यपि बहुत-से मिशनरियों में अब भी सब चीनियों के प्रति गुप्त अविश्वास मौजूद था—या कम से कम अपने स्वदेश के चर्चों के प्रति ज़िम्मेदारी की भावना थी जिन्होंने विदेशी मिशनों के लिए विदेश भेजा गया धन इतने कष्ट से संग्रह किया था।

व्यापारिक क्षेत्रों में भी वही विद्वेष था, पर उसके कारण भिन्न थे। विदेशी व्यापारी और उनकी फर्में यह जानती थीं कि पश्चिमी राष्ट्र चीन पर कब्ज़ा करना या राजनीतिक अर्थ में उसे जीतना नहीं चाहते थे। वे चाहते थे और अधिक व्यापार,

शायद विशेष रियायतें और अपने कर्मचारियों के लिए सुरक्षा की गारंटी। कोई भी चीन पर शासन करने की और इस प्रकार उसके गड़बड़ मामलों का बोझ उठाने की ज़िम्मेदारी नहीं लेना चाहता था। सच तो यह है कि प्रथम महायुद्ध के बाद से किसी पश्चिमी शक्ति में ऐसे कार्य के लिए ताकत ही नहीं रही थी। इंगलैंड भारत के प्रबन्ध करने में ही परेशान हो रहा था। किसी भी राष्ट्र के लिए उपनिवेशवाद की लाभदायकता खत्म हो रही थी। फिर भी राष्ट्रवादी सरकार अतीत के आक्रमणों का राग अलापती जाती थी और जापान के नये खतरनाक आक्रमणों की पूरी तरह उपेक्षा की जाती थी जो स्पष्टतः चीन पर कब्ज़ा करना चाहता था और उसे उसी तरह अपने अधीन करना चाहता था जैसे उसने कोरिया को किया था। यदि राष्ट्रवादी दल या कुओमिंतांग ने उन दिनों परिवर्तित होते पश्चिम की असली स्थिति और उदीयमान जापान से असली खतरे को समझा होता तो मेरी धारणा है कि जापान के साथ युद्ध निश्चय ही असम्भव होता क्योंकि पश्चिम के पक्ष में और जापान के विरुद्ध होकर राष्ट्रवादी जापानी सैनिकवादियों और औद्योगिक स्वार्थों द्वारा मिलकर आयोजित एशियाई साम्राज्य के प्रयत्नों को रोक सके होते। इसलिए बाद में जो कुछ हुआ, उसका प्राथमिक दोष राष्ट्रवादी सरकार को देना होगा। यह स्पष्ट हो जाना चाहिए था कि चीन में, और सच पूछिए तो एशिया में, पश्चिमी आक्रमण का अड्डा पहले ही नज़र आने लगा है। ब्रिटेन अपने कन्सेशन छोड़ रहा था, विशेषाधिकारों में परिवर्तनों की बात चल रही थी और राज्यक्षेत्रातीत अधिकार खत्म करने के लिए भी केवल इतनी बात थी कि चीनी अदालतें स्थापित कर दी जाएं।

परन्तु सोवियत रूस ने कुछ पहले स्वेच्छा से अपने विशेष अधिकार त्याग कर चीनी नेताओं को गड़बड़ में डाल दिया और प्रथम महायुद्ध के अन्त में इस तथ्य ने कि जर्मनों को सब विशेष अधिकार छोड़ने को मजबूर होना पड़ा, नये चीनियों को और भी प्रभावित किया। निःसन्देह चियांग काई-शेक सोवियत रूस से कुछ भी वास्ता नहीं रखना चाहता था, पर उसने जर्मनी के प्रति, विशेष रूप से तब जब वहां फासिज़्म सत्तारूढ़ हुआ, विशेष मैत्रीभाव प्रदर्शित किया। स्पष्ट था कि फैसिज़्म उसे पसन्द आया और उसके अन्दर निरंकुश शासक की पुरानी चीनी परम्परा उभर आई जो बहुत पहले ईसा के काल में चिन शिह हुआंग के शासन में मूर्त रूप में दिखाई दी थी—चिन शिह हुआंग पहला सम्राट् और पूरी तरह फासिस्ट शासक था। इसी

सम्राट् ने इतने प्राचीनकाल में भी महान् दार्शनिक और विचारक कन्फ्यूशियस की हितैषिता को अस्वीकार किया था और पुस्तकें जलाने का हुक्म दिया था जिससे कन्फ्यूशियन-वाद को सदा के लिए समाप्त किया जा सके । नई और बढ़ती हुई चीनी सेना जर्मन सैनिक अफसरों की सलाह के अधीन कर दी गई और हमने देखा कि जर्मन गोरों को हममें से शेष लोगों के मुकाबले तरजीह दी गई । इसका अर्थ यह था कि अन्य पश्चिमी शक्तियों को पराया समझ लिया गया और इसलिए वे अलग खड़े हुए चीनी प्रदेशों पर जापान के बढ़ते हुए कब्ज़े को देखते रहे। वे एक-दूसरे से कहते कि चलो, जापानियों को चीन की विराट्काय समस्या हल करने दो । इस प्रकार जब युद्ध सचमुच छिड़ गया तब चीन का एक भी पश्चिमी सहायक नहीं था और जर्मनी जापान की तरफ था ! राष्ट्रवादियों ने गलत अन्दाज़ लगाया था।

१९३४ के आरम्भ से पहले यह स्पष्ट था कि राष्ट्रवादी सरकार, जो अब भी 'नई सरकार' कहलाती थी, अधिक दिन नहीं टिक सकती। इसने राष्ट्र की बुनियादी समस्याओं का कभी सामना नहीं किया था और किसान अब भी ज़मींदारी की पुरानी बुराइयों से कष्ट पा रहे थे और पहले से भी अधिक ऊंचे टैक्स सह रहे थे। इस प्रकार जब मैं नानकिंग की दीवारों से बाहर देहात में इधर-उधर घूमती, जैसी कि मेरी आदत थी, तब सब जगह किसान और उनकी स्त्रियां यह शिकायत करती थीं कि पिछली शासन-व्यवस्था में तो एक शासक को टैक्स देने पड़ते थे पर अब बहुत छोटे-छोटे शासक हैं जो टैक्स मांगते हैं और उनकी हालत हमेशा से भी खराब है । लोकतन्त्र ? वे कहते थे कि हमें इसका अर्थ नहीं मालूम, यद्यपि नौजवान सदा उनके सामने यह शब्द चिल्लाते रहते हैं। जनता के अधिकार ? वे कौन से हैं ? ऐसी कोई जगह नहीं जहां वे अपने अधिकारों के लिए अपील कर सकें। नई सड़कें ? हां, नई सड़कें तो हैं पर मोटरों के लिए हैं, और अफसरों तथा थोड़े-से धनी आदमियों को छोड़कर किसके पास मोटरें हैं ! जब वे कारें फड़फड़ाती हुई गुज़रती थीं तब अपने कन्धों पर अपना बोझ उठाकर बाज़ार ले जाते हुए हर एक किसान को सड़क छोड़कर हटना पड़ता था। कहीं लोकतन्त्र नहीं था, यदि इसका मतलब जनता के अधिकार और लाभ है। और जो सरकार अपने वचन के अनुसार आचरण नहीं करती, वह कैसे सफल हो सकती थी ! शासकों के छोटे-छोटे सम्बन्धी भी नवाबों की तरह सड़क पर चलते लोगों को तितर-बितर करते हुए सड़क पर जाते थे। पुराने ज़माने में उन्हें ऐसा व्यवहार न करने दिया जाता।

ऐसी हज़ारों शिकायतें मेरे कानों में पड़ीं और उनसे यह निष्कर्ष न निकालना बड़ा असम्भव था कि नये शासक जनता की आवश्यकताओं को समझने में सचमुच असफल रहे हैं। उन्होंने क्रांति को रोकने की कोशिश तो की पर उसके कारण पता लगाने और उन्हें दूर करने की ओर कोई ध्यान न दिया। उन्होंने यह घोषणा की थी कि चीनी जनता को एक नये राष्ट्रवाद को मानना और व्यवहार में लाना चाहिए; और सारे समय वे जापानी आक्रमणों को बिना रुकावट चलने दे रहे थे। इसका अवश्यम्भावी परिणाम जनता की ओर से विस्फोट होता, बशर्ते कि जापान चीन पर पहले हमला न कर देता और बहुत कुछ देखने और सुनने के बाद मेरी यह धारणा थी कि जापान जनता के विद्रोह कर सकने से पहले आक्रमण करेगा। चीनी दीर्घकाल तक कष्ट सहने वाले और धैर्यशाली लोग हैं और फिर विद्रोह में उनका नेतृत्व करने वाला भी कोई नहीं था। बुद्धिजीवी लोग शासन-कार्य में अपने-अपने शौक में व्यस्त थे और जनता का कोई भी आदमी, जो अशान्ति का ज़रा सा भी चिह्न प्रकट करता, तुरन्त कम्यूनिस्ट कहकर साफ कर दिया जाता। निश्चय ही मेरे लिए चीन से सदा के लिए चले जाने का यही समय था क्योंकि देर-सबेर सब गोरों को जाना होगा। इतिहास का चक्र बहुत ऊंचा चढ़ चुका था और उसका मेरे जीवनकाल में ही किसी समय नीचे आ जाना अनिवार्य था। यदि मैं इसके नीचे आने को किसी भी तरह रोक सकती होती तो मैं रोकने के लिए वहां रह गई होती, पर अवश्यम्भावी को कोई नहीं रोक सकता था। कोई भी मनुष्य तिनका मात्र सिद्ध होता और फिर मैं तो स्त्री थी।

मेरे अपने देश लौटने के लिए कुछ व्यक्तिगत कारण भी थे। उन्हें यहां गिनाने की आवश्यकता नहीं क्योंकि मेरी दुनिया को बदलने वाली जो महान् घटनाएं हो रही थीं, उनमें व्यक्तिगत बात उपेक्षणीय थी। फिर भी मेरी अपंग बच्ची मेरे चले जाने के बाद बीमार हो गई थी और स्पष्ट था कि उसके खातिर मुझे उसके इतना निकट रहना चाहिए कि मैं बीच-बीच में उससे मिल सकूं। सलेटी मकान भी मेरे प्रयत्नों के बावजूद पारिवारिक जीवन के लिए अब घर न था क्योंकि पुरुष और स्त्री के बीच की दूरियां काफी समय से अलंघ्य हो गई थीं। कोई बहुत से अन्तर नहीं थे—केवल एक इतना बड़ा अन्तर था कि आदान-प्रदान असम्भव था, यद्यपि बहुत वर्षों तक ईमानदारी से प्रयत्न किया गया। वह गहरा अन्तर था जिसे मेरे माता-पिता ने मुझसे पहले ही ताड़ लिया था और जिसके कारण मेरी मां ने मुझे इस विवाह

से रोकने की कोशिश की थी । मैंने उसकी बात नहीं सुनी थी और यद्यपि बहुत जल्दी ही मुझे उसकी बात ठीक होने का पता चल गया था पर अभिमान के कारण मैंने अपनी गलती प्रकट न होने दी थी । अब उस अन्तर में वह लड़की, जो अपंग थी और उसके लिए जो कुछ करना चाहिए, वह भी समाविष्ट हो गया था और वीच में मिलाने वाला पुल बाकी नहीं रहा था । यह मेरे चीन से रवाना होने का समय था ।

फिर मैंने निश्चय किया था कि अन्तिम रूप से जाने से पहले मैं एशिया के देशों में जहां तक जा सकूंगी,यात्रा करूंगी और इतिहास के इस संकटमय क्षेत्र में उपनिवेश बने राष्ट्रों की स्थिति के बारे में कम से कम एक चलती नज़र डाल लूंगी । इस लिए मैंने यात्रा शुरू की—पहले तो मैं चीन के उन भागों में गई जो मैंने नहीं देखे थे, और फिर आगे हिन्दचीन तथा स्याम और भारत तथा इण्डोनेशिया गई। सच्ची बात यह है कि मैंने साम्राज्य के बारे में खोज-यात्रा की योजना बनाई, यह देखने के लिए कि औपनिवेशिक शासन में लोग कैसे रहते हैं, और यदि सम्भव हो तो यह पता लगाने के लिए कि भविष्य घटनाओं की दृष्टि से नहीं, पर कार्यक्रम की दृष्टि से किधर जाने वाला है; उदाहरण के लिए, भारत कब और कैसे अपनी आज़ादी हासिल करेगा ।

मेरे लिए यात्रा देखने और सुनने का काम ही हो सकता है । मैं सरकारी अफसरों से मिल सकने पर भी नहीं मिलना चाहती थी और गोरों के साथ कम वास्ता रखना चाहती थी । उनका दृष्टिकोण मैं पहले ही जानती थी । मैं तो अपने ही ढीले-ढाले ढंग से किसी देश में घूमना चाहती थी—जहां चाहूं वहां रुक जाऊं और हर चीज़ का आनन्द लूं तथा भरसक अधिक सीख सकूं । अब वैसी यात्रा का विस्तृत विवरण देना बेकार होगा क्योंकि अन्य बहुत लोग उन देशों में यात्रा कर चुके हैं और अमरीकन अफसरों के लिए भी लम्बा-चौड़ा एशियाई दौरा रोज़-मर्रा की बात हो गई है ।

तो मुझे क्या बातें याद हैं ? प्रथम तो दक्षिण चीन के सुन्दर फुकिएन प्रान्त की याद है । वह समुद्रतटीय प्रान्त है और इसके कटे-फटे तट समुद्री डाकुओं से भरे हैं जिनके अड्डे सदियों पुराने हैं । छोटे-से जिस स्टीमर में मैं जा रही थी, उसमें ऊपरले डैक के, जिसपर गोरे लोग यात्रा करते थे और निचले डेकों के, जिनमें शेष दुनिया खाती और सोती थी, बीच की सीढ़ी पर सलाखों वाला दरवाज़ा था

और जहाज़ के चारों तरफ लोहे की बाड़ थी। अंग्रेज़ कैप्टन ने मुझे बताया कि बाड़ और दरवाज़ा इसलिए बनाया गया है कि यदि डाकू निचले डेक में छिपे हों तो गोरे लोग ऊपर से अपनी रक्षा कर सकें। मैंने पूछा कि यदि डाकू नीचे से आग लगा दें तो क्या होगा ?

कैप्टेन ने कन्धे हिलाए। 'हमारे पास जीवन-रक्षक नौकाएं हैं।'

उस जहाज़ से तट पर पहुंचकर और कुछ दिन एक चीनी सराय में जमकर जो आनन्ददायक तो थी, पर निश्चय ही त्रुटिहीन नहीं थी, मुझे खुशी हुई। वहां से चीनी मित्रों के साथ मैंने बस द्वारा धीरे-धीरे देहात की यात्रा की और मैं संसार के सबसे सुन्दर संतरे और चकोतरे के बगीचों में से गुज़री और पेड़ों पर संतरे और चकोतरे लदे थे, जो प्रेमपूर्ण किसान मार्ग में हमारे लिए तोड़ लाते थे। हम भीतरी पर्वतों तक गए और वहां बस रुक गई क्योंकि पर्वतों पर वहां छिपे कम्यूनिस्टों का, या यदि आप कहना चाहें तो 'डाकुओं' का अधिकार था। बस ड्राइवर शान्त चेहरे और अजीब परिहास-बुद्धि के बावजूद, प्रचण्ड नहीं, तो भी साहसी आदमी था। बस एक पुरानी अमरीकन रद्दी बस थी और हर एक या दो घण्टे में वह बिगड़ जाती थी और हम सब उतरकर प्रतीक्षा करते थे, जबकि ड्राइवर तार और डोरी के टुकड़ों से इंजन को संभालता था। हर बार फिर वह चल पड़ती थी। वह आवाज़ लगाता और हम सब चढ़ जाते और आगे चल पड़ते थे। एक बार जब वह जोड़ा-जाड़ी कर रहा था तब मैंने देखा कि इंजन के ऊपर हुड (ढकना) नहीं था।

'इसका हुड कहां है ?' मैंने पूछा।

उसने मुंह ऊपर उठाया जिसपर तेल के धब्बे लग रहे थे। 'वह ढकना ?' उसने तुच्छता प्रकट करते हुए कहा। 'वह निरी उठा-धरी थी, और वह था किस काम का ? मैंने उसे बिल्कुल ही हटा दिया।'

इंजन ज़ोर से धड़धड़ा उठा। उसने प्रसन्नता प्रकट की और हम सब चढ़ गए।

और खुशहाल क्वांग-तुंग प्रान्त में होकर दक्षिण की ओर यात्रा करते हुए मैंने पहली बार यह जाना कि हमारा भूरा गुड़ कैसे बनता है जो मैं बचपन से एक विशिष्ट भोजन के रूप में खाती रही थी। गन्ना धीरे-धीरे चलते हुए भैंसे द्वारा खींचे हुए कोल्हू से पेरा जाता है और एक पतले सफेद-से हरे मीठे पानी (रस) की धारा एक टूटी से बाल्टियों में गिरती है। इस पानी (रस) को उसी

तरह बहुत अधिक उबाला जाता है जैसे वर्मोन्ट में मेपल चीनी का पानी उबाला जाता है और अन्त में यह गहरा गाढ़ा और घने रंग का हो जाता है। तब इसे बड़े-बड़े उथले टीन के बर्तनों में लौट दिया जाता है और बरफी की तरह चौकोर काट दिया जाता है। हमने यह बहुत-सा गर्म और सख्त गुड़ खाया। फिर हमने इस ठण्डा होते और अपनी परिचित मोटी चीनी (शक्कर) के रूप में तोड़े जाते हुए देखा।

और यह कैसा बढ़िया दृश्य था ! सुन्दर हरा-भरा श्यामल देहाती क्षेत्र, गोल मिल की छप्पर की छत जो सब तरफ से खुली थी, अकेले या दो-दो जुते भैंसे, भारी लकड़ी का जुआ अपने कन्धों पर रखकर खींचते, नीले कोटों वाले किसान कोल्हुओं में गन्ने दे रहे थे; और फिर चीनी मिट्टी की भट्टियों पर राब खौल रही थी और बच्चे चारों ओर नाच-कूद रहे थे और अपनी उंगलियां चाट रहे थे तथा ततैये और मधुमक्खियां गरम हवा में गुनगुनाती घूम रही थीं—यह सब मुझे अब भी ऐसे स्मरण आ जाता है जैसे नींद के धुंधलके में लिपटा हुआ हो। वह सुगन्ध और गरमी और नाचते-कूदते बच्चे। ये दक्षिण के लोग नई राजधानी से काफी दूर थे और जब इसकी चर्चा की जाती थी, तब वे सब सरकारों की तरह इसके प्रति भी उदासीन रहते थे और इससे भी कोई लाभ नहीं समझते थे। केवल नगरों में मैंने मकानों और नगर के बड़े दरवाज़ों पर चिपकाए हुए नये और कड़वे नारे देखे जिनमें हर जगह 'पश्चिमी साम्राज्यवादियों' का विरोध था।

और इस प्रकार दक्षिण की ओर चलकर मैं कैन्टन गई और मुझे खुशी है कि मैंने पुराना कैन्टन 'सुधारे जाने से पहले' अनेक बार देखा है क्योंकि पुराने नगरों में प्राचीन काल से चली आती हुई तंग सड़कों पर मैं चल सकती थी जिनपर हाथीदांत की वस्तुएं बेचने वालों, संगयशव (जेड) की कटाई का काम करने वालों और सुनारों की एक-मंज़िली दुकानें थीं। हर धन्धे की अपनी गली थी, जो अपने ही क्षेत्र में थी और आप हाथी-दांत पर खुदाई करने वाले को उसके नाजुक औज़ारों का उपयोग करके दांत से कुआन यिन की एक शानदार चिकनी आकृति बनाते देख सकते थे, या वह बहुत बड़ी हाथी दांत की गेंद बना देता जिसके ऊपर अट्ठारह गेंदें और होतीं और सब एक-दूसरे से अलग होतीं और प्रत्येक दूसरी से अलग रुड़-कती जाती। यह जादू बहुधा अपनी आंखों से देखने के बावजूद मैं पूरी तरह नहीं समझ सकी। और प्रत्येक रंग का संगयशव पीला या लाल, नीला या वसंतकालीन धान जैसा हरा, या संगमरमर जैसा चितकबरा या सूअर की चरबी जैसा चिकना,

सफेद, ठण्डा, हर किस्म बड़ी सुन्दर, और उसका सुन्दर ही उपयोग किया जाता था। मैंने पीकिंग के राजमहलों में ऐसी कला का उत्कर्ष देखा था—पूरे के पूरे दृश्य संगयशव के एक बड़े टुकड़े से खोदकर बनाए गए थे—और यहां कैन्टन की एक सड़क पर मैंने इसे सचमुच किया जाते देखा। एक-एक काम पर सारा जीवन लगाया गया था। दक्षिणी संगयशव आम तौर से बर्मा से आते थे जबकि पीकिंग में संगयशव ऊंटों द्वारा तुर्किस्तान से लाए जाते थे। तेरहवीं सदी में एक चीनी ने ही बर्मा में खानों की खोज की थी पर बहुत दिनों तक, तथ्यतः अट्ठारहवीं सदी के पिछले भाग तक, चीन के संगयशव-प्रेमी बर्मी रत्न को अपनी किस्म जैसा मूल्यवान नहीं मानते थे और सचमुच दोनों में अन्तर है। बर्मी संगयशव जेडाइट है और तुर्किस्तानी संगयशव नेफ्राइट होता है, पर चीनी संगयशव खोदने वाले भी और बर्मी भी समान रूप से यह मानते हैं कि संगयशव में अद्भुत गुण होते हैं। कंचीन या बर्मी पहाड़ी लोग बांस की एक पता बताने वाली छड़ी से खानों का स्थान पता लगाते हैं, उसे आग लगा देते हैं और फिर जब संगयशव मिल जाता है, तब वे पुराने विधि-विधान और उत्सव करके खानों को खोदते हैं।

पर मैंने यहां अपना सिलसिला तोड़कर संगयशव की चर्चा क्यों छेड़ दी? तब से इस विषय पर अनेक पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं जब मिट्टी और कड़ी चट्टान से ढके पत्थरों की खानें खोदी जानी शुरू हुईं, उनके खोखले हृदयों पर मूल्यवान और विविध प्रकार के पत्थर जड़े गए और अन्त में उस पत्थर को अन्तिम रूप से जड़कर रत्न या कला-वस्तु का रूप दिया गया। चीन में संगयशव चिन शिह हुआंग के दिनों में एक दिव्य रत्न बन गया जिसके लिए पहली बार महान् शाही मुहर बनाई गई थी और वह मुहर राजवंशों में सुरक्षित चलती रही, यहां तक कि जो कोई ताकत के ज़ोर से इसे पा लेता और रख लेता वही, इस चिह्न के द्वारा ही, भगवान् द्वारा निर्धारित शासक बन जाता। इसी मुहर को, जब कभी वृद्ध राजमाता राजधानी छोड़कर भागी, तब अपने साथ ले गई क्योंकि वह जानती थी कि जब तक यह उसके पास है, तब तक उसकी प्रजा और किसीको सिंहासन का अधिकारी स्वीकार न करेगी। और पता नहीं अब वह मोहर कहां है। सच पूछिए तो संगयशव हर किसीके लिए, जो इसे पा सके, या खरीद सके या चुरा सके, संभालकर रखने लायक धन है। चीनी स्त्रियां अपने केशों के लिए संगयशव के आभूषण मंगाती हैं, और संगयशव के ब्रासलेट (ब्रसलैट=कलाई में पहनने का एक आभूषण)

श्रौर श्रंगूठी मांगती हैं श्रौर बूढ़े श्रपनी मुट्ठियों में शीतल संगयशव का एक टुकड़ा रखते हैं। यह इतना चिकना होता है कि छूने में नरम लगता है। धनी लोग श्रपना धन बैंकों में रखने के बजाय संगयशव खरीद लेते हैं क्योंकि समय बीतने के साथ संगयशव श्रौर सुन्दर होता जाता है। जब मनुष्य मरते हैं तब उनके परिवार के लोग उनके मकबरों में उन्हें सड़ने से बचाने के लिए संगयशव उनके पास रखते हैं श्रौर उनके शरीरों के छिद्र, शुद्धता के लिए, संगयशव से बन्द किए जाते हैं। गरीब से गरीब वेश्या थोड़ा न थोड़ा संगयशव ज़रूर रखती है जिसे वह कानों में लटकाती है या बाल पकड़ने की पिन में इस्तेमाल करती है, श्रौर सबसे श्रधिक सफल श्रौर लोकप्रिय श्रभिनेत्रियां हीरों के बजाय संगयशव धारण करती हैं क्योंकि संगयशव श्रौरतों के शरीर पर श्रधिक खिलने वाला रत्न है। श्रच्छा श्रब संगयशव की बात बन्द की जाए।

एशिया में पश्चिम की श्रोर की गई यात्रा नई बातों को जानने की यात्रा थी श्रौर श्रब वह स्मृति की चीज़ रह गई है। जो कुछ देखा जा सकता था वह मैं देखती गई थी, श्रौर यद्यपि प्रत्येक देश की धरती का श्रपना श्रलग श्रौर श्रनोखा सौन्दर्य होता है, पर मैं वहां लोगों को देखने गई थी।

हिन्दचीन में मैंने उपनिवेशवाद के पुराने परिचित चिह्न देखे। जो चिह्न शायद सबसे बुरा है वह यह है कि उपनिवेशों के लोग श्रत्यधिक स्वार्थी श्रौर श्रात्म-केन्द्रित हो जाते हैं। क्योंकि उनपर श्रपना शासन श्राप करने की ज़िम्मेदारी नहीं नहीं होती, इसलिए वे श्रपनी श्रौर श्रपने परिवारों से बाहर की कोई खास ज़िम्मेदारी नहीं लेते श्रौर जब कोई मुसीबत श्राती है तब वे श्रपने श्रलावा सबको दोष देते हैं। श्रौर दृष्टियों से यह मनोरंजक श्रौर सुन्दर तीन राज्यों वाला हिन्दचीन देश मनोरम था, श्रौर जब यह स्वतन्त्र श्रौर श्रपने श्रच्छे-बुरे के लिए स्वयं ज़िम्मेदार हो जाएगा, तब यह उष्णदेशीय स्विटज़रलैंड बन सकता है। कारण यह कि हिन्दचीन श्रसल में तीन छोटे-छोटे राज्य-क्षेत्रों या राज्यों का प्रदेश है जो मिलकर एक राष्ट्र बनते हैं। वियतनाम मुख्यतः चीनी है, कम्बोडिया भारतीय, श्रौर लाश्रोस स्थायी है। तीन भाषाएं श्रलग-श्रलग बोली जाती हैं श्रौर फ्रेंच उन सबका मिलाने वाली कड़ी है। सैगोन के श्रलावा कोई बड़ा नगर नहीं है जो बहुत श्रधिक फ्रेंच है श्रौर जिसमें गोरों का समुदाय सड़क के काफी-हाउसों श्रौर रात के क्लबों में चहल-पहल का जीवन बिताता है, श्रौर जिसमें दूसरे श्रौपनिवेशिक देशों की श्रपेक्षा कम

अलगाव है। सड़कों पर मैंने मिले-जुले खून वाले, अध-गोरे लोग, फ्रेंच पिता और गैर-फ्रेंच माता तथा उनके बच्चे देखे—उनके बच्चे ऐसे सुन्दर, जैसे जंगल के फूल, पर वे सड़कों के किनारे बड़े होते हुए और कहीं के भी नहीं, मेधावी, अति-अनुभूतिपूर्ण, सदा घायल। फिर भी मैं अब भी कहती हूं कि फ्रेंच लोगों में अन्य पश्चिमी जातियों की अपेक्षा मूलवंशीय कुसंस्कार व्यवहारतः कम है और किसी सुन्दर फ्रेंच स्त्री के हिन्दचीनी प्रेमी उतनी ही आसानी से जुट जाते हैं जितनी आसानी से उसकी अपनी जाति के।

उपनिवेशवाद जैसे हर जगह गिरावट पैदा करता है, वैसे ही इसने फ्रेंच शासकों में भी गिरावट पैदा की और हिन्दचीन में फ्रेंच लोगों का आचार-व्यवहार प्रायः असुन्दर, प्रायः सदा अपने देश, फ्रांस के आचार-व्यवहार की अपेक्षा घटिया रहा। इसके बावजूद, चीनी लोगों ने उन्हें अन्य गोरों की अपेक्षा अधिक पसन्द किया है क्योंकि वे केवल मूलवंश के भेद के कारण अन्याय नहीं करते। परन्तु हिन्दचीन में मैंने जो उपनिवेशवाद देखा, वह भी अशोभन था, जिसमें भद्रता या अच्छाई का कोई दावा दिखाई नहीं देता था। इसका प्रयोजन पूरी तरह व्यापारिक था और इसका ध्येय था धन, जो कैसे भी और कहीं से भी मिल जाए; और फ्रेंच लोगों की अपेक्षा अधिक चतुर व्यापारी केवल चीनी थे।

मैं कम्बोडिया गई, क्योंकि मैं अंगकोर वाट देखना चाहती थी और मैं आज तक भी नहीं जानती कि मुझे उससे खुशी हुई या दुःख, क्योंकि वह स्थान मेरी स्मृति में इतना गहरा गड़ गया है कि आज भी जब मैं रात में स्वभावगत और अनुचित भय के कारण जाग जाती हूं तब उन्हीं उजड़े महलों को देखती हूं जो ध्वस्त होकर भी उन विशालकाय वृक्षों से उलझे खड़े हैं जिन्होंने अपनी जड़ें धरती में न जमाकर सांपों की तरह पत्थरों पर लिपटकर जमा रखी हैं। तब वहां पहुंचने के रास्ते सांप हैं और खम्भों को मिलाने वाले पुल पत्थर के फणिधरों के मोटे-मोटे शरीर हैं जिनके ज़हरीले सिर ऊपर उठे हैं और फन लहरा रहे हैं। मैं उन निर्जन और खाली महलों में से, जिनका अर्थ कोई भी नहीं बता सकता, घण्टों चली क्योंकि वे जंगल में इतनी दूर तक चलते गए हैं। बताया जाता है कि वे ख्मेर शासकों के लिए बनाए गए थे, पर क्यों और किसने बनाए थे? अनुश्रुति के अनुसार, यह सारा कार्य दास-मज़दूरों द्वारा किया गया था कि पत्थर के ऊपर पत्थर रखते दासों ने अपने निरंकुश राजाओं के लिए महल खड़े कर दिए जो उनके साथ इतनी क्रूरता और

हृदयहीन अमानुषिकता से व्यवहार करते थे कि अन्त में दासों ने विद्रोह कर दिया और अपने मालिकों को नष्ट कर दिया। और यह कार्य ज़रूर पापपूर्वक किया होगा क्योंकि पाप की दुर्गन्ध हर जगह मौजूद थी, यद्यपि दासों और मालिकों, दोनों को ही मरे काफी दिन हो चुके थे। मैं अन्धविश्वास में नहीं पड़ती, फिर भी पुराने एशियाई देशों में कुछ ऐसे स्थान हैं, जहां मनुष्य इतनी अधिक पीढ़ियों से पैदा होते, निवास करते और मरते रहे हैं कि धरती भी उनके मांस की गन्ध से भर गई है और हवा उनकी अब भी उपस्थिति से घुटी-घुटी मालूम होती है। यहां अपने देश में, जो एक नई धरती है और प्राचीन एशिया की तुलना में सोचें तो मुश्किल से ही बसी हुई है, मुझे कभी वैसी चेतना नहीं हुई पर ऐन्कोर में मुझे वह घुटन-भरी हवा महसूस हुई, यद्यपि चारों ओर जंगल ही जंगल था और मैं जानती हूं कि वह बुरी हवा थी। मौत की नरम मीठी-सी सड़ांद सब जगह मौजूद थी। होटल के कमरे में भी इसकी गन्ध आती थी, चादरों और तकियों में भी और उन अलमारियों में भी जिनमें मेरे कपड़े लटकते थे। इसलिए जब मैं वहां से आ गई तब मैंने सड़न और दुर्गन्ध दूर करने के लिए सब चीज़ों को गर्म तेज़ धूप में डाल दिया। अपने ढंग से इसने पुरानी भयंकर विभीषिका मेरे दिमाग में डाल दी, जो आज भी उतनी ही प्रचण्ड है जितनी एक हज़ार वर्ष पहले थी कि जब मनुष्य दूसरे मनुष्यों से बुराई करते हैं, जब मनुष्य अन्याय और दयाहीनता का व्यवहार करते हैं और दूसरों को अपने से छोटा और इसलिए बेकार समझते हैं, तब वे अपने लिए अधःपतन की अवश्यंभाविकता पैदा कर देते हैं।

फिर भी जब मैंने अपनी यात्रा आगे जारी रखी और उसमें अजीब और दिलचस्प घटनाएं भी हुईं। स्याम की राजधानी बैंकोक में मुझे दो सर्वथा नये अनुभव हुए। एक रोटरी क्लब के भोज में, जिसमें वक्ता राजघराने का एक राजकुमार था, मैं सारे भोजन में बैठी ही रही, जो मांस और आलुओं के कारण ही अमरीकन भोजन था और इसके खत्म हो जाने के बाद राजकुमार ने ऐसा असाधारण सुस्ती पैदा करने वाला भाषण पढ़ा कि मैं अपने कानों पर विश्वास न कर सकी। भोज के सारे समय वह खुशमिज़ाजी और हंसी की बातों से चहकता रहा था और हम मुग्ध हो गए थे। पर मैं सोच रही थी कि यह भाषण क्या था? इसे खत्म करने के बाद उसने अपना मुंह उठाया जो पहले एकटक उसने कागज़ पर लगा रखा था और उसकी आवाज़ तथा काली आंखों में फिर चमक दिखाई देने लगी।

'क्षमा कीजिए,' वह बोला, 'मैंने एक कर्तव्य पूरा किया है। यह भाषण अमरीकन प्रधान शिविर में लिखा गया था और शिकागो से यहां भेजा गया था।'

इसके बाद ज़ोर की हंसी हुई। हम सबने ज़ोर से हंसते हुए ताली बजाई और वह वैसी दुष्टतापूर्ण और दुनियावी मिचकी मारता हुआ, जितनी किसी सुन्दर चेहरे में पैदा की जा सकती थी, बैठ गया। इसके बाद हमें मनोविनोद के लिए गलियारे से एक अंधेरे थियेटर के कमरे में ले जाया गया। यह भी अमरीका से डिब्बा बन्द करके जहाज़ द्वारा भेजा गया था और यहां मैंने पहली बार वाल्ट डिस्ने की फिल्म 'थ्री लिटिल पिग्स' देखी।

लेकिन बेंकौक के बारे में दुरियन नामक फल के अतिरिक्त, जो इतना सख्त था कि मैं उसे अपने होटल के कमरे में स्थायी दरवाज़ा—रोक के रूप में काम लाती थी, जो कुछ मुझे सचमुच याद है वह था सड़कों पर का जीवन। पीले वस्त्रों वाले भिक्षुक हर जगह घूमते रहते, प्राचीन मन्दिरों की सुन्दरता, जो एक विस्तृत और ठोस आधार से सुनहरी सीढ़ियों के रूप में ठीक वैसे ही उठते दिखाई देते थे जैसे आधुनिक मकान इस्पात और कांच के रूप में उठते दिखाई देते हैं, और उतने ऊंचे नहीं थे। और सुन्दर चिकने चेहरे वाली स्त्रियां और छोटे बच्चे तथा भद्र आकृति वाले पुरुष। नहरों के कांच जैसे चमकीले अपारदर्शक जल पर छोटे-छोटे हाउस-बोट (घर-नौकाएं यानी नौका पर बने घर) धीरे-धीरे तैरते जाते थे। उनपर रहने वाले परिवार स्वच्छ सुन्दर थे और निश्चय ही स्यामी लोग संसार के सबसे सुन्दर प्राणियों में हैं जो विशालकाय नहीं होते पर चिकनी त्वचा वाले होते हैं। उनकी छोटी चिकनी हड्डियों पर मलाई के रंग का मांस चढ़ा रहता है, आंखें बड़ी और अण्डाकार होती हैं, और तिरछी नहीं होतीं तथा काली के बजाय गहरी भूरी होती हैं और बाल भी नरम तथा चिकने तथा गहरे रंग के होते हैं, पर काले नहीं होते। ये आज़ाद लोग थे और आज़ाद दीखते थे। उनके सिर ऊपर उठे रहते थे। वे स्पष्ट-भाषी और शत्रुता के बजाय मित्रता की ओर प्रवृत्त और पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों, सब के ही कैसे सुन्दर हाथ तथा पांव तथा चेहरे, और गोल-मटोल शरीर थे!

कुछ दिन पहले मैंने एक छोटा अर्ध-स्यामी लड़का देखा था जो अमरीका में पैदा हुआ था और इसलिए अमरीकन था। वह मेरे घर में अतिथि था और उसने अपनी धर्ममाता की गर्दन में अपनी बांहें डाल दीं। यह स्त्री एक गोरी

अमराकन थी और इस बच्चे को इस तरह प्यार करती थी जैसे उसने इसके शरीर की सृष्टि अपने शरीर के अन्दर की हो। उसके दूसरे देश का और उसके सम्पूर्ण स्थायी पूर्वजों का स्मरण करके मैं इस स्त्री को धन्य समझती थी। उसकी पितृपरम्परा अच्छी है।

भारतवर्ष सदा मेरे जीवन की पृष्ठभूमि का भाग रहा था, पर मैंने वह अब तक सारा और अपने-आप नहीं देखा था। फिर भी हमारे भारतीय पारिवारिक डाक्टर और उसकी पत्नी ने मुझे बचपन में जो कहानियां सुनाई थीं, वे मेरे स्वप्न-जगत् के रूप में परिवर्तित हो गई थीं और मैंने उस देश के बारे में जो कुछ मिला वह सब कुछ पढ़ डाला था। अपने पिता से मैंने बौद्ध धर्म और भगवान् बुद्ध के जीवन-वृत्त के द्वारा उस देश का ज्ञान पाया था। भारत का बिल्कुल उससे विरुद्ध चेहरा मैंने शांगहाई में ब्रिटिश कन्सेशन में ऊंचे-ऊंचे पगड़ीधारी सिख पुलिस वालों में देखा था जो किसी बदकिस्मत चीनी रिक्शे वाले के रास्ते में आ जाने पर या इन पगड़ी वालों के तानाशाही हुक्म न मानने पर उसे पीटने में भी नहीं हिचकिचाते थे। सारा भारत बिल्कुल एक जैसा नहीं था और तरुण भारतीयों से मैंने इंगलैंड के औपनिवेशिक साम्राज्य के बारे में, इसकी कुछ बुराइयों और अच्छाइयों के बारे में, जानकारी प्राप्त की थी।

चीन तथा भारत एक-दूसरे से उतने भिन्न देश हैं जितने हो सकते हैं। दोनों जातियों के जीवनदर्शन भिन्न हैं और यह स्थिति इस तथ्य के बावजूद है कि उन दोनों का सारी मनुष्यजाति के प्रति विश्वजनीन रुख है, दोनों राष्ट्र शान्ति-प्रेमी हैं पर भिन्न कारणों से——भारतीय इस कारण कि उनके धर्म उन्हें यह शिक्षा देते हैं कि जीवन पवित्र है और इसे नष्ट नहीं होने देना चाहिए, तथा चीनी इसलिए क्योंकि वे अपनी उत्कृष्ट व्यवहार-बुद्धि से, जो उनमें जन्मजात है, यह जानते हैं कि युद्ध मूर्खता है और कि प्रज्ञावान् आदमी अपनी प्रज्ञा से विजय पाता है। इस प्रकार चीनियों ने अपने सब आक्रान्ताओं को, जहां तक उन आक्रान्ताओं ने स्वयं यह होने दिया वहां तक, अपनी रक्तधारा में भी स्वीकार कर लिया है। उदाहरण के लिए, यहूदियों ने शताब्दियों तक चीन में आश्रय लिया——वे पहले भारत होकर एशियाई कोचक से आने वाले प्राचीन व्यापार-मार्गों से होकर आए और भीतरी प्रान्त होनान में बस गए थे और उन्होंने काईफेंग फू में अपना मुख्य केन्द्र बनाया।

पर पृथक् जाति के रूप में यहूदियों का चीन में कोई भी अवशेष नहीं बचा। चीनियों ने उनपर कभी ज़ुल्म नहीं किया, और इसके बजाय निरे प्रेम और सक्रिय वाणिज्यिक आदान-प्रदान द्वारा उन्होंने उन्हें हज़म कर लिया और इस तरह लाभ में ही रहे। प्रायः जब मैं चीन में कोई असाधारण योग्यता वाला कलाकार या अपने छात्रों में औरों से अधिक सजीव मस्तिष्क वाला व्यक्ति देखती थी, तब बहुत सम्भावना यह होती थी कि उसमें यहूदी रक्त है। यह एक सृजनात्मक पैत्रिक गुण है। मुझे याद है कि एक बार पीकिंग से न्यूयार्क में एशिया मेगज़ीन के पास विविध नामों से हस्ताक्षर किए चित्रों का एक थैला आया। सम्पादक ने जो सर्वोत्तम चित्र समझे, वे प्रकाशन के लिए चुने और बाद में उसे पता चला कि उनमें से एक को छोड़कर और सब असल में उसी कलाकार की रचनाएं थीं जो एक तरुण चीनी यहूदी था। यह चीन के यहूदियों की कहानी मैं पहले ही पियूनी नामक अपने उपन्यास में लिख चुकी हूं जो इंगलैंड में 'दि बौन्डमेड' नाम से छपा।

भारत में यहूदी हज़्म नहीं किए गए। हज़्म करना भारत का ढंग नहीं है। इसके बजाय उसने जातियों को अलग रहने दिया है, पर वे उसकी समष्टि का एक भाग हैं। इस प्रकार पारसी, वे बहुत धनी और प्रभावशाली हैं जो सदियों पहले ईरान से आए थे, अपने अविकल रूप में मौजूद हैं। उनका धर्म अब भी अग्नि-पूजा है, और उनके श्मशान बम्बई के पास शानदार मौन-स्तम्भ हैं। भारत के दक्षिण में काले यहूदी मौजूद हैं, जो इतनी पीढ़ियों तक भारतीय सूर्य की चमक लगने से इतने काले हो गए हैं कि उनका अपना रंग जाता रहा है।

रंग शब्द से ही मुझे भारतीय जीवन की वर्ण-विविधता का ध्यान आ जाता है। इसकी विविधता वैसी है जैसी हमारे अपने अमरीकन मानव दृश्य की। कश्मीर में, जहां योरुप से आए गोरे जंगली आक्रांताओं ने बहुत पहले भारत में प्रवेश किया था, लोग प्रायः साफ रंग के हैं। भूरे बालों और नीली आंखों वाली स्त्रियां वहां सुन्दर गिनी जाती हैं। मेरी एक तरुण भारतीय सहेली ने हाल में ही एक कश्मीरी पुरुष से विवाह किया है जिसके बाल काले होते हुए भी आंखें स्वच्छ हरे रंग की हैं। उस कश्मीरी का चमड़ी का रंग सुन्दर सुनहरा है और नाक-नक्श यूनानियों जैसे साफ हैं। पर भारत के सब लोगों को काकेशियन मूलवंश का समझना चाहिए चाहे दक्षिण में चमड़ी का रंग कैसा ही हो और चाहे वह किसी अफ्रीकन के रंग जैसा काला ही हो।

और भारत का अन्य जीवन में अप्रत्याशित रूप से आ जाने का एक आश्चर्य-जनक ढंग है। जैसे, उदाहरण के लिए, आज दक्षिण अफ्रीका के जीवन में। वहां भारतीय दक्षिण अफ्रीकनों तथा कालों और गोरों के बीच तीसरा समूह है। इसी तरह हमारा भारतीय पारिवारिक डाक्टर था। किसी चीनी बन्दरगाह में एक अमरीकन परिवार की चिकित्सा करने के लिए कोई भारतीय डाक्टर क्यों होना चाहिए था? और भारत की अफवाहें बनी हुई हैं क्योंकि वे स्मरणीय लोग हैं, नाटकीय और भावुक तथा नाटकीय जीवन प्राप्त करने वाले हैं। वर्षों पहले एक आयरिश नौकरानी ने (जो न्यूयार्क तथा ग्रीन हिल्ज़ फार्म के बीच के घुमक्कड़ जीवन के दिनों में बहुत समय तक हमारे परिवार के साथ रही थी) एक दिन, जब कि हमारे यहां एक भारतीय अतिथि आने वाला था, बताया—और वर्षों हमारे पास काम करने के बाद—कि वह स्वयं कभी भारत में रह चुकी है। मेरे आश्चर्य प्रकट करने पर उसने कहा कि वहां मेरे पिता ब्रिटिश फौज में थे और उनका परि-वार उनके पास रहने गया था। वह वहां केवल तीन या चार वर्ष की आयु में थी और उसे बहुत थोड़ी याद थी।

इसपर मैंने पूछा, 'तुम्हारे पिता को भारत कैसा लगा?'

और उसने अन्यमनस्कता से उत्तर दिया; स्पष्टत: उसका मन चादरों और तालिया पर था। 'उसे यह काफी पसन्द था, माताजी, सिवाय हिन्दुओं को जलाने के।'

'हिन्दुओं को जलाने?' मैंने न समझते हुए दोहराया।

'हां, माताजी,' उसने अब भी अन्यमनस्कता से कहा। 'वे कैदियों को गाड़ी में भर-भरकर ले जाते और उनकी समझ में नहीं आता था कि उनका क्या करें, पर उन्हें जलाना तो बुरा काम था, माताजी।'

मैंने इस किस्से पर विश्वास नहीं किया और आज भी नहीं करती और मेरी सारी पूछताछ से इस किस्से की सचाई का खण्डन हुआ, पर इससे पता चलता है कि किस प्रकार अफवाह यथार्थता का रूप ले सकती है। अंग्रेज़ों ने क्रूरताएं कीं, जैसे कि सभी उपनिवेश-मालिकों को भारतीयों जैसे शक्तिशाली लोगों पर अपनी सत्ता जमाए रखने के लिए करनी होंगी। इस प्रकार उस अंग्रेज़ कैप्टन का वह प्रसिद्ध कथन याद आता है जिसने दूसरे महायुद्ध में वारसा पर बम फेंककर किए गए विध्वंस की बात सुनकर वेदना के साथ कहा था कि इस योरपीय नगर से ऐसा

व्यवहार किया गया है मानो यह भारत में कोई पठान गांव मात्र हो। ऐसा लगता है जैसे पठान गांव पर तो इसके निवासियों द्वारा अपने औपनिवेशिक मालिकों की आज्ञा का पालन न किए जाने पर बम बरसाए जा सकते हैं, यद्यपि, जैसा कि अंग्रेज़ ने गम्भीरतापूर्वक औचित्य-प्रतिपादन करते हुए कहा था, गांव के निवासियों को अपने घर छोड़ने के लिए समय से पहले उचित चेतावनी दिए बिना नहीं।

और फिर युद्ध के बाद एक तरुण अमरीकन भूतपूर्व सैनिक हमारा माली बन गया और एस्पेरेगस तथा गुलाब आदि पर महीनों आनन्द से इकट्ठे काम करने के बाद मुझे पता चला कि वह भी भारत हो आया था और वहां उसने खूब आनन्द उठाया था। उसने द्वितीय महायुद्ध में विदेश-सेवा में अपना नाम लिखाया था और उसे एशिया भेजा गया था। उसका जहाज़ पहले अटलांटिक पार करके अफ्रीका पहुंचा और वहां से केप का चक्कर काटकर कराची गया क्योंकि जर्मन पनडुब्बियां, और जापानी भी, खतरा पैदा कर रही थीं। उस समय जापानी लोग आत्महत्या करने की दृष्टि से बनाई गई एक या दो आदमियों वाली छोटी पन-डुब्बियां प्रयोग में ला रहे थे। वे इतनी छोटी थीं कि किसी भी जहाज़ से फेंक दी जाती थीं और फिर अन्दर जाकर किसी मित्रराष्ट्रीय जहाज़ को अपना निशाना बनाने के लिए खोजती थीं। जब वह मिल जाता तब मनुष्य और पनडुब्बी दोनों जाकर उससे टकराते। आत्महत्या सही शब्द है क्योंकि यदि कोई जहाज़ निशाना न बने तो भी वह छोटी पनडुब्बी अपनी गेसोलीन की मात्रा निपटा लेती और अन्दर का मनुष्य मर जाता। इससे भी चिरंतन जापानी चरित्र का एक पहलू सामने आता है।

युद्ध के पहले वर्ष हमारे तरुण अमरीकन 'केप आफ गुड होप' का चक्कर काट-कर वहां से कराची पहुंचते थे। इस प्रकार मेरे माली ने बताया कि मैं कराची उतरा और चार साल तक लाहौर, बम्बई, कलकत्ता और नई दिल्ली रहा। वह समझदार था और उसने उस अवसर का महत्त्व समझा और भारतीयों से वह इतनी अच्छी तरह परिचित हो गया कि छुट्टी के दिन वे उसे अपने घर निमन्त्रित करते थे।

'वे तुम्हारे मनोरंजन के लिए क्या करते थे ?' मैंने पूछा।

'वे हमें अमरीकन सिनेमा दिखाने ले जाते थे।' उसने उत्तर दिया और उसे

इसमें कोई विचित्रता नहीं दिखाई दी। उसने कहा कि कभी-कभी मुझे रंडियों (नाचने वालियों) के यहां भी ले जाया गया। मुझे निश्चय है कि वह जहां भी गया, वहां एक सरल और भला अमरीकन, पेन्सिलवानिया के किसान का बेटा, रहा—मैत्रीपूर्ण और हर भारतीय को मित्र मानने वाला।

'अब शान्ति हो जाने पर मैं वहां फिर जाना चाहता हूं,' उसने अगले दिन कहा, जबकि हम कैमेलिया (एक सुन्दर फूल) के स्थान पर काम कर रहे थे। 'मैं यह देखना चाहता हूं कि अब कैसे सिलसिला चल रहा है। मैं वहां जीविका का सब प्रबन्ध कर सकता हूं।'

आपने देखा कि भारत का मनुष्य के जीवन में समा जाने का एक ढंग है, और ज़रा सोचिए कि भारत ने किस तरह केवल अपनी स्वाधीनता कायम रखकर और साथ ही उत्कृष्ट कोटि के लोग पैदा करके अपनी आज़ादी के इन थोड़े-से वर्षों में संसार पर अपना असर डालने में सफलता पाई है। उन्होंने अंग्रेज़ों द्वारा दी और छोड़ी गई हितकर वस्तुओं का, पश्चिम-विषयक ज्ञान का, भूमण्डल के दोनों ओर शिक्षा पाए नर-नारियों की शुद्ध और सुन्दर अंग्रेज़ी भाषा का अच्छा उपयोग किया है—नेहरू को देखिए और उसके साथ शासन-कार्य सीखने वाले और पचासों आदमियों को देखिए। और संयुक्तराष्ट्र संघ की महासभा की प्रधान बनने वाली प्रथम स्त्री, भारत की स्त्री थी, और कोरिया में कैदियों की अदला-बदली का भार संभालने वाला आदमी एक भारतीय सेनापति था, जिसने सबका विश्वास प्राप्त किया। स्वदेश और विदेशों में कटु आलोचना और दोषारोपणों से भी अभिनव भारत का शान्त आत्मविश्वास परिवर्तित नहीं हुआ है और यह आत्मविश्वास, जो अजेय आदर्शवाद की नींव पर खड़ा है, हमारे विश्व-जीवन में समा रहा है।

तो मैं १९३४ को भारत में सबसे पहले कलकत्ता आई और सीधी एक भारतीय मित्र के घर गई। बम्बई महाद्वीप के दूसरी ओर एक विशाल दोहरा नगर है, पर कलकत्ता न तो उतना साफ-सुथरा है और न उतना अंग्रेज़ी ढंग का। मैं वहां शाम को पहुंची। तब पटरियों पर बेघर इधर-उधर घूमने वाले लोग पांव सीधे किए सोए थे और उनपर चलना सम्भव था। और मैं मानती हूं कि पवित्र गायों की, विशेष रूप से सब्ज़ी बेचने वालों की दुकानों पर, हरकतें देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ, यद्यपि बंगालियों की होशियारी देवता के समान पूज्य गायों को भी

मात देने का तरीका प्राय निकाल लेती थी।

मै भारत क्या देखने गई थी ? ताजमहल नही, यद्यपि मैने वह भी देखा अवश्य और चादनी मे, फतहपुर सीकरी नही, यद्यपि मैने वह भी देखा, और नईदिल्ली मे साम्राज्य की चमक-दमक भी नही, यद्यपि वह भी मैने देखी, मै भारत के दो जन-समुदायो को देखने और उनकी बात सुनने गई थी—वे है नगरो के तरुण बुद्धि-जीवी और गावो के किसान। इनसे मै नगर मे छोटे-छोटे कमरो मे, गावो मे छोटे-छोटे मकानो मे मिली और मैने आजादी के लिए उनकी योजनाए सुनी। पहले बुद्धिजीवियो का यह विश्वास था कि यह दूसरा महायुद्ध अनिवार्य था। पहले महायुद्ध के बाद वे बहुत अधिक निराश थे क्योकि वे महसूस करते थे कि इगलैड ने अपने वायदे तोडे है। वे कहते थे कि अग्रेजो का भारत को जनता के हाथो मे सौप देने का कोई वास्तविक उद्देश्य भी नही है। मै इसपर विश्वास कर सकती थी क्योकि मै अभी चीन से आई थी जहा जनता के 'शिक्षण' की अवधि अतहीन थी और स्वशासन हर वर्ष और भी अधिक दूर मालूम होता था। 'जब तुम लोग आजादी के लिए तैयार हो जाओगे', विजेताओ ने सदा अपने अधीन लोगो से कहा है, इत्यादि ! पर यह कौन फैसला करेगा कि वह समय कब आ गया है और कोई जाति बिना शासन किए अपना शासन करना कैसे सीख सकती है ? इस प्रकार भारत के बुद्धिजीवी अशान्त और कटुतापूर्ण थे, और मै घण्टो बैठी उनकी चमकती काली आखो को ध्यान से देखती और भाषा का अक्षय प्रवाह सुनती—शुद्धतम अग्रेजी मे वे अपने भावो का उफान प्रकट करते थे।

तो योजना यह थी कि जब दूसरा महायुद्ध छिडेगा, तब भारत तुरन्त इगलैड के विरुद्ध विद्रोह कर देगा और इस तरह उलझन पैदा करके उसे भारत को आजाद करने के लिए मजबूर करेगा। वे इगलैड के हुक्म पर लडने के लिए मजबूर नही होगे, जैसे कि वे कहते थे कि वे प्रथम महायुद्ध मे मजबूर किए गए थे।

'और इसके बाद ?' मैने पूछा।

'और इसके बाद,' तरुण भारत ने गर्व से कहा, 'हम स्वय यह फैसला करेगे कि हम इगलैड की तरफ से लडना चाहते है या उसके विरोध मे।'

जब समय आया, तब वे जिस बात पर विचार न कर सके वह थी नाजीवाद की पाशविकता और एशिया मे जापान के आक्रमण। जब उन्होने देखा कि उन्हे धुरी शक्तियो और अग्रेजो के बीच चुनाव करना है, तब उन्होने अग्रेजो का पक्ष

लिया क्योंकि वे जानते थे कि अनेक अन्यायों के बावजूद वे सभ्यता और पाशविकता में चुनाव कर रहे थे। उन्होंने आज़ादी के लिए बनाई गई योजनाएं स्थगित कर दीं और युद्ध समाप्त न होने तक गांधीजी अपने देश के भीतर अपना कार्य करते रहे। इसके बाद इंगलैंड के सबसे अधिक समझदार लोगों ने नई दुनिया की हालत को समझते हुए, अंग्रेज़ों तथा उन दूसरे लोगों के विरोध के बावजूद, जिन्हें एशिया के बारे में काफी ज्ञान न होने से यह पता नहीं था कि समझदारी क्या है, आज वह उसके निवासियों को लौटा दिया। चर्चिल की रक्त-स्नान की भविष्यवाणी, जो अंशतः पूरी हुई भी, अनिवार्य को न रोक सका। भारत ने उतनी देर प्रतीक्षा की थी जितनी वह कर सकता था और किसान तथा बुद्धिजीवी उसी पुराने अजेय गठबंधन में संगठित होकर एक ही पक्ष में थे। यह गांधीजी की शक्ति ही थी जिसने उन्हें पहले ही यह स्पष्ट कर दिया था कि किसान और बुद्धिजीवी दोनों को अपने देश के लिए मिलकर काम करने के लिए प्रभावित करना होगा। दोनों का एक-सा दृढ़ प्रभाव था और इसलिए उन्होंने बिना युद्ध के अपना ध्येय हासिल कर लिया। शायद हम अमरीकन लोग उस महान् शिक्षा को अभी पूरी तरह नहीं समझते जो भारत इस प्रकार आज़ादी प्राप्त करके दे रहा है। उसकी रक्तहीन क्रान्ति की शानदार विजय के आगे हमारा स्वाधीनता का युद्ध, आकार और अवधारण में छोटा-सा लगने लगता है। भारत ने मानव-जाति को एक सबक सिखाया है और उसे न सीखकर हम खतरा उठा रहे हैं। सबक? कि युद्ध और मार-काट से विनाश के अतिरिक्त कुछ नहीं होता, और कि महान् उद्देश्य की सफलता तभी निश्चित होती है यदि उसकी प्राप्ति के साधन भी उसके अनुरूप और महान् हों।

परन्तु उपनिवेशवाद का असली खण्डन भारत के गांवों में दिखाई देता था। ऊपर भी अंग्रेज़ी स्कूलों में नौकरियों के लिए शिक्षा पाए हज़ारों तरुण बुद्धिजीवियों में गड़बड़ फैली हुई थी क्योंकि थोड़ी-सी सिविल सर्विस की नौकरियों के अलावा और नौकरियां नहीं थीं। कस्बों और नगरों में सुसंस्कृत और सुशिक्षित दुःखी नौजवान भरे थे जिन्हें कोई नौकरी नहीं मिलती थी, और साम्राज्य के पुराने ऊपरी ढांचे के कारण नौकरियां नहीं बन पाती थीं। मैं फिर कहती हूं कि बुराई का असली प्रमाण दुर्दशाग्रस्त गांवों में था। मैं सोचती थी कि चीन में मैंने काफी गरीबी देखी है, पर जब मैंने भारतीय गांवों को देखा तब पता चला कि उनकी तुलना में

चीनी किसान सम्पन्न था। केवल रूसी किसान से, जिसे मैंने वर्षों पहले देखा था, भारतीय किसान की तुलना हो सकती थी, यद्यपि वह रूसी भिन्न किस्म का था और अनेक प्रकार से हीन था। कारण यह कि भारतीय किसान इस दृष्टि से चीनी-सा था कि वह जन्मत: सभ्य था, एक संगठित मानवीय पारिवारिक जीवन की परिपक्व संस्कृति और गहरे दार्शनिक धर्मों ने उसके मन और आत्मा का स्वरूप-निर्माण किया था, चाहे वह पढ़ और लिख नहीं सकता था। और बच्चे, भारतीय गांवों के वे छोटे-छोटे बच्चे, कैसे उन्हें देखकर मेरा दिल फटने लगता था—पतले शरीर, मोटे पेट, और सबकी बड़ी-बड़ी काली उदास आंखें। मैं सोचती थी कि कोई अंग्रेज़ उनकी ओर ध्यान से देखकर अपने को दोष दिए बिना नहीं रह सकता। तीन सौ वर्ष का अंग्रेज़ी आधिपत्य और शासन और उसके बाद इस तरह के बच्चे? हां, करोड़ों की संख्या में! और निश्चय ही निन्दा का अन्तिम प्रमाण यह था कि भारत में औसत जीवन-काल केवल सत्ताईस वर्ष था। सत्ताईस वर्ष! तो कोई आश्चर्य नहीं कि जीवन को जल्दी आगे बढ़ाया जाता था, कि आदमी छोटी उमर में शादी कर लेता था, जिससे उसके मरने से पहले अधिक से अधिक बच्चे हो जाएं। मुझे इंगलैंड अच्छा लगा था। वहां की सब सुखद यात्राओं की स्मृति मेरे मन में थी। पर भारत में मैंने वह इंगलैंड देखा जिससे मैं अपरिचित थी। मुझे मजबूरन यह सोचना पड़ा कि अंग्रेजों को—जो अनेक दृष्टियों से संसार के सर्वोत्कृष्ट लोग थे, वे लोग जिन्होंने हम सबके लिए मनुष्यों द्वारा अपना शासन स्वयं करने के मार्ग को प्रकाशित किया, यदि उन लोगों को भी उपनिवेशवाद इतना भ्रष्ट कर सकता था तो सचमुच हममें से कोई भी साम्राज्य का शासक बनने का दम नहीं भर सकता।

नये-पुराने भारतीय मित्रों के साथ रहते मुझे यह प्रतीत हुआ कि भारत की सब मुसीबतें आसानी से दूर हो सकती थीं, यदि वहां ऐसी सरकार होती जिसका उद्देश्य जनता को अपना भोजन बनाने की अपेक्षा सबसे पहले उसका हित करना होता। उदाहरण के लिए, रेगिस्तान जैसा सूखा देश, बम्बई और मद्रास के बीच की उद्यानहीन धरती अभी फरवरी में ही सूख गई थी और धूप इतनी गर्म थी कि वहां पानी होता तो कोई भी बीज अंकुरित हो जाता। और पानी क्यों नहीं था? क्यों नहीं आर्टीसियन कुएं या उथले कुएं ही खोद दिए जाते, क्योंकि मुझे बताया गया कि पानी की सतह ऊंची थी। परन्तु वर्षों के औपनिवेशिक शासन के बाद थके हुए लोगों में ऐसे कार्य स्वयं आरम्भ करने की शक्ति नहीं है। इतना ही नहीं, उपनिवेश-

पद्धति का शायद सबसे बुरा परिणाम यह था कि गुलाम जनता को काम न करने और अपनी सहायता आप न करने का एक असीमित बहाना मिल जाता था। 'मेरे लिए आप ज़िम्मेदार हैं,' प्रजा का शासक के प्रति सदा यह रोषजनित रुख होता था। 'आपने मुझे भोजन और कपड़ा देने तथा मुझपर शासन करने की ज़िम्मेदारी ली है। यदि मैं मरता हूं तो यह आपका दोष है।' सदा अंग्रेज़ों को दोष दिया जाता था और निश्चय ही वह दोषारोपण सदा उचित नहीं होता था पर शायद सारतः यह उचित ही होता था क्योंकि जब किसी जाति का हृदय शून्य हो जाता है तब उसका साहस भी इसके साथ ही नष्ट हो जाता है।

भारत में मैंने देखा कि जिसमें भारतीय रक्त था वही भारतीय था, चाहे उसके रक्त का तीन-चौथाई भाग गोरा हो। और इस नीति से असन्तुष्ट लोगों की संख्या बढ़ गई थी। उपनिवेशवाद के आरम्भिक वर्षों में अंग्रेज़ औरतें अपने पुरुषों के साथ नहीं जाती थीं और अन्त तक भी नौजवान विवाह नहीं करते थे, या काफी देर से करते थे। इसका अनिवार्य परिणाम यह था कि एक बहुत बड़ा ऐसा मानव-समुदाय था जो न अंग्रेज़ था और न भारतीय, पर फिर भी कुछ न कुछ दोनों था। वे प्रायः सदा अपने दोनों पक्षों के समुदाय से उत्कृष्ट होते थे—पुरुष शानदार और स्त्रियां सुन्दर होती थीं—और आम तौर से दोनों ही बुद्धि में उत्कृष्ट होते थे। आज वे वैज्ञानिक बताते हैं कि मिश्रित जाति, आप चाहें तो दोगली या संकर जातियां कह लीजिए, आम तौर से अलग-अलग व्यक्ति के रूप में ही उत्कृष्ट जाति होती हैं, जैसे वनस्पति-जगत् में द्विजातीय गुलाब या द्विजातीय मक्का उत्कृष्टतर होता है। हमें आज बताया जाता है कि सम्पन्नतम संस्कृतियां, सबसे प्रबल संस्कृतियां, दोगली या दो-जातीय जातियों से पैदा हुई हैं, और निश्चय ही अमरीकन काफी दोगले हैं और उनमें उत्तर में स्वीडन तथा फिनलैंड से लेकर दक्षिण में इटली तक का काकेशियन रक्त मौजूद है।

इण्डोनेशिया में दोगले लोगों के प्रति रुख में मैंने एक अजीब अन्तर देखा। वह जिसमें एक बूंद भी गोरा रक्त हो, उसे गोरा गिना जाता था। इस बुद्धिमत्तापूर्ण औपनिवेशिक नीति ने ज़बरदस्त से ज़बरदस्त डच लोगों को मिश्रित रक्त का आदमी बना दिया था और इस तरह भारत के असंतुष्ट आधे-आधे को दूर कर दिया था। इण्डोनेशिया में उसे पूर्ण बराबरी नहीं तो कम से कम ऊपरी बराबरी तो प्राप्त थी जिससे उसके अभिमान की रक्षा होती थी। सच्ची बात यह है कि यदि

दूरदर्शी ओलेन्देज़ ने भारत या हिन्दचीन के उपनिवेशवाद की अपेक्षा किसी दृष्टि से उत्कृष्ट उपनिवेशवाद फैलाया तो उसने यह अपेक्षाकृत प्रबुद्ध मूलवंशीय नीति के द्वारा ही फैलाया। यह सच है कि उस समय इण्डोनेशिया के बुद्धिजीवी भी आज़ादी के लिए आन्दोलन कर रहे थे, पर आन्दोलन शान्त था। अभी लोगों में तो वह बिलकुल दिखाई भी नहीं देता था जबकि भारत में तूफान फटने के लिए तैयार मालूम पड़ता था।

ऐसे गम्भीर अध्ययन और प्रेक्षण के बीच मैंने विभिन्न प्राकृतिक दृश्यों में हर राष्ट्र के देहाती भाग में अधिक से अधिक दूर तक घूमने में आनन्द लिया। सच्चे जंगल का पहला स्वाद मैंने सुमात्रा में लिया। यद्यपि मैंने हिन्दचीन में भी जंगल देखे थे, पर सुमात्रा में जंगल आकाश से भी खतरनाक लगता है। कीचड़ भरी नदियां बदरंग श्यामल हरियाली में से सुस्त सांपों की तरह सरकती दिखाई देती थीं और जब विमान नीचे आया, तब उस आर्द्र हवा में वह कैसा जी खराब करने वाला मीठापन-सा था जिसमें कोई ऐसी चीज़ थी जो जीवित होते हुए भी सड़ी बदबूदार थी! मैं जंगलों के लिए उपयुक्त प्राणी नहीं।

पीछे की बातों पर नज़र डालती हूं तो मैं देखती हूं कि भारत के लोगों के बारे में मुझपर उनके बीच रहते हुए जिन अनेक बातों की छाप पड़ी और जो अब भी मेरे मन में स्पष्ट है, उनमें से उनका महान् पुरुषों और स्त्रियों के प्रति पूज्यभाव है। भारत में वे ही लोग नेतृत्व कायम रख सकते हैं जिन्हें उनके अनुयायी अच्छा समझते हों, अर्थात् त्यागी और इसलिए निःस्वार्थ समझते हों। उनके इस एक गुण में और सब अनेक गुण आ जाते हैं। जो आदमी किसी आदर्श के खातिर निजी लाभ का त्याग कर सकता है, वह इस तथ्य के कारण सत्यनिष्ठ भी है, उच्च भावना वाला भी है और इसलिए विश्वसनीय भी है। मैंने अनुभव किया कि लोग, यहां तक कि वे भी जो स्वयं को भ्रष्ट और पैसे के गुलाम तथा दोषों से पूर्ण समझते थे, ऐसे व्यक्तियों की खोज करते थे। गांधीजी के अनुयायियों में अनेक दोषपूर्ण स्त्री और पुरुष थे; स्वयं महात्माजी भी कुछ क्षुद्र मनमानियों से मुक्त नहीं थे, जैसा कि उनके साथ निरन्तर रहने वाले लोग अच्छी तरह जानते थे, फिर भी लोग उनमें निष्ठा रखते थे, क्योंकि उन्होंने निजी लाभ का महान् त्याग किया था।

गांधीजी को सारे राष्ट्र से और अन्त में अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र से भी जो निष्ठा प्राप्त हुई थी, वह सबको मालूम है, पर मैंने स्थानीय व्यक्तियों को भी आदर दिया

जाता देखा जो अपने सीमित क्षेत्र में अपनी निःस्वार्थता के कारण नेता थे। इस तरह मुझे एक भारतीय गांव की याद है जिसमें मुझे कुछ, पर अधिक नहीं, आधुनिक शिक्षा वाले एक परिवार के (जो धनी न होते हुए भी खाता-पीता परिवार था) घर निमंत्रित किया गया था। मकान की दीवारें कच्ची और छतें छप्पर की थीं, पर अन्दर कई कमरे थे और उनके फर्श गोबर तथा पानी के प्रचलित मिश्रण से लिपे हुए और चिकने थे। घर का कर्ता-धर्ता परिवार का मुखिया नहीं था बल्कि उसका एक छोटा भाई था, यह मुझे वहां पहुंचते ही पता चला क्योंकि घर में घुसने से पहले मेरा मेज़बान मुझे एक अजीब तरह के पिंजरे के पास ले गया जो चार डंडों पर धरती से काफी ऊपर खड़ा था। पिंजरे में, जो तार की जाली का बना था, मैंने चकित होकर देखा कि एक वृद्ध पुरुष पीठ के बल लेटा था और उसका सिर एक तकिये पर रखा था।

'मेरे जेठे भाई—' मेरे मेज़बान ने समझाने के लिए बताया। 'इन्हें लकवा मार गया है, और यद्यपि हम इनसे मकान के अन्दर रहने की प्रार्थना करते हैं, पर इन्हें बाहर रहना ही पसन्द है जिससे वे अपनी बात कहने के लिए आने वालों लोगों की बात आसानी से सुन सकें।'

मेरा मेज़बान अच्छी अंग्रेज़ी बोलता था, पर उसका बड़ा भाई अंग्रेज़ी नहीं बोलता था और हम केवल अभिवादन का ही आदान-प्रदान कर सकते थे और एक-दूसरे की ओर मैत्री की दृष्टि से देख ही सकते थे। जो कुछ मैंने देखा, वह एक तीव्र बुद्धि, पतला, दर्द से तीखा चेहरा था जिसकी आंखें समझदारी से भरी हुई और पैनी थीं। शरीर बिल्कुल लाचार था पर वह बहुत अच्छी तरह साफ था और सूती कपड़े बर्फ से सफेद थे। हमने एक-दो बातें कीं और फिर गांव वालों का एक समूह मुझे देखने नहीं, बल्कि बड़े भाई से बात करने, आया और इसलिए मेरा मेज़बान मुझे अपनी तरुण पत्नी और बच्चों से मिलाने मकान के अन्दर ले गया।

अपने वहां रहने के सारे समय उस पिंजरे को मैं ध्यान से देखती रही और शायद ही कोई ऐसा क्षण हो, जब वह लोगों से न घिरा रहा हो। जब तक दिन का प्रकाश रहा तब तक कोई भी समय ऐसा नहीं रहा जिसमें कम से कम एक आदमी धरती पर न बैठा हो, जो पहले गम्भीरता से अपनी बात कहता और फिर ध्यान से सुनता था। मेरे मेज़बान ने कहा—

'मेरा भाई सदा हमारा बुद्धिदाता रहा है। अब वह हमारा सन्त-महात्मा हो

गया है।'

मैंने लक्ष्य किया कि हमारे मेज़बान का भी गांव के जीवन में स्थान था क्योंकि जब हम उस दिन भोजन कर रही थीं, तब वह एक पुकार पड़ने पर, जो किसी पड़ौसी की मालूम होती थी, दो बार कमरे के अपने कोने से उठा और बाहर गया। जब वह वापिस लौटा तब उसने एक स्पष्टीकरण पेश किया—

'मुझे एक खतरनाक सांप को मारने बुलाया गया था।'

भोजन सादा देहाती भोजन था—मसूर, चावल, बहुत अधिक उबाला हुआ पालक, मसाले। भोजन करने से पहले एक बूढ़ा पीतल के लोटे में पानी और एक घर का बुना तौलिया हमारे हाथ साफ करने के लिए लाया जो उंगलियों से भोजन करने से पहले आवश्यक कार्य था। मैंने सारे जीवन तौलियां प्रयोग की थीं और छुरी तथा कांटे के मुकाबले उन्हें अधिक पसन्द किया था। पर जब से मुझे अपने दाएं हाथ से खाने की आदत पड़ी थी तब से मुझे यह भी उतना ही पसन्द था। आखिरकार आदमी के अपने धुले दाएं हाथ से बढ़कर क्या चीज़ होगी, और भारतीय बच्चों को बचपन से यह सिखाया जाता था कि दायां हाथ भोजन आदि स्वच्छ कामों के लिए है, और कुछ हीन कोटि के काम बाएं हाथ से किए जाते हैं।

एक और स्वच्छता यह थी कि हमारा भोजन प्लेटों के बजाय ताज़े काटे हुए हरे केले के पत्ते पर परोसा जाता था। चौड़े हरे पत्ते पर रखा, अच्छी तरह पकाया, चावल देखने में बड़ा अच्छा लगता है और खाने की इच्छा पैदा करता है। जिन घरों में जाति-विचार चलता था, उनमें भोजन ऐसे पत्तों पर या मिट्टी के नये बर्तनों में परोसा जाता था जिन्हें भोजन के बाद तोड़ दिया जाता था। मेरे मेज़बान ने कमरे के दूसरे कोने में फर्श पर हमारी ओर पीठ करके बैठकर भोजन किया और इस प्रकार अपने जाति-नियम का पालन किया। अब तक मैं इस तरह की दूरी के बारे में अपनी पहली भावना को काबू करना सीख चुकी थी। यह अतिथि का अनादर न होकर एक धार्मिक भावना के प्रति अपनी निष्ठा मात्र थी।

भारतीय जीवन में धर्म अपने बुरे से बुरे रूप में और अच्छे से अच्छे रूप में भी सदा रहता है, क्योंकि और स्थानों की तरह वहां भी धर्मान्धता बुराई की सीमा में पहुंच जाती है। पर धार्मिक प्रेरक भावना की सरल स्वीकृति और अपने धर्म की अति-आत्मिक प्रेरणा के अनुसार व्यवहार करने की पूर्ण स्वाधीनता मुझे पसन्द आई। इस प्रकार, अपने प्रथम भारतीय परिवार में, जो बुद्धिजीवी और काफी

सम्पन्न था, में अपनी मेज़बान गृहपत्नी के रहने के कमरे में बातचीत कर रही थी कि एक भारतीय सज्जन हमसे बिना कुछ बोले अन्दर आए और शान से कदम रखते कमरे के परले सिरे पर चले गए। उनके नंगे पांव फर्श पर कोई आवाज़ नहीं कर रहे थे। वहां वे घुटनों के बल बैठ गए और उनका सिर झुक गया और शायद पन्द्रह मिनट तक ऐसे रहा। जब मैंने उत्सुकता से उनकी ओर नज़र डाली तब मेरी मेज़बान ने बिल्कुल लापरवाही से कहा :

'यह मेरा देवर है। यह दिन में पूजा के समय यहां आ जाता है, क्योंकि इसका अपना घर इसके कारबार की जगह से दूर है।'

जब पूजा हो गई तब वह फिर बाहर चला गया और उससे मेरी मुलाकात बहुत दिन बाद हुई और वह भी पूजा के समय नहीं।

पर मेरा जीवन यात्राओं और अनेक लोगों से इतना अधिक भरा है कि उन सबको एक पुस्तक के अन्दर लाना सम्भव नहीं और सच्ची बात तो यह है कि मेरी सब पुस्तकें भी वे सब बातें बताने के लिए, जो मैं बताना चाहती हूं, काफी नहीं होतीं। भारत से आ जाने के बाद मैंने इसकी पृष्ठभूमि पर 'कम माई बिलवेड' लिखी। अजीब बात है कि बहुत थोड़े-से लोगों को छोड़कर, अमरीकन लोगों ने उसका असली अर्थ नहीं समझा, पर भारतीय पाठक वह समझ गए। शायद हमारा जीवनकाल अभी इतना लम्बा नहीं हुआ कि हम व्यापक रूप से समझ सकें कि ध्येय चाहे जो हो, पर सफलता और सिद्धि की कीमत एक पराकाष्ठा, एक परमत्व है। अपनी पुस्तक में मैंने यह बात सिद्ध करने के लिए तीन ईसाई मिशनरी (धर्म-प्रचारक) छांटे हैं, क्योंकि जितने लोगों को मैं जानती हूं उनमें मिशनरी अपने ढंग से सबसे अधिक समर्पित, सबसे अधिक एकाग्र-हृदय, होता है। वह मानता है कि ईश्वर एक ही है जो मनुष्य-मात्र का पिता है और कि सब मनुष्य भाई हैं। कम से कम ईसाई कहता तो है कि मैं ऐसा मानता हूं। वैसा ही वह उपदेश करता है। तो फिर अपनी कुर्बानियों के बावजूद वह संसार को बदलने में क्यों विफल रहा? अफ-सोस कि उनकी संख्या काफी नहीं रही और वह श्रद्धा की पूरी कीमत चुकाने को तैयार न था। वह केवल आंशिक कीमत चुकाता है और अपने धार्मिक विश्वास का पूरा अर्थ पूरे रूप में स्वीकार करने में असमर्थ रहा है। यही अस्वीकृति मैं यहां अपने देश में, और अकेले ईसाइयों में ही नहीं, बार-बार देखती हूं, पर भारत के लोग जानते हैं कि किसी आदर्श की पूरी-पूरी कीमत चुकाने को तैयार रहना किसे

कहते हैं। वे समझते हैं और उनके लिए मेरी पुस्तक पहेली नहीं है।

जो कुछ ज्ञान और अनुभव मैंने संचित किया था उसको लेकर मैं चीन आ गई और वहां इन मणिरत्नों को छांटती-संभालती और अपने भविष्य पर विचार करती हुई कुछ दिन वहां रही। फिर नानकिंग में, राष्ट्रवादी सरकार से कुल सौ कदम पर। अब भी मुझे यह न दिखाई दिया कि अच्छाई की दिशा में कोई परिवर्तन या कोई व्यापक दृष्टि, या हल करने योग्य वास्तविक समस्याओं के बारे में कोई समझ पैदा हुई है, और लोगों का रोष बढ़ता जा रहा था। कम्युनिस्टों को सुदूर पश्चिमोत्तर में शीघ्र ही वन्द कर दिया जाना था। दीर्घ प्रस्थान १९३५ में हुआ, पर सब युद्धनायक अभी नही जीते गए थे। सबके सब अभी सौदेबाजी करके खरीदे नहीं गए थे, और जापान सचमुच अशुभ आशंका पैदा कर रहा था। यह सब तो था ही, इससे भी अधिक बात भी थी— समुद्र के दूसरी ओर मेरी लड़की के यहां से बुरी खबर आ रही थी और मेरे घर में अन्तर गहरा होता जा रहा था जिससे मैंने अन्तिम रूप से निश्चय कर लिया कि मैं चीन से चली जाऊंगी। चाहे हमेशा के लिए न जाऊं, पर फिर भी अपने यौवन की लीला-भूमि और बचपन के देश के रूप में तो इसे छोड़ ही दूंगी। मैं अपने पूर्वजों के देश लौटूंगी और दूसरा जीवन बनाऊंगी। इस निश्चय ने मुझे अपने पूर्वजों के सदा की अपेक्षा अधिक निकट कर दिया। कभी उन्होंने भी समुद्र पार करके अज्ञात देश में जाने के लिए ज्ञात देश का त्याग किया था। मेरी स्थिति उससे उल्टी थी। मैं अन्य देश में बड़ी हुई थी और मैंने एक अपरिचित देश को अपना बना लिया और अब पूर्वजों के देश लौटना था— उखड़ना एक जैसा था, दिशा चाहे जो हो।

चलने से पहले मैं एक बार फिर पीकिंग गई, केवल उसे देखने, केवल उसके अन्तिम दृश्यों की छाप अपनी स्मृति पर लगाने, जो मेरे बचपन के चीन का हृदय था। यह चुपचाप होने वाली वापसी नहीं थी, क्योंकि उस समय बहुत अधिक लोग मुझे जानते थे और मुझे अनेक निमन्त्रण मिले जिन्हें मैं अस्वीकार नहीं कर सकती थी। अब मुझे उनकी याद नहीं है—पर उस अन्धे गायक की अवश्य याद है जो एक सुनसान सड़क पर एक दिन शाम के झुटपुटे में मुझे मिला था। मैं केवल आनन्द के लिए सैर कर रही थी कि मुझे दो तारों वाले चीनी बेला पर किसी कुशल हाथ का मधुर संगीत सुनाई पड़ा और वहां सड़क की रोशनी में एक लम्बा स्लेटी सूती चोगा पहने एक विशालकाय आदमी की आकृति थी। उसका बड़ा सिर ऊंचा उठा था.

उसकी काली आंखें खुली, पर अन्धी थीं, जैसा कि उसके पास आने पर मैंने देखा। उसने अपना बेला अपनी छाती पर पकड़ा हुआ था और अपने धनुष से दोनों तारों को बजाता हुआ वह आगे चलता जाता था और इतना तन्मय था कि मेरे होने का उसे पता न चला। उस आदमी को और उसकी मधुर स्वरमालिका को मैं आज तक नहीं भूल सकी।

और मैं अपना पुरानी प्रसिद्ध सरायों में बिताया हुआ समय भी नहीं भूल सकी—मुस्लिम सराय, जिसमें भुना हुआ मटन (सूअर का गोश्त) दिया जाता था, पीकिंग की सराय, जिनमें बतख मांगने पर गाहक जिन्दा बतख छांटता और उसके बनकर आने की प्रतीक्षा करता। मैंने पुराने महलों के फिर चक्कर लगाए और एक दिन उन कमरों में बहुत देर रही जिनमें वृद्ध सम्राज्ञी रहती थी। और पीकिंग से एक दिन का सफर करके मैं चीन की महान् दीवार पर चली जो अब बेकार थी, यद्यपि अब भी दुश्मन उत्तर से आना था, और एक दिन मैंने जेड पगोडा के पास बिताया ताकि मैं उसे सदा याद रख सकूं।

इस प्रकार मैंने शायद अपने सारे जीवन के लिए अपना प्याला लबालब भर लिया क्योंकि कौन जान सकता था कि कभी सैर के लिए भी यहां लौटना सम्भव होगा या नहीं। युद्ध निश्चित था —विश्व-युद्ध नहीं तो जापान के साथ युद्ध, और अब तक विश्व-युद्ध क्षितिज पर दीखने लगा था, और मनुष्य के हाथ से बहुत बड़ा दिखाई दे रहा था। मैं जानती थी कि उस युद्ध में जापान हमारे पक्ष में न होकर दूसरे पक्ष में होगा। फिर भी जब अन्तिम क्षण आया, मकान और बगीचे से मेरी अन्तिम विदा हुई, तब मैंने अपने साथ कुछ नहीं लिया। मैं कुछ न ले सकी। मुझे वह सब जैसा था, बिल्कुल वैसा ही छोड़ने की मजबूरी महसूस हुई, मानो गर्मियों के बाद में लौट आऊंगी, जैसे अन्य वर्षों में मैं लौट आती थी। इस प्रकार १६३४ के वसंत में मैं अपने देश चली गई।

४

ग्रीन हिल्स फार्म

मेरे लिए अपना देश नया देश था यद्यपि मैं जन्म और वंश से अमरीकन थी। मेरे जीवन का पूर्वार्ध खत्म हो गया था पर उत्कृष्टतर उत्तरार्ध, दीर्घतर उत्तरार्ध—क्योंकि बचपन के वर्षों में काफी समय बर्बाद हो जाता है—अब भी मेरे पास शेष था। मैं परिपक्व-बुद्धि, स्वस्थ, प्रत्येक नये दृश्य और ध्वनि तथा अनुभूति के प्रति सचेत थी। मेरे सगे-सम्बन्धी तीन युद्धों में बहादुरी से लड़े थे—१७७५ का स्वाधीनता-युद्ध, १८६१ का गृह-युद्ध, और १९१४ का प्रथम महायुद्ध। इनमें से प्रत्येक युद्ध में उद्देश्य एक ही था, जो आदर्शरूप था कि अमरीका एक संयुक्त और स्वतन्त्र राष्ट्र बने और कायम रहे। शान्ति-काल में मेरे सम्बन्धी उपदेशक, अध्यापक, वकील और ज़मीन-मालिक रहे थे। संस्कृति हमारी पारिवारिक परम्परा थी और सरस्वती-पूजा एक सामान्य नियमित बात समझी जाती थी। माता-पिता अपने बच्चों का मुंह स्कूल की ओर कर देते थे, चाहे तब तक बच्चों को स्कूल से प्रेम हुआ हो या नहीं, और उनसे श्रेष्ठता की अपेक्षा की जाती थी। इस सबका अर्थ यह था कि मैं अपने देश में किसी वर्गहीन समाज में व्यष्टि का जो बोझ होता है, वह बिना लिए आई। मुझे अपने बारे में चिन्ता के लिए कोई कारण न था। मैं सदा जो कुछ करना चाहती थी, उसमें समर्थ रही थी और उसका अर्थ था अहंकार से मुक्ति अर्थात् असफलता के भय से और घमंड से भी मुक्ति। मैं इस मनःस्थिति को अच्छा समझती हूं क्योंकि यह मनुष्य को सारे समय प्रेक्षण और विचार, काम और उसके आनन्द का अवसर देती है।

अपनी पहली गर्मियां मैंने न्यूयार्क में बिताईं और इसके परिणामस्वरूप मुझे पता चला कि यदि मैं केवल नगर-पर्यवेक्षक बनी रही और किसी दूसरी जगह अपने देश का प्रतिनिधित्व न कर सकी तो मैं अपने देश को कभी नहीं समझ सकती। इसका अर्थ था कोई घर, और घर का अर्थ था मकान, और समस्या थी कि इतने

बड़े देश में इसका चुनाव कैसे हो ? चुनाव केवल भौगोलिक आधार पर हो सकता है, और मैंने अनेक स्थान देखे जो रहने के लिए काफी आनन्ददायक थे—पश्चिमी रेगिस्तानों का नग्न सौन्दर्य, कन्सास के बड़े आनन्दपूर्ण ऊंचे मैदान, रौकीज़ के पर्वतीय राज्य, न्यू इंगलैंड की घनी पहाड़ी। सुदूर दक्षिण को तो मैंने अलग छोड़ दिया। मैं ऐसी जगह नहीं रह सकती थी जहां औपनिवेशिक वातावरण हो और जहां मुझे रेल-रोड स्टेशनों और रेस्टोरेंटों में अपनी जगह जानने के लिए सदा साइन-बोर्डों पर टकटकी लगानी पड़े। इसके अतिरिक्त, मैं अन्ततः अधिक बच्चों के लिए योजना बना रही थी क्योंकि मैं सोचती थी कि बच्चों के लिए यह देश सुरक्षित है और मैं नहीं चाहती थी कि मैं उनमें रंग-सम्बन्धी कुसंस्कार भरने की ज़िम्मेदारी उठाऊं, जो मैं जानती थी कि निकट भविष्य की दुनिया में हमारे लिए खतरनाक होंगे।

कुछ सोचने और यात्रा करने के बाद मैंने एक ऐसे प्रदेश के पक्ष में फैसला किया जिसमें प्राकृतिक दृश्य विविधतापूर्ण थे, जिसमें खेती और उद्योग अगल-बगल चलते थे, जहां समुद्र निकट था और पर्वत भी काफी दूर नहीं थे तथा नगर और देहात एक-दूसरे के शत्रु नहीं थे, यह था एक बड़ा सम्पन्न राज्य, राष्ट्र का एक टुकड़ा—पेन्सिलवानिया। और पेन्सिलवानिया में भी कहां ? यह इसपर निर्भर करता था कि मुझे किस प्रकार का मकान चाहिए था। मकान पुराना होना चाहिए क्योंकि मुझे पुराने मकानों में रहने की आदत थी। मुझे उनका ठोस रूप, उनकी गंभीरता, उनका आकार अच्छा लगता था। मेरे चीनी मित्रों के मकान प्राचीन मकान थे, बड़े-बड़े शहतीर, मोटी दीवारें, पुराने बगीचे। मुझे न्यू इंगलैंड और न्यूयार्क के सफेद और हरे मकान अच्छे लगते, पर वे क्षणस्थायी मालूम होते थे। लकड़ी आसानी से जल जाती है। चीन में गरीबों के मकानों में भी मोटी मिट्टी की दीवारें होती थीं। मैं केवल जापान में लकड़ी के मकान में रही हूं—पर उसका कारण भूकम्प थे, जो यदि छोटों को भी गिना जाए तो हर साल औसतन दो हज़ार से अधिक आते थे—पर वे जल जाते थे। नहीं, सम्भव हो तो पत्थर ही रहे, क्योंकि चीनी ईंट के शान्त सलेटी रूप के आगे लाल ईंट मुझे पसन्द नहीं है।

मुझे पेन्सिलवानिया में पत्थर के मकान मिल गए और तब, मन्दी के अन्त में, फार्म सस्ते थे। मेरा स्थान देहात ही था, यद्यपि मुझे कुछ कारणों से शहर भी पसन्द था, पर रहने और अपना काम करने के लिए नहीं। तो एक फार्म हो, चाहे

में खेती करूं या न करूं, इसी सामान्य भूदृश्य में कहीं एक शान्त स्थान हो, किसी पहाड़ी पर एक मकान हो, एक नाला हो, पेड़ हों और स्निग्ध पहाड़ियां हों। मेरा ख्याल है कि बहुत सुन्दर प्राकृतिक दृश्य स्मृति में संचित करने और बार-बार देखने की चीज़ हैं, पर बीच में रहने की चीज़ नहीं।

आदमी अपने मकान का चुनाव कैसे करता है? यह पहले कल्पना में बनाया जाता है। मैंने अपना मकान बड़े स्पष्ट रूप से देखा, अनपढ़ पत्थर, सुनहरे और लाल रंग के चमकीले पत्थरों-से भूरे-भूरे, और एक विशालकाय चिमनी। यह कोई ऊंचा तंग मकान नहीं था, बल्कि खुला, कम से कम एक शताब्दी पुराना मकान था, जो धरती पर नीचे से शुरू हो जाता था। शायद एक भाग मुख्य भवन के सहारे लगा था, बहुत सारी खिड़कियां थीं, जंगलों और पहाड़ियों तथा नाले की ओर हल्का दृश्य था। यह वहां मौजूद था। केवल इसका पता लगाने की ज़रूरत थी। एक दिन न्यूयार्क की एक व्यस्त बाज़ार वाली सड़क पर मैंने एक स्ट्राउट फार्म एजेन्सी का बोर्ड देखा और मैं अन्दर चली गई।

'क्या आपके पास बिक्री के लिए पेन्सिलवानिया में कोई छोटे फार्म हैं?' मैंने ठीक वैसे पूछा मानो में किसी बिसातखाने की दुकान से दस्ताने का जोड़ा खरीद रही थी।

जम्हाई लेते हुए एक क्लर्क ने अपने अंगूठे से मेज़ पर रखे छोटे-छोटे फोल्डरों के एक ढेर की ओर इशारा किया। मैंने ऊपर वाला फोल्डर उठाया और उसके निचले दायें कोने में अपने मकान का चित्र देखा जो डाक के टिकट से बड़ा न था, ठीक वैसा जैसा मैंने सोचा था, एक खुला मुख्य भवन और फिर उसका एक हिस्सा सारा पत्थर का, बड़ी-बड़ी चिमनियां, एक पहाड़ी के किनारे सुन्दर वातावरण में एक नाला, पेड़ और नाले के ऊपर एक पुराना तीन मेहराबों वाला पुल भी अड़-तालीस एकड़ ज़मीन, कीमत इकतालीस सौ डालर।

'धन्यवाद,' मैंने कहा। इसके बाद सांस रोककर और अपने मकान की ओर इशारा करते हुए, 'क्या यह बिक चुका है?'

सुस्त क्लर्क ने मुंह उठाकर एक फाइल में कुछ देखा। 'नहीं,' उसने उदासीनता से कहा।

'धन्यवाद,' मैं बोली।

वहां से में चल पड़ी और इस कारण मैं अधीर हो रही थी कि अंधेरा अधिक

होने के कारण उसी दिन उस मकान पर कब्ज़ा करने के लिए नहीं जाया जा सकता था। अगले दिन बड़े भोर में मैं चल पड़ी और रास्ते में मैंने नाश्ता किया और कुछ ही घण्टे में अपनी मंज़िल पर पहुंच गई, यद्यपि बहुत बार रास्ता भूली। यह गर्मियों का दिन था बहुत श्यामल और शान्त। आकाश पर हल्के बादल घिरे थे। मैंने स्ट्राउट के स्थानीय एजेन्ट को, जो पेन्सिलवानिया का एक डच था, खोज निकाला और उसके साथ एक देहाती सड़क पर आए जिसपर चीन के रास्तों जैसी धूल भरी थी और शीघ्र ही हमने तीन मेहराबों वाला पुल पार कर लिया।

'वह है मकान!' वह बोला।

उसने छोटी-सी पहाड़ी की ओर इशारा किया और मकान वहां था, और ठीक वैसा ही था जैसा कि डाक-टिकट के आकार के चित्र में था। हम दक्षिण की ओर एक और संकरी सड़क पर मुड़े। 'ओल्ड मिल रोड,' उसने कहा, जो मकान तथा बहुत बड़े लाल अनाज-घर के बीच थी।

उसके बाद हम रुके और बाहर निकले। मैंने काफी उत्कृष्ट मकान देखे थे और आज तक भी मैं यह नहीं कह सकती कि मैंने इसी मकान के लिए क्यों आग्रह किया, यद्यपि मुझे कभी अपने चुनाव पर अफसोस नहीं हुआ, पर मैंने दूरदर्शी होने का यत्न किया। मैंने दिखाने की फीस दी और कहा कि मैं दो-एक दिन में जवाब दे दूंगी। उसने पेन्सिलवानिया के डच की सी फुंकार छोड़ी और कहा कि यदि आप चाहें तो मैं आपको कुछ और मकान दिखा सकता हूं। और क्योंकि मैंने महसूस किया कि व्यवहार-बुद्धि की बात यह है कि मुझे यथासम्भव अधिक से अधिक मकान देखने चाहिए, इसलिए मैंने शेष दिन उन्हें देखने में बिताया, और अपना मकान तुरंत खरीद लेने से अपने को रोका। इसके बाद मैं न्यूयार्क लौट गई और बीच के आवश्यक दिन प्रतीक्षा करना बड़ी मुश्किल से सहन कर सकी। यदि यह सप्ताहान्त न होता तो मैं प्रतीक्षा न कर सकी होती। तीन दिन बाद मैं उस मकान की मालिक हो गई।

तब से आज तक जो काम मैंने किया, वही काम करने वालों ने अनेक बार पुस्तकें लिखी हैं और दूसरों ने जो किया उसे बड़ी उत्सुकता से करते हुए मैंने उन सब पुस्तकों का आनन्द लिया है। फर्क इतना ही है कि उन्हें किसी पुराने मकान को रहने योग्य घर बनाने में जो अनेक कठिनाइयां हुईं, उनमें थोड़ा-सा अधिक तीखापन आ गया मालूम होता है। पर मेरे लिए ऐसी कोई कठिनाई नहीं थी। मेरे लिए

हर चीज शुद्ध आनन्द थी, शायद इस कारण कि यह मकान मेरी अपनी पहली सम्पत्ति थी, या शायद इस कारण कि मुझे वास्तुकार होना चाहिए था। नि सन्देह यदि मै मकान बनाती तो वह वैसा न होता जैसा मैने खरीदा था। यह मेरी पसन्द के भूदृश्य के अनुरूप आकृति वाला, उस ढग से किसी प्रयोजन-विशेष के लिए उपयोगी होता जैसे चीनी मकान या ठीक-ठीक कहा जाए तो जापानी मकान बने होते हैं। मेरी बात का ठीक आशय फ्रैंक लायड राइट जानता है क्योकि उसने इसी दर्शन का प्रयोग किया है और उसे भी जापान और कोरिया मे प्राय अपने लिए प्रेरणा प्राप्त हुई है। जो जाति जितनी पुरानी हो जाती हे, वह अपने प्राकृतिक दृश्य को उतना ही आत्मसात् कर लेती है, और उसके अनुरूप भवन-निर्माण करती है।

फिर भी पत्थर का जो मकान मैने खरीदा, जिसमे मै रहती रही हू, उसमे कुछ मेरे उपयुक्त वस्तु थी। मै नही जानती कि किस नैसर्गिक प्रेरणा से मै पेन्सिलवानिया के उस हिस्से मे गई जिसमे मेरे पिता-पक्ष के पुरखे पहली बार दो सौ वर्ष पहले आए थे। निश्चय ही उन्होने स्वाधीनता के बाद इसे छोड दिया और वर्जिनिया मे शेनान्डोआ घाटी मे जमीने खरीद ली, पर फिर भी यहा मेरी पितृ-परम्परा ने अमरीका मे अपना आरम्भ किया था और यह ज्ञान मुझे स्थिरता देने वाला था। मै परिवार, पूर्वजो और ऐसी सब बातो मे विश्वास करती हू। अन्यथा इस परिवर्तनशील ससार मे मनुष्य असहाय है।

पूर्वजो से भी बढकर वहा मेरे पेन्सिलवानिया के मकान के साथ चली आती परम्पराए थी और सबसे पहले विलियम पेन तथा रेड इण्डियनो (ताबे जैसे रग वाले अमरीकन आदिवासियो) के साथ उसके अच्छे न्यायसगत व्यवहार की परम्परा पडी थी। कभी-कभी वहा बदमाशी भी रही—यह मै जानती हू क्योकि मेरे मकान के पास प्रसिद्ध किस्मो वाला 'इण्डियन वाक' है जिसमे एक शताब्दी और इससे भी अधिक पूर्व गोरे आदमी और रेड इण्डियन मे यह तय हुआ था कि गोरा एक दिन मे जितनी जमीन पर चल सके उतनी ले ले। भलेमानस इण्डियन ने सोचा था कि इसका अर्थ है ईमानदारी से चलना जिसमे विश्राम और भोजन का समय भी होगा, पर चालाक गोरे ने भीषण चाल से चलने का अभ्यास कर लिया और दिन मे इतना क्षेत्र पार कर लिया कि इण्डियन बडा क्रुद्ध हो गया। 'गोरा लुन-लुन-लुन सारे दिन—' इस प्रकार इतिहास उसके विरोध का वर्णन दर्ज करता है।

पर अंग्रेज़ क्वेकर और जर्मन मेनोनाइटो ने यह यत्न किया कि ठगी और मार-

काट कम से कम हो। और यहां अब भी यह परम्परा बड़ी प्रबल है कि सब जातियों से एक-सा और उदारता से व्यवहार किया जाए। पर निःसन्देह उदारता की फिज़ूलखर्ची न करके समझदारी से उसका प्रयोग किया जाता है। पेन्सिलवानिया के डच लोग फिज़ूलखर्च नहीं हैं, और न अंग्रेज़ी खून वाले क्वेकर ही हैं। वे मिल-जुलकर इकट्ठे रहते हैं और धन और धरती तथा अच्छी गायों के महत्त्व में उनका दृढ़ विश्वास है। ठोसपन हमारे प्रदेश की आदत और रिपब्लिकन पक्ष की ओर हमारा स्वाभाविक झुकाव है। फिर भी जब हमें कोई आदमी पसन्द हो तब उसके लिए हम सब कुछ छोड़ सकते हैं।

जहां तक मेरा सम्बन्ध है, मैं तो यह पता लगने पर प्रसन्न हुई कि मैंने वह ज़मीन खरीदी है जो कभी विलियम पेन के भाई रिचर्ड पेन की थी। और यह दिलचस्प बात थी कि जब दो बार हमने बहुत बड़े सूखे पेड़ कटवाए तब हमें मिट्टी में सिक्के मिले जो अधिक कीमत के तो न थे, पर एक बार स्पेनिश सिक्का मिला और दूसरी बार अंग्रेज़ी। मुझे यह बात अच्छी लगी कि यूरोप के लोग यहां रह चुके हैं। हमारे मकान से सम्बन्धित एक भूत का पता लगने पर भी मुझे खुशी हुई। चीन में भूत प्रायः सदा स्त्रियां होती हैं: सुन्दर स्त्रियों की वायवीय आत्माएं, आधी लोमड़ी, आधी परी, जो जीवित स्त्री-शरीरों में अपने को फिर अवतरित कर लेती हैं। पर हमारा भूत एक पेन्सिलवानिया का डच था जिसे नम्रता से बूढ़ा हैरी, पर आम तौर से शैतान हैरी कहा जाता था, जिसके अवशेष सबसे पास वाले गांव के लूथरीय चर्च के आंगन में गड़े हैं। मैंने अपने भूत को कभी नहीं देखा, पर हमारा नौकर आग्रहपूर्वक कहता था कि शैतान हैरी हर साल क्रिस्मस से पहले दिन आधी रात को खलिहान से पुल तक आता है और फिर लौट जाता है और कि जिसे यह पता हो कि वह कैसा लगता है, वह उसे साफ देख सकता है। हमारी मेनोनाइट नौकरानी को भी उसके अस्तित्व में विश्वास था और जब किसी अल्मारी से कोई तश्तरी गिरती या उसकी उंगली पर दरवाज़ा बन्द हो जाता, तब वह चिल्ला उठती, 'वही बूढ़ा शैतान हैरी फिर आ गया!'

और बच्चों के आने के बाद जिस राज ने नये भाग की दीवारें बनाईं, उसने बताया कि शैतान हैरी इतना शोर मचाने वाला है, क्योंकि वह कभी-कभी शराब पी लेता है, कि एक रात जब वह शराब पिए घर लौटा, तब उसकी पत्नी ने उसका खात्मा कर देने का फैसला किया। वह नींद में भरा रसोई के फर्श पर जा पड़ा जिस-

पर उसकी पत्नी ने एक रस्सी का सिरा उसकी गर्दन में बांध दिया और लकड़ी की छत में बने हुए चिमनी के छेद में से रस्सी को ऊपर के सोने वाले कमरे में सरका लिया और फिर वह सीढ़ियों से ऊपर चली गई और उसे उसने ऊपर खींच लिया, जैसा कि उसने समझा, और रस्सी को बड़े पलंग से बांध दिया। काफी देर तक प्रतीक्षा करने के बाद वह उसे मरा देखने की सम्भावना करती हुई फिर नीचे आई, पर शरारती बूढ़ा धीरे-धीरे लगातार हंसता हुआ हिलती कुर्सी पर बैठा था। वह होश में आ गया था और उसका उद्देश्य समझकर उसने रस्सी लोहे के चूल्हे के पांव में बांध दी थी जिसे उसने ऊपर खींचा था और जो अब फर्श से ऊपर झूल रहा था। और एक बार बहुत ही प्राचीन आदमी जो कब्रिस्तान में घास काटता था, हमारे भूत की कब्र के ऊपर मुझसे बात करने के लिए रुका और उसकी मुख्य शिकायत यह थी कि उसने सुना था कि बूढ़ा हैरी अपने जीवनकाल में 'गहाई' (गेहूं भुस से अलग करने) के दिनों में सबसे पहले भोजन की मेज़ पर पहुंच जाया करता था और सबसे पहले खाना शुरू कर देता था। किसान स्त्रियां 'गहाई करने वालों' को एक-दूसरे से बढ़कर अच्छा खिलाती थीं और यह सबके लिए न्यायोचित और शोभनीय समझा जाता था कि वे दरवाज़े के बाहर प्रतीक्षा करें और इकट्ठे अन्दर जाएं, एकसाथ बैठें और फिर पहले पन्द्रह मिनट तक बिना बोले खाते रहें।

पर उस भूत ने हमें कभी तंग नहीं किया। पुरुष, स्त्री और बच्चे हम सबके सब उस मकान में शान्ति से रहे हैं और बच्चों के बड़े और स्वतन्त्र होने पर इसे बढ़ाते रहे हैं। इस तरह परिवर्तन करते हुए एक बार रहने के कमरे के दक्षिण की दीवार के पुराने दोहरे दरवाज़े से हमने दो ऊपर के दल्ले निकालकर कांच लगवाना ज़रूरी समझा। जब दल्ले हटाए गए, तब भीतरी और बाहरी तहों के बीच में हमने नरम काली पेन्सिल से ये शब्द लिखे देखे :

'यह जोड़ी मैं, जोसिफ हाउसकीपर, ने बनाई और चढ़ाई। अगस्त, १८३५ को मैंने अपनी सच्ची प्रेमिका मेगडेलीन से शादी की।'

इस प्रकार जोसफ हाउसकीपर, जिसने अपनी सच्ची प्रेमिका से शादी की, हमारी भी अनुश्रुति है, यद्यपि हमें उन शब्दों के अलावा, जो उसने इतने समय पहले अपने ही हाथों से लिखे थे, उसके बारे में और कुछ पता नहीं है।

हमारा भूत मुझे हमारे देहात की दो और आकृतियों की याद दिलाता है, पर वे भूत नहीं हैं क्योंकि मैंने अपनी आंखों से उनका हाड़-मांस का रूप देखा है परन्तु

आधुनिक युग में वे ऐसे अजीब थे कि वे आसानी से भूत भी हो सकते थे।

उनमें से एक छोटा कुबड़ी पीठ वाला आदमी था जो घूमता-फिरता प्रचारक था। उसका छोटा-सा शरीर था और वह सदा काले कपड़े पहने रहता था और एक चौड़ा काला ऊनी टोप लगाए रहता था, और वह मुझे तब मिलता जब मैं पिछली सड़कों और गलियों में घूमती थी। उसका गोरा पतला चेहरा था और जब मैं उससे बोलती थी, तब वह उत्तर में केवल अपना पतला हाथ ऊपर उठाता और आगे बढ़ जाता था। उसके कन्धे से एक कनवास का थैला लटका रहता था और हर मील पर वह रुकता और थैले में से एक हथौड़ी और कीलें तथा गत्ते का एक टुकड़ा निकालता जिसपर बड़े-बड़े ऊंचे-नीचे अक्षरों में बाइबिल का कोई वचन लिखा होता, और वह कीलों से इसे पेड़ पर गाढ़ देता। उसका अपने धर्म-प्रचार का यह तरीका था, और इस प्रकार ज़हां कहीं लोग जाते, वहां वे अपने आगे एक गम्भीर शब्द देखते जो वह मुंह से नहीं कह सकता था। 'तुम्हें फिर पैदा होना है,' यह उसका प्रिय वाक्य रहा होगा, क्योंकि यह मुझे प्रायः दिखाई देता और बिल्कुल अप्रत्याशित स्थानों में, यहां तक कि बहुत दूर जंगलों में भी दिखाई देता था।

वह छोटा-सा प्रचारक अब मर चुका है, और मुझे उसे अन्तिम बार देखे दस साल हो चुके हैं, और तब वह एक आंधी में मिला था। वह तेज़ हवा वाली वर्षा में मुझसे दूसरी दिशा में धीरे-धीरे चल रहा था। जो पट्टियां उसने पेड़ों पर गाड़ी थीं, वे गल गई हैं। मुझे उसका नाम पता नहीं चला और न कभी कोई ऐसा आदमी मिला जो उसका नाम जानता हो।

दूसरी याद एक स्त्री की है और उसे मैंने केवल एक बार ही देखा। वसंत के अन्तिम दिनों में कुछ गरम तीसरा पहर था और मैं अपनी लम्बी गली में यह देखने जा रही थी कि बड़े ऐश (अखरोट जैसे एक जंगली) पेड़ के पास जंगली स्ट्राबेरियां पकी या नहीं। एकाएक मैंने गली में उसे आते देखा। काले कपड़े पहने एक स्त्री, पूरी तरह लहंगे के अन्दर, जो इतना लम्बा था कि धरती को छू रहा था। उसकी बांहें लम्बी थीं, गर्दन ऊंची थी और उसने एक तंग काली ज़नानी टोपी ओढ़ी हुई थी। जब यह मेरे पास आई तब मैंने देखा कि वह बूढ़ी है और डरी हुई लगती है। उसका गोल चेहरा, जो सफेद और कोमल झुर्रियों वाला था, मुस्कराहट से शून्य था और उसकी काली आंखें भयभीत बच्चे की सी थीं।

'क्या मैं आपकी कुछ मदद कर सकती हूं?' मैंने पूछा।

उसने सिर हिलाकर इन्कार किया। 'मैं ज़रा यह जगह देखना चाहती थी,' वह बोली। 'मैं इस मकान में पैदा हुई थी। लोग कहते हैं कि तुमने इसे अच्छा बना दिया है और पेड़ पौधे लगा दिए हैं।'

'जहां आपकी खुशी हो, वहां हो आइए,' मैंने कहा।

हम अपनी-अपनी दिशा में चले गए और जब मैं जंगली स्ट्राबेरियों से भरा अपना कटोरा लेकर लौटी, तब वह जा चुकी थी। मैंने अपने पड़ौसियों से उसके बारे में पूछा, पर कोई नहीं जानता था कि वह कौन हो सकती थी। बस, हमारे नौकर का यह आग्रह था कि वह भी भूत थी।

जहां तक मेरा सम्बन्ध है मैं आभूषणों और शरीर की सजावट के प्रति उदासीन हूं पर मेरे यहां गुलाब और सब्ज़ी का बगीचा ज़रूर होना चाहिए। कुछ वर्ष पहले मैंने कामेलिया भी लगाए क्योंकि ये फूल सुरूप और सुन्दर होते हैं और इनका उद्गम-स्थान चीन है, और चीन में मुझे ये बहुत पसन्द थे। ये जड़ें मैंने अपने लिए जमाई क्योंकि यदि आदमी को जीना है तो उसे अपनी जड़ें जमानी चाहिए। मेरी जड़ें चीन में गहरी थीं और जब उन्हें वहां से निकालना पड़ा तब यह ज़रूरी था कि यदि जीवन को बढ़ते जाना है तो उन्हें यथासम्भव जल्दी जमा लिया जाए। मैंने सीखा है कि यदि पेड़ की जड़ों को बहुत देर तक सुखाने वाली हवा में उघड़ा न रखा जाए तो कोई भी पेड़ उखाड़कर दूसरी जगह लगाया जा सकता है, और जी सकता है; कि जड़ें धरती में होनी चाहिए और जल्दी से उन्हें वहां जमा देना चाहिए, उनके चारों ओर सामान्य मिट्टी लगा देनी चाहिए, उसे ठोक देना चाहिए, पानी देना चाहिए। बस इससे जीवन का तार आगे चल पड़ता है। पर किसी पेड़ को बहुत देर तक बिना जमाए पड़ा रहने दो तो इसकी जड़ें कभी नहीं लगतीं; यह अधकचरा यत्न करता है, दो-चार पत्तियां निकालता है; और निश्चित रूप से ऊपर का भाग सूखने लगता है और उसके बाद शाखाएं, और फिर अगले वसंत में कुछ भी हरियाली नहीं रहती। जीवन के नियम प्रत्येक जगत् के लिए एक हैं।

तो मेरा अमरीकन घर मेरे अमरीकन जीवन की जड़ बना है और मेरे आरम्भिक वर्ष इसके निर्माण में व्यतीत हुए। कारण यह कि घर को बनाना एक गहरा शिक्षात्मक अनुभव है। इस प्रकार मैं अपने समुदाय और बिरादरी को जानने लगी—जिसे यदि मिलकर काम करने का मौका न होता तो मैं उसे कभी न जान पाती। मज़दूर, राज, पलस्तर करनेवाला मिस्त्री, बढ़ई, कुआं खोदनेवाला, मोदी और गैरेज

वाला—इन सबने मुझे इतना सिखाया है कि उसकी वे कल्पना भी नहीं कर सकते। मेरे पीछे चीनियों का विस्तृत मानवीय अनुभव था और इस अभ्यास के कारण मैं अपनी नई दुनिया के इन नागरिकों और पुरानी दुनिया के नागरिकों की प्रत्येक समानता और प्रत्येक अन्तर को अच्छी तरह समझ सकती थी। समानताएं चकित करने वाली थीं। कुछ समय तक मैं यह न समझ सकी कि अमरीकनों और चीनियों में इतनी समानता क्यों है। यह कल्पना नहीं है क्योंकि उदाहरण के लिए, जापानी हमसे भिन्न हैं और इसी प्रकार कोरिया के लोग भी। जहां तक भारत के लोगों का सवाल है, हमारे स्वभावों में इतना अन्तर है कि कभी-कभी मुझे भय होता है कि हममें स्थायी गलतफहमी रहेगी।

हम चीनी और अमरीकन किस तरह समान हैं? पहली बात तो यह है कि हम महाद्वापीय जातियां हैं; अर्थात् हमें बड़े स्थान और बड़े आकार तथा प्रचुरता में सोचने की आदत है। हममें से किसीमें भी कृपणता नहीं—लम्बे-लम्बे समुद्र-तटों और ऊंचे-ऊंचे पर्वतों वाली महाद्वीपीय जातियों में कृपणता होती ही कम है। हम दोनों को यह चेतना रहती है कि हम सदा कहीं न कहीं जा सकते हैं, हम घिरे हुए नहीं, हमें सतर्क होने की आवश्यकता नहीं, हम बेपरवाह हैं, हम मौजी, हास-परिहास और गीतों को पसन्द करने वाले लोग हैं। यह सच है कि चीनियों का अस्तित्व इतने दीर्घकाल से है कि वे उस स्वाभाविकता पर पहुंच चुके हैं जिसकी ओर बढ़ने के लिए हम संघर्ष अब भी कर रहे हैं। अर्नेस्ट हेमिंगवे ने जीवन के प्रति सीधे प्रकृतिवादी होने का साहस कर और शुद्ध प्रकृतिवादी रचनाएं लिखकर बड़ा काम किया है। अमरीकन मस्तिष्क के लिए उनकी रचनाएं एक क्रान्ति थीं—पहले एक आघात-सा और फिर असीम प्रशंसा, पर चीन की सामान्य परम्परा में पालित-पोषित व्यक्ति के लिए यह उनकी रचनाओं में न कोई आघात की बात थी और न श्लाघ्यता की। सच्ची बात तो यह है कि यह एक सीधी सचाई है—केवल निजी रुचि का उसमें अन्तर है, पर उसमें कोई नई बात नहीं होती। इस तरह बचपन से मैं पुरुष तथा स्त्री का पारस्परिक जीवन, जन्म तथा मृत्यु, भुखमरी और भोज, रोग और स्वास्थ्य, भीख और ऐश्वर्य, अन्धविश्वास, पाखण्ड और धर्म—रोज़ के दृश्यों और घटनाओं के रूप में बचपन से देखती रही थी। विशेष रूप से अन्धविश्वासों में मेरी सदा दिलचस्पी रही है क्योंकि वे आन्तरिक भयों और आशाओं की चेतन अभिव्यक्ति हैं। और अपने प्रदेश के पेन्सिलवानिया के डच किसानों

में वहुत-से वही अन्धविश्वास देखकर मनोरंजन होता था जो मैंने चीनी किसानों में देखे थे। देवता के प्रति वही ऊपरी और असावधान-सी प्रवृत्ति भी एक-सी ही देखती हूं। इसका कारण मैं नहीं जानती। पर काउन्टी (ज़िले) के मुख्य नगर के किले जैसे संग्रहालय में जो हमारे एक स्थानीय बड़े आदमी द्वारा अन्तः-प्रेरणा से बनवाई गई अजीबोगरीव विशालकाय रचना है (मैं इसे अजीबो-गरीब इस कारण कहती हूं कि मैंने इस तरह का भवन पहले कभी नहीं देखा, और अन्तः-प्रेरणा से बना इसलिए कहती हूं कि इसमें कुछ विशेष सौन्दर्य है, और हमें इसपर अभिमान है), कोई भी पेन्सिलवानिया के आरम्भिक लोगों द्वारा प्रयोग में लाए गए औज़ारों तथा चीनियों द्वारा प्रयोग में लाए गए एवं आज भी प्रयोग में लाए जा रहे औज़ारों में असाधारण समानता देख सकता है। हमारे महान् पुरुष ने वह समानता देखी और प्रमाण लाने के लिए अपने खोजी चीन भेजे। प्राण वहां है, मैं इसकी कल्पनामात्र नहीं कर रही हूं।

•

ग्रीन हिल्स फार्म

यहां हमारे लोग सबसे अच्छी स्थिति में हैं। अभी क्रिस्मस आने में दो सप्ताह हैं, और मौसम एकाएक ठण्डा हो गया है। मैं जानती हूं कि यह कितना ठण्डा है क्योंकि जब सवेरे उठती हूं, तब सदा अपनी खुली खिड़की से पत्थर के आंगन में नज़र डालती हूं कि रोडोडेंड्रोन (गुलाब जैसे फूलों वाली एक सदाबहार झाड़ी) कैसे हैं। आज सवेरे छह बजे उनकी पंक्तियां छोटे-छोटे घेरों में मुड़कर सख्त हो गई थीं और उनपर बर्फ जैसा पाला पड़ा था। जब मैं नीचे नाश्ता करने आई, तब रसोई में मेरी सहायिका ने बताया कि रात में हमारी पहाड़ी के दूसरी ओर एक छोटा लकड़ी का मकान जिसमें पुरुष, स्त्री और नौ बच्चे रहते थे, जिनमें सबसे छोटा सात मास का और सबसे बड़ा अट्ठारह साल का था, जलकर राख हो गया, और उसके साथ सब चीज़ें, क्रिस्मस के उपहार भी, जलकर राख हो गए। वे क्या करेंगे? पड़ौसी उन्हें अपने यहां ले आए और उन्हें तब तक अपने यहां रखेंगे जब तक मकान फिर नहीं बन जाता। और यह बन कब तक जाएगा? तुरन्त! आस-पास के सब ठेकेदार और उनके मिस्त्री-मज़दूर तुरन्त मकान बनाना शुरू कर रहे हैं और वे क्रिस्मस से पूर्व इसपर छत डाल देंगे और इसे रहने लायक बना देंगे।

हमारी सारी बस्ती, जो कुछ मामलों पर आपस में इतना मतभेद रखती और झगड़ा करती है, आवश्यकता के समय अपने एक परिवार के लिए तुरन्त संगठित हो गई है। अमरीकनों से अधिक उदार या हृदय से निःस्वार्थ जाति कभी नहीं हुई और मुझे निश्चय है कि संसार में कहीं आज़ादी और ज्ञान होने पर यही भावना कार्य करेगी। विदेशों में यह कहा जाता है कि आपत्तिकाल में हम अमरीकन आश्चर्यजनक लोग हैं, पर हममें कोई धृति-शक्ति नहीं है, और हम किसी समस्या के अन्त तक नहीं पहुंचते। यह बात प्रायः सच है क्योंकि हम आसानी से दूसरी ओर मुड़ जाते हैं, और अनेक सम्मतियों की आंधी में बह जाते हैं। यह भी सच है कि जब हमें यह दिखाई देता है कि जिन्हें हम अपनी मदद दे रहे हैं, वे स्वयं अपनी मदद नहीं करते, तब हम अधीर हो जाते हैं। फिर भी आज वे शीतल प्रातःकाल में, जबकि क्रिस्मस पास के क्षितिज पर दिखाई दे रहा है, मुझे राख में से उठकर खड़े होते हुए नये मकान की बात याद करना अच्छा लग रहा है।

अपने पड़ौसियों के बहुत सारे गुण मुझे पसन्द हैं। उदाहरण के लिए, उस दिन, जिसे आज उन्नीस वर्ष हो गए, जब एक बात बतानी कठिन थी, और इसलिए हम यह स्वयं बताना चाहते थे। हमारी शान्त फार्म बस्ती और पुल के परली ओर मील भर परे वाले छोटे गांव ने तब हमारे बारे में क्या सोचा होगा जब उन्हें पता चला होगा कि अब मेरा मकान केवल मेरा नहीं रहेगा, बल्कि अब दो तलाक हो जाने के बाद एक नये परिवार का पारिवारिक घर होगा!

मुझे यह बताने में संकोच हुआ और इसलिए पुरुष ने यह भार उठाया। उसने हमारे कृपालु पड़ौसी से कहा, जो माहिर राज था, और पिछले साल मरने तक वहीं रहा :

'हम तुम्हें यह बताना चाहते हैं और शायद तुम औरों से भी कह दोगे कि हमारे सामने एक कठिन अनुभव आ रहा है और हम इसे अपने इस गहरे विश्वास के कारण ही आने दे रहे हैं कि यह हमारे लिए उचित है। हम तलाक ले रहे हैं और विवाह करके यहीं रहना चाहते हैं। हमें आशा है कि तुम हमारी बात समझ गए हो।'

राज तहखाने के किसी छेद में झांक रहा था। वह बाहर आ गया और उसने अपने हाथ रगड़कर मिट्टी झाड़ी और फिर अपना दायां हाथ आगे किया। 'कुछ चिन्ता मत कीजिए,' वह बोला, 'इससे हमें कुछ वास्ता नहीं है। हमें तो केवल इतनी

बात से मतलब है कि आप क्या हैं ।'

उसने यह बात बिल्कुल ऐसे कही जैसे वह मकान बनाने के बारे में बात कर रहा है, उसी तरह धीरे-धीरे मैत्री और तटस्थता के भाव से। और जब मैंने यह बात सुनी तब मेरी जड़ें अपने पैरों के नीचे की धरती में एकदम बहुत गहरी चली गई : यह जगह है जहां मैं रह सकती हूं ।

इसके कुछ समय बाद मैंने सामान बांधा और पश्चिम की ओर लम्बी यात्रा करके पश्चिम के सुन्दर नेवाडा राज्य में एक छोटे-से नगर रेनो पहुंची और वहां पर अपने जीवन के सबसे अजीब छह सप्ताह बिताने के लिए टिक गई। मेरे पास समय बहुत था क्योंकि पहले दिन मुझे पता चल गया कि मैं अपना लिखाई का काम नहीं कर सकती। हर चीज़ बहुत नई थी, स्थान भी स्थिति भी और लोग भी, पर मुख्यतः स्थिति, और मेरा आधार केवल मेरा अपना निर्णय ही था। वह पक्का और बहुत दिनों से सोचा-विचारा, तथा अपरिवर्तनीय था। पर समय कैसे गुज़ारा जाए, विशेष रूप से इस कारण कि अब तक मैं अखबार-रिपोर्टरों को देख चुकी थी जो, जिनके कान पहले नई से नई खबर के लिए चौकन्ने रहते हैं। मैंने उन्हें दोष नहीं दिया क्योंकि मे पहले जान चुकी थी कि अखबारों के रिपोर्टर सहिष्णु होते हैं और अन्य लोगों की अपेक्षा उनमें सबसे कम कौतूहल होता है। यदि वे बेलिहाज़ होते हैं तो इसका कारण यह है कि उन्हें अपनी जीविका कमानी होती है। और बीस वर्ष पहले तलाक भी समाचार का विषय होता था। सोचिए कि तब से हम कितना आगे बढ़ आए हैं ! पिछले सप्ताह मैंने न्यूयार्क के एक बडे दैनिक पत्र के पिछले पृष्ठों एक छोटा-सा पैराग्राफ पढ़ा जिसमें उदात्त भाषा-शैली में यह लिखा था कि एक प्रसिद्ध व्यक्ति को, जो सरकार में एक ऊंचा अफसर था, अपनी पत्नी से तलाक की मंज़ूरी मिल गई है। कितनी तरक्की हो गई है। हम उस चीनी भले-मानस की बात के निकट पहुंच गए हैं, जिसने उस समय जब चियांग काई-शेक ने पहली बार बड़प्पन की ओर बढ़ते हुए अपनी तीन पत्नियों को तलाक दे दिया था, यही कहा कि यह एक 'निजी मामला है ।'

बीस वर्ष पहले हम अमरीकन लोग इतने आगे नहीं बढ़े थे। और मुझे एकाकी जीवन के उन छह सप्ताहों का भय नहीं था क्योंकि मुझे सदा मनबहलाव की चीज़ें मिल जाती थीं और मुझे अपनी भावी सास का साथ भी हासिल था, जिससे मेरा पूरी तरह मन मिला हुआ था और जिसकी सहमति मेरे लिए सुखदायक थी।

दरअसल वह घृणा-प्रचार का समय था जिससे बच पाना अत्यन्त कठिन था, फिर भी भविष्य के भय से क्यों अपना जीवन विषाक्त किया जाए, इसलिए मैंने देश के पश्चिमी कोने का अध्ययन करने का निश्चय कर लिया।

एक वकील से सलाह करने के बाद, जो इस तरह के कार्य का विशेषज्ञ था और इसे आश्चर्यजनक सफाई और आसानी से पूरा कर देता था, मैंने उसकी सलाह ली और मैं नगर के सबसे बड़े होटल में आराम से जम गई। इस नगर में मेरे होने की किसीको सम्भावना भी नहीं हो सकती थी, और इसके बाद मैंने यह पता लगाने का यत्न किया कि मैं नेवाडा के बारे में कैसे जानकारी हासिल कर सकती हूं। उसी समय मेरी नज़र अपने सोने के कमरे में मेज़ के ऊपर रखे कांच के नीचे पड़ी। इसमें श्रीमती कोलक के आने की सूचना थी जो किसी भी मनुष्य के ढांचे से सबसे अधिक आधुनिक विधि से पौंड (अर्थात् मोटाई) निकाल लेने को तैयार थी। आह! मैंने सोचा, मेरे ढांचे से क्यों नहीं? यह एक ऐसी चीज़ थी जिसमें परिणाम दीख सकते थे, चाहे मैं उस समय हाथ में लिया उपन्यास आगे न लिख पाती। मैं अपने कालिज के तोल से सोलह पौंड अधिक थी और वे सब पौंड मैं अपनी हड्डियों से हटा देना चाहती थी। मैंने टेलीफोन पर श्रीमती कोलक को बुलाया और एक बड़ी रूखी आवाज़ को जवाब देते सुना। हां, वह आएगी, उसी दिन, बारह बजे। सोलह पौंड छह सप्ताह में? हां, यदि मैं खुराक और व्यायाम से मदद दूं। मैं मदद दूंगी। और इस प्रकार सौदा तय हो गया।

बारह बजे दरवाज़े पर मैंने भारी खटखटाहट सुनी। मैंने दरवाज़ा खोला और विमूढ़-सी पीछे हट गई। इतनी बड़ी औरत मैंने कभी नहीं देखी थी और वही दरवाज़े में खड़ी थी, जो न केवल लम्बाई में बल्कि चौड़ाई में भी फैली हुई थी—मतलब यह कि वह मोटी और बहुत मोटी थी। उसके बड़े चौकोर चेहरे पर कोई बनाव-सिंगार या मेकअप नहीं था, उसके बाल सीधे पीछे को पड़े थे और वह अपनी सफेद पोशाक में बर्फ से ढके पर्वत जैसी लग रही थी।

'अन्दर आइए,' मैंने हल्की आवाज़ में कहा।

वह बिल्कुल कारबारी ढंग से अन्दर आई और उसने अपना भद्दा पुराना तिनकों का टोप उतारा। 'लेट जाओ,' उसने उसी रूखी टेलीफोन वाली आवाज़ में कहा। 'यदि इससे तकलीफ मालूम हो तो कह देना।' मैं बिस्तर पर लेट गई और वह अपनी बांहें चढाकर मेरे प्रतिरोध करते हुए शरीर से मांस दूर करने के प्रयत्न

में लग गई। विधि सुपरिचित है और तब से उसमें निःसन्देह सुधार हुआ है क्योंकि मैं बहुत सारी स्त्रियों को उससे कहीं अधिक छरहरा देखती हूं जितनी मैं बनी रह सकी। जो कुछ मुझे याद है, वह विधि नहीं है और न वह नफरत करने लायक खुराक है, क्योंकि श्रीमती कोलक ने मुझे तुरन्त अपने नुस्खे के अनुसार बनाए गए सब्जी के रसे पर रहने को कहा और मुझसे यह वचन लिया कि मैं उस पानीदार रसे के पांच बड़े प्याले हर रोज़ पियूंगी और उसके अलावा कुछ न खाऊंगी। बाद में उसने कहा कि मैं उतनी सख्त न होती, परन्तु मैं निश्चित यह समझती थी कि तुम भी मुझे उस तरह धोखा दोगी जिस तरह अन्य महिलाएं 'बिल्कुल सदा देती थीं'। मैंने धोखा देने की बात कभी नहीं सोची क्योंकि मेरा पालन-पोषण वचन देने के बाद पूरी ईमानदारी से उसपर कायम रहने के वातावरण में हुआ था और इसलिए मैंने बहादुरी से अपने को भूखा रखा—अफसोस है कि अनावश्यक सख्ती के फलस्वरूप जैसा कि बाद में पता चला, अगले वर्ष मुझे प्रोटीन की कमी का, जिसने मुझे कुछ समय के लिए बिल्कुल बेकार कर दिया, इलाज करना पड़ा और जिसने हमारे संयुक्त प्रयत्नों के अधिकांश को विफल कर दिया। वह दिन में दो बार टकोर कर मांस कम करने आती थी और मैं उसके आने के समयों के बीच कड़ी कसरत करती थी और उस घृणित रसे को निगलती थी।

जो बात मुझे स्पष्ट रूप से याद है, वह है वह अनुपम चरित्र, श्रीमती कोलक। वह अमरीकन पश्चिम का मूर्त रूप थी। वह सदा वहां रही थी। वह सोने की खान का रोजगार करती थी। उसने सारे रेगिस्तान में घुड़सवारी की थी—उन दिनों जब वह अभी अपने-आपको घोड़े के ऊपर पहुंचा सकती थी, और उसे इस जगह से प्यार था। कभी-कभी जब वह टकोरकर मेरा शरीर पतला कर रही होती और हम दोनों पसीने से तर होती थीं—वह मेहनत के कारण और मैं सहने के कारण—तब वह अपनी आंखें बन्द करती और कुछ-कुछ इस प्रकार की बात कहती :

'जानती हो, मैंने एक बार क्या देखा ? मैं एक सोने की खान से घोड़े पर घर लौट रही थी। रात का समय था पर चांद की कोमल चांदनी चमक रही थी और मुझसे आगे छोटी-सी झील थी जो किसी बड़े तालाब से बड़ी नहीं थी। तब जानती हो, मैंने वहां क्या देखा ? नौ सफेद घोड़े तालाब में पानी पी रहे थे और उनके साथ कोयले जैसा काला एक बिजार घोड़ा। जंगली घोड़े—'

वह मुस्कराई और उसकी आंखें बन्द हो गईं। हम दोनों चांदनी में तालाब

में पानी पीते हुए घोड़ों को देखने लगे : नौ सफेद घोड़े और एक काला बिजार घोड़ा।

'क्या आप बुरा मानेंगी,' वह एक दिन मेरे दाएं धगड़े से एक पौंड खींचने के समय बोली, 'यदि मैं अपनी नई खान को 'दि गुड अर्थ' (अच्छी ज़मीन) कहूं ? शायद इससे मेरी किस्मत खुल जाए।'

मैंने सोचा कि उसे अपनी खानों से विशेष लाभ नहीं मिला था—इतना ही था कि उनसे उसे अनन्त उत्तेजना और बाहर घूमने का आनन्द मिला था और उन सख्त दिनों में जो उसने मेरे साथ बिताए, उसने देहात तथा नगर की विशेषताएं बताईं, खड़-खड़ करके चलने वाले सांपों का वर्णन किया, जंगली फूलों के नाम बताए और उसने, थोड़ा-थोड़ा करके, अपने स्वयं के जीवनरूपी नाटक द्वारा उस प्रदेश का इतिहास बताया। उसने ही मुझे प्रसिद्ध परित्याज्य वर्जिनिया सिटी की गलियों में घूमने की सीमा तक उत्तेजित कर दिया जिसका परिणाम यह हुआ कि यद्यपि मैं अभी कमज़ोर थी, पर फिर भी केवल उसके वर्तमान काल से, बल्कि उसके अविश्वसनीय अतीत से भी सुपरिचित हो गई।

दिन में दो बार वह मुझे तोलती थी और मुझे इतना हौसला नहीं था कि उसकी नियत की हुई कमी से कम कमी प्रदर्शित कर सकूं। आधा रास्ता पार करने पर जब कि मैं आगे बढ़ने से डरती थी पर छोड़ना भी नहीं सह सकती थी, उसने मुझे एक इनाम दिया।

'जब तुम्हारा तोल नीचे तक आ जाएगा,' वह बोली, 'तब मैं तुम्हें बढ़िया जुए के अड्डों पर घुमाऊंगी। हम लोग अच्छे कपड़े पहनेंगे और मैं अपने पति को अच्छे कपड़े पहनाकर लाऊंगी और हम सब फैशनेबल अड्डों पर चलेंगे।'

और अन्तिम स्मरणीय रात को हमने यही किया। जब मैं अपने कमज़ोर शरीर पर शाम का चोगा लटकाए हुए श्रीमती कोलक और उसके पति की प्रतीक्षा कर रही थी तब उन्होंने नीचे से टेलीफोन किया और मैं नीचे गई, और वहां वह खड़ी थी रॉक ऑफ जिब्राल्टर की तरह विशालकाय और भारी-भरकम—वह लम्बा काला साटन का नये नमूने का पर गर्दन पर से अधिक खुला चोगा पहने हुए थी जिसपर काफी कीमती रत्न चमक रहे थे। उसके साथ एक साफ छरहरा ज़रा छोटा आदमी था जिसे मैंने उसके वर्णनों से पहचान लिया। वह श्री कोलक थे। हमने बड़ा मज़ेदार सायंकाल बिताया। उसने मुझसे, जो मैं चाहूं वह सब खाने

के लिए आग्रह किया और यह देखकर खुश हुई कि मुझे बहुत थोड़ी खान का इच्छा थी क्योंकि मेरा पेट उचित ढंग से सिकुड़ गया था। हम आधा दर्जन स्थानों पर गए और उसने, जो ज़रा भी सिकुड़ी न थी, हर जगह खाया और बड़ी उदारता से, और शराबों की प्रशंसा की, और वेटर सब उसे जानते थे और उसे 'रानीजी' (डचेस) कहते थे। वह सचमुच ही 'एलिस इन वंडरलैंड' की डचेस जैसी लगती थी—अन्तर इतना था कि यह खुशमिज़ाज और अधिक चौड़ी थी। मैं थकान से चूर हो बिस्तर पर पड़ी, यद्यपि वह हमेशा की तरह तरोताज़ा थी, और अगले दिन की तैयारी करने लगी जो भयंकर दिन था जब कि समाचार प्रकाशित होगा और पुरुष आ पहुंचेगा।

और इसके बाद उस समय कितनी परेशानी हुई जब वह सचमुच आ गया और मेरी ओर प्रशंसाहीन आंखों से ताकने लगा, यद्यपि एक बड़ा सुन्दर सफेद रेशमी सूट पिछले सप्ताह ही मेरी पतली देह पर फिट किया गया था। मैं कई इंच पतली हो गई थी, जैसा कि श्रीमती कोलक अभिमान से कहती थीं, और कितने इंच, यह अच्छा ही हुआ, कि मैं भूल गई हूं! मैंने इस सारी प्रक्रिया की बात उससे छिपा रखी थी ताकि उसे आनन्दपूर्ण आश्चर्य हो, और अब वह चिड़चिड़ा लग रहा था। 'मैंने इसका सौदा नहीं किया था,' वह बोला, या कुछ इसी तरह के शब्द उसने कहे, और फिर दृढ़ता से कहा, 'मुझे तुम जैसी थी, उसी रूप में पसन्द थी।'

'मैं निःसंदेह फिर उसी रूप में हो जाऊंगी,' मैंने उदास होकर कहा।

इसके बाद हम हंस पड़े। यह एक शानदार दिन था, हमारे जीवन का सबसे महान् दिन था। निश्चय ही यह ऐसा दिन था जिसे रोकने का हम दोनों कई वर्षों से यत्न कर रहे थे क्योंकि हमारा विश्वास था कि तलाक बुरी चीज़ है, जैसा कि यह था भी, और इसके अलावा, इससे अधिक बदकिस्मती की कोई बात नहीं होती कि कोई प्रकाशक किसी लेखक से या लेखक किसी प्रकाशक से विवाह करे और इस प्रकार कारबार और दैनिक जीवन को मिला दे—और ईश्वर का धन्यवाद है कि यह बात असत्य सिद्ध हो गई है।

मैंने विवाह के विषय में दो विरोधी दृष्टिकोणों से चर्चा होती सुनी है। एक तो यह है कि विपरीत स्वभाव वालों में विवाह होना अधिक समझदारी की बात है और दूसरा यह कि पुरुष और स्त्री की दिलचस्पी, शौक और खाली समय बिताने की रुचि एक-सी होनी चाहिए। कम से कम मेरे जीवन ने मेरे लिए इस बाद वाले

दृष्टिकोण को सत्य सिद्ध किया है। दूसरों के ऐसे ही विवाहों को देखकर मैं यह चेतावनी और जोड़ देती हूं—ध्येय सदा सहयोग होना चाहिए, प्रतिस्पर्धा नहीं।

श्रीमती कोलक ने भी अदालती कार्यवाही खत्म होने के बाद उस दिन कुछ कार्य किया। वह और मैं पिछले रास्ते से निकलकर रिपोर्टरों से बच आए थे जो सामने की सीढ़ियों पर अपने कैमरे जमाए प्रतीक्षा कर रहे थे। हम सीधे एक चर्च के पिछले बगीचे में गए जहां मेरी सास हमारी प्रतीक्षा कर रही थी और वहां श्रीमती कोलक और उसके पति के सामने मामूली कोलाहल-रहित विवाह-संस्कार हुआ। यह समाप्त होने पर उसने वर को एक टोकरी दी और कहा कि इसमें आप लोगों का पिकनिक का भोजन है, जो बाद में झील टैहो के किनारे उस दिन शाम को हर दृष्टि से बड़ा आनन्ददायक सिद्ध हुआ। पर सबसे बड़ी बात यह थी कि जब हम कार में थे और गिरजाघर से चले जाने का यत्न कर रहे थे, तब श्रीमती कोलक दीवार की तरह सड़क के बीच में खड़ी हो गई और उसने कारों में बैठे हुए और अपने कैमरे अब भी हमारी ओर साधे हुए रिपोर्टरों के तूफान को हमारे पीछे पड़ने से रोक लिया। वह शान्तिपूर्वक अच्छी तरह फैली खड़ी रही और हम बच-कर निकल गए।

उस दिन के बाद वर्षों तक श्रीमती कोलक क्रिस्मस के समय मुझे अपने बनाए दो बड़े फलों के केक भेजती रही जिनमें से एक काला और एक हल्के रंग का होता था, और इस प्रकार तोल के मामले में अपनी सहिष्णुता दिखाती रही और निश्चय ही हमारे सब सम्मिलित प्रयत्नों के परिणाम को नष्ट करती रही। युद्ध के दिनों में ऐसे केक असम्भव हो गये और हमारे बीच पत्र-व्यवहार बन्द हो गया क्योंकि श्रीमती कोलक को पत्रों में कठिनाई होती थी। अफसोस कि अभी उस दिन एक स्त्री, जो रेनो भी हो आई थी, बोली, 'क्या आप श्रीमती कोलक को जानती थीं? वह मर गई,' और हमने मिलकर अपनी सखी का शोक मनाया।

जब मेरी श्रीमती कोलक से जान-पहचान हुई थी तब से बीते अनेक वर्षों में तलाक के प्रति रुख बदल गया है और धीरे-धीरे हमारे कानून और संस्कार जीवन की यथार्थताओं के निकट आ रहे हैं। इसे मानवोचित बनाने का प्रक्रम अधिक तेज़ी से हुआ होता, यदि कुछ लोगों ने, जिन्होंने एकपत्नीत्व को धीरे-धीरे बहु-पत्नीत्व में बदल दिया है, रुचि और सिद्धांत का अतिक्रमण किया न होता। अन्य स्थानों की तरह यहां भी कुछ थोड़े लोगों के बुरे व्यवहार ने सबपर पाबन्दी

लगाने को मजबूर कर दिया है। पर आधुनिक मनोविज्ञान इस ज्ञान की ओर बढ़ रहा है कि यह आग्रह करना असम्भव है कि जब दो व्यक्तियों में मन और हृदय का आदान-प्रदान असम्भव हो चुका हो, तब भी वे शरीर से इकट्ठे रहें। सच्ची बात तो यह है कि कोई भी कानून इस उन्मत्त प्राणी को इस कैदखाने में रहने को मजबूर नहीं कर सकता जो लोहे के सीखचों और तालावन्द दरवाज़े से भी भयंकर है। मैं आशा करती हूं कि दीर्घ विचार के बाद अब मेरा यह कहना स्वार्थहेतुक नहीं कि मैं यह मानती हूं कि पहले तलाक को सदा एक गलती, शायद निरी जवानी के जोश में की गई गलती की स्वीकृति के रूप में सामाजिक और नैतिक दृष्टि से मान्यता मिल जानी चाहिए, पर दूसरा तलाक सचमुच कठिन बना देना चाहिए और तीसरा तो गम्भीरता के अभाव का सूचक या इस बात का प्रमाण माना जाना चाहिए कि उस पुरुष या स्त्री को बिल्कुल विवाह ही न करना चाहिए, क्योंकि यह बिल्कुल स्पष्ट होता है कि ऐसा पुरुष या स्त्री विवाह से सुखी होने के अयोग्य हैं। कुछ ऐसे व्यक्ति होते हैं जो अपने स्वभाव के कारण दूसरे मनुष्य से घनिष्ठ नहीं हो सकते और ऐसे व्यक्तियों का विवाह-सम्बन्ध देर तक रहना असम्भव है।

जिस अवस्था को आम तौर से विसंगति या बेमेल या 'मानसिक क्रूरता' समझा जाता है, उसका जॉन गाल्सवर्दी ने 'दी फोर्साइट सैगा' में बड़ी कुशलता और प्रभावोत्पादकता से चित्रण किया है। उसमें निष्कलंक सोमेस फोर्साइट—जो एक सफल व्यापारी है, और जिसके उद्घाटित चित्र में गहरे मार्मिक पहलू हैं, पर जो अनिवार्य और साथ ही अवर्णनीय कारणों से प्रेम किए जाने के बिल्कुल अयोग्य है—यह नहीं समझ पाता कि उसकी पत्नी आयरीन उसे क्यों प्यार नहीं करती। उसने उसके पास उपहारों का अम्बार लगाया है। वह हृदय की भयंकर एकनिष्ठता से उसकी पूजा करता है। यद्यपि हमें आयरीन के मुंह से उसका अपना पक्ष सुनने का कभी मौका नहीं मिलता फिर भी हमें वह घृणा और गुस्सा अनुभव होता है जो वह मुंह से नहीं निकाल सकती, और हम उन भयानक निशीथकालीन दृश्यों की कल्पना कर सकते हैं जिनमें उसे बार-बार मजबूर होकर जाना पड़ता है और जिनसे वह बच नहीं सकती। वह इस प्रतीक्षा में अपने दिन बिताती है कि कब उसका पति बाहर जाए। और वह भी यह जानता है। यह गाल्सवर्दी की प्रतिभा है कि हमें सोमेस पर दया आती है, और हम उसे दोष नहीं देते क्योंकि वह जो कुछ है, वह है। और फिर भी हम समझते हैं कि आयरीन उससे क्यों प्रेम नहीं कर

सकती। हम समझते हैं कि प्रेम को बाध्य नहीं किया जा सकता क्योंकि संवेदनशील और तीव्रबुद्धि तथा आकांक्षाओं के स्वप्न देखने वाली स्त्री में शरीर मन और दिल से अलग नहीं होता। तीनों एक होते हैं और उनको उनकी समष्टि से अलग नहीं किया जा सकता। जब यह बात समझ ली जाए—शायद सम्वेदनशील भावपूर्ण हृदय वाले और तीव्र बुद्धि वाले यह बात समझ सकते हैं—तब निन्दा या क्षमा के लिए कोई कारण नहीं रहता। और यह याद रखना चाहिए कि कभी-कभी सम्वेदनशीलता और तीव्र बुद्धि तथा भावपूर्ण हृदय पुरुष में होता है, और ऐसे पुरुष को ही भागना या मरना पड़ता है।

मेरे लिए बिना बच्चों का मकान घर नहीं बन सकता। मैं नहीं जानती कि ऐसा क्यों होता है कि बच्चों से प्यार करने वाले लोगों के बहुत बार अकारण बच्चे नहीं होते, पर ईश्वर का धन्यवाद है कि दुनिया में बहुत लोग ऐसे हैं जिनके बच्चे होते हैं पर उन्हें वे किसी न किसी कारण छोड़ देते हैं, और फिर दूसरे लोग प्रेम के कारण उन्हें ले लेते हैं। मेरी सहेली मारगरेट सैंगर ने सन्तति-निरोध या बर्थ-कन्ट्रोल का महान् काम शुरू करके मनुष्य-जाति की सेवा की है, पर ईमानदारी के नाते, मैंने सदा यह बात स्पष्ट कर दी है कि मेरी उसके प्रति निष्ठा उसके स्त्री होने के नाते है, उसके कार्य के प्रति नहीं। और यह बात नहीं कि मैं उसे सही नहीं समझती, क्योंकि आबादी की बात पर विचार किया जाए तो उसका पक्ष सही है, परन्तु अपने मामले में मेरा बर्थ-कन्ट्रोल के पक्ष में बोलना पाखण्ड की बात होगी जब कि अन्य स्त्रियों ने ऐसी रोक न करके मुझे अद्भुत बच्चे दिए हैं।

तो जब मकान का पहला काम पूरा हो गया, गुलाब का बगीचा लग गया, बड़े काले अखरोट के पेड़ की छाया में एक छोटा-सा तैरने का तालाब खोद लिया गया, तब हम अपनी एक दत्तक पुत्री के पास गए जो उस समय ग्यारह साल की थी। हमने उससे कहा कि दो छोटे लड़के अभी, और फिर एक-आध वर्ष बाद एक लड़की और एक लड़का हम गोद लेना चाहते हैं; इस बारे में उसका क्या विचार है। उसने कुछ सप्ताह, और फिर कुछ महीने विचार किया और हमने उसे खूब समय दिया। जब वह अपने नये घर में रम गई, तब उसने फैसला किया कि बच्चों का होना 'बढ़िया' रहेगा। फिर हम तीनों एक अच्छी गोद दिलाने वाली एजेंसी में गए और वहां अपना परिचय दिया तथा अपने-आपको अच्छे

माता-पिता और 'बढ़िया' परिवार सिद्ध करने के लिए आवश्यक प्रक्रम आरम्भ कर दिया। उन दिनों इसमें बहुत देर नहीं लगती थी, प्रक्रम सौजन्यपूर्ण और सभ्य था, अतः यथासमय बड़ा तीसरी मंज़िल का शयनागार बाल-घर बन गया पर उसमें कोई बाल-परिचारिका न थी क्योंकि हम दोनों चंचल बच्चों की देखभाल स्वयं करना चाहते थे। डेढ़ वर्ष बाद उनमें एक छोटा, पर उतना ही चंचल लड़का और एक लड़की भी आ मिले जिनमें से हरएक कुछ ही सप्ताह का था।

यह अट्ठारह वर्ष पहले की बात है। उनमें से चार अब किशोर हो चुके हैं और किशोरावस्था के भी अन्तिम स्थान पर हैं। जिस दिन वे घर आए, उस दिन से आज तक के सम्पन्न वर्षों में मैंने जहां तक किसी सामान्य व्यक्ति के लिए सम्भव है वहां तक गोद लेने सम्बन्धी नये चलन के बारे में नई से नई जानकारी से परिचय रखा है, और तीन गोद दिलाने वाली एजेंसियों के बोर्डों की सदस्य बनकर इसमें सक्रिय भाग लिया है। इस विषय में मेरी दिलचस्पी व्यक्तिगत दिलचस्पी से कहीं अधिक है। मुझे शक है कि पुराने ढंग के अर्थ में मैं अच्छी माता हूं। मुझे बच्चे जिस समय पैदा होते हैं, उस समय से लेकर जब तक वे सौ की ओर बढ़ते हुए वृद्धावस्था में मर नहीं जाते तब तक उनसे प्यार रहता है। नवजात बच्चा मेरे लिए पहले एक मनुष्य है, और उसके बाद बच्चा है। मैं किसान माता नहीं हूं, अर्थात् नैसर्गिक वृत्ति से माता नहीं हूं। मैं संसार भर की माता नहीं बनना चाहती। मुझमें असीम मातृत्व नहीं। पर अपने बच्चों की माता बनने से मुझे आनन्द मिला है।

इसके अलावा, मेरा यह गहरा विश्वास है कि सब मनुष्य-प्राणियों को सुखी बचपन बिताने का अधिकार है और प्रकृत वयस्क जीवन के लिए यह अनिवार्य आवश्यकता है, और कि सुख के लिए पहली बार आवश्यक चीज़ है प्यार। मैंने देखा है कि यदि बच्चे को पांच वर्ष की आयु से पहले किसीसे पूरा प्रेम न मिले और किसीके प्रति उसका प्रेम न हो तो वह शायद अपने शेष जीवन के लिए भाव की दृष्टि से अवरुद्ध रह जाता है, अर्थात् वह किसीसे भी पूरे हृदय से प्यार करने में असमर्थ होता है और उस सीमा तक पूर्ण जीवन से वंचित रहता है। यह प्रेम करने और प्रेम पाने वाला व्यक्ति पिता, या माता, या दोनों, होने की आशा करनी चाहिए, पर यदि ये न हों तो स्नेही नौकरानी या धाय या दादी या नानी हो सकती है, पर वह ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जो बच्चे की शारीरिक देख-रेख करता हो,

ताकि दिन भर के नहाने, कपड़े पहनने और खाने तथा खेलने में वह प्रेम का व्यापक और सतत अस्तित्व अनुभव करे। यह यथार्थ प्रेम होना चाहिए। किसी सीखी हुई नर्स या नौकरानी से, जो फेंके बच्चों को संभालने वाले बालघर या अस्पताल में पेशेवर दुलार-पुचकार करती है, बच्चा धोखे में नहीं आता। बच्चे को निश्शंकता अनुभव कराने के लिए घड़ी की सुई पर ध्यान लगाए रखने वाले कर्मचारी से कुछ अधिक चीज़ चाहिए—यह देखकर आश्चर्य होता है कि बच्चा कितनी बारीकी से अनुभव करता है। किसी अच्छी, पर प्रेमहीन धाय की देखभाल में पलने वाला बच्चा शीघ्र ही सुस्त होने लगता है और मुरझाने लगता है। प्रेम उसकी वर्धमान आत्मा की धूप है और जब धूप नहीं होती तब आत्मा की वृद्धि रुक जाती है और शरीर तथा मन मन्द होने लगते हैं। इसी कारण अनाथालयों और बोर्डिंग-हाउसों के बच्चे मन्द होते हैं। वे या तो चुप रहते हैं या शोर करते हैं। अनाथालयों में बच्चे झुंड के झुंड रखे जाते थे, पर अंत में यह देखा गया कि वे बहुत जल्दी मर जाते थे, जिसका ऊपर से देखने पर कुछ भी कारण मालूम नहीं होता था। अवश्य ही वे प्रेम के सच्चे अभाव से मरते थे।

मेरी समझ में नहीं आता कि अमरीकन बच्चों के बारे में मैं जो बहुत बातें कहना चाहती हूं, वे कहां से शुरू करूं। प्रथम तो मैं यह अनुभव करती हूं कि युद्ध-ध्वस्त देशों को छोड़कर संसार के और सब देशों के बच्चों से वे सबसे कम सुखी हैं और सबसे अधिक दुखी बेघर बच्चे हैं, जो बिना विवाह के पैदा हुए हैं, और जो अनाथ हो गए हैं, और त्याग दिए गए हैं। हमारे समाज में नीग्रो लोगों से बरते जाने वाले पार्थक्य और अपमान से दूसरे नम्बर पर मुझे यह देखकर धक्का पहुंचा कि हमारे बेघर बच्चों की किस ढंग से देखभाल होती है कि हमारे तरीके कितने हृदयहीन हैं, कि जिन्हें बच्चे सौंपे जाते हैं, वे कितने करुणहीन हैं। इससे भी पहले मैं यह कहना चाहती हूं कि यह कितनी क्रूरता की बात है कि इतने सारे बच्चे बेघर होते हैं। जिस चीन में मैं बड़ी हुई वहां बिना विवाह के बच्चे पैदा नहीं होते थे। शायद थोड़े-से हों, पर मैंने न कभी देखे और न उनकी चर्चा सुनी। यदि कोई आदमी किसी औरत को चाहता और बच्चा पैदा होने वाला होता तो वह उसके घर में दूसरी पत्नी के रूप में चली आती थी और बच्चे को एक परिवार और एक वंशनाम मिलता था और उसकी स्थिति कानून-सम्मत होती थी। कम से कम बच्चे को अपने माता-पिता की विषय-वासना का दण्ड नहीं मिलता था। बच्चों को सबसे

बढ़कर माना जाता था और वे चाहे जैसे पैदा हुए हों, पर उनपर प्यार उंड़ेला जाता था। उनसे हास-विनोद किया जाता था और परिवार के साथ वे सब जगह जाते थे। यदि माता-पिता मर जाते तो बृहत्तर परिवार बच्चों को संभालता और माता-पिता का स्थान ले लेता और इस प्रकार कोई बच्चा अनाथ न होता।

यह सच है कि बच्चों का भयंकर दुरुपयोग होता था। कभी-कभी बच्चों को दासों के रूप में बेचा जाता था पर जैसा कि मैंने अन्यत्र बताया है, आम तौर से अकाल के दिनों में उनका जीवन बचाने के लिए बेचा जाता था। यह भी मच है कि कुछ लोग इतने बदमाश थे कि वे गोरों के दास-व्यापार के साधन जुटाते थे। यह भी सच है कि कभी लड़कियों को पैदा होते ही मार दिया जाता था क्योंकि परिवार का मुखिया उन्हें नहीं चाहता था या एक और व्यक्ति को खिलाने का प्रबन्ध नहीं कर सकता था।

फिर भी चीनी लोग यह देखकर उतने ही स्तब्ध होते हैं जितनी मैं हुई थी कि हमारे देश में जीवित नवजात बच्चों को अपरिचितों के पास छोड़ दिया जाता है। ओह, वे असख्य छोटे अमरीकन बच्चे जो एजेंसियों के पास और संस्थाओं में छोड़ दिए जाते हैं—कभी तो गोद देने के लिए, और कभी बस छोड़ दिए जाते हैं, और साल में एक या दो बार मा-बाप उन्हें देखने आ जाते हैं या कभी भी नहीं आते—पर फिर भी उनपर कानूनी अधिकार नही छोड़ा जाता! यदि उनके माता-पिता गायब हो गए हैं तो उनके दादा-दादी कहा हे और चाचिया-ताइयां तथा चाचा-ताऊ और चचेरे भाई-बहन कहां है?—यह बच्चा उनका भी तो है! ऐसे चीनी बच्चे को चीन वाले अवश्य अपने साथ रखते। अफसोस है कि अब यहा वह बड़े परिवार की भावना नही जो अपने सब सदस्यों की जिम्मेदारी उठाती है। हमारे समाज में हमारे पारिवारिक जीवन के टूटने की असली चुभन बच्चा सहन करता है। अभी उस दिन मैं भारत की श्रीमती पण्डित (श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित) से बातचीत कर रही थी और मैंने उनसे यथासम्भव यह ध्यान रखने के लिए कहा कि जब उनका देश अपने को आधुनिक रूप दे, तब एशिया की परिवार-प्रणाली नष्ट न हो। उन्होंने उत्तर दिया कि उनके राष्ट्रवासी अपनी प्राचीन पद्धति का महत्त्व पहचानने लगे हे। और इससे लोग टैक्सों से कितना बच जाते है न किसी अनाथालय की ज़रूरत, न वृद्ध-आश्रमों की, न अंधों, पागलों और मूढ़ों की संस्थाओं की! मेरे चीनी मित्र इन बेबस लोगों को अपरिचितों की देखभाल में सौपना भी क्रूरता समझते थे और

मैं उनसे सहमत थी। मैंने बहुत-सी संस्थाएं देखी हैं, और मैंने अच्छे-बुरे दोनों तरह के कर्मचारी देखे हैं पर उनमें अधिकतर न अच्छे हैं, न बुरे। वे प्रेमशून्य हैं और यही सबसे अधिक क्रूरता की बात है।

इसलिए हमें अपने पारिवारिक जीवन के आधार पर नये सिरे से विचार करने की आवश्यकता है। यह तो स्पष्ट है कि हम अपनी पद्धति को बदलकर एशियाई पद्धति जैसा नहीं बना सकते जिसमें अनेक पीढ़ियां इकट्ठी रहती हैं। वे एक ही छत के नीचे नहीं, पर आंगनों द्वारा जुड़े छोटे पृथक् मकानों में रहती हैं और वहां हर पीढ़ी अपनी बारी में अन्य सब पीढ़ियों के लिए ज़िम्मेदार होती है। पर फिर भी हमें ऐसा तो प्रबंध कर देना चाहिए जिससे किसी भी कारण बच्चे को प्रश्रयहीन न किया जा सके। कम से कम यह तो निश्चय ही कि बच्चों को माता-पिता के गैर कानूनी कार्य का सारा बोझ उठाने के लिए मजबूर नहीं किया जाना चाहिए। अमरीकन पुरुष पर विवाह के बिना पैदा हुए अपने बच्चे की कोई ज़िम्मेदारी नहीं है। इतना है कि यदि उसका पिता होना सिद्ध हो जाए तो उसके भरण-पोषण के लिए उसे कुछ देना होगा। उसपर न कोई दोष है और न कोई मन का बोझ है। वह माता को उठाना पड़ता है। वह अपने परिचित मित्रों को बिना पता लगे कुछ दिन के लिए किसी गुप्त स्थान में जा सकती है और वहां बच्चे को जन्म देकर और नव-जात बच्चा किसी गोद दिलाने वाली एजेन्सी के पास छोड़कर फिर लौट सकती है। पर यह ऐसा बच्चा है कि जिसका सारा जीवन अपने जन्म के तथ्य के कारण बदल गया, यह बच्चा ऐसा है जिसे नया स्थान, नये माता-पिता और अपरिचितों के बीच नया घर तलाश करना है। कभी कोई डाक्टर या मित्र या रिश्तेदार उसे असावधानी से किसी घर में पहुंचा देता है। जितनी सम्भावना उसके जीने की है उतनी ही मरने की भी है। कभी वह किसी अनाथालय में बड़ा होता है जिसमें कर्मचारियों, चर्चों और कल्याण-संगठनों के निहित स्वार्थ उसे कैदी बनाकर रखते हैं और उसके गोद जाने का कोई मौका नहीं होता। अच्छी तरह चलाया जाने वाला अनाथालय, जिसमें बच्चे स्वच्छ और अनुशासित रहकर बड़े होते हैं, अद्-भुत दर्शनीय स्थान होता है। अनाथालय में जाना मुझे सहन नहीं होता है। मैं उनके साफ चेहरे, अच्छे कपड़े और वर्दियां अब नहीं देखती—हम इतना आगे बढ़ चुके हैं—मैं केवल बच्चों की आंखें, उनकी चाह भरी नज़रें, अजीब शान्त धैर्य या कलह-प्रियता देखती हूं, जो बच्चे के टूटते दिल को छिपाती है।

गोद दिलाने वाली ऐजेन्सियों की क्या हालत है ? उनका काम है बच्चे को गोद दिलाना । अफसोस कि वे अपने पेशे के मानदण्डों में, अपनी प्रश्न-सूचियों में, अपने स्वार्थ में प्रायः इतने अधिक लिप्त होते हैं कि कभी-कभी मुझे यह लगता है कि वे जितने बच्चों को घर दिलाते हैं, उनसे अधिक घर पाने से रह जाते हैं। बोर्डिंग-होमों में बड़ी देर, बहुत ही अधिक देर, लगती है । जन्म देने वाली मां से गोद लेने वाले माता-पिता तक बच्चे यथासम्भव जल्दी से जल्दी पहुंचने चाहिए । मैं मानती हूं कि कभी-कभी यह तेज़ चाल दोषपूर्ण होगी । फिर भी मेरा विश्वास है कि कुल हानि मिलाकर उतनी नहीं होगी जितनी काफी देर लगने के कारण अब होती है । औसत गोद-दिलाऊ एजेन्सी में भयंकर ढील होती है । मैं मानती हूं कि कार्यकर्ता प्रतिदिन काफी वफादारी से अपने आठ घण्टे खर्च करते हैं, पर इसमें से अधिकतर समय कागज़ी काम और फाइलों तथा दफ्तरी कामों में खर्च होता है, और मैं जानती हूं कि कुछ सीमा तक यह आवश्यक है क्योंकि अलग-अलग राज्यों के कानून भिन्न और निराले भी हैं । बच्चे को प्रायः किसी एक राज्य या एक क्षेत्र में गोद जाने का मौका होता है । हरएक एजेन्सी किसी एक क्षेत्र में कार्य करती है और दूसरे क्षेत्र से विनिमय की कोई सम्भावना नहीं होती । और फिर बच्चे को अपनी दुःखदायी अवस्था की चुभन सहनी पड़ती है । उसे कानूनों और पेशेवरों के औचित्यों तथा नौकरशाही की कृपा पर बैठे रहना पड़ता है और गोद लेने वाले भावी माता-पिता अपनी बदकिस्मती पर अफसोस करते हुए प्रतीक्षा करते रहते हैं और यह चिन्ता करते रहते हैं कि कहीं ऐसा न हो कि देरी का कारण यह हो कि वे सामाजिक कार्यकर्ता की किसी परिपूर्ण आदर्श-सम्बन्धी कसौटी पर पूरे न उतरते हों, कि धर्म या मूलवंश में 'मेल' पूरा-पूरा न होता हो, कि मकान काफी बड़ा न हो, कि एक स्नानघर नाकाफी है, कि पिता कालेज का ग्रेजुएट नहीं, अथवा वह कालेज का ग्रेजुएट है, कि उनका विवाह आपसी मेल और निःशंकता की दृष्टि से पूरी तरह निर्दोष नहीं, कि वे स्वयं आदर्श व्यक्ति नहीं, बल्कि साधारण व्यक्ति हैं ।

और, वे बोर्डिंगहोम, जिनमें बच्चा प्रतीक्षा करता है ! वहां वह सम्भवतः अनेक में एक होता है जो सबके सब गोद जाने की प्रतीक्षा में होते हैं, या फिर परिवार के अपने बच्चों और प्रतीक्षा करने वाले बच्चों का मिश्रण होता है । हमें यह महत्त्वपूर्ण तथ्य याद रखना चाहिए कि बोर्डिंगहोम की माताएं बेघर बच्चों की देखभाल करके धन कमाती हैं । यह सच है कि प्रायः सदा वे स्नेहपूर्ण अच्छी स्त्रियां होती

हैं, पर प्रायः सदा ही वे अज्ञानी स्त्रियां भी होती हैं और अच्छी धाय के उपयुक्त गुण उनमें नहीं होते। और सामाजिक कार्यकर्ता उन्हें वैसा नहीं समझता। फिर भी, सामाजिक कार्यकर्ता बच्चे को वहां अनिश्चित समय के लिए छोड़ देता है—मालूम होता है कि वह यह सोचता है कि क्योंकि बोर्डिंगहोम स्वीकृत और लाइसेन्सप्राप्त है, इसलिए बच्चा मज़े में है। इधर बच्चे के जीवन के पहले महीनों में, जो सबसे महत्त्वपूर्ण महीने होते हैं, वह वास्तविक माता के प्रेम से वंचित होता है क्योंकि कोई भी बोर्डिंगहोम की माता उसी प्रकार गोद लेने वाली माता का स्थान नहीं ले सकती, जैसे वह नैसर्गिक माता का स्थान नहीं ले सकती। इसके अतिरिक्त मैंने प्रायः देखा है कि हो सकता है कि एजेन्सी बहुत उत्तम हो, इसका सुपरवाइज़र प्रबुद्ध और सदाशय हो, सामाजिक कार्यकर्ता सबके सब सर्वोत्तम स्कूलों के ग्रेजुएट हों, बालचिकित्सक दक्ष हों, पर फिर भी इनमें से किसीसे भी बच्चे को किसी बात की गारण्टी नहीं मिलती। बच्चे को बोर्डिंगहोम में अकेले रहना पड़ता है और इनमें से कोई भी अफसर वहां उपस्थित नहीं होता। उदाहरण के लिए, बोर्डिंगहोम वाली माता को डाक्टर से खुराक की एक सूची और हिदायतें मिलती हैं। अधिक सम्भव यही है कि वह अज्ञानी होने के कारण और प्रायः मृत और जीवित अनेक बच्चों की मां होने के कारण उस सूची को किसी दराज़ में रख देती है और कहती है कि मैं बच्चे की देखभाल करना स्वयं जानती हूं, आखिर मैं इतने बच्चे पाल या खो चुकी हूं। और उस बच्चे को मांस, सब्ज़ी तथा ताजे फलों के स्थान पर नूडल और मैकारोनी खिलाया जाता है। यह मनुष्य का स्वभाव है कि यदि सम्भव हो तो वह धन बचाता है। और स्टार्च (निशास्ते) से बच्चा मोटा होता है और दीखने में अच्छा लगता है, क्या यह ठीक नहीं? पर मुझे यह देखकर विचित्र मालूम होता है कि बहुत-सी पेशेवर सामाजिक कार्य करने वाली स्त्रियां बच्चों के बारे में इतना कम जानती हैं। मालूम होता है कि वे दृढ़, स्वस्थ, पेशीदार मांस में और थुलथुल चरबी में कोई अन्तर नहीं कर सकतीं। पर बहुत-सी सामाजिक कार्यकर्ताओं ने कभी शादी नहीं की और उनके अपने बच्चे कभी नहीं हुए जिन्हें वे सिखातीं। मेरी समझ में जो शिशुओं या छोटे बालकों के साथ कार्य करता है, उसे शिशु की दैनिक देखभाल के अनुभव से शून्य न होना चाहिए। विवाहित होना भी काफी नहीं, प्रेम करने वाला हृदय होना चाहिए।

फिर भी ऐसा मालूम होता है कि प्रेम करने वाला हृदय ऐसी चीज़ है जिससे

वचने की ही शिक्षा सामाजिक कार्यकर्ता को दी जाती है, कि जैसे यह पेशेवर कार्य-कर्ताओं के लिए गुण नहीं, अवगुण है। वे कहते हैं, सामाजिक कार्यकर्ता 'उदासीन' ही होने चाहिए। पर यही बुनियादी मूढ़ता है क्योंकि यदि आप 'उदासीन' हैं, तो आपको बच्चे की देख-रेख तथा उसके भविष्य का निर्णय करने का क्या अधि-कार है ? उदासीन शब्द का अर्थ मैं समझती हूं। हमें बताया जाता है कि बच्चे के प्रति अनुरागमय आसक्ति होना पाप है। सामाजिक कार्यकर्ता को ईश्वर की तरह व्यवहार करना चाहिए जो वैध और अवैध पर एक-सी उदासीनता से पानी बर-साता है। इसलिए बच्चा केवल 'केस', या आप चाहें तो 'रेफराल' मात्र होना चाहिए और यदि आप सामाजिक कार्यकर्ता हैं तो ठीक शब्दावली का प्रयोग करना महत्त्वपूर्ण है जिससे अन्य सामाजिक कार्यकर्ताओं को पता चल जाए कि आप इस पेशे के आदमी हैं। यह पेशा छोटे लोगों के छिपने का स्थान बनता जा रहा है जो तुच्छ नियमों को तोड़ने से डरते हैं और शिशु-जीवन के महान् सिद्धान्तों का खुल-कर पक्ष-प्रतिपादन नहीं कर सकते। जो कोई बच्चे के पास आता है, या जो किसी भी तरह बच्चे के जीवन को प्रभावित करता है, उसमें प्रेम करने का सामर्थ्य अवश्य होना चाहिए—ऐसा उदार प्रेम कि हर बच्चा प्यारा है और हर बच्चा एक मूल्यवान् निधि है। वीसों सामाजिक कार्यकर्ताओं से मेरा परिचय हुआ है और कभी-कभी कोई प्रेमपूर्ण हृदय वाली, उदार, भावुक स्त्री—अब तक सदा कोई स्त्री ही ऐसी मिली है—सामाजिक कार्यकर्ता भी मिल जाती है, पर सदा ऐसी होती है जिसे महान् व्यक्तिगत प्रेम लेने का भी और देने का भी अनुभव है। जब ऐसी कोई स्त्री मिल जाती है, तब मैं उसके पास बैठ जाती हूं और बातचीत करती हूं। तब वह मुझे अपने विचार बताती है और मैं उसे अपने, और हम दोनों के विचार एक होते हैं। यह मेरी विचारपूर्वक बनी राय है कि सामाजिक कार्यकर्ताओं के सारे पेशे को ऊपर से नीचे तक साफ करके सारा सिलसिला नये ढंग से शुरू करने की ज़रू-रत है और ये शब्द लिखते हुए मेरा अन्तःकरण मुझे पीड़ा पहुंचा रहा है क्योंकि मैं एक सामाजिक कार्यकर्ता को जानती हूं जो असहाय बच्चों पर दया करके स्वर्ग से भेजी गई है और मुझे 'वेलकम-हाउस' में उसके साथ कार्य करने का आनन्द प्राप्त होता है। वह अब तरुण नहीं और यद्यपि वह सामाजिक कार्य के स्कूलों में गई है और इसके नियम और कानून तथा पारिभाषिक शब्दावली जानती है, पर एक बात को छोड़कर वह सब कुछ भूल गई है और वह है छोटे बच्चे की भावनाओं को

समझना और कि उसे कैसे माता-पिता की आवश्यकता है, और उसका हृदय प्रेममय तथा मन समझदारी से पूर्ण है, और यह पवित्र दीपक लेकर वह बच्चे के लिए माता-पिता और माता-पिता के लिए बच्चा खोजती है और पालती है। वह प्रत्येक नियम को सिद्ध करने वाला अपवाद है, और उसके कारण मैं जानती हूं कि उस जैसी और बहुत-सी होंगी जो चुपचाप और दृढ़तापूर्वक तथा लगन से ऐसे अनेक स्थानों पर कार्य करती होंगी जिन्हें मैं नहीं जानती।

मैं यह नहीं कहती कि सामाजिक कार्यकर्ता, सारे के सारे, दिल की सचाई से शून्य या जानबूझकर क्रूर या स्वार्थी होते हैं—यह बात जरा भी नहीं। इसके विपरीत वे अधिकतर अत्यधिक अन्तःकरणनिष्ठ, अत्यधिक सावधान, अत्यधिक आलोचक और अत्यधिक दूसरों की अपने ऊपर दृष्टि का ध्यान रखने वाले होते हैं। वे ऐसी स्थिति में, जो आदर्श से बहुत दूर है, आदर्श पर आग्रह करने वाले होते हैं। वे इस बात की शिकायत करते हैं कि डाक्टर और मित्र तथा रिश्तेदार बच्चों को गोद दे देते हैं। वे गलत जगह दिए गए बच्चों के उदाहरण देते हैं। और मुझे निश्चय है कि वे सच्चे हैं, पर वे इस बात को भूल जाते हैं कि इस समस्या को हल करने में उनकी अपनी विफलता से, प्रतीक्षा करते बच्चे या 'गोद लेने के अयोग्य' बच्चे को कितनी हानि होती है।

मेरा विश्वास है कि कोई भी बच्चा गोद लेने के अयोग्य नहीं होता। लोगों को तथाकथित 'गोद लेने के अयोग्य' बच्चे को स्वीकार करने में सहायता देने के लिए शिक्षण की आवश्यकता है, पर ऐसे लोग तो हमेशा ही होते हैं जिन्हें प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। यद्यपि सब लोगों को शिक्षित नहीं किया जा सकता पर आज जो स्थिति है उसमें माता-पिता के ठीक न होने की सज़ा बच्चों को ही दी जाती है। कभी-कभी मैंने पेशेवर सामाजिक कार्यकर्ताओं में गोद लेने वाले माता-पिताओं के प्रति विरोध की भावना भी देखी है। मुझे शक है कि वे इसे जानते हैं, पर उनमें के कुछ में यह अवश्य होती है और गोद लेने वाले माता-पिता इसे तब भी अनुभव करते हैं जब वे पास कर दिए जाते हैं। हो सकता है कि यह एकाकी स्त्री की, जिसके कभी बच्चा नहीं हो सकता, अचेतन ईर्ष्या हो। यही विचित्र ईर्ष्या मैंने उन सामाजिक कार्यकर्ताओं में भी देखी है जो समकामी होते हैं। निश्चय ही वे इसका निषेध करेंगे और यदि उनमें यह है तो और भी ज़ोर से निषेध करेंगे और इसे पहचानेंगे नहीं।

सामाजिक कार्यकर्ता को वस्तुत. मानवीय जीवनो पर एक अधिकार प्राप्त होता है जिसके साथ विशालहृदयता की आवश्यकता है जो बहुत कम पाई जाती है। सामाजिक कार्यकर्ता, पुरुष हो या स्त्री, दो व्यक्तियो के बारे मे निर्णय करने बैठता है, उन्हे तोलता है, जाचता है, उनके निजी जीवनो मे झाकता है और यही सामाजिक कार्यकर्ता यह फैसला करता है कि उन्हे बच्चा मिलना चाहिए या नही। यह शक्ति तो ईश्वर को भी नही मिली है। कोई भी पुरुष और स्त्री, चाहे वे उपयुक्त माता पिता हो या न हो, एक बच्चे को जन्म दे सकते है। बच्चा प्रकृति के नियम के अनुसार आता है, कोई प्रश्न पूछे जाने की बात है ही नही; यदि एक स्वस्थ पुरुष और स्वस्थ स्त्री का सहवास होगा तो सतान होगी ही। पर जिन दम्पतियो के बच्चे नही होते और जो बच्चा पाने की परम कामना करते है, वे उस सर्वशक्तिमान् सामाजिक कार्यकर्ता को नाराज करने से डरते है कि कही ऐसा न हो कि जिस प्रसन्नता की उन्हे लालसा है और जिसके सामान्यतया वे हकदार भी है, वह उन्हे न मिल सके।'

अब तक यह पता चल गया होगा कि मै क्रुद्ध हू। मे यह स्वीकार करती हू। मैने बहुत कुछ देखा, बहुत कुछ परखा है। और मै देखती हू कि अट्ठाईस वर्ष पहले की अपेक्षा, (जब मैने अपनी मुन्नी को पाया था) या अट्ठारह वर्ष पहले की अपेक्षा (जब हमारे सुखी 'चार बडे' घर आए थे) आजकल सामाजिक कार्य का पेशा उन्नत होने के कारण बच्चे को गोद लेना ही कठिन हो गया है। मुझे इसमे सन्देह है कि मेरा पति और मै गोद लेने वाले माता-पिता के रूप मे आजकल स्वीकार्य हो सकते थे या नही। निश्चय ही हमे एक से अधिक बच्चा तो मिलता ही नही। हा, ये पेशेवर देवता बच्चो का बटवारा करते है। वे कहते है कि यह 'शोभन' नही कि किसी परिवार के पास दो बच्चे हो, जबकि दूसरो के पास एक भी न हो। इस युक्ति का जो कुछ भी महत्त्व होता, वह तब नष्ट हो जाता है जब आदमी अनाथालय देखता है। मै ऐसे अनाथालय जानती हू जिनमे पूरे तीन सौ बच्चे है।

'ये पूरे तीन सौ क्यो है?' मैने अपने मार्गदर्शक से पूछा।

'हमे अपने भाग का पूरा रुपया प्राप्त करने के लिए कम से कम तीन सौ अवश्य रखने पडते है,' उसने ईमानदारी से और अपने शब्दों का भयानक व्यंग्यार्थ बिना समझे उत्तर दिया।

और मुझे वह दिन याद है जब एक छोटी-सी भीरु स्त्री, जो स्वय एक सामा-

जिक कार्यकर्ता थी, न्यूयार्क सिटी में चुपके से मेरे कमरे में आई। वह एक दूसरे राज्य से मुझे यह बताने आई थी कि वहां के बच्चों के लिए कुछ करना चाहिए क्योंकि वहां एक सामाजिक कार्यकर्ता को अपना कार्य और तनखाह बनाए रखने के लिए किसी संस्था या बोर्डिंगहोम में सत्ताईस बच्चे रखना ज़रूरी था और इसलिए अनेक कार्यकर्ता बच्चों को गोद जाने के लिए नहीं छोड़ना चाहते थे क्योंकि इसका अर्थ यह था कि गोद लिए गए बच्चों का स्थान भरने के लिए और बच्चे तलाश किए जाएं।

'मैं उनके भोले चेहरे देखती रहती हूं,' वह बोली। 'क्या आप इस विषय में कुछ नहीं कर सकतीं?'

मैं कुछ नहीं कर सकती थी। मैं पर्वत को नहीं हिला सकती थी, क्योंकि उस राज्य में यह मामला राजनीतिक जीवन के भ्रष्टाचारों में उलझा हुआ था। और इसलिए मुझे खुशी है कि हमने अपना परिवार बाद के ज़माने के सामाजिक कार्यकर्ताओं को अपनी जांच का मौका देने से पहले आरम्भ किया था, क्योंकि अपने बच्चों के साथ हमारा बड़ा गौरवमय जीवन रहा है। मैं निश्चय से जानती हूं कि हमने उनके साथ काफी गलतियां की हैं, और अनेक बार बड़े पैमाने पर धैर्य खोया है, साथ ही उन्होंने भी हमारे साथ धैर्य खोया है, पर फिर भी हमने गौरवपूर्ण समय बिताया है, और ईश्वर का धन्यवाद है कि उसका एक-एक मिनट गौरवपूर्ण बिताया है।

सामाजिक कार्यकर्ताओं की हमें आवश्यकता है, यदि इससे हमारा आशय ऐसे लोगों से हो जो बच्चों के सुख की लगन रखते हों। हमारे जैसे समाज में—जिसमें बच्चे आसानी से असहाय और दुर्व्यवहार के शिकार हो सकते हैं—बच्चों की देखभाल का संगठित प्रयत्न होना चाहिए, पर वह संगठन व्यष्टिरूप से और सामाजिक रूप से तत्सम्बन्धित व्यक्तियों और आम जनता द्वारा बीच-बीच में देखा जाता रहना चाहिए और उसकी आलोचना होती रहनी चाहिए तथा बुरी बातों का प्रबल विरोध होते रहना चाहिए, अन्यथा वह संगठन एक निहित स्वार्थ बन जाता है। और जब बच्चे सम्पत्ति बन जाते हैं, तब यह ऐसी यथार्थ गुलामी हो जाती है जैसी संसार में कहीं हो सकती है। सामान्य व्यक्ति का पेशेवर के ऊपर सदा नियन्त्रण रहना चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे कि असैनिक मन का सैनिक के ऊपर नियन्त्रण रहना चाहिए क्योंकि जब एक बार संगठन हावी होता है, तब खतरा सिर पर मंडराने

लगता है। पेशेवर विशेषज्ञ होता है जो सलाह देने के लिए और कार्य करने के लिए नियुक्त होता है, पर सदा सामान्य अविशेषज्ञ मस्तिष्क के पर्यवेक्षण में; क्योंकि विशेषज्ञ इतना संकीर्ण होता है और अपनी शिक्षा द्वारा वैसा बना दिया जाता है कि वह शासक नहीं हो सकता। यह वह बुनियादी असूल है जिसके ऊपर ही किसी लोकतन्त्र के नागरिक सुरक्षित होते हैं। कारण यह कि जीवन के किसी भी क्षेत्र में पेशेवर का अभिशाप उसकी आदर्श की आकांक्षा है। आदर्श होने की इच्छा रखना तो अच्छा है, पर इतनी ऊंचाइयों तक उचित प्रक्रम के बाद ही पहुंचा जा सकता है और यदि इतनी देर लग जाए कि लोग अधीर हो जाएं तो उद्देश्य विफल हो जाता है। मैं बच्चों के चोर-बाज़ार की बहुत-सी बातें पढ़ती हूं और निश्चय ही मैं इसका अनुमोदन नहीं करती। पर मैं जानती हूं कि किसी चीज़ का चोर-बाज़ार तब ही होता और फलता-फूलता है, जब पूर्ति के उचित स्रोत मांग के लिए अपर्याप्त होते हैं। एक परिपूर्ण सर्वथा निर्दोष दत्तक, जिसमें बच्चे और माता-पिता दोनों को तैयार करने में समय लगाया जाए, पूरा करना आदर्श बात है जिससे एक बच्चे को अच्छा घर और सुख का पूरा अवसर मिले, पर उन अनेक अन्य बच्चों का क्या हो जो बोर्डिंगहोम या अनाथालय में उस समय बड़े होते जा रहे हैं, जब एक बच्चे को सर्वथा दोषहीन घर पहुंचाया जा रहा है जिसके कारण बहुत-से असहाय बच्चों को कभी भी गोद जाने का मौका नहीं मिला।

यह एक ऐसा संघर्ष है जिसे मैं चिरकाल से चलाती आई हूं—इस दोषपूर्ण दुनिया में सर्वथा दोषहीन आदर्श की आकांक्षा के विरुद्ध ही यह संघर्ष है। मैं चीन में अमरीकन डाक्टरों तथा पश्चिमी शिक्षा पाए हुए चीनी डाक्टरों के विरुद्ध यह संघर्ष करती थी। इधर लाखों आदमी निवार्य रोगों से मर गए और अन्य लाखों कुकरों से अंधे हो गए, पर डाक्टर थे कि वे अपने पेशे के ऊंचे मानदण्ड की बात करते रहे, अर्थात् चिकित्सा करने के लिए ग्रेजुएट होना ही चाहिए। पर बहुत थोड़े ही लोग तो ग्रेजुएट हो सकते थे। इसमें बड़ा पैसा लगता था और वहां बहुत थोड़े मेडिकल स्कूल थे। विदेश जाना तो प्रायः असम्भव ही था। मैं यह कहा करती थी कि हर किसीके लिए हमें इतने ऊंचे प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं है। ऐसा क्यों नहीं हो सकता कि ऐसे क्षेत्र-कार्यकर्ता प्रशिक्षित कर दिए जाएं जो मले-रिया के लिए कुनैन दे सकें, फोड़ों और घावों का इलाज कर सकें, कुकरों के लिए पलकें धो सकें और साथ ही यह समझ सकें कि कब कोई रोग उनकी जानकारी

से परे है ? ये गम्भीर केस किसी चिकित्सा-केन्द्र में भेजे जा सकते हैं, और यदि वहां भी रोग काबू से बाहर समझा जाए तो रोगी को केन्द्रीय अस्पताल भेजा जा सकता है। इसका अर्थ यह होगा कि ऊंची तनखाहोंवाले महंगे पेशेवर डाक्टरों का समय सुपरिचित, आसानी से पहचाने जाने वाले रोगों पर खर्च नहीं होगा और सबसे बड़ी बात यह है कि इसका अर्थ यह होगा कि लोगों का इलाज हो रहा होगा।

पर नहीं, मुझसे कहा गया कि यह तो एक गैर-जानकार का बेहूदा विचार है। आज यह सुनकर मैं बड़ी पीड़ा अनुभव कर रही हूं कि चीन में कम्यूनिस्ट वही कर रहे हैं जो मैं आशा करती थी कि हमारे पहले के पेशेवर डाक्टर कर सकते थे और उन्हें पूरा श्रेय मिल रहा है। कोई काम किस ढंग से किया जाता है, वह निश्चय ही बड़ी महत्त्वपूर्ण बात है और तरीके अच्छे से अच्छे होने चाहिएं। इससे ऊपर मैं केवल एक ध्येय रखती हूं कि काम हो जाए, क्योंकि यदि एक समूह इसे करने में असफल रहा तो दूसरा समूह उसका स्थान ले लेगा। अमरीका में बच्चों का चोर-बाज़ार फल-फूल रहा है और इसे रोकने के प्रयत्नों के बावजूद, यह तब तक फलता-फूलता रहेगा जब तक पूर्ति मांग के बराबर न होगी। मानव-प्रकृति की सदा विजय होती है।

यहां मैं एक व्यक्तिगत बात कहती हूं कि जब मैंने वह मकान खरीदा जो मेरे और मेरे प्रियजनों के लिए घर बन गया, तब मेरे प्यारे बड़े भाई ने नाले के पार वाला छोटा पत्थर का मकान खरीदा। यदि हम एकसाथ अपने मकानों के अगले दरवाज़े से बाहर आते तो हम पहाड़ी के इधर-उधर से एक-दूसरे का अभिवादन कर सकते थे। हमारा यह सुखद स्वप्न था कि अपने सारे जीवन अलग रहने के बाद—वह हमारे चीनी घर से कालेज की पढ़ाई के लिए तब चला आया था जब मैं केवल चार साल की थी—शेष जीवन हम पास-पास रह सकें। हममें अब भी विशेष अनुरूपता थी। हम सगे होने के साथ मित्र भी थे और मुझे यहां उसकी याद आ रही है क्योंकि मुझे याद है कि जब हमने उसे अपने पहले वाले दो शिशु पुत्र दिखाए थे, जो उस समय छह-छह सप्ताह के थे, तब वह किस प्रकार हंसा था! उसे बच्चों से प्यार था और वह उनपर जादू का सा असर कर देता था। मैंने उसे रेल-गाड़ी पर एक माता की बांहों से एक ऐसे चिड़चिड़े रोते बच्चे को उठाते देखा है जिसे उसने कभी नहीं देखा था, और उसने मिठास तथा कुछ-कुछ हंसी से बात करते हुए उस बच्चे को अपने स्नेहपूर्ण चेहरे की ओर शान्तिपूर्वक देखते रहने

ग्रौर इसके बाद सो जाने को प्रेरित कर दिया था । जब वह ग्रपने छोटे-छोटे नये भानजों की ग्रोर देखता था तब मुझे वह प्रेमपूर्ण मामा दिखाई देता था, ग्रौर इसके बाद उसने तुरन्त यह निश्चय किया कि क्योंकि हम सर्दियां न्यूयार्क में बिता रहे थे ग्रौर देहात में केवल छुट्टी बिताने ग्राते थे, इसलिए बच्चों के पास ग्रपने सूर्य-दीप (सन-लैम्प) होने चाहिए। वह उस समय जीवन-सम्बन्धी ग्रांकड़ों ग्रौर स्वास्थ्य-विषयक कार्य के क्षेत्र में बहुत ऊंचे प्रतिष्ठित पद पर था ग्रौर उसकी बुद्धिमत्तापूर्ण सलाह ग्रनेक देशों में मांगी जाती थी । फिर भी उसने ग्रपने बाल स्ट्रीट के व्यस्त दफ्तर से लैम्प उसी दिन हमारे पास लाने का समय निकाल लिया।

ग्रगले दिन उसे कोरोनरी थ्रॉम्बोसिस (मस्तिष्क में रक्त जम जाने का रोग) उस समय हुग्रा जब कि वह ग्रपने संचालक बोर्ड की एक बैठक में जाने को था ग्रौर उसे होश ग्राए बिना उसी दिन उसकी मृत्यु हो गई ग्रौर उसके साथ हमारा स्वप्न भी चला गया ।

मैंने इन वर्षों में उसके छोटे-से पुराने मकान की देख-भाल रखी है ग्रौर उसकी योजना के ग्रनुसार इसे पूरा कर दिया है ग्रौर दूर देशों से ग्राने वाले जिन मित्रों को ग्रागे जाने से पहले कुछ दिन टिकने के लिए जगह की ग्रावश्यकता होती है, उन्हें टिकाने में इसका उपयोग किया है ।

ग्रौर जब मैं उन ग्रारम्भिक वर्षों की बात सोचती हूं, जब हम ग्रभी न्यूयार्क में ही रहते थे ग्रौर केवल साप्ताहिक छुट्टी को ग्रीन हिल्स ग्राते थे, तब जो कृपालु लोग हमारे छोटे बच्चों को ग्रट्ठारह मंज़िल ऊपर ग्रौर नीचे लाने ग्रौर ले जाने में सहायता देते थे, उनको स्मरण करना भी उचित है। मुझे बताया गया था कि न्यूयार्क के फ्लैटों में बच्चों का स्वागत नहीं होता, पर मुझे यह बात सत्य नहीं मालूम हुई। सप्ताह में दो बार चपरासी ग्रौर लिफ्ट वाले लोग जब दो छोटे-छोटे लड़कों ग्रौर दो बच्चों को कारों में बैठाने ग्रौर उनसे निकालने में मदद देते थे तब उन्होंने कभी कोई शिकायत नहीं की। एक बार जब मैंने धन्यवाद दिया, तब प्रसन्नचित्त लिफ्ट वाले ने जवाब दिया, 'निश्चय ही, बीबीजी, हम घर में कुत्तों के बजाय बच्चों का होना ग्रधिक पसन्द करते हैं।'

ग्रौर एक बार मुझे याद है कि जब मेरा पति हमें ग्रपने बाज़ार वाले दफ्तर पर छोड़ गया था ग्रौर बच्चों तथा नर्स से भरी कार मुझे सौंप गया था तब चौराहे पर मुझे हमारे कोने वाले विशालकाय सिपाही ने रोक लिया था। ग्रोह, भगवान्…

मैंने सोचा, मैंने इस समय क्या कर डाला क्योंकि मैं कभी बहुत अच्छी ड्राइवर न थी और स्वभाव से अन्यमनस्क थी, पर पुलिस वाले ने अपनी हथेली हमारी ओर खड़ी कर हमें रोके रखा और यातायात आता जाता रहा और बच्चों में भूख के चिह्न दिखाई देने लगे। दूसरी बार लाल रोशनी होने पर, जबकि कारें झपटने के लिए तैयार शेरों की तरह प्रतीक्षा कर रही थीं, वह चलकर हमारे पास आया और मेरी पीछे वाली खुली खिड़की में स्नेह से अन्दर झांकने लगा।

'मैं ज़रा यह देखना चाहता था कि बच्चे कैसे हैं,' उसने कहा।

इसके बाद उसने हमें जाने दिया।

और मैं लिफ्ट वालों और पुलिस वालों की कृतज्ञतापूर्वक चर्चा क्यों करती हूं, उसकी क्यों नहीं करती जो सब मनुष्यों के ऊपर है ? बच्चों के जीवन के तीन साल तक न्यूयार्क जाते या घर जाते हुए आधे रास्ते में मेरा पति सड़क किनारे की किसी भोजन-गाड़ी पर हमारे उन भूखे बच्चों के लिए दूध की बोतलें गर्म करने के लिए रुकता था। भोजन की गाड़ी वाला आदमी हमें अच्छी तरह जानने लगा था और वह प्रति सप्ताह दो बार होने वाली इस घटना में दिलचस्पी रखता था, पर जो बात मुझे याद है वह है मेरे पति का स्नेहपूर्ण अर्ध-परिहास-युक्त धैर्य जबकि वह गर्म किए दूध की दो बोतलें प्रतीक्षा करते हुए होंठों से धीरे से लगा देने के लिए लौटाकर लाता था।

जब कभी-कभी मैं अपने अमरीकन देशवासियों से अधीर होने लगती हूं—मैं तब ही अधीर होती हूं जब बड़े विश्व के मामलों का सवाल होता है जिनमें मुझे लगता है कि हम अब भी कुछ मूर्ख हैं—तब मैं अपने साथी नागरिकों की सीमाहीन अच्छाई और इन वर्षों के दैनिक जीवन की व्यक्तिगत कृपालुताओं को एक-एक करके याद करती हूं।

जिन चालीस वर्षों में मैं चीन में रही, उनमें मैंने शेष संसार में हो रही घटनाओं से, और विशेष रूप से अपने देश में हो रही घटनाओं से अपने को परिचित रखा। मैंने बचपन से संसार की जातियों को एक परिवार के, चाहे वह ज्ञात है या अज्ञात, सदस्य मानना सीखा था और भूमण्डल के बारे में इस चीनी दृष्टिकोण का जो पहले-पहल मुझमें श्री कुंग ने मेरे सामने इतिहास का उद्घाटन करते हुए—और यह इतिहास आगे बढ़ता हुआ अब मुझे अपने में लपेट रहा था—मेरे अन्दर

डाला था, व्यावहारिक अर्थ अब स्पष्ट रूप से समझा था। इसलिए अब अपने जीवन का उत्तरार्ध अमरीका में बिताते हुए मैं चीन में—उस देश में जिसे मैं छोड़ आई हूं पर फिर भी जो सदा मेरा एक हिस्सा रहेगा—हो रही घटनाओं से इस तथ्य के बावजूद घनिष्ठ सम्पर्क रखती हूं कि मैं कम्यूनिस्टों की, जिनके हाथ में इस समय नियन्त्रण है, अवांछित व्यक्ति हूं।

इसलिए १६३८ में मैं अपने शान्त अमरीकन फार्महाउस में तन्मय रहने के बावजूद अपने दूसरे देश से निकट रही थी। चियांग काई-शेक को पुरानी मिंग राजधानी नानकिंग में अपनी सरकार स्थापित किए दस वर्ष हो गए थे। वे उसके और उसकी सरकार के लिए कठिन वर्ष रहे थे। उनमें चार कठिन बाढ़ें आई थीं और उनके बाद अनिवार्य अकाल पड़े थे और एक भयंकर सूखा पड़ा था जिससे उनकी हालत और खराब हो गई थी। वह मन्दी, जिसने अमरीकन जनता में इतना हाहाकार पैदा कर दिया था, हमारे समझ सकने से कहीं अधिक बड़ी संसार-व्यापी मन्दी थी और १६३३ में चीन भी इस मन्दी से विनाश की सीमा तक आ गया था। फिर भी सरकार ने जैसे-तैसे मुसीबतें पार कर ली थीं और कुछ दृष्टियों से कुछ तरक्की भी की थी। कम्यूनिस्टों को निरन्तर खदेड़कर उत्तर-पश्चिम में धकेला जाता रहा और एक के बाद दूसरा प्रान्त और नेता नई केन्द्रीय सरकार—सरकार अब इस नाम से पुकारी जाती थी—के प्रति अपनी निष्ठा घोषित करता रहा। पश्चिम-विरोधी नारे खत्म हो रहे थे और पश्चिमी शिक्षा पाए हुए अफसरों का प्रभाव बढ़ रहा था। चीनी व्यापारी पश्चिमी देशों के साथ व्यापार बढ़ाने के लिए उत्सुक थे और उद्योग, सड़क-निर्माण तथा वैज्ञानिक गवेषणा के विशेषज्ञों को सलाह देने के लिए चीन निमन्त्रित किया जाता था। एक हवाई सर्विस शुरू की गई थी और उसके द्वारा विमान से उत्तर से दक्षिण तथा पूर्व से पश्चिम जाया जा सकता था। बहुत-से पश्चिम वालों को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि चीनियों ने यात्रा की आधुनिक प्रणालियों को इतनी तत्परता से अपना लिया, पर इसका कारण यह था कि वे चीनियों की, जो अपना सुधार करने के लिए सदा तैयार रहते थे, तथ्यानुसारी और व्यावहारिक प्रकृति को नहीं समझते। जब मैं चीन में थी, तब किसी मोटे-ताज़े व्यापारी को अपने स्वच्छ अतिरिक्त कपड़े एक छोटे चमड़े के ट्रंक में लिए हुए वैसी ही निश्चिन्तता से विमान में चढ़ते देखकर—जैसे वह कभी रिक्शा में चढ़ता था—बड़ा मनोरंजन होता था। रेलों में बहुत वृद्धि हो गई, जिसके

कारण समुद्र-तट से सुदूर पश्चिम में शेन्सी प्रान्त में सियान-फू तक ट्रेन द्वारा जाना सम्भव हो गया। मोटर की सड़कें बनाई गईं और टूटी, अधटूटी, अनेक बुरी अवस्थाओं वाली बसें मार्गों में उछलती और झटके देती, भीतरी क्षेत्रों में जाती और वहां से बन्दरगाहों पर लौटती थीं, यद्यपि प्राइवेट कारें अब भी धनी लोगों तथा सरकारी अफसरों के पास थीं। शायद पश्चिमी शिक्षा पाए चीनियों का सबसे उल्लेखनीय योगदान सड़कों और रेलों के क्षेत्र में ही था, पर नई सरकार की असली कमज़ोरी यह थी कि यह किसान से काफी दूर थी; और यह सदा याद रखना चाहिए कि किसान कुल आबादी के पचासी प्रतिशत थे। मोटर की सड़कों और रेल-मार्गों से भी उन्हें लाभ नहीं मिला और टैक्स लगातार बढ़ते गए। केन्द्रीय नियन्त्रण अब भी बड़े नगरों से आगे तक नहीं पहुंचा और स्थानीय ज़बरदस्त लोग सरकारी पदों पर बैठे हुए प्रायः अपनी मनचाही वसूलियां ज़बरदस्ती करते थे। किसान के लिए अपील अदालतें नहीं थीं अतः बहुत बड़े अफसर-मण्डल का बोझ उठाता हुआ वह इन नये बोझों से कराहने लगा।

पर च्यांग काई-शेक और उसकी सरकार के पीछे बन्दरगाह वाले नगरों, मुख्यतः शांगहाई, के चीनी साहूकार थे। विदेशी-विरोधी नारों के बावजूद, जिनके आधार पर राष्ट्रीय सरकार ने अपनी शक्ति बढ़ाई थी, तथ्य यह है इस सरकार को पश्चिम-वासियों की इतनी अधिक देन है जितनी यह कभी स्वीकार करने को तैयार नहीं होती। और इसको कुछ लाभ सन्धि में दिए गए बन्दरगाहों के कारण था जहां पश्चिमी पुलिस और सैनिकों द्वारा रक्षित कन्सेशनों में बैंक और खजाने निष्कंटक चलाए जा सकते थे। वहां साहूकार और उनके परिवार सुरक्षित थे और उनके बच्चों को पश्चिमी स्कूलों में शिक्षा दी जाती थी। चीनी बैंकरों तथा अन्य धनियों के पुत्र सचमुच पश्चिमी रंग-ढंग लाने की दिशा में चलाए गए राष्ट्रीय आन्दोलन के अगुवा बन गए और उनके द्वारा बहुत कुछ प्राचीन परम्परा नष्ट हो रही थी। शांगहाई और तीन्तसिन के अंतर्राष्ट्रीय नगरों में बड़े होते हुए नौजवान पश्चिमी पोशाक पहनते थे और पश्चिमी नाचघरों में जाते थे। यहां स्वागत करने वाली न केवल सुन्दर चीनी लड़कियां होती थीं जो पश्चिमी ढंग के छरहरे गाउन पहने होते थीं, बल्कि फ्रेंच लड़कियां और सुन्दर बाइलो-रूसी और यहां तक कि कुछ अंग्रेज़ और अमरीकन भी, सबको समान रूप सुलभ होती थीं। उन नगरों में आधुनिक थियेटर आन्दोलन ज़ोर पर था और ऐसी तारिकाओं ने—

जैसे चीन की तितली बू जो हालीवुड की सुन्दरी जेनेट गेनर के साथ स्पर्धा करती थी जो कि बहुत लोकप्रिय अमरीकन तारिका थी—सिनेमाघरों को प्रतिदिन के आनन्द की वस्तु बना दिया था। तरुण दम्पति कुनबे के साथ परम्परागत रीति से रहने के बजाय 'छोटे परिवार' के घर चाहने लगे और उस काल में चीनी पत्रिकाओं और पुस्तकों में मिलने वाला अधिकतर साहित्य परिवार द्वारा की गई सगाइयों के कारण एक-दूसरे से बिछुड़े हुए तरुण प्रेमियों के दुःखों से भरा रहता था। पुरुष के लिए, जिसका विवाह उसके परिवार ने कर दिया है, यह बात मान्य हो गई कि वह देहात में अपने पारिवारिक घर में अपनी पत्नी को छोड़ आए और नगर में अपने व्यापारिक जीवन के लिए अपनी पसन्द की एक और पत्नी रख ले। चीनी सदा अपने सिद्धान्तों को समय की आवश्यकता के अनुकूल बना लेता है, और सबसे अधिक इसी कारण से चीन में पूरी व्यापक क्रान्ति कभी नहीं हुई, जैसी कि कह सकते हैं रूस में हुई थी। नई रूढ़ियां और प्रथाएं पैदा हो गई, पर कभी सहसा नहीं। मकान भी बदल गए और भूतकाल के शानदार पुराने मकानों के स्थान पर, जो वहां के भूदृश्य के अनुरूप होते थे, नफरत पैदा करने वाले चौकोर दोमंज़िले मकान चीनी दृश्यावली को बिगाड़ते हुए खड़े हो गए। आधुनिक विचार के लोगों में यथा-सम्भव सब बातों में पश्चिमी बनने का फैशन हो गया और इसका परिणाम प्रायः बड़ा विपत्तिकारक होता था।

ऐसे समाचार तथा बहुत कुछ और भी यहां मेरे पास अपने सुन्दर पेन्सिल-वानिया के मकान में आता ही रहता था। और अपने चीनी मित्रों के पत्रों में मैं इतने परिवर्तनों के हाल पढ़ती थी—और ऐसा लगता था कि उनमें से बहुत-से लाभदायक हैं—कि मैं यह आश्चर्य करने लगी थी कि क्या सचमुच मेरा अपने बचपन के देश को छोड़ना आवश्यक था। यह मतलब नहीं कि मुझे अपने फैसले पर अफसोस था। मैं अपने देश में पूरी तरह सुखी थी और इसके लोगों और इसके आचार के बारे में रोज नई बातें सीखने में व्यस्त थी, पर मुझे वह बात याद थी जो मेरी चीनी सहेलियों ने मेरे आने के समय कही थी, 'अपने देश जाओ और अपने पूर्वजों का पता लगाओ, क्योंकि यह अच्छी चीज़ है,' उन्होंने मुझसे कहा, 'पर जब तुम बूढ़ी हो जाओगी, तब हमारे पास लौट आओगी।' मैंने मन में इसका निषेध किया क्योंकि मैं यह महसूस करती थी कि यदि मैं चीन से उन कारणों से जा रही थी जो उस समय

मौजूद थे तो मैं कभी वापिस नहीं आऊंगी। पर क्या मैं प्रतिरोध कर सकूंगी? कभी-कभी मुझे विश्वास न होता था। चीन बूढ़ों के लिए आदर्श देश है, एक आनंदमय स्थान है जहां केवल बूढ़ा होने से आदमी को सम्मान मिल जाता है। कितनी बार मैंने चीन के किसी भी गांव में यह देखा था कि दरवाज़े के बाहर चबूतरे के किनारे बेंच पर बैठा हुआ आरामदेह कपड़े पहने कोई बुड्ढा या बुढ़िया हाथ में हुक्का लिए धूप में ऊंघता हुआ खाली बैठा है, पर कोई उससे बुरी बात नहीं कहता था। सब उससे प्यार करते थे और उसकी देखभाल करते थे और उसे चाहते थे, और वह सिर्फ इस कारण कि वह अब बुड्ढा था या बुढ़िया थी! बूढ़े संभालकर रखने की चीज़ थे और कोई भी बूढ़ा होने से डरता नहीं था। जब कोई बूढ़ा बोलता था, तब शेष लोग उसके इतने वर्षों के संचित अनुभव को उत्सुकता और ध्यान से सुनते थे।

यह देखकर मुझे धक्का लगा था कि मेरे अपने देश में बूढ़ों से कितना भिन्न व्यवहार किया जाता है और कितनी दयनीयता से वे अपनी आयु छिपाने का यत्न करते हैं और अपने को अब भी सशक्त तथा पूरे दिन काम करने में समर्थ दिखाते हैं। बेघर बच्चों के साथ होने वाले अन्याय से भी कुछ बुरी बात यह थी कि सफेद बालों वाले माता-पिता और दादा-दादी वृद्धों के आश्रमों में और पागलखानों में दिखाई देते थे जिन्हें प्रायः कोई मानसिक रोग नहीं होता था पर केवल आयु अधिक होने के कारण हल्की और हानिरहित मानसिक क्षीणता ही होती थी। मेरा ख्याल है कि आर्थिक जीवन की अनिश्चितता और अपने तथा अपने परिवार के भरण-पोषण के संघर्ष में प्रत्येक मनुष्य की व्यक्तिगत असुरक्षा हमारे देश में तरुण और वृद्ध के बीच सामंजस्य को बहुत दुर्लभ बना देती हैं। वृद्ध लोग अपने बच्चों से भय अनुभव करते हैं और वे अपनी देखभाल आप करने की कोशिश करते हैं और यदि नहीं कर पाते तो अपराधी होते हैं और इस प्रकार पीढ़ियां पारस्परिक भय से, जो नैसर्गिक प्रेम को नष्ट कर देता है, एक-दूसरे से दूर हटती हैं।

कुछ समय पहले मैं एक भले बुज़ुर्ग की बातचीत सुन रही थी जो बहुत वर्ष तक एक स्थानीय बैंक का अध्यक्ष रहा था। वह पास के एक नगर के एक वृद्ध-आश्रम में दिलचस्पी रखता था और उसने मुझे बताया कि वृद्ध-आश्रम के अधीक्षक को सवेरे-सवेरे सीढ़ियों पर कोई बूढ़ा मिलता है जिसे उसका पुत्र या पुत्री वहां डाल गया है और यह आदेश दे गया है कि उसके परिवार का नाम प्रकट न किया

जाए। हां, यह सचमुच होता है।

फिर भी हमारे समाज को किसी न किसी तरह इसे ठीक करके ऐसी हालत पैदा करनी चाहिए कि वृद्ध लोगों को तरुणों से न डरना पड़े या न त्यागे जाना पड़े क्योंकि किसी सभ्यता की कसौटी यही है कि वह अपने असहाय सदस्यों की किस तरह देखभाल करती है। इस प्रकार, जब हिटलर ने बूढ़ों को नष्ट करना शुरू किया, तब मैं जान गई कि सभ्य जगत् में उसका शासन अधिक दिन नहीं चल सकता। यह एक समय के प्रतिकूल बात है और मानवीय विकास के नियम इसका खात्मा कर देंगे; और वह अन्त बहुत जल्दी आया।

पर फिर पिछली बात पर आइए—यदि जापान ने अपने साम्राज्य के स्वप्न को बढ़ाने के लिए यह समय न चुना होता तो चीन में क्या हुआ होता, यह कोई नहीं कह सकता। चियांग काई-शेक को यह अनुमान नहीं था कि जापान इतनी तेज़ी से आगे बढ़ जाएगा और उसने अपनी आन्तरिक दमन-नीति जारी रखी थी विशेषत: इसलिए कि उसे इसमें सफलता मिलती प्रतीत हो रही थी। जब उसने कम्यूनिस्टों को देश के उत्तर-पश्चिमी कोने में खदेड़ दिया था तो सब प्रान्त एक-एक करके उसकी सरकार के साथ हो गए थे। यह सच है कि कम्यूनिस्टों ने वहां एक प्रतिद्वन्द्वी सरकार स्थापित कर ली थी जो शेष चीन से स्वतन्त्र थी और छोटी होती हुई भी चियांग काई-शेक को चिढ़ाने के लिए काफी थी, क्योंकि उसने देश में राजनीतिक एकता स्थापित करने का दृढ़ निश्चय किया हुआ था। उसने दिसम्बर, १९३६ में उनके विरुद्ध एक अन्तिम मार्च करने का फैसला किया और इसके लिए शेन्सी के सियान नगर को अपना अड्डा बनाने का और पुराने मंचूरियन युद्धनायक चांग त्सो-लिन के पुत्र चांग ह्सूएह-लियांग के अधीन फौज तथा स्थानीय सैनिकों को अपनी सेना के रूप में प्रयोग करने का निश्चय किया। चांग ह्सूएह-लियांग और उसके आदमी तब से ही निर्वासित रहे थे जब जापान ने मंचूरिया पर कब्ज़ा किया था। वे असन्तुष्ट थे और जापान से लड़ने को तो उत्सुक थे पर कम्यूनिस्टों से लड़ने को तैयार न थे, जो आखिरकार चीनी ही थे। चियांग काई-शेक ने उनकी असंतोष की बात सुनी थी और वह ७ दिसम्बर, १९३६ को विमान द्वारा अपने अफसरों के साथ अपनी फौजों को संगठित करने और मोर्चा बांधकर पड़े कम्यूनिस्टों पर हमले का नेतृत्व करने वहां पहुंचा।

उसे कितना आश्चर्य हुआ जब उसने उसी महीने की बारह तारीख को, जब-

कि वह नगर के पास गरम चश्मों वाली जगह विश्राम कर रहा था, देखा कि उसके मित्र-पक्ष के चांग ह्सूएह-लियांग ने उसे कैदी बना लिया है। वह कहानी यहां दुबारा कहने की आवश्यकता नहीं। वह इतनी सुप्रसिद्ध हो चुकी है क्योंकि सचमुच सारी दुनिया को इस घटना से धक्का पहुंचा, पर शायद इस कार्य के पीछे मौजूद प्रेरक भाव उतनी अच्छी तरह नहीं समझे गए। संक्षेप में चांग ह्सूएह-लियांग ने यह प्रस्ताव रखा कि राष्ट्रवादी सरकार कम्यूनिस्टों से सन्धि करे और उनके साथ मिलकर जापानियों का मुकाबला करे जो हर दिन अधिकाधिक उत्तरी क्षेत्र पर कब्ज़ा करते जा रहे थे और स्पष्टतः सारे चीन पर कब्ज़े की योजना बना रहे थे। यह मान लेना चाहिए कि तरुण मार्शल को, जिसे यही कहकर पुकारा जाता था, जापान की हार में अपने मंचूरिया लौटने की एकमात्र आशा दिखाई दी और उसने यह अनुभव किया कि चीनी कम्यूनिस्टों के साथ युद्ध करने में कोई तुक नहीं जबकि विदेशी जापानी देश को निगलते जा रहे थे। चियांग काई-शेक ने, जो प्रसिद्ध और प्रचण्ड स्वभाव का आदमी था, गुस्से से ऐसी दलील नहीं सुनी और पहले कम्यूनिस्टों को पराजित करने का आग्रह किया, अर्थात् अपने ही तरीके पर चलने का आग्रह किया।

नानकिंग में न केवल उसका परिवार, बल्कि उसकी सरकार भी घबरा गई। शीघ्र ही यह साफ हो गया कि राष्ट्रवादी दल में स्वयं बूढ़े शेर के प्रश्न पर फूट हो रही थी। कुछ सदस्य पार्टी में एकीकरण करने के लिए चियांग की बलि चढ़ाने को भी तैयार मालूम होते थे। दूसरों का यह विचार था कि चियांग के पतन के साथ सारे राष्ट्रवादी शासन का पतन हो जाएगा। परिवार ने इस संकट को सुलझाने का और अपने वीर नायक को हर कीमत पर छुड़ाने का निश्चय किया और तब श्रीमती चियांग अपने पति के पास विमान द्वारा जा पहुंची।

इस बीच उस वाक्चतुर कम्यूनिस्ट चाऊ एन-लाई ने इस सम्मानित कैदी के साथ बातचीत की और श्रेष्ठ चीनी परम्परा के अनुसार एक समझौते का प्रस्ताव पेश किया, यद्यपि उसके पीछे एक बड़ी धमकी भी थी। चाऊ एन-लाई ने कहा कि यदि हमारी शर्तें स्वीकार की गईं तो हम कम्यूनिस्ट चियांग काई-शेक को अपना प्रधान और राज्य का प्रधान स्वीकार कर लेंगे। और शर्तें ये थीं: 'विद्रोहियों' को क्षमा कर दिया जाएगा, राष्ट्रवादियों और कम्यूनिस्टों में अस्थायी सन्धि हो जाएगी और वे मिलकर जापानियों से लड़ेंगे। और इनमें धमकी क्या

छिपी थी ? यदि चियांग सहमत न हुआ तो उसे तुरंत मार दिया जाएगा। चियांग बड़ी अनिच्छा से सहमत हो गया, और शर्तें पूरी कर दी गईं। उसे फिर मुक्त कर दिया गया और संयुक्त चीन के माने हुए प्रधान के रूप में ऊपरी तौर पर उसका सम्मान किया गया तथा जापान के विरुद्ध प्रतिरोध की योजना बनाई गई।

पर मन ही मन हर कोई जानता था कि कम्यूनिस्टों ने एक विजय पा ली है और पहली बार तरुण बुद्धिजीवी, वे भी जो राष्ट्रवादी दल में थे, कम्यूनिस्ट-आन्दोलन में दिलचस्पी लेने लगे। क्या वे सचमुच ऐसे चीनी थे जो अपने-आपको विदेशी शत्रु से बचाने के लिए अपनी और अपने हितों की कुर्बानी करने को तैयार थे ? यह कुछ नई चीज़ थी, और आदर्शवाद, जो राष्ट्रवादी शासन के काल में इतने दुःखद रूप से क्षीण हो गया था, फिर उभर उठा। लोग 'कृषि क्रान्तिकारियों' की चर्चा करने लगे और कम्यूनिस्टों ने स्वयं यह नाम अपना लिया। 'हम रूसी कम्यूनिस्टों जैसे नहीं हैं,' उन्होंने कहा। 'हम कृषि-सुधारक हैं और हम चीनी हैं।' यह कार्य बड़ी चतुराई से किया गया। निःसन्देह यह भविष्य के आधिपत्य के लिए बहुत पहले बनाई गई योजना का भाग था और कोई नहीं जानता कि चियांग काई-शेक ने इसका पूरा अर्थ समझा या नहीं। मैं समझती हूं कि वह समझता था क्योंकि उसने शुरू से ही सदा इस नाम की सार्थकता का खण्डन किया और वह अपनी ज़बरदस्ती कराई गई सन्धि से सदा बेचैन रहा।

जहां तक अमरीकनों का संबन्ध है, उन्हें भी यह समझ लेना चाहिए कि यह चीन में कम्यूनिस्टों की पहली विजय थी, और फिर भी वह चीनियों पर चीनियों की पहली विजय थी। यह सिद्ध करने वाली गवाही कम है, सच पूछिए तो कुछ भी नहीं है, कि सोवियत रूस का इसमें कोई भाग था, यदि यह बात न हो कि उनकी वापसी जान-बूझकर की गई थी जिससे स्थानीय या राष्ट्रीय कम्यूनिज़्म को बढ़ावा दिया जाए। प्रतीत होता था कि रूसी माउ त्से-तुंग को उसके पृथक्तावाद के कारण अस्वीकार करते थे और द्वितीय महायुद्ध में वे सदा सावधानी बर्तते हुए चीनी सरकार का प्रधान चियांग काई-शेक को स्वीकार करते रहे। बाद में जब उन्होंने देखा कि राष्ट्रवादियों का पतन अनिवार्य है तब उन्होंने आगे बढ़कर चीनी कम्यूनिस्टों का साथ दिया और इस प्रकार चीनियों को अमरीकनों से अलग करके एशिया में अपनी स्थिति पक्की की। इस षड्यन्त्र में, यदि यह षड्यन्त्र था, हम अमरीकनों ने अपने-आपको पूरी तरह झोंक दिया। हमें, जो कुछ

हो रहा था उसका कुछ ज्ञान न था और अपने अज्ञान में हम रूस की सहायता के लिए, जिसे हम तब भी अपना सम्भावित शत्रु समझते थे, भरसक सब कुछ करते रहे।

पर मैं अपनी कहानी से आगे बढ़ गई हूं निःसन्देह चीनी कम्यूनिस्ट जापान से युद्ध चाहते थे क्योंकि यद्यपि उन्होंने ज़ोर-शोर से प्रतिरोध की बातें कही थीं पर असल में उन्होंने बहुत ही कम प्रतिरोध किया और लड़ाई का सारा बोझ, कम से कम शुरू में तो निश्चय ही, चियांग काई-शेक पर पड़ा—सच पूछिए तो पर्लहार्बर से पहले तक, जबकि अमरीकन युद्ध में कूदे, ऐसी स्थिति रही। चीनी कम्यूनिस्टों को यह आशा थी कि जापानी न केवल राष्ट्रवादियों को, बल्कि पुराने परम्परागत चीन को भी नष्ट कर देंगे, कि देश में, संक्षेप में, इतना विनाश और गड़बड़ी हर जगह हो जाएगी कि कम्यूनिस्ट उस समय आगे आकर उस अराजकता में एकमात्र सम्भव संयुक्त नेतृत्व प्रस्तुत कर सकेंगे। उन्होंने यह मज़बूत जाल बुना और इसमें चियांग काई-शेक शुरू से विवश हो गया। शायद वह यह जानता था क्योंकि निश्चय ही शुरू में उसका जापान से मुकाबला आश्चर्यजनक रीति से सशक्त और सफल था। उसकी एकमात्र आशा जापान के विरुद्ध युद्ध में सफलता थी, क्योंकि यदि वह इस संघर्ष में विजयी हो जाता तो लोग, जो उत्साह-हीन और उदास हो गए थे, फिर उसके पक्ष में हो जाते। इस प्रकार जापान के मुकाबले में विजय प्राप्त करके वह न केवल जापान को पराजित करता, बल्कि उत्तर-पश्चिम में कम्यूनिस्टों को भी हरा देता। दोनों पक्ष जापान को विजय का साधन बनाकर एक-दूसरे के विरुद्ध प्रयत्न कर रहे थे। अन्तर यह था कि कम्यूनिस्ट जापान द्वारा चियांग की पराजय को अपना साधन समझते थे और चियांग के लिए यह आवश्यक था कि जापान को पराजित किया जाए। इसलिए चियांग निश्चय ही पश्चिम के साथ गठबन्धन करता, क्योंकि इस बार पश्चिम ने जापान के विरुद्ध होना था और पश्चिम की विजय में वह भी विजयी होता। १९३८ में नवम्बर के महीने में चीनी इस स्थिति में थे।

उस वर्ष उसी समय मैं स्वीडन में थी, जहां मैं साहित्य का नोबल पुरस्कार प्राप्त करने गई थी।

ऐसी यात्रा की तैयारी न केवल मेरे लिए, बल्कि हमारे बच्चों के परिवार के लिए—जो संख्या में पांच थे : सबसे बड़ा बारह का और चार बच्चे चार साल की

आयु से छोटे—बड़ी जल्दी में की गई थी। यद्यपि हमारे पास एक बहुत अच्छी नर्स और एक दृढ़ गृह-प्रबन्धक थी, पर इससे पहले मैंने बच्चों को कभी एक बार में एक या दो रात से अधिक नहीं छोड़ा था और अब लगभग एक महीने के लिए छोड़ना था। क्रिस्मस पर घर से बाहर न होने का मैं पक्का इरादा किए हुए थी और इस प्रकार सावधानी से हिसाब लगाकर हमने ऐसी योजना बनाई जिससे हम इसके लिए ठीक समय पर घर पहुंच सकें यद्यपि इससे हमें स्वीडन में केवल चार दिन मिलते थे क्योंकि कुछ दिन लंदन में लगाना तथा डेनमार्क में रुकना ज़रूरी था। यद्यपि यह इतना उल्लेखनीय अवसर था, पर एक पूरे महीने के लिए घर छोड़ना बड़ा कष्टकारक था और खास तौर से बच्चों और माता-पिता के बीच में समुद्र का व्यवधान। हम नवम्बर में एक दिन, जब कि न्यूयार्क में बादल छाए थे, नारमंडी जहाज़ पर सवार हो गए—मेरा पति, मेरी सुन्दर सौतेली पुत्री बैटी, जो तब केवल बीस साल की थी, और मैं। समुद्र पर मुझे कभी सुख नहीं अनुभव हुआ यद्यपि किनारे से मैं उसका बहुत आनन्द लेती हूं, और मैंने अशुभ आशंका से देखा कि यद्यपि अभी हम बन्दरगाह से चले भी नहीं थे पर फिर भी कुर्सियों और मेज़ों तथा भारी सामान को पहले ही रस्सियों से बांधा जा रहा है, जैसे कि मानो खलासियों ने खराब मौसम को अवश्यम्भावी माना है। बाद में मुझे पता चला कि वे केवल नारमण्डी के कारण ऐसा मानते थे, क्योंकि उसका निर्माण इतना नाज़ुक हुआ था। उसकी चौड़ाई उसकी लम्बाई के लिहाज़ से इतनी थोड़ी थी कि शान्त से शान्त समुद्र पर भी वह हिचकाले खाता था। हम जहाज़ से चल पड़े और पानी के बढ़ते हुए व्यवधान के पार उसी शाम रेडियो टेलीफोन पर अपने बच्चों की आवाज़ सुनने के चमत्कार से मुझे आराम मिला।

लंदन पहुंचने के कुछ दिनों के भीतर यह स्पष्ट हो गया कि योरुप में युद्ध जितना हम अमरीकन सोचते थे, उससे अधिक निकट आ चुका है। भविष्य-सूचक समाचार बिला शक मैं सुन चुकी थी और मैं जान गई कि यह भविष्य-सूचक है जबकि और लोग उदासीन मालूम होते थे। इसका एकमात्र कारण यह था कि मेरा जीवन क्रान्ति और युद्ध के बीच में गुज़रा है और मैं दूर से ही संघर्ष की गन्ध पकड़ सकती थी। परन्तु लन्दन में सम्भावना निश्चितता बन गई यद्यपि आराम-देह होटल गम्भीर अंग्रेज़ी ढंग से सदा की तरह सुख-सामग्री से भरा था। पिछले

युद्ध से पहले परम्परागत अंग्रेज़ी विलास-सामग्री जैसा कोई आराम नहीं था, और नये होटल चमक-दमक और चुस्ती के बावजूद वस्तुतः अच्छे लंदन के होटल की गम्भीर सम्पन्नता की बराबरी नहीं कर सकते। यहां नहाने के टब बड़े-बड़े थे, पानी के नल बड़े-बड़े थे, पानी खौल रहा था, तौलिए ऐसे मोटे थे जैसे रज़ाई और इतने बड़े थे जितनी चादर। मैं उन लोगों में से हूं जो परम्परागत अंग्रेज़ी भोजन भी पसन्द करते हैं और मैंने यह उस नवम्बर में आनन्द, उदासी और बड़ी लालसा से खाया, मानो मैं भविष्य देख रही थी। मैं निश्चय से जानती थी कि किसी दिन ऐसा गाढ़ा मछली का मांस, ऐसा भुना हुआ गाय का मांस और यार्कशायर पुडिंग नहीं मिलेगा और इसी प्रकार बहुत देर तक उबाली हुई बड़ी-बड़ी बन्दगोभियां या सूअर के गोश्त की टांगें और भूने आलू तथा गाढ़ा रसा और ट्राइफल (क्रीम या अण्डे के सफेद भाग की एक हल्की मिठाई) और सेवरी (एक सुगन्धित साग), तथा लाई (कास्टिक सोड़े का घोल) जैसी गाढ़ी चाय की प्यालियां भी नहीं रहेंगी।

कारण यह कि तब यह स्पष्ट ही था कि जर्मनी युद्ध की तैयारी कर रहा है और यहूदियों में जो समझदार थे वे देश छोड़कर जा रहे थे। फिर भी लंदन की सड़कों पर सब जगह पिछले युद्ध के अवशिष्ट चिह्न जैसे 'कहां शरण ली जाए', 'बमों से कैसे बचा जाए' आदि इंगित करने वाले साइनबोर्ड आदि मौजूद थे। अतीत का प्रभाव अभी विलीन नहीं हुआ था और भयंकर भविष्य मुंह बाए खड़ा था। कसर से कहीं अधिक निकृष्ट, कहीं अधिक दुष्ट व्यक्ति अब जर्मनी में शासन कर रहा था। चिन्ता से वायुमंडल क्षुब्ध हो रहा था। शान्ति के लिए बहुत हद तक सम्मान खोने को लोग तैयार थे। पर वे अपने सम्मान को बिल्कुल नहीं जाने देंगे, यह भी स्पष्ट था।

डेनमार्क में हालत दूसरी थी। वहां लोग जानते थे कि उनका देश छोटा है जैसा कि पहले महायुद्ध में बेलजियम रहा था। वे नई जर्मन युद्ध-मशीन के मुकाबले में खड़े रहने की आशा नहीं करते थे और यह निश्चित किया जा चुका था कि डेनमार्क मुकाबला नहीं करेगा। वह हार मान लेगा, पर टूटेगा नहीं। वह विजेताओं को आने देगा पर उन्हें कभी स्वीकार न करेगा। एकमात्र इसी तरीके से वे पूर्ण विनाश से बच सकते थे। यह डेनिश लोगों ने मुझसे कहा और यह सब विचार और आयोजन चलता रहा जबकि सुन्दर डेनिश नगर और सम्पन्न देहात सदा की

तरह स्थिर और शान्त रहे। जब मैं कुछ ही वर्ष पहले चीन लौटते हुए डेनमार्क आई थी, तब मैं फार्म देखने गई थी जिसका कि मुझे शौक है, और मुझे उनकी शांति, उनकी आयु और उनकी फल-सम्पन्नता याद थी। एक दिन मैंने एक धूप वाले तीसरे पहर एक किसान को अपने खलिहान में चित्र बनाते देखा था। वह यह चित्र लकड़ी की चीज़ों या फर्शों पर नहीं बना रहा था, बल्कि सफेद पुती दीवारों पर हरे वृक्षों, अनाज के खेतों और शान्त जलराशि के दृश्य बना रहा था। वे बड़े सच्चे चित्र थे और जब मैंने उससे पूछा कि तुम यह चित्र कनवास पर न बनाकर अपने खलिहान की दीवारों पर क्यों बना रहे हो, तब उसने उत्तर दिया :

'यह मेरी गायों के लिए है, श्रीमतीजी। लम्बी सर्दियों की ऋतु में उन्हें दीवारों की ओर देखकर गर्मियों की बात सोचना अच्छा लगता है। इससे उनका मनोरंजन होता है।'

मुझे समझ में आ गया कि ऐसे किसान अपने घरों और खलिहानों को नष्ट होने देने के बजाय कुछ देर के लिए दब जाना क्यों पसन्द करते हैं।

फिर भी उस वातावरण में मुझे घुटन महसूस हुई और मैं अपनी यात्रा का आनन्द न ले सकी। जब मुझे जर्मनी जाने के लिए एक निमन्त्रण मिला तब मैंने वह अस्वीकार कर दिया और अगले दिन कोपनहेगन के अखबार में मैंने यह खबर पढ़ी :

" पर्लबक कहती है, 'मैं ऐसे देश की यात्रा नहीं करना चाहती जिसमें मुझे आज़ादी से बोलने-सोचने की इजाज़त नहीं है।'

" 'क्या आप जर्मनी जाना पसन्द नहीं करेंगी?' हमने पूछा।

" 'अवश्य,' उन्होंने कहा, 'एक तरह से मैं यह देखना पसन्द करूंगी कि जर्मन लोग अब किस तरह रहते हैं पर मैं समझती हूं कि वे वहां मेरा स्वागत नहीं करेंगे और मैं ऐसे देश में नहीं जाना चाहती जिसमें मुझे आज़ादी से सोचने और बोलने की आशा नहीं, जैसा यहां है। मैं व्यक्ति को महत्त्व देने वाली और डेमोक्रेट हूं।'

" पर्ल एस-बक ने यह बात हल्की और मृदु आवाज़ में कही, पर फिर भी हम समझते हैं कि उनका यहां कोपनहेगन में इस बात की चर्चा करना महत्त्वपूर्ण बात है।"

कोपनहेगन में मैं चीनी मित्रों से बातचीत करके भी दुखी हुई, जो स्वयं राष्ट्रवादी और चियांग काई-शेक में निष्ठा रखने वाले होते हुए भी उसकी सरकार की बढ़ती हुई कमज़ोरी पर चिन्तित थे। मैंने अखबारों के रिपोर्टरों के अनिवार्य प्रश्नों के उत्तर अपनी निजी जानकारी के आधार पर यथासंभव ईमानदारी से दिए। मैं समझती थी कि संसार में ऐसे संकट के समय भरसक ईमानदारी न दिखाना गलत काम होगा। इसलिए जब मुझसे चीन के बारे में पूछा गया तब मैंने कहा कि मुझे वहां अनेक वर्ष तक शान्ति होने की सम्भावना नहीं दिखाई देती, शायद पचास वर्ष तक भी वास्तविक शान्ति न हो, और इस समय चीन की सबसे बड़ी आवश्यकता एक सशक्त केन्द्रीय सरकार है जो अपनी ज़िम्मेदारी समझकर काम करती हुई जनता की निष्ठा प्राप्त कर सके और कायम रख सके। नहीं, मैं यह विश्वास नहीं रखती थी कि चियांग काई-शेक ऐसी सरकार बना सकता है—उसने अपना अवसर खो दिया था। क्या चीन हमेशा जैसा गरीब था? हां, यद्यपि चीनी राजनयज्ञों और विदेशों में रहने वाले दूसरे चीनियों को देखने से देश के बारे में दूसरा प्रभाव पड़ता है, पर आम जनता हमेशा जैसी गरीब है। मैं यह नहीं कहूंगी कि सब अफसर भ्रष्ट हैं, पर अफसोस से कहना पड़ता है कि बहुत सारे भ्रष्ट हैं और कम से कम उनमें से अधिकांश को जनहित की चिन्ता नहीं है।

शायद इतनी साफ बातें कहने से बचा जा सकता था, पर मेरा कभी यह विश्वास नहीं रहा कि सत्य की उपेक्षा करना निरापद हो सकता है, और इसलिए मैंने अपनी जानकारी के अनुसार, अधिक से अधिक ईमानदारी से, जैसी कि मेरी आदत है, उत्तर दिए। परिणाम यह हुआ कि चीनी राष्ट्रवादी अफसर, जो स्वीडन में थे, नाराज़ हो गए और वे स्टाकहोम में पुरस्कार दिए जाने के अवसर पर अनुपस्थित रहे। मुझे इसका अफसोस रहा, पर शायद यह अनिवार्य था। मेरे लिए अज्ञान का दिखावा करके उनकी उपस्थिति प्राप्त करना कठिन होता। राजनीति में मेरी दिलचस्पी नहीं है और मेरी मान्यता है कि सरकारों का अस्तित्व अपनी जनता के जीवन को अच्छा बनाने के लिए है। उनके अस्तित्व के लिए और कौन-सा अच्छा कारण है?

सिन्क्लेयर लेविस ने मुझसे कहा था, 'किसीको भी अपने नोबल पुरस्कार पाने का महत्त्व मत घटाने दो। यह एक महान घटना, किसी लेखक के जीवन की सबसे बड़ी घटना है। इसके हर क्षण का आनन्द लो क्योंकि यह तुम्हारी सर्वोत्तम

स्मरणीय बात होगी।'

मैं यह सलाह लेकर स्टाकहोम गई थी और यह अच्छी और सच्ची सलाह थी। मुझे जीवन में बहुत सुख मिला है और मेरे जीवन-मार्ग में बड़ी शानदार घटनाएं आई हैं। पर घर के निरन्तर आनन्द के अतिरिक्त, १६३८ के साल में स्टाकहोम के वे चार दिन, मेरी एक ही सबसे अधिक परिपूर्ण स्मरणीय वस्तु बने रहे हैं। यह पुरस्कार, जैसा कि मैं पहले कह चुकी हूं, ऐसे समय में आया जब मुझे इसकी सबसे अधिक आवश्यकता थी। मैं किसी लेखक के जीवन के उस कठिन काल में पहुंच चुकी थी जब प्रतिक्रिया—जो अमरीकन जनता ऐसे हर लेखक पर सदा डालती है जिसको उसने खोज लिया है और प्रशंसित किया है—आरम्भ हो चुकी थी। क्योंकि प्रशंसा सदा अतिमात्र और विवेकहीन होती है, इसलिए विरोधी आलोचना और अवमान भी अतिमात्र और विवेकहीन होते हैं। प्रशंसा से मेरा दिमाग नहीं बढ़ गया था अपितु इसकी अधिकता से केवल मेरा मनोरंजन और हृदय-स्पर्श ही हुआ था पर अनुचित आलोचना के गंवारपन से—जो एक तरह का पत्थर फेंकना था जो एक बार शुरू हो जाने पर देखा-देखी चलता जाता था—मेरा आत्मविश्वास कुछ समय के लिए नष्ट हो गया। स्वीडिश जनता के प्रेम और उत्साह तथा उनकी गरिमा और शान्ति ने मुझे फिर स्वस्थचित्त कर दिया। खुशामद के शब्दों से नहीं बल्कि आदर और प्यार से ग्रहण किया जाना मुझे अच्छा लगा है। वह स्मृति में संजोए हुए हूं।

नवम्बर में स्टाकहोम में प्रायः अंधेरा होता है। दुपहर के समय सूर्य मुश्किल से क्षितिज के पास आता है। पर शहर रोशनी से चमचमा रहा था। गाड़ी पर हमारी अगवानी की गई और हमें ग्रांड होटल ले जाया गया और वहां शाही कमरे दिए गए जो मनोरम और आरामदेह थे। सेवा में किसी तरह की त्रुटि नहीं थी और हमारे निवास को आनन्ददायक बनाने के लिए सब कुछ किया गया था। उस वर्ष नोबल पुरस्कार पाने वाले केवल दो व्यक्ति थे, और दूसरे व्यक्ति एक भद्र इटालियन वैज्ञानिक थे जिनका नाम एनरिको फर्मी था। मैंने उनका नाम पहले विशेष नहीं सुना था, पर उनसे और उनकी सुन्दर पत्नी तथा दो काली आंखों वाले बच्चों से बड़ा आनन्द मिला। बाद में वे अमरीका आए और आज परमाणु बम को उन्नत करने में उन्होंने जो काम किया है उसके कारण हर कोई उनका नाम जानता है; पर उस समय मैं यह कल्पना भी नहीं कर सकती थी कि उनका

इस घातक हथियार से कोई सम्बन्ध था। परमाणु का भेदन? उस समय मेरे लिए इसका कुछ भी अर्थ नहीं था।

जब हम अपने कमरों में जम गए तब हमारे पास एक सुन्दर नवयुवक, जो एक स्वीडिश सहचारी था, आया और वह अपने साथ हमारा कार्यक्रम लाया। उसने हमें उस विनयाचार की ठीक-ठीक हिदायत की जिसकी वहां हमसे आशा की जाएगी। मैंने देखा कि उसे मेरे बारे में कुछ अनिश्चय था और उसे यह ठीक-ठीक समझ में नहीं आ रहा था कि एक अमरीकन, जो एक गणराज्य की नागरिक है, एक औपचारिक स्थिति में कैसा व्यवहार करेगी—कारण यह कि स्वीडन में परम्परा के ढांचे में अधिक से अधिक आधुनिकता का बड़ा आनन्ददायक मेल हुआ है और मैंने इस अत्यधिक सभ्य राष्ट्र के दोनों रूपों का आनन्द लिया।

'कृपा करके यह बताइए,' मेरे युवक निर्देशक ने कुछ चिन्तित होकर अपनी त्रुटिहीन पर स्वदेशी उच्चारण वाली अंग्रेज़ी में कहा, 'क्या यह सम्भव है कि आप पुरस्कार लेने के बाद हमारे राजा की ओर बिना पीठ घुमाए पीछे हटने पर आपत्ति करेंगी? ऐसे इस एक अवसर पर एक सोवियत नागरिक ने ऐसा नहीं किया था।'

मैंने उसे यह विश्वास दिलाया कि निःसन्देह मैं राजा की ओर पीठ नहीं करूंगी। मेरे इस निश्चय पर उसने चैन की सांस ली।

इसके बाद वह मुझे अन्य हिदायतें देता रहा और उसने एक टाइप किया हुआ कागज़ ऊंची आवाज़ से पढ़ा और अगले चार दिन के लिए आयोजित कार्य-क्रम का प्रत्येक विवरण समझाता रहा। मैं पूरे ध्यान से उसकी बात सुनती रही और मेरा यह निश्चय था कि मैं एक अमरीकन और एक लेखिका के नाते अपने को अच्छे से अच्छे रूप में पेश करूं।

उस ध्यान से सुनने का परिणाम यह है कि मुझे उन दिनों की प्रक्रिया का शायद अनावश्यक विवरण याद है। फिर भी सबसे अधिक स्मरणीय समय निःसन्देह वह था जब हमारे स्टाकहोम पहुंचने के अगले दिन शाम को पुरस्कार दिए गए।

जब मैं उस विशाल कन्सर्ट हाल में घुसी तब बड़ा महान् दृश्य था। झण्डों और सदाबहारों से अलंकृत लम्बे-चौड़े मंच पर अकादमी के गरिमावान् सदस्य अर्ध-वृत्ताकार बैठे थे। भीड़ भरे हाल की सामने की कतारों में रत्नों और आभूषणों से सजा राजपरिवार राजोचित शान्ति से इन्तज़ार कर रहा था जबकि दीर्घाओं में तुरही बज रही थी।

मै सामने की बाई कतार के सिरे पर बैठी थी जहां से मै सारी सभा को देख सकती थी और आरम्भिक भाषणो को, जो स्वीडश भाषा में हुए, न समझने के कारण मुझे, जो कुछ मैने देखा उसपर शान्ति से विचार करने के लिए और उस समय के संगीत का आनन्द लेने के लिए समय मिल गया। वह दृश्य मै कभी नही भूलूगी। पर फिर भी जो क्षण मुझे स्पष्ट रूप मे याद है, वह क्षण है जब आध घटे बाद मै पुरस्कार लेने के लिए गरिमाशाली और वृद्ध राजा के सामने थी और घुटनो के बल उनके आगे झुकने के बाद मैने पूरी तरह उनके चेहरे पर नज़र डाली। उस समय मुझे राजा का चेहरा नही बल्कि बहुत पहले मर चुके अपने वृद्ध पिता का चेहरा दिखाई दिया और सब कुछ मै भूल गई। इस बात पर विश्वास नही होता कि दो आदमी इतने एक जैसे दिखाई दे सकते है। दीर्घ क्षीण आकृति, पतला चेहरा और मजबूत जबडा, सफेद भौहो वाली नीली आखे होठो की आकृति के अनुरूप भूरी सफेद मूछे और वह हाथ भी जिसमे वह बडा लिफाफा था, मेरे पिता के जैसे थे। मै इतनी चौकी थी कि 'धन्यवाद राजन्' भी मुश्किल से कह सकी और मै उनकी ओर पीठ न करने के अपने वचन को भूलते-भूलते रह गई। मै भूली नही, पर क्षणिक गडबडझाले मे मै सीढियो पर चढी और फिर पीछे हटती हुई विस्तृत मच को पार करके अपने स्थान पर गई। यह सादृश्य मै यहा सार्वजनिक रूप से पहली बार बता रही हू, पर जब हम फिर घर पहुचे तब मैने अपने पिता का चित्र निकाला और वह अपने पति को दिखाया और उसे भी वह सादृश्य वैसा स्पष्ट दिखाई दिया जैसा मुझे दिखाई दिया था। नि सदेह यह निरा आकस्मिक सयोग था, या शायद भूगोल पर आधारित कोई कारण हो, क्योकि भूदृश्य और जलवायु से एक ही भूखड पर रहने वाले मनुष्यो मे कुछ सादृश्य पैदा हो जाता है, और यह सच है कि मेरे अपने पैतृक पूर्वज दो सौ वर्ष पूर्व जर्मनी के उसी भाग से आए थे जिससे राजा का परिवार आया था क्योकि स्वीडन का वर्तमान राज-परिवार प्राचीन नही था। फिर भी मेरे लिए उस महान् क्षण मे अपने पिता को जीवित रूप मे अपने निकट अनुभव करना अजीब और अर्थपूर्ण था।

इसके बाद मुझे उस भोज की याद है जो उस रात युवराज ने दिया था। वह लम्बे-चौड़े नगरपालिका-भवन मे हुआ था जो फूलो और बढ़िया चादी के पात्रों से बडा आनन्ददायक हो रहा था। मैने हर चीज का आनन्द लिया और सबसे अधिक आनन्द मुझे युवराज से बात करके मिला, जिन्हे मैने देखा कि चीन के बारे

में काफी अधिक जानकारी थी और जिनके पास चीनी कला-वस्तुओं का एक संग्रह भी था। हमने उस देश के बारे में विस्तार से बातचीत की, इतनी अधिक कि मुझे कुछ भी याद नहीं कि मैंने क्या खाया और इसके बाद हमने भविष्य के बारे में बातचीत की जिसमें वे निःसन्देह बहुत संभलकर बोले, पर इस समय तक मैं स्टाकहोम में इतने काफी लोगों की बातचीत सुन चुकी थी कि मुझे यह स्पष्ट हो गया था कि स्वीडन में संचित होता हुआ संकल्प उससे भिन्न था जो मुझे डेनमार्क में दिखाई दिया था। स्वीडन नया युद्ध शुरू होने पर तटस्थ रहने के निश्चय पर पूरी तरह नहीं पहुंचा था। वहां कुछ लोग यह महसूस करते थे कि जर्मनी के पक्ष में रहना समझदारी होगी और अन्य लोग यह समझते थे कि ऐसी निष्ठा असम्भव है। फैसला हवा में झूल रहा था और क्योंकि मैं बड़ी गहराई से इस बात को महत्त्वपूर्ण समझती थी कि अमरीकन होने के नाते मुझे मानवीय आज़ादी के पक्ष में भरसक पूरे ज़ोर से बोलना चाहिए, इसलिए जब भोज के बाद संक्षिप्त भाषण देने की मेरी बारी आई तो मैं उठकर एक छोटे डेस्क के पीछे खड़ी हो गई और मैंने नोबल पुरस्कार स्वीकार करने के बारे में एक छोटा-सा भाषण दिया। उस भाषण का मेरे सिवाय और किसीके लिए कुछ भी महत्त्व नहीं, फिर भी भाषण तो देना था, और वह यह है, जो मेरे सुरक्षित कागज़ों में मौजूद है।

राजन्यवर्य !

देवियो और सज्जनो !

मेरे बारे में जो कहा गया है और मुझे जो कुछ दिया गया है उसपर अपनी सारी प्रशंसात्मक भावनाओं को प्रकट करना मेरे लिए सम्भव नहीं। अपनी ओर से मैं अच्छी तरह यह जानती हुई उसे स्वीकार करती हूं कि मुझे जो कुछ मिला है, वह उससे बहुत अधिक है जो मैं अपनी पुस्तकों के द्वारा दे सकी हूं। मैं यही आशा कर सकती हूं कि वे अनेक पुस्तकें, जो मैं भविष्य में लिखूंगी, कुछ सीमा तक मेरे इस समय के स्वीकार की अपेक्षा अधिक अच्छा स्वीकार होंगी, और सच पूछें तो मैं इसे उसी भावना से स्वीकार कर सकती हूं जिस भावना से यह पुरस्कार शुरू में दिया गया था—कि यह किए गए कार्य के लिए उतना नहीं है जितना भविष्य के लिए। मैं समझती हूं कि जो कुछ मैं भविष्य में लिखूंगी, उसे आज के दिन की स्मृति से लाभ और शक्ति पहुंचेगी।

मैं अपने देश संयुक्तराज्य अमरीका की ओर से भी यह स्वीकार करती हूं। हमारा राष्ट्र अभी छोटा ही है और हम जानते हैं कि हम अभी अपनी शक्तियों की पूर्णता पर नहीं पहुंचे। यह पुरस्कार जो एक अमरीकन को दिया गया है, न केवल एक, बल्कि अमरीकन लेखकों के सारे समुदाय को बल प्रदान करता है, जिन्हें ऐसी उदार गुण-ग्राहकता से बढ़ावा और प्रोत्साहन मिला है और मैं यह भी कहना चाहती हूं कि मेरे देश में यह बात महत्वपूर्ण है कि यह पुरस्कार एक स्त्री को दिया गया है। आप, जिन्होंने पहले अपने ही देश की सेलमा लेगरलोफ को पुरस्कृत किया है और जो बहुत समय से अन्य क्षेत्रों में स्त्रियों को पुरस्कृत करते रहे हैं, शायद पूरी तरह यह नहीं समझ सकते कि अनेक देशों में, और यहां तक कि मेरे देश में भी, इसका क्या अर्थ है, कि इस समय यहां खड़ी हुई व्यक्ति एक स्त्री है। पर मैं केवल लेखकों या स्त्रियों की ओर से नहीं बल्कि सब अमरीकनों की ओर से कह रही हूं क्योंकि इस अवसर के सम्मान में हम सब हिस्सेदार हैं।

मैं अपने को सच्चे रूप में पेश नहीं कर सकती यदि मैं, अपने ही बिल्कुल गैर-सरकारी ढंग से, चीन की जनता की भी चर्चा न करूं जहां का जीवन इतने वर्ष मेरा भी जीवन रहा है, और सच पूछिए तो जहां का जीवन सदा मेरे जीवन का भाग रहेगा। मेरे अपने देश और मेरे पालन-पोषण के देश चीन के मन अनेक दृष्टियों से एक जैसे हैं, पर सबसे बड़ी बात यह है कि वे हमारे स्वाधीनता के साझे प्रेम में एक जैसे हैं और आज यह बात हमेशा से अधिक सत्य है जब कि चीन का सारा जीवन-प्राण महानतम संघर्ष—स्वाधीनता के संघर्ष—में लगा है। चीन को मैंने इतनी प्रशंसा की दृष्टि से कभी नहीं देखा जितनी से आज देख रही हूं। जब मैं उसे उसकी स्वाधीनता को खतरा पहुंचाने वाले दुश्मन के विरुद्ध अपनी जनता को संगठित करता देखती हूं। स्वाधीनता के इस दृढ़ संकल्प को देखकर—और स्वाधीनता बड़े गहरे अर्थ में उसकी प्रकृति का परमावश्यक गुण है—मैं समझती हूं कि वह अजेय है। स्वाधीनता आज मानव का सबसे अधिक कीमती धन है। स्वीडन और अमरीका को यह अब भी हासिल है। मेरा देश तरुण है—पर यह आपका, आपके प्राचीन और स्वाधीन देश का, एक विशेष साथीपन से अभिनन्दन करता है।

बाद में मेरे भाषण के बाद डा० फर्मी का भाषण हो जाने पर हाल के नीचे

बड़े भारी आंगन में गाने की ध्वनि शुरू हो जाने से हमें पता चल गया कि शाम का नाच शुरू होने वाला है। और छात्र विश्वविद्यालय से पहले ही आने लगे थे। मेरी सुन्दर सौतेली लड़की को युवराज के पुत्र ने अपने साथ नाच का आरम्भ करने के लिए निमन्त्रित किया था। और अपनी चमकती आंखों से अपने सफेद गाउन में एक छोटी मल्लाह-कन्या की तरह वह उसकी बांहों का सहारा लिए चौड़ी सीढ़ी पर से तैरती हुई सी नीचे चली गई और हम ऊपर छज्जे पर खड़े हो गए तथा चहल-पहल और यौवन से पूरित सुन्दर वे दृश्य देखते रहे।

व्यस्त सुखद दिन तेज़ी से एक के बाद दूसरा आते गए और अगले दिन की मुख्य घटना महल में राजा के साथ भोज था। हमारे पूरे कार्यक्रम के बीच के खाली समयों में नियमित रूप से लोगों से मिलना-जुलना तथा अखबारों से भेंट होती थी। इन दोनों चीजों से मुझे स्वीडन के बारे में और इसके विलक्षण लोगों के बारे में और जानकारी मिली। इस प्रकार बाद में स्वीडन को समझने के लिए एक पृष्ठभूमि हो गई। सौ वर्ष से कुछ अधिक पहले स्वीडन को––जो अपने अनेक युद्धों और पड़ौसी राष्ट्रों के साथ संघर्षों से कमज़ोर और क्षीण हो गया था––अपनी बुरी अवस्था का सामना करना पड़ा था और फैसला करना पड़ा था कि वह सैनिक नेताओं द्वारा, जिनकी जीविका ही युद्ध था, जनता पर डाले गए युद्ध के बोझों से स्वयं को नष्ट हो जाने देगा, अथवा इसके विपरीत, नेताओं का विरोध करेगा और सब युद्धों के समय तटस्थता की अपरिवर्तनीय नीति को आधार बनाकर शान्ति के जीवन का निर्माण करेगा। उन्होंने शान्ति के पक्ष में फैसला किया और उस फैसले के बाद की दशाब्दियों में––यह फैसला देर-सवेर हर राष्ट्र को करना पड़ता है क्योंकि इसके बिना उसके लोगों का जीवन नहीं चल सकता––स्वीडन की समझ और समृद्धि निरन्तर बढ़ती गई है। हर समय युद्ध के विप्लव में पड़े रहने वाले राष्ट्र में न समझदारी सम्भव है और न स्थायी समृद्धि।

ऐसे अनेक विचार अपने मन में करती हुई मैं उस दिन शाम को महल की ओर चली और उसके प्रवेशद्वार पर मैंने स्कूल के बहुत-से बच्चों को अपनी प्रतीक्षा करते देखा। मैं उनसे मिलने और बातचीत करने से अपने को न रोक सकी। यहां तक कि अन्त में द्वार के सन्तरी मुझसे कुछ अधीर हो गए और उन्होंने मुझसे आगे बढ़ने का अनुरोध किया। इसलिए मैं चौड़ी चक्करदार सीढ़ी पर चढ़कर उन कमरों में गई जिनमें मुझे डा० फर्मी के साथ उन दो व्यक्तियों की प्रतीक्षा करनी थी जिन्होंने

हमें भोज-भवन में पहुंचाना था।

उस भोज-भवन के बारे में मेरी स्मृति स्पष्ट नहीं है और मैं समझती हूं कि इसका आंशिक कारण यह है कि मुझे वैभव और भव्यता को देखने का अभ्यास पड़ चुका था। प्रत्येक कुर्सी के पीछे एक परोसने वाला था और मेरे सामने मेज़ के दूसरी ओर राजा, दो बड़ी आयु की राजकुमारियों के बीच बैठा था जो उसके निकट बैठने वाली काफी ऊंची पदमर्यादा वाली एकमात्र महिलाएं थीं। पर मेरी स्मृति अस्पष्ट होने का कारण यह भी है कि मैं राजा के भाई प्रिन्स विलियम के पास बैठी थी जो खोजी तथा बड़े शिकार खेलने वाला बहुदृष्ट और बहुश्रुत व्यक्ति था। उसकी बातचीत से और विशेष रूप से अफ्रीका में उसके पिग्मियों (नेग्रीटो आदि बौनी जातियों) को देखने के वृत्तान्त से मुग्ध हो गई। एक के बाद दूसरा स्वादिष्ट भोजन मेरे आगे रखा गया। पीस डी रेज़िस्टैन्स रेनडीयर का गोश्त था, मुझे याद है, और मुझे पता न चला कि एकाएक भोजन समाप्त हो गया, अर्थात् राजा उठ गया। सारी असाधारण भोज्य सामग्री पैंतालीस मिनट में परोसी गई थी! कारण? दरबारी मर्यादा का तकाज़ा है कि जब राजा कोई भोजन समाप्त कर ले तो उसकी प्लेट के साथ सब प्लेटें हटा दी जाती हैं। मेरा ख्याल है कि कुछ भोजन मैंने चखे भी नहीं क्योंकि अपना कांटा उठाने से पहले मैंने देखा कि मेरी प्लेट जा चुकी है। दरबार की एक महिला ने बाद में मुझे बताया कि राजा आम तौर से दोनों राजकुमारियों से, जिन्हें वह अच्छी तरह जानता है और जिनके बीच में ऐसे अनेक अवसरों पर उसे बैठना पड़ता है, प्रायः अधिक बातचीत नहीं करता। इसलिए बातचीत न करने के कारण उसकी चाल तेज़ थी और इसलिए वह बढ़िया भोज जल्दी समाप्त हो गया।

इसके बाद स्वागत-कक्ष में हम सब तब तक खड़े रहे जब तक राजा न बैठ गया और मैंने एक हृष्ट-पुष्ट महिला को जो मेरे निकट बैठी थी आह भरकर यह फुसफुसाते हुए सुना, 'सचमुच ऐसा लगता है मानो हमारा प्यारा राजा हर साल अधिक ऊंचा हो जाना पसन्द करता है।'

परन्तु अन्त में उसने मुझे बुलवाया, जैसा कि मुझसे कहा गया था कि वह बुलवाएगा, और स्वयं एक कोच पर बैठकर उसने मुझे अपने पास बैठने के लिए कहा, और फिर हर कोई बैठ सकता था। मैं चैन महसूस कर रही थी क्योंकि नियम यह है कि राजा को ही बातचीत शुरू करनी चाहिए और इस बार ज़िम्मेदारी मझपर

नहीं थी। इसी बीच उसे एक सोने के प्याले में और मुझे पोर्सलेन के प्याले में कॉफी दी गई। उसने चीनी हिलाकर मिलाई और चुप ही बना रहा, और मुझे फिर यह देखने का समय मिला कि उसका पार्श्व-दृश्य भी किस प्रकार बिल्कुल मेरे पिता से मिलता-जुलता था, पर इस बात की चर्चा करना उचित न होता और इसलिए मैंने इसकी चर्चा नहीं की। थोड़ी देर चीनी हिलाने और चुस्कियां लेने के बाद वह बात-चीत करने लगा और उसने मुझसे कुछ सवाल पूछे जो मुझे याद नहीं हैं। जो बात मुझे याद है वह यह है कि वह एकाएक आगे को झुका, उसकी सफेद भौंहों वाली नीली आंखों में चपलता दिखाई दी और स्नेहपूर्वक तथा कुछ-कुछ व्यंग्य से कमरे में चारों ओर नज़र डालकर देखते हुए उसने मुझे बताया कि किस तरह अनेक वार वह राजा होने से ऊब गया है। राजा को कितनी कम आज़ादी होती है। किस प्रकार उसे न केवल राज्य की भारी ज़िम्मेदारियां उठानी पड़ती हैं, बल्कि साव-धान व्यक्तिगत आचरण का बोझ भी उठाना पड़ता है ताकि उसके किसी प्रजा-जन की भावनाओं को चोट न पहुंचे। पर उसने मुझे बताया और उसकी नीली आंखें अब भी चमक रही थीं कि वह साल में एक बार राजा के कार्य से छुट्टी मनाता है, उस समय अज्ञात वेश में और केवल श्री जी० नाम रखकर वह रिवियेरा या जहां इच्छा हो वहां चला जाता है और छुट्टी मनाता है। उस समय वह बिल्कुल भी राजा नहीं रहता बल्कि एक खुशमिज़ाज बूढ़ा आदमी होता है और टेनिस तथा दूसरे खेलों का आनन्द लेता है। उस समय राज्य-कार्य उसका पुत्र युवराज संभा-लता है। उसने मुझसे कहा कि मुझे टेनिस का शौक है, और फ्रेंच चैम्पियन सुज़ेन लेंगलेन के साथ खेले हुए अपने खेल का आनन्द से वर्णन किया। जब उसने सुज़ेन लेंगलेन को सर्विस दी, तब वह रेखा पर खड़ा था और सुज़ेन ने नेट के दूसरी ओर से पुकारकर उससे कहा, 'आपको थोड़ा-सा और बाईं ओर (वाम पक्ष की ओर) हो जाना चाहिए राजन्, जिसपर उसने तुरन्त जवाब दिया, 'आह, यही बात मेरे मन्त्री रोज़ मुझसे कहते रहते हैं।'

थोड़ी देर बाद वह उठ खड़ा हुआ, हम सब भी खड़े हो गए और शाम का कार्यक्रम समाप्त हुआ।

अगले दिन मैं कुछ डर रही थी, क्योंकि प्रथा यह थी कि नोबल पुरस्कार पाने वाले स्वीडिश अकादमी में, जो विद्वानों की विशिष्ट संस्था थी, भाषण दिया करते थे। उनके सामने रखने लायक मैं क्या बात जानती थी ? तब तक मैं अमरीका

में काफी दिन रहकर यह समझ चुकी थी कि मुझे अपने देशवासियों के बारे में बहुत थोड़ी जानकारी है और अपने बिना ढर्रे के समाज में यह पहचानने में कि हम जो कुछ अनुभव करते, कहते तथा करते हैं उनके पीछे कौन-से कारण हैं, वर्षों रहना और ध्यान से देखना होगा। इसके अतिरिक्त मुझे मेरा अज्ञान बहुत बार स्मरण कराया गया था। जब 'दि गुड अर्थ' को पुलिट्ज़र पुरस्कार मिला था, तब भी कुछ आलोचकों ने यह आपत्ति उठाई थी कि इस तरह का अमरीकन पुरस्कार ऐसी पुस्तक पर दिया जाए जो चीनी किसानों के बारे में है और एक स्त्री द्वारा लिखी गई और उससे भी बुरी बात यह है कि ऐसी स्त्री द्वारा, जो अपने देश में कभी नहीं रही।

इसलिए स्वीडिश अकादमी के सामने मेरा भाषण एक ऐसे विषय पर था जिसे मैं अच्छी तरह जानती थी और जिसके बारे में अधिकतर पश्चिमवासी बहुत ही थोड़ा जानते थे। मेरे भाषण का शीर्षक था 'दि चाइनीज़ नॉवल' (चीनी उपन्यास) और यह भाषण बाद में इसी नाम की एक छोटी-सी पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुआ।

उस समय के बाद से सुन्दर स्टाकहोम में अपने शेष निवास तक की घटनाएं शुद्ध आनन्द थीं, जिनका बिना ज़िम्मेदारी के आनन्द ही उठाना था! परन्तु मुझे यह उल्लेख अवश्य करना चाहिए कि अपने स्वीडिश प्रकाशक श्री बोनियेर द्वारा दिए एक भोज में मैं सेलमा लेगरलोफ से मिली जो एक महान् स्त्री और लेखिका थी और जिसकी पुस्तकें मुझे बहुत पसन्द थीं। वह बहुत बूढ़ी हो चुकी थी, पर उसका मन और वाणी अब भी काफी सशक्त थे, किंतु रहन-सहन में वह सादी और विनीत थी, और अपनी सलेटी रंग की रेशमी पोशाक तथा बैंगनी मखमल के रूमाल से बड़ी सुन्दर लग रही थी। उसने मुझे बताया कि मेरे माता और पिता के दो जीवनचरितों ने उसे उस वर्ष नोबल पुरस्कार के निर्णय में मेरे पक्ष में मत देने के लिए प्रेरित किया और यह बात सुनकर मुझे सचमुच ख़ुशी हुई। मुझे यह सोच-कर अच्छा लगता है कि मेरे माता-पिता के खरे और मौलिक जीवन स्टाकहोम के उन दिनों के हिस्से था, जैसे कि वे सब वर्षों में मेरे हिस्से बनकर रहे।

शायद इस स्थान पर मुझे अपना थोड़ा-सा मनोरंजन पाठकों को भी प्राप्त कराना चाहिए। जब अमरीका में नोबल पुरस्कार का पहले-पहल ऐलान किया गया, तब गलती से यह समझ लिया गया कि यह केवल 'दि गुड अर्थ' पर

दिया गया है, यह बात सत्य नहीं थी। यह मेरी समस्त रचनाओं (दि होल बॉडी ऑफ माई वर्क) पर मिलाकर दिया गया था, जिनमें मुख्यतः उस समय मेरे चीनी उपन्यास और मेरे जीवनचरित्र ही थे। मेरे अमरीकन प्रकाशक ने उस गलती को सुधारा क्योंकि पुस्तक-विक्रेताओं के आर्डर एक पुस्तक के लिए आने लगे थे जो मेरी लिखी हुई समझ ली गई थी जिसका नाम था 'दि बॉडी ऑफ हर वर्क'।

१२ दिसम्बर के सवेरे, जिससे अगले दिन हमें स्टाकहोम से रवाना होना था, एक मृदु पूर्व-चेतावनी मिल जाने के कारण मैं जल्दी उठी और अपना ड्रेसिंग गाउन लपेटकर मैं फिर एक अतिथि की अगवानी करने के लिए बिस्तर पर चली गई। आठ बजे दरवाज़ा खुला और एक सुन्दर लड़की अन्दर आई जिसके सिर पर जली हुई मोमबत्तियों का मुकुट था और जिसके हाथों में कॉफी के प्यालों वाली चांदी की ट्रे थी। यह शान से धीरे-धीरे कदम रखती हुई तथा, 'सान्ता लूसिया' गाती हुई आई। मेरा ख्याल है कि स्वीडन के हर घर में ऐसा ही दृश्य मौजूद था और सब जगह लूसिया सबसे छोटी लड़की या बहन होती थी। इस प्रकार सान्ता लूसिया उत्सव या दीपक उत्सव आरम्भ हुआ जिसका सर्दियों में अंधेरे से घिरे रहने वाले देश में इतना अधिक महत्त्व था। उस दिन सूर्य क्षितिज पर अपने निम्नतम विन्दु पर पहुंच जाता है और उसके बाद प्रकाश बढ़ने लगता है। सारे नगर की ओर से एक लूसिया चुनने का भी रिवाज है और उस साल १९३८ में इनग्रिड लोहमैन ने, जो एक फर्नीचर की दुकान में कर्मचारी थी, यह इनाम जीता था। शाम को यह उत्सव मनाने के लिए और रानी को मुकुट पहनाने के लिए नगरपालिका-भवन में बड़ा भारी भोज था जिसमें मुझे भी निमन्त्रित किया गया था।

मुझे इससे पहले वाले राजकीय उत्सवों से इसका वैषम्य बड़ा मोहक लगा। लम्बा-चौड़ा हाल, सादगी से रक्खी हुई मेज़ों के चारों ओर, जिनपर हमने भोजन किया, लोगों से खचाखच भरा था। सुन्दर रानी को मुकुट पहनाया गया और मज़ेदार गड़बड़झाले में संगीत तथा हंसी-मखौल और भाषण होते रहे और मैंने एक दूसरा स्वीडन देखा जो जनता का स्वीडन था, बड़ा आज़ाद और मौजी तथा विनोदी। मुझे वह पसन्द आया और शाम हो जाने पर मैंने अनिच्छा से वहां से विदा ली।

अगले दिन बड़े सवेरे हम उस गाड़ी पर चढ़ गए जो हमें फिर समुद्र तक पहुंचाती थी और स्टेशन पर अमरीकनों का एक समूह देखकर हृदय द्रवित हो गया।

वे हमें विदा करने आए थे और अभिवादन तथा हाथ-मिलाई के बाद जब ट्रेन चलने लगी तब वे गाने लगे और उनकी वाणियों की मिलकर आती हुई ध्वनि हमारे पीछे-पीछे तैरती आती रही।

> घर—बन के सिरे पर घर
> जहां बारहसिंगे और हिरन खेलते हैं;
> जहां कभी नहीं सुनाई देता
> कोई दिल गिराने वाला शब्द,
> और आसमान मेघाच्छन्न नहीं रहते सारे दिन।

स्वीडन के नीले उत्तरी आसमान के नीचे हमारी चाल तेज़ हो गई और घर की ओर जाते हुए मेरे हृदय में यह घूमती हुई धुन बस गई।

घर आना सबसे अच्छा था। पहाड़ी पर प्यारे मकान को देखकर, जबकि हम पुल पार करके गली से आगे बढ़े, दिल की धड़कन तेज हो गई। मेरे मन में कभी भी यह विचार क्यों आया कि मेरे अपने देश में मेरी कोई जड़ें नहीं थीं? संसार के और किसी भी स्थान की अपेक्षा यहां मेरी जड़ें अधिक गहरी जा चुकी हैं और अब वे किसी भी कारण से नहीं उखड़ेंगी। हम अब गली के सिरे पर आ गये थे और बड़ा लाल खलिहान तथा विशालकाय पत्थर का मकान सामने खड़ा था। क्रिस्मस की मालाएं दरवाज़ों और खिड़कियों पर लटक रही थीं। लाल कोट और मोज़े-जूते पहने हुए चार छोटी-छोटी आकृतियां बरफ से ढके खेतों पर दौड़ती हुई हमसे मिलने के लिए आई और दिल रुक गया। आलिंगन और चुम्बन तथा विस्मय के उद्गार, और एक महीने में ही चारों कितने बड़े हो गए थे, और उनके गाल कैसे गुलाब-से और आंखें कैसी चमकीली थीं! हां, घर लौटना सबसे अच्छा था जो हर यात्रा का सुखदायक अन्त होता था।

फिर भी, एक स्मरणीय वर्ष के क्रिस्मस के दिनों में घर और परिवार की प्रसन्नता और शान्ति के होते हुए भी मुझे अपनी दुनिया के दूसरी ओर एशिया में जो कुछ हो रहा था, उसका बड़ा ध्यान था जैसा कि सदा रहेगा। युद्ध पूरी तरह से शुरू हो चुका था और इनके मुकाबले में पहले की मुठभेड़ें केवल मामूली झड़पें थीं। जापानी सेनाओं ने पीकिंग के पास मार्कोपोलो पुल पर हमला किया। राष्ट्र-वादी सेनाओं ने, जिन्होंने अपनी शक्ति शांगहाई के चारों ओर और वहां हो रहे

जापानी आक्रमणों पर केन्द्रित कर रक्खी थी, संभावित से अधिकशक्ति से मुकाबला किया, परन्तु कम्युनिस्टों ने अब भी प्रायः कुछ नहीं किया। अकेले राष्ट्रवादियों को सारे १६३६ में प्रतिरोध जारी रखना पड़ा पर वे सारे रास्ते पर जमे रहने में असफल रहे। नानकिंग १६३७ में निकल गया था और सरकार यांगत्से नदी के साथ-साथ ऊपर को पीछे हटती हुई हैंको तक आ गई थी और वह नगर भी १६३८ में हाथ से निकल गया। सच्ची बात तो यह है कि सारा समुद्र-तट बड़ी जल्दी हाथ से निकल गया, जिससे वही बात सिद्ध हुई जिसका हमें भय था कि चियांग काई-शेक का जनता पर जो प्रभाव था, उसकी जड़ें नहीं थीं। इस प्रकार देश का सबसे अधिक समृद्ध और सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण हिस्सा, अर्थात् बड़े नगरों का औद्योगिक क्षेत्र और नदी के तटवर्ती उपजाऊ मैदान दुश्मन के हाथ में पड़ गए, और राष्ट्रवादी उस पर्वतीय पश्चिम चीन के प्राचीन प्रदेशों में चले गए जो आधुनिक जीवन से अछूते थे। सरकार अन्त में चुंगकिंग में जम गई और युद्ध के सारे समय वह वहीं रही तथा विश्वविद्यालयों ने भी सरकार का अनुसरण किया। अब राष्ट्रवादी दल दो गुटों में बंट गया था। एक इस पक्ष में था कि जापानियों का मुकाबला जारी रक्खा जाए, चाहे केवल गुरिल्ला तरीके ही अपनाए जाएं, जैसे कि चीनी कम्यूनिस्ट जापान के निकट आने पर उत्तर में प्रयोग कर रहे थे, और दूसरा गुट समझौते के पक्ष में था। चियांग काई-शेक को इस बात का सम्मान मिलना चाहिए कि उसने विदेशी दुश्मन से उसी प्रकार कोई भी समझौता करने से इन्कार कर दिया जैसे कम्यूनिज़्म से कर दिया था। उसने अपनी प्रतीक्षा करने की नीति जारी रखी, क्योंकि उसे अब भी आशा थी कि विश्वव्यापी युद्ध में अमरीका को इस बार जापान के विरुद्ध गहरा उलझना होगा और विश्वव्यापी युद्ध में चीन विजेता राष्ट्रों के पक्ष में सिद्ध होगा। उसे इस बात में सन्देह नहीं था कि अमरीका और ब्रिटेन का गठबन्धन अजेय होगा।

जिस दिन यूरोप में युद्ध शुरू हुआ, वह मुझे कितनी अच्छी तरह याद है—हमने उन गर्मियों में मार्था के वाइनयार्ड में एक मकान ले लिया था जो एक आरामदेह मकान था और खाड़ी पर कैथरीन कारनेल के सुन्दर मकान के निकट था। पानी हमारे बच्चों के लिए आदर्श स्थिति में था—उथला, गर्म और स्वच्छ, और वे सारे दिन उसमें लुढ़कते-पुड़कते मौज करते थे। हम स्वयं काम करने और खेलने में दिन बिताते थे। मेरा पति लिन यू तांग के उच्च कोटि के उपन्यास 'मोमेन्ट इन

पीकिंग' को सम्पादित करने के ग्रानन्ददायक किन्तु कठिन काम में लगा रहता था ग्रौर मैं ग्रपने ही उपन्यास 'ग्रदर गॉड्स' में व्यस्त रहती थी, परन्तु एक दिन सवेरे जब मैंने ग्रपने-ग्रापको काम करने में ग्रसमर्थ पाया ग्रौर शायद युद्ध के पूर्वज्ञान से मैं ग्रकारण परेशान थी, तब मैं ग्रौर दिन से पहले ही तट पर बच्चों में चली गई। कुछ ही मिनट बाद मैंने ग्रपने पति को जल्दी-जल्दी उधर ग्राते हुए देखा। वह मुझे रेडियो की यह भयानक खबर सुनाने ग्रा रहा था कि यूरोप में युद्ध की घोषणा कर दी गई थी।

निश्चित होते हुए भी यह ग्रसम्भव मालूम होता था। शान्त सागर ग्रौर सपाट सफेद रेतीले तट पर सूर्य चमक रहा था। हमारे दो बच्चे हाथ में हाथ डाले उथले पानी में तट से इधर-उधर दौड़ रहे थे ग्रौर दो छोटे लड़के केकड़े ढूंढ़ने के लिए रेत हटा रहे थे, ग्रौर ज़रा ग्रागे, जहां समुद्र का किनारा एकाएक मोड़ ले रहा था, लोग कैथरीन कारनेल के मकान के ग्रागे तैर रहे थे। वह हमसे मिलने ग्राई थी। उसकी सुन्दर ग्राकृति धूप ग्रौर हवा से सांवली हो रही थी ग्रौर उसके कुत्ते उसके पीछे-पीछे चले ग्रा रहे थे। हम कई बार न्यूयार्क में मिले थे, पर एक-दूसरे से ग्रच्छी तरह परिचित नहीं हुए थे ग्रौर मैं समझती हूं कि दोनों को एक-दूसरे से संकोच था। मैंने बड़े लोगों के लिए ग्रादर रखने की ग्रपनी चीनी विशेषता सदा कायम रखी है। यह विशेषता मेरी ग्रमरीकन दुनिया के ग्रनुकूल नहीं है जहां किसीका भी ग्रधिक ग्रादर नहीं किया जाता। हमने बातचीत की थी, पर ग्रासानी से नहीं; ग्रौर उसने कहा था कि उसे भाषण देने में या ग्रासानी से बातचीत करने में भी कठिनाई होती है, क्योंकि ग्रभिनेता ग्रपने को ग्रभिव्यक्त करने के लिए दूसरों के शब्द प्रयोग करते हैं पर उसने मुझे बफैलो (शब्दार्थ : भैंस) नगर में बिताए हुए ग्रपने ग्रारम्भ के जीवन के विषय में कुछ बताया था। यह कितना ग्रसंगत लगता है कि ऐसी सुन्दर ग्रौर सुसंस्कृत स्त्री के नगर का नाम बफैलो हो।

इस दृश्य के बीच, जो चाहे जितना भव्य ग्रौर शान्त था, युद्ध उस दिन छिड़ गया ग्रौर हम (मेरा पति ग्रौर मैं) जानते थे कि हमारा जीवन फिर वही कभी नहीं होगा क्योंकि युद्ध हमारे देश ग्रौर हमारी जनता को बदल देगा। सच्ची बात यह है कि वह सारी दुनिया को बदल देगा।

दुनिया के दूसरी ग्रोर चियांग काई-शेक ने वह क्यों नहीं किया जो कम्यूनिस्टों ने किया, ग्रर्थात् किसानों को हथियार-बन्द करके उन्हें ग्राक्रान्ताग्रों से लड़ने के

लिए कहा ? इसका उत्तर यह है कि वह हथियारबन्द किसानों से डरता था। वह जानता था कि वे उसके पक्ष में नहीं है कि उसकी सरकार उन्हें लाभ पहुंचाने में असमर्थ रही है, और उसे उनपर भरोसा करने का साहस नहीं था। उसने उन्हें —वे जैसे थे, अर्थात् रक्षा-साधनों से हीन—वैसे ही रखना पसन्द किया, और उन्हें हथियार देना पसन्द न किया जो वे किसी दिन उसके विरुद्ध विद्रोह करने में प्रयुक्त कर सकें। वह आशा और आकांक्षा लिए प्रतीक्षा करता रहा और इधर, अमरीकन तटस्थ और अप्रस्तुत रहे।

और क्या हम तटस्थ बने रहेंगे ? क्या हम तटस्थ रह सकते हैं ? मैं यही आशा करती थी। मैं इतना अधिक युद्ध देख चुकी थी कि मेरे लिए इसे स्थायी विजय का साधन मानना कठिन था, और मैं जानती थी कि यह युद्ध सबसे अधिक बुरा होगा, क्योंकि यह एशिया में जनता के सब क्रुद्ध बलों को बंधन से मुक्त कर दे। प्रत्येक एशियन राष्ट्र अपनी आज़ादी और स्वाधीनता के गहरे दृढ़ संकल्प की पूर्ति करने में विश्वयुद्ध का प्रयोग करेगा, और युद्ध के बाद क्या होगा ! निश्चय ही विजय नहीं।

मुझे १९३७ के एक गरम दिन की याद है। मेरा पति और मैं मोटर से कैंसास के नीचे मैदान पार कर रहे थे। यह मेरे प्रिय राज्यों में से है और मैं इसे अपने देश का हृदय समझकर बार-बार यहां लौटती थी। उसके निवासी ईमानदार और श्रेष्ठ, मेधावी और सभ्य हैं, चाहे वे सादे मकानों में रहते हैं। हमें उस जिन हल्की-हल्की चिन्ता थी, क्योंकि राष्ट्रपति रूज़वेल्ट एक महत्त्वपूर्ण भाषण देने वाले थे। उस भाषण के समय हम एक पेड़ की हल्की-सी छाया में आ गए जिससे हम पूरे ध्यान से सुन सकें। हमने रेडियो की कुंजी घुमाई और हवा में चलती हुई बलिष्ठ, ऊंची आवाज़ सुनाई दी। उसमें युद्ध-घोषणा नहीं थी। यह प्रसिद्ध, 'कारन्टीन' भाषण था, पर इसे सुनते हुए मैं समझ गई कि युद्ध अनिवार्य है और चमकीले सुनहरे, प्राकृतिक दृश्य पर छायाओं का अन्धकार आ गया।

हमने गम्भीर और शान्त रहते हुए अपनी यात्रा जारी रक्खी—हमने इसे ज़रा भी छोटा नहीं किया। उत्तर की ओर मुड़कर हम डाकोटा राज्यों की ओर मुड़े जिधर मेरी बहन और उसका परिवार उस समय पियेर, साउथ डाकोटा, में रहते थे—इसे हर कोई, 'पिअर' कहता था। मुझे याद है कि जब हम वहां पहुंचे तब मैंने देखा कि मेरे छोटे-छोटे भानजे अन्य लड़कों के साथ उत्तेजित घूम

रहे थे क्योंकि नगर के पास एक सूखी पहाड़ी की चोटी पर उसी दिन एक बहुत बड़ी पत्थर बनी हुई मछली मिली थी जो व्हेल के आकार की थी। मैं उनके साथ गई और वहां वह नरम पत्थर के रूप में पूरी की पूरी मौजूद थी। इसे उठाकर संग्रहालय ले जाया गया, पर कुछ टुकड़े गिर पड़े और एक टुकड़ा मैं अपने साथ ले आई और इसे मैंने अपने तालाब के किनारे रख दिया, पर वह शीघ्र ही मिट्टी बन गया जैसे कि सूर्य तथा हवा व समय के प्रभाव से सारा मांस मिट्टी हो जाता है।

१९४० जैसे वर्ष में वह यात्रा बड़ी अच्छी रही क्योंकि हम कठिन बैडलैंड्स नीडल्स और ब्लैक हिल्स में होकर घूमे और अपने देश की विविधता और सौन्दर्य न केवल प्राकृतिक दृश्यों का, बल्कि इससे भी बढ़कर लोगों का, फिर मेरे मन पर छा गया। पियरे में मैं उस कलाकार को ढूंढ़ना चाहती थी जिसने वह हमारा मनपसन्द चित्र बनाया था, जो उस समय हमारे रहने के कमरे की दीवार पर लटक रहा था। इसमें एक तेज़ लाल सूर्य रेगिस्तान पर अस्त हो रहा था और एक ध्वस्त खाली कोठरी थी। वह मुझे एक छोटे रैस्टोरेन्ट में मिली जो अपनी जीविका के लिए आलू की टिकिया बनाती थी। कारण क्या था? उसने हमें बताया कि लोग यहां इतने गरीब हैं कि चित्र नहीं खरीद सकते, पर वह उस शानदार प्राकृतिक सौन्दर्य को छोड़कर नहीं जा सकी। उसने पेरिस में चित्र बनाना सीखा था और सोचा था कि वह सदा वहीं रहेगी, परन्तु अन्त में उसने साउथ डाकोटा को देखा और अपना लिया।

और इस प्रकार हम फिर घर चले गए और शानदार दृश्यों तथा अच्छे लोगों से भरी हुई स्मृतियां साथ ले गए। हमने घर पर एक और साल शान्ति से और अपने सामान्य कार्य में व्यस्त रहकर, फिर भी दुनिया के झंझटों से बेचैन रहते हुए, बिताया। १९४१ के दिसम्बर में हम लोग अपने फार्महाउस के सामने वाली सड़क के परली ओर मेरी सौतेली लड़की के मकान में शान्ति से रविवार के तीसरे पहर का आनन्द ले रहे थे। दोनों परिवारों के मित्र अतिथि थे और हम दुनिया भर की बेमतलब बातों के बारे में बातचीत कर रहे थे और उनका किशोर पुत्र मकान से बाहर मोटर में बैठा हुआ रेडियो पर फुटबाल के खेल का वर्णन सुन रहा था।

एकाएक वह आतंक और उत्तेजना से हांफता हुआ अन्दर आया।

'जापानियों ने,' उसने हांफते हुए कहा, 'जापानियों ने पर्ल हार्बर पर हमला

कर दिया।'

मेरी सौतेली लड़की रेडियो के पास पहुंची। उसने खूंटी घुमाई और उस शान्त और आरामदेह कमरे में दबादब खबरें आने लगीं। यह खबर सच थी। युद्ध निश्चित था। हम सारी दुनिया का हिस्सा बन गए थे। मुझे तुरन्त चीन और चियांग काई-शेक का ख्याल आया। निश्चय ही वह सुदूर चुंगकिंग में बैठा हुआ कितना प्रसन्न होगा! उसे कौन दोष दे सकता है? उसे भी अपने देश से प्यार था।

युद्ध के वर्षों से हम सब इतनी अच्छी तरह परिचित हैं कि उनकी कहानी फिर से कहने की आवश्यकता नहीं। मेरा काम था बच्चों को जहां तक हो सके वहां तक भय से मुक्त रखना, अपना कार्य करते रहना, परिवार की मानसिक शान्ति की नौका को अस्थिर होने से बचाना। यह सुपरिचित वातावरण था, पर अपने देश में मैंने कभी इसकी संभावना नहीं की। परन्तु चीन की तरह यहां भी मैंने दृढ़ निश्चय कर लिया कि युद्ध को अपने जीवन पर हावी न होने दूंगी और इसे अपने दैनिक जीवन में से यथासम्भव अधिक से अधिक सुख पाने में बाधक न बनने दूंगी।

उन दिनों मेरे अधिकांश जीवन का केन्द्र वह स्कूल था जिसमें बच्चे जाते थे। यह एक गम्भीर क्वेकर का दिन का स्कूल था, जो एक सुन्दर पुराने पत्थर के भवन में चलाया जाता था, जहां यह लगभग दो शताब्दी से चल रहा था। उसके निकट एक और इतना ही ऐतिहासिक महत्त्व का सम्मेलन-घर था। हमने बच्चों को क्वेकर स्कूलों में शिक्षा देने की बात सदा ही सोची थी क्योंकि क्वेकरों का जीवन-दर्शन एशियाई जीवनदर्शन के, जिसमें मैं बड़ी हुई थी, सबसे अधिक निकट था। वह पहला प्रातःकाल मैं कभी नहीं भूलूंगी। उस दिन मैं अपने छोटे-छोटे बच्चों को स्कूल ले गई थी। वे बड़े विश्वास और उत्साह से गए और अफसोस कि वे मन में समझ रहे थे कि उन्हें तुरन्त ही चमत्कार हाथ लग जाएंगे। इस प्रकार, एक ने, जिसके बाल सुन्दर थे, खुश होकर कहा, 'मैं यह सीखने जा रहा हूं कि हवाई जहाज़ कैसे बनाया जाए।' मुझे मानना चाहिए कि जब उसने यह समझाना शुरू किया कि उस दिन के आने तक का रास्ता कितना लम्बा है और समय कितना थकाने वाला है, तब मेरे दिल में दुखन होने लगी। पर ऐसे छोटे छात्रों के लिए मेरा दिल प्रायः दुखता रहा है जिनका मधुर उत्साह रोज़ की घिस-घिस में नष्ट

हो जाता है। मैं अपने स्कूलों की आलोचना नहीं करूंगी, क्योंकि मैं नहीं जानती कि अनिवार्य शिक्षा को आनन्ददायक कैसे बनाया जाए। पर मेरे लिए कोई भी चीज़ सीखना, पर विशेष रूप से ऐसी चीज़ सीखना, जिसे मैं सीखना चाहती हूं, जीवन का सबसे आनन्ददायक कार्य है। मैं नहीं जानती कि अधिकतर बच्चों का आनन्द किस समय स्कूल से गायब होता है, जिसके कारण वे न केवल स्कूलों से नफरत करने लगते हैं, बल्कि इससे भी बुरी बात यह है कि पुस्तकों से नफरत करने लगते हैं; और यह सचमुच बड़ी चिन्ताजनक बात है क्योंकि पुस्तकों में ही सारी मानव-जाति की बुद्धिमत्ता संचित है, और कोई भी पुस्तक न पढ़ना अपने-आपको बुद्धिमत्ता और समझदारी के तैयार मार्ग से वंचित करना है। चीन में भी शताब्दियों से ऐसी बुद्धिमत्ता पीढ़ी दर पीढ़ी चलती आई थी और अन्त में जनता में कवियों और दार्शनिकों के वचन व्याप्त हो गए थे। पर हमारे यहां, जहां पूर्वजों का इतना मिश्रण हुआ है, कोई ऐसी स्वच्छ धाराएं नहीं हैं और पुस्तकों से ही हमें यह पता चल सकता है कि हम क्या हैं और वह क्यों हैं, और इस प्रकार अपने बारे में तथा दूसरों के बारे में भी, ज्ञान हो जाता है।

स्कूल जाने से केवल मेरे बच्चों को ही शिक्षा नहीं मिली, उनके स्कूल जाने के कारण मुझे भी शिक्षा मिली, और वह, यदि सदा बात को समझकर नहीं तो बलपूर्वक मिली। निःसन्देह अपनी पृष्ठभूमि के कारण मैं अमरीकन बच्चे रखने के उपयुक्त नहीं हूं। मुझे उन समस्याओं के लिए, जो उनके सामने आई हैं, अपने-आपको तैयार करने का कोई ज्ञान नहीं। मेरी बचपन की दुनिया एक प्राचीन और सुसंस्कृत समाज में बीती, इसलिए वह समाज एक पूर्णतया प्राकृतिक और सरल समाज था, क्योंकि कोई प्राचीन समाज ही अपने-आपको सरल रूप में लाता है। उदाहरण के लिए, चुगली को लीजिए। बच्चों के स्कूल जाने से पहले, जब हम रोज़ घर पर इकट्ठे होते थे, तब मैंने यह चीनी असूल नियम के तौर पर अपना रक्खा था कि जब कोई गड़बड़ हो रही हो, तो वहां मौजूद बच्चे का कर्तव्य है कि वह उसकी सूचना अपने बड़े को, जो प्रायः माता-पिता या अध्यापक होता था, दे। यह उचित नहीं कि किसी व्यक्ति के दोष इधर-उधर दूसरे लोगों को बताते फिरा जाए, बल्कि व्यवस्था के हित की दृष्टि से इसकी खबर उसे देनी चाहिए जो उसे ठीक कर सके। यह नियम बहुत अच्छी तरह चल रहा था।

परन्तु आप सोचिए कि मुझे तब कितना आश्चर्य हुआ होगा जब बच्चों की

स्कूल जाने की उमर हो जाने पर और अपने बड़े अमरीकन वातावरण में बाहर निकलने पर उन्होंने आकर मुझे यह बताया कि मेरा कहना गलत था ! उनमें से एक ने अपने एक साथी छात्र के बुरे कामों की अध्यापिका से बाकायदा शिकायत की थी और अध्यापिका ने उस छोटे-से खबर देने वाले को झाड़ा था और कहा था कि यह टैटलिंग या चुगलखोरी है। मैंने जांच-पड़ताल की और पता चला कि यह बात सच थी।

'लेकिन', मैंने अध्यापिका से तर्क किया, 'यदि कानून पालन करने वाले कानून तोड़ने वालों की खबर न दें तो आप कानून और व्यवस्था कैसे कायम रख सकती हैं ?'

वह इस प्रश्न को टाल गई। 'चुगलखोरी करना घृणित कार्य है,' वह बोली।

'तब बच्चे यह विश्वास लेकर बड़े होंगे कि पुलिस को किसी हत्या की सूचना देना घृणित कार्य है। यह भी चुगलखोरी होगी,' मैंने कहा।

'मैं इसका जवाब नहीं दे सकती,' उसने निश्चयात्मक आवाज़ में उत्तर दिया।

मुझे पता चला कि व्यावहारिक समस्या का सामना करने से इस प्रकार इन्कार करना हमारे राष्ट्रवासियों की कभी-कभी खास विशेषता होती है। हम भावावेश के अधीन कार्य करते हैं—वह चुगलखोरी से घृणा करती थी—और बने-बनाए संस्कार के आधार पर कार्य करते हैं—उसे चुगलखोर नापसन्द थे—और इस सर्वथा व्यावहारिक प्रश्न के प्रसंग से दूर रहते हैं कि यदि बालक अव्यवस्था की सूचना नहीं दे सकता तो वह व्यवस्था कायम रखने में कैसे मदद दे सकता है ? और यदि उसे ऐसी चीज़ के बारे में चुप रहना पड़ता है जिसे वह जानता है कि वह गलत है, तो उसके अपने मन में कितना गड़बड़झाला रहता है ! वह किस सिद्धान्त में निष्ठा रखे ? मुझे पक्का विश्वास है कि हमारी तथाकथित अमरीकन अराजकता के अधिकांश का मूल इसी बात में है कि यदि कोई सब लोगों द्वारा स्वीकृत आम नियम को भंग कर रहा हो तो उसकी सूचना देना सर्वथा सही है, पर इस मनोवेग को कुंठित कर दिया जाता है, और इस मनोवेग के अनुसार चलने पर उसपर फटकार पड़ती है जिससे उसके मन में गड़बड़झाला हो जाता है।

फिर भी जब मैंने अपना यह विश्वास अभी उस दिन एक अमरीकन मित्र से प्रकट किया, तब उसने बड़ी उग्रता से मुझसे अपनी असहमति ज़ाहिर की। उसने कहा कि आप 'गलत आधार पर हैं।'

'आपकी युक्ति को', उसने कहा, 'यदि उसके तर्कसंगत निष्कर्ष तक ले जाया जाए तो इसका यह अर्थ होगा कि सोवियत बच्चों का सरकार को अपने माता-पिता के बारे में सूचना देना उचित है। चुगलखोरी से जितनी भी अच्छाई हो सकती हो, उससे भी अधिक नुकसान बच्चे को और समाज को होगा। मुखबिर से, कम से कम पश्चिमी समाज में, सब जगह नफरत की जाती है और जो लोग उसे इस्तेमाल करते हैं, वे भी उसे नीची नज़र से देखते हैं। उचित-अनुचित के विवेक की रेखा खींचने का कोई उपाय नहीं है। बाद में बहुत बड़ी बुराई का सामना करने की अपेक्षा प्रत्यक्ष तात्कालिक बुराई को स्वीकार करना कहीं अच्छा है।'

मैंने उसके शब्दों पर बहुत विचार किया है और कम से कम अमरीका में उसके दृष्टिकोण के औचित्य को मैं मानती हूं, फिर भी मेरी अपनी युक्ति भी कायम है, या कम से कम मेरा ऐसा विश्वास है। शायद चीनी और अमरीकन, इन दो समाजों में इस विषय में जो विभेद है, वह केवल उनके गठन के कारण है! हमारा समाज वैसा व्यवस्थित नहीं जैसा चीनी समाज था। बच्चा अपनी छोटीसी दुनिया के अध्यक्ष बड़े को ही सूचना देता था और जब वह बड़ा हो जाता था तब उसकी प्राथमिक निष्ठा परम्परा के कारण अब भी अपने परिवार के प्रति होती थी, राज्य के प्रति नहीं। शायद यह बुनियादी तौर से प्राथमिक निष्ठा का प्रश्न है, और निष्ठा के इस प्रश्न पर हम अमरीकन लोग सचमुच व्यामुग्ध हैं। यह बात मुझे परस्पर-विरोधी लगती है कि हम कानून बनाने और उन्हें लागू करने के लिए अपने प्रतिनिधि चुनते हैं और फिर भी जब उन कानूनों को भंग होते देखते हैं, तब उसकी ज़िम्मेदारी से अपने को मुक्त रखते हैं। इस तर्क-प्रणाली में कुछ न कुछ दोष है और इसके परिणाम में भी, क्योंकि हम सब राष्ट्रों से अधिक गैरकानूनी हैं और व्यक्तिकृत अपराध का अनुपात हमारे यहां अविश्वसनीय रूप से ऊंचा है। यह, जैसा कि स्याम के राजा ने कहा था, 'एक गोरखधंधा' है।

ग्रीन हिल्स फार्म

'कृपा करके,' मेरी सबसे छोटी लड़की ने आज सवेरे मुझसे कहा, 'मेरे साथ चलो।'

जाऊं या न जाऊं? एक अच्छी अमरीकन माता होने की कोशिश करते हुए

मैंने कितनी ही बार अपने-आपसे यह प्रश्न पूछा है। वह जगह ठीक-ठीक कौनसी है जहां माता-पिता को अलग हो जाना चाहिए जिससे बच्चे स्वाधीन हो सकें? चीन में माता-पिता का सदा स्वागत होता था। माता-पिता सदा जाते थे। यह लड़की सोलह साल की है और हाई स्कूल खतम करने वाली है। वह किंडरगार्टन में अध्यापक होना चाहती है और उसने अपनी ही इच्छा से यह फैसला किया है कि वह हमारी पब्लिक स्कूल-पद्धति में प्रविष्ट होगी और इसलिए हाई स्कूल के बाद अगले वर्ष उसे स्टेट टीचर्स कालिज में भरती होना है। औपचारिक बातें पूरी हो चुकी हैं, बहुत-से कागज़ों पर हस्ताक्षर किए जा चुके हैं और प्रश्नों के उत्तर दिए जा चुके हैं। आज इंटरव्यू का दिन है।

'कृपा होगी,' वह फिर बोली।

'तुम्हें अवश्य मेरी ज़रूरत है?' मैंने पूछा।

'आप बाहर बैठी रहें,' वह बोली।

इसलिए मैं आ गई हूं और यहां बाहर बैठी हूं। अर्थात् मैं एक बड़े सुखदायक कमरे में, जो कालिज का स्वागत-भवन है, एक आरामदेह कुर्सी पर अकेली बैठी हूं जब कि उस भवन के भीतरी भाग में किसी जगह मेरी बेटी की इंटरव्यू हो रही है। वह तरुण स्त्रियों की एक टोली के साथ गम्भीर और स्वाधीन दिखाई देती हुई बहादुरी से चली गई। यद्यपि वह एक छोटी लड़की है जिसके गाढ़े भूरे बालों के नीचे बहुत नीली आंखें हैं। यहां प्रतीक्षा करती हुई मैं आने-जाने वाले लोगों को ध्यान से देख रही हूं और समय काटने का यह साधन मुझे हमेशा अच्छा लगता है। इस बीच में जीवन के प्रवाह पर विचार कर रही हूं। मेरी यह लड़की, जिसकी मुझे उस समय की स्पष्ट याद है जब मैंने उसे पहली बार देखा था, एक छोटी-सी बच्ची थी—अंग-अंग निर्दोष, बहुत बड़ी-बड़ी नीली आंखें और उनकी काली किनारियां, परन्तु इतनी छोटी-सी कि वह मेरी बांह के मोड़ में आराम से समा जाती थी। आज वह अलग व्यक्तित्व की तरुण महिला बन गई है। उसने अपने सामने प्रस्तुत शिक्षा का बहुत-सा अंश बिल्कुल छोड़ दिया है, जैसा कि अधिकतर अमरीकन बच्चे करते हुए मालूम देते हैं, और उसके हाई स्कूल पहुंचने तक मेरी समझ में न आता था कि उसपर गुस्सा करूं या उसकी अध्यापिकाओं पर। क्या कारण है कि शिक्षण को अधिक उत्साहप्रद, अधिक उपयोगी नहीं बनाया जा सकता। जब वह स्कूल से धीरे-धीरे कदम रखती हुई, बहुत अधिक देर

धूप से अलग रहने के कारण थकी हुई, पीली और बगल में पुस्तकों का ढेर दबाए घर आती थी तब मुझे उसकी अध्यापिकाओं पर गुस्सा आता था। मैं अपने दिल में चीखती थी कि यह कितनी बदमाशी है कि सारे दिन बच्चे को एक सख्त बेंच पर बैठाए रखा जाए और फिर घर का काम देकर उसका रात का समय भी भर दिया जाए। यूरोप के बच्चे भी बहुत अधिक देर बैठते हैं पर वे हमारे बच्चों की अपेक्षा परिणाम भी अधिक दिखाते हैं। उन्हें पुस्तक का ज्ञान बहुत अधिक हो जाता है। वे कई भाषाएं बोल सकते हैं, वे गणित और दार्शनिक सूक्ष्मताओं को समझते हैं पर हमारे बेचारे बच्चों को अपने स्कूल-जीवन के अन्त में ठोस ज्ञान के नाम पर इतना थोड़ा आता है कि उनपर दया आती है। मैं समय की बर्बादी के सख्त विरोध में हूं और बचपन के दिन याद करती हूं। जल्दी से पाठ याद कर लिए और फिर धूप और खेल तथा आनन्ददायक आज़ादी में समय गुज़ारा। कालिज पहुंचने से पहले मैं कभी रात को नहीं पढ़ी। हां, वह एक वर्ष इसका अपवाद था जब मैं शांगहाई में मिस ज्यूएल के स्कूल में रही और वहां मैंने जो सीखा, वह पुस्तकों में नहीं था।

और मुझे ज़रा भी याद नहीं आता कि मैंने पढ़ना कब सीखा। मैं जानती हूं कि चार वर्ष की आयु में मैं बड़े आराम से पढ़ लेती थी क्योंकि अपने पांचवें जन्म-दिवस पर मुझे एक मोटी-सी पुस्तक उपहार में मिली थी जिसका नाम था लिटिल सूसी'ज़ सेवन बर्थडेज़ (छोटी सूसी के सात जन्मदिन), और मुझे अपने पांच के बजाय सूसी के सात जन्मदिन होने पर उससे ईर्ष्या होती थी। पर मेरे अमरीकन बच्चों ने अजीब कठिनाइयों से पढ़ना सीखा। यह देखकर मुझे चोट पहुंचती है कि हमारे यहां के इतने सारे लोग पुरुष और स्त्री, पर विशेष रूप से पुरुष, धीरे-धीरे एक-एक शब्द पढ़ते हैं और उन्हें पढ़ने में कभी आराम नहीं मिलता और आनन्द नहीं आता। यद्यपि शिक्षण का उद्देश्य यह होना चाहिए कि पढ़ना इतना सरल और आसान हो जाए जितना वाणी सुनना, क्योंकि जब कोई व्यक्ति वास्तव में पढ़ सकता है तब ही वह अपनी शिक्षा निश्चित रूप से जारी रख सकता है। और इस धीरे-धीरे और कष्ट के साथ पढ़ने के कारण की जांच करने पर मुझे यह पक्का विश्वास हो गया कि इसका मुख्य कारण यह है कि हमने वर्णमाला के महत्त्व को नष्ट कर दिया है। आज के बच्चे, शायद वे बीते कल के बच्चे हैं क्योंकि मेरे अपने बच्चे, उस एक को छोड़कर, जिसे हम अपना छोटा 'पुनश्च' (पत्र पूरा लिख

देने के बाद याद आई हुई कोई छोटी-सी बात जो पुनश्च से आरम्भ करके पत्र के अन्त में लिख दी जाती है) कहते हैं, आरम्भिक कक्षाओं से पार हो चुके हैं। पढ़ना ऐसे सिखाया जाता है मानो प्रत्येक शब्द का एक अलग अस्तित्व है, ठीक वैसे ही जैसे चीनी बच्चों को उनकी चित्रलिपि के वर्ण सिखाए जाते हैं, जो अलग-अलग पांच हज़ार सीख लेने के बाद ही आदमी पढ़ सकता है और इसलिए उतना काम पूरा करने में चीनियों को, हमें जितना समय अपनी वर्णमाला वाली भाषा सीखने में लगता है, उससे दो साल अधिक लगते हैं। कोरिया-वासियों की वर्णमाला हमारी वर्णमाला से भी अधिक ठसी हुई है और उन्हें उससे लाभ हुआ है, परन्तु जापानी विजेताओं ने जापानी को स्कूल की भाषा बना दिया और पढ़ना सीखने की दृष्टि से जापानी भाषा चीनी भाषा की अपेक्षा अच्छा नहीं है। परन्तु अंग्रेज़ी अनुपम भाषा है और वर्णमाला, जिसके प्रत्येक वर्ण की अपनी ध्वनि है, इसकी कुंजी है। फिर भी इस पीढ़ी में अध्यापकों ने वह कुंजी फेंक दी है। मैं कहती हूं कि मैं विद्रोह करती हूं यद्यपि पेशेवर के मुकाबले में आम आदमी के विद्रोह से कोई विशेष लाभ नहीं होता और पेशेवर की यह प्रधानता हमारी सभ्यता की कमज़ोरी है, क्योंकि पेशेवर को जनता और संस्कृति का सर्वांगीण चित्र नहीं मिलता, और हम एक पेशेवर राय तथा दूसरी विशेषज्ञ राय से केवल छिन्न-भिन्न ही होते हैं।

जब हमारे 'पुनश्च' का नम्बर आया—वह छोटा-सा जर्मन-युद्ध का बच्चा है—तब मैंने उसे घर पर चुपचाप पढ़ना सिखा दिया, पर मैं जानती थी कि इस बात की बाहर चर्चा करना उचित नहीं। उसकी अध्यापिका ने, जो संयोगवश उत्तम अध्यापिका थी, मुझे अगले दिन बताया कि हमारी बच्ची दूसरी कक्षा में होते हुए भी पांचवीं कक्षा की पुस्तकें पढ़ती है और उसे किसी सहायता की आवश्यकता नहीं होती। मैं मुस्कराई और मैंने अपना राज़ प्रकट नहीं किया। निःसंदेह वह पढ़ना जानती है और जानने के कारण उसे इसमें आनन्द आता है। उसने मेरी ही तरह आसानी से और बिना यह जाने कि मैं पढ़ रही हूं पढ़ना सीख लिया क्योंकि मैंने उसे पढ़ने की कुंजी दे दी, जैसे कि वह मेरी मां ने मुझे दी थी, और उसे वर्णमाला का प्रयोग करना सिखा दिया।

पर शिक्षा पर कितनी ही पुस्तकें लिखी जा सकती हैं। परीक्षाएं, टेस्ट या परख, कक्षाएं, प्रतिस्पर्धा, ये सब सच्चे ज्ञान में बाधक हैं। यदि मैं फिर बालक बन जाऊं, और अपने ही देश में, तो मैं बहुत सारी चीज़ें करना चाहती हूं। मैं ऐसा

स्कूल बनाऊं जिसमें बच्चे ताज़ा दूध पीने की तरह ज्ञान पी सकें। वे इसलिए पीते हैं क्योंकि वे प्यासे होते हैं और बच्चों में ज्ञान की सदा प्यास होती है पर उन्हें इसका पता नहीं होता और स्कूलों में ज्ञान के स्रोतों को तनावों, चिन्ताओं, प्रतियोगिता के खेलों और कम अंकों की शर्म तथा भय से गन्दा कर दिया जाता है और यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि हमारे राष्ट्रवासियों में पुस्तकों का प्रेम नहीं है। उन्हें पुस्तकों से घृणा कराई गई है और इसलिए शिक्षित व्यक्ति से नफरत करना सिखाया गया है जिसमें निजी अफसोस भी मिला रहता है क्योंकि वह बुद्धिजीवी है। बाधित शिक्षा ? मुझे इसके औचित्य में सन्देह है और निश्चय ही बाधित शब्द का प्रयोग सोच-समझकर कहीं किया गया। शिक्षा तो चाहिए पर यह सासेज मिल, यह होपर नहीं, जिसमें हमारे सब बच्चों को छह वर्ष की आयु में फेंक दिया जाता है जिसमें से वे, उनमें से अधिकतर, मार्ग पर किसी जगह विमूढ़ होकर, रद्दी या बड़े पैमाने पर बनाई गई वस्तु के रूप में निकलते हैं।

शिक्षा ? यह शनिवार का प्रातःकाल है। नाश्ते के बाद का समय है। यह समय गृहकार्य के लिए पवित्र है—खेल से पहले काम इत्यादि। पर रस्टी ने–जो तुच्छ कोकर स्पेनियल (एक प्रकार का कुत्ता) की विधवा है–अपने बच्चे देने के लिए ठीक समय पर अपने रहने की जगह पहुंचने की मूर्खतावश उपेक्षा कर दी थी और वह रसोई के दरवाज़े पर सवेरे के भोजन के लोभ से प्रतीक्षा कर रही थी कि प्रकृति की पुकार ने उसे दबा लिया। दूरदर्शिता से लौट जाने के बजाय वह प्रतीक्षा करती रही पर बच्चों ने प्रतीक्षा नहीं की, और मेरे दूसरे पुत्र ने, जो छहफुटा नौजवान है, दरवाज़ा खोलने पर सामने उसे देखा। उसकी यह अवस्था देखकर वह फौरन उसकी मदद करने भागा : कुतिया की कोठरी से ताज़ी घास, गरम दूध का एक कटोरा, जनवरी की खुली हवा में कांपते हुए बच्चों के लिए कम्बल-बिछी टोकरी। और फिर रस्टी स्वयं स्नेह से उसकी बांहों में बैठकर सूखी आरामदेह कोठरी में पहुंचा दी गई—निश्चय ही इसमें उसका पढ़ने का अधिकतर समय खर्च हो गया। निःसन्देह उसे इसकी कमी पूरी करनी पड़ेगी, पर इस बीच जीवन में तन्मय होकर वह सीख रहा है। मैं कहती हूं कि वह जितना एक महीने में पढ़ा है, उससे अधिक पढ़ाई अगले चार दिन में करेगा। वह जानना चाहेगा और संभवतः इसका परिणाम यह होगा कि वह सोमवार को अपने रसायन के टेस्ट में फेल हो जाएगा और

उसकी अध्यापिका शिकायत करेगी, और विडम्बना यह है कि मैं उससे भी सहानुभूति रख सकती हूं,—जिस लड़के ने अपना घर का काम न किया हो, विशेष रूप से उस सुन्दर सलोने लड़के को पढ़ाना कठिन है जो अध्यापिका को अच्छा लगता हो और विशेष रूप से, यदि अध्यापिका अन्तःकरण की प्रेरणा सुननेवाली हो।

बच्चों की घरेलू शिक्षा का एक हिस्सा निश्चय ही विदेशों से आए हुए उन अनेक आगन्तुकों के रूप में रहा है जो हमारे मकान पर आए हैं और जिनकी संख्या इतनी अधिक है कि उनके नाम नहीं गिनाए जा सकते और उनमें से बहुत से बार-बार आए हैं जिससे हमारा घर ज्ञात और अज्ञात मित्रों की, उनके चेहरों-उनकी वाणियों और उनके पत्रों की स्मृतियों के द्वारा दुनिया के अन्य देशों में जुड़ा हुआ मालूम देता है। इस समय मुझे युद्धकाल की, वस्तुतः पर्ल हार्बर से पहले की, एक घटना याद आ रही है। मैंने जापानी सैनिकवाद के विरुद्ध कुछ लेख लिखे थे जो ज़रा कुछ सख्त थे और मैं निःसन्देह जानती थी कि वे जापान पहुंचे थे, पर जापान दुनिया के दूसरी ओर था और मैं समझती थी कि जो कुछ हो चुका था उसके कारण मुझसे दूर था। फिर भी यह कहानी है।

एक दिन सर्दियों की ठण्डी रात में हम अपने घर में रहने के कमरे की आग के पास बैठे थे। ज़मीन पर बर्फ की मोटी तह पड़ी थी जो हटाई नहीं गई थी, न कोई अन्दर आ सकता था। न कोई बाहर जा सकता था। हवा चल रही थी और बच्चे बाहर तब तक खेलते रहे जब तक कि वे आधे जम न गए। और शाम को उनके भोजन के बाद उनके सोने से पहले हम मक्का की खीलें खा रहे थे। बच्चों को नहलाकर और पुस्तक सुनाकर उनको लिहाफों में बांध दिया गया था और उनका पिता तथा मैं आग के सामने अपनी-अपनी पुस्तकें रखकर जम गए थे कि इतने में एकाएक टेलीफोन बज उठा। मैंने अनिच्छा से यह सोचते हुए कि कौन पड़ौसी बुला रहा है, आपरेटर को अपना नाम बताते हुए, उत्तर दिया। इसके बाद मैंने उसकी उत्तेजित आवाज़ सुनी, 'कृपया होल्ड कीजिए, टोकियो से फोन है।'

टोकियो ? पर टोकियो को मेरा सूची में न लिखा हुआ निजी नम्बर कैसे पता चला ?

'ठहरो,' मैंने कहा और अपने पति को पुकारा। 'ज़रा मेरी ओर से यह सुन लेना,' मैंने कहा।

मुझे एक अजीब अपरिचित भय अनुभव हुआ। क्या टोकियो इस तरह समुद्र

पार पहुंच सकता है और मेरे अपने देश में और अंधेरे में और फिर सर्दियों की रात में एक दूर की पहाड़ी पर बने हुए मेरे मकान में से मुझे खींच सकता है और किस कारण ?

उसने मेरे हाथ से रिसीवर ले लिया और सुना—फिर वह हंस पड़ा। 'यह तो एक अखबार है—मेईनीची,' उसने कहा। 'वे तुम्हें नव-वर्ष का अभिनन्दन देना और दो-चार प्रश्न पूछना चाहते हैं।'

तो मुझे डरने की ज़रूरत नहीं ? पर फिर भी मैं थोड़ा डरी ही। तो भी मैंने रिसीवर उससे ले लिया और प्रायः तुरन्त अपना नाम सुना तथा एक बिल्कुल जापानी आवाज़ मेरा नववर्ष का अभिनन्दन करती हुई सुनाई दी, मानो जापान ने चीन पर हमला ही नहीं किया था, और इसके बाद के प्रश्न आम प्रचलित प्रश्न थे। जापानी साहित्य के बारे में आपका क्या विचार है ? आपकी अगली पुस्तक कौन-सी होगी ? क्या ाप अहमारे लिए कोई सन्देश दे सकेंगी ? आह सोडेस्का, आपका बड़ा धन्यवाद, गुडबाई। ठीक ऐसे मानो कोई युद्ध नहीं हो रहा था, मैंने विमूढ़ता अनुभव करते हुए रिसीवर रख दिया और आग के निकट अपनी कुर्सी पर लौट गई। नहीं, मार्ग में मैं ज़रा रुकी और मैंने खिड़की से बाहर झांका। बर्फ अब भी पड़ रही थी, बर्फ हटाने के हल की चमक में, जो अभी सड़क से हमारी गली में मुड़ा था और सफेद झागों के बड़े-बड़े बादलों को अंधेरे में फेंक रहा था, मुझे बर्फ दिखाई दे रही थी। हमारे चारों ओर मीलों तक सफेद धरती, मीलों तक विस्तृत मैदान और घाटियां और पर्वत और उससे परे उस मकान और जापान के बीच हज़ारों मील लम्बा महासागर फैला हुआ था। फिर भी टोकियो इस सबको पार करके आ गया और उसने मुझे खोज लिया। और वाणी मित्रतापूर्ण थी, यद्यपि राष्ट्रों में युद्ध हो रहा था। इसमें कहीं न कहीं एक सबक और शिक्षा थी—पर मैं उसे छोड़ देती हूं। मेरे लिए तथ्य केवल यह था कि मैं अपने अनेक संसारों में से किसीसे भी नहीं बच सकती।

और इस प्रकार इन पिछले वर्षों में अनेक आगन्तुक-अतिथि आते रहे, जाते रहे और फिर आते रहे। अनेक चेहरे, अनेक वाणियां और अनेक पत्र, महान् सीधे-सादे स्वभाव वाला चीनी जेम्स येन एक बार इतने काफी दिन ठहरा कि हम मिलकर एक छोटी पुस्तक लिख सके, जिसका नाम है 'टेल दि पीपल' और यह उसके अपने शब्दों से भरी हुई है जो उसने बोले और मैं सुनती रही, और इससे पता

चलता है कि उसने अपने देश से आम जनता की व्यापक शिक्षा के लिए क्या कार्य किया था। अनेक वर्ष तक वह इसे करता रहा और अब वह निर्वासित है, पर उसके तरीकों का उपयोग कम्यूनिस्ट लोग जनता को जल्दी से साक्षर बनाने के लिए कर रहे हैं। और उसने मुझे बताया है कि वह छोटी-सी पुस्तक एशिया में दूर-दूर तक पहुंची है जहां अन्य लोग पढ़ने की शिक्षा चाहते हैं, क्योंकि पढ़ना शिक्षा की कुंजी है और यह कुंजी उन्हें कभी प्राप्त नहीं हुई। और नेहरू की भांजियां उन गर्मियों में हमारे यहां आईं जिनमें श्रीमती पंडित भारत में थीं और वे यहां स्कूल में थीं और हम उन सुन्दर स्नेहपूर्ण लड़कियों से प्रेम करने लगे। अब उनके विवाह हो गए हैं और सबसे छोटी को छोड़कर शेष सबके बच्चे हैं। उस सबसे छोटी लड़की की मुझे इसलिए याद है कि जब मैं शाम को चारपाई पर आराम करती थी, तब वह अपनी हथेलियों से ऐसी मृदु, कोशलपूर्ण गतियों से मेरे तलवे सहलाती थी कि मेरी थकान घट जाती थी और मुझे अपनी आत्मा में भी विश्राम अनुभव होता था। यह एक भारतीय कौशल है, जो ऐसे देश में स्वाभाविक है जिसमें लोग नंगे पांव चलते हैं और मीलों पैदल जाते हैं क्योंकि उन्हें चलना पड़ता है। भारतीय नर्तक उदयशंकर और उसकी पत्नी तथा उनका छोटा-सा लड़का आनन्द भी हमारे अतिथि रहे हैं और उनकी सौन्दर्यपूर्ण मृदुता और शोभा हम मुग्ध होकर देखा करते थे।

श्रीमती पंडित अनेक बार आई हैं और उनके चित्रोपम सौन्दर्य की स्मृति बार-बार हो आती है और उस दिन का सायंकाल मुझे विशेष रूप से याद है जिस दिन उनके भाई जवाहरलाल नेहरू अमरीका की यात्रा के बाद यहां से गए थे। हमने उनके साथ अकेले में बातचीत की थी, उनके साथ भोजन किया था और उनसे उनकी लम्बी थकान वाली विचार-मग्न चुप्पियों को, और जब कोई बात उनकी अपनी दिलचस्पी की होती, तब एकाएक उनके वचन-उद्गारों को भरसक अच्छी तरह देखा-सुना था। भाई और बहन के बीच गहरा अनुराग हृदय-स्पर्शी था। स्पष्ट था कि वे दोनों एकाकी लोग थे, एक-सी स्मृतियों से बंधे थे और एक की उपस्थिति में दूसरे को सुख मालूम होता था। जब नेहरू चले गए तब वह फिर अकेली रह गई और मैंने देखा कि हमारे घर में इस अकेलेपन का कोई इलाज नहीं था। जीवन ने उन दोनों को अलग-अलग कर दिया है, जैसे कि महान् पुरुषों और स्त्रियों को सदा अलग होना पड़ता है, और इसलिए शायद इस कारण वे

अकेलापन अनुभव करते हैं कि वे बहुत कुछ जानते हैं और उन्होंने बहुत कुछ अनुभव किया है, और वे देखते हैं कि उन्हें अपने को या दूसरों को भी सन्तुष्ट करने के लिए जो अवश्य करना चाहिए, वह वे काफी मात्रा में नहीं कर सकते।

ब्राज़ील के जोसुए डी कैस्ट्रो अपनी शानदार पुस्तक 'दि ज्योग्रफी ऑफ हंगर' (भूख का भूगोल) लिखने के बाद यहां आए थे और उनके ज़बरदस्त और चमत्कृत मन में कितनी शक्ति थी ! जापान की उपन्यासलेखिका भी शिज़ुए मसूगी एक और मेहमान थीं और सूमी मिशिमा तथा लिन यूतांग और उनका परिवार कई बार आए और वांग युंग और उसका पति ह्सिएह और तोरो मत्सुमोतो, जो अब जापान में एक प्रसिद्ध स्कूल में मास्टर हैं और उसके साथ उसका परिवार भी आया। मुझे म्बोनी ओजीके को भी नहीं भुलाना चाहिए जो अब नाईजीरिया में एक अफसर है। ओजीके, जो ऊंचा और मज़ेदार आदमी है, हमें बहुत-से किस्से सुनाता था, और हमें प्रायः हंसाता था। उसका पिता एक अफ्रीकी सरदार था, जिसकी दस पत्नियां थीं और ईसाई होने का फैसला करके वह वृद्ध पुरुष एक रविवार को चर्च गया, उसकी सब पत्नियां जलूस की शक्ल में उसके पीछे थीं। दरवाज़े पर ईसाई मिशनरी मिला जो भौंचक्का होकर बोला, 'पर आप दस पत्नियों के साथ चर्च नहीं आ सकते।'

'क्यों नहीं,' ओजीके के पिता ने पूछा। 'वे सब भलीमानस औरतें हैं।'

'दस पत्नियां रखना ईसाइयत नहीं,' मिशनरी ने आक्षेप करते हुए कहा। 'आपको उनमें से एक छांट लेनी चाहिए और बाकियों को अलग कर देना चाहिए।'

सरदार इस मामले पर गौर करने के लिए एक पेड़ की छाया में चला गया। उसकी दस पत्नियां उसके चारों ओर घेरा बनाकर प्रतीक्षा करती रहीं। वह नौ बाकी औरतों को कैसे त्याग देता ! वह इतना क्रूर नहीं हो सकता था। उन्हें अपने पीछे आने का इशारा करके वह अपने घर चला गया और उसने चर्च तथा ईसाइयत छोड़ दी।

प्रसंगतः ओजीके, 'दि ईस्ट ऐण्ड वेस्ट ऐसोसियेशन' (पूर्व और पच्छिम-संघ) की ओर से यात्रा करता हुआ घूम रहा था। जहां कहीं वह जाता—वह गौरवपूर्ण खुशमिज़ाज प्राणी, ऊंचा और काला—वहीं वह आनन्द और प्रसन्नता की लहर पैदा कर देता। किसी मध्य-पच्छिमी नगर में, जहां उसका भाषण होना

था, वह रेलगाड़ी से पहुंचा और एक बड़ा होटल देखकर, जिसका नाम था 'दि चीफटेन' (सरदार), उसने निश्चय किया कि यह उसके ठहरने के लिए उपयुक्त है और इसलिए वह लाबी में अपनी भव्य जंगली चीते जैसी चहलकदमी करता हुआ जा पहुंचा और उसने कमरा मांगा।

क्लर्क ने उसे इधर-उधर से देखा। 'हमारे पास आपके लिए कमरा नहीं है,' उसने अन्त में कहा।

'क्यों नहीं, जनाब ?' ओजीके ने पूछा।

'हम कलर्ड (रंगीन) लोगों को नहीं ठहराते,' क्लर्क ने कहा। वह सीधा खड़ा हो गया क्योंकि राजकुमार तो वह था ही। 'जनाब,' उसने गर्व से तनकर कहा, 'मैं कलर्ड नहीं हूं। मैं काला हूं।'

उसके देश में, 'कलर्ड' अपमानसूचक शब्द था। कलर्ड या रंगीन वे लोग थे जिनमें गोरों का रक्त भी मिला हुआ था और उसमें गोरा रक्त नहीं था। वह टस से मस न हुआ और उसने मांग की कि जिस प्रमुख नागरिक ने हमारे कार्यालय से उसके वहां आने की व्यवस्था की थी, उसे बुलाया जाए। इसके बाद बहुत टेलीफोन बजते रहे और अन्त में विमूढ़ और लड़खड़ाते हुए कलर्ड को एक कमरा मिल गया और ओजीके शान से सीढ़ियों पर चढ़ा, उसका सामान होटल के नौकर ने उठाया हुआ था। उसने हमें बताया कि अगले दिन जब वह नाश्ते के लिए भोजन के कमरे में जाने के वास्ते अपने कमरे से निकला, तब बरामदे में एक नीग्रो नौकरानी उसे देखकर घुटनों के बल आगे बैठ गई।

'ओह, ईसामसीह,' वह बुदबुदाई, 'प्रभु ईसामसीह ही आ गए हैं।'

'खड़ी हो, औरत,' 'ओजीके ने गौरव से कहा। मैं ईसा नहीं हूं। मैं ओजीके हूं।'

'ईसा हो,' उसने ज़िद करते हुए कहा। 'तुम अवश्य ईसा हो। ये किसी काले आदमी को अपने होटल में नहीं सोने देते जब तक कि वह स्वयं ईसा ही न हो।'

उन अनेक पुरुषों, स्त्रियों तथा बच्चों के नाम लिखने के लिए कितने ही पृष्ठ चाहिएं जो हमारे घर को सौभाग्यशाली बनाने और दुनिया को हमारे पास लाने के लिए यहां आए हैं, जिससे हमारे बच्चे, जहां कहीं भी जाते हैं, उन्हें कोई भी चेहरा अजनबी नहीं मालूम होता क्योंकि ये चेहरे उनकी सजीव बचपन की स्मृतियों में और उनकी सुखदतम स्मृतियों में हैं। इससे उन्हें शिक्षा भी मिली है।

यदि दूसरे देशों से आए हुए मेरे मित्रों से मेरे परिवार और पड़ोसियों ने भी परिचय किया है, तो दूसरे लोगों ने मुझे मेरी अमरीकन दुनिया में गहरा खींचा है। मेरी पहली मित्र गरट्रुड लेन थी, जो 'दि वीमेन्स होम कम्पेनियन' की सम्पादक थी और वह पहली अमरीकन स्त्री थी जिसे मैं अच्छी तरह जानती थी। गरट्रुड बैटल लेन (बैटल=लड़ाई या संघर्ष) में उसका पूरा नाम लिखती हूं क्योंकि यह उसके लिए उपयुक्त था। क्योंकि वह न्यू इंगलैंड के एक छोटे-से नगर से बालिका के रूप में और केवल एक आकांक्षा लेकर आई थी, जैसा कि उसने मुझे बताया और यह थी उस पत्रिका में काम करने की आकांक्षा। उसको पहला काम कागज़ इधर से उधर पहुंचाने या चपरासी-गिरी का मिला जो सबसे नीचा काम था और जिसमें, उसने मुझे बताया, उसे हर किसीके हुक्म का पालन करने के लिए तैयार रहना पड़ता था और उस स्थान से केवल योग्यता द्वारा ऊपर उठाकर वह सम्पादक और अमरीका में सबसे अधिक वेतन पाने वाली स्त्री बन गई। उसे इसका किस्सा सुनाना अच्छा लगता था, केवल इस कारण नहीं कि यह उसकी कहानी थी, बल्कि इस कारण भी कि यह एक अमरीकन कहानी थी, क्योंकि हमारे देश के अलावा यह चीज़ कहां हो सकती थी! जब मेरा उससे प्रथम परिचय हुआ तब वह जवान नहीं थी। उसके बाल सफेद हो गए थे। उसके चेहरे और शरीर में अब यौवन की आभा नहीं थी और उसकी आत्मा निर्भीक थी। उसे अच्छी बातचीत और अच्छे भोजन का शौक था। उसमें पैनी समझदारी थी, बौद्धिक नहीं, बल्कि व्यावहारिक और ठोस। हम भोजन के लिए प्रायः मिलते थे और यह विशेष बात थी कि वह शान्त महंगे स्थान पसन्द करती थी और भोजन-सूची पर विचार करती थी—मैंने उसके देहात के मकान में और उसके मित्रों के साथ आनन्ददायक मुलाकातें कीं।

मेरा डोरोथी कैनफील्ड फिशर से भी परिचय हुआ। और उसके यहां भी और उसके ज़रिए एक और अमरीकन जीवन मेरे सामने उद्घाटित हुआ। उसका घर इतना अधिक अमरीकन था कि कुछ न पूछिए जो दो शताब्दी पहले बनाया गया था। और अब भी उसी वर्मोन्ट नगर में कायम था। एक अजीब दुःखदायी तरीके से मेरे संसारों का डोरोथी कैनफील्ड के ज़रिए फिर मिलन हुआ क्योंकि उसका पुत्र युद्ध के दिनों में फिलीपीन्स में मारा गया था। वह एक बहादुर तरुण डाक्टर था जिसने अपने साथी अमरीकनों के लिए, अमरीकन सैनिकों को बचाने

के लिए, जाकर अपना जीवन दे दिया। उसके स्मारक के लिए उसके माता-पिता तरुण फिलीपिनो डाक्टर और उसकी पत्नी को, जो स्वयं डाक्टर थी—ये दोनों उनके पुत्र के वहां रहने के दिनों में उसके घनिष्ठ मित्र थे—इस देश में ले आए और माता-पिता ने इन दोनों को स्नातकोत्तर अध्ययन का अवसर दिया जिससे वे स्वदेश लौटकर वहां निजी अस्पताल खोल सकें।

इस प्रकार मेरे संसार बार-बार मिलते हैं और अन्त में अनेक एक बन जाते हैं। ओस्कर हेमरस्टीन और उसकी पत्नी डोरी थी जो विश्व-नागरिक हैं, हमारे मित्र और पड़ौसी हैं, वेल्कम-हाउस (स्वागत-भवन) के काम में मेरे साथ रहे और न केवल वे बल्कि मेरी अपनी बस्ती के दूसरे लोग इतनी ही दृढ़ता से मेरे साथ रहे; ज़ेम्स मिचनर, जो मित्र और पड़ोसी है और भावना तथा कार्य से विश्व-नागरिक भी है, और दूसरे लोग जो कभी इस अमरीकन दुनिया से बाहर नहीं गए और फिर भी जिनके हृदय भूमण्डल जितने बड़े हैं और मन मुक्त हैं और वे लोग, जिन्होंने वेल्कम-हाउस के कार्य में मेरा साथ दिया है, मेरे मित्र हैं।

और अब मैं समझती हूं वेल्कम-हाउस की बात बताने का समय आ गया है, क्योंकि वेल्कम-हाउस के बच्चे मेरे संसारों को मिलाकर एक रखते हैं।

इस सारे कार्य का आरम्भ एक वर्ष क्रिस्मस के दिनों में हुआ और वह कहानी, 'नो रूम एट दि इन' नाम से मैं पहले लिख चुकी हूं और यहां वर्षों की बात कुछ थोड़े-से पृष्ठों में लिख दूंगी।

मैं समझती हूं कि मैंने अपने घर के बाहर का और अपने काम से बाहर का, अर्थात् उपन्यास-लेखन से बाहर का कोई भी काम कभी इच्छा से नहीं किया। मेरी वंश-परंपरा से मुझमें जिहादवालों का रक्त नहीं आया और प्रचार से मुझे इतनी अधिक अरुचि है कि उसे घृणा भी कहा जा सकता है क्योंकि वह असल में घृणा ही है। जब कभी मैंने कोई ऐसा काम अपने ऊपर लिया है जिसका मेरे घर या लेखन से सम्बन्ध नहीं था तब वह सदा अनिच्छा से और बहुत देर तक इसे करने के लिए किसी और को, चाहे वह कोई भी हो, ज़ोर-शोर से तलाश करने के बाद ही लिया है। निश्चय ही मेरे मन में अमरीका में बच्चे गोद दिलाने वाली एजेन्सी और वह भी पचास वर्ष की आयु हो जाने के बाद खोलने का कोई विचार नहीं था। फिर भी मैंने बिल्कुल यही काम किया।

मैंने बहुत समय पहले गोद दिलाने वाली एजेंसियों की बात सोचना बन्द कर दिया था—मेरे बच्चे अभी बड़े नहीं हुए थे और मेरी दिलचस्पी उनकी आयु वाले बच्चों में थी। इसके बाद एकाएक दिसम्बर के एक ठण्डे दिन जब हमारा मकान शीघ्र आने वाले क्रिस्मस उत्सव और स्काई बांधकर चलने वाली लड़कियों, लम्बी टांगों वाले लड़कों और उनके नाच तथा क्रिस्मस के उपहारों और हौली की मालाओं की शानदार खिचड़ी से गूंज रहा था, डाकिया एक दूर की बच्चे गोद दिलाने वाली एजेंसी का एक एक्सप्रेस पत्र लाया जिसमें पूछा गया कि क्या मैं एक छोटे बच्चे को कहीं गोद दिलाने में उनकी सहायता कर सकती हूं जो एक अमरीकन गोरी माता तथा एक पूर्वी भारतीय पिता का पुत्र था, पर जिसे भू-मण्डल के दोनों ओर दोनों परिवारों ने अस्वीकार कर दिया था। पत्र में बताया गया था कि एजेन्सी के कर्मचारियों ने सारे अमरीका में सब सम्भव स्थानों पर पता लगा लिया था और उन्होंने उसे भारत में गोद देने की भी कोशिश की थी पर कोई उसे नहीं चाहता था। उन्होंने उसका चित्र साथ भेजा था। मैंने एक एकाकी बच्चे का उदास छोटा-सा चेहरा देखा और जिस सुखी दुनिया में मैं रहती थी, वह अलग जा पड़ी। मैंने उसके जैसे सैकड़ों छोटे-छोटे चेहरे भारत में देखे, सैकड़ों और हज़ारों नौजवान पुरुष और स्त्रियां जो गोरे पुरुष और भारतीय स्त्री से पैदा हुए थे, पर जिन्हें दोनों में से एक भी नहीं चाहता था इसीलिए जो नष्ट हो गए थे, क्योंकि अनचाहा बच्चा सदा नष्ट हो जाता है, पर यह छोटा-सा लड़का अमरीकन था, यहां मेरे अपने देश में पैदा हुआ था और मेरे लिए यह बात असह्य थी कि वह यहां उस प्रकार नष्ट हो जाए जैसे वह भारत में हो गया होता। मैंने झटपट टेलीफोन से अपने प्रत्येक मित्र को, जो भारतीय था, या अंशतः भारतीय था, या जिसके बारे में मुझे पता था कि भारत हो आया है और अन्य भारतीयों को जानता है, बुलाया और हरएक से बच्चे की कहानी दोहराई, फिर भी उसे कोई नहीं चाहता था। एजेन्सी के पत्र में कहा गया था, 'यदि हम पहली जनवरी तक वह किसीको न दे सके, तो हमें अफसोस के साथ उसे स्थायी रूप से किसी नीग्रो अनाथालय में रखना होगा जहां से वस्तुतः उसका सम्बंध नहीं है क्योंकि निश्चय ही वह दोनों ओर से काकेशियन है। हमें नीग्रो के विरुद्ध पूर्वाग्रह नहीं है पर किसी बच्चे के कन्धों पर पूर्वाग्रह का वह बोझ नहीं रखना चाहते जो उन्हें उठाना पड़ता है और जिससे वह बच सकता है।'

हां, मैं इसका अर्थ समझती हूं। मैंने जल्दी से अपने परिवार को अपने पास इकट्ठा किया और उन्हें कहानी बताई। हमें क्या करना चाहिए ? पिता से लेकर सबसे छोटी लड़की तक किसीको भी मतभेद नहीं था। उन सब ने कहा, 'उसे यहां ले आओ। यदि हम उसके लिए कोई अधिक अच्छा स्थान नहीं तलाश कर सकेंगे तो हम उसे रख लेंगे।'

इस प्रकार अधिकार पाकर मैंने एजेन्सी को टेलीफोन किया। क्रिस्मस के शीघ्र बाद सर्दी की एक रात के अंधेरे में एक छोटा काला लड़का मेरी गोद में थमा दिया गया। उसकी बड़ी भूरी आंखें मूक और आतंकित थीं और वह बिल्कुल चुप था क्योंकि उसका अंगूठा स्थायी रूप से उसके मुंह में पड़ा हुआ था। जो लोग उसे लाए थे, वे चले गए और मैं उसे ऊपर उसके पालने में ले गई जो हमने तैयार किया था और मैंने उसे बिस्तर पर लिटा दिया। उस रात वह अधिक नहीं सोया और न मैं सोई। वह ज़ोर से नहीं रोता था, पर बीच-बीच में डर से दबी हुई हल्की आवाज़ में रो उठता था। मैं उसे तब तक गोद में लिए रहती थी जब तक वह सो न जाता था।

यह आना तो स्तब्ध करने वाला था ही, पर एक और भी आ गया, और उसी महीने। एक मित्र ने मुझे लिखा कि किसी एक नगर के अस्पताल में एक छोटा अर्धचीनी बच्चा पैदा होने वाला है। बच्चा कहीं नहीं जा सकता क्योंकि चीनी पिता, जो पहले ही विवाहित था,उसे अपना मानने को तैयार नहीं था और चीन लौट गया था और अमरीकन माता के पास उसे रखने का कोई उपाय नहीं था। क्या बच्चे को तब तक मेरे पास आश्रय मिल सकता था जब तक मैं उसके लिए कोई परिवार तलाश न कर दूं ? स्थानीय गोद दिलाने वाली एजेन्सी उसे स्वीकार करने को तैयार नहीं थी। इस समय तक मैं यह अनुभव करने लगी कि मैं किसी अज्ञात प्रेरणा के अधीन हूं जिसे मैं समझती नहीं। मेरे परिवार ने कहा, 'हम एक और बच्चा भी रख सकते हैं,' और इस प्रकार जनवरी के एक ठण्डे दिन हम शहर के बड़े अस्पताल से एक छोटा नौ दिन का बालक, बिल्कुल नंगा, घर ले आए—क्योंकि उसे पहनाने के लिए हम कपड़े अपने साथ ले गए थे, और वह भी हमारे साथ रहने लगा।

हम सब मिलकर बच्चों की देखभाल करते थे, परन्तु रात को उनकी ज़िम्मेदारी मुझपर थी और हम सब उन्हें सबल और सुख से बढ़ता हुआ देखकर

प्रसन्नता अनुभव करते थे। छोटे-से अमरीकन-चीनी को प्रेम के अलावा और कुछ भी पता नहीं था। यह शुरू से ही बढ़ने लगा, पर छोटे-से अमरीकन पूर्वी इंडियन को हमें यह विश्वास दिलाना पड़ा कि हम उससे प्यार करते हैं, पर उसमें अधिक समय नहीं लगा। महीनों गुज़र गए और हमारे परिवार ने बहुत-कुछ सोच-विचार किया। यदि ऐसे ये दो बच्चे थे तो और भी बहुत-से अवश्य होंगे। मैंने बच्चे गोद दिलाने वाली एजेन्सियों से पूछताछ आरम्भ की और सचमुच ही पता चला कि एशियन या अंशतः एशियन पुरुष से उत्पन्न बच्चा उनके लिए सबसे बड़ी समस्या था, यहां तक कि नीग्रो बच्चे से भी बड़ी समस्या। बहुत-सी एजेन्सियां यह समझ-कर कि उन्हें गोद देना असम्भव है, उन्हें बिल्कुल ही स्वीकार न करती थीं। फिर उनका क्या होता था? किसीको पता नहीं था। उन देशों की अपेक्षा, जिनमें बड़े परिवार की प्रथा अब भी कायम है, यहां अमरीका में बच्चा अधिक आसानी से नष्ट हो सकता है।

मैंने अपने परिवार को यह सब बात बताई। हमारे दो बच्चों के पीछे शायद और सैकड़ों बच्चे थे। क्या उनके बारे में हमें कुछ नहीं करना? अब मेरे लिए यह एक विशेष चिन्ता का विषय बन गया, शायद कोई भी अपने देश से उतने तर्क-संगत रूप से और गहराई से प्यार नहीं कर सकता जितने से वह व्यक्ति जो बहुत वर्षों तक इससे दूर रहा है और प्रबल देश-प्रेम लेकर लौटा है। मैं अपने देश में वही दोष देखना नहीं सह सकती थी, जो मैंने दूसरे देशों में देखे थे, अर्थात् मैं यह विश्वास सहन नहीं कर सकती थी कि इन सुन्दर बच्चों को केवल इस कारण कोई गोद लेने वाला घर नहीं मिल सकता कि वे मिश्रित जातियों की संतान थे। मैं यह मानने को तैयार न थी। काम केवल यह था कि उनके लिए माता-पिता तलाश किए जाएं।

पर मान लो कि मैं न तलाश कर सकी? सैकड़ों एजेन्सियों ने कोशिश की थी और वे विफल रही थीं। मैं सब बच्चे नहीं ले सकती थी, यह तो स्पष्ट था। अफसोस, जैसा कि मैंने अपने बड़े बच्चों को ध्यान दिलाया, उनका पिता और मैं इतने बूढ़े हो चुके थे कि अब बच्चों का नया परिवार शुरू नहीं कर सकते थे। इन छोटे अमरीकन-एशियनों को वर्षों तक विशेष प्रेम और देखभाल की ज़रूरत थी और हम अब जवान नहीं थे। हमें ठोस भविष्य की योजना बनानी होगी। तब मैंने अपने-आपसे पूछा—तो अपने दोनों अमरीकन-एशियन बच्चों के लिए अपनी

ही बस्ती में कम श्रायु के माता-पिता क्यों न ढूंढ़े जाएं श्रौर उनका घर केन्द्र रहे श्रौर हम दादा-दादी के रूप में देखभाल में मदद करते रहें। श्रौर ऐसे सब बच्चों के लिए योजना क्यों न बनाई जाए, यहां तक कि श्रन्त में श्रन्य एजेन्सियों को यह विश्वास हो जाए कि वे 'गोद लिए जाने योग्य हैं।' हमारी बस्ती में बहुत-से उदार श्रौर दयालु लोग हैं श्रौर शायद वे मदद देंगे। मैंने एक दिन सायंकाल इस योजना के बारे में बातचीत करने के लिए मुख्य पुरुषों श्रौर स्त्रियों को निमन्त्रित किया। 'यदि श्राप इसमें हमारा साथ देंगे,' मैंने कहा, 'तो मेरा विश्वास है कि हम न केवल इन बच्चों के लिए, जो श्रन्ततः श्रमरीकन बच्चों का फिर भी एक छोटा समूह है, बल्कि श्रपने राष्ट्र के लिए भी कुछ सचमुच उपयोगी कार्य कर सकेंगे। एशिया में कम्यूनिस्ट यह प्रोपेगण्डा करते हैं कि हम श्रमरीकन लोग एशियन रक्त के लोगों से नफरत करते हैं। हम उन्हें यह दिखा देंगे कि हम इनकी ठीक वैसी ही देखभाल करते हैं जैसे सबकी करते हैं।'

जो श्रादमी हमारी बस्ती में जनरल स्टोर की दुकान का मालिक था, वह सबकी तरफ से बोला—वह पेन्सिलवानिया का एक बड़ा डच था जो हमारा सबसे वृद्ध नागरिक श्रौर सबसे श्रधिक इज़्ज़तदार तथा प्रभावशाली व्यक्ति था। वह बोला, 'हम न केवल तैयार हैं, बल्कि बच्चों को रखने पर गर्व श्रनुभव करेंगे।'

इस प्रकार वेल्कम-हाउस, इनकार्पोरेटेड, श्रारम्भ हुश्रा। इन कुछ वर्षों में इसमें बहुत-से बच्चे इकट्ठे हो गए हैं। इनमें से कुछ स्थायी रूप से हमारी बस्ती में रहते हैं जो गोद जाने का सिलसिला श्रारम्भ होने से पहले दो परिवारों में जम गए थे, पर श्रन्य बच्चे श्रब गोद लेने वाले माता-पिताश्रों के पास जाते हैं। कारण यह है कि बहुत-से ऐसे माता-पिता हैं जो एशियन रक्त वाले श्रमरीकन बच्चे रखना चाहते हैं। इन माता-पिताश्रों में से कुछ गोरे श्रमरीकन हैं, कुछ एशियन हैं श्रौर कुछ श्रंशतः एशियन हैं। ये सब ऐसे लोग हैं जिनकी पृष्ठभूमि श्रसामान्य है, श्रौर जो समझ-बूझ तथा शिक्षा श्रौर श्रनुभव में श्रागे बढ़े हुए हैं। हम श्रपने माता-पिताश्रों के बारे में बड़ी सावधानी बरतते हैं। उन्हें हमारे बच्चे जैसे भी हैं, वैसे ही प्रिय होने चाहिए। उन्हें एशियन वंश-परम्परा का मान करने वाला होना चाहिए श्रौर बच्चे को इसका मान करना सिखा सकना चाहिए। एक बार एक संभावित माता ने एक सुन्दर छोटी लड़की की श्रोर देखते हुए, जिसकी एशियन श्रांखें श्रपनी जापानी माता से मिली थीं, मुझसे पूछा, 'क्या उसके बड़ी होने पर उसकी श्रांखें

और तिरछी हो जाएंगी ?' मेरा दिल कठोर हो गया। उस औरत को हम अपने बच्चों में से कोई बच्चा नहीं देंगे। उसे समझना होगा कि तिरछी आंखें सुन्दर हैं और यदि वह नहीं समझती तो वह ठीक माता नहीं है। बहुत-से लोग ऐसी आंखों को सुन्दर समझते हैं। आखिरकार हमारे पास प्रतीक्षा करते हुए उन माता-पिताओं की एक सूची है जो हमारे बच्चे लेना चाहते हैं, और जब उन्हें स्वीकृति दे दी जाती है, तब हमारे बच्चे उनके साथ उनकी बस्तियों में चले जाते हैं और बिना अपवाद के आगे बढ़ जाते हैं। कारण यह है कि एशिया का रक्त अमरीकन बच्चे को एक कोमल मोहकता दे देता है, और इस तथ्य पर कोई विवाद नहीं है।

यह काम बहुत आसान नहीं रहा। क्या यह करने योग्य काम था ? हां, अवश्य और अनेक कारणों से। मेरे लिए ऐसे अमरीकन, जो उदार और बड़े दिल के हों, तलाश करने का काम गहरी तृप्ति देने वाला सिद्ध हुआ। वे अमरीकन, जो बच्चे प्राप्त करने में सहायता देते हैं, उनके पालन-पोषण में सहायता देते हैं और उन्हें अच्छे गोद लेने वाले माता-पिताओं के पास रखने में और इस प्रकार उन्हें सुनिश्चित रूप से अच्छे जीवन प्राप्त कराने में मदद देते हैं, तलाश करने का काम गहरी तृप्ति देने वाला सिद्ध हुआ है। अलग-अलग सामर्थ्य वाले अमरीकन, छोटे मन वाले, तंग-दिल, कुसंस्कारग्रस्त अमरीकन जिस महान् नाम से वे पुकारे जाते हैं उसके अयोग्य पुरुष और स्त्री—उन अमरीकनों का पता लगने की दृष्टि से भी यह काम करने योग्य सिद्ध हुआ है। मैं इन्हें जानना भी इतना ही उपयोगी समझती हूं जितना दूसरों को। हमारी बस्ती में सब लोग सच्चे किस्म के अमरीकन नहीं हैं, अर्थात् उस किस्म के नहीं हैं जिसपर मैं सारे संसार के आगे अभिमान कर सकूं।

और मैं आशा करती हूं कि मैं बच्चों से अपने लिए आराम प्राप्त करके बहुत स्वार्थपूर्ति नहीं करती हूं। रात के एकांत समय में, जब उषाकाल से पहले नींद खुल जाती है, तब मैं अपने हठी मन को दुनिया की समस्याओं पर और विशेष रूप से अपनी अमरीकन समस्याओं पर, जिनकी कठोरता बढ़ती चली जाती है, विचार करता हुआ पाती हूं। मैं अपने को, अपने वेल्कम-हाउस के सब बच्चों पर विचार करता हुआ देखती हूं। उनमें से प्रत्येक अब किसी अमरीकन परिवार का हो गया है। वह प्यार करता है और प्यार पाता है, और मैं अपना ध्यान इस बात की ओर ले जाती हूं कि एशिया में भी हज़ारों या शायद लाखों लोग उनके बारे में

जानते हैं। ये शब्द लिखते हुए मुझे टेलीफोन की घंटी बजने के कारण रुकना पड़ा और जब मैंने उसे उठाया तब मुझे हिन्दचीन के एक आदमी की, एक वियेतनामी की, आवाज़ सुनाई दी जो नियमित रूप से अपने देश के लिए कम्यूनिज़्म के विरुद्ध और लोकतन्त्र के पक्ष में प्रचार करता है और उसने मेरे सामने पूर्व-परिचित प्रश्न रक्खा, 'क्या मैं आकर वेल्कम-हाउस देख सकता हूं ? मैं बच्चों के बारे में सब कुछ जानना चाहता हूं। वे अमरीकन परिवारों में किस तरह गोद लिए जाते हैं, जिससे मैं अपने देशवासियों को इसके बारे में बता सकूं। यह ऐसी चीज़ है जो अमरीका के बारे में उन्हें अवश्य पता होनी चाहिए।'

'आइए,' मैंने सदा की तरह कहा, 'हमें सब बातें आपको बताकर खुशी होगी।'

हां, और वेल्कम-हाउस न केवल उस कार्य के कारण जो यह आज कर रहा है, करने योग्य कार्य है, बल्कि उस कार्य के कारण भी यह करने योग्य कार्य है जो यह अन्य गोद दिलाने वाली एजेन्सियों के लिए सिद्ध कर रहा है—कि कोई बच्चा, 'गोद लिए जाने के अयोग्य' नहीं होता यदि वे उन माता-पिता को खोज लें जिन्हें वह खास बच्चा चाहिए। अमरीका में उत्पन्न हर बच्चे के लिए माता-पिता मौजूद हैं।

ग्रीन हिल्स फार्म

आजकल यहां हमारे देश में हमारे पास बहुत-से निर्वासित हैं। मैं अपने चीनी संसार में बहुत बार निर्वासितों को देखा करती थी, पर वे गोरे लोग थे जो कभी घर नहीं जा सकते थे। कभी-कभी यह उनका अपना दोष होता था—उन्होंने चीनी स्त्रियों से विवाह कर लिए थे और या उनसे बच्चे पैदा कर लिए थे और उन्होंने जो छोटे-छोटे प्राणी शायद असावधानी में पैदा कर लिए थे, उन्होंने उन्हें ऐसा जकड़ लिया था कि वे वहीं रहते थे और अन्त में इतनी अधिक देर हो जाती थी कि वे वहां से नहीं जा पाते थे। बहुधा वे केवल इस कारण निर्वासित थे कि वे उन छोटे-छोटे अमरीकन नगरों में और फार्मों पर, जहां उनका जन्म हुआ था, रहने में आनन्द नहीं ले पाते थे। एशिया के जादू ने, प्राचीन जीवन की अनिर्वचनीय सम्पन्नता ने, कहीं के भी न होने की आसानी और आज़ादी ने, उन्हें दबोच

लिया था और वे परिवार तथा मित्रों के तंग दायरे में, जो उस जादू को कभी नहीं समझ सकते थे, नहीं लौट पाते थे।

आज मैं दूसरे निर्वासित देख रही हूं। वे यहां अमरीका में रहने वाले चीनी हैं जिन्हें अपने देश लौटने का हौसला नहीं है क्योंकि उन्होंने अपने को कम्यूनिस्टों के विरुद्ध बताया है और अब घर लौटने पर उन्हें अपने जीवन के लिए खतरा है। यह देखने में मेरी दिलचस्पी है कि निर्वासन की अवस्था का इन लोगों पर—जिन्हें मैं इतने वर्षों से जानती हूं, जिनमें प्रसिद्ध लोग भी हैं, और अज्ञात लोग भी; धनी भी हैं और गरीब भी—कैसा प्रभाव पड़ता है। कुछ चीनी निर्वासित बहुत धनी हैं। उन्होंने इस दिन की तैयारी कर ली थी और अमरीकन बैंकों में इतना काफी रुपया जमा कर दिया था कि वह उनके सारे जीवनकाल तक चल सके। वे यहां बहुत कुछ ऐसे ही रहते हैं जैसे चीन में रहते थे। आरामदेह मकानों या फ्लैटों में यहां वे अमरीकन नौकर रखते हैं और अमरीकन लोग, जो उनसे सहानुभूति रखते हैं, उनका लिहाज़ करते हैं। महिलाएं उसी तरह न्यूयार्क में महजोंग खेलती हैं, जैसे वे शांगहाई में खेलती थीं—सारे तीसरे पहर और रात के अधिकांश में—और सवेरे के समय वे सोती हैं और जागने पर फिर खेलने निकल पड़ती हैं। वे एक-दूसरे को अतिथि के रूप में निमन्त्रित करते हैं और नीग्रो शोफरों वाली सुन्दर मोटरों में सफर करते हैं। वे आम तौर से सार्वजनिक रूप में नहीं दिखाई देते और उनका अपना ही दायरा है, जिसमें वे अमरीकन भी हैं जो उनका लिहाज़ रखते हैं।

दूसरे वे प्रसिद्ध विद्वान् और लेखक हैं जो इस कारण निर्वासित हैं कि वे ऐसे युग में कनफ्यूशियस का मत मानने वाले हैं जो कनफ्यूशियस के विधि-विधान को नहीं मानता। वे शहरों में छोटे फ्लैटों में रहते हैं। उनकी पत्नियां घर का काम करती हैं और इसमें उन्हें कठिनाई महसूस होती है। 'चीन में मेरे पास तीन नौकर थे,' ऐसी ही एक चीनी महिला ने उस दिन मुझसे कहा, 'यहां मैं एक भी नौकर रखने में समर्थ नहीं हूं। मुझे अमरीकन स्त्रियों पर दया आती है। वे घर के काम की गुलाम हैं। यहां अमरीका में जीवन बड़ा ही कठिन है।'

हां, किसी चीनी निर्वासित के लिए यह कठिन है। उसके अपने देश में विद्वान् और बुद्धिजीवी का सम्मान था। यहां विद्वान् का इतना सम्मान नहीं जितना सफल पुरस्कार-विजेता या फुटबाल के खिलाड़ी या सिनेमा के अभिनेता या गाने वाले

का है। और जो निर्वासित विद्वान् है उसके प्रायः कुछ सिद्धान्त हैं, वह उन्हीं अमरीकनों को अपना मित्र स्वीकार करेगा जो उसके जैसे विश्वास रखते हैं। परम्परा से, चीनी विद्वान् चीनी सरकार में प्रशासक होता था और आज वह यह तर्क करता है, यद्यपि वह तर्क गलत है, कि जो चियांग काई-शेक के पक्ष में नहीं है वह निश्चय ही माओ त्से-तुंग के पक्ष में है। उससे कहिए कि दोनों को समान रूप से अस्वीकार भी किया जा सकता है, तो वह आपकी बात का विश्वास नहीं कर सकता—या वह करेगा नहीं। अपने संकीर्णतम संसार में, क्योंकि वह अमरीकन संसार को भी स्वीकार नहीं करता, वह निर्वासित कटुतापूर्ण और बदमिज़ाज हो जाता है। 'वह बहुत ही नीच हो सकता है,' महान् चीनी उपन्यास-लेखक लाऊ शा ने एक बार कहा था और तब मैं नहीं जानती थी कि उसका क्या आशय था।

पर आजकल लाऊ शा स्वयं एक तरह का निर्वासित है जो पीकिंग में रहता है और वह वही बोलता है जो बोलने को उससे कहा जाता है और वही लिखता है जो लिखने का उसे आदेश होता है। कभी-कभी मैं उसके लेखों और कहानियों के उद्धरण देखती हूं। मैं प्रतिध्वनियां सुनती हूं और उसके आज्ञापालन पर चकित होती हूं। पर मैं जानती हूं कि उसे उसका मुआवज़ा हासिल है। वह पीकिंग में है, वह चीन में है और उसका हृदय आज़ाद है। वह अभ्यागत के नाते रहता हुआ यहां अमरीका में सुखी नहीं था क्योंकि किसी भी चीज़ से, निर्वासन की छाया उसपर से नहीं हट सकती थी। एक बार जब वह हमारे यहां छुट्टी के दिन बिताने आया तब ऐसा हुआ कि हमने वैली फोर्स हास्पिटल के घायल सैनिकों की एक बड़ी टोली को अपने बड़े भारी अनाज-घर में एक पार्टी का निमन्त्रण दे रखा था। वे दुःखी नौजवान थे, ऐसे सैनिक थे जिनका आधा शरीर युद्ध में बूबी ट्रैप और हथ-गोलों से करीब-करीब उड़ गया था। उनके चेहरे नाम मात्र को रह गए थे और प्लास्टिक सर्जन थोड़ा-थोड़ा करके उन्हें नये सिरे से बनाने की कोशिश कर रहा था। यह पार्टी पहली ही बार अस्पताल से बाहर आई थी और अध्यक्ष-अधिकारी ने हमें चकित न होने की चेतावनी दे दी थी। मैंने बच्चों को समझाने की कोशिश की थी, पर समझाना करीब-करीब असम्भव था। सौभाग्य से हमारी कुतिया के पिल्ले उस समय बड़े सुन्दर और सबसे अधिक प्यार पाने योग्य आयु छह सप्ताह के थे। उनकी आंखें खुली हुई थीं और चंचलता का उदय हो रहा था। मैं पार्टी में कुछ मिनट देर से पहुंची और मकान से ही मैंने रैडक्रास की मोटरें उन आदमियों

को लेकर पहुंचती देखीं। बच्चे पहले ही अनाज-घर पहुंच गए थे। आने वाले समय से भयभीत होकर मैंने अपना दिल कड़ा किया और मैं मेज़बान बनने चल पड़ी।

मुझे डरने की आवश्यकता नहीं थी। निर्भ्रान्त नैसर्गिक प्रेरणा से बच्चे पिल्लों की टोकरी अपने साथ अनाजघर ले गए थे और उनकी मां रस्टी तथा पिता सिलवर, जो तब ज़िन्दा था, उनके साथ गए थे। जब मैं अनाजघर में घुसी तब मैंने हंसी की—खेलते हुए नौजवानों और बच्चों की बेसुध हंसी की—आवाज़ सुनी, और वे पिल्लों के साथ खेल रहे थे और पिल्ले एक से एक बढ़कर शैतानी कर रहे थे। वे लोग अपने चेहरों की बात भूल गए। वे क्षण भर के लिए युद्ध को भूल गए। वे फिर अपने घर पर लड़कपन की अवस्था में आ गए और बच्चे, जिन्हें पिल्लों पर अभिमान था, यह भूल गए कि उन आदमियों के चेहरे नहीं थे। वे सबके सब पिल्लों पर खूब हंस रहे थे। वह सायंकाल भारी सफलता से समाप्त हुआ।

परन्तु इस कहानी के बारे में जो बात वास्तव में बताना चाहती थी वह यह है कि लाऊ शा भी पहले ही वहां आ गया था। मैंने उससे उन लोगों के सामने भाषण देने को कहा था और खाने-पीने के बाद मैंने उसका परिचय यह कहकर कराया कि ये चीन के सबसे बड़े उपन्यास-लेखक हैं। मुझे यह बिलकुल भी धारणा नहीं थी कि वह क्या कहेगा। लाऊ शा वास्तव में बड़े पुराने फैशन का चीनी है। यदि उसका बस चलता तो मुझे निश्चय है कि वह पांच सौ वर्ष पहले के चीन में रहना पसन्द करता। वह संवेदनशील आदमी है, शायद अति-परिष्कृत, स्वभावतः कोई भी कष्टकारक बात वार्तालाप में भी कहने से बचने वाला। तब वह इन दया के पात्र नौजवान से क्या कहेगा।

वह सदा की तरह ढीले-ढाले ढंग से खड़ा हो गया, क्षण भर उनके आगे खड़ा रहा और मैंने देखा कि उसकी पलकें बन्द हो गईं। उसके बाद वह अपनी गहरी मृदु वाणी में बोलने लगा। वह किस विषय में बोला? मानिए या न मानिए, पर वह प्राचीन काल के पीकिंग में छाया-कुश्ती (कल्पित विरोधी से कुश्ती करने की कला) के बारे में बोला जो निश्चय ही इतना अपरिचित विषय था जितना कोई हो सकता है। इन अमरीकन तरुणों में से किसीने कभी छाया-कुश्ती का नाम भी शायद न सुना होगा। निःसन्देह लाऊ शा यह बात जानता था और इसलिए उसने छाया-कुश्ती की कला, उसके अर्थ, उसकी कहानी, उसके ऐतिहासिक महत्त्व—इन सब बातों की बड़े सरल और बड़े मोहक ढंग से व्याख्या करना आरम्भ

किया और इसके बाद ज़रा भी संकोच बिना किए उसने छाया-कुश्ती की गतियां स्वयं करके और एक प्रकार का नियमित नृत्य, शैलीबद्ध गतियों का एक समूह, प्रस्तुत करके अपने भाषण को स्पष्ट किया। मैं इस विषय को भली भांति जानती थी। मैंने चीनी थियेटर में छाया-कुश्ती की कला प्रायः देखी थी, पर मैं आनन्द से उल्लसित हो गई और अपने चारों ओर नज़र डालकर मैंने देखा कि वे लोग भी बिना जाने ही बात को समझकर, और शायद बात वही थी जो उन्होंने समझी, आनन्द से मुग्ध और मस्त हो गए, और दूसरे ही अनदेखे जगत् में पहुंच गए। जब लाऊ शा रुका, तब सब जगह शान्ति छा गई। एक गहरी आह निकली और इसके बाद दबादब तालियां बजने लगीं। मानवीय समझ-बूझ से मेरा यह आशय है।

एक बार फिर मैंने लाऊ शा को वही जादू करते हुए देखा। इस बार वह न्यूयार्क में कला-परिष्कृत नागर-समाज के सामने किया गया। यह ईस्ट ऐण्ड वेस्ट एसोसियेशन की एक सभा में किया गया। वह बोलने का बड़ा अनिच्छुक था। वह प्रचार और प्रकाशन से दूर रहता था और इससे वह घृणा करता था तथा राजनीति और राजनीतिक प्रश्नों से सदा बचकर चलता था। बोलने से पहले उसने वही संकोच प्रकट किया और इसके बाद एक आनन्ददायक भाषण दिया, ठीक ऐसा ही जैसा उसने पीकिंग में दिया होता। विषय क्या था? 'झींगुर, चील और पीकिंग के कुत्ते और चीनी जीवन में उनकी सार्थकता', और श्रोता और दर्शक मंत्र-मुग्ध हो गए।

लाऊ शा जैसे भले प्राणी को अन्य स्थानों की तरह अमरीका में भी क्रूरहृदय लोगों ने बार-बार ठगा। न्यूयार्क में उसने अपने एकाकी जीवन में एक बार एक ऐसे आदमी को मित्र बना लिया जो उसका प्रशंसक होने का दावा करता था और परिचय के एक-दो महीने बाद उस आदमी ने—जो मेधावी और जानकर मालूम होता था, इसलिए लाऊ शा का विश्वास-पात्र हो गया था—उससे चौबीस घंटे के लिए सौ डालर उधार मांगे। यह लाऊ शा का उस महीने का भत्ता था, पर चीनी परम्परा के अनुसार, जिसमें दोस्त को इन्कार नहीं किया जाता, उसने वह धन उस अमरीकन को दे दिया। वह फिर कभी नज़र नहीं आया। मुझे शर्म के साथ कहना पड़ता है कि इस चीनी महापुरुष को ऐसे अनेक अनुभव उठाने पड़े। हम अमरीकन लोग नहीं जानते कि इस प्रकार कितनी ही बार हमारे देश में अतिथि बने हुए लोगों से ठगी की जाती है। यदि हम जानते होते तो हम इस बात का

इतना बखान न करते कि जब हम विदेश जाते हैं तब किस प्रकार ठगे जाते हैं।

निःसन्देह चीन की क्रान्ति का चीनी पंडितों और बुद्धिजीवियों पर विनाशकारी प्रभाव हुआ और उनमें से एक भी अपनी आरम्भिक उठान के अनुसार नहीं बन सका। हू शिह की महान् पुस्तकें भी, जो इतने प्रतिभाशाली ढंग से आरम्भ हुई थीं, कभी पूरी नहीं हो सकीं। पर इसके लिए हम दोषी नहीं, तो भी कारण तो कुछ हद तक हम लोग भी हैं जो पश्चिम के निवासी हैं। चीन में साहित्यिक क्रान्ति के दो नेताओं हू शिह और चेन तू-ह्सिउ ने (और यह याद रखना चाहिए कि क्रान्तियों में पंडित और बुद्धिजीवी ही सदा नेता होते थे) बहुत पहले अपने-आपको पश्चिम के साथ बांध लिया था, जैसा कि मैं बता चुकी हूं। चेन तू-ह्सिउ ने तो कनफ्यूशियनवाद की भी यह कहकर आलोचना की थी कि यह मानवीय अधिकारों का निषेध करता है, और हू शिह की उन दिनों यह मान्यता थी कि पश्चिम की संस्कृति को केवल इस कारण भौतिकतावादी नहीं समझना चाहिए कि वह जीवन को पहले से आसान बना देती है। दोनों ने पश्चिमी तरीकों को पूरी तरह अपना लेने के पक्ष में विचार प्रकट किए थे।

पर साहित्यिक क्रान्ति, जो इन दो नौजवानों ने इतने प्रबल रूप में आरम्भ की थी, जनता तक पहुंचने का अपना उद्देश्य पूरा न कर सकी क्योंकि पहले महायुद्ध ने पश्चिमी सभ्यता में गहरी त्रुटियां दिखलाईं। एशियन होने के नाते युद्ध उनके मन को चोट पहुंचाने वाला था क्योंकि उनके लिए सभ्यता का अर्थ था सार्वभौम मानवतावाद जिसका अनिवार्य परिणाम था शान्ति। युद्ध के बाद रूस की क्रान्ति की प्रबलता ने और भीषणता ने भी चेन तू-ह्सिउ की ज्वलन्त प्रकृति को आकृष्ट किया क्योंकि उसका तर्क यह था कि यदि आज संसार में शक्ति का रहस्य हिंसा है तो इष्ट साध्य का सबसे अधिक हिंसक साधन ही चुना जाए। वह चीनी कम्यूनिस्ट पार्टी का संस्थापक और नेता बन गया। हू शिह ने जो भिन्न प्रकृति का आदमी है, अपना कार्य हमेशा के लिए अधूरा छोड़ दिया और वह पंडित अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव से युक्त व्यक्ति का जीवन बिताने लगा।

मैं किसीको दोष देने नहीं बैठी हूं। लेखक को ज़माने के अन्यायों और दुःखों से गहरी हानि उठानी पड़ती है। यह भी अनिवार्य है कि निर्वासन के सूनेपन में—क्योंकि मुझे भय है कि बहुत-से चीनी फिर कभी अपनी मातृभूमि नहीं देखेंगे, वे इतने अधिक बूढ़े हो चले हैं, और वे यह बात जानते हैं—उन्हें अपने अमरीकन

पड़ोसियों की, और कभी-कभी अपने अमरीकन मित्रों की भी उदासीनता बहुत अधिक चुभती है और वे अमरीका से प्यार नहीं कर सकते। इसलिए हमें उन्हें याद रखना चाहिए और उनके प्रति पूर्ण सम्मान प्रदर्शित करना चाहिए क्योंकि उनके यहां होने में हमारी इज़्ज़त है।

इन वर्षों में, जब मेरा व्यक्तिगत जीवन घर और बढ़ते हुए परिवार में डूबा हुआ था, तभी मैं अपने देशवासियों के बारे में भी ज्ञान प्राप्त कर, रही थी। चीन में और चीनियों के साथ बिताये हुए जीवन ने मुझे मनुष्य-प्राणियों के बारे में बहुत कुछ सिखाया था—क्योंकि प्राचीन देशों में मानवता और मानवीय सम्बन्ध सबसे प्रथम विचारणीय विषय होते हैं। मेरे चीनी मित्रों के लिए किसी व्यक्ति के बारे में और किसी बात की अपेक्षा यह जानना सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण था कि वह कैसा अनुभव करता है, क्योंकि जब तक यह पता न लगे कि दूसरा व्यक्ति कैसा अनुभव करता है, तब तक उसके साथ मित्रता नहीं की जा सकती, और न दोनों पक्षों के लिए हितकर व्यापार ही किया जा सकता है। मैंने इस शिक्षा का और इसके कौशलों का अपने नये जीवन में, अपने चारों ओर रहने वाले लोगों पर, पड़ोसियों और परिचितों पर और प्रतिदिन आकस्मिक मिलने-जुलने वालों पर प्रयोग किया। अधिक व्यापक और विस्तृत जानकारी पाने के लिए मैंने देश के अधिकतर भागों की यात्रा की जिससे मुझे उत्तर और दक्षिण, तथा पूर्व और पश्चिम का वैषम्य दिखाई दे सके। जो वैषम्य चीन में या किसी भी दूसरे देश में मैंने विभिन्न प्रदेशों में देखा था, वह कहीं भी इतना अधिक नहीं था।

मेरे देशवासी जैसे हैं, उन्हें मैंने उसी रूप में जानना आरम्भ किया—उदार, लहरी, भावुक लोग, न केवल स्वभाव से, बल्कि वातावरण से भी अस्थिर। यह वातावरण ऐतिहासिक भी है और वर्तमान भी। हम आरम्भिक और देहाती संस्कृति से इतनी तेज़ गति से चलकर औद्योगिक अवस्था और इसके परिणामस्वरूप नागरत्व में पहुंचे हैं कि हम अब भी सभ्यता के दो मुख्य रूपों के बीच बंटे हुए हैं। हमारी राजनीतिक प्रणाली ने भी हमारे जीवन की अस्थिरता को प्रोत्साहित, और अंशतः उत्पन्न भी, किया है। हमारे केन्द्रीय शासन में हर चार वर्ष में पूरा उलट-फेर, या उलट-फेर करने का प्रयत्न, बीच के समय में स्थानीय राजनीति की अस्थिरता, और

पद-काल का छोटापन न केवल बड़े अफसरों के लिए, बल्कि छोटों के लिए भी स्थायी नीतियों और सिद्धान्तों का पनपना असम्भव कर देते हैं। हमारे दैनिक जीवन में जल्दबाज़ी और हड़बड़ी की भावना व्याप्त है, जो इस कारण पैदा होती है कि अगले परिवर्तन से पहले कार्य समाप्त कर लेना आवश्यक है, और यह भावना हमारे चिन्तन में समाई हुई है। इंगलिश लोकतन्त्रीय प्रक्रियाओं के सुरक्षाकारक उपाय, जिनसे कोई सरकार तब तक कायम रहती है जब तक लोग उसे हटा न दें, हमारे यहां नहीं हैं। अच्छे हों या बुरे, पर कुछ लोग वर्षों की एक निश्चित संख्या तक पद पर कायम रहने का भरोसा कर सकते हैं, वे अच्छा काम करें या बुरा और या कुछ भी न करें। और फिर, अच्छाई चाहे कितनी हितकर हो, पर वह स्थायी नहीं हो सकती क्योंकि चार साल में या आठ साल में—इससे अधिक का मौका बहुत कम होता है—सारा शासन-चक्र बदल जाता है या बदला जा सकता है। अमरीकन जीवन और चिन्तन के गहरा न होने का सबसे बड़ा कारण मैं इसी एक बात को मानने लगी। हम प्रतिदिन का जीवन बिताते हैं, आगे आने वाले बहुत वर्षों तक की योजना नहीं बना सकते क्योंकि यह भय रहता है कि कहीं नई सरकार बहुत अधिक परिवर्तन न कर दे। बीच-बीच में आने वाली राजनीतिक अनिश्चितता का मेरे देशवासियों के जीवन पर जो विनाशकारी प्रभाव होता है, उसपर मैं जितना बल दूं, थोड़ा है, विशेष रूप से तब जब कि इसके साथ-साथ हमारे सामने एक ऐसी आबादी को मिलाकर एक करने का भारी काम भी है, जो संसार के अनेक भागों से आई है और इतनी तेज़ी से आई है कि वास्तविक ऐक्य पैदा करने का समय नहीं मिला—वास्तविक ऐक्य राजनीतिक संगठन में इतना नहीं होता जितना कि एक साथ बिताए हुए सुदीर्घ सांझे जीवन से पनपने वाली परम्परा और प्रथा की गहरी मानवीय जड़ों में होता है।

इस प्रकार विचार करते हुए मुझे १९४१ में अमरीका-वासियों के भविष्य के बारे में चिन्ता होने लगी थी। मैं अच्छी तरह जानती थी कि युद्ध के अन्त में हम विजयी पक्ष में होंगे और निःसन्देह विजेताओं में भी सबसे अधिक बलवान् होंगे और इसलिए एशिया के राष्ट्र हमसे नेतृत्व की आशा करेंगे, जो हम प्रस्तुत न कर सकेंगे और इसका मुख्य कारण हमारी अपनी अस्थिरता होगी, परन्तु एक कारण यह भी होगा कि हम एशियन लोगों और उनके इतिहास, और युद्धोत्तर-जगत् में उनके महत्त्व से बिल्कुल अपरिचित हैं। जब मैं महत्त्व कहती हूं तब मेरा आशय न

केवल उनकी सम्भावित शक्ति के महत्त्व से है बल्कि उस उफान और गड़बड़ी और संघर्ष में उनके महत्त्व से भी है जिसमें हम अनिवार्यतः सारे संसार में उलझेंगे, पर जिनका केन्द्र इस बार एशिया में होगा---क्योंकि द्वितीय महायुद्ध उसी समय हुआ है जब स्वतन्त्र, आधुनिक जीवन के लिए एशिया वालों ने दृढ़ संकल्प कर रखा था। हम चाहे जितनी कोशिश करें, पर पहले महायुद्ध के बाद की तरह हाथ सिकोड़कर अब इससे नहीं बच सकते। इस बार एशिया को हिसाब में जोड़ना ही होगा। परन्तु हमारे लोग इन देशों के साथ ऐसे भविष्य का कैसे सामना करेंगे जब हम उनके अतीत के बारे में कुछ भी नहीं जानते। ऐसे मामलों पर बीच-बीच में विचार करते हुए मैं परेशान हो गई क्योंकि मुझे गोरे के खिलाफ एशिया में मौजूद गहरी शत्रुता का पता था। क्या अमरीकन लोग इतिहास के इन प्रतिशोधों से बच सकेंगे? मैं इस नतीजे पर पहुंची कि एकमात्र आशा इसी सम्भावना में है कि हम अपने-आपको एक पृथक् जाति, एक नई जाति, के रूप में स्थापित कर सकें जिसका पुराने साम्राज्यों और उपनिवेश बसाने के कार्यों से विचारमात्र का भी सम्बन्ध न हो। हमें एशियावासियों से अतीत से सर्वथा अस्पृष्ट अमरीकनों की तरह व्यवहार करना चाहिए और इस सम्भावना में हमारी कुछ खुशकिस्मती थी क्योंकि हमने वस्तुतः उपनिवेश बसाने के लिए कोई सक्रिय युद्ध नहीं छेड़े थे और न कोई वास्तविक उपनिवेश कायम किए थे, और क्योंकि फिलीपीन्स में हमारा शासन अपेक्षाकृत प्रबुद्ध रहा था, और यह स्पष्ट था कि वहां बने रहने की भी हमारी कोई इच्छा नहीं थी। हम काफी सौभाग्यशाली थे क्योंकि एशिया में, और विशेष रूप से चीन में, हमारे प्रति सद्भावना का बड़ा कोष संचित था जिसका हम भविष्य में उपयोग कर सकते थे। केवल नई और विचारहीन कार्यवाही से ही यह नष्ट हो सकता था। युद्ध के समय ऐसा होना सदा सम्भव है जब बहुत-से नौजवानों को जैसे-तैसे और बिना वास्तविक तैयारी के जहाज़ों पर लादकर किसी दूसरे देश में पहुंचा दिया जाता है। इसका हमें योरुप में प्रथम महायुद्ध में अनुभव हुआ था।

मैं कभी ईसाई मिशनरी नहीं रही और सच पूछिए तो मुझे इस सामान्य विचार से नफरत है। फिर भी मैं अच्छी तरह जानती हूं कि मिशनरी परिवार में पालन-पोषण होने के कारण मैं ऐसी हो गई हूं कि किसी स्थिति में, जिसमें सुधार की आवश्यकता हो, मैं व्यक्ति रूप में जो कुछ कर सकती हूं, कम से कम उसके लिए अपने को ज़िम्मेदार महसूस करती हूं। तो मैंने अपने-आपसे पूछा कि मैं अपने

देशवासियों की—उनमें से थोड़े ही लोगों की और छोटे पैमाने पर ही सही—क्या सहायता कर सकती हूं जिससे वे उन लोगों के जीवन और विचारों के बारे में कुछ जान सकें जिनके साथ उन्हें भविष्य में, और बहुत ही निकट भविष्य में, चाहे मित्रों के रूप में हो चाहे शत्रु के रूप में, पर अनिवार्यतः व्यवहार करना पड़ेगा। मैं अपने देशवासियों के लिए जो एक उपहार लाई थी वह था एशिया का, और विशेष रूप से चीन तथा जापान का ज्ञान जो न केवल वहां वर्षों जीवन बिताने से, बल्कि वर्षों के एकाग्र अध्ययन, यात्रा और निरीक्षण से प्राप्त हुआ था। यह सच है कि मैंने पुस्तकें लिखीं, पर पुस्तकें, यहां तक कि बेस्ट सेलर अर्थात् सबसे अधिक बिकने वाली भी हमारे देश की कुल आबादी के बहुत थोड़े-से लोगों के पास पहुंच पाती हैं। क्या वे पथप्रदर्शक मस्तिष्कों के पास नहीं पहुंचतीं ? पहुंचती हैं, पर हमारे जैसे लोकतन्त्र में पथ-प्रदर्शक मस्तिष्कों को स्थायी प्रभाव डालने वाला स्थान कदाचित् ही मिलता है, और जो लोग कांग्रेस (अमरीकन संसद्) या व्हाइट हाउस (अमरीकन राष्ट्रपतिभवन) में बैठते हैं वे प्रायः हमारे पथप्रदर्शक मस्तिष्क नहीं होते, वे विचारक नहीं होते, चिन्तन के लिए या विचारपूर्ण यात्रा के लिए तो उनके पास और भी कम समय होता है। मैंने यह सोचा कि लोकतन्त्र में जनता को ही जानकारी प्राप्त करानी चाहिए।

परन्तु कैसे ?

कुछ वर्ष तक मेरा पति 'एशिया मैगज़ीन' का सम्पादक रहा था। यह एक मासिकपत्र था, जो १६१७ में विलार्ड स्ट्रेट ने, जो उस समय पीकिंग में वाणिज्य-दूत था, शुरू किया था। जिस अद्भुत मनोरंजक दृश्यावली में वह काम करता था, उससे प्रभावित होकर विलार्ड स्ट्रेट ने अपने धन का कुछ हिस्सा एक पत्रिका में लगा दिया जिसका उद्देश्य रंगीन और शक्तिशाली एशियन जातियों का प्रामाणिक गद्य और चित्रों में वर्णन करके अमरीकन जनता को जानकारी देना और उसका मनोविनोद और मनोरंजन करना था। उस पत्रिका में मेरी कुछ भावनात्मक दिलचस्पी थी क्योंकि मेरी अपनी कुछ आरम्भिक रचनाएं इसमें प्रकाशित हुई थीं और मैं बीच-बीच में इसके लिए लिखती रही थी। फिर भी यह पाठकों की उतनी संख्या कभी नहीं जुटा सका जितनी का यह पात्र था। ऐसा मालूम होता था कि अमरीका वालों को एशिया के बारे में आकृष्ट नहीं किया जा सकता। इस पत्रिका ने ऊंचा स्तर कायम रखते हुए प्रतिवर्ष बहुत धन खोया था और कोई सम्पन्न

परिवार ही इसे जारी रख सकता था, जैसे कि श्रीमती स्ट्रेट ने श्री स्ट्रेट की मृत्यु के बाद और लियोनार्ड एमहर्स्ट से अपना विवाह हो जाने के बाद इसे जारी रखा। मेरे पति ने अपने सम्पादकत्व के वर्षों में प्रामाणिकता कायम रखने को सबसे अधिक महत्त्व देते हुए इसपर होने वाली हानि को लगातार कम किया, पर पाठकों की संख्या अधिक नहीं बढ़ी। ऐसा प्रतीत होता था कि सामने मौजूद अनिवार्य भविष्य के बावजूद केवल लगभग पन्द्रह हज़ार या अधिक से अधिक बीस हज़ार अमरीकनों को एशियन राष्ट्रों में दिलचस्पी थी।

क्या यह बात सच हो सकती थी? मुझे यह असम्भव मालूम हुई, और जब १९४१ में श्रीमती एमहर्स्ट ने पत्रिका बन्द करने का फैसला किया तब मेरे पति ने और मैंने यह देखने के लिए इसे कुछ दिन जारी रखने की इच्छा प्रकट की कि इस थोड़ी दिलचस्पी को बढ़ाया जा सकता है या नहीं। अमरीका में कोई और ऐसी पत्रिका नहीं थी जिसमें एशियन जीवन के बारे में पूरी-पूरी और प्रामाणिक जानकारी रहती हो। उस समय अपने लोगों को जानकारी देने के और उनकी अपनी सुरक्षा और कल्याण के लिए आवश्यक ज्ञान प्रदान करने के अन्तिम साधन को खत्म करना मूर्खता मालूम होती थी। यह मेरी अपने जीवन की अधिक से अधिक मिशनरी इच्छा थी और मेरा पति भी मुझसे सहमत था। हमें पत्रिका और उसकी सब पूंजी इस आशा से (जिसे श्रीमती एमहर्स्ट से बढ़ावा मिला) दे दी गई कि इसे बचाया जा सकेगा। इतना कहना काफी है कि हमने इसे अगले पांच साल तक जारी रखा, जब तक कि युद्ध के बाद की घटनाओं से इसे चलाना असम्भव न हो गया। तथ्य यह है कि युद्ध के वर्षों में एशिया के बारे में अमरीकनों की दिलचस्पी बढ़ गई थी और यदि काफी कागज़ उपलब्ध होता तो पत्रिका आत्मनिर्भर हो गई होती।

उन्हीं दस वर्षों में मैंने 'ईस्ट ऐंड वेस्ट ऐसोसिएशन' की स्थापना भी की और इससे बहुत-सी पुस्तकों के लिए काफी ज्ञान प्राप्त किया। मैंने देखा कि पत्रिका भी हमारे लोगों को शिक्षित नहीं करती। वे पढ़ने की अपेक्षा सुनने से अधिक जानकारी पाते थे और सबसे अधिक तो देखकर पाते थे। तो, मैंने सोचा, यहां एशिया के ऐसे पुरुषों और स्त्रियों को क्यों न लाया जाए जो स्वयं अपनी बात कह सकें, अपना सच्चा रूप दिखा सकें और अपने इतिहास और सभ्यता की व्याख्या कर सकें। अमरीकन बस्तियों के लिए एक प्रकार की एशिया-विषयक प्रौढ़ शिक्षा का साधन क्यों न बनाया जाए? इस प्रकार हमारे लोगों को एशियन नागरिकों से प्रत्यक्ष

रूप से एशिया की कहानी प्राप्त होगी, जिसमें न कोई पक्षपात होगा और न कोई अनुरोध। यह विचार बिल्कुल सीधा-सादा था। अमरीका में अनेक देशों के बहुत-से मनोरंजक और विद्वान् व्यक्ति थे। मेरी विशेष रूप से एशिया वालों में दिलचस्पी थी, पर यदि योरुप से भी ऐसे लोग आएं तो उन्हें भी क्यों न शामिल कर लिया जाए। वसुधा भर के लोग वास्तव में एक ही कुटुम्ब हैं, यह बात मैंने आरम्भ में ही श्री कुंग से सीखी थी। यदि औसत अमरीकन अपने-आपको मानव-जाति के हिस्से के रूप में देख सकें तो उनमें कुतूहल, और उससे दिलचस्पी और उससे समझ-बूझ पैदा हो सकती है। शिक्षा की प्रचलित विधि यही थी।

हमने एक छाटा संगठन स्थापित किया, उसके लिए टैक्स की छूट कराई, और पुरस्कर्ताओं की एक अच्छी सूची बनाई और अपने कार्य का आरम्भ वाशिंगटन में एक भोज करके किया जिसके बाद न्यूयार्क में एसोसिएशन का उद्देश्य समझाने के लिए एक सभा हुई। न्यूयार्क में वेंडल विल्की ने मुख्य आरम्भिक भाषण दिया और वहीं मैंने उसे पहली बार अपना 'एक विश्व' का विचार प्रस्तुत करते हुए सुना। हू शिह ने भी, जो वाशिंगटन में उस समय चीनी राजदूत था, भाषण दिया और अन्य एशियन दूतावासों के प्रतिष्ठित व्यक्ति भी बोले। कार्य शुरू हो गया था। यह निःसन्देह ऐसी सभाओं द्वारा आगे नहीं बढ़ना था, बल्कि देश में दूर-दूर तक भ्रमण करने वाले लोगों द्वारा बढ़ना था जो कभी अकेले, कभी पति-पत्नी, और कभी, जब वे मनोरंजन-कर्ता हों तब, समूह रूप में यात्रा करेंगे और उनका कार्य राजनीतिक न होकर, सांस्कृतिक ही होगा और सांस्कृतिक में भी यह सादा, मैत्री-पूर्ण और सजीव कार्य होगा। वे अपने देश के प्रतिदिन के जीवन की बातें बताएंगे, अपने तरीके, विचार और आशाएं प्रस्तुत करेंगे और अपने कथन को अपने देश की पोशाकों, चित्रों, वाद्ययन्त्रों या नाटक द्वारा स्पष्ट करेंगे। हमने अच्छे आदमी छांटे, जो आवश्यक नहीं कि प्रसिद्ध या बहुत ही अधिक कुशल हों, और सच्ची बात तो यह है कि मैं बहुत प्रसिद्ध लोगों से तो बचना ही चाहती थी। मैं चाहती थी कि औसत अमरीकन एशिया के उन नर-नारियों को देखें जो उनके ही जैसे थे, वे उन अध्यापकों, छात्रों और टेकनिकल आदमियों को देखें जो यहां अमरीकन विधियां सीखने आए हुए हैं। हमारे पास जो सबसे अच्छे आदमी आए उनमें एक मितभाषी छोटा-सा भारतीय प्रोफेसर था, जो यहां छुट्टी का साल बिताने आया हुआ था—वह अनेक बस्तियों में गया और उसने सब तरह के लोगों

से बातचीत की और वह अमरीकन घरों में ठहरा और दोपहर में भोजन के समय तथा शाम को आग के पास बैठकर उसने प्रश्नों के उत्तर दिए। ऐसे आने वालों का खर्च स्थानीय समूहों द्वारा उठाया जाता था और मुझे यह देखकर अच्छा लगा और विस्मय हुआ कि मेरा यह विचार गलत था कि अमरीकन लोग एशिया के लोगों के बारे में जानने की कोई परवाह नहीं करते। यह ठीक है कि एशिया के रूप में एशिया में कोई दिलचस्पी नहीं थी, पर एशिया का कोई पुरुष या स्त्री, साक्षात् मौजूद होकर उनके अपने ही नगर में हाई स्कूल के सभासदन में या रविवार को चर्च के मंच से भाषण दे, रात को वहीं रहे और शाम के भोजन के लिए कोई एशियन भोजन तैयार करे, और बर्तन धोने में मदद करे और इस प्रकार अपने-आपको मानवीय तथा मैत्रीपूर्ण रूप में प्रस्तुत करे तो उसमें अमरीकनों की बड़ी दिलचस्पी थी। उनकी दिलचस्पी इकतरफा भी नहीं थी। आगन्तुक स्वयं प्रसन्न आंखों से न्यूयार्क में हमारे ईस्ट ऐंड वेस्ट एसोसिएशन के कार्यालय में लौटते थे। इतना ही नहीं कि उन्होंने अमरीका वालों को अपने देशों और लोगों के बारे में बताया—और उन्हें इस तरह बताने का यह अवसर बड़ा अच्छा लगा—बल्कि साथ ही उन्हें अमरीका के बारे में इस तरह सीखने का अवसर मिला जिस तरह पहले कभी नहीं मिला था। वे कहते थे कि यह होटल में रहने से, किसी अजनबी नगर की सड़कों पर घूमने से, यहां तक कि किसी विश्वविद्यालय के छात्रावास में रहने या कक्षा में बैठने से भी सर्वथा भिन्न प्रकार का रहना था। वे अमरीकन घरों में ठहरे थे, वे बच्चों में साथ खेले थे, उन्होंने मछली पकाने में मदद दी थी, स्कूलों के सभा-भवनों में वास्तविक लोगों से मुलाकात की थी और हज़ारों प्रश्नों के उत्तर दिए थे। उन्होंने अमरीकन स्त्रियों को साड़ी पहननी सिखाई थी, कोरियन स्त्रियों की तरह पूरा लहंगा और कुर्ती पहनना सिखाया था और चीनी भोजन पकाना सिखाया था। उन्होंने व्यापारियों, अध्यापकों, प्रचारकों और मज़दूरों से बातचीत की थी। अब वे अपने देश जाकर अपने यहां के लोगों को यह बता सकेंगे कि अमरीकन लोग वास्तव में कितने मैत्रीपूर्ण और अच्छे हैं जो राजनीतिज्ञों और सरकारी अफसरों से भिन्न लोग हैं।

एक साल हमने एक बस किराये पर ले ली और तरुण चीनी अभिनेताओं और अभिनेत्रियों के एक दल को अपने देश में नये व पुराने नाटक दिखाने भेजा। उनका उद्घाटन-प्रदर्शन श्रीमती रूज़वेल्ट तथा कुछ अन्य मित्रों के सामने व्हाइट हाउस

में हुआ और वहां पहले वांग युंग ने चीनी किसान-जीवन के महत्त्वपूर्ण कार्य प्रस्तुत किए। यह तरुण अभिनेत्री युद्ध से पहले आधुनिक चलचित्रों में कार्य करती थी और जापानियों के आक्रमण के बाद उसने अन्य अभिनेताओं के साथ मिलकर चलती-फिरती नाटक-मंडली गठित की, जिसका उद्देश्य तरुण किसान को जापानियों के प्रतिरोध के लिए शिक्षित करना था। यह मंडली कई भागों में बंट गई थी ताकि चीनी देहात के अधिकतर भाग में अपना सन्देश पहुंचा सके और ये लोग स्वयं-रचित नाटकों में गाना और अभिनय करते थे तथा ऐतिहासिक नाटक भी दिखाते थे। वांग युंग और उसकी मंडली ने चीन के कई प्रान्तों में भ्रमण किया। अन्त में हांगकांग में वह जापानियों की पकड़ में आने से बच गई क्योंकि उसने एक भिखारिन का वेश बना लिया था, और यद्यपि वह तरुण और सुन्दर थी, पर उसने अपना सारा शरीर अन्दर तक धूल से भर लिया था, ठीक वैसे ही जैसे किसी पुराने भिखारी पर स्वभावत: धूल जम जाती है, और इस प्रकार अपना जीवन बचाया था। चीन से सुरक्षित निकलकर इस मंडली ने फिर मलाया और बर्मा में नाटक खेले और जब अन्त में यह भंग हुई तब वांग युंग को पुरस्कार के रूप में अमरीका की यात्रा पर आने की अनुमति मिल गई। यहां वह मुझसे मिलने और फिर ईस्ट ऐंड वेस्ट एसोसिएशन में अपना कौशल प्रदर्शित करने आई। वह एक अनोखी तरुण आधुनिक व्यक्ति थी जो एक अच्छे पुराने परिवार की होती हुई भी चीनी परम्परा और कौशल में पूर्णतया निष्णात और गहरी गई हुई थी।

मैं नहीं जानती कि श्रीमती रूजवेल्ट भी यह समझी या नहीं कि वांग युंग ने उस रात व्हाइट हाउस के शानदार ईस्ट रूम में चीनी किसान स्त्री का कितना यथार्थ और बढ़िया चित्र प्रस्तुत किया था, पर मुझे उसे देखते हुए गहरा आनन्द अनुभव हुआ। अन्ततः यहां, मेरे अपने देश के बीचोंबीच एक चीनी स्त्री ने अपने देशवासियों का चित्र प्रस्तुत किया था। और यही प्रसन्नता मुझे महीनों बाद न्यू ओर्लियन्स में हुई, जहां मैं इस नाटक-मंडली से इसकी यात्रा के बीच में मिलने गई थी। उस अद्भुत और सुन्दर नगर में, जिसमें योरुप का पुराना जीवन हम अमरीकियों द्वारा बनाए हुए आधुनिक जीवन से मिलता है, उस तरुण चीनी को फिर एक विशाल दर्शक-समाज के सामने, चीन में पुराने और नये ठीक ऐसे ही मिश्रण का नाटक प्रस्तुत करते देखा।

अमरीकन दर्शक निश्चय ही चीनी नाटक की सूक्ष्म बारीकियों को नहीं समझ

सकते थे, और इसकी मैंने आशा भी नहीं की थी। पर शायद उन्होंने प्राचीन और नवीन के संघर्ष में जीवन और प्रेम की वास्तविकता को पकड़ लिया और यह मानवीय संघर्ष सर्वत्र एक-सा है। मेरी इच्छा थी कि हम इस घूमती-फिरती नाटक-मंडली को जारी रख पाते क्योंकि उनका कार्य सजीव और सच्चा था, पर इस तरह के कार्य में खर्च सदा बहुत होता है। और अमरीका-स्थित चीनियों में, जो राष्ट्र-वादियों से सहानुभूति रखते थे, उदार व्यक्तियों के बावजूद उस मंडली को जारी नहीं रखा जा सका और इसलिए अन्त में इसका काम बन्द हो गया।

ऐसे सरल उपायों से एशिया के अच्छे-अच्छे लोग अनेक अमरीकन बस्तियों में गए, और यद्यपि मैंने पहले अपने ही देश वालों की बात सोची थी, पर मुझे यह देखकर सन्तोष हुआ कि आगन्तुक लोग अमरीकनों के बारे में एक नई भावना और बहुत अच्छी भावना साथ ले गए। हमारे ईस्ट ऐंड वेस्ट एसोसिएशन के अतिथि सदा एशियन ही नहीं होते थे, बल्कि कभी-कभी ऐसे गोरे पुरुष और स्त्री भी होते थे जिन्हें एशिया का, और कभी-कभी दुनिया के दूसरे हिस्सों का भी, विशेष ज्ञान होता था। पर स्वभावतः एशिया मेरा मुख्य विचारणीय विषय था क्योंकि इसके बारे में अमरीकनों में बड़ा गहरा अज्ञान था।

वह बहुत मनोरंजक, और मेरे विचार से मूल्यवान् काम बन्द क्यों हो गया? क्योंकि दस वर्ष बाद मैंने इसका कार्य बन्द कर दिया यद्यपि यह मेरे लिए भी शिक्षादायक सिद्ध हुआ था, क्योंकि इसने मुझे अनेक बस्तियों में पहुंचाया और बहुत सारे अमरीकनों से मेरा सम्पर्क कराया जिनसे अन्यथा मेरी कभी मुलाकात न हुई होती। इसके दो कारण थे एक तो रुपये-पैसे का, क्योंकि यद्यपि बस्तियां अपना-अपना खर्च स्वयं उठाती थीं पर एशियन अतिथियों, वक्ताओं, मनोरंजन प्रस्तुत करने वालों और मित्रों की मांग बढ़ती जाने के कारण दफ्तर को बढ़ाना आवश्यक हो गया और इसके लिए मुझे कभी कोई मदद न मिल सकी। फाउन्डे-शन कहलाने वाले संस्थान गवेषणा के लिए या दान के रूप में दया-कार्यों के लिए पैसा देते हैं और ईस्ट ऐंड वेस्ट एसोसिएशन इनमें से कोई भी नहीं था। यह एक शिक्षणात्मक परीक्षण था जिसका उद्देश्य दो जातियों, विशेष रूप से एशिया की जातियों और अमरीका के बीच मित्रता और आपसी समझ-बूझ पैदा करना था। इसमें कोई बड़ी साहस वाली, या विचार की दृष्टि से कोई नई बात न थी, पर किसी पुराने आदर्श का भी व्यावहारिक प्रयोग उन व्यक्तियों के लिए चिंताकारक

बन सकता है जिन्होंने पहले कभी ऐसी बात नहीं सोची। एक दूसरा कारण और था। यह कार्य बहुत देर में शुरू किया गया था और इसलिए मुझे १९४६ में भी यह भय पैदा हुआ था, जब हमारे मुख्य अमरीकन प्रतिनिधि ने सानफ्रांसिस्को सम्मेलन में बहुत-से बड़े-बड़े एशियन लोगों के सामने यह ऐलान किया था कि भविष्य में अमरीकन नीति का सम्बन्ध एशिया की औपनिवेशिक जातियों की स्वाधीनता से नहीं हो सकता।

इन शब्दों का उन एशियन लोगों पर कितना घातक प्रभाव हुआ होगा जो हमारा इतिहास उससे अधिक अच्छी तरह जानते थे जितना हम उनका, जिन्होंने जार्ज वाशिंगटन के इसलिए गुण गाए थे कि उसने अपने देश को एक साम्राज्य-वादी शक्ति से स्वतन्त्र कराने के लिए संघर्ष किया था; जो अब्राहम लिंकन की इसलिए पूजा करते थे कि उसने काली चमड़ी वाले गुलामों को आज़ाद किया था। उनकी आशाएं, उनके अपने आदर्श, उन्हें हमारे अमरीकन संविधान में और बिल आफ राइट्स में अभिव्यक्त दिखाई दिए थे। और अब उनसे कहा गया था कि ये सिद्धान्त सब जातियों के लिए नहीं हैं, जैसे कि वे समझते रहे थे, बल्कि केवल अमरीकनों के लिए हैं। वे शब्द बोले जाते ही मैं तुरन्त समझ गई कि चाहे कोई कुछ कर ले, पर अब अनिवार्य भविष्य को रोका नहीं जा सकता। कम से कम चीन और सारा एशिया हमारे नेतृत्व से निकल जाएगा। मुझे यह बात अविश्वसनीय लगती थी कि ऐसे शब्द मुंह से भी निकाले जा सकते हैं, कि कोई आदमी ऐति-हासिक दृष्टि से और वर्तमान घटनाचक्र से संसार के बारे में इतना अविश्वसनीय रूप से बुद्धू और अज्ञानी हो सकता है कि ऐसे समय और ऐसे स्थान पर ऐसे शब्द मुंह से निकाले। मैं सचमुच ही कई महीने तक शोक मनाती रही। मैंने अपने शरीर पर काले कपड़े नहीं पहने तो भी मेरा मन अन्धकार से ढका हुआ था और मेरा हृदय सुनसान था। हमने १९४६ में एशिया मैगज़ीन बन्द किया और चार वर्ष बाद यह निश्चय हो जाने पर कि हमारे खतरनाक ज़माने में मानवीय समझ-बूझ लाने का कोई उपाय नहीं है, मैंने ईस्ट ऐंड वेस्ट एसोसिएशन भी बन्द कर दिया। संगठन तो मौजूद है ताकि समय आने पर इसे पुनर्जीवित किया जा सके पर वह निष्क्रिय है। फिर भी जहां-तहां लोगों के समूह स्वयं प्रयत्न करके अब भी इसके नाम से इकट्ठे होते हैं और वे एशिया से आए हुए नर-नारियों को जानकर समझ-बूझ पैदा करने के दृढ़ संकल्प के कारण इकट्ठे होते हैं, पर वे स्वतन्त्र हैं।

यदि मैं उस अजीब वातावरण को पहले से देख सकी होती जो मेरे देश में १९४६ से छाया हुआ है जिसमें अच्छे आदमियों और सच्चे विद्वानों को इस कारण अपनी नौकरियों और अपने यश से हाथ धोना पड़ा है कि उन्हें उन क्षेत्रों के बारे में, जो अमरीकन नेतृत्व के अभाव में कम्यूनिज़्म के अधीन हो गए हों, जानकारी और समझ-बूझ है, तो मेरा निश्चय पुष्ट हो गया होता। क्योंकि यद्यपि ईस्ट ऐण्ड वेस्ट एसोसिएशन ने कभी किसी कम्यूनिस्ट या राजनीतिक व्यक्ति को किसी अमरीकन बस्ती में नहीं भेजा। फिर भी, आज सब लोगों के भाईचारे में, सब मूलवंशों की समानता में, मानवीय समझ-बूझ की आवश्यकता में और शान्ति की सामान्य समझदारी में विश्वास प्रकट करना भी खतरनाक है—ये सब वे सिद्धान्त हैं जिनमें मेरा पालन-पोषण हुआ है, जिनमें मैं निश्चय ही विश्वास करती हूं और मृत्यु-पर्यन्त निर्भीकता से विश्वास करती रहूंगी। नहीं, पर मैंने ईस्ट ऐन्ड वेस्ट एसोसिएशन को इसलिए भी बन्द कर दिया होता क्योंकि मैं अपने एशिया से आए मित्रों को, हमारे ज़माने में इतने प्रचलित झूठ और सन्देह तथा झूठे आरोपों का शिकार बनने देने को तैयार न होती। फिर भी मैं उन दस वर्षों के लिए भगवान् की कृतज्ञ हूं जिनमें हम लोग, एशिया के अच्छे नागरिक और अमरीका के अच्छे नागरिक, आमने-सामने एक-दूसरे से मिल सके और कभी-कभी उस बोए हुए बीज का फल अब भी दिखाई देता है।

इन दस वर्षों में मेरे जीवन, मेरे विचार, मेरे समय और मेरे धन का अधिकांश इसी काम में लगा। इसके ज़रिए मैंने भी एक सबक़ सीखा—बालक की तरह कोई राष्ट्र भी अपनी मानसिक आयु की पहुंच से परे की बात नहीं समझ सकता। छह साल के बच्चे को ऊंची गणित सिखाना बेहूदगी है। आपको शुरू से ही चलना होगा, उसके परिपक्व होने की प्रतीक्षा करनी होगी, और परिपक्वता जल्दी से नहीं लाई जा सकती।

युद्ध के दिन बीतने के साथ-साथ मेरे लिए भी चीन में हो रही घटनाओं की सच्ची तसवीर पाना अधिकाधिक कठिन होता गया। हमारे चीनी मित्रों के बारे में बहुत-सा मज़ेदार प्रोपेगंडा हो रहा था, पर दुःखदायी सत्य यही था, जैसा कि मुझे ईमानदार चीनी मित्रों से पता चला, जो अफसोस के साथ वह बात स्वीकार करते थे जिसका मुझे भय था, कि चियांग काई-शेक चुंगकिंग में जमा रहकर बिना

अधिक प्रतिरोध किए जो युद्ध किए जा रहा था उसमें उसके अधीन सेनाएं धीरे-धीरे क्षीण होती जा रही थीं। रद्दी खाना, अनियमित वेतन और प्रवाहहीन जीवन मिलकर सैनिकों का हौसला तोड़ रहे थे। वे अपने भाग्य का फैसला करने के लिए विश्वव्यापी युद्ध की प्रतीक्षा करते हुए निकम्मे होने के साथ अधीर और कटुता-पूर्ण भी हो गए थे। और दुश्मन के साथ गुप्त और ग़ैर-कानूनी व्यापार फलने-फूलने लगा। उनसे कहा गया था कि पश्चिम की विजय होगी और क्योंकि वे पश्चिम वालों के मित्र हैं, इसलिए उन्हें केवल जापान के हारने तक प्रतीक्षा ही करनी है। इधर कम्यूनिस्ट तेज़ी से युद्ध करते रहे जो पूर्णतया निःस्वार्थ भी नहीं था, क्योंकि वे अपने पीछे देहाती क्षेत्रों में किसानों को संगठित कर रहे थे और इसके लिए राष्ट्रवादियों द्वारा अधिकृत क्षेत्रों में भी प्रवेश कर रहे थे। दोनों पक्षों में एक-दूसरे के साथ आदान-प्रदान नहीं होता था—केवल चुंगकिंग में कम्यूनिस्टों और राष्ट्रवादी सरकार के प्रतिनिधि में औपचारिक ढंग की बातचीत होती थी। दोनों में से कोई भी पक्ष दूसरे को यह नहीं बताता था कि वह क्या कर रहा है। इसलिए प्रतिरोध बंटा हुआ था, उनकी आशाएं ही अलग-अलग बंटी हुई थीं। चियांग चाहता था कि युद्ध जल्दी खत्म हो जाए, जबकि अभी उसकी स्थिति इतनी काफी मज़बूत हो कि वह शांति-काल में नेतृत्व का दावा कर सके और कम्यूनिस्ट लम्बे युद्ध की इच्छा रखते थे ताकि बीच के समय में वे आक्रमणकारी दुश्मन के प्रति-रोध के नाम पर अधिकाधिक क्षेत्र को अपने नियन्त्रण के अधीन संगठित कर सकें। गृह-युद्ध वस्तुतः हो रहा था यद्यपि उसकी घोषणा नहीं की गई थी, और १९४५ में जर्मनी के समर्पण तक यही स्थिति रही।

जापान ने उसी समय समर्पण नहीं किया और दोनों पक्षों के चीनियों ने सोचा कि युद्ध अभी शायद वर्षों जारी रहेगा। राष्ट्रवादी इस सम्भावना से डर रहे थे और कम्यूनिस्ट ऐसी स्थिति की आकांक्षा कर रहे थे। मुझे याद है कि न्यूयार्क में मेरे चीनी मित्र मुझसे कहते थे कि अमरीका को चीनी तट पर फौजें उतार देनी चाहिए और जापानी सेना का आमने-सामने लड़ाई में मुकाबला करना चाहिए। उनका कहना था कि ऐसा किया गया तो राष्ट्रवादी सैनिक उनकी तरफ होंगे। मैंने सोचा, क्योंकि जानने का तो मेरे पास कोई साधन था नहीं, कि कम्यूनिस्ट ऐसी परिस्थिति लाने का भरसक विरोध करेंगे क्योंकि इससे सारा दक्षिण-पूर्वी क्षेत्र, जिसमें उन्होंने अपने गुरिल्लों द्वारा घुसना शुरू किया था, आपसे-आप राष्ट्र-

वादियों को मिल जाता।

मेरे चीनी मित्रों का विचार गलत था, जैसा कि कोई भी अमरीकन अन्दाज़ कर सकता था कि वह गलत है। हमने जापानियों का आमने-सामने मुकाबला करने के लिए चीनी तट पर अमरीकन फौजें नहीं उतारीं और न कभी ऐसी कोई योजना ही बनाई। इसके बजाय, जैसा कि हर कोई जानता है, जापानी सेनाएं, जितना लोग समझते थे उससे कहीं अधिक पतन के निकट थीं और जब एकाएक, किसी को भी बिना चेतावनी दिए, परमाणु बम गिराए गए, तब अन्त आ गया। चियांग काई-शेक ने फुर्ती से काम किया। उसने चीन क्षेत्र के सेनापति के रूप में अपने पद के अधिकार से यह मांग की कि उसकी फौजों को अमरीकन विमानों द्वारा अधिकृत क्षेत्रों में ले जाया जाए और जापानियों को चीनी कम्यूनिस्टों के सामने समर्पण न करने दिया जाए, बल्कि उसके अपने प्रतिनिधियों के आगे समर्पण करने दिया जाए। इसपर गृह-युद्ध खुलकर प्रारम्भ हो गया।

हम अमरीकन लोग परेशानी की हालत में थे। हम चियांग काई-शेक की मांग पूरी करने के लिए मजबूर थे। परन्तु मांग पूरी करके हम अपने-आपको कम्यूनिस्ट के विरुद्ध और राष्ट्रवादियों के पक्ष में रख रहे थे और इसके कारण तटस्थता क वह वातावरण असम्भव हा गया जा हमारी निर्णायक या पंच की स्थिति के लिए जो कि हमने बाद में ग्रहण की, बिल्कुल आवश्यक था। कहने का आशय यह कि जिस समझौते के लिए जनरल मार्शल ने इतनी बहादुरी से यत्न किया था पहले हा चुका घटनाओं के कारण उससे कुछ भी आशा नहीं थी। यह स्थिति बा में पैदा होने वाली अन्य स्थितियों का आरम्भ थी, और बाद की स्थितियों में सब उल्लेखनीय और खतरनाक थी हमारा हिन्दचीन में फ्रांस के औपनिवेशिक अधि कार का समर्थन। मुझे निश्चय है कि ऐसी स्थिति से सब अच्छे अमरीकन नफर करते हैं क्योंकि गड़बड़झाले व गद्दारियों के बावजूद हम अपने हार्दिक विश्वास औ अभिरुचि के कारण राष्ट्रों की स्वाधीनता के हामी हैं, और फिर भी कम्यूनिज के विरोध में होने के कारण हमें उन लोगों को मजबूरन अपना साथी मानना पड़ है जिनके साथ हमारा गहरा मेल है। परन्तु यह मानना गलत था, और गलत कि हमें ऐसे समझौते के लिए मजबूर होना पड़ता है। एशियाई जीवन के वास्त विक रूप की जानकारी रखने वाले लोगों का प्रबुद्ध नेतृत्व ऐसा दूसरा रास्त निकाल सकता था जिससे अमरीकन लोकतन्त्र की सच्ची अभिव्यक्ति होती।

कहती हूं अमरीकन, पर फिर भी हमारे जीवन-मार्ग की, जो मानव-हृदय के गहरे सिद्धान्तों के आधार पर खड़ा है, शक्ति और आकर्षण इस तथ्य में निहित हैं कि जिस बात में हमारी आस्था है उसकी सारी मानव-जाति को लालसा है, अर्थात् सार्वभौमिक नियम की सीमाओं के भीतर मनुष्य की आज़ादी। यदि हम अपनी उच्चता पर पहुंच सके होते तो विश्वमैत्री और शान्ति पर पहुंचना हमारे लिए कहीं अधिक आसान हुआ होता। इसके बजाय, हम अनिच्छा से एशिया के उन बोझ उठाने वालों की जगह पहुंच गए हैं, जिनपर उन पुराने पापों की ज़िम्मेदारी है जो हमने कभी नहीं किए।

इसलिए जनरल मार्शल १९४६ में एक निष्फल आशा लेकर ही चीन गए। उनके सामने दो बेकानून पार्टियां थीं। दोनों समान रूप से गैर-कानूनी थीं क्योंकि उनमें से कोई भी जनता द्वारा निर्वाचित नहीं थी। चियांग काई-शेक ने कभी भी वास्तविक अर्थात् संविधान-सम्मत सरकार नहीं बनाई थी और उसके मन्त्रिमंडल के सदस्य उसके ही मुखापेक्षी थे और तब तक ही अपने पद पर रह सकते थे जब तक वे व्यक्तिगत रूप से उसके प्रति वफादार रहें। बहुत पहले उनकी किसी संगठित सरकार की आशा नष्ट हो चुकी थी। चियांग काई-शेक एक सैनिक नेता ही रहा, इससे अधिक कुछ नहीं।

पर कम्यूनिस्टों के पास भी कोई इससे बेहतर चीज़ नहीं थी। वे भी जनता द्वारा निर्वाचित नहीं थे। उन्होंने भी राष्ट्रवादियों की ही तरह एक संगठित वैधता स्थापित कर ली थी जिसके भीतर जनता अपनी पसन्द अभिव्यक्त कर सकती थी। राष्ट्र का ढांचा खत्म हो चुका था। पुराने ढर्रे नष्ट हो चुके थे। यदि क्रान्ति न हुई होती, यदि सन यात-सेन न हुए होते तो कम से कम सिंहासन पर कब्ज़ा करने का, शाही मोहर हथियाने का सवाल तो होता। वृद्ध सम्राज्ञी भी जितनी बार भागी, उतनी बार पवित्र मोहर अपने साथ ले जाने के बारे में सावधान रही जो शासन करने का उनका अधिकार सिद्ध करने वाली एकमात्र वस्तु थी।

एक बहादुर वृद्ध अमरीकन सेनापति के सामने दो युद्धरत व्यक्तियों के दो समूह थे जिनमें से किसीको भी एक महान् जाति पर शासन करने का अधिकार नहीं था, क्योंकि जनता ने अपनी बात नहीं कही थी, न वह कह सकती थी। यद्यपि समझौता हो गया, पर सरकार अभी बनानी थी। सच पूछिए तो यह आशाहीन कार्य था और इसके बारे में आजकल विचार करते हुए मैं ताज्जुब किया करती

हूं कि क्या वह यह बात जानता था, और मैं सोचती हूं कि किस कारण हमारी अपनी सरकार को इस बात का पता नहीं था। थोड़े-से शिक्षित चीनी इस बची-खुची आशा के अस्पष्ट धागे से चिपटे हुए थे कि यदि कुछ समय के लिए काम-चलाऊ समझौता हो जाए तो वे स्वयं सरकार बनाने के प्रयत्न में लग जाएं। वे राष्ट्रवादियों के पहले वर्षों में जितने अनुभवी और समझदार थे, अब उससे अधिक अनुभवी और समझदार हो गए थे, और यद्यपि अब उन्हें चियांग की सरकार में भरोसा नहीं रहा था, पर वे अभी कम्यूनिस्टों के पक्ष में भी नहीं हुए थे और अपने शासक-विहीन प्रदेश में उन्होंने अपने संकल्प को दृढ रखते हुए एक नया समूह डेमोक्रेटिक लीग या लोकतन्त्रीय संघ बनाने की घोषणा की। इसका एकमात्र परिणाम यह हुआ कि राष्ट्रवादियों ने उन्हें कम्यूनिस्ट-पक्षपाती कहा और कम्यूनिस्टों ने राष्ट्रवादी-पक्षपाती। और यह हल्का-सा प्रयत्न शीघ्र ही लुप्त हो गया, यद्यपि यह साहस के साथ आरम्भ किया गया था।

इन दो समान रूप से स्वार्थी बलों के बीच में जनता का बुरा हाल हो गया। वे युद्ध से विक्षत और थके हुए थे, उनके घर नष्ट हो गए थे, उनके परिवारों के अवशेष फिर इकट्ठे हो रहे थे, वे केवल शान्ति चाहते थे—विदेशियों से शान्ति ताकि वे अपने पुराने जीवन का जो कुछ हिस्सा बचा सकें, बचा लें। पश्चिम में एक नया साम्राज्यवाद पनप रहा था। पुराने योरोपीय और अंग्रेज़ी साम्राज्य खत्म हो गए थे पर अमरीका उदय होती हुई तरुण शक्ति था। गोरे लोग संसार पर कब्ज़ा करने के लिए फिर उतावले हो रहे थे। कम्यूनिस्टों ने कहा कि देश-भक्त चीनी होने के नाते, यदि अमरीका ने चीन फिर चियांग काई-शेक को सौंपा तो हम लोग लड़ेंगे, चाहे इसका अर्थ अनेक वर्ष तक चलने वाला गृह-युद्ध हो, पर वे झुकने को तैयार नहीं थे।

थके-मांदे लोगों ने अपने सामर्थ्य पर नज़र डाली। उन्हें कम्यूनिज़्म की कुछ भी परवाह नहीं थी और उन्हें इसके बारे में विशेष जानकारी भी नहीं थी पर वे गृह-युद्ध नहीं चाहते थे। यदि चियांग ने शासन संभाला तो गृह-युद्ध वर्षों चलता रहेगा, क्योंकि बूढ़ा शेर बड़ा ज़िद्दी था और वह जब तक ज़िन्दा रहेगा, हार मंज़ूर नहीं करेगा। क्या उसने जापानियों के हमले से पहले वर्षों ऐसा युद्ध नहीं किया था? परन्तु कम्यूनिस्टों ने शान्ति कायम करने का वचन दिया।

लोगों ने युद्ध की अनिश्चितता के मुकाबले में शान्ति का पक्ष पसन्द किया

चाहे यह केवल वचन ही था, और जब किसी देश के लोग हर हालत में शान्ति रखने का निश्चय कर लेते हैं तब सेना-नायक भी युद्ध नहीं चला सकते। लोगों ने शान्ति के पक्ष में फैसला किया था, कम्यूनिज़्म के पक्ष में नहीं। यह बात अमरीकनों को आज हमेशा से अधिक अच्छी तरह याद रखनी चाहिए क्योंकि एशिया में हमारी भविष्य की मित्रता की आशा इसी एक तथ्य में निहित है।

जब मुझे यह स्पष्ट हो गया कि हम पराजित हो चुके हैं, क्योंकि प्रतिदिन राष्ट्रवादी सेनाएं बिना लड़े आत्मसमर्पण कर रही थीं और अमरीका द्वारा दिए गए हथियार कम्यूनिस्टों को दे रही थीं, तब मैंने इस बात पर बड़ा विचार किया कि आगे क्या किया जा सकता है। मैं उन समर्पणकारी सैनिकों को ज़रा भी दोष नहीं देती थी। सैनिक? वे सैनिक नहीं थे। चियांग की वास्तविक सेना जैसी की तैसी मौजूद थी और वह उसके साथ फारमोसा भाग जाएगी जिसकी बहुत पहले योजना बना ली गई थी। नहीं, कम्यूनिस्टों का सामना करने के लिए गए हुए अधिकतर सैनिक केवल देहातों के लड़के थे जो हुक्म आने पर प्रान्तों से भेज दिए गए थे। उन्हें पकड़ लिया गया और फौज में धकेल दिया गया, जैसे अमरीकन गृह-युद्ध में हमारे अपने लोगों को ज़बरदस्ती धकेला गया था। यदि उनकी सहमति न हुई तो ज़बरदस्ती पकड़ लिया गया, रस्सों से बांध दिया गया और उन्हें शायद सैकड़ों मील चलकर युद्ध-क्षेत्र में आने को मजबूर कर दिया गया। उनके हाथों में ज़बरदस्ती बन्दूकें पकड़ाई गईं और उनसे लड़ने के लिए कहा गया। पर वे क्यों लड़ते? राष्ट्रवादी पक्ष ने उनके लिए या उनके परिवारों के लिए किया ही क्या था? वे औसत चीनी माता-पिता के पुत्र थे, जो घर से प्यार और युद्ध से घृणा करते हैं; निःसन्देह वे आसानी से समर्पण कर देते थे। और करते क्यों नहीं? शायद वे यह भी नहीं जानते थे कि अपने हाथों में पकड़े हुए अमरीकन हथियार चलाएं कैसे?

नहीं, अब किसीको दोष देने का कोई लाभ नहीं था। यह प्रश्न अवश्य था कि अमरीकन लोकतन्त्र चीनी कम्यूनिज़्म को कठोर सोवियत ढर्रे पर चलने से कैसे रोक सकता है। बहुत-सी बातें हमारे पक्ष में थीं। माओ त्से-तुंग जो चीन का माना हुआ कम्यूनिस्ट नेता था, सोवियत रूस की दृष्टि में कभी भी वास्तव में वांछित व्यक्ति नहीं रहा था, या ऐसा सुनने में आता था। एक समय यह अफवाह भी थी कि उसे कम्यूनिस्ट सिद्धान्त और शासन की अधीनता न मानने के कारण अन्तर्रा-

ष्ट्रीय दल से निकाल दिया गया था। निश्चय ही वह अपने अलग ही ढर्रे पर चला था। इसके अतिरिक्त, मैं यह नहीं मान सकती थी कि चीन में अमरीकनों के सौ वर्ष के सत्कार्य को भुला दिया गया है। यह सच है कि पिछले युद्ध में चीन में रहने वाले अमरीकन लड़के अपने पीछे अच्छा-बुरा मिश्रित असर छोड़ आए थे। मेधावी और सभ्य लोगों को पसन्द किया गया था और वे अपनी जनता के प्रतिनिधि दूत बन गए, पर उनमें से बहुत-से सभ्य और मेधावी नहीं थे और आयु की दृष्टि से भी सच्चे ही थे। क्योंकि कम से कम पचीस साल की उम्र से पहले कौन परिपक्व हो सकता है। उन्होंने नटखट लड़कों जैसे काम किए थे, वे बहुत अधिक शराब पी लेते, स्त्रियों का अपमान करते और कभी-कभी अपराधियों की तरह व्यवहार करते थे। ये सब बातें उन दिनों अपने चीनी मित्रों से सुनकर मुझे कुछ दिन बड़ा दुःख हो रहा था और फिर विचार करने पर मैंने सोचा था कि अब समय आ गया है कि चीनियों और अमरीकनों को एक-दूसरे का असली रूप जानना चाहिए जो अच्छा भी है और बुरा भी। मैं कहती हूं कि कुल मिलाकर नतीजा अच्छा है।

अब मैंने यह अनुभव किया कि हमें अच्छों को अपना केन्द्र बना लेना चाहिए और चीनी जनता के साथ व्यापार, उपकार तथा वस्तुओं और नागरिकों के आदान-प्रदान के द्वारा अपने प्रत्येक सम्बन्ध को तुरन्त दृढ़ कर लेना चाहिए, और मुझे आशा थी कि अमरीकन प्रभाव रूसियों के पहुंचने से पहले ही दृढ़ हो जाएगा। तथ्य तो यह है कि युद्ध के सारे समय चीन में रूस का सीधा प्रभाव बहुत ही थोड़ा रहा, और यही अवस्था युद्ध के बाद बहुत समय रही और उतनी देर में हम चीनियों के मित्र के नाते अपनी स्थिति दृढ़ कर सकते थे जिससे नई सरकार को टेक्निकल सहायता के लिए सोवियत रूस के बजाय हमपर निर्भर रहना पड़ता। परन्तु हमारी नीति चियांग काई-शेक के पराजित होने के बाद बिल्कुल उल्टी दिशा में चली। हमने चीनी जनता से अपना सम्बन्ध काट लिया, अपने नागरिकों को बुला लिया और हम चीनी रंगमंच से अलग हट गये। फिर नये चीनी शासकों ने सोवियत रूस का पल्ला पकड़ा, जैसे कि सन यात-सेन ने अपने ज़माने में वर्षों पहले किया था, अपने अस्तित्व की आवश्यकता के लिए।

बढ़ते हुए तनाव और कोरियन युद्ध के आरम्भ के बीच के वर्षों में मैंने अपने जीवन-काल के चीन के इतिहास पर बहुत विचार किया। अन्त में मैं इस निष्कर्ष

पर पहुंची कि व्यक्तियों या दलों के लिए यह खतरनाक है, शायद सबसे बड़ा खतरा है, कि वे शासन के उस ढांचे को नष्ट करें जिसे किसी जाति ने अपने लिए सचेत भाव से या आकस्मिक पसन्द से नहीं, बल्कि जीवन तथा काल के मन्द और गहरे प्रक्रमों द्वारा, बनाया है। यह ढांचा ऐसा ढांचा होता है जिसपर लोग अपनी आदतों और प्रथाओं, अपने धर्मों और अपने दर्शन को लटकाते हैं। यदि सारभूत भीतरी ढांचा खड़ा रहे तो किसी पुराने मकान को बदला जा सकता है. मज़बूत किया जा सकता है, नये नमूने से सजाया जा सकता है और शताब्दियों तक उसमें रहा जा सकता है। पर यदि एक बार सारा ढांचा तोड़कर मिट्टी में मिला दिया जाए तो इसका पुनर्निर्माण होना कदाचित् ही सम्भव होता है और इसमें रहने वाले लोग बेघर होकर भटकते हैं।

इसलिए क्रान्ति, जो किसी जाति के इतिहास में रहन-सहन की दशाएं असह्य हो जाने पर अनिवार्य हो जाती है, उस ढांचे के पूर्ण विनाश से पहले सदा रुक जानी चाहिए। इस प्रकार, मैं इस नतीजे पर पहुंची हूं कि सन यात-सेन ने जब निराश होकर मांचू राजवंश को उखाड़ फेंका था, तब उसे साथ ही साथ शासन के रूप को भी नहीं उखाड़ फेंकना चाहिए था। राजतन्त्र और राजगद्दी को कायम रखना चाहिए था और उस ढांचे के भीतर सुधार करने चाहिए थे। ब्रिटिश लोगों की तरह चीनी लोगों को भी किसी शासक व्यक्ति की आदत पड़ चुकी थी। जुल्म के प्रतिरोध के अपने तरीके उन्होंने विकसित किए थे और पश्चिमी लोकतन्त्र तथा इसके लाभों का अधिकाधिक ज्ञान होने पर उन्होंने अपनी ही तरह के आधुनिक ढंग अपना लिए होते। शायद हमारी पद्धति की अपेक्षा अंग्रेज़ी पद्धति उनकी अच्छा मार्ग-प्रदर्शक बनती। हम कोई प्राचीन जाति नहीं हैं। चीन की पृष्ठभूमि हमारी पृष्ठभूमि से बहुत भिन्न है।

निःसन्देह पश्चिम वालों को ही नहीं, पश्चिमी शिक्षा पाए हुए बहुत सारे चीनी लोगों को भी यह निष्कर्ष आस्थाहीनता से उत्पन्न मालूम होगा। फिर भी मैं इसपर कायम हूं। सन यात-सेन एक सम्मान-योग्य और निःस्वार्थ व्यक्ति थे जिनकी ईमानदारी सन्देह से परे है। वे अपने देशवासियों की श्रद्धा के पात्र हैं। उन्हें इस बात के लिए दोष नहीं दिया जा सकता कि जनता की सेवा करने की तीव्र इच्छा के कारण उन्होंने उसके जीवन के आधार को ही नष्ट कर दिया——वह आधार था व्यवस्था।

लोगों को बचाने की कोशिश करना खतरनाक काम है, सचमुच बहुत ही खतरनाक ! मैंने किसी ऐसे आदमी का नाम नहीं सुना जो इसके लिए आवश्यक सामर्थ्य वाला हो। स्वर्ग एक प्रेरणादायक ध्येय है पर यदि आत्मा रास्ते में ही नरक में नष्ट हो जाए तो क्या हो ?

जब मैं अपनी इस अमरीकन दुनिया में बिताए हुए वर्षों पर विचार करती हूं तो देखती हूं कि घर और कार्य की शान्त स्थायी पृष्ठभूमि में वे दो भागों में बंट जाते हैं—एक वे जिन्हें मैंने चलकर पार किया है और दूसरे वे जो मेरे दैनिक जीवन से अलग थे। उदाहरण के लिए हमारा फार्म—

इक्कीस वर्ष पहले—यह इतने दिन पहले की बात है जब मैंने पहली बार अपना मकान डाक के टिकट के आकार में एक मकान बेचने वाली एजेन्सी के फोल्डर पर देखा था, तब मुझे इसके वातावरण की कुछ भी धारणा नहीं थी। मैंने पहाड़ी के निकट एक मज़बूत भारी-भरकम पुराना पत्थर का मकान देखा था जिसके दोनों ओर एक सिरे पर ऊंचा अखरोट का पेड़ और दूसरे सिरे पर मेपल का पेड़ था और एक घास वाली सड़क के पार बड़ा-सा लाल अनाजघर था। मकान के साथ अड़तालीस एकड़ जंगल और चरागाह था जिसके एक किनारे नाला बहता था। वे उस समय एक साम्राज्य जितने फैले हुए मालूम होते थे। चीन में औसत फार्म पांच एकड़ से कम होता है। शुरू में मुझे बिल्कुल सुनसान से मुकाबला करना पड़ा। वह ज़मीन सतरह साल से नहीं जोती गई थी और उस-पर झाड़-झंखाड़ कम्बल की तरह ढके हुए थे। मैंने असाध्य-साधन का यत्न किया मैंने उस ऊबड़-खाबड़ धरती को चीनी खेत जैसा साफ-सुथरा और हरा तथा कला-युक्त वनाने की कोशिश की। मैंने पुराने सेब के पेड़ों को पनपने के लिए प्रेरित किया, पर उन्होंने एक नहीं सुनी। मैंने नाले को रोकने की कोशिश की, पर वह विद्रोही बना रहा। एक वृद्ध पड़ोसी सन्देहपूर्ण दृष्टि से देखता रहा और बोला, 'यह जो नाला है यह वाइल्ड क्रिटर (व्हाइल्ड क्रीचर=बेकाबू चीज़) है। कुछ देर मैंने समझा कि उसका आशय 'वाइल' (बुरा) से है, पर फिर मैंने देखा कि यह पेन्सि-लवानिया का डच लहजा है। बेकाबू तो हमारा नाला था ही और बेकाबू वह अब भी है। वह गर्मियों में तो दूध जैसा शुद्ध होता है पर जब वसन्त में बर्फ पिघलती है या आंधी-वर्षा आती है, तब यह कुछ-कुछ यांगत्से का जैसा रूप कर लेता है।

कैसी भी मज़बूत दीवाल इसे नहीं रोक पाती। हमने ऐसा बांध बनाया जो दानव भी रोक सके, और उसने ही इसे एक छोटी झील के रूप में आने को मजबूर किया है, जिसमें बच्चे नाव चला सकते हैं और मछली पकड़ सकते हैं तथा सर्दियों में स्केटिंग कर सकते हैं।

निःसन्देह अन्त में मुझे समझ में आ गया कि अमरीकन धरती विद्रोही है और इसके अतिरिक्त, हमारी अपनी ज़मीन से बुरा व्यवहार हुआ है। किसानों की अनेक पीढ़ियों ने इसे खाद देने की परवाह नहीं की। साथ ही गेहूं तथा मक्का के अलावा अन्य कुछ भी न बोकर मिट्टी का सत्त्व और भी खींच लिया। इस प्रकार अन्त में हमारी धरती की ऊपरी सतह के नीचे वाली पत्थर और चिकनी मिट्टी की सतह पुरानी कब्रों से कंकालों की तरह निकल आई।

अपने चीनी संसार में मुझे यह शिक्षा मिली थी कि धरती एक पवित्र सम्पत्ति है और अपनी धरती देखकर मैं भयभीत हो गई। जो कुछ मेरे आने से पहले नष्ट हो चुका है उसे मैं फिर कैसे ला सकती हूं? मेरी इच्छा थी कि मवेशी खरीदूं और धरती के लिए खाद बनाऊं, पर ये वे दिन थे कि किसीको भी खेती करने का उत्साह नहीं होता, वे अविश्वसनीय दिन, जिनमें लोग वास्तव में जिस धरती पर वे रहते थे उस धरती पर खेती न करके जीविका कमा रहे थे। सरकारी सहायता उत्पादन न करने पर मिलती थी, और मेरे पड़ौसी, जो सबके सब किसान थे, दो भागों, अर्थात् अच्छे और बुरे, में बंट गए। अच्छे लोग उस समय भी अपने खेतों को खाली न रहने देते थे, जब ज़माना बुरा था, और बुरे लोगों के पास पहले की अपेक्षा अधिक नकद पैसा था और वे निकम्मे रहने के लिए बिल्कुल तैयार रहते थे। कम से कम यह समय फार्म शुरू करने लायक नहीं था। इसलिए मैंने अपनी पहाड़ी पर हज़ारों पेड़ बो दिए। जब मेरा भाई गुज़र गया तब मैंने उसकी छोड़ी हुई ज़मीन पर भी पेड़ बो दिए और फिर यह सोचकर कि हमारा दायां पहलू छोटे-छोटे बंगलों से बचा रहेगा, मैंने एक और फार्म खरीद लिया जो बाकी दो फार्मों की तरह रद्दी था और वहां भी पेड़ बो दिए।

यह स्थिति युद्ध शुरू होने तक चलती रही और तब मैंने अनुभव किया कि वास्तव में खेती करने का समय आ गया है जिसकी मैं मन ही मन कामना कर रही थी। एक और भी कारण था—बच्चे रोज़ कई सेर दूध पीते थे और मैं प्राप्त दूध से सन्तुष्ट नहीं थी। गांव में रहकर पाश्चरीकृत (बोतलबंद) दूध पीना, जैसा

कि शहर में पीना पड़ता है, बेहूदा मालूम होता था। कच्चे दूध के कीमती विटा-मिन, जो बच्चों के लिए बहुत आवश्यक हैं, प्रायः पाश्चरीकरण से (विशेष रूप से यदि यह अच्छी तरह किया जाए) नष्ट हो जाते हैं, या करीब-करीब नष्ट हो जाते हैं। यदि यह असावधानी से किया जाए, जैसा कि बहुत बार किया जाता है, तो ऐसा दूध कच्चे दूध से अधिक खतरनाक होता है क्योंकि उस प्रक्रम में सब तरह का दूध नांदों में डाल देने का बहाना मिल जाता है जो सारे का सारा निश्चय ही स्वच्छ नहीं होता। और मुझे भोजन में गन्दगी से, वह मृत हो या जीवित, बड़ी नफरत है। मैं चाहती हूं कि मेरे देशवासी सबके सब स्वच्छ हों, पर सचाई यह है कि हम अमरीकन बहुत स्वच्छ लोग नहीं हैं। उदाहरण के लिए, जापानियों जितने या स्वीडिश या कई अन्य जातियों जितने स्वच्छ नहीं हैं। अक्सर हमारे किसान गन्दे पशु-घरों और गन्दी गायों से और दूध दोहने के समय ऐन पर जल्दी-जल्दी छपाके मारकर ही सन्तुष्ट हो जाते हैं। मैंने फार्मों पर जो कुछ देखा वह भी मुझे कतई पसन्द नहीं आया और इससे भी मुझे अपना फार्म बनाने की प्रेरणा मिली। जब युद्ध की हिदायतों में अनाज की पैदावार बढ़ाने के लिए कहा गया, तब मैंने खुशी मनाई और झटपट उसका पालन आरम्भ कर दिया। इसका अर्थ यह था कि अपनी ज़मीन के पास के तीन और रद्दी फार्म खरीदे जाएं। हमारे प्रदेश में औसत फार्म पचास एकड़ होता है, प्रत्येक फार्म में एक अच्छा पत्थर का मकान होता है, परन्तु उसमें आधुनिक सुविधाएं नहीं होतीं और एक औसत दर्जे का अनाज-घर होता है। एक अच्छा पत्थर का अनाज-घर थोड़ा बहुत हेर-फेर कर लेने पर मवेशियों के लिए ठीक हो गया और अन्य अनाज-घर अनाज रखने के लिए छोड़ दिए गए।

इस काम में मैं कूद पड़ी क्योंकि मैंने यह निश्चय कर लिया कि यह जानने से पहले कि क्या होना चाहिए, मुझे स्वयं सीखना होगा, क्योंकि यह अमरीका था, चीन नहीं। दो साल तक मैंने सुना, पढ़ा, देखा और काम किया। मेरे पड़ौसी कहते थे, आप असली खेती करेंगी या किताबी खेती?' मुझे पता चला कि इसका अर्थ यह था कि क्या मैं बाल कटे हुए पशु रखने की कोशिश कर रही हूं। हमारे राज्य के नियम के अनुसार पशुओं का तपेदिक से मुक्त होना ही आवश्यक था। पर अभी बैंग (गर्भपात करा देने वाले रोगबीज) से रहित पशुओं की कोई अनिवार्यता नहीं थी। इसलिए यदि मैं बैंग-रहित पशु रखना चाहती थी तो मुझे अकेले ही यत्न करना होगा। मेरे किसी भी पड़ौसी ने मेरे प्रयत्न का समर्थन नहीं किया। उन्होंने

बड़ी अनुकम्पा की भावना से मुझे चेतावनी दी कि यदि किसीने बैंग-रहित पशु रखने का विचार किया तो सारे का सारा रेवड़ नष्ट हो सकता है। उन्होंने कहा कि सबसे अच्छी बात यह है कि बैंग पर कोई ध्यान न दिया जाए। इसके विरोध में वहां कोई कानून नहीं था। मैंने सुना और मैं मुस्कराई और चुप रही। क्योंकि मैंने बच्चों के खातिर बैंग-रहित रेवड़ रखने का निश्चय किया हुआ था, और इस प्रकार हमने स्वच्छता से कार्य आरम्भ किया और वैसा ही उसे बनाए रखा है। हम निरन्तर जांच करते रहे हैं, सदा चौकन्ने रहे हैं, पर सफल रहे हैं। अब मैं अपने हृष्ट-पुष्ट बच्चों को देखती हूं जो मुझसे बहुत अधिक ऊंचे हैं। और सोचती हूं कि इतने वर्ष से वे बढ़िया दूध पीते रहे हैं—प्रातःकाल के समान ताज़ा कच्चा दूध, सब विटामिनों से युक्त और पीली चिकनाई से भरा हुआ, युद्ध के दिनों में हम अपने लिए मक्खन स्वयं बनाते थे और राष्ट्र के मक्खन में से अपना हिस्सा नहीं लेते थे। पिछले वसन्त में जब एक या दो महीने तक बाज़ार में दूध की बहुतायत हो गई थी और हम अपना सारा फालतू दूध नहीं बेच सके तब मैंने फिर मक्खन बनाया जो महीनों के लिए काफी था और सपरेटे पर हमने फालतू सूअर के बच्चे पाल लिए और वही सपरेटा चिकों को खिलाया और वे गोलमटोल हो गए। हमारे किस्म के दूध की कीमत इतनी ऊंची है कि प्रायः इसे सारा बेच देने में लाभ है फिर भी जब मैं यह देखती हूं कि हमें अपने स्वच्छ बढ़िया चिकनाई-युक्त दूध की जो कीमत मिलती है, उसमें और बीचौलियों के हाथ से इसके गुज़रने पर ग्राहक को इसके बोतल बन्द हो जाने के बाद जो कीमत देनी पड़ती है, उसमें बड़ा अन्तर है तब सही लोकतन्त्रीय ढंग से मैं काफी परेशान होती हूं। लड़के मुझसे कहते हैं कि दूध का खुदरा व्यापार शुरू कर दो और दूध की मोटर चला दो, पर मैं यह बात अस्वीकार कर देती हूं। मेरा मुख्य ध्येय बच्चे हैं, और धरती भी, सन्तोषजनक रीति से अच्छी धरती, पर अब भी हमने पेड़ बोए हुए हैं और सदा उन्हें रखेंगे। और प्रति वर्ष काटकर हम नये पेड़ बो देते हैं। गायें काफी अच्छी सिद्ध हुईं। प्रदर्शनी में उन्हें पुरस्कार मिलते हैं और मुझे अपने हिस्से से अधिक रिबन तथा कप मिल चुके हैं पर मेरी ऐसे प्रदर्शनों में दिलचस्पी नहीं। मैं महसूस करती हूं कि यदि कोई गाय दूध और खाद नहीं दे सकती तो उसका मनोहर रूप बेकार है। मेरी मां कहा करती थी कि कर्म ही सौन्दर्य की कसौटी है। यदि सहायक लोग हमारे यहां नस्ल सुधारकर बनाए गए गाय या सांड को, जिनपर उन्हें अभिमान है, प्रदर्शित करने

के लिए बहुत अधिक उत्सुक न हों तो मेरी नज़र दूध तथा फसल की मात्रा पर ही रहती है।

वेतनभोगी सहायक रखकर चलाए जाने वाले फार्म निःसन्देह पैसा बनाने के लिए नहीं होते। फिर भी कुल मिलाकर हमने अपने फार्म का अच्छा काम किया है, जैसा हमें ख्याल था उससे बहुत अच्छा, और केवल रुपये का हिसाब लगाने को मैं तैयार नहीं। दूध के अलावा फार्म से बच्चों को दिलचस्पी का अनन्त क्षेत्र और जेब-खर्च जुटाने का अनन्त क्षेत्र मिल गया है। वहां मुफ्त या पैसे लेकर करने के लिए सदा काम होता है और लड़के फार्म के बारे में होशियार हो गए हैं। वे दोहना जानते हैं, पशुओं की देखभाल और उन्हें खिलाने-पिलाने के बारे में जानते हैं, मिट्टी के बारे में समझते हैं। वे फार्म की मशीनों का उपयोग कर सकते हैं और जायदाद की तरह इसकी परवाह करते हैं। वे जानते हैं कि कटाई बिना विलम्ब करनी होती है और तब बहुत-सा काम बेवक्त करते रहना पड़ता है, क्योंकि सूखी घास और अनाज तूफान की प्रतीक्षा नहीं करते। इस फार्म से हमें न केवल उस बस्ती में बल्कि स्वयं पृथ्वी में पारिवारिक जड़ें प्राप्त हुई हैं। इसने हमारे लिए मनुष्यों की छटाई का भी काम किया है—हमें बदमाश और ईमानदार को पहचानना आ गया है, चाहे वह फार्म का मैनेजर हो या मज़दूर। हमें सब स्तरों पर दोनों तरह के आदमी मिले। इसके बच्चों को वह शिक्षा मिली है जो उन्हें स्कूलों में नहीं मिली। उन्होंने यह भी सीखा है कि मनुष्यों की तरह पशुओं से भी स्नेह का व्यवहार करना, न केवल आत्मिक दृष्टि से बल्कि भौतिक दृष्टि से भी लाभदायक होता है। यह सच है कि सन्तुष्ट गाय दुःखी गाय की अपेक्षा अच्छा और अधिक दूध देती है और वह सन्तुष्ट तब ही होती है जब उससे स्नेह का व्यवहार किया जाए। हमने गायों से दुर्व्यवहार करने वाले लोगों को बर्खास्त कर दिया है।

हमारे जैसे फार्म पर कुछ अन्य छोटे प्राणी भी थे। टर्की जो हम अपने लिए और अपने फार्म के लोगों के लिए, तथा क्रिस्मस पर अपने रिश्तेदारों को खिलाने के लिए पालते हैं। टर्की भावुक पक्षी है और वे धरती पर अपने पांव नहीं जमा सकते क्योंकि वे यथार्थता से वे मर जाते हैं। उन्हें धरती से ऊपर पिंजरों में रखना चाहिए और खिलाने-पिलाने में सावधानी रखनी चाहिए; और अमरीकन चिकन या चूज़े बड़े नाज़ुक होते हैं। वे उन ज़बरदस्त भूरे प्राणियों जैसे नहीं होते जो चीन के पहरों और देहाती सड़कों की मिट्टी में और गोबर में पंजे मारकर स्वयं अपना

प्रबन्ध कर लेते हैं। यहां सूअरों की भी अच्छी तरह देखभाल न करने पर वे चिड़-चिड़े हो जाते हैं। चीन में मैं सूअर के बच्चों को बहुत अच्छी तरह नहीं जानती थी क्योंकि वहां मैंने उन्हें फार्म के भंगियों के रूप में ही देखा था। उन्हें यहां इस कारण पसन्द किया जाता था कि वे हर चीज़ खा लेते थे और बाद में उन्हें मार-कर फार्म के लोगों के लिए गोश्त मिल जाता था। जब मैंने अपने अमरीकन फार्म पर गोश्त आदि के लिए कुछ सूअर के बच्चे पालने शुरू किए, तब ही मुझे उन्हें ध्यान से देखने और उनके व्यक्तित्व पर विचार करने का मौका मिला। वे मनो-रंजक प्राणी होते हैं, सीधे-सादे नहीं, जैसा कि मैंने समझा था।

फिर भी मुझे सन्देह है कि मैं पूरी तरह कभी यह समझ सकती कि सूअर के बच्चे कितने जटिल और मेधावी होते हैं। यह सब टाइनी की बदौलत हुआ जो उनमें एक छोटा पशु था और जो छोटा पैदा होने पर भी जीवन के प्रति अपने आग्रह से हमारा मनोविनोद करता था। और जब मैंने देखा कि नांद में खाने के समय वह अपने आदमियों से लड़ता था और केवल छोटे शरीर के कारण पराजित हो जाता था, तब मैंने अनुभव किया कि प्रकृति ने उसके साथ अन्याय किया है, और बच्चों का कहना मानकर मैंने उन्हें उसे घर लाने की अनुमति दे दी। टाइनी की तीव्र बुद्धि देखिए कि उसे यह अनुभव करने में कुछ ही घंटे लगे कि वह एक तरह से आराम की परिस्थिति में आ गया है और वह बड़े आश्चर्यकारक ढंग से हमारे सिर चढ़ने लगा। मैं आश्चर्य से सोचा करती थी कि चीनी फार्म-परिवार अपने सूअरों को अपने मकानों में क्यों घूमने देते थे और मेरी मां ने मुझे बताया था कि आयरलैंड में भी सूअर फार्म-हाउसों में होते हैं। मैं इसे बड़ी बुरी आदत सम-झती थी। परन्तु मुझे पता चला कि सूअर हर जगह इतने पक्के इरादे के होते हैं कि वे जो चाहते हैं, वही करते हैं। दो दिन में टाइनी हर दरवाज़े पर आकर हमारे घर के अन्दर घुसने की मांग करने लगा और जाली के किवाड़ों के कारण ही वह न घुस सका। मैं मांग करना कह रही हूं, पर असली शब्द है शोर करना, चीखना या ऊंचे स्वर से घुरघुराना। इस ज़रा-से प्राणी की, जो धरती से मुश्किल से तीन इंच ऊपर था और बिल्ली के बच्चे से अधिक बड़ा नहीं था, आवाज़ इतनी ज़बरदस्त और तीखी थी कि ऐसी तंग करने वाली आवाज़ मैंने कभी नहीं सुनी थी। कभी-कभी मैं चीनी सड़कों पर पसीने से तर चीनी किसान को अपने ठेले के बीच के पहिए के दोनों ओर रस्सियों से बांधकर दो मोटे सूअर बाज़ार ले जाते

हुए देखती और उसकी बुराई करती थी। उनका शोर दिल चीरने वाला होता था कि मैं निश्चित रूप से समझती थी कि उन्हें बड़ा कष्ट हो रहा है और मैं उनसे रस्सा कुछ ढीला करने की प्रार्थना किया करती थी। किसी भी किसान ने इससे अधिक कुछ नहीं किया कि मेरी ओर देखकर मुस्कराए और अपने रास्ते चला जाए। एक बार एक किसान अपने माथे का पसीना अपने नीले सूती कपड़े से पोंछने के लिए रुका था। 'विदेशी,' वह रुककर बोला, 'यह शोर तो सूअर किया ही करते हैं।'

मैंने देखा कि उसका कहना सही था। टाइनी भी वही शोर करता था और इसलिए नहीं कि वह बंधा हुआ या बंद था क्योंकि वह पिल्ले की तरह सारे मैदान में दौड़ता फिरता था, बल्कि इस कारण कि हर समय उसे सेवा या थपथपाहट या ध्यान या खाना न दिया जाता था। यहां वह अकेलापन अनुभव करता और किसीकी गोद में सोना चाहता था। नियमित रूप से घण्टे में एक बार वह मेरे कमरे के जाली के दरवाज़े पर पांव मारता था जहां पर मैं एक पुस्तक लिखने में लगी थी और वहां तब तक घुरघुर करता रहता जब तक मैं बाहर आकर उसकी रकाबी में दूध न भर दूं। कभी-कभी वह केवल इस कारण घुर-घुर करने के लिए लौट आता कि वह मेरे पास रहना चाहता था। कई बार काम करती हुई मैं उसकी तीखी चीख रोकने के लिए उसे अपनी गोद में लेट जाने देती थी। यदि हम घूमने निकलते तो वह हमारे पीछे-पीछे चल पड़ता और इसके बाद इसलिए घुर-घुर करता कि वह अपनी तीन इंच की टांगों से हमारे जितना तेज़ न चल पाता। वह मोटा हो गया, पर बहुत बड़ा न हुआ और एक ही महीने के अन्दर ऐसा ज़ालिम हो गया कि बच्चों को भी यह स्वीकार करना पड़ा कि उसे वहां से हटा दिया जाए। उसका जाना हमें महसूस हुआ, पर एक अजीब चैन भी मिला और कुछ अफसोस भी हुआ। उसमें व्यक्तित्व इतना अधिक था कि हम अब भी उसकी बातें याद करके हंसते हैं। पर बहुत अधिक व्यक्तित्व कम से कम सूअर में अच्छा नहीं। सच तो यह है कि उसके साथ रहना असम्भव था और मैं समझती हूं कि इस बात पर विचार करने से एक सबक भी मिलता है। पर छोड़िए, उसे जाने दीजिए।

बिल्लियां और बिल्ली के बच्चे निश्चय ही खेत पर रहने वाली चीज़ हैं और एक वसन्त ऋतु में तो वे हमारे यहां तेरह थे। अनाज-घर में चूहों को कम करने

के लिए आवश्यक बिल्लियां इनसे अलग थीं। हमारे यहां कुत्ते और पिल्ले, चाहे और अनचाहे दोनों प्रकार के, सदा रहे। हमारी कोकर स्पेनियल जोड़ी ने, जो एक छोटा पति और पत्नी थे, आदर्श एकपत्नीव्रत का पालन करते हुए कुछ वर्षों तक सुन्दर शुद्ध नस्ल के पिल्लों को जन्म दिया। वह छोटी-सी कुतिया अपने जोड़ीदार के अलावा और किसीकी ओर कभी आंख उठाकर भी नहीं देखती थी। सदा आत्मविश्वास से निःशंक वह एक दिन किसी पड़ौसी कुत्ते से बातचीत करने के लिए सड़क पार करने लगा कि एक मोटर से कुचला गया और कुतिया विधवा हो गई। उसका अवसाद करीब-करीब मनुष्यों जैसा हुआ है। उसने कुछ दिन शोक मनाया और वह दुःखी मालूम हुई। एकाएक उसने सारा दुःख झाड़ दिया, मोटी और खूबसूरत हो गई और उसने घर-बार से किनारा कर लिया। कुछ ही सप्ताह में बस्ती के हर ऐरे-गैरे नत्थू-खैरे कुत्ते से उसका अच्छा परिचय हो गया और अब तो उसके पास, और हमारे पास भी, रोज़ कुत्ते रहते हैं।

हमारे फार्म पर मनोरम वन्य जीवन की बहुतायत है जो मेरे लिए नया है। मेरे चीनी घर के आसपास की पहाड़ियों पर जंगली सूअर और भेड़िये तथा छरहरे जंगली चीते रहते थे और वहां तीतर और जंगली हंसियां और बत्तखें तथा सारस भी होते थे। अब मैं गिलहरियों और छछूंदरों तथा दक्षिण अफ्रीकी सूअरों के बीच रहती हूं, परन्तु तीतर वहां भी हैं—सुन्दर चीनी छल्ले से अंकित गरदन वाले तीतर, और क्योंकि शहरी शिकारियों का ज़बरदस्ती दूसरे की ज़मीन में घुस आने का ढंग असह्य है, जिन्हें यह याद नहीं रहता कि सारी धरती का मालिक कोई न कोई व्यक्ति है, और निश्चय ही वे तो नहीं हैं, इसलिए हमने अपनी ज़मीन पर राज्य का संरक्षित पशुवन बना रखा है, और उसमें तीतर भी बहुत हैं, और हिरन भी। कुछ महीने पहले जब हम भोजन करने कमरे में बैठे थे, हमने लोकस्ट के पेड़ के नीचे तीन हिरन देखे। नर हिरन स्थिर चौकन्ना खड़ा था और दो हिरनियां घास चर रही थीं। यद्यपि कभी-कभी बाग में अपनी चुकन्दर की क्यारियां बरबाद देखकर या अपनी बढ़िया नई स्ट्राबेरियां खाई हुई देखकर मुझे क्षण भर के लिए गुस्सा आ जाता है, पर फिर मुझे याद आता है कि जीवन में किसीको तो हिस्सेदार होना ही चाहिए और मैंने शिकारियों की बजाय शिकार होने वालों को पसन्द किया है : खरगोश मैदान में दौड़ते रहते हैं। उनकी पूंछ फहराती रहती है और लड़के उन्हें ज़िन्दा पकड़ लेते हैं और उन्हें अन्य स्थानों पर भेजने के लिए

राज्य को बेच देते हैं और मेरे चीनी घर की तरह यहां भी बगुले आते हैं, और लटकती शाखाओं वाले सरपत के पेड़ों की छाया में तालाब के किनारे खड़े हो जाते हैं, और जब मैं उन्हें देखती हूं तब यह अनुभव करती हूं कि मेरी जड़ें संसार के चारों ओर पहुंची हुई हैं।

न्यूयार्क सिटी

इस नगर का एक ठण्डा बादलों वाला दिन है। इस नगर में मैं कामकाज के कारण अस्थायी रूप से आकर रहती हूं। आज का कार्य है कला-साहित्य अकादमी, जिसकी मैं अब सदस्य हूं। मुझे जो भी सम्मान मिला है, वही आश्चर्य और आनन्द पैदा कर गया है क्योंकि प्रत्येक सम्मान अप्रत्याशित था, और अकादमी का सदस्य बनने का निमन्त्रण सबसे अधिक अप्रत्याशित था। यह मैंने अपने आनन्द के लिए स्वीकार कर लिया और यद्यपि मैं उन विशालकाय दरवाज़ों में घुसते हुए सुपरिचित संकोच अनुभव करती हूं, पर फिर भी मैं प्रसन्न हूं। इस संकोच पर मैं शर्मिन्दा हूं और शायद वास्तव में यह संकोच नहीं, क्योंकि निश्चय ही अब तक मुझे कहीं भी और किसीके साथ भी रहने की आदत पड़ चुकी है। शायद यह केवल हल्की अजनबीपन की भावना है जो मुझे अपने देश के पुरुषों के किसी समूह में घुसते हुए अनुभव होता है। इस प्रसंग में पुरुष शब्द का प्रयोग सही है क्योंकि अब तक इन बैठकों में जाने वाली एक मैं ही स्त्री हूं। मुझे बताया गया है कि एक स्त्री सदस्य और है, पर वह कभी आती नहीं। मुझे इस बात से भी खुशी हुई है कि मुझे जो कुर्सी दी गई है उसपर पहले सिन्क्लेयर लेविस बैठता था। उसका नाम सदस्य-पट्टिका पर अन्तिम है और जब मैं अपनी जगह बैठती हूं तब सोचती हूं कि उसके नाम के नीचे किसी दिन मेरा नाम आएगा।

जिस हाल में मीटिंग होती है, वह गरिमापूर्ण और सुन्दर स्थान है। जिस समय छोटे-मोटे आवश्यक कार्य किए जा रहे हैं, उस समय में मैं कमरे की दूसरी ओर की बड़ी खिड़की से एक पहाड़ी की ओर ताक रही हूं जिसपर जीवित नहीं, मृत मनुष्य रहते हैं। यह कब्रिस्तान है जो साफ-सुथरा और स्थायी है। मेरे विचार से यह उन सुखी लोगों का अन्तिम विश्राम का स्थान है जो अपने जीवनकाल में भी आराम से रहने वाले और स्थायी थे, जब तक कि अन्त में मृत्यु ही उन्हें न ले

गई। खिड़की के आर-पार एक बड़े पेड़ की पुरानी शाखाएं फैली हुई हैं और सर्दियों में आज जैसे दिन कब्रें बड़ी बेरौनक लगती हैं। जब बसन्त ऋतु आती है तब पेड़ पर हरी-हरी पत्तियां निकल आती हैं जिससे कब्रें तो नहीं छिपतीं, पर बीच में एक हल्का कांपता हुआ परदा आ जाता है। गर्मियों में कब्रें करीब-करीब छिप-सी जाती हैं।

हममें से अधिकतर वृद्ध हैं, जो उन कुर्सियों पर बैठे हैं जिनपर मृतों के नाम हैं। मेरा ख्याल है कि मैं सबसे कम आयु वाले सदस्य से ही अधिक आयु की हूं और मैं जवान नहीं। मैंने उस दिन कई अपने से तरुण व्यक्तियों के पक्ष में वोट दिया जिससे नया जीवन वहां आ सके और इतनी जल्दी आ सके कि वह वृद्ध विद्वानों के साथ का आनन्द ले सकें क्योंकि इसमें कोई सन्देह नहीं है कि अकादमी विद्वानों की गोष्ठी है। मैं अधिकतर समय आदरपूर्ण मौन रखती हूं क्योंकि इन विद्वान् पुरुषों की विद्या में मैं स्वयं गहरी नहीं गई हूं। वे अमरीका के गायक, चित्रकार, लेखक और स्थपति हैं। जिन विषयों को उन्होंने इतने समय से अपना बना रक्खा है, और जिनमें वे इतने ऊंचे हैं उनका मैं अभी अध्ययन ही कर रही हूं और मैं कभी भी उनकी विशेषज्ञ नहीं हो सकती। मैं यह कहकर अपने को सान्त्वना देती हूं कि ऐसी भी बहुत-सी चीज़ें हैं जो मैं जानती हूं और वे नहीं जानते।

उदाहरण के लिए, वे मेलारमे के प्रतीकवाद पर इतना सुन्दर विचार करते हैं पर क्या उन्हें प्रसिद्ध निबन्धकारों या चीन के अज्ञात उपन्यास-लेखकों के प्रतीक-वाद का पता है? और एक दूसरा उदाहरण लीजिए। उन श्रेष्ठ पुस्तकों में, जो पश्चिमी विद्वानों ने मानव-सभ्यता के स्रोतों का निरूपण करने के लिए चुनी थीं, एक भी एशियन पुस्तक नहीं थी, यद्यपि एशिया में हमारे ज़माने से पहले महान् सभ्यताएं फली-फूलीं और पुनः सशक्त रूप में अब भी मौजूद हैं। 'क्या कारण है', मैंने एक अमरीकन विद्वान् से पूछा, 'कि इन सौ महान् पुस्तकों में एशिया की कोई पुस्तक नहीं है?'

'कारण यह है', उसने बिल्कुल ईमानदारी से, पर दोष का ज़रा भी आभास न देते हुए कहा, 'कि कोई उनके बारे में जानता ही नहीं।'

कोई? केवल कुछ लाख आदमी! हां, ठीक है—

जो हो, विद्वानों की इस गोष्ठी में रहना बड़ा अच्छा लगता है, चाहे मैं इसकी

पात्र हूं या नहीं। वे सचमुच विद्वान् लोग हैं और इसलिए घमण्ड और आडम्बर से शून्य हैं। उनका व्यवहार सादा है। वे स्नेहपूर्ण और कुछ हल्का विनोद करने वाले लोग हैं तथा वे एक-दूसरे को चोट न पहुंचाने के बारे में सावधान रहते हैं। इसका कारण यह है कि वे सब ज्ञानी लोग हैं क्योंकि ज्ञान ही मनुष्य को सभ्य बना सकता है। मैं अपने अपरिचित विषयों पर भी उनकी बातें सुनना पसन्द करती हूं क्योंकि उनकी वाणियां मधुर हैं और उनकी भाषा सुन्दर है। उनका बाह्य रूप चाहे जैसा हो, पर उनके चेहरों पर विद्वानों जैसी—मृत'नहीं, बल्कि शुद्ध और सजीव वातावरण में जीवन बिताने वाले विद्वानों जैसी—मृदु आभा है। वे कभी-कभी खिड़की से बाहर दीखने वाली कब्रों को लेकर हंसी-मखौल करते हैं क्योंकि उन्हें अपनी अन्तिम गति का पता है, पर कोई भी भयभीत नहीं है। वे एक धारा, एक ऐसी नदी के हिस्से हैं जो फैलती हुई मनुष्य-जाति को एक विराट् अनन्त सागर की ओर ले जा रहे हैं। हर कोई अपना मूल्य, और साथ ही अपना विनम्र स्थान जानता है। इस वातावरण में मुझे अच्छा अनुभव होता है क्योंकि प्रत्येक देश में, और मैं कह सकती हूं, प्रत्येक युग में विद्वानों का यही वातावरण होता है।

आज तेज़ सर्दी की ऋतु है। पेड़ सलेटी रंग के आसमान के नीचे नंगे दिखाई देंगे और कब्रों के पत्थर काले नज़र आएंगे, पर हमारी अगली बैठक के समय वसन्त ऋतु होगी।

मैंने अपने देश में जो बीस वर्ष बिताए हैं उनका सिंहावलोकन करने पर मुझे यह महसूस होता है कि मैं अब भी अपने देशवासियों को सीधे साफ रूप में नहीं देखती। इन वर्षों में मुझे जीवन का प्रचुर अनुभव हुआ है, और यहां जीवन उस तरह नदी के रूप में नहीं बहता, जैसे चीन में बहता है। मैं इसे प्रसंगों, घटनाओं तथा अनुभवों की, जो अलग हैं—कभी-कभी सम्पूर्ण हैं पर हैं सदा अलग-अलग ही—एक माला के रूप में देखती हूं। ये हिस्से अभी मिलकर एक समष्टि के रूप में नहीं हैं और मुझे इस ऐतिहासिक तथ्य का पूरी तरह ध्यान है कि १९१४ में, जब प्रथम महायुद्ध हुआ, हमारे राष्ट्रीय जीवन के दो टुकड़े हो गए, जिसका परिणाम यह है कि हम जो कुछ पहले थे, वैसे फिर नहीं हो सकते। हमारे लिए उस पुराने सामान्य जीवन पर लौटने की कोई गुंजायश नहीं है। हम आगे ही बढ़

सकते हैं चाहे भविष्य में जो भी जोखिम हों।

उदाहरण के लिए, स्त्रियों का मामला ही लीजिए। अमरीकन स्त्रियों में सदा मेरी दिलचस्पी रहती है। मैं जहां कहीं जाती हूं, उन्हें ध्यान से देखती हूं और उन-पर गम्भीरता से विचार करती हूं। मैं उनके बात करने, सोचने और व्यवहार करने के तरीके ध्यान से देखती हूं। वर्षों पहले मैंने एक छोटी-सी पुस्तक लिखी थी जिसका नाम था 'ऑफ मेन ऐण्ड विमेन' (पुरुषों और स्त्रियों के बारे में)। अमरीकन चित्रपट इतना परिवर्तनशील है कि यद्यपि वह पुस्तक सिद्धान्त-रूप में अब भी ठीक है—अर्थात् जहां तक वह अमरीका में पुरुषों और स्त्रियों के सम्बन्ध के बारे में है—तो भी जब मैंने वह लिखी थी, तब से स्त्रियों में बहुत परिवर्तन हो गया है। वर्तमान तरुण पीढ़ी जो उन माताओं की पुत्रियां हैं जिनके विषय में मैंने पुस्तक लिखी थी, 'बारूदी स्त्रियां' नहीं, जैसा कि मैंने उनकी माताओं के लिए लिखा था; यहां तक कि विवाह करने, अपने पतियों द्वारा भरण-पोषण किए जाने, बच्चे प्राप्त करने और घर के बाहर का कुछ भी काम न करने की उनमें लगभग वैसी ही इच्छा है, जैसी विक्टोरियन युग की स्त्रियों में। तब भी तथ्य यह है कि इन तरुणियों को घर से बाहर का बहुत-सा कार्य करना पड़ता है। पर उन्हें इसमें आनन्द नहीं आता और ऐसा मालूम होता है कि अब वे इन बाहरी दिलचस्पियों को छोड़ने के लिए किसी बहाने, किसी नैतिक कारण की खोज में रहती हैं। ऐसा कारण पैदा करने के लिए वे बड़े परिवार चाहती हैं। वे निःसंकोच कहती हैं कि हम लाचार होकर नौकरी करती हैं। इस पीढ़ी में कोई लड़की यह कहने में शर्म महसूस नहीं करती कि वह शादी करना चाहती है और वह जिस किसी पुरुष से मिलती है, चाहे वह विवाहित हो या नहीं, उसीको इस दृष्टि से परखती है कि वह उसका पति हो सकता है या नहीं।

शायद पुरुष विवाह को अपनी जायदाद के लिए उस तरह आवश्यक नहीं मानते जैसे वे कभी मानते थे। कहा जाता है कि सैनिक जीवन मनुष्य के प्रकृत जीवन को हानि पहुंचाता है। इससे न केवल कामी लोगों की संख्या बढ़ जाती है, बल्कि इससे पुरुष बिना विवाह के जीवन को काफी अच्छा समझने लगते हैं। सैनिक जीवन में पुरुष पुरुषों को अपना संगी बना लेते हैं और कामात्मक अनुभूति या यौन अनुभूति भावानुभूति के बजाय शारीरिक अनुभूति मात्र हो जाती है। बहुत दिनों में एक बार पुरुष को शारीरिक सुख के लिए स्त्री की आवश्यकता होती है और जब

वह समय आता है तब वह इधर-उधर जाकर काफी आसानी से, और प्रायः इसके लिए बिना कोई पैसा खर्च किए, उसे प्राप्त कर सकता है। भाव की दृष्टि से अविकसित आदमी तब पूछता है कि फिर मैं पत्नी और बच्चों की ज़िम्मेदारियों का बोझ क्यों उठाऊं। यह कभी प्रकट नहीं किया गया कि ऐसे लोगों की संख्या कितनी है जिन्हें असैनिक जीवन असन्तोषजनक लगता है और वे सैनिक जीवन के आश्रय में लौट जाते हैं, परन्तु यह अध्ययन योग्य चीज़ है और इसका अध्ययन स्त्रियों को करना चाहिए। यदि उन्हें घर और परिवार की लालसा है, जैसा कि प्रतीत होता है कि उन्हें है, तो यही आशा है कि वे ही अपनी लालसा पूरी करने के उपायों का पता लगाएं।

स्त्रियों का पुरुषों के पीछे भागना स्वस्थ चीज़ नहीं। यह एक दलवाद या तानाशाही का सूचक है। युद्ध-पूर्व के जर्मनी में समकामिता बहुत प्रचलित थी, जैसा कि सैनिकवादी समाजों में होता है, और स्त्रियां, जानते हुए या न जानते हुए यह अनुभव करती थीं कि वे पुराने तरीके से वांछनीय नहीं हैं। और वे पुरुषों के आगे हीन बनकर आने लगीं और उन्हें खुश करने में तत्पर हो गईं। मैं यह नहीं पसन्द करती कि इस पीढ़ी की अमरीकन लड़कियां पुरुषों को आकृष्ट करने के लिए अपने-आपको खो दें, क्योंकि यदि पुरुषों को ऐसे व्यवहार से आकृष्ट किया जा सकता है तो यह चिन्ता की बात है, और यह भी चिन्ता की बात है कि लड़कियां विवाह पर इतनी बड़ी बाज़ी लगा देती हैं कि यदि वे विवाह नहीं करतीं तो वे अपने-आपको असफल समझती हैं; यद्यपि यह ठीक है कि पुरुषों और स्त्रियों का, समान रूप से, विवाह ही उचित ध्येय होना चाहिए, जो अनिवार्य और वांछनीय स्थिति है, और ऐसा होने पर ही समाज सन्तुलित रह सकता है।

मैं निश्चय से कहती हूं कि कोई समय आएगा जब पुरुषों और स्त्रियों के विवाह करने के लिए—और विवाह एक सामान्य रूप से अवश्य किया जाने वाला कार्य होगा—कोई अच्छा साधन निकल आएगा जिससे विवाह के इच्छुक हर व्यक्ति को विवाह के लिए उपयुक्त व्यक्तियों से मिलने का अच्छा और गौरवयुक्त अवसर मिल सकेगा, और जब व्यक्तियों को सगाई और विवाह की अन्तिम व्यवस्थाओं के लिए सहायता की आवश्यकता होगी तब वह दी जा सकेगी। चीन में यह कार्य लड़का और लड़की दोनों के माता-पिता करते हैं। चीनी लोग मुझसे कहा करते थे कि माता-पिता की अपेक्षा कौन अपने लड़के या लड़की को अधिक अच्छी

तरह जान सकता है, और इसलिए उपयुक्त वर-वधू की खोज कौन अधिक अच्छी तरह कर सकता है। इस समय अमरीकन पारिवारिक जीवन जितना चौड़ा और स्थायी है, जब तक वह उससे बहुत अधिक चौड़ा और स्थायी नहीं होता तब तक अमरीकन लोग विवाह पर माता-पिता का नियन्त्रण स्वीकार नहीं करेंगे। परन्तु यह हो सकता है कि हमारा वैज्ञानिकों में बढ़ता हुआ विश्वास हमें उनपर श्रद्धा रखने को प्रेरित करे जो जोड़ियां मिलाने में विशेषज्ञ हों। गोद दिलाने वाली एजेन्सियां गोद लेने वाले माता-पिता के रंग, धार्मिक विश्वास, वातावरण, स्वभाव, मूलवंश तथा रुचियों-अरुचियों का गोद जाने वाले बच्चों के साथ मिलान करने के बारे में बड़ा शोर मचाते हैं और इस तरह, प्रसंगतः, बहुत-से अच्छे लोगों को बालकहीन बने रहने के लिए मजबूर करते हैं क्योंकि उनकी अपनी विशेषताएं गोद के लिए उपलब्ध बच्चों में नहीं मिलतीं; और बहुत सम्भव था कि यदि उनके अपने बच्चे होते तो वे उनमें भी न होतीं। मैं ऐसे माता-पिताओं को जानती हूं जिनके बाल लाल थे और चेहरे गोरे थे और जिन्होंने काले बालों वाले और काली आंखों वाले बच्चे को जन्म दिया और उनसे किसीने वह बच्चा नहीं छीना। सच पूछिए तो मैं चीन में एक ऐसे कनाडियन दुकानदार से परिचित थी जिसके बाल और चेहरा काले थे और वही हाल उसकी पत्नी का था और बाकायदा विवाह से उनके छह बच्चे थे : दो के बाल और आंखें काली थीं, दो के बाल लाल और आंखें हरी थीं और दो के बाल पीले और आंखें नीली थीं, और उनके चेहरों का रंग इन्हीं तीनों किस्मों के अनुरूप था। फिर भी उन्हें ये सब बच्चे, जो उनके जैसे थे वे भी और जो उनके जैसे नहीं थे वे भी, पालने दिए गए। परन्तु सामाजिक कार्य-कर्ताओं को उनके रंगों और धार्मिक विश्वासों के बारे में सावधान रहने की शिक्षा दी जाती है और मैं कहती हूं कि समय गुज़रने के साथ-साथ सामाजिक कार्य का और भी विकास होगा, और तब हम विवाह में भी उसी प्रकार जोड़ी मिलाने वालों के हाथों में होंगे जैसे गोद दिलाने में। पर पुरुष और स्त्री लगभग उसी किस्म के पैदा होने पर भी थोड़े-बहुत हेर-फेर से निःसन्देह हर किसीको विवाह करने के लिए कम से कम वैज्ञानिक दृष्टि से सही व्यक्ति मिल जाएगा।

आज उन स्त्रियों के लिए अफसोस महसूस होता है जो विवाह करना चाहती हैं, पर कर नहीं सकतीं। उनकी माताएं कल की 'बारूदी स्त्रियां' थीं जो भभक-कर रसोई से बाहर आ गई थीं। अब उन्हींकी लड़कियां फिर रसोईघर में जाने

की कोशिश कर रही हूं। एक दिन शाम को मैं अपने रहने के कमरे में बैठी थी और एक अच्छी तरुणी की बात सुन रही थी जो औसत विवाह-क्षेत्र के लिए ज़रा अधिक ऊंची और ज़रा अधिक आयु की थी। आजकल लड़कियां इतनी तेज़ी से बढ़ती हैं कि बारह या तेरह साल की बच्ची अठारह या बीस साल की स्त्री की प्रतिस्पर्धी बनने लगती है, और अठारह और बीस वर्ष वाली तीस वर्ष की स्त्री के मुकाबले में खड़ी होती है। यह स्त्री पैंतीस साल की थी। वह बोल रही थी और मैं सुनी रही थी। उसने मुझे वह योजना बताई जिसपर वह और उसकी दो सहेलियां परिश्रम कर रही थीं और उन्होंने अपने परिचित सब पुरुषों को पहले तो पसन्द की दृष्टि से और फिर सम्भवता की दृष्टि से वर्गों में बांटा था, कुछ को उन्होंने असम्भव मानकर छोड़ दिया था। एक अपनी माता के प्रति बहुत अधिक मोह रखता था, एक और पक्का क्वांरा था क्योंकि वह जितना पुरुष को होना चाहिए उससे अधिक सुन्दर था। एक और बदमिज़ाज था। एक और सनकी था, इत्यादि। एक वर्ष बाद मुझे इसके विवाह की सूचना मिली। इसने नम्बर चार से विवाह किया था जो इसकी पसन्द-सूची में सबसे अन्त में था। मैंने उसके लिए आंसू बहाए होते, पर मुझे आशा है और पूरी आशा है कि उसके सुन्दर बच्चे हो गए हैं।

ग्रीन हिल्स फार्म

हां, मुझे अमरीका में बिताए हुए वर्ष ऐसे दृश्यों के रूप में ही याद हैं जो परस्पर जुड़े हुए नहीं। उदाहरण के लिए, जब युद्ध बन्द हुआ तब हम न्यूबेडकोर्ड में थे। हम अपने सब बच्चों के साथ रात बिताने के लिए एक होटल में थे और सवेरे मार्था के वाइनयार्ड द्वीप में जाने की आशा कर रहे थे और उसी रात यह खबर आई कि युद्ध खत्म हो गया और शहर का हर आदमी खुशी से पागल हो गया और छुट्टी मनाने लगा। स्टीमर के खलासी भी अगले दिन शराब पिए हुए थे पर हमें होटल छोड़ना पड़ा क्योंकि हमारे कमरे दूसरे आदमियों ने पहले ही अपने लिए तय कर रखे थे। इस प्रकार हमें सिर ढकने के लिए भी कोई जगह न थी जब कि नर-नारी खुशी के मारे पागल थे और शराब से मस्त हो रहे थे और आपस में लड़ रहे थे। अन्त में हमने वुड्स होल में एक मछियारे को इस बात के लिए

मनाया कि वह हमें अपनी मोटर-नौका में साउन्ड के पार ले जाए और इस प्रकार हम भूखे-प्यासे और थके-मांदे, तथा जो कुछ हमने देखा और सुना था, उससे चकित होते हुए पहुंचे ।

और मुझे वह दिन याद है जो मैंने बच्चों के साथ हालीवुड में एक सेट में बिताया था। मैं केवल उस बार ही वहां गई थी और गई थी इसलिए कि मेरे उपन्यास 'ड्रैगन सीड' का चित्रपट बन रहा था जिसमें मुख्य भूमिका में कैथरीन हेपबर्न काम कर रही थी और मन ही मन परेशान थी क्योंकि वह चीनी स्त्री की जाकट की बजाय पुरुष की जाकट पहनती थी और जब मैंने किसी अधिकारी व्यक्ति से यह चीज़ चलने देने का कारण पूछा तो मुझे बताया गया कि उसे स्त्री की जाकट की अपेक्षा पुरुष की जाकट की लाइनें अधिक पसन्द थीं। इसी प्रकार वह अपने माथे पर के बाल कटवाने को तैयार नहीं थी यद्यपि चीन के बारे में जानकारी रखने वाले हर व्यक्ति को पता है कि किसान की औरत माथे पर बाल नहीं रखती; वे विवाह से पहले की रात काट दिए जाते हैं जो इस बात का चिह्न होता है कि वह अब क्वांरी नहीं रहेगी। और उन्होंने उस सेट पर जो पुल बनाया था वह गलत था। उस तरह का पुल दक्षिण चीन में प्रयोग में आता है, पर नानकिंग में नहीं। और सबसे बुरी बात यह थी कि सपाट मैदान पर्वतों पर नहीं होना चाहिए था। लॉस ऐंजल्स के पास जो गोल पहाड़ियां हैं वे नानकिंग के निकट की पहाड़ियों से बहुत कुछ मिलती-जुलती हैं पर 'ड्रैगन सीड' के लिए उन्हें बुलडोज़रों से सपाट कर दिया गया था जबकि नानकिंग पहाड़ियों पर सपाट मैदान नहीं है और इस चीज़ ने मुझे सबसे अधिक उलझन में डाला कि कुछ सपाट हिस्से सीधी बड़ी-बड़ी खाइयों की तरह ऊपर से नीचे को सीधे खड़े थे, जिसकी हालीवुड के अलावा कहीं कल्पना भी नहीं की जा सकती क्योंकि सपाट कर देने से भूमि का कटाव रुक जाता है और खाई से यह और अधिक होता है। जब मैंने पूछा कि ये खाइयां क्यों बनाई गई हैं, तब मुझे बताया गया कि वे इधर से उधर तक बने हुए सपाट मैदानों से वैषम्य प्रस्तुत करने के लिए बनाई गई हैं और इससे मैं और भी उलझ गई।

पर अब इन बातों की लम्बी चर्चा क्यों की जाए ? मैं कह सकती हूं कि चित्रों में सुधार हो जाते हैं। और बाद में उसी दिन सेट वाले लोगों को मुझपर हंसने का मौका मिला जब वे वह भैंसा लाए जो 'दि गुड अर्थ' की फिल्म बनाने

में एक महत्त्वपूर्ण पात्र था और अब एक तरह की शौकिया पाली हुई चीज़ था। मेरा ख्याल है कि वे यह सोच रहे थे कि मैं प्यार से भैंसे की गर्दन से लिपट जाऊंगी, पर मैंने ऐसा कुछ नहीं किया। मुझे याद था कि चीन में भैंसे गोरे व्यक्तियों से बड़े बिदकते हैं और मौका मिले तो सदा हमला कर देते हैं। मैं इतना ही कर सकती थी कि एक फोटो के लिए इस भैंसे के सींग पर अपना हाथ रख दूं। हमने परस्पर अविश्वास से एक-दूसरे को देखा, मैंने इस कारण कि वह भैंसा था और उसने इस कारण कि उसे मेरे भय की गन्ध आ गई और वंश-परम्परागत विरोध की भावना उभर आई। उधर हमें देखने वाले अमरीकन जी भरकर हंसे और मैंने उन्हें हंसने दिया। हालीवुड के इस संक्षिप्त और एकमात्र दर्शन से मुझे 'दि गुड अर्थ' के फिल्म बनाने की अजीब कहानी याद आ जाती है। मुझे ऐसी रहस्य-कथाएं सदा नापसन्द रही हैं जिनमें खलनायक कोई अज्ञात और भयानक चरित्र वाला पूर्व-देशीय होता है, ठीक वैसे ही जैसे अपने बचपन में मुझे वे अनगढ़ चीनी नाटक नापसन्द होते थे जिनमें खलनायक सदा कोई नीली आंखों, बड़ी नाक, लाल बालों वाला कोई पश्चिमी आदमी होता था। फिर भी यह कहानी सुन लीजिए। समय की दृष्टि से इसका आरम्भ उन अन्तिम सर्दियों में होता है जो मैंने नानकिंग के पुराने नगर में बिताई थीं और वह उचित ही है।

जब 'दि गुड अर्थ' का चित्रपटीय रूप, जो १९३२ में ओवन डेविस ने तैयार किया था, थियेटर गिल्ड द्वारा मैट्रो-गोल्डविन-मेयर को बेच दिया गया, तब मेरी बड़ी इच्छा थी कि चलचित्र के मुख्य पात्र चीनी अभिनेता हों क्योंकि मंच पर नाटक देखकर मुझे यह यकीन हो गया था कि अमरीका वालों के लिए चीनियों की विशेषताओं को यथार्थ रूप से चित्रित करना असम्भव है। नाज़ीमोवा, जिसने ओ-लान का पार्ट किया था, एक शानदार अपवाद थी, पर उसे पूर्वी योरप की कुछ पृष्ठभूमि हासिल थी जिससे उसकी चाल-ढाल में करीब-करीब एशियन सौन्दर्य दिखाई देता था, परन्तु मुझे बताया गया कि हमारे अमरीकन दर्शक अमरीकन अभिनेताओं को ही चाहते हैं। और इसलिए मैंने यह बात मान ली जोकि मुझे माननी ही पड़ती क्योंकि मेरा इस मामले पर कोई नियन्त्रण नहीं था।

जैसे ही मैं शांगहाई पहुंची वैसे ही मैट्रो-गोल्डविन-मेयर का वहां का प्रतिनिधि निराश अवस्था में मुझसे मिलने आया। उसे दृश्यों और लोगों के आरम्भिक फोटो लेने भेजा गया था और उसे अपनी हर कोशिश पर असफल होना पड़ा था।

अन्त में इसका स्टूडियो अज्ञात व्यक्तियों द्वारा जला दिया गया, और वह अमरीका लौट रहा था। 'कुछ ताकतें हैं,' उसने कहा, 'जो यह चित्र बिल्कुल बनने देना नहीं चाहतीं।'

'ताकतें ?' मैंने विश्वास न करते हुए पूछा।

उसने सिर हिलाया और फिर समझाने लगा। बाद में मैंने सुना कि उसने अमरीका पहुंचने से पहले आत्महत्या कर ली, यद्यपि मैं समझती हूं फिल्म-विषयक कुंठा से नहीं, बल्कि अपनी ही किसी निजी और घरेलू दुःखदायी घटना के कारण।

महीनों बाद मुझे पता चला कि 'ताकतें' काफी सुपरिचित थीं क्योंकि वे नई सरकार के कुछ सदस्यों की चुभने वाली उल्टी देशभक्ति थी जो इस डर से चीनी गांवों और किसानों की प्रामाणिक फिल्म नहीं बनने देना चाहते थे कि विदेशी दर्शकों के विचार चीन के बारे में बुरे बनेंगे। मुझे इस भय से कुछ सहानुभूति थी, इसलिए मैंने फिल्म-निर्माण के साथ कोई सम्बन्ध रखने से तुरन्त इन्कार कर दिया क्योंकि मेरे लिए फिल्म की सफलता की अपेक्षा मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों का महत्त्व अधिक था। फिर भी सर्दियों में उस फिल्म के बनाने के बारे में मैंने बहुत कुछ सुना और इसके बारे में चीनी अखबारों में पढ़ा भी। बात यह थी, मैट्रो-गोल्डविन-मेयर की ओर से कैमरों और अन्य टेक्निकल साधनों से लैस एक दल भेजा गया था और उनके कष्टों की कहानी मुझे अपने मित्र अमरीकन वाणिज्य-दूत से नियमित रूप से सुनने को मिलती थी जिसे अपने पद के कर्तव्य के नाते मजबूरन अमरीकन चित्र-निर्माताओं और चीनी अधिकारियों के बीच मध्यस्थ बनना पड़ा था और चीनी अधिकारी कदम-कदम पर आपत्ति उठाते थे और मध्यस्थता के बाद भी अनिच्छा से बात स्वीकार करते थे और इस बात का आग्रह करते थे कि चित्र खींचने से पहले गांवों को ठीक-ठाक किया जाएगा कि हर औरत को साफ कपड़ों में सामने आना होगा और अपने बालों में एक फूल लगाना पड़ेगा। टूटी-फूटी सड़कें साफ की गई और मकान सजाए गए। अधिकारियों ने बहादुर भैंसे की जगह, जो मेरी कहानी में एक आवश्यक पात्र था, आधुनिक अमरीकन ट्रैक्टर रखने की भी कोशिश की जो बहुत ही थोड़े चीनियों ने कभी देखा होगा। वाणिज्य-दूत से मैं अमरीकन-कक्ष की परेशानियां सुनती थी तो उधर चीनी अखबारों के सम्पादकीय लेखों से मुझे दूसरे पक्ष का पता चलता था और उन लेखों में कुछ-कुछ इस प्रकार की बात लिखी होती थी—

'हमें भय है कि हमारी सरकार की हर सावधानी के बावजूद इस फिल्म में कोई बेधुले मुंह वाला बच्चा या कोई मैले चोगे वाली किसान औरत आ ही जाएगी।'

अब मुझे दोनों पक्षों से सहानुभूति थी और मैंने समझदारी से मौन रखा और अपने रोज़ के कामों में लगी रही। चित्रपट पूरा हो जाने और अमरीका में रहने लगने के बाद मैंने उस अविश्वसनीय बदकिस्मती की बात सुनी जिसने इसके निर्माण में रुकावट डाली थी। एक के बाद दूसरी बदकिस्मती आई, यहां तक कि अन्त में वह कहानी हर आदमी के मुंह पर आ गई। यह मुझे कम्पनी के एक सदस्य ने सुनाई और पचासों छोटी-मोटी दुर्घटनाओं के अलावा, सबसे बड़ी दुर्घटना यह हुई कि जब कम्पनी घर आने के लिए चीन से रवाना हो गई, तब टीन के डिब्बों में चीन से लाई गई अधिकतर फिल्म-सामग्री कहीं रास्ते में तेज़ाब से नष्ट हो गई जिसका परिणाम यह हुआ कि जितनी लम्बी फिल्म बाद में दिखाई गई, उसका बारह मिनट का हिस्सा मूलतः चीन में खींचे हुए चित्रों में से था। प्रसिद्ध टिड्डियों वाला दृश्य भी एक पश्चिमी अमरीकन राज्य में बनाया गया था जिसमें एक अवसर के अनुकूल टिड्डी-विनाश से अपेक्षित स्थानीय विशेषता आ गई था। अन्तिम दुर्घटना निःसन्देह यह थी कि प्रतिभाशाली डायरेक्टर इरविंग ठेलबर्ग चित्र को अधूरा छोड़कर आकस्मिक रोग से मर गया।

उसके उत्तराधिकारी ने चित्र समाप्त हो जाने के बाद एक दिन शाम को अपने मन ही मन में डर अनुभव किया था, या मुझसे ऐसा कहा गया, और उस समय वह अपने मकान में या किसी दूसरे मकान में चिमनी के पास खड़ा था, और जैसे ही वह बोला, वैसे ही एक बड़ा भारी चित्र मेन्टलपीस के ऊपर से गिर पड़ा और उसका सिर बाल-बाल बच गया।

फिल्म के बारे में अपनी स्मृतियां वैसी भयानक नहीं हैं। उद्घाटन के समय न्यूयार्क में होते हुए भी मैं वहां नहीं रही क्योंकि आडम्बर और प्रचार से मुझे डर लगता था। मैंने कुछ दिन प्रतीक्षा की और इसके बाद मेरा पति और मैं चुपके से थियेटर गए और गैलरी में बैठ गए। अपने-आप बनाए हुए पात्रों को परदे पर जीवित-जागरित आता देखना एक आश्चर्यजनक अनुभव है और मैं उसमें किए गए परिश्रम से, विशेष रूप से ओ-लान की भूमिका में लूई रेनर के अविश्वसनीय रूप से त्रुटिहीन अभिनय से, बड़ी प्रभावित हुई। वह न केवल एक चीनी स्त्री जैसी दीखती

थी, बल्कि उसकी ही तरह चलती थी, और उसका छोटे से छोटा कार्य, यहां तक कि चावल के कटोरे को धोना भी, बिल्कुल सही था। जब मैंने उससे पूछा कि उसने यह कैसे सम्पन्न किया तब उसने मुझे बताया कि भीड़ के दृश्यों के लिए जो बहुत सारे चीनी सेट पर नौकर रखे गए थे, उनमें से एक तरुण स्त्री को उसने चुना था जिसे वह ओ-लान के सबसे अधिक सदृश समझती थी। इसके बाद उसने इस स्त्री का सब जगह पीछा किया, उसे तब तक ध्यान से देखती रही जब तक कि वह उससे अभिन्नता न अनुभव करने लगी। जब बाद में वह फिल्म चीन में तथा अन्य एशियन देशों में दिखाई गई, जहां वह बड़ी सफल रही, तब चीनी मित्रों ने लूई रेनर की सराहना करते हुए और इस बात पर आश्चर्य प्रकट करते हुए मुझे पत्र लिखे कि उसने कितना सच्चा अभिनय किया था और यही आश्चर्य मुझे हुआ था।

तो न्यूयार्क के थियेटर से जब मैं चित्र पूरा हो जाने के बाद अपना स्थान छोड़कर उठी तब मैंने अपने स्थान से पीछे से आती हुई एक मधुर आह सुनी और एक खुशमिज़ाज पुरुषवाणी ने ये शब्द कहे :

'हां, यह अच्छा खेल है। पर मुझे तो मेई वेस्ट बड़ा पसन्द था।'

मैं उसका आशय जानती थी। मैंने मेई वेस्ट देखा था, पर जावा के एक छोटे-से भीड़ भरे थियेटर में। खुशमिज़ाज पुरुषों ने वहां भी उसको पसन्द किया था।

इन वर्षों में मैं बच्चों को कभी-कभी वह मकान देखने ले गई हूं जिसमें वेस्ट वर्जिनिया में मेरा जन्म हुआ था। यह पीछे खड़े हुए पर्वतों की छाया में सड़क के पीछे हटकर खड़ा है और अब एक दूसरे परिवार का है जो हमारे मित्र हैं। मेरे मामा का बड़ा लड़का आज से बीसों वर्ष पहले बड़ी मुसीबत में पड़कर इनके पास गया था, जब सट्टे ने उसे मेरे सबसे बड़े मामा से उत्तराधिकार में प्राप्त मकान बेचने को मजबूर कर दिया था जो बड़े मामा को पुराने ज्येष्ठाधिकारी नियम के अनुसार मेरे नाना से मिला था। मुझे खुशी है कि उसमें रहने वाले हमारे मित्र हैं, पर फिर भी मकान बहुत अधिक बदल गया है। उसपर रंग और मरम्मत की आवश्यकता है और बड़े-बड़े पुराने पेड़ हट चुके हैं यद्यपि विस्टेरिया वाइन अब भी खम्भों वाली ड्योढ़ी से लटक रही है। अन्दर से मकान बिल्कुल बदल गया है, केवल कमरों का रूप वही है। वह पहले वाला नियमबद्ध जीवन, जिसकी मुझे याद है, अब नहीं है।

पर जो अब नहीं है, वह बहुत कुछ खत्म हो चुका है और मेरा दुःखी होना अकृतज्ञता होगी। इसके बदले, मैं यह याद करती हूं कि उस मकान में अब जो परिवार रहता है, उसका तरुण पुत्र दूसरे महायुद्ध में कैप्टेन रहकर लौटा है, जैसे कि उसका पिता प्रथम महायुद्ध से लौटा था, और उसका दादा गृहयुद्ध से लौटा था। पर इस तरुण कैप्टेन का आधा शरीर नष्ट हो गया है। जब वह उस दिन जबकि हम पहली बार वहां गए थे, अपनी कार से लुढ़कता हुआ बिना टांगों का खूंटा-सा निकला, तब हमें बड़ा आघात लगा, बल्कि हमारे बच्चे तो शुरू में डर गए। बात यह हुई कि अपने कुछ अधैर्य के कारण उसे वर्तमान रूप में कृत्रिम टांगों के बिना ही रहना पड़ा और इसी प्रकार वह अपना काम-धन्धा करता है और अपनी जीविका कमाता है और मित्रों की सहायता से मछली पकड़ने भी चला जाता है, जिसका उसे शौक है। उसके एक अच्छी तरुण पत्नी भी है और दो बच्चे हैं। एक बार बाद में उसने मुझे बताया कि उसे अपने पांवों की हानि केवल उस समय असह्य हो जाती है जब उसका कोई बच्चा उससे कोई ऐसा काम करने के लिए कहता है जिसे वह नहीं कर सकता। तब उसे यह समझाना पड़ता है कि उसकी टांगें नहीं हैं। फिर भी उसमें बड़ी हिम्मत है और मुझे खुशी है कि मेरे पुत्र उसे जानते हैं। जैसे वह रहता है वैसे रहने के लिए सचमुच हिम्मत चाहिए, और कभी-कभी मैं सोचा करती हूं, जैसे कि मुझे निश्चय है कि सब तरुण लोग सोचते होंगे, कि क्या संसार में इतनी सामान्य समझदारी कहीं भी नहीं है कि ऐसी हानि पैदा करने वाली मूर्खता का फिर कभी अवसर न आए।

मुझे और कौनसी बात याद है? एक साल सर्दियों में मैं रेडियो पर मुग्ध हो गई और मैंने इस सुन्दर माध्यम के लिए एक उपन्यास लिखने की योजना बनाई जो उस समय मेरे लिए बिल्कुल नया था। मैं चुपचाप कोलम्बिया में एक कक्षा में चली गई जिसमें एक बढ़िया रेडियो-लेखक शिक्षा देता था। मैं वहां इस कला में बिल्कुल नये तरुण पुरुषों और स्त्रियों के बीच अनपहचानी ही सीखती थी, और आदेशानुसार लिखती थी, पर अन्त में प्रोफेसर की पैनी नज़र ने ताड़ लिया और इसके बाद उसने मुझसे कहा कि आप काफी सीख चुकी हैं और मेरे पास आपको सिखाने के लिए और कुछ नहीं है। मैंने वह उपन्यास कभी नहीं लिखा पर युद्ध के दिनों में कुछ रेडियो रूपक अवश्य लिखे जिनमें से एक उस साल के संग्रह में शामिल किया गया है। अब टेलीविज़न आ गया है और कभी-कभी मैं सोचा करती हूं कि

उपन्यास-लेखक इस जादुई माध्यम का कैसे प्रयोग कर सकता है। यह अभी पता लगाना है। इधर मैंने न केवल उस प्रोफेसर से सीखा बल्कि उन तरुण और तरुणियों से भी सीखा जो मेरे साथ विद्यार्थी थे।

तरुण अमरीकन मुझे अनेक प्रश्न पूछने को प्रेरित करता है। मैं उसे हर जगह, अपने घर में, और गांव तथा शहर की सड़कों पर, जहां कहीं मैं जाती हूं, ध्याम से देखती हूं। मैं अनुभव करती हूं कि उसके जीवन में कोई बुनियादी अभाव है, पर मैं यह नहीं बता सकती कि वह क्या है। बहुत सोच-विचार और प्रेक्षण के बाद मैं इसका मुख्य कारण बचपन में उनके जीवन की व्यापक प्रेमहीनता को समझती हूं। पुरामे देशों, उदाहरण के लिए, फ्रांस में, योरप में और एशिया में सब जगह बच्चे से इतना अधिक प्यार किया जाता है कि वह बचपन में मौत के अलावा अपने जीवन के और किसी भी संकट को झेल लेता है क्योंकि वह सदा अपने परिवार के साथ रहता है और बाद में इस कारण कि उसके जीवन की बुनियाद प्रेम में रक्खी गई है। मैंने केवल जर्मनी में बच्चों के प्रति कठोरता देखी है और मैं सोचा करती हूं कि इस आरम्भिक जीवन की कठोरता का उनके जीवन की सुखहीनता, बेचैनी और असन्तोष से कितना अधिक सम्बन्ध है जिसके कारण वे बार-बार युद्ध में पड़ने को मजबूर होते हैं और किसी भी नेता को, जो उन्हें अच्छी बातों का वचन देता है, वे दयालु पिता के रूप में मानने को शायद मजबूर हो जाते हैं।

हमारे अमरीकन अपने बच्चों के प्रति कठोर नहीं, बल्कि उदासीन और लापरवाह या चिन्तित और आलोचनापूर्ण होते हैं। माता-पिता का संसार बचपन के संसार से बहुत दूर होता है। अनेक परस्पर-विरोधी आदर्श होते हैं जिनसे हमारे बच्चे मनुष्य के रूप में अपने मूल्य के बारे में अनिश्चित मनोभाव लिए हुए बड़े होते हैं। मैं तब चकित होती हूं जब कोई ध्यान से न देखने वाला विदेशी मुझसे यह कहता है कि अमरीकन अभिमानी हैं। कभी-कभी लम्बी-चौड़ी और बढ़-बढ़कर बातें करने वाले तो हम हैं, पर इसका कारण यह है कि हम अभिमानी नहीं हैं, बल्कि मन ही मन अपने ऊपर अविश्वास रखते हैं और हम जो कुछ करते, कहते, सोचते हैं, इसके बारे में संदेही होते हैं। जो आदमी अपना मूल्य जानता है, वह बढ़-बढ़कर बातें नहीं करता, स्वार्थी नहीं होता, दूसरों के ऊपर हावी नहीं होता या अपनी संमति दूसरों के ऊपर नहीं लादता। वह अन्य मनुष्यों का आदर करता है क्योंकि वह पहले अपना आदर करता है। जब हम अमरीकन इन गुणों में चूकते हैं तब इसका कारण

यह होता है कि किसी जगह हमारा अपने ऊपर विश्वास नष्ट हो गया है और मैं समझती हूं कि यह घटना आरम्भिक बचपन में होती है। जब मैं किसी माता या पिता को, पर प्रायः माता को—क्योंकि अमरीकन पुरुष आम तौर से अपने बच्चों की ज़िम्मेदारी का उचित हिस्सा अपने ऊपर नहीं लेते—सड़क पर चलते हुए बच्चे की बांह झटकते हुए, उस छोटे-से प्राणी को थप्पड़ लगाते हुए, उसपर चिल्लाते हुए और इतना तेज़ चलते हुए कि उसकी छोटी टांगें साथ नहीं चल पातीं, देखती हूं तब सहम जाती हूं। मेरी इच्छा होती है कि मुझमें बोलने की हिम्मत हो और मैं माता से कह सकूं कि जो कुछ वह कर रही है उसके बारे में उसे सावधान रहना चाहिए क्योंकि ऐसी क्रूरता से ही वह अपने बच्चे का दिल नष्ट कर देगी। मुझे कभी बोलने की हिम्मत नहीं हुई क्योंकि मैं देखती हूं कि अमरीकन माता-पिता के लिए उसका बच्चा एक निजी सम्पत्ति है जिससे वह जैसा चाहे व्यवहार करे और यह वैसा नहीं है जैसा चीन में था, जहां बच्चा सब पीढ़ियों की चीज़ होता था और उसे माता-पिता के अन्याय से सदा बचाया जाता था।

मेरा कहना है कि हमारे बच्चों का मनुष्य के रूप में काफी आदर नहीं किया जाता, पर फिर भी जन्म के क्षण से ही उन्हें आदर पाने का यह अधिकार होता है। हम उन्हें बहुत अधिक दिन बच्चा रखते हैं और उनका संसार जीवन के वास्तविक जीवन के संसार से अलग रखते हैं। उदाहरण के लिए, कस्बों और शहरों के बच्चों को ज़िम्मेदारी नहीं उठाने दी जाती। क्या यह भी असम्मान का ही एक रूप नहीं है! बच्चों की सम्मति एक मूल्यवान् दृष्टिकोण है और उसका उपयोग किया जाना चाहिए। वह समुदाय का हिस्सा है और उनके अपने विचार और भावनाएं हैं। बच्चों की ऊर्जा की एक विशेष निधि है जो समुदाय के लिए हितकर रूप में अभिव्यक्त होनी चाहिए। अधिकतर बस्तियों में मैं गन्दी गलियां और गन्दे इलाके देखती हूं जो शासन के बुरा होने के न सही, फिर भी लापरवाही के प्रमाण हैं। तब भी बच्चे इसे अपना काम नहीं समझते। पर अगर मैं किसी नगर की मेयर होती तो मैं यह चाहती कि मुझे वहां पहुंचाने में बच्चों की भी आवाज़ हो और बस्ती का जीवन चलाने के लिए मैं जैसे बड़ों को उनके स्तर पर, वैसे ही छोटों को भी उनके स्तर पर ज़िम्मेदार ठहराती। अमरीकन जन्म से ही नागरिक होते हैं, पचीस वर्ष की आयु हो जाने पर नहीं। यदि वे उस आयु तक लोकतन्त्र में किसी नागरिक द्वारा किए जाने वाले कार्य नहीं करते तो यह समय गंवाना है। वे गैर-ज़िम्मेदार और

इसलिए अपरिपक्व रहते हैं। पहली कक्षा से ही बच्चों को नागरिक के कर्तव्य सिखाए जाने चाहिए और नागरिक मामलों में और फिर राज्य तथा राष्ट्र में उनकी आवाज़ होनी चाहिए। पर यहां मैं अपनी शौक की बात पर आ गई हूं, और अब उसे छोड़ती हूं।

जिन वर्षों में मैं अपने देश में रही हूं, उनमें शायद सबसे बड़ी प्रगति मूलवंशीय सम्बन्धों में हुई है। यह कहते हुए मुझे इस बात का पूरी तरह ज्ञान है कि यदि ध्येय की दृष्टि से देखा जाए तो वह प्रगति अभी बहुत ही थोड़ी है पर यह गोरे लोगों के मन में और नीग्रो लोगों के दृढ़ संकल्प में आरंम्भ हो चुकी है। हम अमरीकन लोग सीखते अवश्य हैं, यद्यपि सीखने का प्रक्रम मन्द गति से चलता है, और हम सदा यह स्वीकार करने को तैयार नहीं होते कि हम बदल रहे हैं। शायद एशियनों की, जिनकी चमड़ी सफेद नहीं और काले तथा कलर्ड (रंगीन अर्थात् मिश्रित रक्त के) दक्षिण अफ्रीकनों की मुंहफट आलोचना ने हमें सोचने को मजबूर किया है। मेरा विश्वास है कि तथ्यतः अमरीकन में पूर्वाग्रह बहुत ऊपरी है और इसे आसानी से पूरी तरह दूर किया जा सकता है।

तब मेरा यह विश्वास और भी अधिक बढ़ने लगता है जब मैं यह देखती हूं कि जो नीग्रो महान् कलाकार और महान् मनुष्य सिद्ध होते हैं उन्हें उदार प्रशंसा और आदर प्राप्त होता है। जब नीग्रो मुझसे पूछते हैं, 'यदि आप नीग्रो होतीं तो क्या करतीं?' तब मैं सदा यह उत्तर देती हूं, 'मैं अपने मूलवंश के सबसे अधिक प्रतिभाशाली और सबसे अधिक मेधावी बच्चों की खोज में लग जाती और उन्हें शिक्षा दिलाकर उनका पूर्ण विकास करने के लिए किसी न किसी तरह धन इकट्ठा करती और साथ ही दूसरों के प्रति भी अपनी ज़िम्मेदारी निभाती।'

भारत और पाकिस्तान के मेधावी नर-नारियों को भी पिछले कुछ वर्षों में हमें यह अनुभव कराने का बड़ा श्रेय है कि गेंहुई चमड़ी वाले लोग भी, पूर्व की रीति-नीति की तरह पश्चिम की रीति-नीति में भी सुसंस्कृत और समझदार हो सकते हैं। मुझे आशा है कि ये वाणियां चुप न हो जाएंगी क्योंकि अमरीकन लोग सबसे पहले मानव हैं और हमें मानवता द्वारा जीता जा सकता है, फिर वह कहीं भी हो। खासकर भारत के नेताओं ने जिस असाधारण धैर्य और शान से हमारे विवेकहीन भाषणों और अखबारी लेखों को सहन किया है, उससे हमपर उनका प्रभाव बढ़ गया है, यद्यपि यहां के कुछ सार्वजनिक नेता अब भी ऊंची और कर्कश

आवाज़ में चीखते रहते हैं। गरिमा आश्चर्यजनक शस्त्र है, जब इसका स्थिरता से प्रयोग किया जाए और यदि गरिमा को कभी न छोड़ा जाए तो यह सदा विजयी होती है।

अनेक मित्रों से मुझे अपने देश को जानने में मदद मिली है। उदाहरण के लिए डोरोथी केनफील्ड का अर्थ मेरे लिए वर्मोंट है, और उसे जानने के कारण मुझे अपना छोटा-सा मकान बनाने की प्रेरणा मिली और हमारे पुत्रों ने इसे बनाने में हाथ बंटाकर शिक्षा पाई। यह मकान ग्रीन पर्वतों में फारेस्ट,हांट नाम से है। वहां हम निर्जन में रहते हैं। वैसे तो मुझे लोगों से और उनके बीच रहकर जीवन बिताने से प्यार है, पर कभी-कभी मुझे अपनी वन से घिरी हुई कोठरी में बैठकर और यह सोचकर अच्छा लगता है कि हमारे उत्तर की ओर पैंतीस मील तक कोई नर-नारी नहीं रहता, और वहां केवल जंगल, नाले और निस्तब्धता है। इस महान् संघ का प्रत्येक राज्य मेरे लिए प्राकृतिक दृश्यों और अनुभूति में ही मौजूद नहीं है, वल्कि वहां के लोगों में भी है जो मुझे सशरीर नहीं तो साहित्य के रूप में अपने घरों में ले गए हैं।

अपने अमरीकन परिवार में से मैं, अपने पति और बच्चों के बाद अपनी प्रिय सास को याद करती हूं जो अब मर चुकी है। चीन में पालित-पोषित होने के कारण मैं अपने जीवन में उसे सम्मान का स्थान दिए बिना नहीं रह सकती थी। मेरे लिए यह बहुत ज़रूरी था कि वह मुझे पसन्द करे और मुझे स्वीकृत करे। किन्तु यदि वह न करती तो ? पर वह करती ही थी, और शुरू से हमारा सम्बन्ध वैसा ही था जैसा होना चाहिए : मेरी ओर से आदर और प्यार और उसकी ओर से स्निग्ध और स्वाभाविक अनुराग। मैं नहीं जानती कि इस समय मुझे एक सवेरे की क्यों याद आ रही है जब वह हमारे फार्म-हाउस में आई हुई थी— वह वहां आती रहती थी पर कभी रहती नहीं थी जिससे मुझे शुरू में चोट भी पहुंची, क्योंकि मैं चाहती थी कि वह हमारे यहां रहे और हमारे बच्चों को दादी का लाभ प्राप्त हो; दादा तो पहले ही मर चुका था इसलिए हमारे दैनिक जीवन की पहुंच से बाहर था। पर नहीं, वह केवल मिलने आती थी। हां तो एक ऐसे ही सवेरे, बच्चों के नाश्ता करके चले जाने पर भी हम मेज़ के पास बैठे बातचीत करते रहे, और हमने इंगलैंड तथा उसके राजपरिवार की चर्चा की जिसमें, इंगलैंड में जन्म होने के कारण, उसने बहुत निजी दिलचस्पी ली। वह

सुन्दर सफेद बालों वाली स्त्री थी जो काफी हृष्ट-पुष्ट और सदा अच्छे कपड़े पहनने तथा प्रसन्न रहने वाली महिला थी और चूहों के अलावा और किसी चीज़ से नहीं डरती थी। वह मेज़ के सिरे पर बड़ी खिड़की की ओर पीठ किए बैठी थी। मेरा पति उसके एक ओर बैठा था और मैं दूसरी ओर, और उसके पीछे चमकते हुए लाल ईंट के फर्श पर धूप पड़ रही थी।

वह बोल रही थी। एकाएक एक कंगारू चूहा चूल्हे के पास, जो जला हुआ नहीं था, चिनी हुई लकड़ियों में से लपककर निकला, और झट से निःसंकोच भाव से वह ज़रा-सा चुस्त जानवर अपनी पिछली टांगों पर खड़ा हो गया। उसके अगले पंजे छोटे-छोटे हाथों की तरह हिलने लगे, और वह धूप में नाचने लगा। बड़ा ही सुन्दर दृश्य था! नृत्य इतना सुन्दर और शानदार था कि मेरे पति की और मेरी एक-दूसरे से बोलने की इच्छा हुई और हमारी नज़रें मिलीं, पर यदि हम बोलते तो माताजी को चूहे का पता चल जाता और फिर नृत्य भंग हो जाता। चुपचाप आनन्द लेते हुए हम उसे देखते रहे और माताजी बोलती रहीं और अन्त में चूहा नाच समाप्त करके फिर चूल्हे की ओर चला गया। आज भी मुझे वह दृश्य दीवार पर खिंचे चित्र की तरह दिखाई देता है—फर्क इतना है कि कोई भी चित्र हमारी माता की कुर्सी के पीछे उस छोटे-से जंगली जानवर की स्वप्निल गतियों का भान नहीं करा सकता।

और मेरे परस्पर मिलते हुए संसारों में एक और स्मरणीय चित्र न्यू जर्सी में नवम्बर के एक शीतल दिन का, ठीक-ठीक कहूं तो तेईस नवम्बर का, फ्रीवुड एकर्स का है। यह एक लामा बौद्ध मन्दिर के प्रतिष्ठापन का अवसर था। वस्तुतः यह एक गैरेज था जिसे मन्दिर बना लिया गया था, और इस तरह रूपान्तर करने के विचार में ही कुछ विचित्रता और मोहकता है, और मुझे निश्चय है कि वह हमारे देश के इतिहास में पहला बौद्ध मन्दिर था। यह सब होते हुए भी यह सच्चे अर्थों में मन्दिर था और कुछ भक्त लोगों द्वारा बनाया गया था जो अब अमरीकन नागरिक बन रहे थे। वे कम्यूनिस्ट-विरोधी कालमुक थे, जो पुरुष, स्त्री और बच्चे मिलाकर सौ से अधिक थे और उन्होंने स्वयं उसकी चिनाई, लिपाई (पलस्तर करने) और बढ़ईगीरी का काम किया था। अस्फाल्ट के नाम-पट्ट को उन्होंने चमकीले पीले रंग से लेप दिया था जो बौद्धों का धार्मिक रंग है, पर दरवाज़े के ऊपर उनके अपने लाल और पीले धार्मिक झंडे के साथ एक बड़ा अमरीकन झंडा

लहरा रहा था।

कालमुक चंगेज़खां के, जिसने तेरहवीं सदी में अधिकतर एशिया और योरप को जीत लिया था, मंगोलियन योद्धा-अनुयायियों के वंशज हैं। वे डॉन और वोलगा नदियों के बीच के स्टैपीज़ के मैदानों में बस गए थे और रूस में क्रान्ति के बाद उनका कालमुक समाजवादी सोवियत स्वायत्त गणराज्य बन गया था। इस बढ़िया नाम के बावजूद उनका क्रेमलिन के साथ कभी-कभी मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध नहीं रहा, और दूसरे महायुद्ध के दिनों में उनमें से बहुत सारे जर्मन सेनाओं द्वारा पकड़े गए, या उन्होंने अपने-आपको जर्मन सेनाओं द्वारा पकड़ा जाने दिया और इस प्रकार वे विस्थापित कैम्पों में पहुंच गए, जहां से वे मुख्यतः प्रोटेस्टेंट ईसाइयों के प्रयत्नों द्वारा अमरीका लाए गए। अब न्यू जर्सी में वे दरियों के कारखानों में, खेतों में और मकान बनाने के कामों में लगे हुए हैं।

हम उस दिन बड़े सवेरे पहुंचे। हवा बहुत ही ठंडी थी। और सौहार्दपूर्ण प्रतिनिधियों ने हमारा स्वागत किया। वे हमें किसीके मकान में भीड़ भरे छोटे कमरे में ले गए, जिसे अतिथि-कक्ष की तरह सजा दिया गया था, और उन्होंने हमें चाय तथा केक पेश किए। यद्यपि वहां बहुत सवेरा था, पर सारी आबादी, यहां तक कि बच्चे भी, स्वच्छ और गुलाबी दीख रहे थे, शिशु आश्चर्यजनक रूप से मोटे और गोल चेहरे वाले तथा सर्दी से बचाने के लिए पपूसों (उत्तरी अमरीका के आदिवासियों के बच्चों) की तरह कपड़ों में लिपटे हुए थे। लगभग दो घंटे बाद कृत्य आरम्भ हुए। हमें छोटे-से मन्दिर के अन्दर बैठने का निमन्त्रण दिया गया और वेदी के दाईं ओर रस्सों के पीछे सम्मानित स्थानों पर बिठाया गया।

उस दिन मुझे सुपरिचित बौद्ध देवता कितने अजीब लगे! मैंने पहले उन्हें अमरीकन वातावरण में, या इतने सादे मकान में भी कभी नहीं देखा था, पर यहां वे वेदी के पीछे एक पंक्ति में बैठे हुए मौजूद थे और उनके आगे जनता के चढ़ावे का ढेर लगा हुआ था, जिसमें सब तरह के भोज्य-पदार्थ, यहां तक कि बिस्कुटों और नाश्ते में खाए जाने वाले अनाजों के डिब्बे भी थे, और मैं कह सकती हूं कि उन देवताओं को भी पहले कभी ऐसे भोज्य-पदार्थ नहीं चढ़ाए गए थे। वास्तव में ये लामाओं को दिए गए उपहार थे। पर यह सब बड़ा गम्भीर और मेरे लिए हृदयस्पर्शी तथा प्रेरणादायक कार्यक्रम था। मेरे पुराने मित्र व दिलोवा हुतुखुतु ने, जो भारतीय सिद्ध तोलोपा (तिलोपा) का अट्ठारहवां अवतार है, और इसलिए

हमारे देश में आए सब मंगोल बौद्धों का प्रधान पुरोहित है, आध घंटे के संक्षिप्त समारोह में पुरोहित का कार्य किया। उसके दाईं ओर और ज़रा नीचे नौ लामा बैठे थे जो, मेरा ख्याल है, कालमुकों के साथ आए थे। दिलोवा स्वयं ऊंचा आदमी है, और अब वृद्ध हो रहा है और उसका चौड़ा मंगोल चेहरा यहां ऐसा शान्त है जैसे कि वह निर्वासित नहीं है। उस दिन उस छोटे-से गैरेज वाले मन्दिर में वह शान्तिपूर्ण भव्यता से चमक रहा था, यद्यपि कभी वह तीन बड़े मठों में नौ सौ लामाओं का अधीश्वर था, जिनमें से एक बाहरी मंगोलिया में और दो भीतरी मंगोलिया में थे। पर यह उस समय से पहले की बात है जब कम्यूनिस्टों ने उसे खदेड़ा था और ओवन लैटिमोर ने उसकी जान बचाई थी।

अब नये छोटे-से मन्दिर में उसने अपना पीला रेशमी टोप पहना जो उसके पद का सूचक था, और शायद इसकी तुलना कैथोलिक चर्च के कार्डिनल के लाल टोप से की जा सकती है, जिसमें दलाई लामा पोप के समतुल्य होगा। जब हम अन्दर आए तब वह एक ऊंचे आसन पर पलथी मारे बैठा था। इसके बाद वह उठा, और धीरे-धीरे चलता हुआ वेदी पर पहुंचा। उसके वस्त्र उसके चारों ओर फहरा रहे थे। उसने एक नाज़ुक छोटी-सी घंटी बजाई और अन्य लामा उसके पास इकट्ठे हो गए और वे मिलकर धार्मिक मन्त्रों का पाठ करने लगे। जब यह कार्य समाप्त हो गया तब दिलोवा ने एक संक्षिप्त प्रवचन किया और उसके कुछ शब्द ये थे :

"सम्यक् सम्बुद्ध की अनुकम्पा से आज का दिन एक श्लाघ्य कार्य की पूर्ति के कारण बड़े आनन्द का दिन है।

"सम्यक् धर्म वाले तुम सब कालमुक मंगोल लाल रूस की भयंकर परिस्थितियों से बच निकलने में सफल हुए, जहां मिथ्या धर्म फैले हुए हैं, और इस महान् अमरीका में आ गए जहां शान्ति और सुख का विस्तृत आधार बना हुआ है, और सम्यक् संबुद्ध में तुम्हारा प्राचीन काल से जो विश्वास चला आता है उसे दृढ़ करने के लिए तुमने अपनी भक्ति के सम्यक्-संकल्प से यह नया मन्दिर बनाया है, और अब तुम इसकी प्रतिष्ठा कर रहे हो। तुमने संघ की स्थापना की है, आज तुमने भगवान् बुद्ध के निवास के लिए यह प्रासाद पूरा किया है, यह प्रार्थना और त्याग का स्थान है, निर्वाण की फसल बोने का स्थान है—यही तुम्हारा पुरस्कार है क्योंकि तुम पूर्वजन्मों में धर्मवीर थे···

"तुम सब कालमुक मंगोलों को—जिन्होंने यह मन्दिर बनाकर इसमें प्राचीन स्वदेश में बने हुए अपने मन्दिर अरशी गिम्पिलग का नाम अमर किया है—यह आशीर्वाद देता हूं : धर्म की ओर अपने हृदय की कामना की जैसी परिपूर्ति तुमने चाही थी, और जो तुम्हारी अभिलाषा थी, उसे पूरा कर लेने पर अब तुम्हें प्रचुर सुख की प्राप्ति हो, तुम्हारे शुभ वचनों में निरन्तर वृद्धि हो, तुम्हारा पुनर्जन्म ही तुम्हें सम्यक् सम्बुद्ध के धर्म के साथ अभिन्न कर दे और शीघ्र ही शान्ति से तथा बिना श्रम के ऊर्ध्वस्थ आयतों के साथ मिलकर एक हो जाओ।'"

धार्मिक कृत्य समाप्त हो जाने पर सब लोग बाहर ठंडी चमकती हुई धूप में चले गए और वहां मन्दिर के छोटे-से द्वार पर मैंने एक आनन्ददायक दृश्य देखा। मेरे मित्र मंगोल राजकुमार की छोटी-सी, सुन्दर, पंच-वर्षीय पुत्री सैली मन के उफान को वाणी देने को ठहर गई थी। वह अपने परिवार की तरह गर्दन से पांवों तक भड़कीले लाल व हरे साटन के वस्त्र पहने हुए थी; इस वेश में वह अमरीकन और बौद्ध झंडों के नीचे खड़ी थी और धार्मिक भावावेश से अभिभूत होकर वह आपसे-आप गीत गाने लगी। गीत? यह था 'जेसस लव्स मी' (ईसा मुझसे प्यार करता है)। मैं मकान के पीछे चली गई और अकेली अपनी दिल को हिला देने वाली हंसी का आनन्द लेने लगी, पर कालमुकों को इस घटना में कोई विनोद की या अजीब बात नहीं मालूम हुई।

'सैली कितना बढ़िया गाती है!' उन्होंने इस रविवारीय स्कूल की राजकुमारी की प्रशंसा करते हुए कहा।

अगली घटना एक ज़ोरदार भोज था जो रोवा फार्म की व्हाइट रशियन बस्ती ने कालमुकों और उनके मित्रों को दिया था। हम लोग, जो तीन सौ से अधिक व्यक्ति थे, दावत में बैठ गए—यह दावत ऐसी थी कि रूसी ही इसे देना जानते हैं—और एक के बाद दूसरा बढ़िया भोजन और पेय आता गया। भाषण शुरू हुए और चलते रहे। रूसी लोग खड़े हुए और बड़ी ओजस्विता और बल से बोले और मैं ध्यान से सुनती रही, पर मैं उससे अधिक कुछ न समझ सकी जो एक पड़ौसी ने जल्दी-जल्दी में अनुवाद करके बताया। पर सबसे अधिक मार्मिक वह अन्तिम भाषण था जो प्रमुक कालमुक ने दिया, जो तगड़ा अत्यन्त गोरे मुख वाला आदमी था और सलेटी रंग का व्यापारी सूट पहने हुए थे। उसने अपने आगे एक कागज़ रखा हुआ

था और भोज के लिए तथा व्हाइट रशियन द्वारा नई बस्ती के प्रति अन्य रूपों में दिखाई गई महान् कृपा के लिए धन्यवाद देने के बाद उसने देवताओं का इस बात के लिए धन्यवाद किया कि उसके सब साथी सुरक्षित अमरीका आ गए, जहां,उसने कहा, वे सुख से रह रहे हैं। उसने बताया कि उन्होंने न केवल वह मन्दिर बनाया है जिसमें उस दिन प्राण-प्रतिष्ठा की गई थी, बल्कि तीस परिवारों के अपने मकान थे, बीस से अधिक के पास कारें थीं और उसे यह बताते हुए प्रसन्नता अनुभव हो रही थी कि पचास से अधिक के पास टेलीविज़न सेट थे !

सफलता के इन आंकड़ों पर खूब तालियां बजीं और भाषणों के बाद लोग भोजन पर सचमुच टूट पड़े।

यह एक आश्चर्यजनक, उत्साहवर्धक, प्रेरणादायक दिन था। कम से कम इतनी देर मेरे अनेक जगत् एकत्र आ गए थे और मैं समझती हूं कि हम सबको ऐसा ही अनुभव हुआ। काउंटेस एलेग्ज़ेंड्रा टालस्टाय वहां थी और हमने हाथ मिलाए। उसके सत्यनिष्ठ सुन्दर चेहरे की ओर देखने पर मुझे अपनी ही भावनाएं उसमें प्रतिबिम्बित दिखाई दीं।

और मुझे एक और चित्र की तरह ही एक वह सायंकाल भी याद है जब एशिया फिर मेरे घर में आ गया था—इस बार यह सुन्दर तरुणियों के रूप में था जो एक फैशन-शो में हिस्सा लेने आई थीं। यह फैशन-शो मेरी मित्र और पड़ौसी डोरोथी हैमरस्टीन ने वेल्कम-हाउस की सहायता के लिए आयोजित किया था। उन्होंने तीसरा पहर उसके घर बिताया था। तैरने के तालाब के किनारे चबूतरे पर उन्होंने अपने स्तब्ध कर देने वाले वेश-विन्यास प्रदर्शित किए और वेल्कम-हाउस के बच्चों को देख आने के बाद वे रात हमारे यहां बिताने आई थीं। जापान ने मुझे हारु मत्सुई, और प्रसिद्ध तरुण अभिनेत्री शिरले यामागुची दी थी, जो एक फिल्म में काम करने हालीवुड जा रही थी। दोनों देखने में सुन्दर थीं पर शिरले यामागुची की दादी फ्रेंच थी, और विजातीय रक्त ने उसकी आंखें ऐसी बड़ी और चमकदार कर दी थीं जैसी मैंने कभी नहीं देखीं। उसकी चमड़ी शुद्ध क्रीम जैसी थी और बना-वट ऐसी साफ, जैसे संगमरमर की मूर्ति हो, पर फिर भी बिल्कुल जापानी। पाकि-स्तान की सुन्दर लड़की, एक बड़ी मनोरम चीनी कन्या जो एक प्रसिद्ध युद्ध-नायक की पुत्री थी, एक भव्य इण्डोनेशियन, एक भारत की ऊंची तरुण सुन्दरी···वे भोजन के बाद सोफों पर बैठ गईं और कोई पुरुष वहां न होने के कारण उन्होंने

स्त्रियों की गपशप आरम्भ कर दी और सब एक-दूसरे से पूछने लगीं कि तुम्हारे देश में जीवन कैसा है। मेरे ख्याल से चीनी लड़की सबसे कम सुसंस्कृत थी, पर इसका कारण यह नहीं कि चीनी लड़कियां होती ही ऐसी हैं, बल्कि यह है कि युद्ध-नायक की लड़की होने के कारण उसके खानदान में विद्वानों और कलाकारों का अंश नहीं आया था। वह उत्तर के मैदानी लोगों में से थी, और अपने बड़े शरीर, सुन्दर भारी नाक-नक्श और टूटी-फूटी इंगलिश के कारण—क्योंकि वे सब इंग-लिश के द्वारा ही आपस में बात कर सकती थीं और अन्य सब इसे बड़े निर्दोष रूप में बोलती थीं—वह अलग-सी दिखाई देती थी। मैंने लक्ष्य किया कि वह बेचैन थी और मैंने उससे पूछा कि तुम्हारी तबियत तो ठीक है? उसने उत्तर दिया कि मैंने बहुत अधिक खा लिया है। पिछली रात न्यूयार्क में निर्वासित मित्रों ने उसको दावत दी थी क्योंकि उसका पिता फारमोसा में एक बड़ा सेनापति था, और आज रात उसने यहां भुने हुए चूज़े और चावल शौक से खाए थे और अब उसकी कमर की पेटी बहुत कस गई थी।

'ऊपर जाकर पेटी उतार दो,' मैंने कहा। 'यहां हम औरतें ही औरतें हैं।'

वह ऊपर चली गई और लौटने पर पहले से बहुत कम बेचैन दिखाई दी, पर उसे कुछ ही मिनट आराम रहा। इसके बाद उसने बड़ी परेशानी से अपना पेट मला। 'अब भी मेरा पेट बहुत भर रहा है,' उसने चीनी भाषा में निःसंकोच कहा। मैंने अनुवाद किया, और अन्य सब तरुणियों ने मज़ा लेते हुए सहानुभूति प्रकट की।

'गर्म पानी में थोड़ा सोडा बाइकार ले लो।' मैंने कहा।

वह कुछ भी करने को तैयार थी, और इसलिए मैंने उसे सोडा डालकर पानी दिया और उसने वह पी लिया। इसके बाद वह थोड़ी-थोड़ी देर बाद ऊंची आवाज़ के साथ निःसंकोच डकारें लेने लगी जिससे और सब चौंके और चकित हुए, पर युद्धनायक की पुत्री पर इसका कुछ भी असर नहीं पड़ा।

'तुम अमरीका कैसे आ गई?' अन्त में मैंने स्थिति बदलने के लिए पूछा, क्योंकि चकित होने के बाद हंसी का प्रवाह फट रहा था जो भारत और पाकिस्तान, जापान और इण्डोनेशिया के सुन्दर चूड़ियों वाले हाथों के पीछे मुश्किल से रुक रही थी।

युद्धनायक की पुत्री ने हार्दिक ईमानदारी से उत्तर दिया। 'जब कम्यूनिस्ट आए,' वह बोली, 'तब मेरे पिता को फारमोसा जाना था। पर उसका परिवार

माता-पिता और भाई-बहन होते हैं, उस बच्चे का अकेले रहने पर क्या हाल होता है जिसके शरीर के किसी भाग के बजाय दिमाग में कोई शारीरिक कमी होती है। ये बर्बाद बच्चे हैं, जिनसे चालाक लोग आम तौर से वे बुरे काम कराते हैं जिन्हें हम बाल-अपराध कहते हैं। और यह अवस्था तब तक रहेगी जब तक माता-पिता मिलकर अपने बच्चों की रक्षा के लिए खड़े नहीं होंगे। मैं फिर परिवार के लिए अपील करती हूं क्योंकि परिवार व्यष्टि का किला होना चाहिए और कोई भी कल्याण-ऐजेंसी, या राजकीय संस्था या सार्वजनिक संस्था ज़रूरतमंद बच्चे के लिए, और इस मामले में वयस्क के लिए भी, उतनी अच्छी तरह कार्य नहीं कर सकती जितनी अच्छी तरह सम्बद्ध परिवार कर सकता है। किसी न किसी प्रकार अमरीकन परिवार को फिर उसकी ज़िम्मेदारी सिखानी चाहिए।

हां, जब मैं अपने देश में निवास के अपने बीस वर्षों की स्मृतियों का सिंहावलोकन करती हूं, तब मैं बहुत कुछ देखती हूं, पर फिर भी मैं यह जानती हूं कि मुझे कोई पूरी कहानी नहीं दिखाई देती न वर्षों के क्रमबद्ध पृष्ठ ही दिखाई देते हैं। मैं अपना देश अमरीका दृश्यों और उपाख्यानों के रूप में देखती हूं, ऐसी विविध अनुभूतियों के रूप में देखती हूं कि मेरी समझ में नहीं आता कि उन्हें किस तरह जोड़ूं। दैनिक जीवन चलता जाता है, सम्पन्न और गहरा और अच्छा, और मेरी जड़ें, इसमें जमी हुई हैं, पर मैं जानती हूं कि यह उतना ही अमरीका है जितना एक परिवार, किसी एक बस्ती में, एक फार्म पर रहता हुआ हो सकता है—यह सच है कि इससे संसार के चारों ओर रास्ते जाते हैं। जब कोई एशियाई अतिथि मुझपर यह बताने के लिए ज़ोर डालता है कि अमरीकन वास्तव में क्या है, ताकि उसे हमारे हृदयों की कुंजी, हमारे मन को जानने का मार्ग मिल जाए, तब मैं अपना सिर हिला देती हूं।

'मुझे अपने एक-एक देशवासी पर पृथक्-पृथक् विचार करना होगा,' मैं उससे कहती हूं। 'मेरे पास कोई कुंजी नहीं है, कोई उनके मन में पहुंचाने वाला मार्ग मुझे ज्ञात नहीं है—अभी तक तो नहीं है।'

मैं कहती हूं कि मुझे ऐसा सूत्र नहीं दिखाई देता जो मेरे वर्तमान जीवन के आनन्द से पूर्ण और विविध अमरीकन दृश्यों को एक जगह बांध सके, पर फिर भी मुझे अपने देश में सबको एक करने वाली एक भावना व्याप्त मालूम होती है।

विचारों में हमारे अविश्वसनीय मतभेद होते हुए भी, क्रिया में हमारे कभी दूर न होने वाले विरोध मालूम होते हुए भी हममें एक एकत्व की भावना अमरीकन भावना है। इसको स्पष्ट निर्दिष्ट करना कठिन है फिर भी मैं इसे दृढ़ रूप में अनुभव करती हूं। अब भी वर्धमान जाति की गहरी और सशक्त होती हुई अभिव्यक्ति जो संसार के सब स्थानों की मानव-सामग्री से मिलकर अभी एक नये राष्ट्र का रूप ग्रहण करने के प्रक्रम में है: हमारे पूर्वजों ने इस महाद्वीप में आने के लिए अपने पुराने देश चाहे जिस भावना से छोड़े हों—और वे कारण अच्छे भी थे, और बुरे भी, और उतने ही विविध थे जितने स्वयं वे लोग—पर हम लोग, जो उनके वंशज हैं, अपने-आपमें एक निराली चीज़ पैदा कर रहे हैं, एक ऐसी प्रकृति पैदा कर रहे हैं जो हमारी धरती की उपज है; एक ऐसा चरित्र पैदा कर रहे हैं जो विशिष्ट अमरीकन है।

विश्व की समस्याओं के समाधान में हमारा योगदान अमरीकन भावना के कार्य करने पर ही आएगा। हमारा सोचने का तरीका व्यावहारिक होगा यद्यपि कभी-कभी उसमें धैर्य की कमी होगी, आशावादी होगा पर कभी-कभी उसमें विनोदपूर्ण पछतावा भी होगा; ऊर्जस्वी होगा पर कभी-कभी उसमें अनिच्छा दिखाई देगी। संक्षेप में, यदि मैं कभी-कभी अपने देशवासियों की आलोचना करती हूं तो यह प्रेम के अतिरेक के कारण ही, क्योंकि मैं मानव-जाति की आवश्यकताओं को, और उनकी पूर्ति में सहायता देने में हमारे अपने आश्चर्यजनक सामर्थ्य को इतने स्पष्ट रूप से देखती हूं कि मुझे यह देखकर बेचैनी हो जाती है कि हमारे आत्मसाक्षात्कार के, और समझदारी भरा तथा मनोरम संसार बनाने के लिए स्वदेश और विदेश में हम जो कुछ कर सकते हैं, उसके होने में देर हो रही है।

परन्तु द्वितीय महायुद्ध के बाद से हमारे राष्ट्रीय चिन्तन में जो प्रगति हुई है उससे बड़े से बड़े सख्त और प्रेमी आलोचक को तसल्ली और प्रोत्साहन होना चाहिए। संसार के सबक सीखते हुए हमने जो परेशानी पैदा करने वाली गलतियां और चिन्ताजनक भूलें की हैं, उनके बावजूद मैं अमरीकन भावना को सामान्य व्यवहार-बुद्धि और प्रबुद्धता के नये स्तरों पर पहुंचता देखती हूं। हम रंग, धार्मिक विश्वास और राष्ट्रीयता के बारे में अपने विनाशकारी कुसंस्कार पहले ही छोड़ना शुरू कर चुके हैं और हम उतने शेखी भरे निश्चय से यह नहीं समझते कि हम संसार का नेतत्व कर सकते हैं। सच पूछिए तो विश्व के नेतृत्व का विचार ही हमें

अरुचिकर लगने लगा है और हम नेतृत्व के स्थान पर सहयोग की बात सोचने लगे हैं। अमरीकन लोग उपदेशों और पुस्तकों से नहीं, तो भी अनुभव से बहुत जल्दी और अच्छी तरह सीखते हैं। हमारे अपने लोग, जो सैनिक और राजनयज्ञ के रूप में कार्य करके विदेशों से लौट रहे हैं, हमारे सामने यह सिद्ध कर रहे हैं कि हम अन्य लोगों को पसन्द कर सकते हैं—सबको न सही, पर हर राष्ट्र के इतने काफी लोगों को पसन्द कर सकते हैं कि किसी भी एक प्रकार के सब लोगों को नापसन्द न करें। ज़रा भी मौका मिले तो यही होता है कि हम नापसन्द के बजाय पसन्द ही करते हैं, पर इस बारे में हम बहुत भावुक नहीं हैं।

हम साम्राज्य-निर्माता नहीं हैं। यह तथ्य कितना महत्त्वपूर्ण है, इसका अन्दाज़ वह अमरीकन नहीं कर सकता जो एशिया में नहीं रहा। कुछ समय तक मुझे भी इसका निश्चय नहीं था, पर अब मैं जानती हूं। हम साम्राज्य नहीं चाहते क्योंकि हमें शासन करने के काम में आनन्द नहीं आता। यह हमारे अन्तःकरण के विरुद्ध है जो हमारी अमरीकन आत्मा का बड़ा नाज़ुक अंश है। इसलिए हम सीख रहे हैं कि अपने साथी देशों से, शस्त्र-बल और शासन-बल पर नहीं, बल्कि आपसी लाभ और मैत्री के बल पर किस तरह दृढ़ सम्बन्ध बनाए रखें। इतनी बात पहले ही स्पष्ट हो चुकी है। यदि हम अब तक दूसरों को अपनी सांझी आवश्यकताओं और लाभ की बात समझाने के सारे साधन नहीं खोज सके, तो भी हम उन्हें यह समझा सके हैं, या करीब-करीब समझा सके हैं कि हम उनका राज्यक्षेत्र या उन्हें गुलाम बनाना नहीं चाहते। इस महान् निषेधात्मक बात से उनके भय दूर किए जा सकते हैं और जब भय निकल जाता है, तब आशा शीघ्र ही इसके स्थान पर आ जाती है।

इसलिए मैं आशावान हूं। हमारे राष्ट्रीय चित्रपट में, व्यक्तियों में भय-जनक परस्पर-विरोधों के बावजूद अपने देशवासियों की नियन्त्रण रखने वाली आत्मा मुझे उदार, शिष्ट और समझदारी से भरी अनुभव होती है।

श्रद्धा और आशा की इस मानसिक अवस्था में मेरा काम चलता जा रहा है। एक रिम कोरा कागज़ अगली पुस्तक के लिए मेरी डेस्क पर रखा है। मैं लेखक हूं और अपना कलम उठाकर तैयार हूं लिखने के लिए—